Scanned by CamScanner

786/92

किताब पढ़ने से पहले दुआ किजिए
इस खाकसार के लिए दुन्या को
अलविदा करते वक्त मेरी जबान पर
कलमाए तैयब और दील मे दिदारे
मुसतफा हो आमिन आसिक अली बरेली सरीफ

70888.66786 = 9837519600

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तअज्जुब खेज़ और हैरत अंगेज़ इस्लामी और तारीख़ी मालूमात का अज़ीमुश्शान ख़ज़ाना, हदीस, तफ्सीर, तारीख़, सैर, फ़िक्ह और तसव्वुफ़ की दर्जनों मुस्तनद किताबों का हासिल-ए-मुताला म-अ हवालाजात।

इस्लामी हैरत अंगेज़ मालूमात

लेखकः

मौलाना अब्दुल वाहिद आज़ाद

प्रकाशकः

अल्हुदा पब्लिकेशंज़

2982, कूचा नीलकन्ठ, क़ाज़ीवाड़ा, दरियागंज नई दिल्ली-2

फोन : 011-43259013 / 08010503999

पुस्तक : इस्लामी हैरत अंगेज़ मालूमात
लेखक : मौलाना अब्दुल वाहिद आज़ाद
प्रथम संस्करण : 2013
पृष्ठ : 596
प्रकाशक : अल्हूदा पब्लिकेशंज़, नई दिल्ली–2
मुल्य : ₹ 200/-

ISLAMI HAIRAT ANGEZ MA'LOOMAAT

Compiled by:

Maulana Abdul Wahid Azad

Page: 596 Edition : 2013 ₹: 200/

ISBN-978-81-920777-8-9

प्रकाशक:

अल्हुदा पब्लिकेशंज़

ALHUDA PUBLICATIONS

2982, Kucha Neel Kanth, Qazi Wara, Darya Ganj, N. Delhi-2
Phone: 011-43259013, Mobile: 08010503999
Email: alhudapublications@yahoo.com

इंतिसाब

मैं अपनी इस मुख़्तसर कोशिश को
अपने वालिद माजिद
जनाब मास्टर **सइदुर्रहमान साहब** (मरहूम)
(वफ़ात 25 ज़ीकादा 1413 हिजरी, मुताबिक़ 18 मई सन् 1993 ई0 बरोज़ मंगल)
के नाम मानून व मंसूब करता हूँ।

जिनकी नालाए नीम शबी और दुआए सहरगाही से
मैं इस ख़िदमत के लायक़ हुआ।

अल्लाह तआला जल्ला मजदुहू उनको ग़रीक़े रहमत
और करवट करवट जन्नत नसीब करे, (आमीन)

पढ़ने वाले ईसाले सवाब फ़रमाकर ममनून करम
फ़रमाएं।

दुआ जो
अब्दुल वाहिद आज़ाद

विषय सूची

तास्सुर गिरामी

उस्ताद मुकर्रम फ़क़ीहुल असर

हज़रत अलहाज मुफ़्ती अय्यूब साहब नईमी मद्दज़िल्लहुल आली

सदर शोबा इफ़्ता मुदर्रिस जामिया नईमिया अरबी युनीवर्सिटी मुरादाबाद, यूपी।

तहरीर की मानवियत का अंदाज़ा लिखने वाले की सलाहियत और वुसअते मुताला से होता है। अरबी का मशहूर मक़ूला है, "क़दरुल मुअल्लिफ़ बिक़दरिल मुअल्लफ़" किताब का मुसन्निफ़ जितना अज़ीम हो उतनी ही किताब अज़मत अपने में रखती है। ज़ेरे नज़र किताब जिसका नाम "इस्लामी हैरत अंगेज़ मालूमात" के लिखने वाले मौलाना अब्दुल वाहिद आज़ाद जब यह जामिया नईमिया मुरादाबाद में तहसीले व तलब की राहों से गुज़र रहे थे उसी वक़्त से उनका ज़ौक़े मुताला वसीअ था। मसाइल की गहराईयों में उतरना उनके असबाब व इल्लतों की जुस्तजू उनकी ख़ासियत थी। इन्हीं मालूमात को मौसूफ़ ने अपनी इस किताब में अरबाबे ज़ौक़ की प्यास बुझाने के लिए यकजा कर दिया है। मैं अपना कसीर मशागिल की बिना पर इसको पूरे तौर पर तो नहीं देख सका अलबत्ता किसी-किसी जगह को देखकर अंदाज़ा होता है कि मौसूफ़ मौल्लिफ़ ने बड़ी जांफ़शानी करके वाक़िआत का क़लम के हवाले किया है।

दुआ है कि मौला तआला मौसूफ़ की ख़िदमात को क़ुबूल फ़रमाए और अस्हाबे शौक़ को इस्तिफ़ादे का मौक़ा अता फ़रमाए, आमीन।

मुहम्मद अय्यूब नईमी ग़फ़रलहू

27/ ज़ीक़ादा सन् 1421 हि०

तक़रीज़ जलील

उस्तादुल उलमा मुफ़्ती गुलाम मुजतबा साहब अशरफ़ी शेखुल हदीस जामिया रिज़विया मंज़रे इस्लाम मोहल्ला सौदागरान बरेली शरीफ़ यूपी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू नुसल्ली *अला रसूलिहिल करीम व आलिहि व अस्हाविही* अजमईन

फ़ाज़िल जलील, अलिमे नवील, हज़रत मौलाना अब्दुल वहीद आज़ाद ज़ैद मजदुहू की ज़ेरे नज़र क़ीमती किताव को पूरे तौर पर देखने का मौक़ा तो मयस्सर न आया। अलबत्ता कहीं कहीं कुछ उनवानात के तहत कुछ सवालात और उसके जवाबात का ग़ौर की नज़र से मुताला किया। अल्लाह का शुक्र है किताब को जैसा नाम वैसा काम "इस्लामी हैरतअंगेज़ मालूमात" का ख़ज़ीना और अजाएब व ग़राएब पर मुशतमिल वाक़िआत और दीनी उलूम का गंजीना पाया और बेहद ख़ुश हुआ। बहुत बहुत शाबाशी और तहसीन यह है कि जिस क़द्र जवाबात फ़क़ीर की नज़र से गुज़रे मोअ्तमद उलमाए दीन और सलफ़े सालिहीन की तसनीफ़ों के हवाले से मुज़य्यन हैं। लैसल ख़बर कल अयान "शुनीदा के बूद मानिन्द दीदा" नाज़रीन तमकीन! किताब का मुताला फ़रमाएं तो बेसाख़्ता आपकी ज़बान से यही कलिमात ख़ैर अदा होंगे कि मौलाना मौसूफ़ की किताब से ज़ाहिर है कि उनके मुताले की वुसअत अयान है मोहताज बयान नहीं।

अल्लाह करे ज़ोरे क़लम और ज़्यादा और मौसूफ़ को दुनिया और आख़िरत की बरकात व हसनात से नवाज़े, आमीन सुम्मा आमीन बिजाहि सैय्यदुल मुरसलीन सलावातुल्लाहि व सलामुहू अलैहि व आलिहि व सहबि अजमईन

दुआ गो दुआ जो

गुलाम मुज्तबा अशरफ़ी ग़फ़रलहू वलिवालिदैया

26 ज़िकादा 1421 हि०

तक़रीज़ जलील

हज़रत मुफ़्ती हवीव यार ख़ाँ साहव क़ादरी (मुहम्मद मियाँ नूरी)

ख़तीव जामा मस्जिद व सदर व मोहतमिम दारुल उलूम नूरी, इंदौर एम०पी०

मुवस्मिलवं व् हामिदवं व मुसल्लियवं व मुसल्लिमा

रव्वे क़दीर जल्ले अला ने अपने हवीव लवीव मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उलूम व माआरिफ़ का ख़ज़ीना, हिदायत व रहनुमाई का सरचश्मा क़ुरआने करीम की सूरत में अता फ़रमाया और मुअल्लिमे काएनात वनाकर भेजा।

नवी रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सहावा किराम व ताबईन ने उनसे अइम्मा दीन ने उनसे औलियाए कामिलीन ने, उनसे उलमाए अहले सुन्नत ने ख़ूव ख़ूव इस्तिफ़ादा फ़रमाया, रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमईन।

इंतिहाई मुसर्रत का मुक़ाम है कि उन्हीं "उलूमे क़ुरआनिया" को सवाल व जवाव की सूरत में मुरत्तव फ़रमाकर फ़ाज़िल जलील हज़रत मौलाना हाफ़िज़ अव्दुल वाहिद साहव ने अवाम अहले सुन्नत खुसूसन तलवाए किराम पर वड़ा करम फ़रमाया है।

सवाल व जवाव क़ायम फ़रमाकर वड़ी हिकमत से मौलाना ने शौक़ व तजस्सुस को ज़रिया वनाकर इल्म हासिल करने का जज़्वा पैदा करने में कामयाव तरीन कोशिश फ़रमाई है।

मौला तआला मौलाना अव्दुल वाहिद साहव की इस कोशिश को शर्फ़े क़ुवूलियत से नवाज़कर आम मुसलमानों के लिए और खुसूसन तलवाए किराम को इससे इस्तिफ़ादे की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन

खुलूस...

मुहम्मद हवीव यार ख़ाँ क़ादरी ग़फ़रलहू

30/ रमज़ानुल मुवारक सन् 1421 हि०

मुझे कहना कुछ अपनी ज़वान में

मुवस्मिलवं व हामिदवं व मुसल्लियवं व मुसल्लिमा

असर करे या न करे सुन तो ले मेरी फ़रियाद
नहीं है दाद का तालिब यह वंदए आज़ाद

नाज़िरीने किराम! एक यूनानी मुफ़क्किर का मारूफ़ मक़ूला हैः
"इंसान एक समाजी हैवान है वह तन्हा ज़िंदगी वसर नहीं कर सकता।"

एक फ़र्द जो किसी भी सतह का ज़िम्मेदार है, किसी भी मुक़ाम व मर्तवे का हामिल है बहरहाल वह सवसे पहले समाज का एक फ़र्द है, वाद में कुछ और। मआशरा या समाज से गुरेज़ उसके लिए मुमकिन नहीं। इंसान चाहे वह कितना ज़हीन ओर होशियार क्यों न हो वह अपने माहौल की ख़ूवियों और ख़ामियों से मुकम्मल तौर पर वेअसर नहीं रह सकता जिसमें उसने नशोनुमा पाई है और ज़िंदगी के वहुत सी मंज़िलों से गुज़रा हो। हक़ीक़त में समाज या मआशरा फ़ितरते इंसानी का नागुरेज़ तक़ाज़ा है।

दूसरी हक़ीक़त यह भी है कि मआशरा अफ़राद से मिलकर वनता है। इसलिए मआशरे का वनाव या विगाड़ अफ़राद के तर्ज़े अमल पर मुन्हसिर है। अफ़राद का तर्ज़े अमल मआशरे को जन्नत का नमूना भी वना सकता है जिसमें हर फ़र्द मुतमइन और ख़ुशहाल नज़र आए और जहन्नम का टुकड़ा भी वना सकता है जिसमें अफ़राद के लिए ज़िंदगी गुज़ारना अज़ाव से कम न हो।

मुसलमान को तरक़्क़ी की राह सिर्फ़ इवादतों की ज़ाहिरी पावंदी से नहीं मिलती वल्कि इसके लिए इस्लाम मआशरे की तामीर भी ज़रूरी है।

और इस्लामी मआशरे की तामीर हम हर्गिज़ नहीं कर सकते जब तक हम इन्फ़िरादी तौर पर अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा न करें। हमारी ज़िम्मेदारी यह है कि हम इस्लामी तालीमात और इस्लामी तारीख़ी मालूमात हासिल करें क्योंकि जब तक हम अपने दरख़शां गुज़रे दिनों और अपनी तावनाक तारीख़ से पूरी तरह वाकिफ़ नहीं हों तब तक हम अपनी ज़िंदगी के लिए कोई दस्तूरे अमल मुरत्तब नहीं करने या मआशरे को संवारने की कोई कामयाब तदबीर करने का तसव्वुर भी नहीं कर सकते। हालात रफ़्तगां और वाक़िआत गुज़िश्तां के मुताले ही से मालूम होगा कि हमारे बुज़ुर्गों ने किन उसूलों पर अमल करके दुनिया में हैरतनाक सरबुलंदी हासिल की थी और वे क्या कमियाँ, ग़ल्तियाँ और बेएतिदालियाँ थीं जिनकी वजह से यह क़ौम इज़्ज़त चाटियों से ज़िल्लत पर आ गई। इस तरह हम अपने और अपनी क़ौम व समाज के लिए आइंदा का बेहतरीन तरीक़ा तैयार कर सकेंगे और यह भी अच्छी तरह समझेंगे कि बुरे नतीजों से महफ़ूज़ रहने का क्या तरीक़ा इख़्तियार किया जाना चाहिए और सरबुलंदी के हासिल करने के लिए कौन सा ज़ीना बार बार आज़माया हुआ मजबूत और सही ज़ीना है।

इस्लाम पूरी ज़िंदगी का एक जामे निज़ाम है जो ज़िंदगी के हर शोबे में इंसान की रहनुमाई और मुकम्मल हिदायत फ़राहम करता है। दूसरे निज़ामों और नज़रियों में यह ख़ामी है कि वह ज़िंदगी के किसी एक पहलू से मुताल्लिक़ हैं या अगर सब पहलुओं को लेते भी हैं तो किसी एक महदूद नज़रिए से लेते हैं। फिर उनमें अंदरूनी वहदत व यकसानी भी नहीं पाई जाती। इसलिए वे अपने मुख़्तलिफ़ अज्ज़ा बल्कि नाक़िस बुनियादों से हासिल करते हैं। लेकिन इस्लाम की बात सबसे मुख़्तलिफ़ है। उसका सरचश्मा एक है "इल्हामी हिदायत" यह रहनुमाई पूरी ज़िंदगी से मुताल्लिक़ है। इस निज़ाम में जामियत भी है और कमाल भी यानी वुसअत भी है और वहदत भी। यह सलतनत भी है और वतन भी है यानी हुकूमत भी है रिआया भी है। यह ज़ाब्तए अख़्लाक़ भी और क़ुव्वत भी यानी रहम भी है और इंसाफ़ भी। यह कलचर भी और क़ानून भी यानी इल्म भी है और फ़ैसलाकुन ताक़त भी। यह माद्दी ताक़त भी है

सरवत भी यानी ज़रियए मआश भी है और ग़िना भी। यह जिहाद भी है और दावत भी यानी जोश भी है और होश भी। ग़र्ज़ कि इस्लाम एक ऐसा मुकम्मल निज़ामे हयात है जो ज़िंगदी के तमाम शोबों पर मुहीत और हावी है। अगर इस पर निहायत ही खुलूस और पाबंदी से अमल किया जाए तो सिर्फ़ इंफ़िरादी ज़िंदगी ही क़ाबिले रश्क नहीं बन सकती है बल्कि इज्तिमाई तौर पर भी मुसलमानों की सरबुलंदी के साथ-साथ एक ऐसा मिसाली समाज भी वजूद में आ सकता है जो बदअख़्लाक़ी और बदकारी से पाक हो। जिसमें आपसी नफ़रत का नाम व निशान भी न पाया जाता हो।

पेश नज़र किताब अगरचे कोई इस्लामी तारीख़ी किताब नहीं ताहम कहीं कहीं हल्की और मद्हम तारीख़ी शुआएं ज़रूरत पड़ जाती हैं जो इस्लाहे मआशरे की तामीर के लिए जद्दो जहद करने वालों के लिए मुआविन साबित होंगी।

इस वक़्त इस मौज़ू पर मार्केट में बहुत सी किताबें मौजूद हैं किसी और किताब का शामिल होना दरिया में एक क़तरे बेमानी की तरह है लेकिन क्योंकि मैं इस किताब की तर्तीब का आग़ाज़ बरसों पहले उस वक़्त कर चुका था जब कि उर्दू ज़बान में इस मौज़ू पर मार्केट में शायद ही कोई किताब थी। कुछ नासाज़ हालात की वजह से किताब की तर्तीब तदवीन अधूरी रही। अब कुछ अहबाब ख़ुसूसन क़ारी मज़हर आलम नईमी और मोहतरम ग़ुलाम जीलानी साहब (मोहतमिम आला दारुल उलूम इस्लामिया हम्दानिया डोरो शाह आबाद कश्मीर) के पुरज़ोर इसरार पर निहायत ही तहक़ीक़ व तलाश के बाद उलूम व मआरिफ़ व असरार व रमूज़ के अज़ीम दरिया से चंद क़तरे सत्तर उनवानों पर मुश्तमिल ताज्जुबख़ेज़ और हैरतअंगेज़ इस्लामी मालूमात का गुलदस्ता हदीस व तफ़्सीर, तारीख़ व सीरत की मुस्तनद किताबों के हवाले से अरबाबे ज़ौक़ व अस्हाबे शौक़ की ख़िदमत में हाज़िर है इस उम्मीद के साथ कि उन चंद पुराने गुलहाय सरसब्ज़ की तुर्ब अंगेज़ ख़ुशबू से आपके दिल व दिमाग़ मोअत्तर हो उठें और मेरे लिए बाइसे क़ुबूल हसनात व ख़ताओं की माफ़ी हों।

में अपनी कमज़ोरी और नाक़ाबलियत का इक़रार करता हूँ कि क़दम क़दम पर मेरा ठोकर खाना कुछ अजब नहीं अलबत्ता ग़ल्ती से पाक व बरी रहना अजाएबात में शुमार हो सकता है। अगर इस फ़क़ीर सरापा तक़्सीर ग़लत से किसी जगह ग़ल्ती हो गई हो तो क़दम की बहकने को दरगुज़र की निगाह से मुलाहिज़ा फ़रमाकर आगाह कर दें कि आइंदा इशाअत में इसकी तलाफ़ी हो जाए लेकिन ज़बान तान व तशनीअ के साथ न खोलें कि ग़ल्ती मानने वाले पर तान तश्नीअ बुज़ुर्गों का शेवा है।

तालिब दुआ

अब्दुल वाहिद आज़ाद

सदर मुदर्रिस दारुल उलूम इस्लामिया हम्दानिया
डोरूशाह आबाद ज़िला अनन्तनाग जुनूबी कश्मीर
मुक़ाम व पोस्ट गंजरिया बाज़ार वाया इस्लामपूर
ज़िला उत्तर दीनाजपूर, मग़रिबी बंगाल

पेशे नज़र किताब की तर्तीब में जिन बातों की रिआयत की गई है वे नीचे लिखी हैः

1. ज़्यादा से ज़्यादा हैरतअंगेज़ व ताज्जुब ख़ेज़ मवाद फ़राहम करने की कोशिश की गई है।
2. नक़्ल इबारात में अरबी, सजअ, तरसीअ और रंगीनी इबारत को छोड़कर आसान आसान अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किए गए हैं ताकि हर शख़्स आसानी से समझ सके।
3. नुक्ता नुक्ता मुस्तनद हवाले जात की गिरफ़्त और बंदिशों में जकड़ने की कोशिश की गई है।
4. मालूमात को मुख़्तलिफ़ उनवानात के तहत जमा किया गया है ताकि क़ारी को वे तमाम मालूमात यकजा इकठ्ठी मिल जाएं जो एक मौज़ू से मुताल्लिक़ हों।
5. हर जवाब से मुताल्लिक़ जितने भी अक़्वाल मिल सके दर्ज कर दिए गए हैं मुमकिन है कि दीगर अक़्वाल भी हों।
6. यहाँ यह बात, "जो शै तलब व इश्तियाक़ और तलाश और जुस्तुजू के बाद मयस्सर होती है ज़्यादा लज़्ज़त बख़्शती है" को सामने रखते हुए एक उनवान से मुताल्लिक़ सारे सवालों को पहले यकजा कर दिया गया है फिर उसके बाद उसी तर्तीब से नंबरवार उनके जवाबात ताकि सवाल पढ़ने के बाद क़ारी कुछ देर हैरत और ताज्जुब में रहे, तलब व इश्तियाक़ पैदा हो फिर जवाब पढ़ने के बाद बात अच्छी तरह ज़हन नशीन हो जाए। (लेकिन हिंदी में इसकी तर्तीब यह बनाई है हर सवाल के साथ उसका जवाब पढ़ने वाले को साथ साथ मिल जाए।)

शुक्रिया मेहरबानी

मैं बेहद ममनूने करम हूँ:

उस्ताद मोहतरम फ़क़ीहुल असर हज़रत अलहाज मुफ़्ती अय्यूब साहब नईमी मद्दज़िल्लुहू

उस्तादुल उलमा हज़रत मुफ़्ती ग़ुलाम मुज्तबा साहब अशरफ़ी मद्दज़िल्लुहुल. आली और मुफ़्ती मालवा हज़रत हबीब यार ख़ाँ साहब क़ादरी मद्दज़िल्लुहुल आली का कि इन हजज़रात ने अपने तास्सुरात को क़लमबंद फ़रमाकर किताब की इफ़ादियत में इज़ाफ़ा फ़रमाया और साथ में मेरी हौसला अफ़ज़ाई भी फ़रमाई,

मैं शुक्रगुज़ार हूँ

हज़रत मौलाना ग़ुलाम यासीन साहब नईमी और हज़रत मौलाना अकबर अली साहब (मुदर्रिसीन जामिया नईमिया मुरादाबाद)

का कि जिन हज़रात ने

अपने क़ीमती अवक़ात को किताब की तस्हीह में सर्फ़ फ़रमाया

मैं शुक्रगुज़ार हूँ

हज़रत मौलाना मुश्ताक़ अहमद साहब रिज़वी (दारुल उलूम गुलशने बग़दाद रामपूर) और क़ारी मज़हरे आलम साहब नईमी (दारुल उलूम हम्दानिया डोरो कश्मीर)

का कि जिन हज़रात ने

किताब की तर्तीब से लेकर तबाअत तक हर मरहले में अपने क़ीमती मश्वरे से नवाज़ते रहे

मैं एहसानमंद हूँ

मौलाना उबैदुर्रहमान मुज़फ़्फ़र पूरी साहब का कि जिन्होंने अपने फ़न का भरपूर मुज़ाहिरा करते हुए किताब की कंपोज़िंग फ़रमाई और मौलाना जमील अख़्तर अशरफ़ी साहब का कि जिनके हुस्ने ज़ौक़ से किताब इस ख़ूबसूरत अंदाज़ में छपकर आपके हाथों में आई।

मेरा बाल बाल इन सभी हज़रात का सरापा शुक्र व सपास है।

अब्दुल वाहिद आज़ाद

"वही" के बारे में सवाल और जवाब

सवालः फ़रिश्ते को "वही" किस तरह मिलती थी?

जवाबः अल्लाह तबारक व तआला को जब किसी नबी के पास "वही" भेजना मंज़ूर व मक़सूद होता था तो फ़रिश्ते को रूहानी तौर पर उस "वही" का इलक़ा फ़रमाता था या वह फ़रिश्ता उस "वही" को लौहे महफ़ूज़ से याद करके लाता और नबी को सुना देता था।

(अल् इतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन जि० 1, स० 58)

सवालः "वही" का नुज़ूल किन किन तरीक़ों से होता था?

जवाबः "वही" इन पाँच तरीक़ों में से किसी एक तरीक़े से नाज़िल होती थीः

1. घंटी की आवाज़ के साथ,
2. जिब्राईल अलैहिस्सलाम किसी इंसानी शक्ल में आकर,
3. जिब्राईल अलैहिस्सलाम अपनी असली सूरत में आकर,
4. बराहेरास्त और बिला वास्ता अल्लाह तआला से हमकलामी
5. जिब्राईल अलैहिस्सलाम का किसी भी सूरत में बग़ैर सामने आए क़ल्बे मुबारक में "वही" इलक़ा कर देना।

(अल् इतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन जि० 1, स० 58)

हज़रत शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैंः

"उलमा किराम ने "वही" के कई मर्तबे बयान किए हैंः

अव्वल रोयाए सालिहा (सच्च ख़्वाब) हदीस में है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इब्तिदा में जो चीज़ सबसे पहले ज़ाहिर हुई वह सच्चे ख़्वाब है।

दूसरा मर्तबा "वही" का यह था कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम नबी

करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम के क़ल्ब शरीफ़ में इलक़ा करते थे बग़ैर इसके कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिब्राईल अलैहिस्सलाम को देखें।

तीसरा मर्तबा ''वही'' का यह था कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम किसी आदमी की सूरत इख़्तियार करके हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आते और पैग़ामे इलाही पहुँचाते थे ताकि जो कुछ इर्शादे बारी है उसे याद फ़रमाएं।

चौथा मर्तबा ''वही'' का यह है कि सिलसिलातुल जरस यानी घंटी की आवाज़ सुनाई देती थी और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिवा कोई दूसरा उसके कलिमात व मानी को नहीं समझ सकता था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वही की क़िस्मों में यह सबसे बढ़कर सख़्त थी।

''वही'' का पाँचवाँ मर्तबा यह था कि कभी जिब्राईल अलैहिस्सलाम अपनी असली सूरत में आते और ''वही'' पहुँचाते। उलमा फ़रमाते हैं कि ऐसा दोबार हुआ।

छठा मर्तबा ''वही'' का यह है कि हक़ तआला ने आप पर इस हालत में ''वही'' फ़रमाई कि आप उरूजे फ़ौक़े अर्श थे। नमाज़ वग़ैरह की ''वही'' इसी क़िस्म की है।

''वही'' का सातवाँ मर्तबा हक़ तआला शानुहू का हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बराहेरास्त कलाम फ़रमाना है जिस तरह कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कलाम फ़रमाया।

''वही'' का आठवां मर्तबा हक़ तआला का हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बेहिजाब कलाम फ़रमाना।

कभी-कभी हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हालते नौम में तशरीफ़ दीदारे रब से मुशर्रफ़ होते और हक़ तआला आपसे कलाम फ़रमाता जैसा कि हदीस में है कि ''मैंने अपने रब को अहसन सूरत में देखा।''

साहिबे मवाहिब रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि हलीमी रहमतुल्लाह अलैहि ने कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि

आप पर छियालीस क़िस्मों से "वही" की गई है।

(मदारिज नबुव्वत बाब सोम, जि० 2 स० 54 से 57

सवालः पिछले अंबिया किराम जिनकी ज़बानें अरबी के अलावा थीं उनके पास "वही" किस ज़बान में नाज़िल होती थी?

जवाबः "वही" हमेशा अरबी ज़बान में नाज़िल होती थी। अंबिया साबिक़ीन अलैहिमुस्सलाम जिनकी ज़बानें अरबी के अलावा थीं उनके पास भी जिब्राईल अलैहिस्सलाम अरबी ज़बान में ही 'वही' लेकर आते थे। फिर हर नबी अपनी-अपनी ज़बान में उस 'वही' का तर्जुमा करके क़ौम को सुनाते और समझाते थे।

सवालः अव्वलीन "वही" क़ुरआन का नुज़ूल किस तारीख़ को, किस दिन, किस वक़्त और किस जगह हुआ?

जवाबः क़ुरआन की 'वही' अव्वल का नुज़ूल 17/ रमज़ानुल मुबारक हफ़्ते के दिन सुबह के वक़्त हुआ।

(तफ़्सीर नईमी जि० 2 स० 213, अलबिदाया जि० 2, स० 87)

हज़रत शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं:

"नूर वही का ज़हूर इतवार के दिन आठ या तीन रबिउल अव्वल सन् 41 आमुल फ़ील में कोहे हिरा पर जिसे जबले नूर कहते हैं बक़ौल सही हुआ।"

मुहद्दिस मौसूफ़ आगे फ़रमाते हैं कि एक जमात आयते करीमाः **शहरु रमज़ानल्लज़ी उन्ज़िला फ़ीहिल-क़ुरआनु** और इर्शादे बारी तआला **इन्ना अनज़लना फ़ी लयलतुल क़द्रि** से ख़्याल करती है कि 'वही' की शुरूआत रमज़ानुल मुबारक में हुई। इसलिए हक़ तआला ने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अज़ क़िस्मे नबुव्वत सबसे पहले जिस चीज़ का इकराम फ़रमाया वह नुज़ूले क़ुरआन है। नुज़ूले क़ुरआन क्योंकि रमज़ान में हुआ इससे साबित हुआ कि 'वही' की शुरूआत भी रमज़ानुल मुबारक में हुई होगी। लेकिन अक्सर मुफ़स्सिरीन का यह ख़्याल है कि पूरा क़ुरआन एक साथ रमज़ान की लैलातुल क़द्र में लौहे महफ़ूज़ से आसमाने दुनिया पर नाज़िल हुआ और वहाँ से मसलेहत के लिहाज़ और वाक़िआत

के ऐतिबार से थोड़ा-थोड़ा तेईस साल की मुद्दत तक उतरता रहा। (इस नुज़ूल की शुरूआत रबिउल अव्वल में हुई।) कुछ के नज़दीक 'वही' की शुरूआत रजब में हुई। यह क़ौल आम नहीं है।

(मदारिज नबुव्वत बाब सोम, जि० 2 स० 47)

एक क़ौल 9/ रबिउल अव्वल सन् 41 नबवी मुताबिक़ 12/ फ़रवरी सन् 610 ई० का भी है।

(अबगद गुम स० 64)

सवालः क़ुरआन की वही-ए-अव्वल और वही-ए-सानी के बीच कितना वक़्फ़ा रहा?

जवाबः वही अव्वल और वही सानी के दर्मियान कितना फ़ासला रहा इस बारे में चंद क़ौल आते हैं:

1. तफ़्सीर अज़ीज़ी में दस दिन,
2. हज़रत इब्ने सरी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं बारह दिन,
3. बक़ौल इब्ने अब्बास पंद्रह दिन,
4. हज़रत मक़ातिल का कहना है चालीस दिन,
5. और बक़ौल बाज़ तीन साल। (तफ़्सीर अलम नशूरह स० 63,64)

सवालः आख़िरी "वही" नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल हक़ से कितने अरसे पहले नाज़िल हुई?

जवाबः इस सिलसिले में अइम्मा तफ़्सीर के बीच इख़्तिलाफ़ है कि नुज़ूले वही आख़िर कब हुआः

1. आख़िरी 'वही' हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आलमे विसाल की तरफ़ तशरीफ़ ले जाने से तीन साअत पहले नाज़िल हुई।

   (हाशिया जलालैन स० 44)
2. नुज़ूल वही आख़िर के तीन दिन बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आलमे फ़ानी से कूच फ़रमाकर जवारे रहमत इलाही में नुज़ूल किया। (तफ़्सीर नईमी जि० 3, स० 199)
3. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अपनी जान जान आफ़रीन के सुपुर्द करने से सात दिन पहले आख़िरी 'वही' का नुज़ूल हुआ।

   (हाशिया जलालैन स० 44)
4. हज़रत इब्ने हातिम रहमतुल्लाह अलैहि के मुताबिक़ 'वही' आख़िरी

का नुज़ूल आपके विसाले रफ़ीक़े आला से नौ दिन पहले हुआ।

5. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वस्ले दाईम और क़ुर्बे अतम से मसरूर व मुशर्रफ़ होने से इक्कीस रोज़ पहले आख़िरी 'वही' नाज़िल हुई।

(तफ़्सीर नईमी जि० 3, स० 199)

6. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि नुज़ूल आख़िरी 'वही' का आप के अपने मतलूबे हक़ीक़ी के जवारे रहमत में जाने से इक्कासी रोज़ पहले हुआ। (अल् अतक़ान जि० 1, स० 36)

7. आख़िरी 'वही' दस ज़िलहिज्जह् को मिना में नाज़िल हुई जब कि आप हज्जतुल विदा के फ़राईज़ अंजाम देने में मसरूफ़ थे।

(तफ़्सीर क़ुरतबी)

○ ○ ○

लौहे महफ़ूज़ और क़लम के बारे में सवाल और जवाब

सवालः लौहे महफ़ूज़ की वजह तस्मिया क्या है?

जवाबः लौहे महफ़ूज़ का नाम लौहे महफ़ूज़ इसलिए है कि यह शैतान की शर अंगेज़ी और कतरबौंवत से महफ़ूज़ है। (जलालैन स० 492)

सवालः लौहे महफ़ूज़ किस चीज़ की बनी हुई है और कहाँ हैं?

जवाबः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमायाः

"अल्लाह तआला ने लौहे महफ़ूज़ को सफ़ेद मोती से बनाया हुआ है और सातवें आसमान पर मुअल्लक़ है।" (जलालैन स० 492)

सवालः लौहे महफ़ूज़ की जिल्द, सफ़्हे और तरफ़ैन किस चीज़ के हैं?

जवाबः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि "लौहे महफ़ूज़ की जिल्द और सफ़्हे सुर्ख़ याक़ूत के और उसके तरफ़ैन मोती और याक़ूत के हैं।" (हाशिया जलालैन स० 496)

सवालः लौहे महफ़ूज़ की लंबाई और चौड़ाई कितनी है?

जवाबः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैंः

"लौहे महफ़ूज़ की लंबाई ज़मीन व आसमान के बीच के फ़ासले के बराबर और उसकी चौड़ाई मशरिक़ से मग़रिब तक के फ़ासले के बराबर।" (जलालैन स० 496)

बक़ौल दीगर उसकी लंबाई पाँच सौ बरस की मुसाफ़त है। (अहकाम शरिअत)

सवालः लौहे महफ़ूज़ का कलाम किस चीज़ का है?

जवाबः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैंः

"लौहे महफ़ूज़ का कलाम नूर का है।" (हाशिया जलालैन स० 496)

सवालः लौहे महफ़ूज़ का क़लम किस चीज़ का है और कहाँ है?

जवाबः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं:

"लौहे महफ़ूज़ का क़लम नूर का है जो उससे बंधा हुआ है।"

(नुज़हतुल मजालिस स० 191, हाशिया जलालेन स० 496)

और एक रिवायत में है कि खुदा ने क़लम को एक सफ़ेद चमकदार मोती से पैदा किया। (नुज़हतुल मजालिस स० 91)

सवालः लौहे महफ़ूज़ के बीचों बीच क्या लिखा हुआ है?

जवाबः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा रिवायत करते हैं कि "लौहे महफ़ूज़ के बीचों बीच ये अल्फ़ाज़ लिखे हुए हैं:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ دِيْنُهُ الْاِسْلَامُ مُحَمَّدٌ عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ مَنْ آمَنَ بِاللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ وَصَدَّقَ بِوَعْدِهٖ وَاتَّبَعَ رُسُلَهُ اَدْخَلَهُ الْجَنَّةَ

(हाशिया 9, जलालेन स० 496)

सवालः लौहे महफ़ूज़ में लिखे हुए क़ुरआन के हर्फ़ की वुसअत कितनी है?

जवाबः लौहे महफ़ूज़ में लिखा हुआ क़ुरआन पाक का हर हर्फ़ कोहे क़ाफ़ के बराबर है और हर हर्फ़ के नीचे उसके माने हैं।

(अल् अतक़ान जि० 1, स० 58)

सवालः उस क़लम की लंबाई कितनी है?

जवाबः यह क़लम नूरानी सौ साल की तूलानी रखता है।

सवालः क़लम ने सबसे पहले क्या लिखा?

जवाबः अल्लाह तबारक व तआला ने जब क़लम को पैदा किया तो उसे हुक्म फ़रमाया, लिख! क़लम ने अर्ज़ किया क्या लिखूं? फ़रमान जारी हुआ कि क़यामत तक की मख़्लूक़ की तक़दीरें लिख।

(मदारिज जि० 1, स० 303)

सवालः कलम कुल कितने हैं जिनसे मसालहे आलम का इंतिज़ाम है?

जवाबः साहबे मवाहिब लदुन्निया इब्ने क़य्यिम रहमतुल्लाह अलैहि से नक़ल करते हैं कि उन्होंने कहा अक़लाम बारह हैं और मर्तबे में जुदा जुदा हैं।

सबसे आला व अजल और अव्वले क़लमे क़ुदरत है। यही वह क़लम है जिसकी हक़ तबारक व तआला ने क़सम फ़रमाई।

दूसरा क़लमे वही है।

तीसरा क़लम तौक़ीअ है जो अल्लाह व रसूल की तरफ़ से निशान है।

चौथा क़लम तिब अब्दान है जिससे बदनों की सेहत की हिफ़ाज़त की जाती है।

पांचवाँ वह क़लम तौक़ीअ है जिससे नवाबों, बादशाहों पर निशान होता है।

छठा क़लम हिसाब है उसे क़लम अरज़ाक भी कहते हैं।

सातवां क़लम हकम है उससे हुक्म नाफ़िज़ किए जाते हैं।

आठवां क़लम शहादत है जिससे हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त की जाती है।

नवां क़लम तावीर है यह वही ख़्वाब में है उसे और उसकी तावीर व तफ़्सीर को लिखने वाला है।

दसवां क़लम तवारीख़ व दक़ाए आलम है।

ग्यारहवां क़लम नअत और उसकी तफ़्सील लिखने वाला है।

बारहवां क़लम जामे है।

ये वे अक़लाम हैं जिनसे मसालेह आल का इंतिज़ाम है।

(मदारिज जि० 1, स० 303)

○ ○ ○

आसमानी किताबों के बारे में सवाल और जवाब

सवालः आसमानी किताबें कुल कितनी हैं?

जवाबः हक़ सुब्हानहू आज़म शानुहू ने अपने ख़ज़ानए कलाम से एक सौ चार किताबों का नुज़ूल फ़रमाया जिन में से सौ सहीफ़े और चार किताबें हैं। (तफ़्सीर नईमी जि० 1 स० 111, हाशिया जलालैन स० 3

सवालः वह अंबिया व मुरसलीन कितने और कौन-कौन से हैं जिन पर आसमानी किताबें नाज़िल हुईं।?

जवाबः किताबे इलाहिया की अज़ीम नेमत और बड़ी दौलत से सरफ़राज़ होने वाले अंबिया व मुरसलनी आठ हैः

1. हज़रत आदम अलैहिस्सलाम, 2. हज़रत शीस अलैहिस्सलाम, 3. हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम, 4. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम 5. हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम, 6. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, 7. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, 8. हज़रत मुहम्मद सलावातुल्लाहि तआला व सलामुहू अलैहि व अलैहिम अजमईन।

सवालः किस नबी पर कितने सहीफ़े नाज़िल हुए?

जवाबः किस नबी पर कितने सहीफ़े नाज़िल हुए उनकी तफ़्सील नीचे लिखी हैः

1. दस सहीफ़े हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर
2. पचास सहीफ़े हज़रत शीस अलैहिस्सलाम पर,
3. तीस, हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम पर,
4. और दस सहीफ़े हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुए

(तफ़्सीर नईमी जि० 2, स० 17

हाशिया शरह अक़ाएद कलां स० 10

तफ़्सीर नईमी ही में तफ़्सीर रुहुल बयान के हवाले से एक क़ौम यह भी है कि सौ सहीफ़ों में से पचास हज़रत शीस अलैहिस्सलाम पर तीस

हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम पर और बीस हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुए। (तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 111)

एक दूसरे क़ौल के मुताबिक़ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर तीस, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर तौरात से पहले दस और हज़रत शीस अलैहिस्सलाम पर साठ सहीफ़ों का नुज़ूल हुआ।

(हाशिया 6, जलालैन स० 366)

सवालः सुहुफ़ि इब्राहीमी किस महीने की किस तारीख़ को नाज़िल हुआ?

जवाबः सुहुफ़ि इब्राहीमी का नुज़ूल रमज़ानुल मुबारक की पहली रात को हुआ। (तफ़्सीर नईमी जि० 2, स० 213, अलूअतक़ान जि० 1, स० 55)

सवालः तौरात शरीफ़ का नुज़ूल किस तारीख़ को हुआ?

जवाबः बैहिक़ी में बरिवायत हज़रत वासला बिन असक़ाअ रज़ियल्लाहु अन्हु है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तौरात छः रमज़ानुल मुबारक को नाज़िल हुई।

(तफ़्सीर नईमी जि० 2, स० 213, अलूअतक़ान जि० 1, स० 55)

दूसरा क़ौल यह है कि तौरात हज़रत मूसा कलीमुल्लाह को हज़रत हक़ अज़्ज़े इस्मुहू ने यौमे नहर यानी दस ज़िल हिज्जा को अता फ़रमाई।

(तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 430, हाशिया जलालैन स० 141)

सवालः तौरात में कितनी सूरतें और कितने आयतें हैं?

जवाबः तौरात शरीफ़ में एक हज़ार सूरतें हैं और हर सूरत में एक हज़ार आयात (इस हिसाब से आयतों की तादाद दस लाख हुई)।

(तफ़्सीर ख़ज़ाईन इरफ़ान प० 16 रु० 13, तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 111)

सवालः तौरात कितनी तख़्तियों में लिखी हुई नाज़िल हुई?

जवाबः तर्जुमानुल क़ुरआन हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को तौरात शरीफ़ सात तख़्तियों में अता हुई।(तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 430, अलूअतक़ान जि० 1, स० 56)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की एक रिवायत में यह भी है कि तौरात शरीफ़ के कुल सात हिस्से थे। उनको लेकर जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपनी क़ौम की तरफ़ तशरीफ़ लाए तो कुछ थोड़े से

लोगों के जो हज़रत हारून अलैहिस्सलाम के साथ मर्कज़ इस्तिक़ामत पर साबित व क़ायम थे पूरी क़ौम बनी इस्राईल को शिर्क में मुब्तला पाया। अपनी क़ौम की ये बुरी हरकतें देखकर आप बहुत परेशान हुए और गुस्से के आलम में अपने भाई हारून अलैहिस्सलाम की तरफ़ बढ़े। इस दौरान तौरात शरीफ़ की तख़्तियाँ आपके हाथ से गिर गयीं या गिरा दीं। इस गिर जाने की वजह से अल्लाह तबारक तआला ने तौरात के कुछ हिस्सों को उठा लिया। बाक़ी एक हिस्सा जिसमें ज़रूरी मसाइल थे बनी इस्राईल को मिला। (तफ़सीर नईमी जि० 1, स० 430, अल् अतक़ान जि० 1, स० 57)

सवालः तौरात की तख़्तियाँ किस चीज़ की थीं?

जवाबः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि तौरात शरीफ़ की तख़्तियाँ ज़बरजद (एक क़ीमती पत्थर) की थीं। एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ ये तख़्तियाँ जन्नत के पेड़ सिदरा (बेरी) की थीं।

(अल् अतक़ान जि० 1, स० 56,57)

यह भी कहा गया है कि ये तख़्तियाँ ज़मुर्रुद की थीं। एक क़ौल यह भी है कि लकड़ी की थीं। (हाशिया 2, 4 जलालैन स० 1[illegible])

सवालः तौरात की तख़्तियों की लंबाई कितनी थी?

जवाबः हज़रत बग़वी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि अलवाह तौरात में से हर कए की लंबाई बारह गज़ थी और बक़ौल हज़रत हसन दस गज़ थी। (अल् अतक़ान जि० 1, स० 57, हाशिया 4, जलालैन स० 1[illegible])

सवालः तौरात का हर एक जुज़ कितने दिनों में पढ़ा जाता था और मुकम्मल तौरात को किस किस ने पढ़ा?

जवाबः तौरात शरीफ़ का हर जुज़ एक साल में पढ़ा जाता था और उसको सिवाए हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के कोई न पढ़ सका।

(हाशिया 3, जलालैन स० 1[illegible])

सवालः तौरात किस ज़बान में नाज़िल हुई थी?

जवाबः तौरात सुरयानी ज़बान में थी। (अल् मलफ़ूज़ हिस्सा [illegible]) दूसरा क़ौल यह है कि तौरात इबरानी ज़बान में थी।

(मआलिमुल तंज़ील जि० 1, स० [illegible])

सवालः ज़बूर किस ज़बान में नाज़िल हुई?

जवाबः ज़बूर इबरानी ज़बान में नाज़िल हुई।

(उम्दातुल क़ारी जि० 1, स० 3

सवालः ज़बूर में कितनी सूरतें हैं?

जवाबः हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि ज़बूर में ए सौ पचास सूरतें हैं। सब दुआ, अल्लाह तआला की सना और उसक तहमीद व तमजीद है न उसमें हलाल व हराम का बयान है और फ़राईज़ व हुदूद व अहकाम का ज़िक्र है।

(तफ़्सीर ख़ज़ाएन प० 15, रु० 6 अल् अतक़ान जि० 1, स० 8

एक दूसरे क़ौल के हिसाब से ज़बूर शरीफ़ में चार सौ बीस सूरतें है

(तफ़्सीर नईमी जि० 2, स० 55

सवालः ज़बूर की सबसे लंबी सूरत की तिवालत कितनी है?

जवाबः ज़बूर की सबसे लंबी सूरत क़ुरआन पाक के चौथाई के बराब है और सबसे छोटी सूरत सूरः नस्र के बराबर है।

(हाशिया 17 जलालैन स० 23

सवालः हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ज़बूर कितनी आवाज़ों में तिलावत किया करते थे?

जवाबः हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ज़बूर शरीफ़ को तुग़नी व खुशइल्हानी के साथ सत्तर आवाज़ों में तिलावत फ़रमाया करते थे।

(अल् बिदाया जि० 2, स० 16

सवालः इंजील का नुज़ूल किस तारीख़ को हुआ?

जवाबः इंजील किस तारीख़ को नाज़िल हुई इससे मुताल्लिक़ मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं जो नीचे लिखे हैं:

1. इंजील का नुज़ूल तेरह रमज़ान शरीफ़ को हुआ।

(तफ़्सीर नईमी जि० 2, स० 213, अल् अतक़ान जि० 1, स० 55)

2. इंजील अठ्ठारह रमज़ान को नाज़िल हुई।

(अल बिदाया वन्निहाया जि० 2, स० 78)

3. इंजील का नुज़ूल चार रमज़ानुल मुबारक को हुआ।

(हाशिया शरह अक़ाएद स० 101)

सवालः इंजील, ज़बूर के कितने सालों बाद नाज़िल हुई?

जवाबः इंजील का नुज़ूल, ज़बूर के एक हज़ार पचास साल बाद हुआ।

(अल् बिदाया वन्निहाया जि० 2, स० 277)

सवालः इंजील किस ज़बान में नाज़िल हुई थी?

जवाबः इंजील इबरानी ज़बान में थी।

(अल् मलफ़ूज़ हिस्सा चार स० 14)

एक क़ौल यह भी है कि इंजील सुरयानी ज़बान में थी।

(मुआलिम तंज़ील जि० 1, स० 277)

सवालः इंजील में सूरते थीं या नहीं?

जवाबः इंजील में सूरतें थीं जिनमें से एक सूरः का नाम "सूरः अल् इम्साल" था। (अल् अतक़ान जि० 1, स० 88)

सवालः इंजील किस जगह नाज़िल हुई?

जवाबः इंजील जबले साग़ीर में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई। (मदारिज नबुव्वत जि० 1, स० 190)

○ ○ ○

क़ुरआन शरीफ़ के बारे में सवाल और जवाब

सवालः क़ुरआन का नुज़ूल कितनी बार हुआ और कब-कब?

जवाबः क़ुरआन मजीद फ़ुरक़ाने हमीद का नुज़ूल दो बार हुआः

1. यकबारगी पूरा क़ुरआन लौहे महफ़ूज़ से आसमाने दुनिया के बैतुल इज़्ज़त (बैतुल मामूर) में नाज़िल कर दिया गया। यह नुज़ूले जज़ील लैलतुल क़द्र में हुआ।
2. दूसरी बार रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर थोड़ा-थोड़ा हस्बे हाल या हस्बे ज़रूरत नाज़िल होता रहा। तेईस साल में यह नुज़ूल मुकम्मल हुआ।

(अल् अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन जि० 1, स० 35)

हकीमुल उम्मत मुईनुल मिल्लत हज़रत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान साहब नईमी रहमतुल्लाह अलैहि अपनी मशहूर ज़माना तसनीफ़ लतीफ़ अशरफ़ुत्तफ़सीर मारूफ़ ब-तफ़सीर नईमी में फ़रमाते हैं कि "क़ुरआन करीम का नुज़ूल चंद बार चंद तरीक़े से हुआ। अव्वल लौहे महफ़ूज़ से आसमाने दुनिया की तरफ़ यकबारगी नाज़िल कर दिया गया। यह नुज़ूल माहे रमज़ानुल मुबारक की शबे क़द्र में हुआ। इससे मुताल्लिक़ क़ुरआन करीम का फ़रमाने अज़ीम हैः

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْ اُنْزِلَ فِیْهِ الْقُرْاٰنُ اور اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِیْ لَیْلَةِ الْقَدْرِ.

फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर तेईस साल की मुद्दत में बक़द्रे ज़रूरत व मसलेहत के लिहाज़ से नाज़िल होता रहा। और अहादीस से यह भी साबित है कि माहे रमज़ान में हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में शर्फ़े हुज़ूरी पाकर सारा क़ुरआन सुनाया करते थे। और बाज़ आयात दो बार नाज़िल हुईं जैसे सूरः फ़ातेहा वग़ैरह। ख़ुलासा यह हुआ कि रसूले

पाक साहिबे लौलाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर क़ुरआन आलीशन का नुज़ूल कई तरीक़े से कई बार हुआ।"

(तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 10)

सवालः क़ुरआन का नुज़ूल, इंजील के कितने साल बाद हुआ?

जवाबः क़ुरआन करीम हिदायते अज़ीम का नुज़ूल इंजील के तीन सौ साठ साल या सात सौ या पाँच सौ साल बाद हुआ।

(हाशिया 4 शरह अक़ाए स० 101)

सवालः मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना तैय्यबा में नाज़िल होने वाली सबसे पहली और आख़िरी सूरतें कौन कौन सी हैं?

जवाबः मक्का मुकर्रमा में नाज़िल होने वाली सबसे पहली सूरत "इक़रा" और सबसे आख़िरी सूरत "मुमिनून" है। बाज़ ने "अनकबूत" को आख़िरी सूरत कहा है। और मदीना मुनव्वरा में नाज़िल होने वाली सबसे पहली सूरत "वयलुल-लिल्-मुतफ़-फ़िफ़ीना" और आख़िरी सूरः बरा-अ़त है।

इब्ने हजूर ने अपनी किताब "शरह बुख़ारी" में लिखा है कि सूरः बक़रा पहली सूरत है जो मदीना में नाज़िल हुई और तफ़्सीर नसफ़ी में वाक़दी की रिवायत है कि पहली सूरत जो मदीना में नाज़िल हुई वह सूरः क़द्र है। (अल् अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन जि० 1, स० 33)

सवालः शब में नाज़िल होने वाली सूरतें कौन कौन सी हैं?

जवाबः 1. सूरः ईनाम। तिबरानी में है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया यह पूरी सूरत यकबारगी शबा में बमुक़ाम मक्का मुकर्रमा इस तरह नाज़िल हुई कि सत्तर हज़ार फ़रिश्ते इसके इर्दगिर्द बाआवाज़ बुलंद तस्बीह व तक़्दीस बयान कर रहे थे।

2. सूरः मरियम। तिबरानी ही में हज़रत अबू मरियम गुस्सानी रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है फ़रमाते हैं, मैंने एक सुबह ख़्वाजा काएनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत अक़्दस में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, "आज रात मेरे याहँ एक लड़की पैदा हुई है।" सरकार अबद क़रार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "आज रात मुझ पर सूरः मरियम नाज़िल हुई है लिहाज़ा तुम अपनी लड़की का नाम मरियम रखो।"

3. सूरः मुनाफ़िक़ून। इस सूरत से मुतल्लिक़ तिर्मिज़ी में हज़रत ... बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि यह सूरत रात ... नाज़िल हुई है।

4. सूरः मुरसलात। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि वलमुरसलात शबे जिन्न को हिरा में नाज़िल हुई। एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ यह सूरः शबे अरफ़ा में बमुक़ाम ग़ारे मिना नाज़िल हुई।

5. सूरः फ़लक़।

6. सूरः नास। हज़रत उक़्बा बिन आमिर जहनी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुझ पर आज रात ऐसी अज़ीम आयतों का नुज़ूल का हुआ है जिनकी मिसाल नहीं। फिर इन दो मज़्कूरा सूरतों की तिलावत फ़रमाई।

(अल् अतक़ान जुज़ अव्वल स...)

सवालः शब में नाज़िल होने वाली आयात कौन कौन सी हैं?

जवाबः रात में नाज़िल होने वाली आयातें ये हैं:

1. अवाख़िर आले इमरान। इब्ने हब्बान की किताब "सही" में और इब्ने मंज़र व इब्ने मर्दविया व इब्ने अबिद्दुनिया की किताब "अलुत्तफ़क्कुर" में उम्मुल मोमिनीन सैय्यदना आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की रिवायत है कि हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ाने सुबह सुनाने दरबारे हज़रत मुकर्रम में हाज़िर हुए तो देखा कि कि आपके चश्मे मुबारक से आँसू जारी हैं। हज़रत बिलाल पुरमलाल रज़ियल्लाहु अन्हु अर्ज़ गुज़ार हुए या रसूलुल्लाह! चश्मे पुरनम और मलूल ख़ातिर की क्या वजह है? इरशाद फ़रमाया, क्यों न रोऊँ कि आज मुझ परः

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ
لَاٰيٰتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ

का नुज़ूल हुआ। फिर फ़रमाया, शामत व हलाकत है उस शख़्स के लिए जो इस आयत को पढ़े और सनअते ख़ुदा वंदी में फ़िक्र व तदब्बुर न करे। وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ

तिर्मिज़ी में उम्मुल मोमिनीन सैय्यदना सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा की रिवायत है फ़रमाती हैं कि दौराने सफ़र शब में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पहरा दिया जा रहा था। जब यह आयत नाज़िल हुई तो हुज़ूर ने ख़ेमा शरीफ़ से अपना सरे अक़्दस निकालकर असहाबे पासबान व निगहबान से फ़रमाया, तुम लोग चले जाओ मेरे मुहाफ़िज़े हक़ीक़ी ने मुझे अपनी हिफ़ाज़त में ले लिया। तिबरानी की रिवायत में हज़रत असमा बिन मालिक ख़ती रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं हम लोग अज़्ख़ुद शब में रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पासबानी में मसरूफ़ रहा करते थे। जब इस आयते करीमा का नुज़ूल हुआ तो हम इस सआदत से महरूम हो गए।

3. आयत सलासा यानी وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا... الاٰية

सहीहैन में हज़रत कअब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि उन्होंने फ़रमाया, हक़ सुब्हानहु ने हमारी क़ुबूलियते तौबा का नुज़ूल उस वक़्त फ़रमाया कि रात का दो तिहाई हिस्सा गुज़र चुका था।

4. आग़ाज़ सूरः हज। इब्ने मर्दविया ने हज़रत इमरान बिन हसीन रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि इस आयते करीमा का नुज़ूल नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक सफ़र के दौरान इस हाल में हुआ कि कुछ सहाबा किराम तो सो रहे थे और कुछ इधर-उधर मुन्तशिर। उसी वक़्त बाद नुज़ूल हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बाआवाज़े बुलंद इस आयत की तिलावत फ़रमाई।

5. आयते पर्दा। सूरः अहज़ाब की वह आयत जिसमें औरतों को ज़रूरत की ग़र्ज़ से ब-हिजाब बाहर निकलने की इजाज़त दी गई है। क़ाज़ी जलालुद्दीन ने कहा है कि वह आयतः

يٰاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ... الاٰية है।

6. وَاسْئَلْ مَنْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَا बक़ौल इब्ने हबीब यह आयत शबे मेराज को नाज़िल हुई।

7. अव्वले सूरः फ़तेहः اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا. बुख़ारी शरीफ़ में

हज़रत फ़ारूके आज़म की रिवायत के मुताबिक़ यह आयत भी रात
नाज़िल हुई। (अल् अतक़ान फि उलूमुल क़ुरआन जि० 1, स०

सवालः अलस्सुबह नाज़िल होने वाली आयत कितनी हैं?

जवाबः सिर्फ़ दो आयतें ऐसी हैं जो अलस्सुबह नाज़िल हुईं:

1. आयते तयम्मुम

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ ... لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ

सहीहैन में उम्मुल मोमिनीन आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं
एक सुबह नमाज़े फ़ज्र के वास्ते वुज़ू के लिए पानी न मिला, उसी
यह आयत नाज़िल हुई।

2. لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ इस आयत का नुज़ूल उस वक़्त हुआ
कि ख़्वाजा आलम सैय्यद बनी आदम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमा
फ़ज्र की रकअते आख़िर में थे। (अल् अतक़ान जि० 1, स०

सवालः बहालते इस्तिराहत, बिस्तरे अतहर पर नाज़िल हो
वाली आयात कौन कौन सी हैं?

जवाबः बहालते इस्तराहत बिस्तर नाज़नीन में दो आयतें नाज़िल हु

1. وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ 2. وَعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا

(अल् अतक़ान जि० 1, स०

सवालः ग़ार में नाज़िल होने वाली आयात और सूरतें कौन को
सी हैं?

जवाबः ग़ार में नाज़िल होने वाली सूरः मुरसलात है जो शबे अर
को ग़ारे मिना में नाज़िल हुई। और आयत सूरः अलक़ की इब्तिदाई प
आयतें हैं जो ग़ारे हिरा में नाज़िल हुई।

सवालः वे आयतें कितनी और कौन सी हैं जिनकामहल नुज़ूल
आसमान है और न ज़मीन?

जवाबः पूरे क़ुरआन पाक का नुज़ूल मक्का मुकर्रमा और मदी
मुनव्वरा के बीच हुआ है अलावा छः आयतों के कि उनका नुज़ूल
आसमान में हुआ और न ज़मीन पर बल्कि ये आयतें फ़िज़ा में नाज़ि
हुईं:

1. وما منا الا له مقام معلوم
2. وانا لنحن الصافون
3. وانا لنحن المسبحون
4. وسئل من ارسلنا من قبلك من رسلنا

5 और 6 सूरः बक़रा की आख़िरी दो आयतें।

(अल् अतक़ान जि० 1, स० 31)

सवाल: वह आयात और सूरतें कौन कौन सी हैं जिनका नुज़ूल बाज़ सफ़रों के दौरान हुआ?

जवाब: दौराने सफ़र जिन सूरतों व आयतों का नुज़ूल हुआ है नीचे लिखी हैं:

1. सूरः फ़तेह, 2. सूरः मुनाफ़िक़ून, 3. सूरः मुरसलात, 4. सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन बाज़ हिस्सा या मुकम्मल, 5. सूरः कौसर, 6. सूरः नसर और आयतें यह हैं:

(١) واتخذوا من مقام ابراهيم مصلى. (٢) وليس البر بان تاتوا البيوت الاية. (٣) واتموا الحج والعمرة لله. (٤) فمن كان منكم مريضا او به اذى من راسه الاية (٥) امن الرسول الاية. (٦) واتقوا يوما ترجعون فيه الاية (٧) الذين استجابوا لله والرسول الاية. (٨) يايها الذين امنوا لا تقربوا الصلوة وانتم سكرى الاية. (٩) ان الله يامركم ان تؤدوا الامنت الى اهلها. (١٠) واذا كنت فيهم فاقمت لهم الصلوة الاية. (١١) يستفتونك قل الله يفتيكم في الكللة. (١٢) يا ايها الذين امنوا اوفوا بالعقود الاية. (١٣) اليوم اكملت لكم دينكم (١٤) يا ايها الذين امنوا اذا قمتم الى الصلوة الاية. (١٥) يا ايها الذين امنوا اذكروا نعمة الله عليكم اذهم الاية (١٦) والله يعصمك من الناس (١٧) يسئلونك عن الانفال الاية (١٨) اذ تستغيثون ربكم الاية. (١٩) والذين يكنزون الذهب الاية. (٢٠) لو كان عرضا قريبا الاية. (٢١) ولئن سالتهم ليقولن انما كنا نخوض ونلعب الاية. (٢٢) ما كان

…لى والذين امنو الاية. (٢٣)ان الله مع الذين اتقوا والذين هم محسنون
…٢٤)وان كادوا ليستفزونك من الارض ليخرجوك منها (٢٥)يا ايها الناس
…قوا ربكم ان زلزلة الساعة تا ولكن عذاب الله شديد (٢٦)هذان خصمان
…لايات. (٢٧)اذن للذين يقاتلون الاية. (٢٨)الم تر الى ربكم كيف مدا
…لظل الاية. (٢٩)ان الذى فرض عليك القرآن (٣٠)الم٥ غلبت الروم تا
…نصر الله. (٣١)وسئل من ارسلنا من قبلك من رسلنا الاية. (٣٢)وكاين من
…قرية هى اشد قوة الاية. (٣٣)يا ايها الناس انا خلقناكم من ذكروا انثى
…الاية. (٣٤)سيهزم الجمع الاية. (٣٥)ثلة من الاوّلين (٣٦)افبهذا
…لحديث انتم مدهنون (٣٧)وتجعلون رزقكم انتم تكذبون (٣٨)يا ايها
…لذين امنوا اذا جاء كم المومنٰت مهاجرات فامتحنوهن الاية. (٣٩)اقراء
…باسم ربّك تا مالم يعلم.

(अल् अतकान जि० 1, स० 25, 2…

सवालः वे आयत और सूरतें कौन कौन सी हैं जिनके हमराह फ़रिश्तों की एक भारी जमिअत भी नाज़िल हुई?

जवाबः वे सूरतें और आयतें जिनके साथ फ़रिश्तों का भी नुज़ूल हुआ यह हैं:

1. सूरः ईनाम। इसके साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते नाज़िल हुए।
2. सूरः फ़ातेहा। नुज़ूल के वक़्त अस्सी हज़ार मलाइका जुलूस की शक्ल में नाज़िल हुए। दूसरे क़ौल के मुवाफ़िक़ सत्तर हज़ार।

(हाशिया 3, जलालैन स० 215

3. सूरः यूनुस। इसके हमराह तीस हज़ार फ़रिश्ते आए।
4. सूरः कहफ़। इसके साथ सत्तर हज़ार मलाइका नुज़ूल में शरीक थे।
5. आयतुल कुर्सी। तीस हज़ार फ़रिश्तों का क़ाफ़िला साथ नाज़िल हुआ।

एक और रिवायत के मुताबिक़ सूरः बक़रा की हर आयत के साथ अस्सी अस्सी फ़रिश्ते नाज़िल हुए।

6. وسئل من ارسلنا من قبلك من رسلنا इसके नुज़ूल के वक़्त बीस हज़ार मलाइका हमराह थे।

वाज़ेह हो कि फ़रिश्तों की यह तादाद उन फ़रिश्तों के अलावा है जो हमेशा जिब्राईल अलैहिस्सलाम के साथ आते थे।

(अल् अतक़ान जि० 1, स० 50)

सवालः वे आयतें और सूरतें कौन कौन सी हैं जो अंबिया साबिक़ीन पर भी नाज़िल हुईं?

जवाबः क़ुरआन आलमगीर की शान की वे सूरतें और आयतें जो अंबिया साबिक़ीन अलैहिमुस्सलाम पर भी नाज़िल हुई वे ये हैं:

1. सूरः अला यानी **सब्बिह इस्मा रब्बिकल आला**। तर्जुमानुल क़ुरआन हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब यह सूरत नाज़िल हुई तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, यह पूरी सूरः हज़रत इब्राहीम व मूसा अलैहिमस्सलाम के सहीफ़ों में भी नाज़िल हुई थी।

2. सूरः नजम। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि यह सूरः बिल्कुल इसी तरह जिस तरह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुई हज़रत ख़लीलुल्लाह व कलीमुल्लाह (हज़रत इब्राहीम व मूसा) अलैहिमस्सलाम पर नाज़िल हो चुकी थी।

3. التائبون العابدون الاية

4. قد افلح المومنون تا فيها خلدون

5. ان المسلمين والمسلمات الاية

6. الذين هم على صلوتهم دائمون تا قائمون

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि इन आयतों को हज़रत हक़ तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम व सैय्यद आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अलावा किसी और को नहीं अता फ़रमाया।

7. يا ايها النبى انا ارسلناك شاهدا ومبشرا ونذيرا

इस आयत की मिसाल देते हुए हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

के बाज़ अवसाफ़ क़ुरआनिया को अल्लाह जल्लेशानुहू ने तौरात में [illegible] फ़रमाया।

8. سورۃ انعام الحمد للہ الذین خلق السمٰوٰت والارض الآیۃ

कअब रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि तौरात की इब्तिदा [illegible] आयत से हुई है।

9. الحمد للہ الذی لم یتخذ ولدا تا وکبرہ تکبیرا

हज़रत कअब की रिवायत के मुताबिक़ तौरात का इख़्तिताम [illegible] आयत पर हुआ।

10. فاعبدہ وتوکل علیہ وما ربک بغافل عما تعملون

हज़रत कअब रज़ियल्लाहु अन्हु ही की एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ तौरात की तत्मीम व तक्मील इसी आयत पर हुई।

11. قل تعالوا اتل ما حرم ربکم علیکم تا دس آیات

हज़रत कअब रज़ियल्लाहु अन्हु की एक और रिवायत के मुताबिक़ [illegible] ये आयतें हैं जो तौरात में सबसे पहले नाज़िल हुईं। इन्हीं की दूसरी रिवायत के मुताबिक़ जब तौरात में सबसे पहले सूरः ईनाम की इब्तिदा[illegible] दस आयतें नाज़िल हुईं।

12. بسم اللہ الرحمن الرحیم

हज़रत बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के सिवा किसी पर नाज़िल न हुई।

13. शुरूआत सूरः जुमआ يسبح للہ ما فی السمٰوٰت تا العزیز الحکیم

हज़रत अबू मैसरा रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि इस आयत का मर्तबा तौरात में सात सौ आयतों के बराबर है।

14. وان علیکم لحافظین کراما کاتبین یعلمون ما تفعلون

15. وما تکون فی شان وما تتلو منہ من قرآن الآیۃ

16. افمن هو قائم علی کل نفس بما کسبت

तर्जुमानुल क़ुरआन हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा, क़ुरआन की आयतः لو لا ان رای برهان की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि जब ज़ुलेख़ा ने चाहा कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के साथ मशग़ूल होकर अपनी नाजाएज़ ख़्वाहिश को पूरा करें तो उस वक़्त माहे किनआन हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने रब की बुरहान देखी और ज़ुलेख़ा के ग़लत इरादे से महफ़ूज़ रहे। रब की बुरहान से मुराद यही आयत मौज़िज़मात हैं जो उस वक़्त सतह दीवार पर ज़ाहिर व नुमायां हो गई थीं। बाज़ ने चौथी आयतः ولا تقربوا الزنا الاية का भी इज़ाफ़ा किया है।

(अल् अतक़ान जि० 1, स० 52-53)

17. सूरः आले इमरान। हज़रत अबू अताफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि इस सूरः का नाम तौरात में "तैय्यबा" है।

18. सूरः कहफ़। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि तौरात में इस सूरः का नाम अल् हायला है।

19. सूरः क़मर। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत है कि इस सूरत का नाम तौरात में "अल् मबीज़ा" है।

20 . सूरः मुल्क। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि तौरात में इस सूरत का नाम "अलमानिआ" है और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत के मुताबिक़ "अल् मुन्जिया" है।

21. सूरः यासीन। हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि इस सूरत का नाम तौरात में "अतअमा" है।

(अल् अतक़ान जि० 1, स० 72-73)

सवालः क़ुरआन का वह कौन सा हिस्सा है जो सिवाए नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के किसी और नबी पर नाज़िल न हुआ?

जवाबः क़ुरआन आलीशान का वह हिस्सा जो सैय्यद आलम व बनी आदम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अलावा किसी और नबी पर नाज़िल नहीं हुआ यह हैः

1. सूरः फ़ातिहा,
2. आयतुल कुर्सी,
3. सूरः बक़रा का आख़िरी रुकू।

इन आयात से मुताल्लिक़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़र[illegible]
कि इन आयात को अल्लाह तआला ने मुझे अर्श के ख़ज़ाने [illegible]
फ़रमाया जो इससे पहले किसी नबी को अता नहीं हुआ।

(अत् अतक़ान जि० 1, स० 51, मदारिज नबुव्वत जि० 1, स०

सवालः मुकर्रर नाज़िल होने वाली आयात और सूरतें कौन सी हैं?

जवाबः मुकर्रर नाज़िल होने वाली सूरतें और आयतें ये हैं:

1. सूरः फ़ातिहा,
2. सूरः इख़्लास,
3. सूरः नहर का आख़िरी हिस्सा,
4. सूरः रोम का शुरू,
5. आयतुर्रूह يسئلونك عن الروح، بنی اسرائیل
6. اقم الصلوٰة طرفی النهار (सूरः हूद)
7. ما كان للنبی والذين آمنوا (सूरः तौबा) (अत् अतक़ान जि०1, स०

सवालः आयात नासिख़ा और मंसूख़ा कौन कौन सी हैं?

जवाबः आयते मंसूख़ा व नासिख़ा नीचे लिखी हैं:

1. كتب عليكم اذا حضر احدكم الموت (सूरः बक़राह, आयत 180)
यह आयते मीरास (सूरः निसा आयत 11, 12) से मंसूख़ है। उलमा[illegible]
मुहक़्क़िक़ीन ने यह भी फ़रमाया है कि यह आयत इस हदीस पाक
मंसूख़ है: ان الله اعطی كل ذی حق حقه فلا وصية لوارث

2. كما كتب على الذين من قبلكم (सूरः बक़राह, आयत 183)
इस आयत का नासिख़ यह आयत है:
احل لكم ليلة الصيام الرفث (सूरः बक़राह, आयत 187)

3. يسئلونك عن الشهر الحرام इसको नसख़ करने वाली आय[illegible]

करीमा: فاقتلوا المشركين حيث وجدتموهم (सूरः तौबा, आयत:5)

4. والذين يتوفون منكم تا الى الحول غير اخراج (सूरः बक़रह, आयत: 240) यह आयत इस आयत से मंसूख़ है:

يتربصن بانفسهن اربعة اشهر وعشرا (सूरः बक़रह, आयत:224)

5. وان تبدوا ما في انفسكم او تخفوه يحاسبكم به الله (सूरः बक़रह, आयत:284) यह आयत: لا يكلف الله نفسا الا وسعها (सूरः बक़रह, आयत:286) से मंसूख़ है।

6. والذين عقدت ايمانكم فاتوهم نصيبهم (सूरः निसा, आयत:33) इसको नसख़ करने वाली आयत है:

واولوا الارحام بعضهم اولى ببعض في كتاب الله. (सूरः इन्फ़ाल, आख़िरी आयत)

7. والتى ياتين الفاحشة من نسائكم (सूरः निसा, आयत:15) यह आयत, आयते नूर यानी: والزاني فاجلدوا كل واحد منهما से मंसूख़ है।

8. فان جاؤك فاحكم بينهم او اعرض عنهم (सूरः माएदा, आयत:42)

इसका नासिख़: وان احكم بينهم بما انزل الله है। (सूरः माएदा, आयत:46)

9. او اخران من غيركم (सूरः माएदा, आयत:106)

इसको नसख़ करने वाली आयत है: واشهدوا ذوى عدل منكم (सूरः तलाक़, आयत:2)

10. ان يكن منكم عشرون صابرون يغلبوا الاية. (सूरः अनफ़ाल, आयत:65) यह आयत इस आयत के बाद वाली आयत:

فان يكن منكم مائة صابرة (सूरः अनफ़ाल, आयत:66) से मंसूख़ है।

11. انفروا خفافا وثقالا (सूरः तौबा, आयत:41) इस आयत का हुक्म मंसूख़ करने वाली बहुत सी आयात हैं जिनको आयते उज़्र कहते हैं।

ليس على الاعمى حرج ولا على المرضى، ليس على الضعفاء मसलन
ما كان المومنون لينفروا كافة और

12. الزانى لا ينكح الا زانية او مشركة (सूरः नूर, आयत:3)

इसको नसख़ करने वाली आयतः وانكحوا الايامى منكم (सूरः नूर, आयत:32)

13. لا يحل لك النساء من بعد الاية. (सूरः अहज़ाब, आयत:152)

यह आयत सूरः अहज़ाब की आयतः انا احللنا لك ازواجك التى से मंसूख़ है।

14. يا ايها الذين امنوا اذا ناجيتم الرسول فقدموا الاية. (सूरः मुजादिला, आयत:12) इस आयत का हुक्म इसके बाद वाली आयतः
ءاشفقتم ان تقدموا الاية. से मंसूख़ है।

15. فاتوا الذين ذهبت ازواجهم مثل ما انفقوا (सूरः मुमतहिना, आयत:11)
यह आयत, आयते सैफ़ यानीः

فاقتلوا المشركين حيث وجدتموهم وخذوهم
واحصروهم واقعدوا لهم كل مرصد

से मंसूख़ है।

16. قم الليل الا قليلا (सूरः मुज़म्मिल, आयत:2)
इस आयत को नसख़ करने वाली इसी सूरत की आख़िरी आयतः
فاقرء وا ما تيسر منه है फिर जब नमाज़ पंचगाना फ़र्ज़ हुई तो इस आख़िरी आयत का उमुमी हुक्म भी मंसूख़ हो गया।

17. فاينما تولوا فثم وجه الله (सूरः बकरह, आयत:115) इस आयत को मंसूख़ करने वाली आयत बकौल हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमाः
فول وجهك شطر المسجد الحرام الاية. (सूरः बकरह, आयत:144) है।

(अल्-इत्तिक़ान, दूसरा हिस्सा, पेज 29-30)

18. واهجرهم هجرًا جميلا (सूरः मुज़म्मिल, आयत:10) यह आयत, आयते

क़िताल यानी: فاقتلوا المشركين الخ (ख़ज़ाइन सूरः मुज़म्मिल) से मंसूख़ है।

19. فاصبر لحكم ربك ولا تكن كصاحب الحوت (सूरः क़लम, आयत:18) बक़ौल बाज़ यह आयत भी आयते क़िताल से मंसूख़ है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान सूरः क़लम)

20. لست عليهم بمصيطر (सूरः ग़ाशिया, आयत:22) इस आयत का हुक्म भी आयत क़िताल से मंसूख़ है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान सूरः क़लम)

सवालः अव्वलीन सूरत जिसका ऐलान सैय्यदुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का मुकर्रमा में किया, कौन सी है?

जवाबः सूरः नजम पहली सूरत है जिसका ऐलान वाजिबुल इज़आन नबी अरकम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का मुकर्रमा में किया।

(अल् अतक़ान जि० 1, स० 33, ख़ज़ाइनुल इरफ़ान सूरः नजम)

सवालः अव्वलीन सूरत जिसमें आयत सज्दा नाज़िल हुई, कौन सी है?

जवाबः सूरः नजम पहली सूरत है जिसमें आयते सज्दा नाज़िल हुई।

(अल् अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन जि० 1, स० 335)

सवालः क़ुरआन की वह आयत जो तौरात में सात सौ आयात का दर्जा रखती है, कौन सी है?

जवाबः सूरः जुमा की पहली आयतः

يسبح لله ما في السموت ... العزيز الحكيم यह वह आयत है जो तौरात में सात सौ आयात का दर्जा रखती है।

(अल् अतक़ान जि० 1, स० 53)

सवालः वे कौन सी आयतें हैं कि जिनको बाज़ नमाज़ों में पढ़ना मकरूह है?

जवाबः आयाते सज्दा इमाम को नमाज़ ईदैन व जुमा और हर वह नमाज़ जिसमें क़िरात आहिस्ता की जाती है पढ़ना मकरूह है।

(ग़ुन्निया स० 473)

सवालः वे कौन सी आयतें हैं जिनको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ ईदैन में पढ़ा करते थे?

जवाबः मुस्लिम शरीफ़ में है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़र अबू वाक़्दी लैसी रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि ईदैन की नमाज़ों में रसूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क्या पढ़ा करते थे तो आपने फ़रमाया, "सूरः क़ाफ़ और सूरः क़मर।"

(इब्ने कसीर प० 27, रु० 15, अल् अतक़ान 1/80)

मुस्लिम शरीफ़ ही की एक दूसरी हदीस के मुताबिक़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईदैन की नमाज़ में सूरः आला, और सूरः ग़ाशिया की तिलावत फ़रमाया करते थे। (इब्ने कसीर प० 30, रु० 12)

सवालः वे कौन सी सूरतें हैं कि जिनको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुमा की फ़ज्र और नमाज़ जुमा में पढ़ा करते थे?

जवाबः मुस्लिम शरीफ़ में है कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़े जुमा में सूरः जुमा और सूरः मुनाफ़िक़ून पढ़ा करते थे। (अल् अतक़ान जि 1, स० 81) बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि रोज़े जुमा नमाज़ फ़ज्र में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसलम सूरः सज्दा और सूरः दहर पढ़ते थे।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान प० 21, रु० 16, अल् अतक़ान जि० 1, स० 81)

सवालः आंहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह फ़रमान कि "इन सूरतों ने मुझे बूढ़ा कर दिया" किनसे मुताल्लिक़ हैं?

जवाबः सूरः हूद, सूरः वाक़िआ, सूरः मुरसलात, सूरः नबा, सूरः शम्स और सूरः कुविरत से मुताल्लिक़ सुलताने रिसालत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे कि इन सूरतों ने मुझे बूढ़ा कर दिया।

(इब्ने कसीर प० 27, रु० 11)

सवालः क़ुरआन की वह कौनसी आयत है जो एक हज़ार आयतों से भी अफ़ज़ल?

जवाबः सूरः हदीद की अव्वल आयतः

هو الاول والآخر الآية. यह ऐसी आयत है जो एक हज़ार आयतों से अफ़ज़ल है। (इब्ने कसीर प० 27, रु० 11)

सवालः क़ुरआन की वह कौनसी आयत है जिस पर सिर्फ़ एक सहाबी के न कोई अमल कर सका न कर सकेगा?

जवाबः सूरः मुजादला की आयतः

يا ايها الذين امنوا اذا ناجيتم الرسول الاية. मुफ़स्सिरीन किराम ने फ़रमाया कि जब इस आयत का नुज़ूल हुआ तो सदक़ा देने का हुक्म हुआ तो इस सदक़ा देने के हुक्म पर सिर्फ़ हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को अमल करने का मौक़ा मिला कि उन्होंने एक दीनार सदक़ा फ़रमाया। फिर अपने नबी मोहतरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दस सवालात अर्ज़ करके जवाबात से सरफ़राज़ हुए। उसके बाद यह हुक्म मंसूख़ हो गया और रुख़सत नाज़िल हुई। सिवाए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के और किसी को इस पर अमल करने का वक़्त न मिला।

(ख़ज़ाइन प० 28, रु० 2)

सवालः वह आयते सज्दा कौन सी है कि बाद तिलावत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सज्दा किया तो उन तमाम काफ़िरों ने भी सज्दा किया जो इस मज्लिस में मौजूद थे?

जवाबः वह सूरः नजम की आयत सज्दा है। एक दिन सैय्यदुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तबलीग़ व अन्ज़ार की ग़र्ज़ से मुश्रिकों के सामने सूरः नजम की तिलावत फ़रमा रहे थे। जब आप ने सूरत तमाम की तोसज्दा किया। दूसरे मुसलमानों ने भी सज्दा किया। मुश्रिकों ने भी मुसलमानों की मुआफ़िक़ीन की, वे भी सज्दे में चले गए। उस वक़्त मस्जिदे हराम में कोई काफ़िरऐसा न था जिसने सज्दा न किया हो सिवाए उमैय्या बिन ख़लफ़, या वलीद बिन मग़ैरा या उत्बा बिन रबीअ के उसने ज़मीन से एक मुट्ठी मिट्टी उठाकर पेशानी पर मली और कहने लगे यही मेरा सज्दा है।

(इब्ने कसीर प० 27, रु० 14, मदारिज नबुव्वत जि० 2, स० 65)

सवालः वे आयतें कौनसी हैं जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर बराहेरास्त व बिला वास्ता नाज़िल हुई?

जवाबः सूरः बक़रा की आख़िरी आयतं हुज़ूरे पुरनूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर बराहेरास्त कि महबूब व मुहिब्ब के दर्मियान कोई वास्ता न था। शबे मैराज को नाज़िल हुई। (इब्ने कसीर प० 24, रु० 6)

सवालः वे सूरतें कौन सी हैं जिनको क़ुरआन का दरवाज़ा ... जाता है?

जवाबः "हामीम" वाली सूरतों को क़ुरआन का दरवाज़ा कहा ... है।

सवालः सूरः फ़ातिहा के कितने नाम हैं और क्या-क्या?

जवाबः सूरः फ़ातिहा के अस्मा हैं:

1. फ़ातिहतुल किताब, 2. फ़ातिहातुल क़ुरआन, 3. उम्मुल कि... 4. उम्मुल क़ुरआन, 5. क़ुराअनुल अज़ीम, 6. सबआ मसानी, 7. ... वाफ़िआ, 8. अल् कन्ज़, 9. अल् काफ़िआ, 10. अलूअसास, 11. अल्... 12. सूरः हम्द, 13. सूरः शुक्र, 14. सूरः हम्द औला, 15. सूरः ... क़िसरा, 16. राक़िया, 17. शाफ़िया, 18. शिफ़ा, 19. सूरः सलात, ... ताज़िमा, 21. सूरः दुआ, 22. सूरः सवाल, 23. सूरः तालीमुल मस्... 24. सूरः मुनाजात, 25. सूरः तफ़वीज़, 26. सूरः दाफ़िया, 27. ... फ़ातिहा।

(अल् अतक़ान स० 1, स० 70, ...

सवालः क़ुरआन पाक के कितने नाम हैं और क्या क्या?

जवाबः क़ुरआन आलीशान के अस्मा में से 55 ऐसे हैं जो क़ुरआन ... की मुतफ़र्रिक़ आयतों में ज़िक्र हैं। जिनकी तफ़्सील नीचे लिखी है:

1. किताब,
2. मुबीन, حٰمٓ والكتاب المبين
3. क़ुरआन,
4. करीम, انه لقرآن كريم,
5. कलाम الله حتى يسمع كلام الله,
6. नूर وانزلنا اليكم نورًا مبينا
7. हुदा,
8. रहमत هدى ورحمة للمؤمنين
9. फ़ुरक़ान ونزل الفرقان على عبده
10. शिफ़ा, وننزل من القرآن ما هو شفاءً

11. मौइज़ा, قد جآئكم موعظة من ربكم
12. ज़िक्र,
13. मुबारक, هذا ذكر مبارك انزلناه
14. उलया, وانه فى ام الكتاب لعلى حكيم
15. हिकमत, حكمة بالغة
16. हकीम, تلك آيت الكتاب الحكيم
17. मुहैमिन, مصدقًا لما بين يديه من الكتاب ومهيمنا عليه
18. हबल, واعتصموا بحبل الله
19. सिराते मुस्तकीम, وان هذا صراطى مستقيم,
20. क़य्यिम قيمًا لينذر
21. कौल,
22. फसल, انه لقول فصل
23. न-ब-इल अज़ीम, عم يتسائلون عن النباء العظيم
24. अहसनुल हदीस,
25. मसानी,
26. मुताशाबेह, الله نزل احسن الحديث كتابا متشابها مثانى
27. तंज़ील وانه لتنزيل رب العلمين,
28. रूह واوحينا اليك روحًا من امرنا,
29. वही انما انذركم بالوحى
30. अरबी قرانا عربيا
31. बसाइर هذا بصائرٌ
32. बयान هذا بيان للناس
33. इल्म من بعد ما جاءك من العلم
34. हक़ ان هذا لهوا القصص الحق

35. हादी ان هذا القرآن يهدى
36. अजब قرانا عجبا
37. तज़्किरा وانه لتذكره
38. उरवतुल वुस्क़ा فقد استمسك بالعروة الوثقى
39. सिद्क़ والذين جاء بالصدق
40. अद्ल وتمت كلمة ربك صدقا وعدلا
41. अम्र ذلك امر الله انزله اليكم
42. मुनादी مناديا ينادى للايمان
43. बुशरा هدىً وبشرى
44. मजीद بل هو قرآن مجيد
45. ज़ुबूर ولقد كتبنا فى الزبور
46. बशीर,
47. नज़ीर قرآنا عربيا لقوم يعلمون بشيرًا ونذيرًا
48. अज़ीज़ وانه لكتاب عزيز
49. बलाग़ هذا بلاغ للناس
50. क़सस احسن القصص
51. सहफ़,
52. मुकर्रमा,
53. मरफ़ूआ,
54. मुताहिरा فى صحف مكرمة مرفوعة مطهرة
55. बुरहान। (अल् अतक़ान फी उलूमुल क़ुरआन जि० 1, स० 67)

सवालः क़ुरआन पाक में कितने अंबिया मुरसलीन के नाम मज़्कूर हैं?

जवाबः क़ुरआन करीम फ़ुरक़ाने अज़ीम में सिर्फ़ पच्चीस मशहूर अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम के नाम हैं जो नीचे लिखे हैं:

1. हज़रत आदम, 2. हज़रत नूह, 3. हज़रत इदरीस, 4. हज़रत

इब्राहीम, 5. हज़रत इस्माईल, 6. हज़रत इस्हाक़, 7. हज़रत याक़ूब, 8. हज़रत यूसुफ़, 9. हज़रत लूत, 10. हज़रत शुएब, 11. हज़रत सालेह, 12. हज़रत शुऐब, 13. हज़रत मूसा, 14. हज़रत हारून, 15. हज़रत दाऊद, 16. हज़रत सुलेमान, 17. हज़रत अय्यूब, 18. हज़रत ज़ुलकिफ़्ल, 19. हज़रत यूनुस, 20. हज़रत इलयास, 21. हज़रत यसाअ, 22. हज़रत ज़करिया, 23. हज़रत यह्या, 24. हज़रत ईसा और 25. हज़रत मुहम्मद अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम। (अल् अतक़ान जि० 2, स० 175 से 179)

(हज़रत उज़ैर, हज़रत ज़ुलक़रनैन और हज़रत लुक़मान की नबुव्वत में इख़्तिलाफ़ है।)

सवालः क़ुरआन पाक में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कितने नाम हैं?

जवाबः सात नामः

1. मुहम्मद, 2. अहमद, 3. ताहा, 4. यासीन, 5. मुज़म्मिल, 6. मुदस्सिर, अब्दुल्लाह।

(तफ़्सीर रूहुल बयान जि० 9, स० 365, हाशिया 6, जलालैन 368)

सवालः क़ुरआन पाक में जिन फ़रिश्तों के नाम आए हैं वह कितने हैं और कौन से हैं?

जवाबः क़ुरआन पाक में बारह फ़रिश्तों के नाम ज़िक्र किए गए हैं जो नीचे लिखे हैं:

1. ज़िब्राईल अलैहिस्सलाम,
2. मीकाईल अलैहिस्सलाम जिनका ज़िक्र बार-बार आया है,
3. हारूत अलैहिस्सलाम,
4. मारूत अलैहिस्सलाम। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया ये आसमानी फ़रिश्तों में से दो फ़रिश्ते हैं।
5. रअद। यह भी एक फ़रिश्ते का नाम है जो तस्बीह और हम्दे इलाही में मशगूल रहता है और अब्र पर हुक्मरानी करता है।
6. बर्क़। इब्ने हातिम ने मुस्लिम के हवाले से रिवायत की है कि यह एक फ़रिश्ते का नाम है जिसके चार मुँह हैं। वजह इंसान, वजह बैल, वजह गधा, वजह शेर। जिस वक़्त अपनी दुम हिलाता है तो

आँखों को ख़ैरा कर देने वाली चमक होती है जिसको बर्क़ कहते हैं।

7. मालिक जो दोज़ख़ का दारोग़ा है।
8. सजल। यह भी एक फ़रिश्ता है जो आमालनामों पर मुवक्किल है। हारूत व मारूत इन्हीं के ऐवान व मददगार थे।
9. क़ईद। हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाह अलैहि ने बयान किया है कि यह भी एक फ़रिश्ता है जो बुराईयों को लिखने पर मामूर है।

इस तरह ये सब फ़रिश्ते हुए जिनका नाम क़ुरआन पाक में आया है। इनके अलावा तीन नामों में उलमाए मुहक़्क़िक़ीन का इख़्तिलाफ़ है, वे ये हैं:

10. ज़ुलक़रनैन। इब्ने अबि हातिम ने कई रिवायतों से साबित किया है कि यह भी फ़रिश्तों में से एक फ़रिश्ता है।
11. रूह। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमासे इब्ने अबि हातिम ने यह भी रिवायत की है कि रूह भी एक फ़रिश्ता है जो तमाम फ़रिश्तों में अज़ रूए ख़िलक़त जिस्म में सबसे बड़ा है।
12. सकीना। राग़िब ने अपनी किताब "मुफ़र्रिदात" में बयान किया है कि यह भी एक फ़रिश्ता है जो मोमिनों के दिलों को तस्कीन देता है और अमन अता करता है। (अल् अतक़ान जि० 2, स० 180)

सवालः क़ुरआन पाक में अंबिया मुरसलीन के अलावा जिन दूसरे लोगों के नाम ज़िक्र किए गए हैं वे कौन-कौन हैं?

जवाबः अंबिया व मुरसलीन अलैहिमुस्सलाम के अलावा जिन दूसरे लोगों का नाम क़ुरआन पाक में आया है वे ये हैं:

1. हज़रत इमरान। इमरान नाम के दो बुज़ुर्ग गुज़रे हैं एक इमरान बिन यसहर बिन फ़ाहस बिन लावा बिन याक़ूब, ये हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के वालिद हैं दूसरे इमरान बिन मासान, यह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के नाना यानी हज़रत मरियम अलैहिमस्सलाम के वालिद हैं और आयते क़ुरआनिया में इन ही दूसरे इमरान का ज़िक्र है। दोनों इमरान के दर्मियान अठ्ठारह सौ साल का फ़ासला है।
2. हज़रत अज़ीज़। उनकी नबुव्वत में इख़्तिलाफ़ है। (बख़्ते नसर के

हमले के बाद येरूश्लम और पूरी यहूदी दुनिया ज़ेर व ज़बर हो गई। उनकी तहज़ीब, रिवायत, ज़बान और दीनी किताब तौरेत शरीफ़ तक को अहले बाबुल ने तहस नहस कर दिया। फिर हज़रत अज़ीज़ ही वह बुज़ुर्ग हैं जिन्होंने अपनी याद्दाश्त की बुनियाद पर तौरेत शरीफ़ के पुराने नुस्ख़े को तर्तीब दिया। कहते हैं कि तौरेत शरीफ़ के सिर्फ़ आप ही हाफ़िज़ हुए। किसी और पर यह फ़ज़्ले ख़ुदावंदी नहीं हुआ। आपका ज़माना 450 क़ब्ल मसीह बताया जाता है।)

3. हज़रत तबा। यह नेक लोगों में से थे उनका ज़िक्र "क़ौमु तबा" में है।
4. हज़रत लुक़मान। (आपकी नबुव्वत में इख़्तिलाफ़ है। अक्सर उलमा इस तरफ़ गए हैं कि आप निहायत बाकमाल बुज़ुर्ग, साहिबे इल्म व हिकमत, वली और अपने दौर के क़ाज़ी व मुफ़्ती थे मगर नबी नहीं। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम से आपने इल्म व हिकमत और वअज़ व मारिफ़त का वाफ़र हिस्सा हासिल किया था। और ख़ुद कामिल व मुकम्मल थे। एक हज़ार साल उम्र पाई और चार हज़ार अंबिया किराम की बारगाह में हाज़िरी पाने का शर्फ़ हासिल हुआ।)
5. हज़रत याक़ूबः (सूरः मरियम के शुरू में ज़िक्र है। यह याक़ूब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के वालिद नहीं जो नबी बरहक़ हैं बल्कि यह कोई दूसरे बुज़ुर्ग हैं जो हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम के मौरिसे आला हैं।)
6. हज़रत तक़ीः انی اعوذ بالرحمن منك ان كنت تقيا (مريم)

एक ऐसे आदमी का नाम है जो अपने ज़माने का मशहूर आलिमे दीन था और तक़्वे तहारत में हर एक ख़ास व आम की ज़बान पर था। एक क़ौल यह भी है कि कि तक़ी हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा का चचाज़ाद भाई था। हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम इसी की सूरत में तशरीफ़ लाए थे।

7. हज़रत यूसुफ़ः जिनका ज़िक्र सूरः मोमिन की आयतः

ولقد جائكم يوسف من قبل में है (एक क़ौल के मुताबिक़ यह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम नहीं हैं बल्कि कोई दूसरे बुज़ुर्ग हैं लेकिन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि यहाँ हज़रत यूसुफ़

अलैहिस्सलाम का तज़्किरा है।)

(जलालैन स० 393, अल् अतक़ान जि० 2, स० 180)

हज़रत तालूत इस्राईल से अपना मुक़ाबिल तलब किया तो बनी इस्राईल इसकी क़ुव्वत व जसामत देखकर घबरा गए क्योंकि यह बड़ा जाबिर, क़वी, शहज़ोर, लंबा चौड़ा था। तालूत ने अपने लश्कर में ऐलान किया कि जो शख़्स जालूत को क़त्ल करे मैं अपनी बेटी उसके निकाह में दूंगा और आधा मुल्क भी मगर किस ने इसका जवाब नहीं दिया तो तालूत ने अपने नबी हज़रत शमूवील अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया बारगाहे इलाही में दुआ करें। आपने दुआ की तो बताया गया कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम जालूत को क़त्ल करेंगे। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम दस्ते मुबारक में फ़लाखुन लेकर मुक़ाबिल हुए। फ़लाखुन में पत्थर रखकर पूरी क़ुव्वत के साथ चक्कर दिया फिर निशाना बनाकर जालूत की पेशानी पर मारा और वह पत्थर उसकी पेशानी को तोड़कर पीछे निकल गया और जालूत वहीं ढेर हो गया। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने जालूत की लाश को लाकर तालूत के सामने रख दिया और तालूत ने वादे के मुताबिक़ आधा मुल्क दिया और अपनी बेटी का निकाह भी कर दिया। एक मुद्दत के बाद तालूत ने वफ़ात पाई और तमाम मुल्क पर दाऊद अलैहिस्सलाम की सलतनत क़ायम हो गई।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान प० 2, रु० आख़िरी)

सवालः क़ुरआन में किस ख़ुशनसीब सहाबी का नाम आया है?

जवाबः यह ख़ुशनसीब सहाबी हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जिनका नाम क़ुरआन पाक (सूरः अहज़ाब) में आया है। बाज़ हज़रात ने हज़रत सजल रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम भी बतलाया है जो बारगाहे नबुव्वत के कातिबों में से थे जैसे कि अबूदाऊद शरीफ़ में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत में इस की तसरीह है।

(अल् अतक़ान जि० 2, सत्र 180)

(सजल से मुताल्लिक़ एक क़ौल गुज़र चुका है कि यह एक फ़रिश्ता है।)

सवालः क़ुरआन पाक में किस पाक औरत का नाम आया है?

जवाबः यह हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा हैं जिनका नाम क़ुरआन मजीद फ़ुरक़ाने हमीद में बार बार आया है। और बाज़ हज़रात के नज़दीक एक औरत का नाम है बनाम बअल क़ुरआन में (अतद ऊना बअला) मौजूद है जिसकी लोग इबादत किया करते थे।

(अल् अतक़ान जि० 2, स० 181)

सवालः क़ुरआन पाक में किन किन काफ़िरों के नाम आए हैं?

जवाबः जिन कुफ़्फ़ार के नाम क़ुरआन पाक में ज़िक्र किए गए हैं वह हस्बे ज़ैल हैं:

1. क़ारूनः ज़र अंदोज़ी और बख़ीली में दुनिया का सबसे मशहूर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का चचा या चचाज़ाद भाई यसहर का बेटा था। ज़कात का इंकार करके काफ़िर हो गया। और अंजामकार ज़मीन में धंसा दिया गया।

2. जालूतः बहुत ही शहज़ोर, क़वी जिस्म, क़द्दावर, जाबिर, ज़ालिम और बेरहम बादशाह था। उसने यहूद को तितर बितर कर दिया था। शाही ख़ानदान के चालीस नौनिहालों को गिरफ़्तार करके अपना ग़ुलाम बना लिया था। तालूत बनी इस्राईल के बादशाह मुंतख़ब हुए जिन्होंने हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को जालूत के क़त्ल पर तैयार किया। दौराने मुक़ाबला जालूत हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के हाथों जहन्नम रसीद हुआ।

3. हामानः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में फ़िरऔन का वज़ीर था। जिसने फ़िरऔन के लिए दुनिया में सबसे ऊँचा मीनार तैयार कराया था। कहते हैं कि पक्की ईंट को ईजाद करने वाला यही है और सबसे पहले पक्की ईंट का इस्तेमाल इसने फ़िरऔनी बुर्ज में किया था।

4. बुशराः इब्ने अबि हातिम ने कहा कि जब मालिक बिन ज़अर ख़ज़ाई मदीनी ने उस कुऐं में डोल डाला जिसमें हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम थे तो इसने ख़ुशी में पुकारा, "या बुशरा हाज़ा ग़ुलाम"। बुशरा मदीनी क़ाफ़िले के सरदार का नाम था।

5. आज़रः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि आज़र के मानी बुत है और यह भी रिवायत है कि आज़र हज़रत इब्राहीम

अलैहिस्सलाम के चचा का नाम था। बाज़ लोगों ने कहा कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वालिद भी इस नाम से मशहूर थे। मगर सही यह है कि आप के वालिद माजिद का नाम तारख़ था जैसा कि इब्ने अबि हातिम ने ज़हाक के तरीक़ पर हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की।

6. **अलनसी:** बनी कनाना के क़बीले में एक शख़्स अलनसी नाम का गुज़रा है जो माहे मुहर्रम को माह सफ़र में गड़बड़ कर देता था ताकि माहे हराम में लूटमार करने को हलाल बनाया जा सके और माहे मुहर्रम में नाजाएज़ तरीक़े से हासिल किए गए माल को हराम होने से बचाया जा सके।

(अल् अतक़ान जि० 2, स० 181)

सवाल: क़ुरआन पाक में मज़्कूर होने वाले अलक़ाब कौन कौन से हैं?

जवाब: क़ुरआन मजीद में वाक़ेअ होने वाले अलक़ाब आठ हैं जो नीचे लिखे हैं:

1. **इस्राईल:** यह हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम का लक़ब है। क़ुरआन मजीद में यहूदियों को "या बनी इस्राईल" ही कहकर मुख़ातिब बनाया गया है कहीं भी "या बनी याक़ूब" के साथ ख़िताब नहीं हुआ। इस्राईल के लफ़्ज़ी माने हैं अब्दुल्लाह। वे लोग माबूदे हक़ीक़ी जल्लेमजदुहू की इबादत करने के साथ इसलिए मुख़ातिब बनाए गए कि उनको पंद व नसीहत करने और ग़फ़लत से चौंकाने के लिए ऐसे लक़ब से ख़िताब करना ही मुनासिब था जो अल्लाह तआला की तरफ़ अब्दियत के साथ मज़ाफ़ हो और इस्राईल ऐसा इस्म है जिसमें ख़ुदा की इबादत की याद दिहानी मानवी हैसियत से मौजूद है।
2. **अल्मसीह:** यह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का लक़ब है। इसके कई माने हैं 1. सिद्दीक़, 2. वह शख़्स जिसके तलवे गहरे न हों, 3. वह शख़्स कि जिस मरीज़ पर हाथ फेरे उसको तंदरुस्ती मिल जाए, 4. जमील व ख़ूबसूरत, 5. ज़मीन को तय करने वाला।
3. **इलयास:** हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि इलयास हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम का लक़ब है।

4. ज़ुल कफ़्लः इसमें कई क़ौल हैं: 1. हज़रत इलयास का लक़ब है, 2. हज़रत यूशाअ का लक़ब है, 3. हज़रत यूसाअ का लक़ब है, 4. हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम का लक़ब है।
5. नूहः यह हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का लक़ब है। असली नाम अब्दुल गफ़्फ़ार है। बकसरत यह गिरया फ़रमाने की वजह से नूह लक़ब हो गया।
6. ज़ुल क़रनैनः इनका नाम असकंदर था या अब्दुल्लाह बिन ज़हाक या मुसअब बिन क़रीन था या अल्मंज़र। ज़ुल क़रनैन इसलिए लक़ब हो गया कि ज़मीन की दोनों शाख़ों (मश्रिक़ व मग़रिब) तक पहुँच गए थे और यह भी कहा जाता है कि दो अज़ीम तरीन मुमलिकतों यानी फ़ारस ओर रोम के बादशाह थे। इसलिए यह लक़ब हो गया। एक क़ौल यह भी है कि उनके सर परदो सींगे थी जिनको वह अपने ताज में छिपाए रखते थे और यह भी क़ौल है कि आप को इल्म ज़ाहिर व बातिन दोनों अता किए गए थे। इनके अलावा और भी अक़्वाल हैं।
7. फ़िरऔनः इसका नाम वलीद बिन मुसअब था जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने का है। इसकी कुन्नियत अबुल अब्बास थी। इसके अलावा शाहाने मिस्र का आम लक़ब फ़िरऔन हुआ करता था।
8. तबाः इसका नाम असद बिन मुल्की कर्ब था। इसके मानने वाले ब-कसरत थे। इसलिए तबा के लक़ब से मशहूर हो गया। एक क़ौल यह भी है कि शाहाने यमन का आम लक़ब तबा होता था।

(अल् अतक़ान जि० 2, स० 183, 184)

सवालः क़ुरआन पाक में वारिद वाहिद कुन्नियत किसकी है और क्यों है?

जवाबः क़ुरआन मजीद में सिवाए अबू लहब के किसी और की कुन्नियत वारिद नहीं है। उसका नाम अब्दुल उज़्ज़ा था। इस नाम का इस्तेमाल क्योंकि शरअन हराम है इसलिए नाम नहीं लिया गया। उसकी कुन्नियत बयान की गई और कुन्नियत के साथ उसका ज़िक्र इस बात

है। (क्योंकि अबू लहब के माने की तरफ़ भी इशारा है कि वह जहन्नमी है। शोला जहन्नम जिसका मुक़द्दर बन चुका है)। वग़ैर धुएं के शोला वाला यानी

(अल् अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन जि० 2, स० 183)

सवालः क़ुरआन पाक में परिन्दों की जिन्स में से किस किस का नाम है?

जवाबः अल्लाह तआला ने परिन्दों की जिन्स से दस क़िस्मों का ज़िक्र क़ुरआन करीम में बयान फ़रमाया है जो नीचे लिखे हैं:

1. अस्सलवाः बटेर की तरह एक छोटा परिन्दा।
2. अल् बऊज़ः मच्छर जिसका वाहिद बऊज़ः है।
3. अज़्ज़ुबाबः मक्खी। कभी ज़ुबात का इतलाक़ शहद की मक्खी और मच्छर पर भी होता है।
4. अन्नहलः शहद की मक्खियाँ जिसका वाहिद नहलः है।
5. अनकबूतः मकड़ी जिसका जाला मशहूर है।
6. अल जरादः टिड्डी जिसका वाहिद जरादः है।
7. अल हदीदः एक मशहूर परिन्दा या बहुत कू कू करने वाला परिन्दा।
8. अल्ग़ुराबः स्याह रंग का एक छोटा सा मशहूर परिन्दा।
9. अबाबीलः स्याह रंग का एक छोटा सा मशहूर परिन्दा।
10. नमूलः चींटी, इसका शुमार भी परिन्दों में है क्योंकि इसके कलाम को सुनकर और समझकर हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम हंसने लगे थे और क़ुरआन के निसूस से परिन्दों की बोली हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को सिखलाई गई थी। इर्शाद है, हमें परिन्दों की बोली सिखाई गई है। हज़रत इब्ने अबि हातिम ने हज़रत शअबी से रिवायत की है कि वह चींटी जिसने दूसरी चींटियों को हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम और उनकी फ़ौज की आमद की ख़बर दी थी, परदार थी और बहुत सारी चींटियाँ परदार होती हैं। लिहाज़ा वह परिन्दों में से है। (अल् अतक़ान जि० 2, स० 183)

सवालः क़ुरआन पाक में जिन्नात में से किस किस का नाम आया है?

जवाबः क़ुरआन मे जिन्नात में से सिर्फ़ इब्लीस का नाम आया है जं

जिन्नात का जद्दे आला कहलाता था। रांदा बारगाह से क़ब्ल उसका नाम बक़ौल हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा "अज़ाज़ील" बक़ौल सुद्दी "अल हारिस" था। ख़ुदाए पाक की सरीह नाफ़रमानी और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से बुग्ज़ व ईनाद की वजह वह ख़ुदाए करीम की हर नेमत व रहमत से मायूस कर दिया गया। इसलिए इब्लीस नाम से मशहूर हो गया। इसकी कुन्नियत अबू करदूस, अबू क़तरा या अबू मर्रा और अबू बेसवी है। (और लक़द शैतान, रजीम, साग़िरीन वग़ैरह है।)

(अल् अतक़ान, जि० 2, स० 181)

सवालः क़ुरआन पाक में कितने क़बाइल के नाम हैं?

जवाबः क़ुरआन करीम फ़ुरक़ाने अज़ीम में सात क़बाइल के नाम मज़्कूर हैं:

1. या जूज, 2. माजूज, 3. आद, 4. समूद, 5. मदयन, 6. क़ुरैश, 7. रोम।

(अल् अतक़ान जि० 2, स० 181)

सवालः क़ुरआन पाक में इज़ाफ़त के साथ जिन क़ौमों के नाम आए हैं वह कौन कौन सी है?

जवाबः क़ुरआन मजीद फ़ुरक़ाने हमीद में जिन क़ौमों का नाम दूसरे इस्मों की तरफ़ इज़ाफ़त के साथ आए हैं, ये हैं:

1. क़ौमे नूह, 2. क़ौमे लूत, 3. क़ौमे तबा, 4. क़ौमे इब्राहीम, 5. अस्हाबु अइकः (क़ौम मदयन), 6. अस्हाबुर्रस्स (क़ौमे समूद), 7. अस्हाबुल उख़्दूद।

(अल् अतक़ान जि० 2, स० 181)

सवालः क़ुरआन पाक में कितने बुतों के नाम मज़्कूर हैं?

जवाबः क़ुरआन शरीफ़ में चौदह असनाम (बुतों) के नाम बयान किए हैं:

1. वद्द, 2. सवाअ,

3. यग़ूस, 4. यऊक़,

5. नसरः बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि यह क़ौमे नूह के पाँच बुत थे। यह क़ौमे नूह के उन लोगों के नाम हैं जो अपनी क़ौम में नेक नामी के साथ मशहूर थे मगर जब वह मर गए तो शैतान ने क़ौमे नूह के दिलों में यह ख़्याल पैदा किया

कि जहाँ लोगों की नशिस्तगाहें थीं वहाँ पत्थरों के निशानात क़ायम क
देने चाहिएं और उन पत्थरों को उन्हीं के नाम से मौसूम करना चाहि
चुनांचे लोगों ने ऐसा किया फिर जब कई पुश्तें गुज़र गयीं तो उनकी पू
होने लगी। आख़िरकार वे अरब के लोगों के नज़दीक माबूद ठहर गए।

6. लात 7. उज़्ज़ा

8. मनातः यह क़ौमे क़ुरैश के बुत थे। बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत इ
अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत है कि लात एक शरीफ़ आद
था जो हाजियों के लिए सत्तू का इंतिज़ाम करता था।

9. अल् रजज़ः अख़फ़श ने अपनी किताब "वाहिद व जमा" मे
बयान किया है, यह भी एक बुत का नाम है।

10. अल् जबत

11. ताग़ूतः इब्ने जरीर ने कहा है यह दोनों भी बुतों के नाम हैं।
मुश्रिकीन उनकी पूजा किया करते थे।

12. अर्रशादः सूरः मोमिन में जिसका ज़िक्र है। किरमानी ने अपनी
किताब "अजाएब" में ज़िक्र किया है कि यह फ़िरऔन के बुतों में से एक
बुत था।

13. बअलः सोने का बुत था। उसी लंबाई बीस गज़ थी।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 23, रु० 8)

एक क़ौल के मुवाफ़िक़ यह क़ौम इलयास का बुत था।

14. आज़रः बक़ौल बाज़ यह भी है कि एक बुत का नाम था।

(अल् अतक़ान जि० 2, स० 181)

सवालः क़ुरआन पाक में किन किन शहरों और जगहों के नाम
ज़िक्र हैं

जवाबः क़ुरआन पाक में मज़्कूर शहरों और जगहों के नाम नीचे लिखे
हैं:

1. बकाः यह शहर मक्का का नाम है।

2. मदीनाः यसरिब बिन अवाइल, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बेटे
इरम बिन साम की औलाद से वह शख़्स है जो सबसे पहले इस सरज़मीन
पर उतरा था लिहाज़ा उसी की जानिब निस्बत करते हुए अव्वलन इस

सरज़मीन का नाम यसरिब हो गया है। ज़माना जाहिलियत में इसका यही नाम रहा। सूरः अहज़ाब में मुनाफ़िक़ों की ज़बानी इसे यसरिब नक़ल फ़रमाया गया है क्योंकि यसरिब का एक मानी फ़साद व गड़बड़ी भी है। इसलिए हदीस शरीफ़ यसरिब कहने की मुमानिअत आई है।

3. **बदरः** यह एक शहर जो मदीना से क़रीब मदीना तैय्यबा और मक्का मुकर्रमा की शाहराह पर वाक़ेअ है।

4. **हुनैनः** मक्का मुकर्रमा और ताएफ़ के दर्मियान ताएफ़ से क़रीब एक बस्ती (जो अब बड़ी आबादी में मुन्तक़िल हो गया है)।

5. **मिस्रः** यह बर्रे आज़म अफ़्रीक़ा में है जहाँ अरबों की तहज़ीब ने अपना गहरा नक़्श जमाया है और यह पुराने ज़माने की वह मशहूर आबादी है जहाँ अंबिया व मुरसलीन अलैहिमुस्सलाम की सकूनत रही।

6. **बाबुलः** मुल्क ईराक़ का एक पुराना और मशहूर शहर है।

7. **अल ऐकाः** क़ौमे शुएब की आबादियों का एक इलाक़ा।

8. **तैकाः** क़ौमे शुएब के शहर का नाम (जिसका अब नाम व निशान नहीं है)।

9. **अर्रक़ीमः** हज़रत कअब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि "रक़ीम उस आबादी का नाम है जहाँ से असहाबे कहफ़ निकले थे।"

10. **हर्दः** सुद्दी ने कहा है कि हर्द एक बस्ती का नाम है।

11. **हिज्रः** मुल्के शाम के इर्दगिर्द और वादी क़ुरा के नज़दीक क़ौमे समूद के पहाड़ी मकानों का मजमूआ।

12. **अल् कहफ़ः** एक बुलंद व बाला पहाड़ की आग़ोश में क़ुदरती तौर पर तराशा हुआ एक घर।

13. **जमाः** मुज़दलफ़ा को कहते हैं।

14. **नक़ुआः** किरमानी ने बयान किया है अरफ़ात और मुज़दलफ़ा के दर्मियान एक जगह का नाम है।

15. **अस्सरीमः** हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने रिवायत की है कि मुल्के यमन में एक ख़ित्ता ज़मीन का नाम है।

16. **अल्जज़ुरः** एक ज़मीन का नाम।

17. **अत्ताग़ियाः** किरमानी ने बयान किया है कि उस सरज़मीन का

नाम है जहाँ क़ौमे समूद को हलाक किया गया।

(अल् अतक़ान जि० 2, स० 182)

सवालः क़ुरआन पाक में कितने पहाड़ और वादियों के नाम आए हैं?

जवाबः क़ुरआन करीम में जिन पहाड़ों और वादियों के नाम आए हैं यह हैं:

1. ओहदः एक पहाड़ है जो मदीना मुनव्वरा से तीन मील की दूरी पर था। अब ओहद के ज़ेरे साए एक लंबा चौड़ी आबादी फैल गई है जो मदीना की आबादी से गोया मिल गई है।

2. मशअरे हरामः मुज़दलफ़ा के एक पहाड़ का नाम है।

3. तूरे सीनाः वह मुबारक पहाड़ जहाँ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला की तरफ़ से आवाज़ दी गई थी।

4. अहक़ाफ़ः उम्मान और हज़रमूत के दर्मियान एक रेगिस्तानी पहाड़। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि यह मुल्के शाम में एक पहाड़ है।

5. जूदीः एक मशहूर पहाड़। अब इसके किनारे एक शहर भी है जिसको हसन बिन उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने आबाद किया था।

6. रक़ीमः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि रक़ीम ऐला और उक़बान के दर्मियान एक वादी का नाम है और हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि रक़ीम इस वादी का नाम है जहाँ अस्हाबे कहफ़ आराम फ़रमा रहे हैं।

7. क़ाफ़ः एक पहाड़ का नाम है।

8. तूवाः इस वादी का नाम जिसको हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने रात के वक़्त तय फ़रमाया। यह सरज़मीन ऐला की एक वादी है जो फ़लस्तीन में है जिसे दो मर्तबा मुक़द्दस किया गया।

9. इरमः इब्ने अबि हातिम ने रिवायत की है कि यह एक वादी का नाम है।

(अल अतक़ान जि० 2, स० 182)

सवालः क़ुरआन पाक में इज़ाफ़त मकानी के साथ कितने नाम

मज़्कूर हैं?

जवाबः क़ुरआने अज़ीम में इज़ाफ़त मकानी के साथ जो नाम आए हैं नीचे लिखे हैं:

1. उम्मीः उम्मुल क़ुरा (मक्का) की तरफ़ निस्बत।

2. अबक़रीः अबक़र की जानिब मंसूब है जो जिन्नातों की जगह है और हर एक नादिर चीज़ उसी की तरफ़ मंसूब की जाती है।

3. सामरीः यह भी एक जगह की तरफ़ मंसूब है जिसको सामरून या सामरा कहा जाता है।

4. अरबीः यह अरबा की तरफ़ मंसूब है जो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के घर का सहन था जहाँ से आबे ज़मज़म तेज़ी के साथ बहा था। अब इस आंगन की वजह से पूरे मुल्क को अरब कहते हैं। जिसकी जानिब यह मंसूब है। (अल अतक़ान जि० 2, स० 183

सवालः क़ुरआन पाक में किन किन सय्यारों के नाम मस्तूर हैं?

जवाबः क़ुरआन पाक में चार सय्यारों के नाम मज़्कूर हैं और वे ये हैं:

1. शम्स, 2. क़मर, 3. तारिक़, 4. शोअरा।

(अल अतक़ान जि० 2, स० 183)

सवालः क़ुरआन पाक में आख़िरत के मकानों में से किस किस का नाम आया है?

जवाबः क़ुरआन पाक में आख़िरत के मकानों में से नीचे लिखी जगहों के नाम आए हैं:

1. **अल् फ़िरदौसः** जन्नत के मकानों में सबसे आला मकान।

2. **इल्लियूनः** या तो जन्नत के अंदर एक आला मकान का नाम है या जहाँ सालिहीन के आमाल तहरीर हैं।

3. **अलकौसरः** हदीस मुतावातिर से साबित है कि यह जन्नत की एक अज़ीम नहर है।

4. **सलसबील**

5. **तसनीमः** जन्नत के दो चश्मे।

6. **सिज्जीनः** कुफ़्फ़ार की रूहों का ठिकाना

7. **सऊदः** जहन्नम के एक पहाड़ का नाम

8. ग़य्यि: हज़रत इब्ने मसऊद ने फ़रमाया कि एक वादी का नाम है।

9. मौबिक़: बक़ौल इकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु जहन्नम की एक नदी है जिसमें पीप बहती है।

10. वैल: जहन्नम के अंदर ख़ून की वह गहरी नदी जिसकी तह तक पहुँचने के लिए कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन चालीस साल तक ग़ोता खाएंगे।

11. सईर: जहन्नम में कच्च लहू (ताज़ा ख़ून) की एक नदी।

12. आसाम

13. सुह्क़

14. साइल: जहन्नम की नदियाँ जिसमें ख़ून, पीप और कै बहती हैं।

15. फ़लक़: जहन्नम के एक अन्धे कुएँ का नाम।

16. तहमूम - जहन्नम का एक स्याह तरीन धुवां।

(अल अतक़ान जि० 2, स० 183)

सवाल: क़ुरआन पाक में इस्लामी महीनों में किस किस का नाम आया है?

जवाब: क़ुरआन करीम में इस्लामी महीनों में से सिर्फ़ माह ''रमज़ान'' का नाम सराहतन आया है। (तफ़्सीर नईमी जि० 2, स० 217)

सवाल: क़ुरआन पाक में अल्लाह तआला ने कितने अंबिया किराम को बिरादर क़ौम का ख़िताब दिया?

जवाब: पाँच अंबिया किराम को यह ख़िताब मुस्ताब फ़रमाया:

1. नूह अलैहिस्सलाम اذ قال لهم اخوهم نوح
2. हज़रत हूद अलैहिस्सलाम, والى عاد اخاهم هودا
3. हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम والى ثمود اخاهم صالحا
4. हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम والى مدين اخاهم شعيبا
5. हज़रत लूत अलैहिस्सलाम اذ قال لهم اخوهم لوط الا تتقون

(मआरिज नबुव्वत जि० 1, स० 85)

सवाल: क़ुरआन पाक को किताबी शक्ल में सबसे पहले किसने जमा किया?

जवाबः क़ुरआन करीम को तो सबसे पहले साहिबे क़ुरआन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ही तर्तीब दिया था लेकिन किताबी शक्ल में जमा करवाने की सआदत उज़मा सबसे पहले हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की सलाह व मशवरे से हासिल हुई। हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन तमाम अस्हाब रज़ियल्लाहु अन्हुम को जमा फ़रमाया जो बारगाहे रिसालत में किताबते वही की ख़िदमत अंजाम देते थे। और उन्हें आयते क़ुरआनिया को यकजा जमा करने का हुक्म सादिर फ़रमाया। हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु जो इस जमाअत बाकरामत के अमीर और मोहतमिम थे। बड़ी मेहनत व जांफ़शानी से इस ख़िदमत को अंजाम देकर बेशुमार फ़ैज़ व बरकात के हामिल हुए।

(तफ़्सीर नईमी जि० 1, स०14, अल् अतक़ान जि० 1, स० 78)

सवालः हज़रत उस्मान ग़नी ने क़ुरआन पाक के कुल कितने नुस्ख़े तैयार करवाए थे और कहाँ कहाँ भेजे थे?

जवाबः जामेअ क़ुरआन हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में क़ुरआन पाक के असल नुस्ख़े से पाँच या छः नुस्ख़े नक़ल तैयार करवाए थे। इब्ने अबि दाऊद ने कहा कि अबू हातिम बहसतानी ने फ़रमाया कि कुल सात मसहफ़ तैयार करवाए थे। जिनमें से एक एक मसहफ़ मक्का, शाम, यमन, बहरीन, बसरा और कूफ़ा इरसाल फ़रमाया और मदीना मुनव्वरा में महफ़ूज़ रखा।

(अल् अतक़ान जि० 1, स० 80)

सवालः क़ुरआन पाक में ऐराब किसने लगाए?

जवाबः क़ुरआन पाक में ऐराब लगाने से मुताल्लिक़ मशहूर यह है कि यह काम हिज्जाज बिन यूसुफ़ ने किया या हिज्जाज बिन यूसुफ़ के हुक्म से अबू असवद दइली ताबई ने अंजाम दिया।

(तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 16)

सवालः क़ुरआन पाक में सूरतों के नाम किसने लिखे?

जवाबः क़ुरआन करीम में सूरतों के नाम भी हिज्जाज बिन यूसुफ़ ने लिखे। (तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 16)

सवालः क़ुरआन पाक में मद और वक़्फ़ की अलामतें कि... लगायीं?

जवाबः क़ुरआन करीम में मद व वक़्फ़ के निशानात ख़लील ... अहमद फ़राएदी ने लगाए। (तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० ...)

सवालः क़ुरआन पाक में निस्फ़, रुबअ, और सुलुस के निशा... किस दौर में लगाए गए?

जवाबः बाज़ ने कहा कि क़ुरआन के तीस पारे और इसमें निस्फ़, ... और सुलुस के निशानात मामून अब्बासी के ज़माने में लगाए गए।

(तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० ...)

सवालः क़ुरआन पाक में रुकू किसने मुताय्यन किया और कि... ऐतिबार से?

जवाबः हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु रमज़ान शरीफ़ ... नमाज़ की नमाज़ तरावीह में जिस क़द्र क़ुरआन पाक पढ़कर रुकू फ़रमा... थे, उतने हिस्से को रुकू क़रार दिया गया और उस जगह क़ुरआन ... हाशिए पर "एन"ع लगा दिया गया। बाज़ कहते हैं कि यह उमरू के ना... का ऐन है और बाज़ कहते हैं कि उस्मान के नाम का लेकिन सही ... है कि लफ़्ज़ रुकू का ऐन है। (तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० ...)

सवालः क़ुरआन पाक की आयतों की तादाद कितनी है?

जवाबः तादाद आयत क़ुरआनिया से मुताल्लिक़ कई क़ौल हैं:

1. छः हज़ार पाँच सौ,
2. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि आय... क़ुरआनिया की तादाद छः हज़ार छः सौ सोलह।
3. अल्लामा अबू उम्रदानी ने अपनी किताब "अलबयान" में लिखा है कि आयाते क़ुरआनिया की तादाद छः हज़ार होने पर उलमा का इत्ति... है। इससे ऊपर पर इख़्तिलाफ़। बाज़ इस पर और ज़ाएद नहीं बतलाते। बाज़ छः हज़ार से दो सौ चार आयत ज़ाए बतलाते हैं। बाज़ दो सौ चौदह आयात। बाज़ दो सौ उन्नीस। बाज़ दो सौ पच्चीस और बाज़ दो सौ छत्तीस आयत ज़ाएद बतलाते हैं।

(अल् अतक़ान जि० 1, स० 89, इब्ने कसीर सूरः फ़ातेहा...)

सवालः क़ुरआन पाक के कलिमात की तादाद कितनी है?

जवाबः तादाद कलिमात क़ुरआन के सिलसिले में चंद क़ौल नीचे लिखे हैं:

1. सतत्तर हज़ार नौ सौ चौंतीस (77934)
2. सतत्तर हज़ार चार सौ सैंतीस (77437)
3. सतत्तर हज़ार दो सौ सतत्तर (77277)
4. बक़ौल हज़रत अता बिन यसार रज़ियल्लाहु अन्हु सत्तर हज़ार चार सौ उंतालिस (70439) (तफ़्सीर इब्ने कसीर सूरः फ़ातेहा)

सवालः क़ुरआन पाक के हर्फ़ की तादाद कितनी है?

जवाबः हरूफ़ क़ुरआनी की तादाद से मुताल्लिक़ मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं। जो नीचे लिखी हैं:

1. तिबरानी में हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि क़ुरआन में दस लाख सत्ताइस हज़ार (1027000) हरूफ़ हैं। यह तादाद इन तमाम आयत को भी शामिल है जिनका हुक्म मंसूख़ हो चुका है।
2. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत के मुताबिक़ हरूफ़ क़ुरआनी की तादाद तीन लाख तेईस हज़ार छः सौ इकहत्तर (323671) है।
3. हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाह अलैहि से मरवी है कि कुल हरूफ़ क़ुरआन शरीफ़ के तीन लाख इक्कीस हज़ार एक सौ अस्सी (321180) है।
4. हज़रत फ़ज़्ल बिन अता फ़रमाते हैं कि क़ुरआन पाक में कुल तीन लाख तेईस हज़ार पंद्रह हरूफ़ (323015) हैं।
5. हिज्जाज बिन यूसुफ़ ने अपने ज़माने में क़ारियों, हाफ़िज़ों और कातिबों को जमा करके कहा कि "क़ुरआन के हरूफ़ों को अदाद और शुमार करके मुझे बतालाओ।" तो सबने शुमार करके बिल इत्तिफ़ाक़ कहा कि तीन लाख चालीस हज़ार सात सौ चालीस (340740) हरूफ़ हैं।

सवालः क़ुरआन पाक का निस्फ़ आयतों के एतिबार से, कलिमात

के और हरूफ़ के ऐतिबार से कहाँ कहाँ है?

जवाबः क़ुरआन शरीफ़ का निस्फ़ बाएतिबार हरूफ़ सूरः कहफ़ में "नुकरा" के नून पर निस्फ़ अव्वल मुकम्मल होता है और काफ़ से दूसरा निस्फ़ शुरू, बाज़ "नुकरा" के काफ़ पर निस्फ़ कहते हैं और बाज़ "वल य-त-लत्तफ़" के "फ़" पर।

कलिमात के एतिबार सूरः हज में "अल् जुलूद" की दाल निस्फ़ अव्वल का आख़िर। और इसके आगे निस्फ़ सानी की इब्तिदा।

आयत के एतिबार से सूरः शोअरा में "याफ़िकून" पर निस्फ़ अव्वल का ख़त्म होता है और "फ़-उलकियस्सहरः" से निस्फ़ सानी का आग़ाज़।

और सूरत के एतिबार से सूरः हदीद निस्फ़ क़ुरआन की आख़िरी सूरत है। (अल् अतक़ान जि० 1, स० 93)

सवालः क़ुरआन पाक की तिहाइयाँ कहाँ कहाँ से शुरू होती हैं?

जवाबः हरूफ़ के एतिबार से क़ुरआनी की पहली तिहाई सूरः बरात की सौ आयातों पर ख़त्म होती है। दूसरी तिहाई सूरः शोअरा की सौ आयात के सिरे पर या एक सौ एक आयात के सिरे पर और तीसरी तिहाई क़ुरआन शरीफ़ के ख़ात्मे पर ख़त्म होती हैं।

क़ुरआन का पाव सूरः ईनाम के ख़ात्मे पर होता है। आधा क़ुरआन सूरः कहफ़ के "वल यतलत्तफ़" के फ़ा पर और पौना सूरः ज़ुमर के ख़ात्मे पर होता है। (इब्ने कसीर सूरः फ़ातेहा)

सवालः क़ुरआन पाक की सात मंज़िलो की इब्तिदा और इंतिहा कहाँ कहाँ होती है?

जवाबः क़ुरआन की सात मंज़िलों में से

पहली मंज़िल (پارہ ۵) فمنهم من آمن ومنهم من صدا के दाल पर ख़त्म होती है।

दूसरी मंज़िल सूरः आराफ़ की आयत اولئك حبطت की ता पर। के आख़िरी अलिफ़ है।

तीसरी मंज़िल सूरः रअद में "उकुलहा" के आख़िरी अलिफ़ पर।

चौथी, सूरः हज की आयत وجعلنا منسكا में جعلنا के अलिफ़ पर।

पांचवीं सूरः अह्ज़ाब में وما كان لمومن ولا مومنة की "ता" पर।
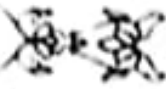
छठी, सूरः फ़तेह की आयत, الظانين بالله ظن السوء के याय पर। और सातवीं मंज़िल, क़ुरआन पाक के ख़ात्मे पर ख़त्म होती है।

(इब्ने कसीर सूरः फ़ातेहा)

○ ○ ○

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बारे में सवाल व जवाब

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का नाम "आदम" क्यों हुआ?

जवाबः आपका नाम "आदम" होने की कई वजुहात हैं:

1. तर्जुमानुल क़ुरआन हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि आपका नाम आदम इस मुनासबत से है कि गंदुमी रंग की ज़मीन से वह मिट्टी ली गई थी जिससे आपके क़ालिब साकिब की ख़मीर बनी।
2. हज़रत साअलबी फ़रमाते हैं क्योंकि इबरानी ज़बान में मिट्टी को आदम कहते हैं। इस मुनासबत से आपका नाम आदम रख दिया गया। (अल् अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन जि० 2, स० 175)
3. हकीमुल उम्मत मुफ़्ती यार ख़ान साहब नईमी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि आदम तो अदीम से बना है जिसके माने हैं ज़ाहिरी ज़मीन। क्योंकि आपका जिस्म पाक ज़ाहिरी ज़मीन की मुख़्तलिफ़ मिट्टियों से बना था इसलिए आपका नाम आदम हुआ।

(तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 289)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तख़्लीक़ के लिए कितनी जगहों से कितनी मिक्दार में मिट्टी ली गई?

जवाबः आपके क़सरे क़ालिब को तैयार करने के लिए हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम ने ज़मीन की चालीस जगहों से हाथ भरकर मुख़्तलिफ़ अतराफ़ व अकनाफ़ से मिट्टी ली और उसमें ख़ुसूसियत मक्का व ताएफ़ को हासिल रही। (मआरिज नबुव्वत जि० 1, स० 23)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के क़ालिब के ख़मीर में

कौनसा पानी इस्तेमाल हुआ?

जवाबः आपके तोदाए ख़ाक मुब्दा पाक पर चालीस दिनों तक ब-हुक्म ज़ुल जलाल "दरियाए माला माल" से जो कि अर्श अज़ीम के नीचे है जिसका दूसरा नाम बहरुल अह्ज़ान है बारिश होती रही जिससे वह मिट्टी गारे की शक्ल इख़्तियार कर गई। एक रिवायत में चालीस साल है।

एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ सत्तर हज़ार मलाइका मुक़र्रबान ने बफ़ुरक़ाने रहमान रहीक़ व सलसबील व कौसर के चश्मों से इस मिट्टी को तर किया। (मआरिज नबुव्वत जि० 1, स० 25)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की ख़मीर मे ख़ुशी का पानी कितना था और ग़म का पानी कितना?

जवाबः आपकी ख़ाक पाक पर चालीस दिनों तक बारिश होती रही जैसा कि ऊपर गुज़रा। चालीस दिनों में से उन्तालिस दिन रंज व ग़म का पानी बरसा और एक दिन ख़ुशी व मुसर्रत का। इसलिए बनी आदम को रंज व ग़म ज़्यादा हाते हैं और ख़ुशी कम।

(तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 285)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के क़ालिब की ख़मीर किस जगह तैयार की गई?

जवाबः फ़रिश्तों ने खुदा तआला के हुक्म से मिट्टी का गारा उस जगह बनाया था जहाँ आज बैतुलल्लाह शरीफ़ हैं।

(तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 285)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की ख़मीर में अल्लाह तआला ने कितने दिनों कारिगरी फ़रमाई?

जवाबः ख़ल्लाक़े काएनात अज़्ज़े इस्मुहू ने चालीस दिनों तक जो कि दुनिया के चालीस हज़ार साल के बराबर है, ख़ास अपने दस्ते क़ुदरत से तख़्मीर व कारिगरी फ़रमाकर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के क़ालिब को तैयार किया और उनकी एक ऐसी हसीन व जमील सूरत बनाई कि आँखें हैरत से आपके जमाल बाकमाल से फैल जाती थीं।

(मआरिज नबुव्वत जि० 1, स० 25)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के जिस्म का कौन सा अज़्र कहाँ की मिट्टी से बनाया गया?

जवाबः आपके जिस्म का हर अज़ू अक़ालीमे अरज़ के अलग अलग हिस्से से बनाया गया। क्योंकि आपका सर अक़्दस मक्का की मिट्टी से बनाया गया, गर्दने अहसन बैतुल मुक़द्दस की मिट्टी से, सीना मह्र गंजीना अदन की मिट्टी से, शिकम व पुश्त हिंदुस्तान की मिट्टी से, दस्ते हक़ परस्त मश्रिक़ की मिट्टी से और क़दम मोहतरम मग़रिब की मिट्टी से बनाए गए। बाक़ी गोश्त व पोस्त, रग व पै, ख़ून व ग़ज़ारीफ़ वग़ैरह मुख़्तलिफ़ जगहों की मिट्टियों से। (मआरिज नबुव्वत जि० 1, स० 25)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा रिवायत फ़रमाते हैं कि मैंने सैय्यदे काएनात फ़ख़्रे मौजूदात अलैहिस्सलातु वस्सलाम से पूछाः या रसूलुल्लाह! हज़रत हक़ जल्ले अला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को किस तरह पैदा फ़रमाया कि उनके फ़रज़ंद एक दूसरे से नहीं मिलते जुलते? फ़रमाया, ऐ अब्दुल्लाह बिन अब्बास! हक़ सुब्हानहु आज़म ने आदमी अलैहिस्सलाम के रुए रौशन को मक्का मौज़्ज़मा की मिट्टी से बनाया, सरे अनवर को बैतुल्लाह मुक़द्दस की खाक से, मुसरगाने दिलिस्तान और चश्मे करम को दुनिया की ख़ाक से, क़दम मोहतरम को हिंदुस्तान की ज़मीन से, आज़ा को जज़ीरा सरंदीप की मिट्टी से और कमर को शहद की खाक से। बस ऐ अब्दुल्लाह! अगर आदम अलैहिस्सलाम की ख़ाक पाक एक ही जगह से ली जाती तो आप के फ़रज़ंदों में से हर एक दूसरे से पहचाना न जाता, सब एक ही शक्ल के होते।

(मलफ़ूज़ात ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैहि स 145)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की सूरते जमीला कहाँ बनाई गई?

जवाबः अल्लाह तआला ने आपकी सूरत की तख़्लीक़ मक्का मौज़्ज़मा और ताएफ़ के दर्मियान वादी नौमान में अरफ़ात के पहाड़ से मुत्तसिल फ़रमाई। (तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 285)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का पुतला तैयार होने के कितने साल बाद जान डाली गई?

जवाबः आपका ढांचा तैयार होने के चालीस साल बाद उसमें रूह फूंकी गई।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान प० 29, सूर: दहर, अल बिदाया जि० 1, स० 86)

दूसरा क़ौल एक सौ बीस साल का है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का ढांचा वजूदी चालीस साल तक चमकती मिट्टी की शक्ल में रहा। फिर चालीस साल तक स्याह गारे की शक्ल में, फिर चालीस साल तक खनकती मिट्टी की शक्ल में रहा। इस तरह एक सौ बीस साल का अरसा गुज़र जाने के बाद ख़ालिके काएनात ने उसमें रूह फूंक दी और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का वजूद बावजूद फ़ज़ाए वजूद में आया। (हाशिया जलालैन स० 483)

एक रिवायत यह भी है कि हक़ तक़द्दुस व तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को चालीस हज़ार साल तक अपनी निगाह ख़ास में रखा।

(मआरिजे नबुव्वत जि० 1, स० 25)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाईश किस दिन और किस जगह हुई?

जवाबः आप जुमा के दिन उस जगह कतमे अदम से मनसए वजूद में आए जहाँ आज ख़ाना काबा है। (तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 309, 318)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सबसे पहले किस फ़रिश्ते ने सज्दा किया?

जवाबः सबसे पहले सिदरत नशीन जिब्राईल अलैहिस्सलाम अमीन ने सज्दा किया फिर मीकाईल अलैहिस्सलाम ने फिर इसराफ़ील अलैहिस्सलाम ने फिर इज़राईल अलैहिस्सलाम ने फिर सारे फ़रिश्तों ने सज्दा किया। ताअत में सबक़त करने की वजह से रूहुल अमीन को सबसे बड़ा दर्जा अता गया यानी ख़िदमते अंबिया अलैहिमुस्सलाम।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान प० 1, रु० 4, तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 309)

तफ़्सीर नईमी ही में तफ़्सीर रुहुल बयान के हवाले से मस्तूर व मज़्कूर है कि बाज़ हज़रात फ़रमाते हैं कि सबसे पहले हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम ने सज्दा किया। इसी वजह से उनकी जबीं मुबारक पर सारा क़ुरआन लिख दिया गया। (तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 309)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को किया जाने वाला सज्दा कितनी देर का था?

जवाबः इस मुताल्लिक़ आइम्मा तफ़्सीर इख़्तिलाफ़ रखते हैं:

1. यह सज्दा रोज़े जुमा वक़्ते ज़वाल से अस्र तक किया गया,
2. फ़रिश्ते सौ बरस तक सज्दे में गिरे रहे।
3. मलाइका पाँच सौ बरस सज्दे में रहे। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान प० 1, स० ,

तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 309, सावी जि० 1, स०

इन मुख़्तलिफ़ क़ौलों को इस तरह जमा किया जा सकता है कि अव्वलन मलाइका ने आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा किया जिसका इब्लीस पुरतब्लीस ने इंकार किया, यह सज्दा थोड़ी देर तक रहा। फिर फ़रिश्तों ने सर उठाकर देखा कि शैतान नाफ़रमान, आदम अलैहिस्सलाम की तरफ़ पीठ फेरे खड़ा है, तब उन्होंने दूसरा सज्दा किया। इस सज्दे को तौफ़ीक़ रफ़ीक़ के शुक्र में, यह सज्दा रब्बुल अरबाब जल्लेअला के लिए था और सज्दा शुक्र था। फिर जब मलाइका मुक़र्रिबीन साजिदीन ने सर उठाया तो देखा शैतान मरदूद, मतरूद और मक़हूर हो चुका है, सूरत मसख़ होकर ख़िंज़ीर का सा जिस्म और बंदर का चेहरा हो गया। तब फ़रिश्तों ने हैबते इलाही से एक और सज्दा किया। ये तीनों सज्दे आदम अलैहिस्सलाम की ही तरफ़ थे मगर तीनों अलग अलग क़िस्म के और उनकी मुद्दतें अलैहिदा अलैहिदा। (तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 310)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का किस शान व शौकत के साथ जन्नत में पहुँचाया गया और कितने फ़रिश्ते आपके हमराह थे?

जवाबः आपको सत्तर हज़ार जन्नती हल्ले पहनाए गए। एक बहुत ख़ूबसूरत ताज सर पर रखा गया। कमर को जवाहर व ज़वाहर से मुज़य्यन, तख़्त आली बख़्त पर बिठाकर धीरे धीरे बाग़ाने जनान पहुँचाया गया। इस तरह सात लाख मलाइका बाएं, सात लाख दाएं, सात लाख आगे पीछे सलवात व तहय्यात पेश कर रहे थे।(मआरिज नबुव्वत स० 39)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को जन्नत में किस पेड़ का फल खाने से मना फ़रमाया गया था?

जवाबः इस बारे में मुख़्तलिफ़ रिवायतें वारिद हैं:
1. गेहूं का पेड़ था,
2. वह इंजीर का पेड़ था,
3. वह पेड़ अंगूर का था,
4. कोई ऐसा पेड़ था जिसके खाने से "रफ़ाए हाजत" की ज़रूरत होती है और जन्नत गंदगियों से पाक है।(तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 220)
5. या वह खजूर का पेड़ था। (अल बिदाया वन्निहाया जि० 1, स० 74)

कौल अव्वल को तरजीह हासिल है।

सवालः हज़रत आदम व हव्वा अलैहिमस्सलाम में से पहले किसने शज्रेममनू का फल खाया और कितना?

जवाबः हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा ने "शजरे ममनू" के सात खोशे तोड़े थे। पहले एक खुद ने खाया। पांच आदम अलैहिस्सलाम को दिए और एक महफ़ूज़ रखा। (मआरिजे नबुव्वत जि० 1, स ० 43)

सवालः जन्नत का गेहूं कितना बड़ा था?

जवाबः जन्नत का गेहूं बैल के गुर्दे के बराबर था। शीरए शहद से ज़्यादा शीरीं और मक्खन से ज़्यादा लज़ीज़, दिल अज़ीज़।

(तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 320)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने शजरे ममनू का जो फल खाया था वह आपके शिकमे अतहर में कितने दिनों तक रहा?

जवाबः हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

एक रोज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में कुछ यहूदी आए और पूछा, या रसूलुल्लाह! हम ने तौरेत में लिखा देखा है कि आपकी उम्मत पर तीस रोज़े फ़र्ज़ किए गए हैं? आपने फ़रमाया, यह ठीक है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने बहिश्ते बरीं में जो दाना गंदुम शीरीं खाया था वह आपके शिकम अतहर में तीस रोज़ तक रहा। इसीलिए तीस रोज़े फ़र्ज़ किए गए।

(मलफ़ूज़ात हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैहि स० 53)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के तने नूरी से जन्नती लिबास उतर जाने के बाद किस पेड़ के कितने पत्तों से आपने

सतरपोशी की?

जवाबः शजरे ममनू का दाना खाना था कि हलले नूरी जसदे नूरी से जुदा हो गए। आप रोने लगे और अज़ खुद जल्दी में बदन एमन छिपाने को जिस तरफ़ जाते वह पेड़ आपसे दूर होते। आख़िर इंजीर के चार पत्तों से जिस्म मुबारक को छिपाया। अल्लाह तआला का ख़िताब हुआ, "अब बहिश्त से बाहर तशरीफ़ ले जाइए।" हज़रत आदम अलैहिस्सलाम आँखों में आँसू और सीने में ग़म लिए हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा का हाथ थामे बाहर तशरीफ़ लाए।

बाज़ों ने यह भी कहा है कि आप ने ऊद के पत्तों से सतरपोशी की थी।

(मआरिज नबुव्वत स० 11

सवालः हज़रत आदम व हव्वा अलैहिमस्सलाम जन्नत से दुनिया में किस जगह उतारे गए?

जवाबः इस बारे में अइम्मा तफ़्सीर व मार्रिख़ीन पाकीज़ा तहरीर इख़्तिलाफ़ रखते हैं कि हज़रत आदम व हव्वा अलैहिमास्सलाम जन्नत से दुनिया दारुल मलाम में कहाँ उतारे गएः

1. हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हिंदुस्तान में शहर सरंदीप के उस पहाड़ पर उतारे गए जिसको "'नूद' कहते हैं। हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा साहिल दरियाए हिंद पर लाई गयीं। इसलिए महबत हव्वा का नाम जद्दा रखा गया, मोर को मरजुल हिंद में, शैतान को नंसान में जो कि बसरा से कुछ फ़ासले पर है या जहाँ अब याजूज माजूज की दीवार क़ायम है और साँप को बहिस्तान या असफ़हान में फेंका गया। (तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 330)
2. हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, आदम अलैहिस्सलाम सफ़ा पर और हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा मरवा पर उतारे गए।
3. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हिंद के शहर वहना में उतरे।
4. एक रिवायत में है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम मक्का और ताएफ़ के दर्मियान उतरे।
5. बाज़ों ने यह भी कहा है कि हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा मुज़दलफ़ा

पर उतारी गयीं और बाज़ ने कहा अरफ़ा पर और इब्लीस ख़सीस को अबला पर जो बसरा या जद्दा के क़रीब एक पहाड़ है।

(हाशिया जलालैन स० 131)

सवालः हज़रत आदम व हव्वा अलैहिमस्सलाम जन्नत में कितनी मुद्दत रहे?

जवाबः इस ताल्लुक़ से इअम्मा तफ़ासीर के कई क़ौल हैं:

1. आप दोनों ने बहिश्त बरीं में आलमे आख़िरत के निस्फ़ दिन जो कि दुनिया के पाँच सौ साल के बराबर है, क़याम किया।

(मआरिज नबुव्वत जि० 1, स० 42)

2. आप दोनों ख़ुल्दे बरीं में एक साअत रहे, जन्नत की यह एक साअत एक सौ तीस साल के बराबर है। (इब्ने कसीर प० 1, रु० 4)
3. आप दोनों की फ़िरदौस बरीं में इक़ामत की मुद्दत सौ साल है।
4. बाज़ रिवायतों में मुद्दत इक़ामत साठ साल है।

(अल बिदाया वन्निहाया जि० 1, स० 80)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने दौराने क़याम जन्नत सबसे पहले कौन सा फल तनावुल फ़रमाया था?

जवाबः फ़िरदौसे बरीं में सबसे पहले जिस फल को आपने तनावुल फ़रमाया, वह अंगूर, इंजीर या ख़ूरमा था।

(मआरिज नबुव्वत जि० 1, स० 41)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत से क्या क्या चीज़ें साथ लाए थे?

जवाबः वे चीज़ें नीचे लिखी हैं:

1. हिज्रे असवद, 2. आसाए मूसवी, 3. हथौड़ा,
4. संडासी, 5. ईरन, 6. कुछ सोना-चाँदी,
7. मुख़्तलिफ़ क़िस्म के बीज,
8. तीन क़िस्म के फल, एक वे जो पूरे खाए जाते हैं, दूसरे वे जिनका ऊपरी हिस्सा खाया जाता है और गुठली फेंक दी जाती है जैसे छुआरे वग़ैरह, तीसरे वे जिनका ऊपरी हिस्सा फेंक दिया जाता है और अंदरूनी हिस्सा खाया जाता है।(तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 330)

9. जन्नती पेड़ों की पत्तियाँ या फूलों की पंखड़ियाँ,
10. बेलचा, 11. कुदाल, 12. कंदर या सनोबर

(तब्क़ाते इब्ने साअद)

13. ऊद (ख़ुश्बूदार लकड़ी),
14. अंगुश्तरी (अंगूठी) सुलेमानी (सावी जि० 1, स० 30)

सवालः हज़रत आदम व हव्वा अलैहिमस्सलाम के दर्मियान कितने साल जुदाई रही?

जवाबः तीन सौ साल जुदाई रही। (तफ़्सीर नईमी जि० 2, स० 297)

दूसरी रिवायत के मुताबिक़ दो सौ साल दोनों में जुदाई रही। एक रिवायत भी है कि सौ साल तक दोनों ग़ुरबत और बेचैनी में मुब्तला रहे।

(मआरिज नबुव्वत जि० 1, स० 44)

सवालः हज़रत आदम व हव्वा अलैहिमस्सलाम की मुलाक़ात किस तारीख़ को और किस जगह हुई?

जवाबः हक़ तआला शानुहू ने तोबा क़ुबूल करने के बाद आप दोनों को 9/ ज़िलहिज्जा को मिलाया।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा को पहचाना। इसलिए उस रोज़ मुसर्रत अफ़रोज़ का नाम "अरफ़ा" रखा गया और जहाँ मिलाया उस मुक़ाम का नाम बनाम "अरफ़ात" मशहूर हुआ।

(तफ़्सीर नईमी जि० 2, स० 297)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का क़द कितना लंबा था और जिस्मे अतहर की चौड़ाई कितनी थी?

जवाबः आप के क़दे सरमद की दराज़ी साठ हाथ थी। आप जब खुल्द बरीं से रौनक़ अफ़रोज़ दारे दुनिया हुए तो आप बहुत बुलंद क़ामत और लंबे बदन के थे कि पाए पाक आप का ज़मीन पर था और सर अक़्दस आसमान से लगा हुआ। फिर क़ादिर मुतलक़ ने आप के क़द को छोटा कर दिया यहाँ तक कि साठ हाथ रह गया और आपके जसदे नूरी की चौड़ाई सात हाथ थी। (अलबिदाया वन्निहाया जि० 1, स० 88 से 92)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम दुनिया में तशरीफ़ लाने के बाद कितने दिनों तक भूखे रहे?

जवाबः चालीस रोज़ तक कुछ नहीं खाया। एक रिवायत में चालीस साल है।

(मआरिज नबुव्वत स० 47)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पैदल कितनी बार ख़ाना काबा की ज़ियारत को गए थे?

जवाबः आप कोह सरंदीप से या प्यादा चालीस बार ख़ाना काबा की ज़ियारत को गए। (तारीख़ फ़िल कामिल जि० 1, स० 51)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जब ज़ियारते बैतुल्लाह को चलते तो हर एक क़दम का फ़ासला कितना होता था?

जवाबः आप जब ज़ियारत ख़ाना काबा को चलते तो हर क़दम मोहतरम का फ़ासला पचास फ़रसख़ के बराबर होता था। एक रिवायत में है कि तीन रात दिन की मुसाफ़त का होता था।

(मआरिज नबुव्वत स० 51)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम अपनी ख़ता पर कितने सालों तक रोते रहे?

जवाबः आप तीन सौ साल तक इस क़द्र अश्कबार रहे कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम को भी आपके रोने पर रोना आता और उन्होंने बा(रगाहे इलाही में आपकी सिफ़ारिश व शफ़ाअत की। और यह भी अक्सर हदीसों से साबित है कि अगर तमाम रूए ज़मीन के रोने वाले जमा किए जाएं तो गिरया आदम अलैहिस्सलाम बढ़ा हुआ होगा।

(तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 337 से 339)

तफ़्सीरे अलम नश्रह में है कि आप अपनी ज़िल्लत पर दो सौ बरस रोए। (स० 78)

एक और रिवायत के मुताबिक़ आप एक सौ अस्सी साल तक रोते रहे। सत्तर साल तो पेड़ खाने पर, सत्तर साल अपनी ख़ता पर और चालीस साल क़त्ले हाबील पर। (अलबिदाया वन्निहाया 1/80)

एक और रिवायत में तीन सौ सत्तर साल है।

(मलफ़ूज़ात ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया स० 142)

सवालः हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा कितनी बार हामला हुई और कितने बच्चे पैदा हुए?

जवाबः इस मुताल्लिक़ अक़्वाल वारिद हैं जो हस्बेज़ैल हैं:

1. बाद इत्तिसाल आदम, हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा बीस बार हामला हुई और हर हमल में एक लड़का औरएक लड़की आपसे पैदा हुई यानी कुल चालीस बच्चे।

(अल अतक़ान जि० 2, स० 2, तफ़्सीर नईमी जि० 4, स० 416)

2. हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा के हर हमल से दो बच्चे होते मगर हज़रत शीस अलैहिस्सलाम कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अजदाद में हैं तन्हा पैदा हुए यानी कुल उन्तालिस बच्चे बीस साहबज़ादे और उन्नीस साहबज़ादियाँ।(तफ़्सीर अलम नश्रह स० 78)

3. चालीस वार हामला हुई और अस्सी बच्चे पैदा हुए।

4. एक सौ बीस बच्चे पैदा हुए। (मआरिज नबुव्वत स० 61)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बच्चों के नाम क्या क्या है?

जवाबः बाज़ के नाम जो मिल सके वह नीचे लिखे हैं:

नर औलाद

1. क़ाबील, 2. हाबील, 3. अयाद, 4. शबूआ, 5. हिंद, 6. सरावीस, 7. क़हूर, 8. सनद, 9. बारक़, 10. शीस, 11. अब्दुल मुग़ीस, 12. अब्दुल हारिस, 13. वद, 14. सवाअ, 15. यग़ूस, 16. यऊक़, 17. नसर,

(अल् अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन जि० 2, स० 190)

18. अब्दुल्लाह, 19. उबैदुल्लाह, 20. उबैदुर्रहमान।

(हाशिया जलालैन स० 146)

मादा औलादः

1. अक़्लीमा, 2. अशोफ़, 3. जज़ूरा, 4. अज़ूरा, 5. उम्मे मुग़ीस।

(अल् अतक़ान जि० 2, स० 190)

6. ल्यूदा (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान प० 6, रु० 9)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को कितनी ज़बानों का इल्म था और कितने पेशों में महारत रखते थे?

जवाबः आपको सात लाख ज़बानों का इल्म था। और एक हज़ार पेशों में महारते ताम्मा रखते थे मगर आपने खेती बाड़ी का पेशा

इख़्तियार फ़रमाया। (तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 291)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने सबसे पहले किस चीज़ की काश्तकारी की? उसका बीज कहाँ से आया? बीजों की तादाद कितनी थी और वज़न कितना था? फिर उसकी फसल कैसी हुई?

जवाबः आपने जिब्राईल अमीन के जन्नत से लाए हुए गेहूँ के सात दानों की काश्त फ़रमाई। अल्लाह तआला ने हर दाने के बदले एक लाख दाने उगाए। (अलबिदाया जि० 1, स० 292)

एक और रिवायत के मुताबिक़ रूहुल अमीन तीन दाने लेकर आए थे। उनमें से दो दाने आपने बोए जिससे गेहूँ की फ़सल हुई और एक दाने को हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने बोया जिससे जौ की फ़सल हुई।

(मआरिज नबुव्वत जि० 1, स० 48, 49)

और इन काश्त किए दानों का वज़न एक लाख आठ सौ दिरहम था। दूसरा क़ौल एक हज़ार आठ सौ दिरहम का है।

(मआरिज नबुव्वत जि० 1, स० 48)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने सबसे पहले जो रोटी बनाई उसकी लंबाई और चौड़ाई कितनी थी?

जवाबः गेहूँ की फ़सल काटने के बाद आपने उसकी जो रोटी बनाई उसकी लंबाई और चौड़ाई पाँच सौ ग़ज थी।

(मआरिज नबुव्वत जि० 1, स० 49)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने दुनिया में सबसे पहले किस चीज़ का लिबास पहना?

जवाबः आपने इस दार दुनिया में सबसे पहले जो लिबास ज़ेबतन फ़रमाया वह भेड़ के बालों का था जिसे खुद तैयार किया था। अपने लिए एक जुब्बा और हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए एक लिफ़ाफ़ा क़मीज़ की तरह और एक ओढ़नी।

(अलबिदाया जि० 1, स० 92, मआरिज नबुव्वत जि० 1, स० 48)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की ज़बान कौनसी थी?

जवाबः आपकी ज़बान खुल्दे बरीं में अरबी थी। जब बहिश्त से मुसीबतगाह दुनिया में तशरीफ़ लाए तो अरबी ज़बान सलब कर ली गई

या भुला दी गई। तोबा की क़ुबूलियत से पहले आप सुरयानी ज़बान में बातचीत फ़रमाया करते थे। तोबा क़ुबूल होने के बाद फिर अरबी ज़बान जन्नत निशान अता हुई। (तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 340)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत से दुनिया में तशरीफ़ लाए तो आपके जिस्म पाक के रंग में क्या तब्दीली हुई?

जवाबः आप जब जन्नत से दुनिया में तशरीफ़ लाए तब आपके जिस्म मुबारक का रंग स्याह हो गया। तोबा क़ुबूल होने के बाद आपको हुक्म हुआ कि चाँद की तेरहवीं, चौदहवीं और पंद्रहवीं का रोज़ा रखें। चुनांचे आपने ये रोज़े रखे और दिन, तने रश्क, चमन का तिहाई हिस्सा असल रंग पर आता रहा और पंद्रहवीं तारीख़ को तमाम जिस्म पाक अपने असल रंग पर आ गया। (तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 339, मलफ़ूज़ात ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया स० 8)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जब जन्नत में मुक़ीम थे उस वक़्त आपकी दाढ़ी कितनी लंबी थी और उसका रंग कैसा था?

जवाबः आप जब फ़िरदौसे बरीं में रहते थे उस वक़्त आपकी दाढ़ी मुबारक की लंबाई नाफ़ तक थी और वह बिल्कुल स्याह थी।

(अल बिदाया 1/97)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अपनी उम्र से किसको उम्र अता फ़रमाई थी और कितनी?

जवाबः आपने अपनी उम्र के चालीस साल हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को अता कर दिए थे फिर भूल गए। इसी वजह से बनी नौ इंसान में सहू व निसयान की बीमारी पैदा हो गई। (मिश्कात जि० 2, स० 400)

इसका तफ़्सीली वाक़िआ यूँ हैः

जब परवरदिगार आलम ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पुश्त मुबारक से तमाम ज़ुर्रियत आदमी की रूहें निकालीं और अपनी रबूबियत व लिल्लाहियत का इक़रार लिया। बनी आदम के इस इज्तिमा में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने एक को ख़ूब तर व ताज़ा और नूरानी देखकर पूछा, खुदाया! इनका नाम क्या है? रब तबारक व तआला ने जवाब दियाः दाऊद। अर्ज़ की, खुदावंद इनकी उम्र क्या है? फ़रमाया, साठ

साल। अर्ज़ की, खुदाया! इनकी उम्र और बढ़ा दे। फ़रमाया, नहीं, हाँ अगर तुम अपनी उम्र से कुछ देना चाहो तो दे सकते हो। अर्ज़ की, बंदा नवाज़! मेरी उम्र कितनी है? फ़रमाया, एक हज़ार साल। अर्ज़ की, खुदावंदा! मेरी उम्र से चालीस साल दे दिए जाएं। लिहाज़ा दे दिए गए और इस लेन-देन को लिख लिया गया। जब आप की उम्र शरीफ़ नौ सौ साठ साल हुई तो मलकुल मौत रूह क़ब्ज़ करने की ग़र्ज़ से हाज़िर हुए। तो आदम अलैहिस्सलाम गोया हुए, खुदा वंद! मेरी उम्र में से अभी तो चालीस साल बाक़ी हैं। फ़रमाया, वह तुम तो अपने बेटे दाऊद को दे चुके हो। फिर जिसमें वह लेन-देन लिखा हुआ था आपको दिखाया गया।

(इब्ने कसीर प० 3, रु० 7, मआरिज नबुव्वत जि० 1, स० 55)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम मर्ज़ुल मौत में कितने दिन मुब्तला रहे?

जवाबः आपने ग्यारह दिन मर्ज़ुल वफ़ात में मुब्तला रहकर आलमे विसाल की तरफ़ कूच फ़रमाया।(अलकामिल फ़ी तारीख़ जि० 1, स० 30)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के इंतिक़ाल के वक़्त इंसानों की तादाद कितनी थी?

जवाबः आपने जब इस दारे दुनिया से कूच फ़रमाकर जवारे रहमत इलाही में नुज़ूल किया तो उस वक़्त आपकी औलाद की तादाद एक लाख थी। (तफ़्सीर नईमी जि० 4, स० 416)

एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ उस वक़्त आपकी औलाद (बेटे पोते वग़ैरह) की तादाद चालीस हज़ार थी। (तफ़्सीर नईमी जि० 4, स० 340)

एक और रिवायत के मुताबिक़ आपके विसाल हक़ के वक़्त औलाद वग़ैरह की तादाद सात लाख तक पहुँच चुकी थी।

(मआरिज नबुव्वत जि० 1, स० 61)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को गुस्ल किसने दिया था?

जवाबः हज़रत जिब्राईल अमीन, जन्नत से बहिश्ती बेरी के कुछ पत्ते और मुरक्कब खुश्बू अपने साथ लाए और खुद हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को गुस्ल दिया, खुश्बू मली। (तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 332)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तजहीज़ व तकफ़ीन

किसने की? कफ़न कहाँ का और कितने कपड़ों का था?

जवाब: आपकी तजहीज़ व तकफ़ीन जिब्राईल अमीन ने की। कफ़न जन्नत के हल्ले का था जो जिब्राईल अलैहिस्सलाम ही लेकर आये थे।

(तफ़सीर नईमी स०

आपका कफ़न तीन कपड़ों का था। (हाशिया 1, जलालैन स०

सवाल: हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की नमाज़े जनाज़ा किस जगह और किसने पढ़ाई? पढ़ाई जाने वाली तकबीरों की तादाद कितनी थी?

जवाब: तजहीज़ व तकफ़ीन के बाद आपकी लाश मुबारक को फ़रिश्ते ख़ाना काबा लाए। एक रिवायत में यह भी वारिद है कि आपकी नाश मुबारक को आपकी औलाद में सो डेढ़ सौ आदमी काबा में लाए और हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम की इमामत में मलाइका ने नमाज़ अदा की। नमाज़ में पढ़ी जाने वाली तकबीरों की तादाद चार थी।

(तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 332)

एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ नमाज़ हज़रत शीस अलैहिस्सलाम ने पढ़ाई। (अलबिदाया वन्निहाया स० 9

और पढ़ी जाने वाली तकबीरों की तादाद तीस थी। पाँच तकबीरें नमाज़ की और पच्चीस आपके नाज़ व एज़ाज़ में पढ़ी गयीं।

(अल कामिल फ़ी तारीख़ जि० 1, स० 22

और एक रिवायत में तकबीरों की तादाद तीन है।

(मआरिज नबुव्वत जि० 1, स० 63

सवाल: हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की क़ब्र मुबारक कहाँ है?

जवाब: अइम्मा तफ़्सीर व मौरिंख़ीन पाकीज़ा तहरीर इस बारे में इख़्तिलाफ़ रखते हैं कि आपकी क़ब्रे अनवर कहाँ है:

1. मक्का मौज़्ज़मा से तीन मील फ़ासले पर, मुक़ामे मिना में जहाँ कि हाजी लोग क़ुर्बानी करते हैं। इसी जगह पर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इस्माईल अलैहिस्सलाम की क़ुर्बानी पेश की थी। यहीं मस्जिद ख़ैफ़ से मिली हुई आपकी क़ब्र शरीफ़ है। (तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 332)

2. आपकी क़ब्र शरीफ़ कोह सरंदीप में है।
   (मुक़दमा मआरिज नबुव्वत स० 46, हाशिया 4, जलालैन स० 131)
3. आपकी क़ब्र उस पहाड़ में है जिस पर आप जन्नत से उतरे थे।
4. बाज़ ने कहा आपकी क़ब्रे अनवर ग़ारे जबल अबू क़बीस में है जिसे "ग़ारुल कुबरा" कहते हैं।
5. इब्ने जरीर कहते हैं कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने तूफ़ान के मौक़े पर आपके और हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा के ताबूत शरीफ़ को बैतुल मुक़द्दस में लाकर दफ़न फ़रमाया।
   (अल कामिल फ़ी तारीख़ जि० 1, स० 22)
6. इब्ने असाकर ने कहा, आप का सर अक़्दस मस्जिदे इब्राहीम के पास और पाँव मुबारक सख़रए बैतुल मुक़द्दस के पास है।
   (अल बिदाया जि० 1, स० 98)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के इंतिक़ाल पर मख़्लूक़ कितने दिनों तक रोती रही?

जवाबः जब आपकी वफ़ात हुई तो सात दिनों तक मख़्लूक़ रोती रही और इतने ही दिन चाँद व सूरज ग्रहन में रहे।

(अल बिदाया वन्निहाया जि० 1, स० 98, 99)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की उम्र कितनी हुई?

जवाबः आपकी उम्र शरीफ़ से मुताल्लिक़ कई क़ौल हैं जो नीचे लिखे हैं:

1. इमाम नुव्वी रहमतुल्लाह अलैहि के नज़दीक हज़ार साल तक रुए ज़मीन पर आपका ज़िंदा रहना मशहूर है।
2. इब्ने अबि ख़ैसमा की तहक़ीक़ यह है कि आप नौ सौ साठ साल ज़िंदा रहे। (अल् अतक़ान जि० 2, स० 175)
3. आपकी उम्र शरीफ़ नौ सौ चालीस साल हुई।(हयातुल हैवान स० 426)
4. आपकी उम्र शरीफ़ नौ सौ छत्तीस साल हुई। (इब्ने कसीर प० 1)
5. आपकी उम्र शरीफ़ लौहे महफ़ूज़ में एक हज़ार साल है और तौरात में नौ सौ तीस साल। (अल बिदाया जि० 1, स० 99)

○ ○ ○

हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में सवाल व जवाब

सवालः हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा की पैदाईश तख़्लीक़ आदम के कितने दिनों बाद हुई?

जवाबः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाईश के एक हफ़्ते बाद दूसरे जुमा को हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा ज़ीनत बख़्श आलम हुईं।
(तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 313)

सवालः हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा की पैदाईश कहाँ हुई?

जवाबः आपकी जाए पैदाईश में इख़्तिलाफ़ हैः

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास और हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हुम फ़रमाते हैं, हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हुमा जन्नत में पैदा हुईं। सैय्यदना आदम अलैहिस्सलाम एक दिन सो रहे थे कि उनकी पसली से इनको पैदा फ़रमा दिया गया।

हज़रत उमर फ़ारूक़ और दूसरे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने रिवायत फ़रमाई है कि फ़रिश्तों ने हज़रत आदम व हव्वा अलैहिमस्सलाम को नूरी लिबास पहनाया। उनके सर पर ताज रखा, सोने के तख़्त आली बख़्त पर बिठाया। हज़रत हव्वा रज़ियल्लाह अन्हा को मुख़्तलिफ़ क़िस्म के ज़ेवरों से आरास्ता व पैरास्ता किया। और उन दोनों को जन्नत में पहुँचा दिया गया। इस रिवायत से मालूम हुआ कि हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा की पैदाईश भी ज़मीन पर हुई। (तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 313)

सवालः हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा का नाम "हव्वा" क्यों हुआ?

जवाबः आपका नाम "हव्वा" इसलिए है कि यह लफ़्ज़ "हय्यि" से बना है जिसके मानी हैं ज़िंदा। क्योंकि आप, ज़िंदा इंसान हज़रत आदम

अलैहिस्सलाम से पैदा हुईं। इस मुनासबत से आपका नाम "हव्वा" रखा गया। या यह कि आप हर ज़िंदा इंसान की वालिदा हैं इसलिए आपको हव्वा कहा गया या यह लफ़्ज़ हव्वा "हौत" से बना है जिसके माने हैं सुर्ख़ी माएल ब-स्याही क्योंकि आपके होंठ मुबारक का रंग ऐसा ही था। इस मुनासबत से आपका नाम हव्वा रख दिया गया।

(तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 313)

सवालः हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा का कद कितना लंबा था?

जवाबः आपका क़द मुबारक भी साठ हाथ लंबा था।

(तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 313)

सवालः हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा के कितने गेसू थे?

जवाबः आपके सात सौ गेसू थे। (मआरिज नबुव्वत जि० 1, स०41)

सवालः हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा आदम अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद कितने साल दुनिया में रहीं?

जवाबः आप हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के विसाल हक़ के बाद साढ़े साठ साल ज़िंदा रहीं। (मआरिज नबुव्वत जि० 1, स०41)

एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के रहलत फ़रमाने के बाद सिर्फ़ एक साल आप दुनिया में रहीं।

(अल कामिल फ़ी तारीख़ जि० 1, 22)

सवालः हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र कितनी हुई?

जवाबः आपकी उम्र शरीफ़ नौ सौ सत्तानवे (997) साल हुई।

(तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 313)

सवालः हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा की क़ब्र शरीफ़ कहाँ है?

जवाबः आपकी क़ब्रे अनवर जद्दा शरीफ़ में है।

(तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 332)

○ ○ ○

हाबील व क़ाबील के बारे में सवाल और जवाब

सवालः हाबील और क़ाबील के साथ जो लड़कियाँ पैदा हुई थीं उनके नाम क्या थे?

जवाबः हज़रत हवा रज़ियल्लाहु अन्हा के हर हमल में एक लड़का और लड़की पैदा होते थे। क़ाबील के साथ जो लड़की हुई उसका नाम "अक़्लीमा" था और हाबील के साथ जो लड़की हुई उसका नाम "लयोदा" था। (ख़ज़ाइन प० 6, रु० 9)

एक रिवायत यह भी है कि हाबील के साथ पैदा होने वाली लड़की का नाम यलोदा था। (हाशिया 17, जलालैन स० 98)

सवालः हाबील और क़ाबील ने क़ुर्बानी के लिए क्या उज़्र पेश किया था?

जवाबः क़ाबील ने एक अंबार गेहूं और हाबील ने एक बकरी क़ुर्बानी के लिए पेश की थी। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान प० 6, रु० 9)

एक रिवायत यह भी है कि हाबील ने एक गाय पेश की थी।

(इब्ने कसीर प० 6, रु० 9)

इस क़ुर्बानी का मुख़्तसर वाक़िआ यूँ हैः

हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा के हर हमल में एक लड़का और एक लड़की पैदा होते थे और अक़्द का तरीक़ा यूँ था कि एक हमल का लड़का दूसरे हमल की लड़कीसे मंसूब किया जाता था। क्योंकि आदमी सिर्फ़ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की औलाद में मुन्हसिर थे तो रिश्तों की कोई और सबील न थी। क़ाबील के साथ अक़्लीमा पैदा हुई जो हुस्न व जमाल, ख़त व ख़ाल में बेमिसाल थी और हाबील के साथ लियोदा पैदा हुई। यह इस क़द्र हसीन न थी।

जब ये चारों बालिग़ हुए तो इसी दस्तूर के मुताबिक़ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने लियोदा को क़ाबील के लिए नामज़द किया और

अक्लीमा को हाबील के लिए। क़ाबील ने इस तजवीज़ को नकार दिया और कहा, मेरी बहन हसीन है और मेरे साथ रहम में रही। इसका हक़दार मैं हूँ। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, वह तेरे साथ पैदा हुई है लिहाज़ा तेरी बहन है। इसके साथ तेरा निकाह हलाल नहीं। क़ाबील ने सरकशी करके कहा, यह तो आपकी तजवीज़ व राय है, अल्लाह तआला ने यह हुक्म नहीं दिया। आपने फ़रमाया, अच्छा तुम दोनों एक क़ुर्बानी करो। जिसकी क़ुर्बानी मक़बूल हो जाए वही अक्लीमा का हक़दार है। उस ज़माने में जो क़ुर्बानी मक़बूल होती थी आसमान से एक आग आकर खा लिया करती थी। हाबील क़ुर्बानी के लिए एक बकरी लाया कि वह बकरियाँ ही पालता था और क़ाबील क्योंकि काश्त करता था एक अंबार गेहूँ लाया। नागाह एक बिजली आयी और बकरी को लिए गई। क़ाबील की क़ुर्बानी छोड़ गई। क़ाबील की गुस्से की आग तेज़ हुई और उसने क़त्ले हाबील का अज़्म पक्का कर लिया।

(ख़ज़ाईनुल इरफ़ान प० 6, रु० 9)

सवालः जिस वक़्त क़ाबील ने हाबील को क़त्ल किया था उस वक़्त दोनों की उम्र कितनी थी और आदम अलैहिस्सलाम की उम्र कितनी थी?

जवाबः क़ाबील ने जब हाबील को क़त्ल किया, उस वक़्त क़ाबील की उम्र पच्चीस साल और हाबील की उम्र बीस साल थी।

(अल् कामिल फ़ी तारीख़ जि० 1, स० 18, अजाएबुल क़ुरआन स० 95)

और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की उम्र शरीफ़ एक सौ पच्चीस साल थी। (रूहुल बयान जि० 2, स० 555)

सवालः क़ाबील ने हाबील को किस जगह क़त्ल किया था?

जवाबः क़त्ल का यह हादसा मक्का मुकर्रमा के जबले सौर के पास हिरा की घाटी में वाक़े हुआ था और बाज़ का क़ौल है बसरा में जिस जगह मस्जिदे आज़म बनी हुई है।

(अजाएबुल क़ुरआन स० 95, रूहुल बयान जि० 1, स० 555)

सवालः क़ाबील ने हाबील को किस तरह क़त्ल किया था?

जवाबः इस बारे मुख़्तलिफ़ अक़वाल वारिद हैं कि क़ाबील ने हाबील

को किस तरह क़त्ल किया:

1. हज़रत हाबील सोए हुए थे कि क़ाबील ने एक भारी पत्थर से आपका सर कुचल डाला।
2. क़ाबील ने आपको लोहे सेवार करके मारा।
3. बाज़ कहते हैं मिस्ल दरिन्दे के काट काट कर आपको हलाक किया।
4. बाज़ यह भी कहते हैं क़ाबील ने गला घोंटकर आपकी जान ली।
5. यह भी कहा गया है कि शैतान ने जब देखा कि उसे क़त्ल करने का ढंग नहीं आता तो इस लईन ने एक जानवर को पकड़ा और उसका सर एक पत्थर पर रखकर ऊपर से दूसरा पत्थर ज़ोर से मारा जिससे वह जानवर उसी वक़्त मर गया। यह देखकर क़ाबील ने भी अपने भाई के साथ यही किया।
6. यह भी मरवी है कि क्योंकि अब तक ज़मीन पर कोई क़त्ल नहीं हुआ था तो क़ाबील अपने भाई को ज़मीन पर गिराकर उसकी आँखें बंद करता और कभी उसको थप्पड़ और घूंसे मारता। यह देखकर इब्लीस ख़सीस उसके पास आया और उसे बतला दिया कि एक पत्थर लेकर इसका सर कुचल डाल। चुनाँचे उसने ऐसा ही किया। इब्लीस लईन ने जब देखा कि उसने हाबील को क़त्ल डाला तो यह मलऊन दौड़ता हुआ हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आया और कहा, क़ाबील ने हाबील को क़त्ल कर दिया। हज़रत हव्वा ने पूछा क़त्ल क्या होता है? उसने कहा अब वह न खाता है न पीता है न बोलता है न चालता है और न हिलता जुलता है। हज़रत हव्वा ने कहा, शायद उसको मौत आ गई।

(इब्ने कसीर प० 6, रु० 9)**सवाल: क़ाबील ने हाबील को किस दिन क़त्ल किया था?**

जवाब: क़त्ल का यह हादसा मंगल के दिन हुआ था।

(अजाएबुल क़ुरआन, मलफ़ूज़ात ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया स० 17)

सवाल: जिस वक़्त क़ाबील ने हाबील को क़त्ल किया था उस वक़्त आदम अलैहिस्सलाम कहाँ थे?

जवाबः उस हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हज बैतुल्लाह के लिए मक्का मौज़्ज़मा तशरीफ़ ले गए थे। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान प० 6, रु० 9)

एक रिवायत यह भी है कि हाबील जंगल में बकरियाँ चरा रहा था। उसको आने में देर लग गई तो उन्हें बुलाने के लिए हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने क़ाबील को भेजा। यह एक छुरी अपने साथ छिपाकर चला और रास्ते में ही दोनों भाई की मुलाक़ात हो गई। क़ाबील ने कहा मैं तुझे मार डालूंगा कि तेरी क़ुर्बानी क़ुबूल हुई मेरी नहीं हुई। इस पर हाबील ने कहा, अल्लाह मुत्तक़ियों ही की क़ुर्बानी क़ुबूल फ़रमाता है। इस पर वह बिगड़ा और छुरी से हमला कर दिया।

(इब्ने कसीर प० 6, रु० 9)

सवालः क़ाबील हाबील की लाश कितने दिनों तक लेकर फिरता रहा?

जवाबः क़त्ल हाबील के बाद, क़ाबील को यह फ़िक्र हुई कि अब इस लाश को क्या करूं। इसी फ़िक्र में चालीस रोज़ तक पुश्त पर लादे बियाबान में सरगरदां रहा। (रूहुल बयान जि० 1, स० 555)

एक रिवायत यह भी है कि साल भर तक उस लाश को अपने कंधे पर लेकर फिरता रहा। (इब्ने कसीर प० 6, रु० 9)

सवालः क़ाबील ने हाबील की लाश को किस तरह दफ़न किया था?

जवाबः क़ाबील, बाद क़त्ल हाबील से हैरान हुआ कि अब इस लाश का क्या करूं क्योंकि उस वक़्त तक कोई इंसान मरा ही नहीं था। पुरअफ़शां उस सिम्त हर तरफ़ फिरता रहा। आख़िर एक रोज़ यह मंज़र देखा कि दो कव्वे आपस में लड़े। उनमें से एक ने दूसरे को मार डाला। फिर ज़िंदा कव्वे ने अपनी चोंच और पंजों से गढ़ा खोद करके मुर्दा कव्वे को लाया और उसमें रखकर उस पर ख़ाक डाल दी कि मुर्दा कव्वे की लाश छिप गई। यह देखकर क़ाबील को मालूम हुआ कि मुर्दे की लाश को दफ़न करना चाहिए। चुनाँचे उसने भी इसी तरह हाबील को ख़ाक में दबा दिया। (ख़ज़ाइनुल इरफ़)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को हाबील के क़त्ल का इल्म कितने दिनों बाद हुआ और कैसे?

जवाबः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने ज़ियारत हरम से वापसी की तो तमाम बेटे इस्तिक़बाल के लिए हाज़िर हुए मगर हाबील न आया। आपने हाबील को न पाकर जुस्तुजू की मगर कहीं पता न चला। आप सात दिन रात सहरा में हाबील की तलाश फ़रमाते रहे। आठवीं रात को आपने ख़्वाब देखा कि हाबील खड़ा पुकार रहा हैः **या अब्ताहुल ग़यास** आप घबराकर चौंक पड़े और एक चीख़ मारकर बेहोश हो गए। जब होश आया तो रूहुल अमीन को देखा कि तशरीफ़ फ़रमा हैं। आपने बेताबी से फ़रमाया, जिब्राईल! हाबील की कैफ़ियत से कुछ वाक़िफ़ हो? मैं अभी ख़्वाब में बहाल मज़लूम व बेचारा देख चुका हूँ और वह फ़रियादरसी चाहता है। जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने कहा, रब्बे तआला फ़रमाता है, **अज़ि-म्म अजूरूका** तुम्हारा सवाब ज़बरदस्त हो गया। कि क़ाबील ने हाबील को क़त्ल कर दिया है और वह इसी वजह से फ़रियाद करता है मगर उस वक़्त से अब तक कोई उसकी फ़रियाद को न पहुँचा और इसी तरह वह फ़रियाद करता हुआ रोज़े क़यामत उठेगा।

आदम अलैहिस्सलाम जिब्राईल अलैहिस्सलाम को साथ लेकर हाबील की क़ब्र पर पहुँचे और इस क़द्र ग़म के आँसू बहाए कि आसमान के मलाइका के दिल दहल गए। (औराके ग़म स० 12)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हाबील के ग़म में कितने सालों तक रोते रहे?

जवाबः हज़रत आदम क़त्ले हाबील के ग़म में चालीस साल तक रोते रहे। (अल बिदाया जि० 1, स० 80)

और सौ साल तक आपको हंसी न आई। (अजाबुल क़ुरआन स० 96)

सवालः क़ाबील को क़त्ले हाबील की सज़ा दुनिया में क्या मिली और आख़िरत में क्या मिलेगी?

जवाबः हज़रत मुजाहिद का क़ौल है कि क़ाबील के एक पैर की पिंडली को रान से लटका दिया गया और उसका मुँह सूरज की तरफ़ कर दिया है कि सूरज के घूमने के साथ घूमता रहता है। जाड़ों और गर्मियों

में आग और बर्फ़ के गढ़े में वह अज़ाब दिया जाता है।

(रूहुल बयान जि० 1, स० 556)

हज़रत अब्दुल्लाह से मरवी है कि आख़िरत में इस क़त्ल की घिनावनी हरकत में तमाम अज़ाबे जहन्नम का आधा हिस्सा उसके.लिए है। और सबसे बड़ा अज़ाब यह है कि ज़मी के हर क़त्ल का कहस्सा उसके ज़िम्मे है।

(इब्ने कसीर प० 6, रु० 9)

सवालः क़ाबील की हलाकत कैस हुई?

जवाबः क़ाबील को उसी के बेटे ने जो कि अंधा था मार मार कर हलाक कर दिया। (रूहुल बयान जि० 1, स० 554)

○ ○ ○

हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम के बारे में सवाल और जवाब

सवालः हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम की विलादत, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के विसाल के कितने साल के बाद हुई?

जवाबः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का आलमे विसाल की तरफ़ कूच फ़रमाने से सौ साल पहले आप दुनिया में रौनक़ अफ़रोज़ हुए।

(हाशिया 9, जलालैन स० 27

एक दूसरी रिवातय के मुताबिक़ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के इंतिक़ाल के वक़्त आपकी उम्र तीन सौ साठ साल की थी।

(मआरिज नबुव्वत जि० 1, स० 6

सवालः हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम का असली नाम क्या है?

जवाबः आपका असली नाम अख़नूख़ है।

(ख़जाइनुल इरफ़ान प० 8, रु० 1

हज़रत वहब बिन मुनब्बा रहमतुल्लाह अलैहि कहते हैं कि आपका असली नाम ख़नून है। (अल् अतक़ान जि० 1, स० 5

सवालः हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम का लक़ब "इदरीस" क्यों हुआ?

जवाबः कुतबे इलाहिया की कसरत दर्स के बाइस आपका नाम इदरीस हुआ। (ख़जाइनुल इरफ़ान प० 16, रु०

या इस वजह से कि सबसे पहले आप ही ने किताब का दर्स दिया

(सावी जि० 3, स० 5

सवालः हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम का सिलसिला नसब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम तक किस तरह है?

जवाबः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम तक आपका सिलसिलाए नसब

इस तरह है:

इदरीस बिन यारो इब्ने मलहल एल इब्ने कैनान इब्ने अनवश इब्ने शीस इब्ने आदम अलैहिस्सलाम। (तफ़्सीर नईमी जि० 1, स० 810)

अल्लामा जलालुद्दीन स्युती रहमतुल्लाह अलैहि ने इस तरह बयान फ़रमायाः

इदरीस बिन यराद इब्ने महलाबील बिन अनवश इब्ने कैनान इब्ने शीस बिन आदम अलैहिमुस्सलाम। (अल् अतक़ान जि० 1, स० 175)

सवालः हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के क्या लगते हैं?

जवाबः आप हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के वालिद (लमक) के दादा हैं। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान प० 8, रु० 15)

एक रिवायत यह भी है कि आप का ज़माना हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बाद है। (अल् अतक़ान जि० 2, स० 175)

सवालः हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम ने कितनी उम्र में निकाह फ़रमाया और आपकी बीवी मोहतरमा का नाम क्या है?

जवाबः आपने पैंसठ साल की उम्र शरीफ़ में बरोख़ा नामी औरत से निकाह फ़रमाया और उनसे एक फ़रज़ंद पैदा हुआ जिसका नाम मतोशलख़ रखा। (मआरिजुल नबुव्वत जि० 1, स० 67)

सवालः हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम पर कितने सहीफ़े नाज़िल हुए?

जवाबः अल्लाह तक़द्दुस ने अपने ख़ज़ानए कलाम से तीस सहीफ़े आप पर नाज़िल फ़रमाए। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान प० 16, रु० 7)

सवालः हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम का ज़ाहिरी हयात के साथ जन्नत में जाने का वाक़िआ क्या है?

जवाबः हज़रत कअब अहबार रज़ियल्लाहु अन्हु वग़ैरह से मरवी है कि हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम ने मलकुल मौत से फ़रमाया, मैं मौत का मज़ा चखना चाहता हूँ, कैसा होता है? तुम मेरी रूह क़ब्ज़ करके दिखाओ। मलकुल मौत ने इस हुक्म की तामील की और रूह क़ब्ज़ करके उसी वक़्त आपकी तरफ़ लौटा दी। आप ज़िंदा हो गए। फिर फ़रमाया,

मुझे जहन्नम दिखाओ ताकि ख़ौफ़े इलाही ज़्यादा हो। चुनाँचे यह भी कर गया कि जहन्नम देखकर आपने दारोग़ा जहन्नम हज़रत मालिक से फ़रमाया, दरवाज़ा खोलो! मैं इस पर से गुज़रना चाहता हूँ। दारोग़ा जहन्नम ने ऐसा ही किया। आप उस पर से गुज़रे। फिर आपने मलकुल मौत से फ़रमाया, मुझे जन्नत दिखाओ। मलकुल मौत आपको जन्नत में ले गए। जन्नत का दरवाज़ा खोलकर आप अंदर दाख़िल हुए। थोड़ी देर इंतिज़ार के बाद मलकुल मौत ने कहा, अब आप वापस तशरीफ़ लाइए और अपने मुक़ाम पर चलिए। हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, अब मैं यहाँ से कहीं नहीं जाऊँगा। अल्लाह तआला ने फ़रमाया,

كل نفس ذائقة الموت तो वह मैं चख चुका हूँ और अल्लाह तआला का फ़रमानः وان منكم الا واردها कि हर शख़्स को जहन्नम पर से गुज़रना है तो मैं गुज़र चुका। अब मैं जन्नत में पहुँच चुका हूँ और जन्नत में पहुँचने वालों के लिए रब्बे तआला ने फ़रमायाः وماهم منها بمخرجين कि वे जन्नत से न निकाले जाएंगे। अब तुम मुझे जन्नत से चलने के लिए क्यों कहते हो? अल्लाह तआला ने मलकुल मौत को "वही" फ़रमाई, हज़रत इदरीस ने जो कुछ मेरे इज़्न से किया और मेरे ही इज़्न से जन्नत मे दाख़िल हुए। लिहाज़ा उन्हें छोड़ दो, वह जन्नत में ही रहेंगे।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान प० 16, रु० 7)

सवालः हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम ज़ाहिरी हयात के साथ अब कहाँ हैं?

जवाबः इस बारे में कई अक़वाल वारिद हैं कि आप ज़ाहिरी हयात तैय्यबा के साथ कहाँ मौजूद हैं:

1. हज़रत कअब अहबार वग़ैरह से मरवी है कि आप जन्नत में हैं। (जैसा कि गुज़रा)।
2. बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है सैय्यदुल आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शबे मैराज में आपको चौथे आसमान में देखा।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान प० 16, रु० 7)

3. आप छठे आसमान में हैं।

4. आप सातवें आसमान में हैं। (हाशिया 16, जलालैन स० 275)

सवालः हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम की उम्र उस वक़्त कितनी थी जिस वक़्त आप आसमान पर उठा लिए गए?

जवाबः इब्ने क़ुतीबा ने कहा है कि उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ तीन सौ पचास साल थी। (अल अतक़ान जि० 2, स० 175)

और एक रिवायत में उस वक़्त आपकी उम्र चार सौ साल थी। (जलालैन स० 276 हाशिया 9)

सवालः हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम किस दिन आसमान पर उठा लिए गए?

जवाबः हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम पीर के दिन आसामन पर उठाए गए थे। (नज़हतुल मजालिस 4/47)

○ ○ ○

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बारे में सवाल और जवाब

सवालः नूह अलैहिस्सलाम की विलादत, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के इंतिक़ाल के कितने दिनों बाद हुई?

जवाबः इब्ने जरीर ने बयान किया हैः हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के विसाल हक़ के एक सौ छब्बीस साल बाद हज़रत नूह अलैहिस्सलाम पैदा हुए?(अल् अतक़ान जि० 2, स० 175)

सवालः नूह अलैहिस्सलाम के वालिद और दादा का नाम क्या है?

जवाबः आपके वालिद माजिद का नाम लमक है और जद्दे अमजद का नाम मतूशल्लख़ बिन अख़नूख़ अलैहिस्सलाम है। यह अख़नूख़ हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम का नाम है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान प० 8, रु० 15, अल् अतक़ान जि० 2, स० 175)

सवालः नूह अलैहिस्सलाम की वालिदा और नाना का नाम क्या है?

जवाबः आपकी वालिदा मोहतरमा का नाम समहा और नाना जान का नाम अनवश है। (अल् अतक़ान जि० 2, स० 189)

सवालः नूह अलैहिस्सलाम और हज़रत इदरीस अलैहिस्स्लाम के बीच ज़माने का कितना फ़ासला है।

जवाबः हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बीच एक हज़ार साल का फ़ासला है।(अल् अतक़ान जि० 2, स० 176)

सवालः नूह अलैहिस्सलाम का असली नाम क्या है?

जवाबः नूह आपका लक़ब है। आपके असली के तहत मुख़्तलिफ़ अक़्वाल नक़ल किए गए हैंः

1. अब्दुल ग़फ़्फ़ार। (अल् अतक़ान जि० 2, स० 175)
2. अब्दुल्लाह। (हाशिया जलालैन स० 288)
2. यशकर। (हाशिया जलालैन स० 288)
3. अब्दुल जब्बार। (हयातुल हैवान जि० 1, स० 11)

सवालः नूह अलैहिस्सलाम का लक़ब "नूह" क्यों हुआ?

जवाबः आपका लक़ब नूह होने की कई वजूहात बयान की गई हैं:

1. इस वजह से कि "नूह" के माने रोना हैं। क्योंकि आप अपनी उम्मत के गुनाहों पर कसरत से रोते थे। कसरते गिरया व बुका की वजह से आपका लक़ब नूह हुआ।(हयातुल हैवान जि० 1, स० 11)
2. या इस वजह से कि आप अपने नफ़्स पर बकसरत बुका करते थे। (अल् अतक़ान जि० 2, स० 175)
3. या इस वजह से कि एक बार आप अपने बेटे किनआन की निजात से मुताल्लिक़ बार गाह रब्बुल आलमीन में अर्ज़ गुज़ार हुए, ऐ अल्लाह! तूने मुझसे मेरे घर वालों की निजात का वादा फ़रमाया? अल्लाह तआला ने फ़रमाया, ऐ नूह! वह तेरे घरवालों में नहीं है। उसकी हरकतें बड़ी नालायक़ हैं। तू उसकी निजात की दुआ मत कर। तुझे नहीं मालूम वह निजात के लायक़ है या नहीं। आप इसी बात पर रोते रहे। (मआरिज नबुव्वत स० 1, जि० 68)

   शेख़ अबू मंसूर रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का बेटा किनआन मुनाफ़िक़ था। वह आपके सामने ख़ुद को मोमिन ज़ाहिर करता था। अगर वह अपना कुफ़्र ज़ाहिर कर देता तो आप अल्लाह तआला से उसकी निजात की दुआ न करते। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान प० 12, रु० 4)
4. या इस वजह से आपका लक़ब नूह हुआ कि एक बार आप का गुज़र एक ख़ारिशी कुत्ते पर हुआ। आपने दिल में सोचा कितना बदशक्ल है। इतना ख़्याल पैदा होना था कि अल्लाह तआला ने "वही" फ़रमाई, तूने मुझे ऐब लगाया या मेरे कुत्ते को, क्या तू इससे अच्छा पैदा कर सकता है? इसके बाद आप अपने इस ख़्याल पर रोते थे। (सावी जि० 2, स० 166, मआरिज नबुव्वत जि० 1, स० 68)

5. या इस वजह से कि तूफ़ान के बाद इब्लीस ख़्बीस आपके पास आया और कहने लगा, आपने मेरा एक बहुत ही बड़ा काम कर दिया। आपने फ़रमाया, वह क्या है? उस लईन ने कहा, मैं और मेरे हव्वारी हर आदमी के पीछे आख़िरी दम तक उसको दोज़ख़ी बनाने में लगे रहते हैं। आपने दुआ की और यकबारगी पूरी क़ौम को पानी में ग़र्क़ करके जहन्नम में पहुँचा दिया। मुझे और मेरे साथियों को मेहनत व मुशक़्क़त से बचा लिया। आप इसी बात पर रोते और कहते काश मैं क़ौम की तकलीफ़ों पर सब्र करता और हलाकत की दुआ न करता। (मआरिज नबुव्वत जि० 1, स० 68)

सवालः नूह अलैहिस्सलाम की काफ़िरा बीवी और काफ़िर बेटे का नाम क्या था?

जवाबः आपकी काफ़िरा बीवी का नाम "वाएला" था। या वालेआ था। (अल् अतक़ान जि० 2, स० 189)

और काफ़िर बेटे का नाम किनआन या याम था।

(अल् अतक़ान स० 2, जि० 187)

बाज़ ने बलीतून कहा है। (मआरिज नबुव्वत जि० 1, स० 72)

सवालः नूह अलैहिस्सलाम की किश्ती किस लकड़ी की बनाई गई थी?

जवाबः यह कि किश्ती "साल" की लकड़ी की थी।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान प० 12, रु० 4)

दूसरे क़ौल के मुताबिक़ यह किश्ती सनूबर की थी।

(अल बिदाया जि० 1, स० 110)

सवालः नूह अलैहिस्सलाम की किश्ती जिन पेड़ों की लकड़ी से बनाई गई थी वह कितने सालों में तैयार हुए थे?

जवाबः अल्लाह तआला के हुक्म से नूह अलैहिस्सलाम ने पेड़ बोए और बीस साल में पेड़ तैयार हुए। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान प० 12, रु० 4)

एक रिवायत में है कि चालीस साल के बाद वह पेड़ काटे गए और एक रिवायत में सौ साल है। (अल बिदाया जि० 1, स० 110)

सवालः नूह अलैहिस्सलाम को किश्ती बनाना किसने सिखाई?

जवाबः अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम को भेजा जिन्होंने आपको किश्ती बनाना सिखाई। (सावी)

सवालः नूह अलैहिस्सलाम की किश्ती कितने दिनों में बनकर तैयार हुई थी?

जवाबः यह किश्ती दो साल में तैयार हुई।

(ख़ज़ाईनुल इरफ़ान प० 12 रु० 4)

एक रिवायत में चालीस साल और एक रिवायत में सौ साल है।

(इब्ने कसीर प० 12, रु० 4)

सवालः नूह अलैहिस्सलाम ने यह किश्ती किस जगह बनाई थी?

जवाबः यह किश्ती नूह अलैहिस्सलाम ने मस्जिदे कूफ़ा के पास बनाई थी। (हाशिया 4, जलालैन 183)

सवालः नूह अलैहिस्सलाम की किश्ती में कितने तख़्त लगाए गए थे?

जवाबः नूह अलैहिस्सलाम की किश्ती में एक लाख चौबीस हज़ार तख़्ते लगाए गए थे।(मआरिज स० 8, रुक्ने दोम, नज़हतुल मजालिस 5/34)

सवालः नूह अलैहिस्सलाम की किश्ती पर क्या लिखा गया था?

जवाबः किश्ती नूह के एक लाख चौबीस हज़ार और चार तख़्तों पर एक लाख चौबीस हज़ार अंबिया किराम के नाम दर्ज किए। बाक़ी चार तख़्तों पर चार ख़लीफ़ाए राशिदीन रज़ियल्लाहु अन्हुम के नाम तहरीर किए गए। यह तमाम नाम हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम तर्तीब वार बताते गए और नूह अलैहिस्सलाम लिखते गए।

(मआरिज स० 8, रुक्ने दोम, नज़हतुल मजालिस 5/34)

सवालः नूह अलैहिस्सलाम की किश्ती की लंबाई चौड़ाई कितनी थी?

जवाबः इसमें मुख़्तलिफ़ अक़्वाल वारिद हुए हैं:

1. इस किश्ती की लंबाई तीन सौ गज़, चौड़ाई पचास गज़ थी और ऊँचाई तीस गज़ थी।
2. इसकी लंबाई अस्सी हाथ थी और चौड़ाई पचास हाथ।
3. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, लंबाई सौ हाथ

थी और चौड़ाई छः सौ हाथ।

4. हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु का कहना है कि उसकी लंबाई तीन सौ हाथ थी।
5. एक रिवायत में यह है कि उसकी लंबाई दो हज़ार हाथ थी और चौड़ाई एक सौ हाथ थी। (इब्ने कसीर 12/4)

और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की एक दूसरी रिवायत है कि उस किश्ती की लंबाई छः सौ साठ गज़, चौड़ाई तीन सौ तीस गज़ और ऊँचाई तैंतीस गज़ थी।(मआरिज नबुव्वत जि० 1, स० 71)

सवालः नूह अलैहिस्सलाम की किश्ती की शक्ल कैसी थी?

जवाबः इस किश्ती का नक़्शा शक्ल मुर्ग़ी की तरह था। उसका सर मोर की तरह, सीना, बत्तख़ के सीने की तरह। दूसरी रिवायत में सीना कबूतर की तरह और दुम मुर्ग़ की दुम की तरह।

(मआरिज नबुव्वत जि० 1, स० 71)

सवालः नूह अलैहिस्सलाम की किश्ती में कितनी मंज़िले थीं?

जवाबः इस किश्ती में तीन मंज़िलें थीं और हर मंज़िल दस हाथ ऊँची थी। (इब्ने कसीरः 12/4)

सवालः नूह अलैहिस्सलाम की कौनसी मंज़िल किसके लिए ख़ास की गई थी?

जवाबः इस किश्ती की मंज़िलें इस तरह तक़्सीम की गई कि नीचे के तब्क़े में वहशी दरिन्दे और हवाम, बीच के हिस्से में चौपाए वग़ैरह और ऊपर के तब्क़े में खुद हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और आप के तावेदार। परिन्दे और खाने पीने का सामान भी ऊपर ही के तब्क़े में थे।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ानः 12/4)

एक क़ौल यह है कि पहली मंज़िल में वहशी जानवर और दूसरे में खाने की चीज़ें और तीसरी में मोमिनीन थे। एक और क़ौल यह भी है कि पहली मंज़िल में चौपाए और जंगली जानवर, दूसरी में मर्द व औरतें और तीसरी में परिन्दे थे। (इब्ने कसीरः 12/4, हाशिया जलालैन)

सवालः नूह अलैहिस्सलाम की किश्ती में कितने नबी सवार थे?

जवाबः दो, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और नूह अलैहिस्सलाम

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने उस किश्ती में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का ताबूत रख लिया था और ताबूत के एक जानिब मर्द और दूसरी जानिब औरतों को बिठा लिया।

(मलफ़ूज़ 1/73)

सवालः नूह अलैहिस्सलाम की किश्ती में कुल कितने अफ़राद सवार थे?

जवाबः इस ताल्लुक़ से कई क़ौल मंक़ूल हैं:

1. हज़रत मक़ातिल ने कहा कुल बहत्तर मर्द व औरत थे।

(ख़ज़ाएनुल इरफ़ान)

2. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि अस्सी अफ़राद थे। आधे मर्द और आधी औरतें।
3. कुल बारह आदमी थे। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के तीन साहबज़ादे अपनी अपनी बीवियों और छः दूसरे मोमिन मर्द व औरतों के साथ।

(जलालैनः 183)

4. बाज़ ने कहा कि कुल नौ अफ़राद थे। तीन आपके साहबज़ादे यानी हाम, साम, याफ़स, छः दीगर।
5. बाज़ ने नौ की तादाद नूह अलैहिस्सलाम की औलाद के अलावा बतालाई है।

(सावी)

6. एक क़ौल दस अफ़राद का है।
7. और एक क़ौल यह है कि कुल सात लोग थे। तीन आपके साहबज़ादे और उनकी बीवियाँ और एक याम (आपका काफ़िर बेटे) की बीवी। (इब्ने कसीर 12/4)
8. एक क़ौल अठ्हत्तर का भी है। (हाशिया 4, जलालैन 336)
9. बीस और अठास्सी के भी क़ौल मन्क़ूल हैं। (मआरिज नबुव्वत 1/73)

सवालः नूह अलैहिस्सलाम की किश्ती में सवार होने वाला सबसे पहला परिन्दा कौनसा था?

जवाबः उस किश्ती में परिन्दों की जिन्स में से सबसे पहले तोता सवार हुआ था। (अल बिदाया 1/ 111, इब्ने कसीर 12/4)

और इमाम क़रतबी कहते हैं कि सबसे पहले किश्ती में जो जानवर सवार हुआ था वह मुर्ग़ाबी है। (नज़हतुल मजालिस 1/89)

सवालः नूह अलैहिस्सलाम की किश्ती में सबके आख़िर में सवार होने वाला जानवर कौनसा था?

जवाबः इस किश्ती में चौपाओं में से गधा है जो सबसे बाद में सवार हुआ था। (अल बिदाया 1/111, इब्ने कसीर 12/4)

सवालः नूह अलैहिस्सलाम की किश्ती में इब्लीस किस तरह सवार हुआ?

जवाबः इस किश्ती में इब्लीस पुर तबलीस गधे की दुम में लटककर सवार हुआ था। जब गधा किश्ती में सवार होने लगा। उसके दोनों अगले पाँव किश्ती में तो आ गए लेकिन जब उसने अपना पिछला धड़ उठाना चाहा तो लाख कोशिश के बावजूद उठा न सका क्योंकि दुम पर उस मलऊन का बोझ था। इधर हज़रत नूह अलैहिस्सलाम जल्दी कर रहे थे। जब आपने गधे की परेशानी को देखा तो कहा, आजा! गो तेरे साथ इब्लीस लईन भी हो। तब वह चढ़ गया और इब्लीस भी उसके साथ चढ़ आया। (इब्ने कसीर 12/4, मआरिज नबुव्वत 1/72)

सवालः किस वादे के तहत साँप और बिच्छू को किश्ती में सवार किया गया था?

जवाबः जब साँप और बिच्छू किश्ती में सवार होने लगे तो हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने उन दोनों को सवार करने से मना फ़रमा दिया। तब उन दोनों ने कहा, हमें सवार कर लीजिए। हम यह वादा करते हैं कि वह जो शख़्सः سَلَامٌ عَلٰى نُوْحٍ فِى الْعٰلَمِيْنَ पढ़ेगा हम उसे नुक़सान नहीं पहुँचाएंगे।

(मआजिर नबुव्वत 71, ग़राईबुल क़ुरआन 107, नज़्हतुल मजालिस 3/50)

सवालः तूफ़ाने नूह की आमद की निशानी क्या बतलाई गई थी?

जवाबः तन्दूर का जोश मारना तूफ़ान आने की अलामत बतलाई गई थी। अब इसमें चंद क़ौल हैं कि तन्दूर के जोश मारने से क्या मुराद है?

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैंः

तन्दूर के उबलने से मुराद रूए ज़मीन से चश्मे फूट निकलना है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है "तन्दूर" मुराद सुबह का निकलना है और फ़ज्र का रोशन होना है। (इब्ने कसीर 12/4)

या "तन्दूर" से मुराद यही तन्दूर है जिसमें रोटी पकाई जाती है। इस सूरत में फिर इख़्तिलाफ़ वारिद है कि यह तन्दूर कहाँ था। एक क़ौल यह है कि यह तन्दूर पत्थर का था। हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा का जो आप (नूह अलैहिस्सलाम) को तर्के में पहुँचा था और यह मुल्के शाम या हिंद में था। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 12/4)

हज़रत मुजाहिद और शअबी कहते हैं, यह तन्दूर कूफ़े में था।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है हिंद में एक नहर का नाम है। क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल है कि जज़ीरे में एक नहर है जिसे "ऐनुल वारिदा" कहते हैं। (इब्ने कसीर 12/4)

सवालः तूफ़ाने नूह का आग़ाज़ किस माह की किस तारीख़ को हुआ था?

जवाबः रजब की पहली तारीख़ से तूफ़ान नाज़िल होना शुरू हुआ और दसवीं रजब को किश्ती में सवार हुए।

(मलफ़ूज़ 73, ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 12/4)

सवालः तूफ़ाने नूह कितने नूह कितने दिनों तक जारी रहा?

जवाबः चालीस दिन लगातार आसमान से पानी बरसता रहा और ज़मीन पानी उगलती रही। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 12/4)

सवालः तूफ़ाने नूह में बरसने वाले हर क़तरे में कितना पानी होता था?

जवाबः इस तूफ़ान की वारिश का हर क़तरा एक मशक के बराबर था। (मआरिज नबुव्वत 1/74)

सवालः नूह अलैहिस्सलाम की किश्ती बैतुल्लाह का तवाफ़ कितने दिनों तक करती रही?

जवाबः चालीस दिनों तक किश्ती नूह बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ करती रही। फिर अल्लाह तआला ने उसे जूदी की तरफ़ रवाना कर दिया। (इब्ने कसीर 12/4)

बाज़ कहते हैं कि सात रोज़। (मआरिज नबुव्वत 1/74)

सवालः नूह अलैहिस्सलाम की किश्ती दौराने गश्त कहाँ रुकी थी और क्यों?

जवाबः साहिबे कन्ज़ुल ग़राईब लिखते हैंः

किश्ती नूह तमाम रूए ज़मीन पर गश्त करते करते जब ज़मीन करबला पर पहुँची तो रुक गई। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने जनाबे बारी तआला में अर्ज़ की, इलाही! यह क्या मुक़ाम है और किश्ती ठहरने में क्या मसलेहत है? जवाब मिला, यह वह मुक़ाम है जहाँ अहले बैत अतहार की किश्ती ख़ून में डूबेगी और मेरे महबूब के जिगर गोशे इस मुक़ाम से जामे शहादत पी पी कर मुझसे मिलेंगे। (औराके 14)

सवालः तूफ़ाने नूह का पानी पहाड़ों से कितना ऊँचा था?

जवाबः तूफ़ान का पानी सबसे बुलदं पहाड़ से भी तीस गज़ ऊँचा था। (मलफ़ूज़ 73)

बक़ौल दीगर बड़े बड़े पहाड़ों की चोटियों से पंद्रह गज़, दूसरी रिवायत के मुताबिक़-चालीस गज़ ऊँचा था।

(हाशिया 3, जलालैन 336, मआरिज नबुव्वत 1/ 73)

एक क़ौल यह भी है कि पानी पहाड़ों से अस्सी मील ऊपर था।

(इब्ने कसीर 12/ 4)

सवालः हज़रत नूह अलैहिस्सलाम किश्ती में किस माह की किस तारीख़ का सवार हुए थे और किश्ती पहाड़ पर किस तारीख़ को ठहरी थी?

जवाबः हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की किश्ती में दसवीं रजब को बैठे और दसवीं मुहर्रम को किश्ती जूदी पहाड़ पर ठहरी।

(ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 12/4)

हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु वग़ैरह फ़रमाते हैं कि रजब की दसवीं तारीख़ को मुसलान इसमें बैठे थे और पाँच माह तक इसी में रहे। उन्हें लेकर किश्ती जूदी पर महीने भर तक ठहरी रही। आख़िर आशूरा के दिन वे सब उसमें से उतरे।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा का क़ौल है, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम अपने ताबेदारों के साथ एक सौ पचास दिनों तक किश्ती में रहे। अल्लाह तआला ने किश्ती का मुँह मक्का शरीफ़ की तरफ़ कर दिया। यहाँ वह किश्ती चालीस दिन तक काबा शरीफ़ का तवाफ़ करती

रही। फिर अल्लाह तआला ने उसका रुख़ जूदी की तरफ़ करके रवाना कर दिया। जहाँ वह ठहर गई। और बक़ौल अहले तौरात के सातवें महीने की सत्रहवीं तारीख़ को किश्ती जूदी पर लगी। दसवें महीने की पहली तारीख़ को पहाड़ों की चोटियाँ खुल गयीं। उसके चालीस दिन बाद किश्ती के रोज़न पानी के ऊपर दिखाई देने लगे। फिर आपने कव्वे को पानी की तहक़ीक़ के लिए भेजा वह पलट कर न आया। आपने कबूतर को भेजा जो वापस आया। फिर सात दिन के बाद उसे दोबारा भेजा। शाम को ज़ैतून का पता लिए हुए वापस लौटा। फिर सात दिन के बाद उसे भेजा। अब की बार वह न लौटा। आप समझ गए कि ज़मीन बिल्कुल खुश्क हो चुकी है। अलग़र्ज़ पूरे एक साल बाद नूह अलैहिस्सलाम ने किश्ती का सरपोश उठाया और बाहर तशरीफ़ लाए। (इब्ने कसीर 12/4)

एक और रिवायत में है की बारहवीं रजब बरोज़ बुध किश्ती में सवार हुए थे। (नज़हतुल मजालिस 5/34)

सवालः हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की किश्ती किस पहाड़ पर लंगर अंदाज़ हुई और यह पहाड़ कहाँ है?

जवाबः यह किश्ती जूदी पहाड़ पर ठहरी जो मूसल या शाम के हुदूद में वाक़ेअ है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 12/4)

हज़रत मुजाहिद फ़रमाते हैं, यह जज़ीरे में एक पहाड़ है। सब पहाड़ डुबो दिए गए थे लेकिन यह पहाड़ आजिज़ी और तवाज़ेह की वजह से ग़र्क़ होने से बच रहा था। यहीं किश्ती लंगर अंदाज़ हुई।

(इब्ने कसीर 12/4)

बाज़ का कहना है कि तूर पहाड़ को ही जूदी कहते हैं।

(इब्ने कसीर 12/4)

सवालः जूदी पहाड़ की बुलंदी कितनी थी?

जवाबः जूदी पहाड़ की बुलंदी चालीस हाथ थी। (सावी)

सवालः हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को तूफ़ान का पानी खुश्क होने की ख़बर कैसे मिली?

जवाबः तूफ़ान रुक जाने और फिर किश्ती जूदी पर लंगर अंदाज़ होने के बाद हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने रूए ज़मीन की ख़बर लाने का इरादा

किया। आपने कव्वे को भेजा। कव्वा एक मुर्दार को देखकर उस पर गिर पड़ा और वापस न आया। आपने उसके लिए हमेशा डरते रहने की बद्दुआ दी। इसलिए वह घरों से मानूस नहीं होता। फिर आपने कबूतर को भेजा। वह ज़मीन पर नहीं उतरा बल्कि मुल्के सबा से ज़ैतून की एक पत्ती चोंच में लेकर आया। आपने फिर उसे दोबारा भेजा तो कबूतर मक्का मुकर्रमा में हरम काबा की ज़मीन पर उतरा और सुर्ख़ रंग की मिट्टी लेकर वापस आया। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम इससे समझ गए कि तूफ़ान का पानी खुश्क हो चुका है। आपने किश्ती का सरपोश उठाया और आवाज़ आई कि ऐ नूह! हमारी नाज़िल की हुई सलामती के साथ अब उतर आओ। (इब्ने कसीर 12/4)

सवालः तूफ़ाने नूह के बाद आबाद होने वाली सबसे पहली बस्ती का नाम क्या है?

जवाबः आप जूदी पहाड़ से नीचे तशरीफ़ लाए और वहीं एक बस्ती की बुनियाद डाली उसका नाम "सौक़ समानीन" रखा। (मलफ़ूज़ 1/73)

यहाँ एक दिन में अस्सी ज़बाने जारी हो गयीं। किसी की अरबी, किसी की फ़ारसी वग़ैरह। तब से इस जगह का नाम बाबुल हुआ यानी इख़्तिलाफ़ की जगह। (तफ़्सीर नईमी 1/682)

सवालः तूफ़ाने नूह के बाद उगने वाला सबसे पहला पेड़ कौन सा है?

जवाबः तूफ़ाने नूही के बाद ज़मीन पर जो पहला पेड़ उगा वह ज़ैतून का है। (जलालैन 6 हाशिया 299)

सवालः तूफ़ाने नूह के बाद नूह अलैहिस्सलाम इस दुनिया में कितने साल रहे?

जवाबः आप तूफ़ान के बाद साठ साल इस दुनिया में रहे। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 12/4)

दूसरी रिवायत के मुताबिक़ तूफ़ान के बाद आप इस दुनिया में दो सौ पचास साल रहे। (हाशिया 2, जलालैन 134)

एक क़ौल पचास साल का भी है। (हाशिया 2, जलालैन 336)

सवालः हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की उम्र शरीफ़ कितनी हुई?

जवाबः इस बारे में अइम्मा तफ़्सीर व मौरिख़ीन इख़्तिलाफ़ रखते हैं:

1. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं:
   हज़रत नूह अलैहिस्सलाम चालीस साल बाद मबऊस हुए। नौ सौ पचास साल तक अपनी क़ौम को दावत फ़रमाते रहे। तूफ़ान के बाद साठ बरस दुनिया में रहे। इस तरह आपकी उम्र एक हज़ार पचास साल हुई। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 12/4, अल् अतक़ान 2/175)
2. फ़क़ीह बेमिसाल फ़ाज़िल बरेलवी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं:
   हज़रत नूह अलैहिस्सलाम तक़रीबन सोलह सौ बरस दुनिया में तशरीफ़ फ़रमा रहे। (मलफ़ूज़ 1/74)
3. हज़रत वहब से मरवी है, आप चौदह सौ साल तक इस जहाँ में तशरीफ़ फ़रमा रहे। (हाशिया 5 जलालैन 336)
4. बाज़ का कहना है कि आपकी उम्र शरीफ़ बारह सौ चालीस साल हुई। (हाशिया 25, जलालैन 134)
5. एक क़ौल सत्रह सौ साल का है और एक क़ौल पंद्रह सौ साल का भी है। (मआरिज नबुव्वत 1/67)

सवालः हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की क़ब्रे अनवर कहाँ है?

जवाबः इब्ने जरीर और अज़राक़ी अब्दुर्रहमान बिन साबित या उसके अलावा ताबईन से मरसलन नक़ल करते हुए कहते हैं:

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की क़ब्र पुरअनवर सही क़ौल के मुताबिक़ मस्जिदे हराम में है।

दूसरा क़ौल यह है कि आपकी क़ब्र शरीफ़ "बक़ा" में है जिसको कर्के नूह से याद किया जाता है।

○ ○ ○

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बारे में सवाल और जवाब

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की विलादत, सैय्यदना आदम अलैहिस्सलाम के कितने साल बाद हुई?

जवाबः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बाद, दो हज़ार साल के ख़त्म पर आप रौनक़ अफ़रोज़ आलम हुए। (अल् अतक़ान 2/176)

दूसरा क़ौल यह है कि आपका विलादत हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के तीन हज़ार तीन सौ सैंतीस (3337) साल बाद है। (तारीख़ुल उमम व वल मलूक 1/146)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम तूफ़ान नूह के कितने साल बाद वजूद में आए?

जवाबः आप, तूफ़ान नूह अलैहिस्सलाम के सत्तरह सौ नौ (1709) साल बाद दुनिया में आए। (तफ़्सीर नईमी 1/810)

दूसरा क़ौल यह है कि आपकी विलादत व-सआदत तूफ़ान नूही के बारह सौ तरेसठ (1263) साल बाद हुई और तीसरा क़ौल एक हज़ार उनास्सी (1079) साल का है। (तारीख़ुल उमम व वल मलूक 1/146)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से कितने साल पहले दुनिया में तशरीफ़ लाए?

जवाबः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से तक़रीबन दो हज़ार तीन सौ (2300) साल पहले हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम वजूद में आए? (तफ़्सीर नईमी 1/810)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ज़माना हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत से कितने साल पहले का है?

जवाबः आपका ज़माना सैय्यद काएनात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत व-सआदत से तक़रीबन तीन हज़ार सत्तर (3070) साल पहले है।
(मआरिज नबुव्वत 2/32)

सवालः हज़रत इबाहीम अलैहिस्सलाम और नूह अलैहिस्सलाम के बीच कितना फ़ासला है?

जवाबः आप के और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बीच दो हज़ार छः सौ चालीस साल का फ़ासला है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान प० 23/7)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बीच कितने नबी भेजे गए?

जवाबः आपके और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बीच जो ज़माना गुज़रा है उसमें सिर्फ़ दो नबी आए हज़रत हूद और हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान प० 23/7)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वालिद और वालिदा का नाम क्या है?

जवाबः आपके वालिद माजिद का नाम "तारख़" था।

(इब्ने कसीर प० 7/15, तफ़्सीर नईमी 1/810)

और मशहूर किताब "अल अजाएबुल किरमानी" में है कि आप तारख़ के फ़रज़ंदे जलील थे। (अल् अतक़ान 2/176)

और आपकी वालिदा का नाम "सानी" था। बाज़ ने "नूफ़ा" और बाज़ ने "ल्युसा" कहा है। (अल् अतक़ान 2/187)

और बाज़ ने "अमीला" भी कहा है। और एक रिवायत में यह भी है कि आपकी वालिदा मोहतरमा का नाम बूना बिन्ते कर्बन इब्ने करसी है।

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का सिलसिलाए नसब किस तरह है?

जवाबः आपका सिलसिलाए नसब इस तरह हैः

इब्राहीम बिन तारख़ इब्ने नाख़ूर इब्ने सारूअ इब्ने रअवा इब्ने सातेह इब्ने आमिर बिन शालेह इब्ने अरफ़हशद इब्ने साम इब्ने नूह इब्ने लामक इब्ने मतोशालेह इब्ने इदरीस इब्ने यारो इब्ने मुलहिल ऐल इब्ने कैनान इब्ने अनवश इब्ने शीस इब्ने आदम अलैहिस्सलाम। (तफ़्सीर नईमी 1/810)

हज़रत किरमानी ने अपनी किताब "अल अजाइब" में इस तरह बयान किया है:

इब्राहीम इब्ने तारख़ इब्न नाख़ूर इब्ने शारोख़ इब्ने राग़ो इब्ने फ़ालिख़ इब्ने आमिर इब्ने शालेह इब्ने अरफ़हशज़ इब्ने साम इब्ने नूह अलैहिस्सलाम।

(अल अतक़ान 2/176)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की जाए विलादत कहाँ है?

जवाबः आपकी विलादत शहर बाबुल से लगे क़स्बे "कोसी" में हुई। तफ़्सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में फ़रामया कि आपकी जाए पैदाइश "अमवाज़" के इलाके में मुक़ाम "सूस" है। (तफ़्सीर नईमी 1/810)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम तहख़ाने में कितनी मुद्दत रहे, इस वाक़िए की तफ़्सील क्या है?

जवाबः आप तहख़ाने में कितना अरसे रहे इस सिलसिले में बाज़ कहते हैं कि सात बरस, बाज़ तेरह बरस और बाज़ सत्रह बरस।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान प० 7/15)

और बाज़ कहते हैं कि पंद्रह माह रहे। (तारीख़ तिबरानी 1/164)

नमरूद बिन किनआन बड़ा जाबिर बादशाह था। यह लोगों से अपनी पूजा कराता। काहिन और नजूमी कसरत से उसके दरबार में हाज़िर रहते थे। नमरूद मतरूद ने एक शब ख़्वाब देखाः

एक सितारा तुलू हुआ है। उसकी रोशनी के सामने आफ़ताब व महताब बिल्कुल बेनूर हो गए। इससे वह बहुत ख़ौफ़ज़दा हुआ। काहिनों से ताबीर दर्याफ़्त की। काहिनों ने कहा, इस साल तेरी क़लमरू में एक फ़रज़ंद पैदा होगा जो तेरे मुल्क के ज़वाल का बाइस होगा और तेरे दीन वाले उसके हाथ हलाक होंगे। यह डराने वाली ख़बर सुनकर नमरूद मरदूद परेशान हुआ और उसने हुक्म दिया जो बच्चा पैदा हो क़तूल कर डाला जाए। मर्द, औरतों से अलैहिदा रहें। फिर इसकी निगहबानी और पासबानी के लिए एक मोहकमा क़ायम किया गया।

अल्लाह की तक़दीर कौन टाल सकता है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की वालिदा माजिदा हामिला हुईं। काहिनों ने इसकी भी ख़बर दी कि वह

बच्चा हमल में आ गया है लेकिन क्योंकि हज़रत की वालिदा मोहतरमा की उम्र कम थी उनका हमल किसी तरह पहचाना न गया। जब विलादत बसाअदत का ज़माना क़रीब हुआ तो आपकी वालिदा साहिबा इस तहख़ाने में चली गयीं जो आपके वालिद मोहतरम ने शहर से दूर खोदकर तैयार किया था। वहाँ आपकी विलादत हुई और वहीं आप रहे। पत्थरों से उस तहख़ाने का दरवाज़ाबंद कर दिया जाता था। रोज़ाना वालिदा मोहतरमा दूध पिलाती थीं और जब वहाँ पहुँचती तो देखतीं थीं कि आप अंगूठा चूस रहे हैं और उससे दूध बरामद होता है। आप बहुत जल्द बढ़ते थे एक महीने इतना में जितने दूसरे बच्चे एक साल में।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान प० 7/15)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कितनी शादियाँ कीं?

जवाबः आपने चार निक़ाह फ़रमाएः

1. हज़रत हाजरा रज़ियल्लाहु अन्हा से,

2. हज़रत सारा रज़ियल्लाहु अन्हा से,

3. इन दोनों के विसाल के बाद किनआनियों की एक साहबज़ादी क़न्तूरा बिन्ते यक़तन से निकाह फ़रमाया,

4. उनके इंतिक़ाल के बाद आने हजून बिन्ते ज़ुहैर को अपने अक़्द में लिया। (अल कामिल फ़ी तारीख़ 1/50)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के कितने बेटे थे?

जवाबः इस बारे में कई अक़्वाल मंक़ूल हैंः

आपके आठ बेटे थेः

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम, हज़रत हाजरा रज़ियल्लाहु अन्हा के शिकम से,

2. हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम हज़रत सारा रज़ियल्लाहु अन्हा के शिकम से,

3. मदाईन, 4. मदयन, 5. ज़मरान,

6. बकशान, 7. यशबक़, 8. नूह।

यह छः आपकी तीसरी बीवी क़न्तूरा बिन्ते यक़तन के शिकम से हैं।

(तफ़्सीर नईमी 1/870)

एक रिवायत में छः बाद वालों के नाम इस तरह हैं:
तहशान, ज़मरान, मदयन, मदाईन, सिरज।

(अल कामिल फ़ी तारीख़ 1/50)

अल्लामा जलालुद्दीन स्युती रहमतुल्लाह अलैहि ने आपकी बारह औलाद किराम के नाम बयान फ़रमाए हैं:

1. इस्माईल अलैहिस्सलाम, 2. इस्हाक़ अलैहिस्सलाम,
3. मान, 4. ज़मरान, 5. सरह,
6. नफ़्श, 7. नफ़्शान, 8. मीम,
9. कैसान, 10. सूरह, 11. लूतान,
12. नाफ़िश। (अल् अतक़ान 2/185)

हाशिया जलालेन 328 में है कि आपके चार साहबज़ादे थे 5

1. इस्माईल अलैहिस्सलाम, 2. इस्हाक़ अलैहिस्सलाम,
3. मदयन, 4. मदायन।

और तफ़्सीर नईमी में तफ़्सीर हक़्क़ानी के हवाले से है कि हज़रत हाजरा रज़ियल्लाहु अन्हा के शिकम से सात बेटे थे:

1. इस्माईल, 2. ज़मरान, 3. यसक़ान,
4. मदान, 5. मदयान, 6. असबाक़, 7. सोख़। (1/357)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बुतख़ाने के जिन बुतों को तोड़ा था उनकी तादाद कितनी थी?

जवाबः आपने सनमकदा के जिन बुतों को तोड़ा था उनकी तादाद बहत्तर थी। कुल तेहत्तर बुत थे। बाज़ सोने चाँदी के, बाज़ लोहे तांबे के और बाज़ पत्थर व लकड़ी के थे और सबसे बड़ा बुत जिसको आपने छोड़ दिया था वह सोने का था। उसके सर पर जवाहर व ज़वाहिर से सजा ताज था और दोनों आँखों में दो याक़ूत थे जिससे रात को रोशनी फूटती थी।

(हाशिया 20, जलालेन 273, मआरिज नबुव्वत 1/96)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जलाने का मशवरा किसने दिया था?

जवाबः आपको जलाने का मशवरा खुद नमरूद ने दिया था। बाज़ कहते हैं कि मुशीर फ़ारस का हैनूब नामी शख़्स था। इस नाफरजाम का

अंजाम यह हुआ कि अल्लाह तआला ने उसे ज़मीन में धंसा दिया और एक क़ौल यह भी है कि उस शख़्स का नाम हैज़न था।

(तारीख़ तिबरानी 1/170, जमल 3/163)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जलाने के लिए कितने दिनों तक लकड़ियाँ जमा की गयीं?

जवाबः आग जलाने के लिए एक माह तक बकोशिश तमाम क़िस्म क़िस्म की लकड़ियाँ जमा की गई थीं।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 17/5, जमल 3/163)

एक रिवायत में हे कि एक साल तक लकड़ियाँ जमा की गई थीं।

(मआरिज नबुव्वत 1/98)

सवालः आतिशे नमरूदी कहाँ दहकाई गई थी?

जवाबः आतिशे नमरूदी क़रया कोसी में दहकाई थी।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान प० 17/5)

सवालः आतिशे नमरूदी कितने दिनों दहकाई गई थी?

जवाबः नारे नमरूदी, सात दिनों तक इस तरह मुशतइल की गई कि उसके ऊपर परवाज़ करने वाले परिन्दे भी जल जाते थे।

(जमल 3/163, नज़हतुल मजालिस 12/9)

सवालः आतिशे नमरूदी के शोलों की बुलंदी कितनी थी?

जवाबः इस आग की बुलंदी कि इसके शोले अहले शाम को दिखाई देते थे और उसकी आवाज़ एक दिन रात की मुसाफ़त तक सुनाई देती थी। (मआरिज नबुव्वत 1/98)

सवालः जिस मकान में आतिशे नमरूदी दहकाई गई थी उसकी लंबाई चौड़ाई कितनी थी?

जवाबः यह पत्थर की चार दीवारी थी तीस गज़ लंबी और बीस ग़ज़ चौड़ी। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान प० 23/7)

और इस चारदीवारी की बुलंदी तीस ग़ज़ थी।

(हाशिया 4 जलालैन 377)

एक रिवायत यह भी है कि आतिशे नमरूदी की लंबाई चौड़ाई दस फ़रसंग थी और एक रिवायत में चार फ़रसंग है।(मआरिज नबुव्वत 1/98)

एक रिवायत में लंबाई अस्सी हाथ और चौड़ाई चालीस हाथ है।

(नज़्हतुल मजालिस 12)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आतिशे नमरूदी में किस तरह डाला गया था और यह तरीक़ा किसने सिखाया था?

जवाबः जब आग काफ़ी तौर पर भड़क गई तो सबको फ़िक्र हुई कि इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को इसमें कैसे डाला जाए। इस वक़्त इब्लीस आया और मंजनीक़ (तोप) बनाने का तरीक़ा सिखाया। उसने मंजनीक़ दोज़ख़ में देखा था और उस पर रखकर फेंकने का मश्वरा दिया।

(हाशिया 4 जलालैन 377)

बाज़ ने कहा कि मंजनीक़ बनाने का तरीक़ा हैज़न नामी शख़्स ने सिखाया था। उसको अल्लाह तआला ने ज़मीन में धंसा दिया। क़यामत तक धंसता ही जाएगा। (इब्ने कसीर प० 17/5)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जब नारे नमरूदी के हवाले किए गए उस वक़्त आपकी उम्र कितनी थी?

जवाबः उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ सोलह की थी। बाज़ ने छब्बीस साल कहा है। (इब्ने कसीर प० 17, सावी प० 17/12, जमल 3/163)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जब "बरहना" आग में डाला जा रहा था उस वक़्त आपको किसने और कैसा लिबास पहनाया?

जवाबः उस वक़्त हज़रत रूहुल अमीन अल्लाह तआला के हुक्म से हरीर जन्नत की एक क़मीज़ लेकर आए और आपको पहनाया।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान प०12/12)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम नारे नमरूदी में कितनी मुद्दत तशरीफ़ फ़रमा रहे?

जवाबः आप आतिशे नमरूद में सात दिन रहे। बाज़ ने चालीस दिन और बाज़ ने पचास दिन कहा है। (इब्ने कसीर प० 17/5, जमल 3/163)

सवालः जब आतिशे नमरूदी को ठंडा हो जाने का हुक्म मिला तो उस वक़्त और कहाँ कहाँ की आग ठंडी हुई?

जवाबः जिस वक़्त अल्लाह तआला ने आग को सर्द हो जाने का हुक्म

सादिर फ़रमाया उस वक़्त पूरी दुनिया की आग ठंडी हो गई। दुनिया भर में कोई भी उस दिन आग से कोई फ़ायदा न उठा सका।

(इब्ने कसीर प० 17/5)

एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ सात रोज़। तीसरी रिवायत के मुताबिक़ चालीस और चौथी रिवायत के मुताबिक़ सत्तर रोज़ पूरी दुनिया भर की आग ठंडी रही। आग थी लेकिन हरारत नहीं।

(मआरिज नबुव्वत 1/101)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की रिसालत की तसदीक़, सबसे पहले किसने की?

जवाबः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की रिसालत की तसदीक़ सबसे पहले लूत अलैहिस्सलाम ने की। उस वक़्त जबकि आप आतिशे नमरूद से बसलामत बाहर तशरीफ़ लाए।

(मआरिज ख़ज़ाइन प० 20/15, हाशिया 8 जलालैन 337)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कितनी उम्र में ख़ुद अपना ख़त्ना किया?

जवाबः आपने हुक्मे इलाही से अस्सी बरस की उम्र शरीफ़ में यतशा से अपना ख़त्ना फ़रमाया। (तफ़्सीर नईमी 1/810)

एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ एक सौ बीस साल की उम्र शरीफ़ में यह रिवायत हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की है।

(अल् अतक़ान 2/176)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की उम्र उस वक़्त कितनी थी जब आप को इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की विलादत की ख़ुशख़बरी दी गई?

जवाबः उस वक़्त आपकी उम्र एक सौ बीस साल की थी और हज़रत सारा रज़ियल्लाहु अन्हा नव्वे साल से ज़्यादा की हो चुकी थीं।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान प० 12/7)

एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ उस वक़्त आपकी उम्र एक सौ बारह साल (जलालैन 209) और हज़रत सारा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र निन्नानवे साल की थी। (जलालैन 185)

एक और रिवायत के मुताबिक़ उस वक़्त आपकी उम्र निन्नानवे बरस की थी। (इब्ने कसीर प० 23/7)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बेटे की क़ुर्बानी का ख़्वाब किस शब को देखा था?

जवाबः आपने ज़िलहिज्ज की आठवीं शब को ख़्वाब देखा था जिसमें बेटे की क़ुर्बानी का हुक्म था। दिन भर ग़ौर फ़िक्र किया कि यह अल्लाह तआला की तरफ़ से है या सिर्फ़ मेरा ख़्याल। यह पूरा दिन फ़िक्र व सोच में गुज़रा। नवीं शब को फिर यही ख़्वाब देखा तो पहचाना कि यह अल्लाह ही की तरफ़ से हे। इसलिए आठवीं तारीख़ का नाम यौमे तरविया यानी ग़ौर करने का दिन और नवीं तारीख़ का नाम यौमे अरफ़ा यानी पहचानने का दिन रखा गया। (तफ़्सीर नईमी 2/296)

फिर दसवीं शब को आपने वही ख़्वाब मुलाहिजा फ़रमाया और सुबह को क़ुर्बानी पेश की। इसलिए इस दिन का नाम यौमुन्नहर रखा गया। (हाशिया 11, जलालैन 377)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बाद मौत फिर ज़िंदा होने का मंज़र मुलाहिज़ा करने के लिए अल्लाह के हुक्म से किन परिन्दों को ज़िब्ह किया था?

जवाबः इस बारे में मुफ़स्सिरीन किराम के कई क़ौल हैं:

1. मोर, कबूतर और कव्वा। (ख़ज़ाईनुल इरफ़ान प० 3/3)
2. मोर, मुर्ग़, कबूतर और गिद्ध। (जमल 1/217, जलालैन स० 41)
3. मोर, मुर्ग़, कबूतर और कलिंग (राजहंस),
4. मुर्ग़ाबी, सीमुर्ग़ का बच्चा, मुर्ग़ और मोर। (इब्ने कसीर प० 3/3)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ज़िब्ह हुए परिन्दों का गोश्त कितने पहाड़ों पर रखा था और कौन सा हिस्सा अपने पास रखा था?

जवाबः आपने अल्लाह के हुक्म से परिन्दों को ज़िब्ह फ़रमाया। उनके पर उखाड़े और क़ीमा करके उनके अजज़ा आपस में मिला दिए। इस मजमूए के चार हिस्से करके चार या सात पहाड़ों पर रख दिए और सब के सर अपने पास महफ़ूज़ रखे फिर फ़रमाया, चले आओ हुक्म इलाही

ते। आप जिस जानवर को आवाज़ देते उसके बिखरे हुए पर और अजूज़ा इधर उधर उड़ते ओर आपस में जुड़ते, ख़ून के साथ मिलता हुआ, उड़ता हुआ आपके पास आता। आप उसे दूसरे परिन्दे का सर देते तो वह क़ुबूल न करता। खुद उसका सर देते तो जुड़ जाता। खुदा की क़ुदरत का यह ईमान अफ़रोज़ नज़ारा हज़रत ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम ने खुद अपनी आँखों देखा।

(इब्ने कसीर प० 3/3)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दीन हनीफ़ को सबसे पहले किसने रद्दे बदल किया?

जवाबः दीने इब्राहीमी को सबसे पहले अबू ख़ज़ाआ बिन आमिर लही ने रद्दोबदल और कतरबयोनत किया। (इब्ने कसीर प० 7/3)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मादरी ज़बान कौन सी थी?

जवाबः आपकी असल ज़बान सुरयानी थी मगर जिस वक़्त आप हिजरत के इरादे से शहर से निकल चुके तो नमरूद मरदूद को इसकी ख़बर मिली। उसने आपको गिरफ़्तार करने के लिए जासूस भेजा। नमरूद का जासूस आपके पास उस वक़्त पहुँचा कि आप दरिया पार कर रहे थे। उसी वक़्त अल्लाह तआला ने आपकी ज़बान की सुरयानी से इबरानी तब्दील फ़रमा दी। उस जासूस से आपने कलाम किया मगर वह आपको पहचान न सका। (उम्दतुल कारी 2/52)

जवाबः सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की उम्र शरीफ़ कितनी हुई?

जवाबः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत के मुताबिक़ आपकी उम्र शरीफ़ दो सौ साल हुई और इमाम नुव्वी रहमतुल्लाह अलैहि वग़ैरह के मुताबिक़ आप 175 साल इस दुनिया में तशरीफ़ फ़रमा रहे।

(अल् अतक़ान 2/176)

एक क़ौल एक सौ पिच्चानवे का भी है। (मआरिज नबुव्वत 1/135)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की क़ब्र अनवर कहाँ है?

जवाबः आपकी क़ब्र पुरअनवर जबरून में है।

(अलविदाया 1/220, तारीख़ तिबरी 1/225)

हज़रत इस्माईल व इस्हाक़ अलैहिमस्सलाम के बारे में सवाल और जवाब

सवालः हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम का नाम "इस्माईल" क्यों रखा गया?

जवाबः बुढ़ापे तक हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कोई औलाद पाक न हुई आप औलाद नरीना की दुआ मांग कर कहते थे। इस्माईल, 'इस्मा' अरबी लफ़्ज़ है और ऐल इबरानी ज़बान में खुदा का नाम। जिसके माने हुए, "खुदा मेरी सुन ले।"

मुजीबुदअवात जल्ले अला ने आपकी दुआ को शर्फ़े इजाबत बख़्शा और आप के यहाँ एक फ़रज़ंद अरजुमंद की विलादत हुई। इस दुआ की यादगार में आपने अपने इस फ़रंज़ंद का नाम "इस्माईल" रखा।

(तफ़्सीर नईमी 1/820)

एक क़ौल यह भी है कि आपका नाम "अशमवील" रखा गया था। फिर कसरते इस्तेमाल से इस्माईल हो गया। (मआरिज नबुव्वत 1/110)

सवालः हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की विलादत के वक़्त इब्राहीम अलैहिस्सलाम की उम्र कितनी थी?

जवाबः उस वक़्त हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की उम्र शरीफ़ निन्नानवे साल की थी। (जलालैन 209)

एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ छियास्सी साल की थी। (इब्ने कसीर 23/7)

सवालः उस वक़्त हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की उम्र कितनी थी जिस वक़्त आपकी क़ुर्बानी पेश की गई?

जवाबः उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ सात साल की थी। एक रिवायत तेरह साल की भी है।

(तफ़्सीर नईमी 1/845, जलालैन 377, नज़हतुल मजालिस 5/24)

सवालः जिस वक़्त हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की क़ुर्बानी पेश की गई थी उस वक़्त आपके जिस्म पर कैसा लिबास था?

जवाबः उस वक़्त आपके जस्दे नूरी पर सफ़ेद रंग की चादर थी जिसके मुताल्लिक़ आपने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से कहा था, अब्बा हुज़ूर इसे उतार लीजिए ताकि इसमें आप मुझे कफ़ना सकें।

(इब्ने कसीर प०23/7)

तारीख़ तिबरी में है कि सफ़ेद रंग की क़मीस थी। (1/174)

सवालः क़ुर्बानी का वाक़िआ किस जगह पेश आया था और यह जगह बैतुल्लाह से कितनी दूरी पर है?

जवाबः ज़िब्ह की जगह मिना है जो मक्का मौज़्ज़मा में बैतुल्लाह शरीफ़ से दो मील की मुसाफ़त पर वाक़ेअ है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान प० 23/7, तारीख़ी तिबरी 1/174)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हलक़ूम इस्माईल पर कितनी बार छुरी चलाई थी?

जवाबः एक रिवायत में है कि जब हज़रत ख़लील अलैहिस्सलाम ने तेज़ छुरी से इस्माईल अलैहिस्सलाम का गला काटना शुरू किया तो सत्तर बार छुरी चलाई मगर पोस्त व गोश्त और रगे जान पर ज़रा भी असर न हुआ। हज़रत ख़लील अलैहिस्सलाम ग़ुस्से में आए। छुरी हाथ से फेंक दी और फ़रमाया, तू मेरा हुक्म क्यों नहीं मानती? छुरी ने ज़बाने हाल से अर्ज़ किया, ऐ ख़लील! गुस्सा न फ़रमाइए। आप काटने का हुक्म फ़रमा रहे हैं और रब्बे जलील मुमानिअत फ़रमाता है। मैं हैरान हूँ कि क्या करूं? किसका हुकम बजा लाऊँ। मुझे आपके हुक्म के मुक़ाबले में ख़ुदा का हुक्म मानना ज़रूरी है। हज़रत ख़लील अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, तेरा काम काटना है, तू काटने को बनाई गई है। छुरी ने अर्ज़ किया, आग भी जलाने को बनी है। फिर आतिशे नमरूद ने आपको क्यों नहीं जलाया।

(मआरिज नबुव्वत 118, औराक़े ग़म 20, नज़हतुल मजालिस 5/24)

सवालः उस मेंढे का क्या नाम था जो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के फ़िदए में ज़िब्ह हुआ और उसका रंग कैसा था?

जवाबः उसका नाम जरीर था। उसका रंग सफ़ेद कुछ सुर्ख़ी माइल था। (इब्ने कसीर 23/7)

सवालः यह मेंढा जन्नत में कैसे पहुँचा था?

जवाबः यह वही मेंढा था जिसे हज़रत हाबील ने राहे ख़ुदा में क़ुर्बान किया था और वह मक़बूल होकर जन्नत में पल रहा था।

(जलालैन 377, इब्ने कसीर 23/7, नज़हतुल मजालिस 5/25)

सवालः यह मेंढा जन्नत में कितने दिनों से पल रहा था?

जवाबः तर्जुमानुल हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं:

यह मेंढा चालीस सालों से जन्नत के मुर्ग़ज़ार में पल रहा था।

(इब्ने कसीर 23/7)

एक रिवायत में चालीस साल है और यह भी कहा गया है कि अस्सी हज़ार सालों से गुलिस्तान बहिश्त में चर रहा था।

(मआरिज नबुव्वत 1/118)

और एक क़ौल में चार हज़ार साल है। (नज़हतुल मजालिस 5/25)

सवालः जिस्मानी एतिबार से यह मेंढा कैसा था?

जवाबः वह बहुत ही अज़ीमुल जुस्सा और बुज़ुर्ग था। बाज़ कहते हैं कि वह हाथी के बराबर था और बाज़ कहते हैं कि उसके जिस्म में गोश्त ही गोश्त था। बाल, पोस्त, हड्डी ख़ून और पेट में निजासत व गंदगी वग़ैरह कुछ न था। उसके तमाम अजज़ाए हिस्सा माक़ूल थे।

(मआरिज नबुव्वत 1/119)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को यह मेंढा किस हाल में और किस जगह मिला था?

जवाबः वह मेंढा मिना ही में सबीर नामी चट्टान से लगे एक बबूल के पेड़ से बंधा हुआ मिला। निदा आई ऐ इब्राहीम! बेशक तुमने ख़्वाब सच्चा कर दिया, इताअत और फ़रमांबरदारी कमाल को पहुँचा दी। बस इतना ही काफ़ी है। यह फ़िदया हमने दिया है, इसे ज़िब्ह फ़रमाइए। आपने पलटकर देखा तो वह मेंढा नज़र आया। फिर आपने अल्लाह के हुक्म से उसे ज़िब्ह फ़रमाया। (इब्ने कसीर 23/7)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इस मेंढे को किस जगह ज़िब्ह किया था?

जवाबः इस मेंढे को आपने मिना ही में सबीर से लगी चट्टान में ज़िब्ह फ़रमाया। बाज़ कहते हैं मुक़ामे इब्राहीम पर आपने उसे ज़िब्ह किया और बाज़ कहते हैं मिना में मनहर पर। (इब्ने कसीर 23/7)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इस मेंढे के गोश्त को क्या किया था?

जवाबः इस मेंढे के गोश्त को हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने परिन्दों को खिला दिया था क्योंकि जन्नती होने के बाइस उस पर आग असर नहीं करती थी और उसके दोनों सींग सर समेत काबा शरीफ़ पर लटका दिए थे। हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के दौरे हुकूमत में जब बैतुल्लाह शरीफ़ में आग लगी थी उस वक़्त तक सर और सींग लटके हुए थे। (इब्ने कसीर 23/7, हाशिया 21 जलालैन 377)

सवालः हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने कितनी शादियाँ कीं, आपकी बीवियों के नाम क्या क्या हैं?

जवाबः आपने दो निकाह फ़रमाएः

पहले क़ौम जरहम के सरदार की बेटी अम्मारा बिन्त साद बिन उसामा जरहमिया से शादी की, कुछ दिनों बाद उसको तलाक़ दे दी। फिर हाला बिन्ते हारिस को अपने निकाह में लाकर ज़ौजियत का शर्फ़ बख़्शा। बाज़ ने दूसरी बीवी का नाम बिन्ते मज़ाज़ बिन उमरू जरहमी कहा है और बाज़ ने सलमा बिन्त हारिस बिन मज़ाज़।(मआरिज नबुव्वत 1/137-138)

पहली बीवी को तलाक़ देने का वाक़िआ उलमाए तवारिख़ व फ़ुज़ला यूँ बयान करते हैं कि एक दिन आपके वालिद माजिद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम आपको देखने तशरीफ़ लाए। उस वक़्त आप शिकार को तशरीफ़ ले गए थे क्योंकि आपकी गुज़र अवक़ात शिकार के गोश्त और आबे ज़मज़म पर थी। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने आपकी बीवी को दरवाज़े पर बुलाकर हालत दर्याफ़्त फ़रमाई। बीवी बोली, हम बहुत ग़रीब मिस्कीन हैं, बहुत ही तंगी व मुशक़्क़त से गुज़रान करते हैं। बीवी ने आपकी तवाज़े ख़ातिर न की। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया,

तुम अपने शौहर से हमारा सलाम कहना और कहना कि अपने दरवाज़े की चौखट बदल दो कि ऐसी चौखट इस घर के लायक़ नहीं। शाम के वक़्त हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने शिकार से वापसी की तो मक्का की गली कूचों में नूरानियत नबुव्वत, रहमत व बरकात देखे। समझ गए कि वालिद मोहतरम तशरीफ़ लाए होंगे। अपनी बीवी से दर्याफ़्त किया, कि आज कोई आया था? बीवी ने सारा वाक़िआ कह सुनाया। आपने फ़रमाया, वह बुज़ुर्ग मेरे वालिद मोहतरम थे और तू मेरे घर की चौखट है। वह मुझे तुझको तलाक़ देने का हुक्म फ़रमा गए। चुनाँचे आपने उसे तलाक़ देकर घर पहुँचा दिया। (तफ़्सीर नईमी 1/844)

सवालः हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की उम्र शरीफ़ कितनी हुई?

जवाबः आपकी उम्र शरीफ़ एक सौ तीस साल और बक़ौल दीगर एक सौ सैंतीस साल हुई। (तारीख़ तिबरी 208, मआरिज नबुव्वत 138)

सवालः हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की क़ब्र अनवर कहाँ है?

जवाबः आपकी क़ब्र अनवर बैतुल्लाह शरीफ़ में रुक्ने यमानी और रुक्ने असवद के दर्मियान उस बुक़अे में है जिसे रौज़ा मिन रियाज़ुल जन्नत कहते हैं। (हाशिया 27, जलालैन 184)

एक दूसरे क़ौल के मुताबिक़ जब आपकी क़ब्र शरीफ़ मक़ामे जबरून में है। (अलबिदाया175, 220)

सवालः हज़रत इस्हाक़, इस्माईल अलैहिमस्सलाम से कितने साल छोटे थे?

जवाबः आप हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम से चौदह साल छोटे थे। (तफ़्सीर दमईमी 1/843, अल अतक़ान 2/176)

सवालः हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम के नाना का नाम क्या है?

जवाबः आपके नाना जान का नाम हारान था जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के चचा थे। (तफ़्सीर नईमी 1/84)

सवालः हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की उम्र शरीफ़ कितनी हुई?

जवाबः आपकी उम्र शरीफ़ एक सौ अस्सी बरस हुई।

(अल् अतक़ान 2/176)

सवालः हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की क़ब्र शरीफ़ कहाँ है?

जवाबः आपकी क़ब्र शरीफ़ बैतुल मुक़द्दस में है। दूसरा क़ौल यह है कि आपकी क़ब्र शरीफ़ जबरुन में है।

(तफ़्सीर नईमी 1/871, ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 13/5)

○ ○ ○

हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के बारे में सवाल और जवाब

सवालः हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम का असली नाम क्या है?

जवाबः आपका असली नाम "इस्राईल" था। यह इबरानी लफ़्ज़ है जिसके माने हैं अब्दुल्लाह। इस्रा के माने अब्द और ईल के माने रब्बे तआला का नाम। (तफ़्सीर नईमी 4/7, हाशिया 20, जलालैन 56)

सवालः हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम का लक़ब "याक़ूब" क्यों हुआ?

जवाबः याक़ूब अक़्ब से बना है जिसके माने हैं ऐड़ी। क्योंकि आप अपने भाई ऐसू (या ऐस) के साथ इस तरह पैदा हुए कि आपके दोनों हाथ उनकी ऐड़ी से लग हुए थे। इसी मुनासिबत से आपका लक़ब याक़ूब हुआ। (तफ़्सीर नईमी 1/871 व 4/7)

सवालः हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के दादा और दादी का नाम क्या है?

जवाबः आपके जद्दे अमजद इब्राहीम अलैहिस्सलाम हैं और दादी मोहतरमा हज़रत सारा रज़ियल्लाहु अन्हा। (तफ़्सीर नईमी 1/357)

सवालः हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के नाना का नाम क्या है?

जवाबः आपके नाना हज़रत लूत अलैहिस्सलाम हैं।

(तफ़्सीर नईमी 1/357)

सवालः हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम ने कितनी शादियाँ कीं?

जवाबः आपने चार निकाह किए और चारों बीवियाँ आपके मामू लायान की बेटियाँ थीं जो एक बाद दूसरी आपके निकाह में आयीं।

आप निहायत मुश्किल तंगदस्ती की ज़िंदगी गुज़ार रहे थे। अपनी वालिदा माजिदा की सलाह फ़लाह से अपने मामू के हाँ आ गए थे जो

मालदार लोगों में से थे। वह आपके आने से बहुत खुश हुए और कुछ दिनों बाद अपनी बड़ी बेटी (लिया) से आपका निकाह कर दिया जिनसे आपके चार बेटे हुए। उसके बाद आपकी यह बीवी इंतिक़ाल कर गयीं। फिर आपके मामू लायान ने अपनी दूसरी बेटीसे आपका निकाह कर दिया। उनसे दो बच्चे पैदा हुए और यह भी दारुल बक़ा को कूच कर गयीं। फिर लायान ने अपनी चौथी नेक बेटी राहील को आपके निकाह में दे दिया। उनसे यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पैदा हुआ। अल्लाह के हुक्म से यहाँ से आप किनआन तबलीग़ अंज़ार के लिए तशरीफ़ ले गए। किनआन में बिनयामीन की विलादत हुई और विलादत के वक़्त राहील का इंतिक़ाल हो गया। लायान ने जब यह वाक़िआ सुना तो अपनी सबसे छोटी बेटी का निकाह भी आपसे कर दिया। आपकी इसी बीवी ने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम और बिनयामीन की परवरिश की। (तफ़्सीर नईमी 1/358)

दूसरा क़ौल यह है कि लायान की दो ही बेटी आपके निकाह में आयीं जिनसे आठ बेटे पैदा हुए और दो ज़ुल्फ़ा व बहला नामी बांदियाँ थीं जिनसे चार बेटे पैदा हुए। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 12/12)

सवालः हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के कितने बेटे हैं और उनके नाम क्या हैं?

जवाबः आपके बारह बेटे थे जिनके नामों में कुछ इख़्तिलाफ़ है:

1. रोबील, 2. शमऊन, 3. लावा, 4. यहूदा, 5. ज़बूलोन, 6. यशजर, 7. दान, 8. नफ़ताली, 9. जाव, 10. आशर, 11. यूसुफ़, 12. बिनयामीन।

अल्लामा जलालुद्दीन स्यूती रहमतुल्लाह अलैहि ने उनके नाम इस तरह गिनाए हैं:

1. यूसुफ़ अलैहिस्सलाम, 2. रोबील, 3. शमऊन, 4. लावा, 5. दानी, 6. यहूदा, 7. तफ़तानी, 8. काद, 9. याशीर, 10. एशाजर, 11. राएलोन, 12. बिनयामीन। (अल अतक़ान 2/186)

तफ़्सीर नईमी में इन बेटों के नाम इस तरह हैं:

1. रोबील, 2. शमऊन, 3. लावा, 4. यहूदा, 5. असकार, 6. ज़बलून, 7. दान, 8. तग़ताली, 9. जद, 10. अशर, 11. यूसुफ़, 12. बिनयामीन।

और तफ़्सीर नईमी में ही दूसरी जगह इस मज़्कूर है:

1. रोबील, 2. शमऊन, 3. लावा, 4. यहूदा, 5. यूसुफ़ अलैहिस्सलाम, 6. बिनयामीन, 7. ज़ैतून, 8. यशाख़र, 9. वान, 10. नग़नाली, 11. काद, 12. अंताराकिया। (1/187)

सवालः हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम के सबसे बड़े बेटे का नाम क्या है?

जवाबः सबसे बड़े बेटे शमऊन या रोबील थे।(अल अतक़ान 2/187) बाज़ों ने यह कहा कि उम्र के एतिबार से सबसे बड़ा रोबील था, अक़्ल व समझ के एतिबार से सबसे बड़ा यहूद और उनमें रईस शमऊन था। (हाशिया 41 जलालैन 197)

सवालः हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम, यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के फ़िराक़ में कितने बरस रोते रहे?

जवाबः इस बारे में अइम्मा तफ़्सीर व तारीख़ लिखने वालों के मुख़्तलिफ़ क़ौल हैंः 1. हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैंः अस्सी बरस रोए। इस क़द्र कि आख़ों की स्याही धुल गई और बीनाई ज़ईफ़ हो गई। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 13/5, जलालैन 198)

2. चालीस साल रोए।

3. अठ्ठारह साल रोए। (जलालैन 198, अल बिदाया 1/217)

4. बक़ौल क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु तिरेप्पन साल।

5. तिरास्सी साल। (इब्ने कसीर 13/5)

6. और एक रिवायत पैंतीस साल की भी है। (अल बिदाया 1/217)

सवालः हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम को यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की मौजूदगी की ख़बर सबसे से पहले किसने सुनाई और मिस्र से क़मीज़े यूसुफ़ लेकर कौन आया था?

जवाबः यह ख़बर पुरमुसर्रत असर सबसे पहले आपको यहूदा ने आकर सुनाई। जब मिस्र से सब भाई क़मीज़ यूसुफ़ लेकर चले तो यूहदा ने भाईयों से कहा, वालिद माजिद के पास ख़ून आलूदा क़मीज़ भी मैं ही लेकर गया था। मैंने ही कहा था कि यूसुफ़ को भेड़िया खा गया। मैंने ही वालिद माजिद को ग़मगीन और रंजीदा किया था। आज कुर्ता भी मैं लेकर जाऊँगा और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ज़िंदगानी की फ़रहत

अंगेज़ ख़बर भी मैं ही सुनाऊँगा ताकि पिछले जुर्म की भरपाई कर सकूँ। चुनाँचे यहूदा ने नंग सर और नंगे पाँव कुर्ता लेकर मिस्र से किनआन तक अस्सी फ़रसंग की मुसाफ़त को बराबर दौड़ते हुए तय किया। रास्ते में खाने के लिए सात रोटियाँ साथ लाया था मगर शौक़ का यह आलम कि उनको भी रास्ते में खाकर निपटा न सका।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 13/5, जलालैन 198)

सवालः हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम ने क़मीज़े यूसुफ़ की खुशबू कितनी दूरी से महसूस कर ली थी?

जवाबः यहूदा क़मीज़े यूसुफ़ लेकर मिस्र से किनआन की तरफ़ रवाना हुआ। मिस्र की इमारात से निकलकर रेगिस्तान की फ़िज़ा में आया। अभी वह किनआन से अस्सी फ़रसख़ के फ़ासले पर था जो कि उस वक़्त आठ रोज़ की मुसाफ़त थी कि नसीम सुबह ने खुशबूए क़मीज़े यूसुफ़ से हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के दिमाग़ को मौत्तर कर दिया।

(इब्ने कसीर 13/5, अल बिदाया 216, अल कामिल फ़ी तारीख़ 1/60)

सवालः हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम जब मिस्र के लिए सफ़र का इरादा किया तो आपके साथ कुल कितने लोग थे?

जवाबः इस बारे में कई क़ौल हैंः

1. जब आपने मिस्र का इरादा फ़रमाया तो अपने अहल को जमा किया। कुल मर्द और औरत बहत्तर या तिहत्तर थे।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 13/5)

2. हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि कुल तिरेसठ नफ़र थे।

3. मसरूक़ का क़ौल है कि कुल लोग तीन सौ नव्वे थे।

4. अब्दुल्लाह बिन शद्दाद कहते हैं कि अहले याक़ूब छियास्सी थे।

(इब्ने कसीर 13/5)

5. सत्तर, 6. दौ सौ और 7. चार सौ अफ़राद के भी अक़वाल वारिद हैं।

(मुक़दमा मआरिज नबुव्वत 51)

सवालः हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम मिस्र में यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास कितने साल रहे?

जवाबः आप अपने फ़रज़ंद यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास मिस्र में चौबीस साल बेहतरीन ऐश व आराम में ख़ुशहाली के साथ रहे। इसके बाद अपनी जान, जान आफ़रीं के सुपुर्द की। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 13/5)

दूसरा क़ौल यह है कि आप मिस्र में सत्रह साल रहे। (जलालैन 198)

सवालः हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम को इंतिक़ाल फ़रमा जाने के कितने दिनों के बाद दफ़्न किया गया?

जवाबः आपने जब इंतिक़ाल फ़रमाया तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के लिए फ़िराक़े ग़म नाक़ाबिले बर्दाश्त हुआ। उन्होंने हकीम व तबीबों को बुलाया। जिन्होंने दवाओं के ज़रिए चालीस दिनों तक आपके जनाज़े को रोके रखा। उसके बाद आपका दफ़्न अमल में आया।

(अल बिदाया 1/220)

सवालः हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की क़ब्र कहाँ है?

जवाबः क़रीब वफ़ात आपने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को वसीयत की कि आपको मुल्के शाम में अरज़े मुक़द्दस (बैतुल मुक़द्दस) में अपने वालिद माजिद हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की क़ब्र शरीफ़ के पास दफ़्न किया जाए। इस वसीयत की तामील की गई और बाद विसाल, साल की लकड़ी के ताबूत में आपका जस्दे अतहर शाम लाया गया और दफ़्न किया गया।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 13/5)

एक दूसरे क़ौल के मुताबिक़ आपकी क़ब्र शरीफ़ जबरून में है। यहीं आपके बड़ों हज़रत इब्राहीम, हज़रत इस्माईल और इस्हाक़ अलैहिस्सलाम दफ़्न हुए।

(अल बिदाया 1/175, 220)

सवालः हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की उम्र कितनी हुई?

जवाबः आपकी उम्र शरीफ़ एक सौ पैंतालीस (145) साल हुई।

(अल अतक़ान 2/176, तफ़्सीर नईमी 1/871)

सवालः हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के उस भाई का नाम क्या है जो आपके साथ पैदा हुआ और साथ ही इंतिक़ाल भी किया और एक ही क़ब्र में दफ़्न भी हुआ?

जवाबः आपके इस भाई का नाम ऐस है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 13/5)

○ ○ ○

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बारे में सवाल और जवाब

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की वालिदा माजिदा का नाम क्या है?

जवाबः आपके वालिदा माजिदा का नाम राहील है।

(खज़ाइनुल इरफ़ान 12/12, तफ़्सीर नईमी 1/358)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के नाना का नाम क्या है?

जवाबः आपके नाना जान का नाम लियानया लायान है जो आपके वालिद मोहतरम के मामू भी थे।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 12/12, तफ़्सीर नईमी 1/358)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की विलादत के वक़्त आपके वालिद याक़ूब अलैहिस्सलाम की उम्र कितनी थी?

जवाबः उस वक़्त हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की उम्र चालीस साल थी।

(तफ़्सीर नईमी 1/358)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाईयों के नाम क्या हैं?

जवाबः इसकी तफ़सील याक़ूब अलैहिस्सलाम के बेटों के बयान में देखिए।

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के सगे भाई का नाम क्या है और वह आपसे कितने छोटे थे?

जवाबः बिनयामीन जो आपसे दो साल छोटा था।

(तफ़्सीर नईमी 1/358)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की उम्र उस वक़्त कितनी थी जब आपने ग्यारह सितारे और चाँद व सूरज का ख़्वाब देखा था?

जवाबः उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ बारह साल की थी। सात व सत्रह के क़ौल भी आए हैं। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 12/11)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने ग्यारह सितारे और चाँद व सूरज का ख़्वाब किस शब को देखा था?

जवाबः यह ख़्वाब शबे क़द्र को देखा था जो शबे जुमा भी थी।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 12/11)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने जिन ग्यारह सितारों को ख़्वाब में देखा था उनके नाम क्या हैं?

जवाबः बस्ताना नामी एक यहूदी जो अपने मज़हब का एक ज़बरदस्त आलिम था उसने ख़्वाजा काएनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उन ग्यारह सितारों के नाम पूछे। आपने फ़रमायाः अगर मैं तुझे उनके नाम बतला दूँ तो इस्लाम में दाख़िल हो जाएगा? उसने इक़रार किया तो आपने फ़रमायाः सुनो! उन सितारों के नाम ये हैं:

1. जिरयान, 2. तारिक़, 3. ज़याल,
4. ज़ुल कतफ़ैन, 5. क़ाबिस, 6. साक़िब,
7. अमूदान, 8. फ़लीक़, 9. मिस्बाह,
10. सरूह, 11. फ़रअ।

(इब्ने कसीर 12/11, हाशिया जलालैन 190)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने जो ख़्वाब देखा था उसकी ताबीर कितने दिनों बाद ज़ाहिर हुई?

जवाबः इस ख़्वाब की ताबीर देखने के चालीस साल बाद ज़ाहिर हुई। बाज़ कहते हैं कि अस्सी साल के बाद ज़ाहिर हुई। (इब्ने कसीर 12/11)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को कुँए में डालने का मशवरा किसने दिया था?

जवाबः यह मशवरा यहूदा या रोबील ने दिया था।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 12/12)

बाज़ कहते हैं कि मुशीर शमऊन था। (इब्ने कसीर 12/12)

वाक़िआ–

जब भाईयों को अपने वालिद माजिद का यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से

ज़्यादा मुहब्बत फ़रमाना शाक़ गुज़रा तो उन्होंने आपस में मशवरा किया कि कोई ऐसी तदबीर सोचनी चाहिए जिससे हमारे वालिद मोहतरम को हमारी तरफ़ ज़्यादा तवज्जोह हो। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि इस मज्लिस शूरा में शैतान भी शरीक हुआ और उसने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के क़त्ल की राय दी। बाज़ ने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को आबादियों से दूर फ़ेंक देने का मशवरा दिया। इस भाई ने कहा क़त्ल मत करो क्योंकि यह बड़ा गुनाह है बल्कि यूसुफ़ को किसी कुँए में डाल दो ताकि कोई मुसाफ़िर वहाँ से गुज़रे और किसी मुल्क में उन्हें ले जाए।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 12/12)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम जिस कुँए में डाले गए थे वह कुँआ कहाँ था?

जवाबः यह कुँआ, किनआन से तीन मील के फ़ासले पर हवाली बैतुल मुक़द्दस या सरज़मीन उर्दुन में वाक़े था।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 12/12)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम जिस कुँए में डाले गए थे वह कुँआ किसने खुदवाया था और कब?

जवाबः यह कुँआ शद्दाद ने उस वक़्त खुदवाया था जब वह उर्दुन के शहरों को आबाद कर रहा था। (हाशिया 36 जलालैन 190)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम जिस कुँए में डाले गए थे वह कुँआ कितना गहरा था?

जवाबः काशफ़ी ने कहा है कि "यह कुँआ सत्तर गज़ या उससे ज़्यादा अमीक़ था। ऊपर से उसका मुँह तंग और था और अंदर से फ़राख़।"

(हाशिया 36, जलालैन 190)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की उम्र उस वक़्त कितनी थी जब आप कुँए डाले गए थे?

जवाबः उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ बारह साल की थी।

(अल् अतक़ान 2/176)

बक़ौल दीगर सत्रह साल की थी। (इब्ने कसीर 13/5)

बाज़ ने अठ्ठारह साल भी कहा है। (हाशिया 39 जलालैन 190)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम कुँए में कितनी मुद्दत रहे?

जवाबः आप तीन रोज़ उस कुँए में रहे।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 12/12, अल कामिल फ़ी तारीख़ 1/55)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम जब "बरहना" कुँए में डाले गए तो उस वक़्त आपको किसने और क्या पहनाया था?

जवाबः जब आप के भाईयों ने आपके हाथ पाँव बांधकर क़मीज़ उतार कर कुँए में छोड़ा तो फ़ौरन जिब्राईल अलैहिस्सलाम अल्लाह के हुक्म से हाज़िर हुए। उन्होंने आपको एक पत्थर पर बिठा दिया जो कुँए में था और आपके हाथ पाँव खोल दिए और आपके गले में तावीज़ की शक्ल में बंधा हुआ इब्राहीमी क़मीज़ खोलकर पहना दिया। यह वो जन्नती कमीज़ है। जिसको हज़रत जिब्राईल जन्नत से उस वक़्त लाए थे जब नारे नमरूदी से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम में बरहना डाला गया था और आपने उन्हें पहनाया था। यह क़मीज़ पुश्त दर पुश्त याक़ूब अलैहिस्सलाम तक पहुँचा। और आपने रुख़्सत के वक़्त हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के गले में तावीज़ बनाकर डाला था।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 12/12, हाशिया 4 जलालैन 198)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम कुँए में क्या खाते थे और यह खाना कौन और कहाँ से लाता था?

जवाबः इस दौरान अल्लाह के हुक्म से हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम जन्नती खाना पानी पेश करते थे। (हाशिया 39 जलालैन 190)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के कुँए में डोल डालने वाले का नाम क्या था और वह कहाँ का रहने वाला था?

जवाबः डोल डालने वाले का नाम मालिक बिन ज़अर ख़ज़ाइ था। यह शख़्स मदयंन का रहने वाला था।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 12/12 अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/187)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को आपके भाईयों ने क़ाफ़िले वालों के हाथ कितनी क़ीमत में बेचा था?

जवाबः हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि भाईयों ने आपको बीस दिरहम में बेचा था। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 12/12)

बाईस और चालीस के भी क़ौल वारिद हैं। (इब्ने कसीर 12/12)
एक और क़ौल में सत्रह की भी तादाद है। (औराक़े ग़म 32)
बिकने का वाक़िआ यह है कि जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को आपके भाईयों ने कुँए में डाल दिया तो उसके बाद वह उसी जंगल में कि जिसमें वह कुँआ था अपनी बकरियाँ चराते थे और देख भाल रखते थे। एक दिन जब उन्होंने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को कुँए में न देखा तो उन्हें तलाश हुई। तलाश व जुस्तजू में क़ाफ़िले तक पहुँचे। वहाँ उन्होंने मालिक बिन ज़अर के पास हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखा तो वह उससे कहने लगे, यह ग़ुलाम है। हमारे पास से भाग आया है किसी काम का नहीं है, नाफ़रमान है। अगर ख़रीदो तो हम इसे सस्ता ही बेच देंगे। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम उनके ख़ौफ़ से ख़ामोश खड़े रहे और कुछ न फ़रमाया। फिर यह सौदा तय हो गया। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 12/12)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को बाज़ार मिस्र में किसने और कितनी क़ीमत में ख़रीदा था?

जवाबः मालिक बिन ज़अर खुशी खुशी अपने रफ़ीक़ व यारों के साथ हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को लेकर मिस्र पहुँचे। अज़ीज़ मिस्र ने जब हसीन व जमील ग़ुलाम की ख़बर सुनी तो हुक्म भेजा कि इसे नख़ास में लाए। दूसरे रोज़ मालिक बिन ज़अर, यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को आरास्ता करके बाज़ार में लाया तो तमाम बाज़ारे मिस्र में यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के हुस्न के जलवे की शोहरत मुशतहिर हो गई और ख़रीदारों का हजूम आ गया। हर शख़्स के दिल में दिल से आपकी तलब पैदा हुई और ख़रीदारों ने क़ीमत बढ़ानी शुरू की। नौबत यहाँ तक पहुँची कि आपके वज़न के बराबर सोना उतनी ही चाँदी, उतना ही मुश्क और उतना ही हरीर क़ीमत तय हुई। उस वक़्त आपका वज़न चार सौ रतल था। और ख़रीदने वाले का नाम क़तफ़ीर मिस्री था। तमाम ख़ज़ाने मिस्र के उसके हाथ में थे। लोग उसे अज़ीज़े मिस्र कहते थे। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 12/12)
बाज़ कहते हैं अज़ीज़े मिस्र का नाम अतफ़ीर बि रोहोब था।
तर्जुमानुल क़ुरआन हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि बाज़ारे मिस्र में जिसने आपको ख़रीदा उसका नाम मालिक बिन ज़अर

बिन अनक बिन इब्राहीम था। (इब्ने कसीर 12/12)

इब्ने इस्हाक़ के बक़ौल उसका नाम अतग़र था। (इब्ने कसीर 13/1)

सवालः हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम के ज़माने में मिस्र का बादशाह कौन था?

जवाबः उस ज़माने में मिस्र की सलतनत पर रियान बिन वलीद बिन नज़दान अमालीक़ी बैठा हुआ था और उसने अपनी हुकूमत की बागडोर क़तफ़ीर मिस्री या अतफ़ीर बिन रोहीब के हाथ में दे रखी थी जो मुल्क का मदारुल मुहाम कहलाता था और अज़ीज़े मिस्र के नाम से मशहूर था। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 12/13, इब्ने कसीर 12/13)

सवालः अज़ीज़े मिस्र की बीवी का नाम क्या था?

जवाबः अज़ीज़े मिस्र की बीवी का नाम राईल या ज़ुलेख़ा था और वह ज़्यादा मशहूर ज़ुलेख़ा ही है।(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/187)

यह रआबील की नेक बेटी थी। (इब्ने कसीर 12/12)

और साहिबे ऐनुल मआनी ज़ुलेख़ा का नाम हुलिया लिखते हैं।

(अवराक़ ग़म 32)

सवालः हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम की बरअत की शहादत जिस बच्चे ने दी थी उसकी उम्र कितनी थी और ज़ुलेख़ा से उसका रिश्ता क्या था?

जवाबः वह शीरख़्वार ज़ुलेख़ा का मामूज़ाद भाई था। उसकी उम्र चार माह थी। अल्लाह तआला ने उस वक़्त उस बच्चे को बोलने की ताक़त अता फ़रमाई और बच्चे ने ज़बान यूसुफ़ अलैहिस्लात की बरा'त व बेनिगाही की गवाही दी। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 12/13)

इस बच्चे की उम्र के बारे में तीन और छः माह की रिवायतें भी हैं।

(हाशिया 13, जलालैन 192)

इस बरात की गवाही के तहत एक रिवायत यह भी है कि यह गवाह एक बड़ा आदमी था जिसकी दाढ़ी भी थी। अज़ीज़े मिस्र का ख़ास और ज़ुलेख़ा का चचाज़ाद भाई था।

(इब्ने कसीर 12/13, हाशिया 13 जलालैन 192)

इस वाक़िए की तफ़्सील यह हैः

ज़ुलेख़ा बड़ी हसीन औरत थी और शाह मग़रिब तैमूस या रआबील की बेटी थी। उसने एक रात ख़्वाब में एक हुस्न व जमाल के पैकर शख़्स को देखा और उससे पूछा तुम कौन हो? तो उसने बताया कि मैं अज़ीज़े मिस्र हूँ। ज़ुलेख़ा के दिल में उस ख़्वाब का नक़्शा जम गया और हर वक़्त वह ख़्वाब आँखों के समाने रहने लगा।

बड़े बड़े बादशाहों के शादी के पैग़ाम आए लेकिन उसने इंकार कर दिया और अपना इरादा ज़ाहिर कर दिया कि मैं तो अज़ीज़े मिस्र से निकाह करूंगी। चुनांचे शाहे तैमूस ने अपनी बेटी ज़ुलेख़ा का निकाह अज़ीज़े मिस्र से कर दिया। ज़ुलेख़ा ने जब अज़ीज़े मिस्र को देखा तो यह देखकर हैरान रह गई कि यह वह नहीं जिसे ख़्वाब में देखा था। यहाँ तक कि अज़ीज़े मिस्र ने मिस्र के बाज़ार में बिकते हुए हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को ख़रीदा और उन्हें घर लाया। ज़ुलेख़ा ने जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखा तो ख़्वाब के नक़्शे के मुताबिक़ पाया और वह यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से मुहब्बत करने लगी बल्कि आपके हुस्न व जमाल पर आशिक़ हो गई। फिर उसने एक महल बनवाया जिसमें सात कमरे थे और उस महल को ख़ूब सजाया और ख़ुद भी सज-धज कर किसी बहाने से यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को महल में ले गई और उसका दरवाज़ा भी बंद कर दिया। फिर दूसरे कमरे में ले गई और उसका भी दरवाज़ा बंद कर दिया। फिर तीसरे में फिर चौथे में, यहाँ तक कि सब कमरों के दरवाज़े बंद करते हुए सातवें कमरे में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को ले गई। वहाँ जाकर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से क़बाहत की तलबगार हुई और दावत देने लगी कि आप उसके साथ मशग़ूल होकर उसकी नाजाएज़ ख़्वाहिश को पूरा करें। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम यह सूरते हाल देखकर हैरान रह गए और ज़ुलेख़ा से फ़रमायाः

अल्लाह से डर, इस महले सुरूर को महले हुज़्न न बना।

ज़ुलेख़ा ने न माना और बेहद ज़िद्द पर आ गई। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम वहाँ से भागे। ज़ुलेख़ा भी पीछे भागी। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने भागते हुए जिस कमरे का भी रुख़ किया उसका ताला अपने आप खुलता चला गया। ज़ुलेख़ा ने पीछा करते हुए आपका कुर्ता

मुबारक पीछे से पकड़कर आपको खींचा कि आप निकलने न पाएं। कुर्ता पीछे से फट गया मगर आप ग़ालिब आए और बाहर निकल आए। इस कशमश के वक़्त सदर दरवाज़े पर अज़ीज़े मिस्र खड़ा था। उसने दोनों को दौड़ते हुए देख लिया। ज़ुलेख़ा ने अपनी सफ़ाई ज़ाहिर करने और यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को डराने के लिए हीला तराशा और अपने ख़ाविन्द से कहने लगीः

जो तेरी बीवी के साथ बुराई के साथ पेश आए उसकी सज़ा क्या है? मैं सो रही थी कि इसने आकर मेरा कपड़ा हटाकर मुझे फुसलाया। इसे कैद कर दो या कोई और तकलीफ़ देने वाली सज़ा दो। जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने देखा कि ज़ुलेख़ा उल्टा आप पर इलज़ाम लगा रही है तो आपने अपनी सफ़ाई का इज़्हार और असलियत का बताना ज़रूरी समझा। आपने फ़रमायाः

ऐ अज़ीज़े मिस्र! यह बिल्कुल ही ग़लत बयान कर रही है। वाक़िआ इसके ख़िलाफ़ है। इसने ख़ुद मुझे लुभाया और मुझसे बुरे काम की तलबगार हुई। अज़ीज़े मिस्र हैरान हो गया कि दोनों में सच्चा कौन है? और बोलाः

ऐ यूसुफ़! मैं कैस मान लूँ कि तुम सच्चे हो?

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः

घर में एक चार महीने का बच्चा पालने में लेटा हुआ है उससे पूछ लीजिए कि वाक़िआ क्या है?

अज़ीज़े मिस्र ने कहा, भला चार माह का बच्चा क्या जाने और वह कैसे बोले? आपने फ़रमायाः

अल्लाह तआला इसको गोयाई देने और मेरी बेगुनाही की शहादत अदा करा देने पर क़ादिर है।

लिहाज़ा जब अज़ीज़े मिस्र ने उस बच्चे से पूछा तो क़ुदरते इलाही से वह बच्चा बोला और बुलंद आवाज़ से साफ़ ज़बान से कहने लगाः

यूसफ़ का कुर्ता देख लो। अगर उनका कुर्ता पीछे से फटा है तो यूसुफ़ सच्चे हैं और अगर कुर्ता आगे से फटा है तो ज़ुलेखा सच्ची है।

लिहाज़ा कुर्ता देखा गया तो वह पीछे से फटा था और यह हाल शरीफ़

यह बता रहा था कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ज़ुलेख़ा से भागे थे और ज़ुलेख़ा पीछे पड़ी थी। इसलिए कुर्ता पीछे से फटा।

(रूहुल बयान व ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 12/13)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने क़ैदख़ाने में जिन दो क़ैदियों को ख़्वाब की ताबीर बतलाई थी उनके नाम क्या हैं?

जवाबः उनके नामों के बारे में मुख़्तलिफ़ क़ौल हैं:

1. उनमें से एक शाही रसोई का मोहतमिम था और दूसरा दरबारे शाही का साक़ी। पहले का नाम महलत और दूसरे का नाम बनू था।

2. एक का नाम राशान और दूसरे का नाम मरतीश था।

3. उन दोनों का नाम बिसरहम और सरहम था।

4. शाही दस्तरख़्वान के निगहबान का नाम बहलस और साक़ी दरबारे शाही का नाम बंदार था। (इब्ने कसीर 12/15)

वाक़िआ-

ज़ुलेख़ा ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को तंग करने के लिए और अपनी बात मनवाने के लिए किसी बहाने जेल भेज दिया। जिस दिन हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम जेल भेजे गए वे दो नौजवान और भी जेल में दाख़िल किए गए। ये दोनों बादशाह मिस्र के ख़ास मुलाज़िम थे। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने जेल में अपने इल्म व फ़ज़ल का इज़्हार शुरू फ़रमा दिया और तौहीद की तबलीग़ शुरू फ़रमा दी। और आपने यह भी ज़ाहिर फ़रमा दिया कि मैं ख़्वाबों की ताबीर भी ख़ूब समझता हूँ। चुनाँचे वे दो नौजवान जो आपके साथ ही जेल में दाख़िल किए गए थे कहने लगे, हमने आज रात को ख़्वाब देखे हैं। उनकी ताबीर बताएं।

साक़ी ने कहाः मैंने देखा कि मैं एक बाग़ में हूँ। वहाँ एक अंगूर के पेड़ में तीन गुच्छे लगे हुए हैं। बादशाह का कासा मेरे हाथ में है। मैं उन गुच्छों से शराब निचोड़ता हूँ।

बावर्ची ने कहाः मैंने देखा है कि मेरे सर पर कुछ रोटियाँ हैं जिनमें से परिन्दे खा रहे हैं।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने उन दोनों के ख़्वाबों की ताबीर बयान फ़रमा दी जो सौ फ़ीसद सही साबित हुई। आपने फ़रमायाः

ऐ साक़ी! तू अपने ओहदे पर बहाल हो जाएगा और पहले की तरह अपने बादशाह को शराब पिलाएगा। और तीन गुच्छे जो ख़्वाब में बयान किए गए हैं ये तीन दिन हैं यानी इतने ही दिन क़ैद में रहेगा। फिर बादशाह तुझको बुला लेगा और ऐ बावर्ची तू एक मुद्दत तक जेलख़ाने में रहकर सूली दिया जाएगा और परिन्दे तेरा सर खाएंगे।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि तावीर सुनकर उन दोनों ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से कहाः

ख़्वाब तो हमने कुछ भी नहीं देखा। हम तो महज़ मज़ाक़ कर रहे थे। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः मैंने जो कह दिया है वह होकर रहेगा। तुमने ख़्वाब देखा हो या न देखा हो।

चुनाँचे वही हुआ जो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था। साक़ी पर इलज़ाम साबित न हो सका और वह अपने आहदे पर बहाल हो गया और बावर्ची पर जुर्म साबित हो गया और वह सूली दे दिया गया। (रूहुल बयान व ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 12/14)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने जिन क़ैदियों को तावीर बतलाई थी वह किस जुर्म में क़ैद में डाले गए थे?

जवाबः उन दोनों पर यह इलज़ाम था कि उन्होंने बादशाह रियान को ज़हर देने की साज़िश की थी। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 12/15)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम कितनी मुद्दत क़ैदख़ाने में रहे?

जवाबः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम बारह साल जेलख़ाने में रहे। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 12/15)

एक क़ौल तेरह साल का है। (हाशिया जलालैन 191)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने क़ैदख़ाने से बाहर आते वक्त उसके दरवाज़े पर क्या लिखा था?

जवाबः आप खुशी खुशी बाहर तशरीफ़ लाए तो उसके दरवाज़े पर लिखाः

यह बला घर, ज़िंदों की क़ब्र, दुश्मनों की बदगोई और सच्चों की इम्तिहान की जगह है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 13/1)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की उम्र उस वक़्त कितनी थी जब आप मिस्र के वज़ीर ख़ज़ाना बनाए गए?

जवाबः बादशाह रियान ने जिस वक़्त अपनी हुकूमत के सारे ख़ज़ाने आपके सुपुर्द किए यानी आपको वज़ीरे ख़ज़ाना बनाया तो उस वक़्त आकी उम्र शरीफ़ तीस साल की थी।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 13/1, हाशिया 23, जलालैन 191)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ज़ुलेख़ा' से कितनी औलाद हुई?

जवाबः अज़ीज़ मिस्र के इंतिक़ाल के बाद बादशाह रियान ने ज़ुलेख़ा का निकाह आपके साथ कर दिया और उससे आपके दो बेटे हुए, अफ़रासीम और मीसा। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 13/1)

अफ़रासीम हज़रत यूशा बिन नून के दादा यानी नून के वालिद हैं और एक बेटी रहमत नामी भी पैदा हुई जो हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के निकाह में आयीं। (इब्ने कसीर 13/1, हाशिया 4, जलालैन 199)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम कितनी ज़बाने जानते थे?

जवाबः आप बहत्तर ज़बाने जानते थे। (अवराक़ ग़म 45)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने वालिद के विसाल के कितने दिनों बाद इंतिक़ाल फ़रमाया?

जवाबः आपने अपने वालिद माजिद हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के विसाल के 23 सल बाद आलमे विसाल की तरफ़ कूच फ़रमाया।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 13/5)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को कहाँ दफ़न किया गया था और क्यों। अब कहाँ दफ़न हैं?

जवाबः जब आपने आलमे फ़ानी से कूच फ़रमाकर जवारे रहमत इलाही में नुज़ूल किया तो आपके मुक़ामे दफ़न में अहले मिस्र के बीच शदीद इख़्तिलाफ़ और झगड़ा वाक़ेअ हुआं हर मौहल्ले टोले वाले बरकत व सआदत के हासिल करने के लिए अपने ही मौहल्ले में दफ़न करने पर अड़े हुए थे। आख़िर यह राय क़रार पाई कि आपकी ज़ाते मैमून व बदन शरीफ़ हुमायूँ को दरियाए नील में दफ़न किया जाए ताकि पानी आपकी

क़ब्र से छूता हुआ गुज़रे और उसकी बरकत व मैमनियत से तमाम अहले मिस्र फ़ायदा उठाएं। लिहाज़ा आपको संगे रख़ाम या संगे मरमर के संदूक़ में दरियाए नील के अंदर दफ़न किया गया और आप वहीं रहे यहाँ तक कि चार सौ बरस के बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने आपके ताबूत शरीफ़ को निकाला और आपके आबाए किराम के पास मुल्के शाम में दफ़न किया। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 13/5, हाशिया 5, जलालैन 199)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की उम्र कितनी थी?

जवाबः आपकी उम्र शरीफ़ एक सौ बीस साल हुई।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/176, जलालैन 199)

○ ○ ○

हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम के बारे में सवाल और जवाब

सवालः हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम का सिलसिलाए नसब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम तक कितनों वास्तों से है?

जवाबः हज़रत वहब के बक़ौल आपका शजराए नसब यूँ है:

सालेह इब्ने उवैद इब्ने हायर इब्ने समूद इब्ने हायर इबने साम इब्ने नूह अलैहिस्सलाम।

और बक़ौल साअलबी नसबनामा इस तरह है:

सालेह बिन उवैद इब्ने उसैद इब्ने माशज इब्ने उवैद इब्ने हाज़र इब्ने समूद इब्ने आद इब्ने इरम इब्ने साम इब्ने नूह अलैहिस्सलाम।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/177)

सवालः हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम और हज़रत हूद अलैहिस्सलाम के बीच कितना ज़बानी फ़ासला है?

जवाबः हज़रत हूद और हज़रत सालेह अलैहिमस्सलाम के बीच दो सौ साल का फ़ासला है। (हाशिया 18 जलालैन 314)

सवालः हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने वालों की तादाद कितनी थी?

जवाबः हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने वालों की तादाद चार हज़ार थी। (जलालैन 185, अल कामिल फ़ी तारीख़ 1/36)

सवालः हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊँटनी जिस चट्टान से निकली थी उसका नाम क्या है?

जवाबः हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊँटनी मुक़ाम हिज्र से लगे कातिबा नामी चट्टान से निकलती थी दस माह गाभन थी और दूध भी देती थी। (इब्ने कसीर 8/17)

बकौल दीगर काफ़िया नामी पहाड़ से निकली थी।

(हाशिया 17, जलालैन 136)

वाक़िआ:–

क़ौमे आद की हलाकत के बाद क़ौम समूद पैदा हुई। ये लोग हिजाज़ व शाम के बीच अक़्लमअ में आबाद थे। उनकी उम्रें बड़ी होतीं। पत्थर के मज़बूत मकान बनाते। वे टूटफूट जाते मगर रहने वाले बदस्तूर रहते। जब उस क़ौम ने भी अल्लाह तआला की नाफ़रमानी शुरू की तो अल्लाह तआला ने उनकी हिदायत के लिए हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम को मबउस फ़रमाया। क़ौम ने इंकार करना शुरू किया। कुछ ग़रीब लोग आप पर ईमान लाए। उन लोगों का साल के बाद एक ऐसा दिन आता था जिसमें ये मेले के तौर पर ईद का दिन मनाया करते थे। उसमें दूर दूर से आकर लोग शरीक होते थे। यह मेले का दिन आया तो लोगों ने हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम को भी उस मेले में बुलाया। हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम एक बहुत बड़े मजमे में तबलीग़े हक़ की ख़ातिर तशरीफ़ ले गए। क़ौमे समूद के बड़े बड़े लोगों ने वहाँ हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम से आकर कहा कि अगर आप सच्चे हैं और खुदा के रसूल हैं तो हमें कोई मौजिज़ा दिखलाइए। आपने फ़रमाया, बोलो क्या देखना चाहते हो? उनका सबसे बड़ा सरदार बोला, एक ऐसी ऊँटनी जो न किसी की पीठ में रही हो न पेट में, न किसी नर से पैदा हो न किसी मादा से, न हमल में रही हो और न उसकी ख़िलक़त तदरीजन कमाल को पहुँची हो बल्कि आम तरीक़े के ख़िलाफ़ सामने इस पहाड़ से अचानक पैदा हो और जो दस महीने की हामला, ख़ूब फ़रबे और हर क़िस्म की कमियों और ऐबों से पाक हो।

चुनाँचे हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम ने उस पहाड़ के क़रीब आकर दो रकअत नमाज़ अदा की और दुआ की तो वह पहाड़ लरज़ने लगा। थोड़ी देर बाद वह पहाड़ शक़ हुआ और उसमें से सबके सामने एक निहायत ही ख़ूबसूरत व तंदरुस्त, ख़ूब बुलंद क़द, ऊँटनी निकल पड़ी जो गाभन थी और फिर उसने उसी वक़्त एक बच्चा भी जना। इस वाक़िए से क़ौम में एक हैरत पैदा हुई। कुछ मुसलमान हुए और बहुत से अपने कुफ़्र पर

ही क़ायम रहे।

क़ौम की इस बस्ती में एक ही तलाब था जिसमें पहाड़ों के चश्मों से पानी गिरकर जमा होता था। हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: ऐ लोगो! देखो यह मौजिज़े की ऊँटनी है। एक रोज़ तुम्हारे तालाब का सारा पानी पी डालेगी और एक रोज़ तुम पी लिया करना। क़ौम ने इस बात को मान लिया। चुनाँचे ऊँटनी एक रोज़ तालाब का सारा पानी पी जाती थी और दूसरे रोज़ क़बीले के लोग पीते थे और ऊँटनी अपनी बारी के दिन इतना दूध देती थी कि तमाम क़बीले को काफ़ी हो जाता था। कुछ दिन तो क़ौम ने इस तकलीफ़ को बरदाश्त किया लेकिन बाद में क़ौम के कुछ लोगों ने सरकशी की और ऊँटनी के क़त्ल पर आमादा हो गए।

(रूहुल बयान 8/17, ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 8/17)

सवालः हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊँटनी का सीना कितना लंबा था?

जवाबः इस ऊँटनी का सीना साठ गज़ लंबा था।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 12, हाशिया 25, जलालैन 314)

सवालः हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊँटनी का क़त्ल किसने किया था और क्यों?

जवाबः उस ऊँटनी की कोंचे काटने वाला क़दार बिन सालफ़ था और मिसदअ बिन महरज ने तीर मारकर ज़ख़्मी किया था।

इसका तफ़सीली वाक़िआ यूँ हैः एक औरत ग़ैज़ा बिन्ते ग़नम काफ़िरा थी। माल व दौलत और ख़ूबसूरत लड़कियाँ रखती थीं। उसका शौहर ज़वाब बिन उमरू समूद के रईसों में से था। उस औरत को हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम से दुश्मनी थी। एक दूसरी औरत सदक़ा बिन्ते महया नामी जो हसब व नसब, माल व जमाल वाली थी। उन दोनों ने कुछ काफ़िरों को हुस्न व जमाल, माल व मताल का लालच देकर ऊँटनी को क़त्ल करने पर तैयार कर लिया। चुनाँचे सदक़ा ने अपने चचाज़ाद भाई मिस्दअ इब्ने महरज से कहा कि अगर तू ऊँटनी को मार डाले तो मैं तेरी हो जाऊँगी। उसने क़ुबूल कर लिया। इधर ग़ैज़ा ने क़दार बिन सालफ़ को बुलाकर कहा, मेरी जो लड़की तू चाहे इस ख़िदमत के बदले हासिल कर

सकता है कि तू ऊँटनी को क़त्ल कर डाले। चुनाँचे क़दार बिन सालफ़ और मिस्दाअ इब्ने महरज ने समूद के गुंडों से साज़ बाज़ कर ली और सात आदमी उनके साथ हो गए। इस तरह ये सब मिलकर नौ अफ़राद हुए। ये सब के सब चट्टान के नीचे घात लगाकर बैठ गए। ऊँटनी जब पानी पीकर वापस चली और मिस्दाअ के पास से गुज़री तो उसने एक तीर मारा जो पिंडली को लगा। यह देखकर ग़ैज़ा निकली और अपनी सबसे ख़ूबसूरत लड़की को लेकर आई क़दार और उसकी जमाअत के सामने अपनी लड़की के बेपनाह हुस्न का मुज़ाहिरा किया। क़दार इस पेशकश से मुतास्सिर होकर तलवार लेकर उठा और ऊँटनी की कोंचे काट डाली। ऊँटनी ज़मीन पर गिर पड़ी। क़ातिल ने उसके सीने पर नेज़ा मारा फिर उसका गला काट दिया। (इब्ने कसीर 8/1)

सवालः हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊँटनी का क़त्ल किस दिन हुआ था?

जवाबः यह हादसा बुध के दिन हुआ। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 8/17)

वक़ौल दीगर मंगल के दिन पेश आया था।(हाशिया 27 जलालैन 314)

सवालः हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊँटनी के क़त्ल के बाद उसके बच्चे का क्या हुआ?

जवाबः इस ऊँटनी का बच्चा माँ की मौत के बाद चीख़ता हुआ उसी पहाड़ में ग़ायब हो गया जिससे उसकी माँ निकली थी। यह भी कहा गया है कि लोगों ने उसका पीछा करके उसे भी मार डाला।

(इब्ने कसीर 8/17)

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि क़रीब क़यामत यही बच्चा "दाब्बतुल अर्ज़" बनकर ज़ाहिर होगा। (हाशिया 10 जलालैन 136)

सवालः हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की क़ौम के उस वाहिद शख़्स का नाम क्या है जो इज्तिमाई अज़ाब का शिकार न हुआ?

जवाबः क़त्ल ऊँटनी की इस सरकशी पर क़ौमे समूद पर अज़ाब का ज़हूर इस तरह हुआ कि एक ज़बरदस्त चिंघाड़ की ख़ौफ़नाक आवाज़ आई फिर शदीद ज़लज़ला आया जिससे पूरी आबादी उथल पुथल होकर चकना चूर हो गई। तमाम इमारतें टूट फूट कर तहस नहस हो गयीं और

क़ौम का एक एक आदम घुटनों के वल औंधा गिरकर मर गया। पूरी क़ौम में सिर्फ़ एक शख़्स अबू रग़ाल बच सका कि उस वक़्त वह क़ाबातुल्लाह में था। लेकिन जब वह हरम से निकला तो अज़ाब में मुब्तला होकर मर गया।

(इब्ने कसीर 8/17)

सवालः हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम का विसाले हक़ कहाँ हुआ?

जवाबः आपका इंतिक़ाल मक्का मुअज़्ज़मा में हुआ।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/177)

बक़ौल दीगर आपका इंतिक़ाल हज़रमूत में हुआ। उस जगह का नाम हज़रमूत इसलिए रखा गया कि आपका वहाँ तशरीफ़ ले जाते ही विसाल हो गया।

(हाशिया 18 जलालैन 283)

सवालः हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की क़ब्र शरीफ़ कहाँ है?

जवाबः बैतुल्लाह शरीफ़ में रुक्ने यमानी और रुक्ने असवद के दर्मियान एक जगह है जिसकोः روضة من رياض الجنة कहते हैं। आपकी क़ब्र उसी मुबारक हिस्से में है।

(हाशिया 18 जलालैन 283)

बक़ौल दीगर आपकी क़ब्रे अनवर हज़रमूत में है।

(हाशिया 18 जलालैन 177)

सवालः हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की उम्र कितनी हुई?

जवाबः आपकी उम्र शरीफ़ अठ्ठावन साल हुई।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/177)

बक़ौल दीगर आपकी उम्र दो सौ अस्सी साल हुई।

(हाशिया 18 जलालैन 314)

○ ○ ○

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बारे में सवाल और जवाब

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत यूसुफ़ व इब्राहीम अलैहिमस्सलाम के बीच ज़मानी फ़र्क़ कितना है?

जवाबः आपके और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बीच चार सौ साल, आपके और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बीच सात सौ साल का फ़ासला है। (हाशिया 5, जलालैन 13[illegible]

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ज़माना हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से कितने साल पहले है?

जवाबः आपके और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बीच एक हज़ार नौ सौ पिच्हत्तर साल का फ़ासला है। (हाशिया33, जलालैन 51[illegible]

दूसरा क़ौल सत्रह सौ साल का है। (हाशिया 15, जलालैन 97[illegible]

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ज़माना मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कितने साल पहले है?

जवाबः आपका ज़माना नवी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत वसआदत से दो हज़ार तीन सौ साल पहले है।

(मअरिजुन्नबुव्वत 2/32

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बीच कितने नबी मबऊस हुए?

जवाबः आके और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बीच सत्तर हज़ार और दूसरी रिवायत के मुताबिक़ चार हज़ार अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम मबऊस हुए और सबके सब दीने मूसवी पर थे।

(हाशिया 31, जलालैन 1

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का नाम "मूसा" किसने रखा

और क्यों?

जवाबः आपका नाम "मूसा" फ़िरऔन की बीवी आसिया ने उस वक़्त रखा जब फ़िरऔन नौकर चाकरों के साथ दरिया के किनारे सैर व तफ़रीह कर रहा था। अचानक वह संदूक़ जिसमें हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जलवा अफ़रोज़ थे पानी की सतह पर बहता हुआ नज़र आया। जब उस संदूक़ का निकालकर खोला गया तो उसमें एक हसीन व जमील चाँद सा बच्चा मिला। फ़िरऔन ने हज़रत आसिया से कहा, इस बच्चे का नाम रखा जाए। तो हज़रत आसिया ने इस मुनासबत से कि आप पानी और लकड़ियों के बीच बहते हुए आए आपका नाम मूसा रखा। इसलिए कि किब्ती ज़बान में "मू" पानी और "सा" लकड़ी को कहते हैं।

(रूहुल बयान 1/91, अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/177)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के वालिद और वालिदा का नाम क्या है?

जवाबः आपके वालिद मोहतरम का नाम इमरान बिन यसहर है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 13/12)

और आपकी वालिदा माजिदा के नाम के बारे में मुख़्तलिफ़ रिवायात वारिद हैं:

1. हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि आपकी वालिदा मोहतरमा का नाम "आएज़" है।

2. अल्लामा जलालुद्दीन स्युती रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं, वालिदा मोहतरमा का नाम "यूहानज़" बिन्ते यसहर बिन लावा है।

3. बाज़ ने यूख़ा।

4. और बाज़ ने अबा ज़ख़त कहा है।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/188)

5. बरिवायत आपकी वालिदा माजिदा क नाम "यारख़ा" है।

6. इमाम सुहैली ने अपनी किताब "अत्तारीफ़" में "अयारख़त" कहा है।

7. रूहुलमानी में "नोहानज़" है।

8. और तफ़्सीर क़रतबी में इमाम सालबी रहमतुल्लाह अलैहि ने कहा,

आपकी वालिदा साहिबा का नाम "लूख़ा" बिन्ते हातज़ बिन लावा है।

(हाशिया 10, जलालैन 326)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, हज़रत हारून अलैहिस्सलाम से छोटे थे या बड़े?

जवाबः हज़रत हारून अलैहिस्सलाम से आप एक साल छोटे थे।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/177)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का सिलसिलाए नसब किस तरह है?

जवाबः हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम तक आपका नसब शरीफ़ इस तरह है:

मूसा बिन इमरान बिन फ़ाहस बिन लावा बिन याक़ूब अलैहिमस्सलाम।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 3/12, अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/177)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम से क्या रिश्ता था?

जवाबः हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम आपके ख़ुसर थे।

(तफ़्सीर नईमी 1/415)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की उम्र उस वक़्त कितनी थी जब आपको दरिया के सुपुर्द किया गया था?

जवाबः उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ चालीस दिन की थी।

(तफ़्सीर नईमी 1/412)

बक़ौल दीगर उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ तीन माह,

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 20/4)

या चार माह थी। (हाशिया 19, जलालैन 262)

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का दरिया में डाले जाने और फ़िरऔन के महल तक पहुँचने का वाक़िआ अस्हाबे सैर व तवारीख़ यूँ बयान करते हैं:

फ़िरऔन ने एक रात यह ख़्वाब देखा:

"बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ से एक आग आई। उसने मिस्र को घेरकर तमाम फ़िरऔनियों को जला डाला मगर इस्राईलियों को कोई नुक़सान न पहुँचाया। और फिर देखा कि बनी इस्राईल के मौहल्ले से एक बड़ा

अज़दहा निकला जिसने उसको तख़्त से नीचे डाल दिया।"

इस ख़्वाब से फ़िरऔन को वहुत वहशत हुई और काहिनों से इसकी ताबीर पूछी। काहिनों ने वताया कि "वनी इस्राईल में एक वच्चा पैदा होगा जो तेरे हलाक और ज़वाल सलतनत का बाइस होगा। इस ख़बर को सुनकर फ़िरऔन बहुत परेशान हुआ और उसने फ़ौरन कोतवाले शहर को बुलाकर हुक्म दिया कि एक हज़ार सिपाही हथियारबंद और एक हज़ार दाईयाँ बनी इस्राईल के मौहल्ले में तैनात कर दो कि जिस घर में कोई बच्चा पैदा हो उसे फ़ौरन क़त्ल कर दिया जाए। कुछ सालों में बनी इस्राईल के बारह हज़ार बच्चे, दूसरी रिवायत के मुताबिक़ सत्तर हज़ार बच्चे क़त्ल कर दिए गए और नव्वे हज़ार हमल गिराए गए। इधर मशियते इलाही से बनी इस्राईल के बूढ़े भी जल्दी जल्दी मरने लगे। तब क़िब्ती क़ौम के रईसों ने घबराकर फ़िरऔन से शिकायत की कि बनी इस्रसईल में मौत की गर्मबाज़ारी है और इधर उनके बच्चे क़त्ल किए जाए रहे हैं। अगर यही हाल रहा तो यह क़ौम जल्द फ़ना हो जाएगी। फिर हमें यह ख़िदमगार कहाँ से मयस्सर आएंगे? तब फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि अच्छा एक साल बच्चे क़त्ल किए जाएं और एक साल छोड़ दिए जाएं। रब की शान जो साल छोड़ने का था उसमें हारून अलैहिस्सलाम (मूसा अलैहिस्सलाम के बड़े भाई) पैदा हुए और क़त्ल के साल में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की विलादत हुई। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जब पैदा हुए तो अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम की माँ के दिल में यह बात डाली, इसे दूध पिलाओ और जब कोई ख़तरा देखो तो दरिया में डाल दो। चुनाँचे चंद रोज़ मूसा अलैहिस्सलाम की माँ ने दूध पिलाया। इस अरसे में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम न रोते थे न माँ की गोद में हरकत करते थे और न आपकी बहन के सिवा आपकी विलादत का किसी को इल्म था। इसी तरह कुछ अरसा गुज़र गया तो मूसा अलैहिस्सलाम की माँ को ख़तरा महसूस हुआ कि इस फ़रज़ंद की ज़िंदगी मुश्किल में है अगर पड़ौसी वाक़िफ़ हो गए तो जासूसी और चुग़ली करेंगे और फ़िरऔन इस फ़रज़ंद को क़त्ल करने पर तुल जाएगा। बेहतर यह है कि इसको संदूक़ में रखकर दरियाए नील में बहा दिया जाए। शायद कोई दूसर शख़्स इसको उठा ले

और वहाँ परवरिश पाएं। चुनाँचे मूसा अलैहिस्सलाम की माँ ने मौहल्ले के एक बढ़ई से एक संदूक़चा लकड़ी का बनवाया और उस बढ़ई से अहद लिया कि वह किसी से इसका ज़िक्र न करे। वालिदा माजिदा ने मूसा अलैहिस्सलाम को ग़ुस्ल दिया, उम्दा कपड़े पहनाए। खुशबू लगाई और संदूक़चे में रखकर दरियाए नील पर रोती हुई ले गयीं और खुदा के हवाले करके दरिया में बहा दिया। दिल बहुत बेचैन हुआ मगर क़ुदरती तौर पर तस्कीन हुई कि यह बच्चा फिर मुझको ही मिलेगा। उस दरिया से एक बड़ी नहर निकलकर फ़िरऔन के महल से गुज़रती थी। फ़िरऔन अपनी बीवी आसिया के साथ नहर के किनारे बैठा था। जब एक संदूक़ नहर में आते हुए देखा तो उसने ग़ुलामों को हुक्म दिया कि संदूक़ निकालें। संदूक़ निकालकर सामने लाया गया। खोला तो उसमें एक नूरानी शक्ल का फ़रज़ंद जिनकी पेशानी से क़ुबूलियत के आसार नमूदार थे नज़र आया। देखते ही फ़िरऔन के दिल में ऐसी मुहब्बत पैदा हुई कि वह आशिक़ हो गया। लेकिन क़ौम के लोगों ने उसे वरग़लाया और कहा कि मुमकिन है यही वह बच्चा हो जिसको आपकी हुकूमत बर्बाद करना है। चुनाँचे फ़िरऔन आपके क़त्ल पर आमादा हुआ तो फ़िरऔन की बीवी आसिया जो बड़ी नेक ख़ातून थीं कहने लगीं कि यह बच्चा मेरी और तेरी आँख की ठंडक है, इसे क़त्ल न कर। क्या मालूम यह किस सरज़मीन से बहता हुआ आया है और तुझे जिस बच्चे से अंदेशा है वह तो इसी मुल्क क बनी इस्राईल से बताया गया है। आसिया की यह बात फ़िरऔन ने मान ली और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम फ़िरऔन के महल में रहने लगे।

(तफ़्सीर नईमी 1/412, ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 20/4)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को जिस संदूक़ में रखकर दरिया के हवाले किया गया उस संदूक़ के बनाने वाले का क्या नाम है?

जवाबः इस संदूक़ को बनाने वाले का नाम "सानूम" था। उससे अहद लिया गया था कि इस राज़ को फ़ाश न करे। सानूम ने संदूक़चा बनाया और इधर फ़िरऔन बेऔन की तरफ़ से ऐलान हुआ, जो शख़्स उस लड़के का पता दे जो कि बनी इस्राईल के घर पैदा हुआ है वह बड़े

ईनाम व इकराम से नवाज़ा जाएगा। सानूम को दौलत व जाह का लालच और दुनियवी नफ़े की तमा हुई। ख़बर देने के लिए निकला। दरवाज़े पर पहुँचा कि ज़मीन में टख़नों तक धंस गया। और ग़ैबी आवाज़ आई: ख़बरदार! अगर राज़ को ज़ाहिर किया तो ज़मीन में धंसा दिया जाएगा। सानूम वहशतनाक अंजाम के तसव्वुर से डरकर लौटा। और संदूक़चा इमरान के घर पहुँचा दिया। अर्ज़ किया ' मुझे उस पाकीज़ा फ़रज़ंद की सूरत दिखाओ। वालिदा ने उसको हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ज़ियारत कराई। सानूम ने आपके नूरानी चेहरे कैफ़ियत को देखकर आपके क़दम मोहरतम पर आँखें मलीं। और आप पर ईमान लाया।

(तफ़्सीर नईमी 1/413)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने दरिया में कितनी मुद्दत गुज़ारी?

जवाबः आप तीन रोज़ बक़ौल दीगर चालीस रोज़ दरिया में रहे।

(नज़हतुल मजालिस 12/18)

यह भी मंक़ूल है कि आप दरिया में शब में बहाए गए थे और उसी शब की सुबह निकाले गए। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान20/4)

सवालः उस फ़िरऔनी का नाम क्या था जिसने दरिया से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का संदूक़ निकाला था?

जवाबः जिस फ़िरऔनी ने दरिया से संदूक़ निकाला था उसका नाम "तायूस" था। (अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/188)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की उस बहन का क्या नाम था जो संदूक़ की निगरानी कर रही थी?

जवाबः आपकी बहन साहिबा का नाम "मरियम" था।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 20/4)

बाज़ ने "कुलसूम" कहा है।(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/88)

और बाज़ ने "कुलसुमा"। (हाशिया 4, जलालैन 327)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम फ़िरऔन के घर कितनी मुद्दत रहे?

जवाबः मुफ़स्सिरीन ने कहा कि आप फ़िरऔन बेऔन के घर तीस

साल रहे। इस ज़माने में आप फ़िरऔन के लिबास पहनते। उसकी सवारियों पर सवार होते और उसके फ़रज़ंद मशहूर थे।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 19/6)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की उम्र उस वक़्त कितनी थी जिस वक़्त आपने फ़िरऔन की दाढ़ी पकड़कर थप्पड़ रसीद किया था?

जवाबः उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ तीन बरस की थी।

(तफ़्सीर नईमी 1/414)

वक़ौल दीगर उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ चार साल की थी। आपने उसकी दाढ़ी पकड़कर इस ज़ोर से झटकी कि उसके सारे आज़ा जुंबिश में आ गए।

(मलफ़ूज़ात ख़्वाजा निज़ामुद्दीन 179)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ज़बान में लुकनत पैदा होने का वाक़िआ क्या है?

जवाबः इसका वाक़िआ यह था कि बचपन में आप एक रोज़ फ़िरऔन की गोद में थे। आपने उसकी दाढ़ी पकड़कर उसके मुँह पर ज़ोर से तमाचा मारा। इस पर उसे गुस्सा आया और आपके क़त्ल का इरादा किया। हज़रत आसिया ने कहा ऐ बादशाह! यह नादान बच्चा है, क्या समझे। उसने तजुरिबे के लिए एक तश्त में आग और एक तश्त में याक़ूत सुर्ख़ आपके सामने पेश किया। आपने याक़ूत लेना चाहा मगर फ़रिश्ते ने आपका हाथ अंगारे पर रख दिया और वह अंगारा आपके मुँह में दे दिया। उससे आपकी ज़बान जल गई और लुकनत पैदा हो गई।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 16/12, तफ़्सीर नईमी 1/414)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के एक मुक्के से मरने वाले फ़िरऔनी का नाम क्या था?

जवाबः उस क़िब्ती का नाम "क़ानून" था।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/187)

बरिवायत दीगर उसका नाम "फ़ातून" था। (हाशिया 5, जलालैन 310)

जमल में उस क़िब्ती का नाम "क़ाब" है। (हाशिया 20, जलालैन 327)

और एक क़ौल के मुताबिक़ उसका नाम "फलीशून" था।

और उसके साथ जो इस्राईली लड़ रहा था उसका बाज़ ने "हज़क़ील" नाम कहा है। (हाशिया 8, जलालैन 328)

वाक़िआ–

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जब जवान हो गए तो एक दिन फ़िरऔन के महल से निकलकर शहर में दाख़िल हुए तो आपने दो आदमियों को आपस में लड़ते झगड़ते देखा। एक फ़िरऔन का बावर्ची था और दूसरा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम यानी बनी इस्राईल से था। फ़िरऔन का बावर्ची लकड़ियों का गठ्ठा उस इस्राईली पर लादकर उसे हुक्म दे रहा था कि वह फ़िरऔन के बावर्ची ख़ाने तक ये लकड़ियाँ ले चले। इस्राईली ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को मदद के लिए पुकारा। आप मदद के लिए उसके पास गए और फ़िरऔन के बावर्ची से कहाः इस ग़रीब आदमी पर ज़ुल्म न कर। लेकिन वह बाज़ न आया और बदज़ुबानी पर उतर आया। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उसको एक ऐसा मुक्का मारा कि एक ही मुक्के में उसका दम निकल गया और वह वहीं ढेर हो गया। (रूहुल बयान, ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 20/5)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के हाथों से फ़िरऔनी के क़त्ल का हादसा किस जगह पेश आया था?

जवाबः यह हादसा शहर मनफ़ या हावीन या ऐनशम्स में पेश आया था। और बाज़ ने यह भी कहा है कि यह वह गाँव था जिसमें फ़िरऔन रहता था और यह गाँव मिस्र से दो फ़रसख़ दूरी पर था।

(हाशिया 17, जलालैन 327)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उस फ़िरऔनी क़िबती की लाश को क्या किया था?

जवाबः इस क़िब्ती की लाश को आपने रेत में दफ़न कर दिया था।

(जलालैन 327)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की उम्र उस वक़्त कितनी थी जब आप के हाथों क़िब्ती की मौत वाक़ेअ हुई थी?

जवाबः उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ बारह साल की थी।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 16/11)

बरिवायत दीगर उस वक़्त आपकी उम्र तीस साल की थी।

(तफ़्सीर नईमी 1/415)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को किसने इत्तिला दी थी कि फ़िरऔन के दरबार से आपके क़त्ल का हुक्म जारी हो चुका है?

जवाबः फ़िरऔनियों को जब मालूम हुआ कि उस क़िब्ती के क़ातिल मूसा अलैहिस्सलाम हैं तो क़िब्ती सरदारों ने फ़िरऔन से मुतालबा किया कि मूसा को क़त्ल के बदले में क़त्ल किया जाए। फ़िरऔन ने आपके क़त्ल का हुक्म जारी कर दिया। उस महफ़िल में एक शख़्स का नाम हज़कील था, मौजूद था और चोरी छिपे आप पर ईमान ला चुका था। उसने मूसा अलैहिस्सलाम से कहा कि आप किसी और जगह चले जाएं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बेसर व सामान मदयन की तरफ़ रवाना हो गए।

(तफ़्सीर नईमी 1/415)

उसका नाम बाज़ ने समआन, बाज़ ने शमऊन बाज़ ने जबर और बाज़ ने हबीब कहा है। (अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 1/188)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कितने साल तक हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम की बकरियाँ चरायीं?

जवाबः आपने दस साल तक हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम की बकरियाँ चरायीं।

(जलालैन 329, ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 20/7)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जिन बकरियों को चराया करते थे उनकी तादाद कितनी थी?

जवाबः उन बकरियों की तादाद बारह हज़ार थी।

(हाशिया 1, जलालैन 329)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की अहलिया मोहतरमा का नाम क्या है?

जवाबः आपकी ज़ौजा मोहतरमा जो हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम की बेटी थीं उनके नाम से मुताल्लिक़ कई क़ौल हैं:

1. सफ़ोरा। (तफ़्सीर नईमी 1/415)
2. सफ़ोरिया। (अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/188)
3. बाज़ ने सफीरा

4. और बाज़ ने सफ़रा कहा है। (हाशिया 5, जलालैन 329)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का अल्लाह तआला से हमकलाम होते वक़्त जिस पेड़ से आवाज़ आई थी वह कौनसा पेड़ था?

जवाबः वह पेड़ उन्नाव या औसज का था। औसज एक काटेदार पेड़ है जो जंगलों में पाया जाता है (जिसको हिंदी में बेरी कहते हैं)।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 20/7, नज़हतुल मजालिस 5/117)

वाक़िआ

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम हज़रत शुएब के पास दस बरस तक रहे और फिर हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम ने अपनी बेटी का निकाह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कर दिया। इतने अरसे के बाद आप हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम से इजाज़त लेकर अपनी वालिदा से मिलने के लिए मिस्र की तरफ़ रवाना हुए। आपकी बीवी आपके साथ थी। रास्ते में जब कि आप रात के वक़्त एक जंगल में पहुँचे तो रास्ता गुम हो गया। अंधेरी रात थी, सर्दी का मौसम था। उस वक़्त आपने जंगल में दूर एक चमकती हुई आग देखी और बीवी से फ़रमाया तुम यहीं ठहरो। मैंने दूर वह आग देखी है। मैं वहाँ जाता हूँ। शायद वहाँ से कुछ ख़बर मिले और तुम्हारे तापने के लिए कुछ आग भी ला सकूं। चुनाँचे आप अपनी बीवी को वहीं बिठाकर उस आग की तरफ़ चले और जब उसके पास पहुँचे तो एक हरा भरा पेड़ देखा जो ऊपर से नीचे तक निहायत ही रोशन था और आप जितना उसके क़रीब जाते हैं वह दूर हो जाता है और जब ठहर जाते हैं तो क़रीब हो जाता है। आप उस नूरानी पेड़ के अजीब हाल को देख रहे थे कि पेड़ से आवाज़ आई, ऐ मूसा! मैं सारे जहानों को रब अल्लाह हूँ। तुम बड़े पाकीज़ा मुक़ाम में आ गए हो। अपने जूते उतार डालो। तुझे जो "वही" होती है कान लगाकर सुनो! मैंने तुझे पसंद किया।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 20/7)

सवालः अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कितनी बार कलाम फ़रमाया और कितनी बातें कीं?

जवाबः अल्लाह तआला ने आपसे दो बार कलाम फ़रमाया।

(इब सूरः नजम, मदारिज नबुव्वत 1/135)

और कलाम के दौरान अल्लाह तआला ने आपसे एक लाख चौबीस हज़ार बातें की। (नज़हतुल मजालिस 6/93)

एक रिवायत मे है कि अल्लाह तआला ने एक हज़ार मुक़ाम पर आपसे कलाम फ़रमाया। (नज़हतुल मजालिस 12/25)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कलामे इलाही को जिस्म के किन किन अज़ु से समाअत की थी?

जवाबः आपने अपने हर जुज़ बदन से कलामे ख़ुदावंदी को समाअत किया और क़ुव्वते सामिआ ऐसी आम हुई कि तमाम जिस्मे अक़्दस कान बन गया। (दर 16/10, नज़हतुल मजालिस 5/117)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को जब हुक्म इलाही हुआ कि जूतियाँ उतार दो, उस वक़्त आपकी जूतियाँ किस चीज़ की थी?

जवाबः जब मूसा अलैहिस्सलाम "तूरे सीना" पर गये थे और अल्लाह तआला की तरफ़ से हुक्म हुआ कि जूतियाँ उतार दो उस वक़्त आपकी जूतियाँ मुर्दा गधे के चमड़े की थीं।

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पहली बार किस रात को कलामे इलाही से मुशर्रफ़ हुए थे?

जवाबः पहली बार जिस रात को आप कलामे रब्बानी से मुशर्रफ़ हुए वह जुमा की रात थी। (हाशिया 5, जलालैन 261)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जब अल्लाह तआला से हमकलाम हुए उस वक़्त आपके साथ और कौन था?

जवाबः जब आप कलामे रब्बानी व तजल्लीए इलाही से मुशर्रफ़ व मुमताज़ हुए उस वक़्त आपके साथ जिब्राईल अलैहिस्सलाम थे लेकिन जो अल्लाह तआला ने आपसे फ़रमाया वह उन्होंने ने कुछ न सुना।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 9/7, मआलिम तंज़ील 2/22)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम किस पहाड़ पर अल्लाह तआला से हमकलाम हुए थे?

जवाबः बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा है वह सीना पहाड़ था जिसको तूरे सीना से याद किया जाता है। दूसरा क़ौल यह है कि वह ज़ुबैर नामी पहाड़ था जो मदयन के पहाड़ों में सबसे बड़ा था।

(मआलिम तंज़ील 2/22, हाशिया 26, जलालैन 140)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम किस माह की किस तारीख़ को तजल्ली इलाही से मुशर्रफ़ हुए थे?

जवाबः 9/ ज़िलहिज्जा यौमे अरफ़ा को तजल्ली इलाही से मुशर्रफ़ हुए थे। (हाशिया 1, जलालैन 140)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के लिए अल्लाह तआला ने अपनी कितनी तजल्ली ज़ाहिर फ़रमाई?

जवाबः अल्लाह तक़द्दुस तआला ने हाथ की सबसे छोटी उंगली के निस्फ़ पोरे के बराबर तजल्ली ज़ाहिर फ़रमाई थी। (जलालैन 140)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के असा मुबारक का क्या नाम था?

जवाबः आपके असा मुबारक के नाम के बारे में मुख़्तलिफ़ अक़वाल हैं: 1. नबआ। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 16/10)

2. माशा। (इब्ने कसीर 16/10)

3. अलीक़। (हाशिया 23, जलालैन 261, नज़हतुल मजालिस 2/57)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का असा किस लकड़ी का था?

जवाबः यह असा मुबारक जन्नत के पेड़ "आस" की लकड़ी का था। (तफ़्सीर नईमी 1/473)

बरिवायत दीगर जन्नती पेड़ "औसज" की लकड़ी का था। (रूहुल मानी 16/174, नज़हतुल मजालिस 2/57)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को यह असा किनसे हासिल हुआ था?

जवाबः यह असा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत से लाए थे। उनसे मुंतक़िल होता हुआ हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम तक पहुँचा और आपने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को बकरियाँ चराने के लिए इनायत फ़रमाया।

कहते हैं कि यही असा क़रीब क़यामत "दाब्बतुल अर्ज़" की सूरत में ज़ाहिर होगा। (इब्ने कसीर 16/10)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के असा मुबारक की लंबाई

कितनी थी?

जवाबः उसकी लंबाई आपके क़द के बराबर दस हाथ थी।

(तफ़्सीर नईमी 473)

बक़ौल दीगर उसकी लंबाई बारह हाथ थी।

(रूहल मानी 16/174, नज़हतुल मजालिस 2/57)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के असा का ऊपरी हिस्सा कैसा था?

जवाबः इस मुबारक असा के ऊपर की जानिब दो शाख़ें थीं जो अंधेरे में दो मशालों की तरह जलती थीं। (तफ़्सीर नईमी 1/473)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के असा की ख़ुसूसियात क्या क्या थीं?

जवाबः इस असा मुबारक की ख़ुसूसियात नीचे लिखी हैं:

1. जब आप सफ़र में होते तो यह असा आपसे बातें करते करते चलता।
2. जब आपको भूख लगती और कोई चीज़ खाने को न होती तो असा को ज़मीन पर मारते। इससे एक दिन का खाना निकल आता।
3. जब आपको प्यास लगती तो इसको ज़मीन पर नसब करते, उससे पानी उबलना शुरू हो जाता।
4. जब कुँए से पानी खींचने की नौबत आती तो यह असा डोल का काम देता और इतना लंबा हो जाता जितनी उस कुँए की गहराई होती। ऊपर की दो शाख़ें डोल की तरह बन जातीं।
5. जब आपको फल तनावुल फ़रमाने की ख़्वाहिश होती तो इसको ज़मीन में गाड़ देते, यह पेड़ बन जाता। पत्ते निकल आते फिर फल आ जाता।
6. अंधेरी रात में इससे रोशनी फूट निकलती।
7. जब कोई दुश्मन सामने आता तो यह असा अपने आप उससे लड़ता और ग़ालिब आता।

(हाशिया 20, जलालैन 261, नज़हतुल मजालिस 12/23)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर सबसे पहले कौन ईमान लाया था?

जवाबः आप पर सबसे पहले "सानोम" नामी शख़्स ईमान लाया था। यह वही शख़्स है जिनसे आपके वालिदे माजिद हज़रत इमरान ने संदूक़ बनवाया था कि उसमें आपको रखकर दरिया में बहा दें ताकि फ़िरऔनियों के हाथों क़त्ल होने से बच जाएं। सानोम जब संदूक़ लेकर इमरान के घर पहुँचा तो आपके चेहराए नूरानी, आइना जमाले इलाही को देखकर उसी वक़्त आप पर ईमान लाया। लिहाज़ा साबिक़ुल ईमान यही है।

(तफ़्सीर नईमी 1/413)

एक क़ौल यह है कि आप पर सबसे पहले हज़रत यूशा बिन नून अलैहिस्सलाम ईमान लाए। (इब्ने कसीर 27/14)

अल कामिल फ़ी तारीख़ में है कि वह ख़रबील नामी शख़्स था जिसने आप पर ईमान लाने में पहल हासिल की थी।

(अल कामिल फ़ी तारीख़ 1/68)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और फ़िरऔनी जादूगरों के दर्मियान मुक़ाबला कहाँ हुआ था?

जवाबः इब्ने ज़ैद का क़ौल है कि यह मुक़ाबला स्कंदरिया में हुआ था।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 9/4)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और जादूगरों के दर्मियान मुक़ाबला किस माह की किस तारीख़ को हुआ था?

जवाबः यह मुक़ाबला यौमे आशूरा यानी दसवीं मुहर्रम को हफ़्ते के दिन हुआ था। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 16/12)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के मुक़ाबिल जादूगरों की तादाद कितनी थी?

जवाबः जादूगरों की तादाद बक़ौल हज़रत कअब बारह हज़ार, बक़ौल इब्ने इस्हाक़ पंद्रह हज़ार थी। बाज़ ने सत्तर हज़ार और बाज़ ने अस्सी हज़ार की तादाद बतलाई है। (हाशिया 22, जलालैन 138)

सत्रह हज़ार, उन्नीस हज़ार और कुछ ऊपर तीस हज़ार के भी अक़्वाल मंक़ूल हैं। उनमें हर एक अपने फ़न में कामिल और उस्ताद ज़माना था।

(इब्ने कसीर 19/7)

सवालः फ़िरऔनी जादूगरों के सरदार का नाम क्या था?

जवाबः इन जादूगरों में पेश पेश चार जादूगर थेः

1. साबूर, 2. आज़ूर, 3. हतूत,
4. मुसफ़्फ़ी। (इब्ने कसीर 19/7)

बक़ौल दीगर उनके नाम इस तरह हैं:

1. साबूर, 2. आदूर, 3. हुतूत,
4. और शमऊन। (तारीखुल उमम वल मलूक 1/287)

हज़रत मक़ातिल कहते हैं कि इस गिरोह का रईसे आज़म शमऊन था और इब्ने जरीह का क़ौल है कि उसका नाम यूहन्ना था।

(मआलिमुल तंज़ील 2/18)

सवालः फ़िरऔनी जादूगरों ने मैदान में जो अज़दहे छोड़े थे उनकी तादाद कितनी थी?

जवाबः उन अज़दहों की तादाद सत्तर हज़ार या बहत्तर हज़ार थी।

(हाशिया 7, जलालैन 311)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत के मुताबिक़ अस्सी हज़ार। उन्हीं की एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ इन अज़दहों की तादाद बारह हज़ार थी। (हाशिया 26, जलालैन 263)

एक और रिवायत के मुताबिक़ पच्चीस हज़ार थी।

(रूहुल बयान 2/17, 9)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का अज़दहा कितना लंबा और किस रंग का था?

जवाबः आपका अज़दहा ज़र्द और एक मील लंबा था।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 9/3)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का अज़दहा जब मुँह खोलता था तो दोनों जबड़ों के दर्मियान कितना फ़ासला होता था?

जवाबः फ़िरऔन ने जब आपसे नबुव्वत की निशानी तलब की तो आपने अपना असा मुबारक ज़मीन पर डाल दिया। वह असा एक बड़ा अज़दहा बन गया। उसने अपना एक जबड़ा ज़मीन पर रखा और एक

क़िसरे शाही की दीवार पर। उस वक़्त दोनों जबड़ों के दर्मियान का फ़ासला चालीस हाथ था।

(हयातुल हैवान)

बक़ौल दीगर दोनों जबड़ों के दर्मियान का फ़ासला अस्सी हाथ था। (हाशिया 16, जलालैन 18, नज़हतुल मजालिस 5/117, रूहुल बयान 2/17)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने वाले फ़िरऔनी जादूगरों की तादाद कितनी थी?

जवाबः उन जादूगरों की तादाद अस्सी हज़ार थी, सत्तर हज़ार, तीस हज़ार, उन्नीस हज़ार, पंद्रह हज़ार और बारह हज़ार के भी अक़वाल हैं। यह भी मरवी है कि यह सत्तर थे। फ़िरऔन ने उन सभों को क़त्ल कर डाला। ये लोग सुबह के वक़्त काफ़िर और जादूगर थे और शाम को पाकबाज़ मोमिन शहीद। मरवी है कि जब ये लोग ख़ुदा के सामने सर-ब-सजूद हुए और पुकार उठे कि हम रब्बुल आलमीन यानी मूसा व हारून अलैहिमस्सलाम के परवरदिगार पर ईमान लाए। ये सज्दे में ही थे कि ख़ुदाए पाक ने उन्हें जन्नत दिखा दी और उन्होंने अपनी मंज़िले अपनी आँखों से देख लीं।

(इब्ने कसीर 16/12)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने वाले फ़िरऔनियों की तादाद कितनी है?

जवाबः क़ौम फ़िरऔन में से आप पर सिर्फ़ तीन ख़ुशनसीब ईमान लाएः

1. हज़रत आसिया बीवी फ़िरऔन,

2. हज़क़ील जिन्हें मोमिन आले फ़िरऔन कहते हैं। बाज़ ने उनका नाम हज़बील कहा है,

3. मरियम बिन्ते नामूसा जिन्होंने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की क़ब्र शरीफ़ की निशानदिही की थी। (जलालैन 312, ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 19/7)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का दरिया में अपने असा मारने पर कितने रास्ते पैदा हुए थे?

जवाबः आपने अल्लाह के हुक्म से दरिया पर असा मारा तो बारह रास्ते पैदा हो गए, (क्योंकि बनी इस्राईल के बारह गिरोह थे) जिनके दर्मियान पानी दीवारों की तरह खड़ा हो गया और आनन फ़ानन आफ़ताब

ने ज़मीन को ख़ुश्क कर दिया। (तफ़्सीर नईमी 1/420)

सवालः दरिया में पैदा होने वाले रास्ते की फ़राख़ी कितनी थी?

जवाबः जो बारह रास्ते बने उनमें से हर एक की फ़राख़ी छः मील थी। (मलफ़ूज़ात ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया 182)

सवालः उन रास्तों में से गुज़रने वाले बनी इस्राईल एक दूसरे को कैसे देखते थे?

जवाबः जब बनी इस्राईल के एक गिरोह ने कहा कि ऐ मूसा! हमें ख़बर नहीं कि हमारे दूसरे साथी ज़िंदा हैं या डूब गए तो मूसा अलैहिस्सलाम ने उन पानी की दीवारों पर लाठी मारी जिससे आबी दीवारों में जाली की तरह रोशनदान बन गए और बनी इस्राईल की हर जमाअत उन रास्तों में से एक दूसरे को देखती और आपस में बातें करती गुज़र गई।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 1/6)

सवालः यह दरिया मिस्र से कितनी मुसाफ़त पर वाक़ेअ है और उसकी लंबाई और चौड़ाई कितनी थी?

जवाबः यह दरिया मिस्र से तीन दिन के फ़ासले पर वाक़ेअ है। उसकी लंबाई शुमालन व जुनूबन चार सौ साठ फ़रसख़ है और चौड़ाई साठ फ़रसख़। जहाँ बनी इस्राईल पार हुए थे वहाँ चौड़ाई बहुत थोड़ी थी यानी सिर्फ़ चार फ़रसख़। (तफ़्सीर नईमी 1/417 से 421)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के हमराहियों में से सबसे पहले दरिया में घोड़ा किसने उतारा था?

जवाबः जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल को दरिया पार करने का हुक्म दिया तो ये लोग ख़ौफ़ज़दा हुए कि कहीं हम डूब न जाएं। चुनाँचे सबसे पहले यूशा अलैहिस्सलाम ने अपना घोड़ा डाला। उनके पीछे हज़रत हारून अलैहिस्सलाम। जब इस्राईलियों ने उनको गुज़रते देखा तो यह भी दरिया में चल दिए। और सबसे पीछे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम दाख़िल हुए। (तफ़्सीर नईमी 1/421)

सवालः सामरी का नाम क्या था कि जिसने बछड़ा बनाया था?

जवाबः सामरी का नाम मूसा बिन ज़फ़र था।

(हाशिया 119, जलालैन 265)

या उसका नाम मुह्यी था।

(तफ़्सीर नईमी 1/429)

बनी इस्राईल की किताबों में है कि सामरी का नाम हारून था।

(तफ़्सीर नईमी 16/13)

सवालः सामरी की परवरिश किसने की थी और क्यों?

जवाबः सामरी की परवरिश जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने की थी। वाक़िआ यूँ है कि सामरी की वालिदा बदकारी की वजह से हामला हो गई। जब विलादत का वक़्त आया तो पहाड़ पर चली गई। और वहाँ बच्चे को जनकर आ गई। अल्लाह तआला ने उस बच्चे की परवरिश का इंतिज़ाम इस तरह फ़रमाया कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया तुम इसकी परवरिश करो। चुनाँचे जिब्राईल अलैहिस्सलाम उसको अपनी तीन उंगलियाँ चटाते थे। एक उंगली से शहद, दूसरी से घी और तीसरी से दूध निकलता था। (हाशिया 25, जलालैन 9, हाशिया 19/265)

58. सवालः सामरी ने बछड़ा कितने दिनों में तैयार किया था?

जवाबः उसने तीन दिन में बछड़ा तैयार किया था।

(अल कामिल फ़ी तारीख़ 1/74)

सवालः सामरी ने किन चीज़ों से बछड़ा बनाया था?

जवाबः सामरी एक सुनार था और ज़रगिरी में उसको महारत हासिल थी। यह मुनाफ़िक़त से ईमान लाकर इस्राईलियों के साथ था। उसके पास हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम के घोड़े की टाप की ख़ाक थी जो उसने फ़िरऔनियों के ग़र्क़ के वक़्त दरिया से उठा लिया था। इधर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तीस दिन के वादे पर तौरैत लेने के लिए कोहे तूर पर गए हुए थे। तीस दिन की मियाद गुज़र जाने के बाद तक जब आपकी वापसी न हुई तो इस्राईलियों में खलबली मच गई। सामरी को अच्छा मौक़ा मिला। उसने इस्राईलियों से कहाः मूसा तुम्हारी तरह बशर है। सिर्फ़ तिल्समाती असा की वजह से मौजिज़ा दिखाते हैं और तुमसे बढ़ गए हैं। मैं तुम्हारे लिए उस असा से भी ज़्यादा अजीब तर तिलिस्म बना दूँ? चुनाँचे उसने बनी इस्राईलियों से वह तमाम ज़ेवर व जवाहिरात जो मिस्र से चलते वक़्त बनी इस्राईल फ़िरऔनियों से आरियत के तौर पर मांग लाए थे ले लिया। सामरी ने सोना गलाकर एक निहायत ही ख़ूबसूरत

बछड़ा तैयार कर दिया। जवाहिरात व याक़ूत को उस बछड़े की आँख, कान, ज़ानों और क़दम पर निहायत ही क़रीने से जड़ दिया और जिब्राईली घोड़े के ज़ेरे क़दम ख़ाक को उसके मुँह में डाल दिया जिससे उसमें आवाज़ व जुंबिश पैदा हो गई। उसकी नाक में कुछ सुराख़ इस तरह रखे कि जब उनमें हवा दाख़िल होती तो उससे बछड़े की आवाज़ की तरह आवाज़ पैदा होती थी। एक क़ौल यह भी है कि वह असप जिब्राईल की ख़ाक ज़ेरे क़दम डालने से ज़िंदा होकर बछड़े की तरह बोलता था और हरकत भी करता था। फिर सामरी ने बनी इस्राईल से उसकी पूजा शुरू करा दी। (तफ़्सीर नईमी 1/429 से 430)

सवालः सामरी के बनाए बछड़े का नाम क्या था?

जवाबः उस बछड़े का नाम यहमूत था। (इब्ने कसीर 15/15)

61. सवालः बनी इस्राईल ने उस बछड़े की इबादत कितने दिनों तक की थी?

जवाबः चालीस दिन। (तफ़्सीर नईमी 1/572)

सवालः उन बनी इस्राईलियों की तादाद कितनी थी कि जिन्होंने बछड़े की पूजा नहीं की थी?

जवाबः उन बनी इस्राईलियों की तादाद बारह हज़ार थी जिन्होंने बछड़े की पूजा न की और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम के साथ मर्कज़ इस्तिक़ामत पर साबित व मुस्तक़ीम थे।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 16/14, तफ़्सीर नईमी 1/430)

सवालः सामरी को क्या सज़ा दी गई थी?

जवाबः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल को सामरी से मुलाक़ात, मकालमत और ख़रीद व फ़रोख़्त पूरे तौर पर ममनूअ क़रार दिया। इससे किसी का छूना भी हराम क़रार दिया। अगर इत्तेफ़ाक़ से कोई छू भी जाता तो दोनों शदीद बुख़ार में मुब्तला हो जाते। सामरी जंगल में यही शोर मचाता फिरता कि कोई छू न जाना। वहशियों और दरिन्दों में ज़िंदगी के दिन निहायत तलख़ी व वहशत से गुज़ारता था।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 16/14)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की क़ब्र की निशानदिही किस औरत ने की थी?

जवाबः वह मरियम बिन्ते नामूसा नामी औरत थी।

(जलालैन 312, ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 19/8)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की क़ब्र की निशानदिही करने वाली औरत ने मूसा अलैहिस्सलाम से क्या मुआवज़ा तलब किया था?

जवाबः उस औरत ने कहा कि मैं यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की क़ब्र शरीफ़ का पता बताऊँगी लेकिन आप मुझसे अहद कर लें कि मैं जो मांगू सो पाऊँगी। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कुछ ताम्मुल किया। "वही" आई कि ऐ मूसा! इससे अहद कर लो। चुनाँचे आपने अहद फ़रमा लिया। बुढ़िया बोली, मैं चाहती हूँ कि बहिश्त बरीं में आपके साथ रहूँ। आपने जन्नत में रफ़ाक़त उस आत फ़रमा दी। उसने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की क़ब्र की निशानदिही की। और मूसा अलैहिस्सलाम ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की नअ़श मुबारक को साथ लेकर रास्ता तय फ़रमाया।

(तफ़्सीर नईमी 1/419)

उस ज़ईफ़ा की उम्र सात सौ साल हुई। (हाशिया 8, जलालैन 312)

सवालः मन व सलवा की जाए नुज़ूल का नाम क्या है?

जवाबः मन सलवा मैदाने "तीं" में नाज़िल होता था।

(तफ़्सीर नईमी 1/455, इब्ने कसीर 6)

उस मैदान की लंबाई तीस मील और चौड़ाई नौ फ़रसख़ था।

(हाशिया 8, जलालैन 98)

बक़ौल दीगर बारह कोस था। (तफ़्सीर नईमी 1/454)

और यह मैदान "तीं" मिस्र व शाम के दर्मियान वाक़ेअ है।

सवालः मन व सलवा क्या चीज़ें थीं?

जवाबः "मन" शबनम है जो सुबह को गिरती थी और जमकर बर्फ़ की तरह सफ़ेद, लज़्ज़त में घी और शहद की माजून की तरह होती थी और "सलवा" एक दरियाई परिन्दे का नाम है जिसका क़द छोटे मुर्ग़ के बराबर और उसका गोश्त निहायत ही लज़ीज़ व जल्द हज़्म है। तबीबों की ज़ुबान में उसको "क़तीलुर्रअद" कहते हैं क्योंकि यह बादलों की गरज सुनकर मर जाता है। (तफ़्सीर नईमी 1/452)

बाज़ कहते हैं कि "मन" गोंद की क़िस्म का था। हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं ओलों की तरह का। रबीअ बिन अनस का क़ौल है शहद जैसी चीज़ थी जिसमें पानी मिलाकर पीते थे। हज़रत शअबी फ़रमाते हैं यह शहद उस "मन" का सत्रहवां हिस्सा है। और "सलवा" एक क़िस्म का परिन्दा है जो चिड़िया से कुछ बड़ा होता था, सुर्ख़ी माएल रंग का। बाज़ ने कहा है कि कबूतर के बराबर था।

(इब्ने कसीर 1/6)

बाज़ कहते हैं कि यह पका हुआ नाज़िल होता था।

(हाशिया 12, जलालैन 10)

सवालः मन व सलवा किस वक़्त नाज़िल होता था?

जवाबः "मन" सुबह सादिक़ से आफ़ताब निकलने तक नाज़िल होता था। (तफ़्सीर नईमी 1/454, ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 1/6)

और "सलवा" बाद अस्र नाज़िल होता था। (तफ़्सीर नईमी 1/455)

सवालः मन व सलवा रोज़ाना कितना नाज़िल होता था?

जवाबः "मन" हर शख़्स के लिए रोज़ाना एक साअ तक़रीबन साढ़े चार सेर के बराबर नाज़िल होता था।

(तफ़्सीर नईमी 1/454, ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 1/6)

और "सलवा" एक मील लंबाई चौड़ाई में एक नेज़े के बराबर ऊंचा ढेर हो जाता था। (इब्ने कसीर 1/6)

बनी इस्राईलियों की तादाद छः लाख थी। (हाशिया 11, जलालैन 10)

सवालः मन व सलवा किस दिन नाज़िल नहीं होता था?

जवाबः "मन व सलवा" ये दोनों चीज़ें हफ़्ते के दिन बिल्कुल न नाज़िल होतीं। उसके बदले जुमा के दिन दुगनी नाज़िल होतीं और हुक्म था कि हफ़्ते के लिए भी हस्बे ज़रूरत जमा कर लें। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 1/6)

सवालः मन व सलवा कितने दिनों तक नाज़िल होता रहा?

जवाबः "मन व सलवा" चालीस सालों तक नाज़िल होता रहा।

(तफ़्सीर नईमी 1/454)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के असा मारने से जिस पत्थर से बारह चश्मे फूट निकलते थे उसकी लंबाई चौड़ाई कितनी थी?

जवाबः यह संगमरमर था चार गज़ चकोर यानी एक गज़ लंबा और एक गज़ चौड़ा था। हर तरफ़ से तीन तीन चश्मे यानी कुल बारह चश्मे फूट निकलते थे। (तफ़्सीर नईमी 1/473, हाशिया 25, जलालैन 10)

दूसरी रिवायत यह है कि यह पत्थर दस दस हाथ लंबा चौड़ा था।

(इब्ने कसीर 1/7)

सवालः यह पत्थर कहाँ था?

जवाबः बाज़ कहते हैं कि यह पत्थर भी असा की तरह जन्नती था जिसको हज़रत आदम अलैहिस्सलाम अपने हमराह लाए थे और अंबिया किराम में मुन्तकिल होता हुआ हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम तक पहुँचा। उन्होंने असा के साथ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को यह पत्थर इनायत फ़रमाया। बाज़ कहते हैं कि यह वही पत्थर था कि एक बार हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम कपड़े उतारकर ग़ुस्ल फ़रमा रहे थे कि अल्लाह के हुक्म से यह पत्थर आपके कपड़े लेकर भागा था। जिब्राईल अलैहिस्सलाम के मशवरे से इसको आपने अपने साथ रख लिया था।

(तफ़्सीर नईमी 1/473, इब्ने कसीर 1/7)

सवालः उस मक्तूल का नाम क्या था जिसके क़त्ल का पता लगाने के लिए बनी इस्राईल को गाय ज़िब्ह करने का हुक्म दिया गया था?

जवाबः उस मक्तूल का नाम आमील था।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 1/8, अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/185)

दूसरी रिवात के मुताबिक़ उसका नाम आबील था।

(तफ़्सीर नईमी 1/581)

वाक़िआ–

इसका वाक़िआ यूँ है कि यह शख़्स बहुत मालदार और बेऔलाद था। उसके चचाज़ाद भाई ने विरासत के लालच में इसको क़त्ल करके दूसरी बस्ती के दरवाज़े पर डाल दिया। और ख़ुद सुबह को उसके ख़ून का मुद्दई बनकर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की बारगाह में आया और बस्ती वालों पर ख़ून का दावा करके उनसे ख़ून बहा यानी जान का बदला मांगा। मूसा अलैहिस्सलाम ने उस बस्ती वालों से पूछा तो उन्होंने साफ़

इंकार किया। लोगों ने आपसे दरख़्वास्त की कि आप दुआ फ़रमाएं, अल्लाह तआला हक़ीक़ते हाल ज़ाहिर फ़रमाए। आपने दुआ फ़रमाई तो इस पर हुक्म आया कि एक गाय ज़िब्ह करके उसका कोई हिस्सा मक़्तूल पर मारें। वह ज़िंदा होकर क़ातिल का नाम बता देगा। चुनाँचे ऐसा ही किया गया। वह अल्लाह तआला के हुक्म से ज़िंदा हुआ। उसने अपने चचाज़ाद भाई को बताया कि इसने मुझे क़त्ल किया।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 1/7, तफ़्सीर नईमी 1/518)

सवालः बनी इस्राईल ने क़ातिल का पता लगाने के लिए जिस गाय को ज़िब्ह किया था उसका नाम क्या था?

जवाबः उस गाय का नाम "मज़हबा" था। (तफ़्सीर नईमी 1/526)

सवालः उस मछली की लंबाई चौड़ाई कितनी थी जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम से मिलने जाते वक़्त अपने हमराह ले गए थे?

जवाबः उस मछली की लंबाई एक गज़ से ज़्यादा और चौड़ाई एक बालिश्त थी। (हयातुल हैवान 1/481)

सवालः उस पछली का हुलिया कैसा था?

जवाबः उस मछली का हुलिया इस तरह था कि सिर्फ़ एक आँख थी और आधा सर। दोनों जानिब कांटे और हड्डी थी। उस मछली की नस्ल अब तक बाक़ी है। (हयातुल हैवान 1/481)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने कितने मौजिज़े अता फ़रमाए?

जवाबः आपको नौ मौजिज़े अता हुए थे। (तफ़्सीर नईमी 1/237)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का इंतिक़ाल किस मुक़ाम पर हुआ था?

जवाबः आपका इंतिक़ाल मुक़ामे "तीं" में हुआ।

(तफ़्सीर नईमी 1/458, जलालैन 98)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की उम्र कितनी हुई?

जवाबः सालबी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि आपकी उम्र शरीफ़ एक सौ बीस साल हुई। (अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/177)

हज़रत हारून अलैहिस्सलाम के बारे में सवाल और जवाब

सवालः हारून अलैहिस्सलाम के वालिद का नाम क्या है?

जवाबः आपके वालिदे माजिद का नामे नामी इस्मे गरामी इमरान था।
(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/177)

सवालः हारून अलैहिस्सलाम का हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से क्या रिश्ता था?

जवाबः आप, मूसा अलैहिस्सलाम के हक़ीक़ी भाई थे। एक क़ौल के मुताबिक़ अल्लाती (सौतेले) भाई और एक क़ौल के मुताबिक़ अख़्याफ़ी (सौतेले) भाई थे। (अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/177)

सवालः हारून अलैहिस्सलाम हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से बड़े थे या छोटे?

जवाबः आप हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से एक साल बड़े थे।
(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/177)

सवालः शबे मैराज में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत हारून अलैहिस्सलाम को किस आसमान पर देखा था?

जवाबः शबे मैराज में सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको पाँचवें आसमान में देखा।(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/177)

सवालः हारून अलैहिस्सलाम की रेश मुबारक की लंबाई कितनी थी?

जवाबः क़िस्सा मैराज के बारे में बाज़ अहादीस करीमा में आया है कि जब जनाबे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पाँचवें आसमान पर तशरीफ़ ले गए तो देखा कि वहाँ हज़रत हारून अलैहिस्सलाम मौजूद हैं जिनके रेश मुबारक आधी स्याह आधी सफ़ेद है और इतनी लंबी कि पूरे सीने को

उबूर करके नाफ़ तक पहुँची हुई है।

(अल अतक़ान फी उलूमुल क़ुरआन 2/177)

सवालः हारून अलैहिस्सलाम का इंतिक़ाल किस जगह हुआ?

जवाबः आपका इंतिक़ाल मैदान "तीं" में हुआ जो शाम और मिस्र के दर्मियान वाक़ेअ है। (हाशिया 11, जलालैन 10)

सवालः हारून अलैहिस्सलाम का इंतिक़ाल, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से पहले हुआ था या बाद में?

जवाबः आपका इंतिक़ाल हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के विसाले हक़ से एक साल पहले हुआ।

(इब्ने कसीर 6/8, अल अतक़ान फी उलूमुल क़ुरआन 2/177, हाशिया 11, जलालैन 98)

दूसरी रिवायत के मुताबिक़ तीन साल पहले।

सवालः हारून अलैहिस्सलाम के जनाज़े में हारून नामी कितने अफ़राद शरीक हुए थे?

जवाबः आपके जनाज़े में हारून नामी चालीस हज़ार आदमी शरीक थे। (इब्ने कसीर 16/5)

सवालः हारून अलैहिस्सलाम की उम्र कितनी हुई?

जवाबः आप, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से एक साल पहले पैदा हुए और एक साल पहले ही विसाल फ़रमा गए।

(अल अतक़ान फी उलूमुल क़ुरआन 2/177)

(इस हिसाब से आपकी उम्र शरीफ़ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की उम्र बराबर हुई।)

और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की उम्र शरीफ़ एक सौ बीस साल है।

(अल अतक़ान फी उलूमुल क़ुरआन 2/177)

○ ○ ○

हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम बारे में सवाल और जवाब

सवालः हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम का असली नाम और कुन्नियत क्या है?

जवाबः आपका नाम बलिया बिन मलकान और कुन्नियत अबुल अब्बास है। एक क़ौल यह है कि आप बनी इस्राईल में से हैं और एक क़ौल यह है कि आप शहज़ादे हैं। आपने दुनिया तर्क करके ज़ोहद अख़्तियार फ़रमा लिया। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 15/21)

सवालः हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम का शजूरए नसब क्या है?

जवाबः हज़रत नूह अलैहिस्सलाम तक आपका सिलसिला नसब इस तरह हैः

बलिया बिन मलकान बिन फ़ाने बिन आबिर बिन शालख़ बिन अरफ़हशद बिन साम बिन नूह अलैहिस्सलाम। (इब्ने कसीर 16/1)

सवालः हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की पहली मुलाक़ात क्यों और कैसे हुई?

जवाबः हज़रत इब्ने अबी कअब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम एक दिन बनी इस्राईल को ख़ुत्बा दे रहे थे। उस दौरान आपसे सवाल हुआ कि सबसे बड़ा आलिम कौन है? आपने जवाब दिया, "मैं।" उसी वक़्त "वही" आई कि ऐ मूसा! मजमएल बहरैन में एक बंदा है जो तुझसे ज़्यादा इल्म रखता है। इस पर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ कियाः परवरदिगार! मैं उस तक कैसे पहुँच सकता हूँ? हुक्म हुआ कि अपने साथ मछली ले लो। जहाँ वह मछली खो जाए वहीं वह मिल जाएंगे। हुक्म पाते ही उसी वक़्त हज़रत यूशा बिन नून अलैहिस्सलाम को

हमराह लेकर मजमअल बहरैन की तरफ़ रवाना हो गए।

(इब्ने कसीर 15/21)

और फ़रमाया मैं अपनी कोशिश जारी रखूंगा। यहाँ तक कि वहाँ पहुँच जाऊँ। खुदा तआला ने मदद फ़रमाई और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम को पा लिया और उनसे फ़रमाया कि मैं आपके साथ रहना चाहता हूँ ताकि आपके इल्म से भी कुछ मुस्तफ़ीज़ हो सकूँ। हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि आप मेरे साथ रहकर कई ऐसी बातें देखेंगे कि आप उन पर सब्र न कर सकेंगे। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया नहीं, मैं सब्र करूंगा। आप मुझे साथ रहने की इजाज़त दीजिए। हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तो फिर मैं चाहे कुछ करूं, आप मेरी किसी बात पर दख़ल न दें। फ़रमाया, मंज़ूर है और आपके साथ रहने लगे। एक रोज़ दोनों चले और किश्ती पर सवार हुए। किश्ती वाले ने हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम को पहचानकर मुफ़्त बिठा लिया मगर हज़रत ने उस किश्ती को एक जानिब से तोड़ दिया और ऐबदार कर दिया। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम यह देखकर बोल उठे, जनाब! यह आपने क्या किया? एक ग़रीब आदमी की जिसने बिठाया भी हमें मुफ़्त आपने किश्ती तोड़ दी। हज़रत ख़िज़र बोले मूसा! मैं न कहता था कि आपसे सब्र न हो सकेगा और मेरी बातों पर आप बग़ैर दख़ल दिए न रह सकेंगे? हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, मुझ से भूल हो गई, आइंदा मोहतात रहूँगा। फिर चले तो रास्ते में एक लड़का मिला। हज़रत ख़िज़र ने उस लड़के को क़त्ल कर डाला। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम फिर बोल पड़े कि ऐ ख़िज़र! यह तुमने क्या किया, एक बच्चे को मार डाला? हज़रत ख़िज़र बोले मूसा! आप फिर बोल पड़े, मेरा और आपका साथ मुश्किल है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम फ़रमाने लगे एक बार और मौक़ा दीजिए। अब अगर बोलूं तो अलग कर दीजिएगा। चुनाँचे फिर चले तो एक ऐसे गाँव में पहुँचे जिस गाँव के लोगों ने हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को खाने तक को न पूछा बल्कि उन्होंने खाना तलब फ़रमाया तो लोगों ने इंकार कर दिया। गाँव में एक शिकस्ता मकान की दीवार गिरने वाली थी। हज़रत ख़िज़र ने उस

दीवार को अपने हाथ से सीधा करके मज़बूती से क़ायम कर दिया। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने देखा कि गाँव वाले तो इतने बख़ील हैं कि खाना तक देने को तैयार नहीं और यह ख़िज़र इतनी शफ़क़त पर उतर आए हैं कि उनकी गिरने वाली दीवारें क़ायम करने लगे हैं। यह देखकर फिर बोल उठे ऐ ख़िज़र! अगर आप चाहते तो इस दीवार की उजरत भी ले सकते थे मगर आपने मुफ़्त में काम कर दिया? हज़रत ख़िज़र बोले मूसा! बस अब मेरी और आपकी जुदाई है लेकिन जुदा होने से पहले इन बातों की हिकमत भी सुनते जाइए।

वह जो मैंने किश्ती को तोड़ दिया था उसकी हिकमत यह थी कि दरिया के दूसरे किनारे एक ज़ालिम वादशाह था जो हर सावुत किश्ती ज़बरदस्ती छीन लेता था मगर जिस किश्ती में कोई ऐब होता उसे नहीं छीनता था। किश्ती वाले को इस बात का इल्म नहीं था। अगर किश्ती का कुछ हिस्सा नहीं तोड़ता तो उस ग़रीब की सारी किश्ती छिन जाती।

और जो लड़का मैंने मार डाला उसकी हिकमत यह थी कि उसके माँ-बाप मुसलमान थे और यह लड़का बड़ा होकर काफ़िर निकलता और इसके माँ-बाप भी उसकी मुहब्बत में दीन से फिर जाते। तो मैंने इरादा कर लिया कि इसके माँ-बाप को अल्लाह तआला इससे बेहतर लड़का दें और मैंने मार डाला ताकि उसके माँ-बाप उसके फ़ित्ने से महफ़ूज़ रहें

और जो मैंने गाँव की गिरने वाली दीवार को सीधा कर दिया उसकी हिकमत यह थी कि वह दीवार गाँव के दो यतीम लड़कों की थी और उसके नीचे उसका ख़ज़ाना था और बाप उनका बड़ा नेक था। तो रव की यह मर्ज़ी थी कि दोनों वच्चे जवान हो जाएं और अपना ख़ज़ाना आप निकालें। यह थी उन बातों की हिकमत जो आपने देखीं।

(रूहुल बयान 5/16)

सवालः हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम से मूसा अलैहिस्सलाम की मुलाक़ात किस जगह हुई थी?

जवाबः मजमउल बहरैन में मजमउल बहरैन से मुराद वह जगह है जहाँ बहर फ़ारस मश्रिक़ी और बहरे रोम मग़रिबी मिलते हैं। यह जगह तन्जा के पास मग़रिब के शहरों के आख़िर में है। (इब्ने कसीर 5/21)

बाज़ ने कहा कि वह बहरे मुहीत है जहाँ दरिया उर्दुन और दरियाए कुलजुम मिलते हैं। (हाशिया 16 जलालैन 248)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम किस हाल में मिले?

जवाबः आप सब्ज़ गद्दी बिछाए चादर में लेटे हुए थे। इस तरह कि चादर का एक सिरा दोनों पैरों के नीचे दबा हुआ था और दूसरा सिरा सर तले। (इब्ने कसीर 15/21, ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 15/21)

सवालः दरिया के दूसरी जानिब किश्तियाँ छीनने वाले बादशाह का नाम क्या था?

जवाबः उस ज़ालिम बादशाह के नाम के बारे में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं:

1. उसका नाम "हलनबदी" था। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 16/1)
2. हदद बिन बदद नाम था।(अल अतक़ान फी उलूमुल क़ुरआन 2/18)
3. साहिब रूहुलमानी ने उसका नाम मफ़वाद बिन अल जलंद बिन सईदुल अज़दी बयान किया है। यह जज़ीरए उंदलुस में रहता था। (रूहुल मानी 16/10)
4. बाज़ ने उसका नाम जैसूद कहा है यह ग़स्सान का बादशाह था। (सावी 18)

यह बादशाह ऐस बिन इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की नस्ल से था। यही वह बादशाह है जिसने सबसे पहले दरिया में फ़साद किया जैसा कि ज़मीन पर सबसे पहले क़ाबील ने फ़साद किया।

(इब्ने कसीर 16/1, हाशिया 23, जलालैन 250)

सवालः हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम ने बादशाह के ख़ौफ़ से किश्ती के कितने तख़्ते उखाड़े थे और किस चीज़ से?

जवाबः आपने बसौले या कुल्हाड़ी से उस किश्ती के एक तख़्ते या दो तख़्तों को उखाड़ डाला लेकिन बावजूद इसके पानी किश्ती में न आया।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 15/21)

सवालः हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम ने जिस बच्चे को क़त्ल किया था उसका नाम क्या था?

जवाबः उस बच्चे का नाम जैसून या हैसून था।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/187)

दूसरी रिवायत के मुताबिक़ जैसोरिया जंतबूर था।

(रूहुल बयान 16/10)

उसके बाप का नाम काज़ेरा और माँ का नाम सहवा था।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/187, रूहुल मानी 16,10)

सवालः हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम ने जिन दो बच्चों के मकान की गिरती हुई दीवार को सीधी फ़रमाया था उनका नाम क्या था?

जवाबः उन दो बच्चों के नाम इसराम और सरीम थे। बाप का नाम शख़। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 16/1)

और माँ का नाम देना। (हाशिया 5, जलालैन 251)

सवालः हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम ने जिस दीवार को सीधा फ़रमाया था यह दीवार किस गाँव में थी?

जवाबः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि उस गाँव का नाम अंताकिया था। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 16/21)

बाज़ ने उस गाँव का नाम अबला कहा है। (इब्ने कसीर 16/1)

सवालः हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम ने जिस दीवार को सीधा फ़रमाया था उसकी लंबाई चौड़ाई और ऊँचाई कितनी थी?

जवाबः उस दीवार की बुलंदी सौ गज़, लंबाई पाँच सौ गज़ और चौड़ाई पचास गज़ थी। (हाशिया 13, जलालैन 250)

12. सवालः हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम ने जिस दीवार को सीधा फ़रामया था उसमें क्या क्या चीज़ें दफ़न थीं?

जवाबः तिर्मिज़ी शरीफ़ की हदीस में है कि उस दीवार के नीचे सोना चाँदी दफ़न था। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि उसमें एक सोने की तख़्ती थी जिसके एक तरफ़ लिखा थाः

उसका हाल अजीब है जिसे मौत का यक़ीन हो उसको ख़ुशी किस तरह होती है।

उसका हाल अजीब है जो क़ज़ा व क़द्र का यक़ीन रखे उसको ग़ुस्सा कैसे आता है।

उसका हाल अजीब है जिसे रिज़्क़ का यक़ीन हो वह क्यों मुश्किल में पड़ता है।

उसका हाल अजीब जिसे हिसाब का यक़ीन हो वह कैसे ग़ाफ़िल रहता है। उसका हाल अजीब है जिसको दुनिया के ज़वाल व इंक़लाब का यक़ीन हो वह कैसे मुतमइन होता है।

और इसके साथ लिखा थाः

لا الٰہ الا اللہ محمد رسول اللہ

और उस तख़्ती की दूसरी जानिब लिखा थाः

मैं अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं। मैं यकता हूँ मेरा कोई शरीक नहीं। मैंने ख़ैर व शर पैदा की। उसके लिए खुशी है जिसे मैंने ख़ैर के लिए पैदा किया और उसके हाथों पर ख़ैर जारी की। उसके लिए तबाही है जिसको शर के लिए पैदा किया और उसके हाथों पर शर जारी की। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 16/1)

○ ○ ○

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के बारे में सवाल और जवाब

सवालः हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बीच कितने साल का फ़ासला है?

जवाबः आपके और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बीच पाँच सौ उनहत्तर (569), दूसरी रिवायत के मुताबिक़ पाँच सौ उनास्सी (579) साल का फ़ासला है। (हाशिया 8, जलालैन 275)

सवालः हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का ज़माना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत से कितने साल पहले है?

जवाबः आपका ज़माना नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसललम की विलादत से एक हज़ार आठ सौ साल पहले है।(मआरिज नबुव्वत 2/22)

सवालः हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के वालिद और दादा का नाम क्या है?

जवाबः आपके वालिदे माजिद का नाम ऐशा और दादा मोहतरम का नाम औबद बिन बाअर है। (अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/178)

सवालः हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का सिलसिला नसब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम तक किन वास्तों से है?

जवाबः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम तक आपका सिलसिला नसब यूँ हैः दाऊद बिन ऐशा बिन औबद बिन बाअर बिन सलमून बिन यख़शून बिन अमी बिन यारब बिन राम बिन ख़ज़रून बिन फ़ारस बिन यहूदा बिन याक़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/178)

सवालः हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने जालूत को किस तरह क़त्ल किया?

जवाबः हज़रत शमवील अलैहिस्सलाम ने बिनयामीन बिन याकूब अलैहिस्सलाम के ख़ानदान से एक शख़्स तालूत को बनी इस्राईल का बादशाह चुना। तालूत ने बनी इस्राईल में से सत्तर हज़ार जवान चुने और जालूत से मुक़ाबले के लिए बैतुल मुक़द्दस रवाना हुए। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के वालिद हज़रत ऐशा भी तालूत के लश्कर में थे और उनके साथ तमाम बेटे भी। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम उनमें सबसे छोटे और बीमार थे। जब जालूत के साथ मुक़ाबला हुआ और जालूत ने बनी इस्राईल से अपना मुक़ाबिल तलब किया तो बनी इस्राईल उसकी क़ुव्वत व जसामत देखकर घबराए। क्योंकि वह बड़ा जाबिर, क़वी, शहज़ोर क़द्दावर था। तालूत ने अपने लश्कर में ऐलान किया कि जो शख़्स जालूत को क़त्ल करे मैं अपनी बेटी उसके निकाह में दूंगा और आधा मुल्क भी। किसी ने भी इस ऐलान का जवाब नहीं दिया। तो तालूत ने अपनी नबी हज़रत शमवील अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया, बारगाहे इलाही में दुआ करें। आपने दुआ कि तो बताया गया कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम जालूत को क़त्ल करेंगे। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने इसे क़ुबूल फ़रमाया और जालूत की तरफ़ रवाना हो गए। सफ़े क़ताल क़ायम हुई। आप दस्ते मुबारक में फ़लाखुन (पत्थर फेंकने का आला) लेकर मुक़ाबिल हुए। जालूत बावजूद निडर होने के डर गया। और उसके दिल में आपको देखकर दहशत पैदा हुई। मगर उसने बातें बहुत घंमड भरी कीं। और आख़िर वक़्त तक डींगे हांकता रहा। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने फ़लाख़ून में पत्थर रखकर पूरी क़ुव्वत के साथ फ़लाखुन को चक्कर दिया फिर निशाना बनाकर जालूत की पेशानी पर मारा। वह पत्थर क़हरे इलाही बनकर उसकी पेशानी को तोड़ता हुआ पीछे निकल गया। और जालूत वहीं ढेर हो गया। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने जालूत की लाश को लाकर तालूत के सामने डाल दिया। तमाम बनी इस्राईल खुश हुए। तालूत ने वादे के मुताबिक़ आधी सलतनत हज़रत दाऊद,अलैहिस्सलाम को दी और अपनी बेटी का निकाह भी आपके साथ कर दिया।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 2/आख़िरी रु०)

सवालः हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम सरीरे सलतनत पर कैसे बैठे

और कितने साल बरसरे इक़्तिदार रहे?

जवाबः तालूत की वफ़ात के बाद बनी इस्राईल ने तालूत के सारे ख़ज़ाने बखुशी आपके हवाले कर दिए। तमाम मुल्क पर आपकी सलतनत क़ायम हुई। सत्तर साल तक आप हुकूमत करते रहे। वाज़ेह रहे कि क़त्ले जालूत के बाद तालूत ने हस्बे वादा आधी सलतनत आपको दे दी थी। उसके चालीस साल बाद तालूत की वफ़ात हुई। (तफ़्सीर नईमी 2/556)

दूसरी रिवायत के मुताबिक़ चालीस साल तक आपकी हुक्मुरानी रही। (अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/178, अल कामिल फ़ि तारीख़ 1/88)

सवालः हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने ज़िरह बनाने का पेशा क्यों इख़्तियार किया?

जवाबः इसका सबब यह बयान किया गया है कि जब आप बनी इस्राईल के बादशाह चुने गए तो आपका काम का तरीक़ा यह था कि आप लोगों के हालात की जुस्तजू के लिए इस तरह निकलते कि लोग आपको न पहचाने। जब कोई मिलता और आपाको न पहचानता तो आप उससे पूछते कि दाऊद कैसा आदमी है? एक दिन अल्लाह तआला ने एक फ़रिश्ता इंसानी सूरत में भेजा। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने उससे भी हस्बे आदम यही सवाल किया कि दाऊद कैसा आदमी है? फ़रिश्ते ने कहा, दाऊद हैं तो बहुत अच्छे आदमी। काश! उनमें एक ख़सलत न होती। इस पर आप मुतवज्जेह हुए। और फ़रमाया, खुदा के बंदे वह कौन सी ख़सलत है? फ़रिश्ते ने कहा, वह अपना और अपने घरवालों का ख़र्च बैतुलमाल से लेते हैं। यह सुनकर आपके ख़्याल में आया कि अगर मैं बैतलुमाल से वज़ीफ़ा न लूँ तो बेहतर है। इसिलए आपने बारगाहे इलाही में दुआ की कि मेरे लिए कोई ऐसा सबब कर दें जिससे मैं अपने घरवालों का गुज़ारा करूं और बैतुलमाल से मुझे बेनियाज़ी हो जाए। आपकी दुआ क़ुबूल हुई और अल्लाह तआला ने आपके लिए लोहे को नरम किया। इस तरह कि लोहा आपके दस्ते मुबारक में आकर मोम या गुंधे हुए आटे की तरह हो जाता। आप जो चाहते बग़ैर आग के बग़ैर ठोके पीटे बना लेते। अल्लाह तआला ने ज़िरह बनाने का इल्म दिया। आप रोज़ाना ज़िरह बनाते थे।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 22/8, इब्ने कसीर 22/

सवालः हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम रोज़ाना कितनी ज़िरह बना करते थे?

जवाबः आप रोज़ाना एक ज़िरह बनाते थे।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 22/8, इब्ने कसीर 22/

सवालः हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की एक ज़िरह कितने बिकती थी?

जवाबः आपकी एक ज़िरह चार हज़ार में विकती थी।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 22/

दूसरी रिवायत के मुतबिक़ वह छः हज़ार में विकती थी। दो हज़ा अपने घरवालों पर ख़र्च फ़रमाते और चार हज़ार फ़क़ीर व मिस्कीन लोगं को खिलाने व पिलाने में ख़र्च करते थे। (इब्ने कसीर 22/

सवालः हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के निकाह में कितनी बीवियं थीं?

जवाबः आपकी निन्नानवें बीवियाँ थीं।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 23/11, तफ़्सीर नईमी 4/431

बक़ौल दीगर सौ बीवियाँ थीं।

(अल विदाया 2/15, हाशिया 6, जलालेन 205

सवालः हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के कितने बेटे थे?

जवाबः आपके उन्नीस वेटे थे।

(तफ़्सीर नईमी 4/462, अल विदाया 2/17

हज़रत जलालुद्दीन स्युती रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि आपके बारह बेटे थे। (अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/178

सवालः हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ज़बूर शरीफ़ कितनी आवाज़ों में तिलावत करते थे?

जवाबः आप ख़ुश इलहानी के साथ ज़बूर शरीफ़ को सत्तर आवाज़ों में तिलावत फ़रमाया करते थे। (अल विदाया 2/16

सवालः हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का इंतिक़ाल किस दिन हुआ?

जवाबः हज़रत हसन फ़रमाते हैं:
आपने बुध के दिन आलमे विसाल की तरफ़ कूच फ़रमाई।
और इमाम सुद्दी रहमतुल्लाह अलैहि का क़ौल है:
हफ़्ते के दिन आपने अपनी जान जान आफ़रीं के सुपुर्द की।

(अल विदाया 2/17)

सवालः हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के जनाज़े में कितने उलमा शरीक थे?

जवाबः आपके जनाज़े मुबारक के साथ चालीस हज़ार उलमा राहिबीन थे।

(अल विदाया 2/17)

सवालः हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की उम्र कितनी हुई?

जवाबः आपकी उम्र शरीफ़ सौ साल हुई।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/178)

○ ○ ○

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के बारे में सवाल और जवाब

सवालः हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का ज़माना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कितना पहले है?

जवाबः आपका ज़माना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत से सत्रह सौ साल (1700) पहले है। (हाशिया 8, जलालैन 275)

सवालः हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के वालिद और वालिदा का नाम क्या है?

जवाबः आपके वालिद हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम हैं और वालिदा मोहतरमा का नाम औरय्या है। (अल विदाया 2/15)

सवालः हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का सिलसिला नसब किन वास्तों से इब्राहीम अलैहिस्सलाम तक पहुँचता है?

जवाबः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम तक आपका सिलसिला नसब यूँ है:

सुलेमान बिन दाऊद बिन ईशान बिन औवद बिन वाइर बिन सलमून बिन बख़शून बिन अमी बिन यारब बिन ख़ज़रून बिन फ़ारस बिन यहूदा बिन याक़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम अलैहिमुस्सलाम।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/178)

सवालः हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की कितनी बीवियाँ थीं?

जवाबः आपकी एक हज़ार बीवियाँ थीं। (तफ़्सीर नईमी 4/43)

जिनमें तीन सौ कुँवारियाँ और सात सौ बाँदियाँ थीं।

(अल कामिल फ़ी तारीख़ 1/89)

दूसरा क़ौल यह है कि सात सौ बीवियाँ और तीन सौ बाँदियाँ थीं और तीसरा क़ौल यह है कि चार सौ औरतें और छः सौ बाँदियाँ थीं।

(अल विदाया 2/29)

इमाम सुद्दी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि आपकी सौ बीवियाँ थीं। (इब्ने कसीर 23/14)

सवालः हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को अपनी तमाम बीवियों में सबसे ज़्यादा एतिबार किस बीवी पर था?

जवाबः आपको अपनी तमाम बीवियों में से सबसे ज़्यादा एतिबार "जरादा" नामी बीवी पर था। जब आप जनबी होते या रफ़अ हाजत के लिए जाते तो अपनी अंगूठी उनको सौंप जाते। (इब्ने कसीर 23/8)

सवालः हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम कितनी उम्र में हुकूमत की गद्दी पर बैठे थे?

जवाबः आप तेरह साल की उम्र में तख़्ते सलतनत पर बैठे थे।
(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/178, ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 22/8)

एक रिवायत में बारह साल है। (मदारिज नबुव्वत 1/61)

सवालः हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के लश्कर को देखकर जिस चींटी ने कहा था, "ऐ चींटियो! अपने बिलों में घुस जाओ। कहीं सुलेमान और उनका लश्कर तुमको कुचल न दे।" उस चींटी का नाम क्या था?

जवाबः इस चींटी का नाम ताख़िया था। (शाने हबीबुर्रहमान 123)

हज़रत हसन फ़रमाते हैं कि उसका नाम "ख़रस" था। यह बनू शैसान के क़बीले से थी। (इब्ने कसीर 19/17)

एक क़ौल यह भी है कि इस चींटी का नाम "मंज़रा" या "ताहिया" था। (बैनस्सतूर जलालैन 318)

सवालः हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के साथ चींटियों का यह वक़िआ किस जगह पेश आया था?

जवाबः यह वाक़िआ शाम या ताएफ़ में से उस वादी मे पेश आया जहाँ चींटियाँ बकसरत थीं। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 19/17)

सवालः हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के बारे में बात करने वाली यह चींटी बनावट के लिहाज़ से कैसी थी?

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 19/17)

जवाबः वह चींटी लंगड़ी थी।

बाज़ कहते हैं कि यह चींटी मक्खियों की तरह परदार थी।

(अल अतक़ान फी उलूमुल क़ुरआन 3/183, इब्ने कसीर 19/17)

सवालः हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने चींटी की इस बात को कितनी दूरी से सुन लिया था?

जवाबः आपने चींटी की बात तीन मील दूर से ही सुन लिया था।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 19/17)

सवालः हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को उस चींटी ने क्या हदिया पेश किया था?

जवाबः उस चींटी ने आपको एक बेर बतौर हदिया पेश किया था।

(जमूल 3/368)

सवालः हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम से उस चींटी ने पूछा कि आपके वालिद का नाम दाऊद और आपका नाम सुलेमान क्यों रखा गया तो आपने क्या जवाब दिया?

जवाबः इस चींटी ने आपसे मालूम किया कि आपके वालिद मोहतरम हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का नाम दाऊद क्यों रखा गया? आपने फ़रमाया, मुझे मालूम नहीं। उसने जवाब दियाः (दावा यदावा मुदावा बमानी ईलाज करना) आपके अब्बा हुज़ूर ने अपने दिल का ईलाज किया। इसलिए दाऊद नाम हुआ। उस चींटी ने फिर पूछा, अच्छा यह बताइए कि आपका नाम सुलेमान क्यों रखा गया? फ़रमायाः मालूम नहीं। चींटी ने कहाः सुलेमान बमानी सलीम व सलामती वाले। आप सलीमुल क़ल्ब वस्सुदूर हैं इसलिए आपका नाम सुलेमान रखा गया।

(रूहुल मानी 19/179)

सवालः हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम और उल्लू के बीच जो सवाल व जवाब हुए थे उसकी तफ़सील क्या है?

जवाबः हज़रत सुलेमान और उल्लू के बीच बातचीत की तफ़्सील नीचे लिखी हैः

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप फ़रमाते हैं कि एक दिन उल्लू, हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। सलाम और जवाब के बाद बातचीत यूँ हुईः

हज़रत सुलेमानः ऐ उल्लू! तू खेत की चीज़ें क्यों नहीं खाता?

उल्लूः इसलिए कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम इसी की वजह से बहिश्ते बरीं से निकाले गए।

हज़रत सुलेमानः तू पानी क्यों नहीं पीता?

उल्लूः इसलिए कि नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम उसी में ग़र्क़ हुई थी।

हज़रत सुलेमानः तू आबादी में क्यों नहीं रहता?

उल्लूः इसलिए कि खंडरात और जंगल अल्लाह तआला की मीरास हैं। जैसा कि फ़रमाने खुदावंदी है:

अरबी 187

तर्जुमाः और कितने शहर हमने हलाक कर दिए जो अपनी ऐश पर उतर गए थे। तो यह हैं उनके मकान कि उनके बाद उनमें सकूनत न हुई मगर कम और हम ही वारिस हैं।

हज़रत सुलेमानः ऐ उल्लू! जब तू वीरान जंगलों में बैठता है तो क्या कहता है?

उल्लूः मैं उस वक़्त यह कहता हूँः ऐ इस बस्ती के रहने वालो! तुम्हारी खुश ऐशी कहाँ चली गई?

हज़रत सुलेमानः जब तू वीरान खंडरात से गुज़रता है तो क्या कहता है?

उल्लूः मैं उस वक़्त कहता हूँः बनी आदम के लिए अफ़सोस का मुक़ाम है। उन पर अज़ाब आ रहे हैं और वह उन अज़ाब व इक़ाब और सख़्तियों से ग़ाफ़िल होकर सोए हुए हैं।

हज़रत सुलेमानः ऐ उल्लू! तू दिन को नहीं निकलता, रात को क्यों निकलता है?

उल्लूः इसलिए कि दिन को औलादे आदम एक दूसरे पर ज़ुल्म ढाते हैं।

हज़रत सुलेमानः अच्छा तू मुझे बता कि जब तू बोलता है तो क्या कहता है?

उल्लूः मैं कहता हूँः ऐ ग़फ़लत की नींद सोने वालों आख़िरत के लिए कुछ तैयारी कर लो। और सफ़रे आख़िरत के लिए हर वक़्त तैयार रहो।

पाक है नूर पैदा करने वाली ज़ात।

इस बातचीत के बाद हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: बनी आदम के लिए उल्लू से ज़्यादा नसीहत और शफ़क्क़त करने वाला कोई परिन्दा नहीं। (हयातुल हैवान 2/651)

सवालः हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की उस हुदहुद का नाम क्या है जिसने मलका सबा बिल्क़ीस की ख़बर दी थी?

जवाबः उसका नाम "अन्फ़र" था। (इब्ने कसीर 15/15)

एक रिवायत में उसका नाम "अंबर" है। (इब्ने कसीर 19/17)

और एक रिवायत में "याफ़ूर।" (हाशिया 23, जलालैन 318)

सवालः बिल्क़ीस के बाप और माँ का नाम क्या था?

जवाबः उसके बाप का नाम "शराहील" और माँ का नाम "फ़ारिआ" था। इब्ने जरीह कहते हैं कि उसके बाप का नाम "ज़िशर्ख़" और माँ का नाम "बलता" था। (इब्ने कसीर 19/17)

एक क़ौल यह भी है कि बाप का नाम शराहील बिन मालिक बिन रय्यान और माँ का नाम क़ारिआ या रेहाना बिन्ते असकन।

(हाशिया 9, जलालैन 319)

सवालः बिल्क़ीस ने हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के पास बतौर इम्तिहान कौन कौन से तोहफ़े भेजे थे?

जवाबः जब बिल्क़ीस के पास हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का ख़त पहुँचा तो उन्होंने बतौर इम्तिहान कुछ तोहफ़े भेजे कि मालूम हो जाए कि हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम बादशाह हैं या नबी। क्योंकि बादशाह इज़्ज़त व एहतिराम के साथ हदिया क़ुबूल करते हैं। अगर वह बादशाह हैं तो हदिया क़ुबूल कर लेंगे और अगर नबी हैं तो क़ुबूल नहीं करेंगे। लिहाज़ा बिल्क़ीस ने पाँच सौ ग़ुलाम और पाँच सौ बांदियाँ बेहतरीन लिबास और ज़ेवरों के साथ आरासता करके उन्हें ऐसे घोड़ों पर बिठाया जिनकी काठियाँ सोने की और लगामें जवाहरात जड़ी थीं। पाँच सौ ईंटे सोने की और जवाहरात से सजा एक ताज और मुश्क व अंबर वग़ैरह एक ख़त अपने क़ासिद के साथ रवाना किया।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 19/18)

सवालः हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को जब हुदहुद ने यह इत्तिला दी कि बिल्क़ीस का क़ासिद तोहफ़े लेकर आने को है तो हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने क्या करने को फ़रमाया?

जवाबः जब बिल्क़ीस का क़ासिद तोहफ़े लेकर रवाना हुआ तो हुदहुद सुलेमानी यह सारा मंज़र देखकर चल दिया और हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को सारा क़िस्सा सुनाया। आपने हुक्म दिया कि सोने-चाँदी की ईंटे बनाकर नौ फ़रसख़ तक उन्हीं ईंटों की सड़क बना दी जाए और उसके इर्दगिर्द सोने-चाँदी से अहाते की बुलंद दीवार बना दी जाए। बहर व बर के ख़ूबसूरत जानवर और जिन्नात के बच्चे सड़क के दाएं बाएं हाज़िर किए जाएं। चुनाँचे आपके हुक्म की तालीम फ़ौरन की गई। सोने चाँदी की सड़क और दीवार बन गयीं। ख़ुश्की व तरी के ख़ूबसूरत जानवर भी हाज़िर कर दिए गए।

इधर बिल्क़ीस का क़ासिद अपने ख़्याल में बड़ा क़ीमती तोहफ़ा ला रहा था। मगर जब उसने सोने-चाँदी की बनी सड़क पर क़दम रखा और इर्दगिर्द सोने-चाँदी की दीवारें देखीं तो शर्म के मारे पानी पानी हो गया। और सोचने लगा कि मैं बिल्क़ीस का यह तोहफ़ा किस मुँह से हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में पेश करूं।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 19/18, रूहुल बयान)

सवालः तख़्त बिल्क़ीस किस चीज़ का बना हुआ था और उसकी लंबाई चौड़ाई कितनी थी?

जवाबः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि बिल्क़ीस का तख़्त सोने-चाँदी का बना हुआ था और बड़े बड़े क़ीमती जवाहरात से जड़ा हुआ था। उसकी लंबाई तीस-तीस गज़ और ऊँचाई तीस गज़ थी। हज़रत मक़ातिल फ़रमाते हैं कि उसकी ऊँचाई अस्सी हाथ थी। बाज़ ने कहा है कि उसकी लंबाई अस्सी हाथ, चौड़ाई चालीस हाथ और ऊँचाई तीस हाथ थी। (हयातुल हैवान 2/213, इब्ने कसीर 19/18)

सवालः बिल्क़ीस के वज़ीर व मुशीर और लश्कर की तादाद कितनी थी?

जवाबः बिल्क़ीस के वज़ीर मुशीर तीन सौ बारह थे। और हर एक के

(इब्ने कसीर 19/18)

मातहत बारह हज़ार जमिअत थी।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि उसके बारह हज़ार सिपाह सालार थे और हर एक सिपाहसालार के मातहत एक-एक लाख सिपाही।

(हाशिया 17, जलालैन 320)

सवालः उस जिन्न का क्या नाम था जिसने तख़्ते बिल्क़ीस को मज्लिस ख़त्म होने से पहले हाज़िर लाने का वादा किया था?

जवाबः इसके बारे में कई क़ौल हैं:

1. उस जिन्न का नाम कोज़न था।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/188)

2. बाज़ ने उसका नाम सख़र जनी।

3. बाज़ ने कोज़ा,

4. और बाज़ ने कोज़ान कहा है।

(हयातुल हैवान 2/212, हाशिया 21, जलालैन 320)

सवालः जिस जिन्न ने तख़्ते बिल्क़ीस को पलक झपकने से पहले लाने का दावा किया था उसका नाम क्या था?

जवाबः इसके तहत भी मुख़्तलिफ़ अक़वाल वारिद हैं:

1. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा का क़ौल हैः उसका नाम आसिफ़ बिन बरख़िया था जो हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के कातिब थे।

2. हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाह अलैहि कहते हैं: उसका नाम अस्तूम था।

3. बाज़ कहते हैं कि उसका नाम ज़ुन्नून था।

4. बाज़ तमलख़ा।

5. बाज़ बलख़ कहते हैं।

6. बाज़ यह भी कहते हैं कि वह जिब्राईल अलैहिस्सलाम थे।

7. एक क़ौल यह है कि वह जिब्राईल अलैहिस्सलाम के अलावा कोई और फ़रिश्ता था।

8. और एक क़ौल यह भी है कि वह ख़िज़र अलैहिस्सलाम थे।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/188, इब्ने कसीर 19/18)

सवालः उस वक़्त हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम और तख़्ते के बीच कितना फ़ासला था?

जवाबः उस वक़्त आप बैतुल मुक़द्दस में थे और तख़्ते बिल्क़ीस सबा में। दोनों मुक़ामों का दर्मियानी फ़ासला दो महीने की राह का था।

(हाशिया 19, जलालैन 320)

सवालः बिल्क़ीस का तख़्त कितनी चारदीवारियों के अंदर होता था?

जवाबः बिल्क़ीस ने एक मज़बूत घर बनवाया था जिस घर में दूसरा घर था। फिर दूसरे घर में तीसरा घर। फिर तीसरे में चौथा। इसी तरह फिर उसमें पाँचवाँ, पाँचवें में छठा और छठे में सातवाँ घर था। और उस सातवें घर में वह तख़्त तालाबंद था।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 19/18, हयातुल हैवान 2/213)

सवालः हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के हमराही लश्कर का फैलाओ कितना होता था?

जवाबः आपका लश्कर सौ फ़रसख़ मैदान में फैला हुआ था जिसमें पच्चीस फ़रसख़ में इंसान और पच्चीस में जिन्नात और पच्चीस फ़रसख़ में परिन्दे होते थे।

(हाशिया 15, जलालैन 318)

सवालः हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की अंगूठी में क्या लिखा हुआ था?

जवाबः हज़रत उबादा बिन सामत रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि आपकी अंगूठी में लिखा हुआ थाः انا للہ لا الہ الا انا محمد عبدی ورسولی

(कन्ज़ुल उम्माल 498)

सवालः हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के तख़्त पर कितनी कुर्सियाँ बिछाई जाती थीं?

जवाबः फ़र्शे सुलेमानी पर छः हज़ार कुर्सियाँ सोने-चाँदी की बिछाई जाती थीं। सोने की कुर्सियों पर अंबिया और चाँदी की कुर्सियों पर उलमा बैठते थे। फिर अवामुन्नास फिर जिन्नात और परिन्दे आपके सर पर साया करते थे और हवा उस तख़्त को वहाँ ले जाती जहाँ हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम हुक्म फ़रमाते थे। (रूहुल मानी 29/175)

एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ आठ हज़ार कुर्सियाँ बिछाई जाती थीं और चार हज़ार दाएं और चार हज़ार बाएं। (हाशिया 20, जलालैन 320)

सवालः हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम तख़्त पर बैठकर कितनी देर में कहाँ से कहाँ पहुँचते थे?

जवाबः आप सुबह को दमिश्क़ से रवाना होते तो दोपहर को क़ैलूला अस्तख़र में फ़रमाते जो मुल्के फ़ारस में है और दमिश्क़ से एक महीने की राह पर है। और शाम को अस्तख़र से रवाना होते तो शब को काबुल में आराम फ़रमाते। यह भी तेज़ सवार के लिए एक महीने की मुसाफ़त है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 22/8)

सवालः हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का विसाल किस हाल में हुआ और कितने दिनों के बाद जिन्नात को आपके विसाल का इल्म हुआ?

जवाबः आपका विसाल इस हाल में हुआ कि आप अपने आसा मुबारक से टेक लगाकर इबादते इलाही में मसरूफ़ थे। आपने ही इस तरह की मौत की दुआ बारगाहे इलाही में की थी कि मेरे इंतिक़ाल का हाल जिन्नात पर ज़ाहिर न हो ताकि इंसानों को मालूम हो जाए कि जिन्न ग़ैब नहीं जानते। दुआ के बाद आप महराब में दाख़िल हुए और हस्बे आदत अपने आसा पर टेक लगाकर खड़े हो गए। जिन्नात हस्बेदस्तूर अपनी ख़िदमतों में मशग़ूल रहे। और यह समझते रहे कि हज़रत ज़िंदा हैं कि हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का अरसा दराज़ तक इसी हालत पर रहना उनके लिए कुछ हैरत का बाइस न हुआ क्योंकि वे अक्सर देखते थे कि एक माह दो माह और इससे ज़्यादा अरसे तक आप इबादत में मशग़ूल रहते हैं। और आपकी नमाज़ बहुत दराज़ होती है। यहाँ तक कि आपकी वफ़ात के एक साल तक जिन्नात को आपकी वफ़ात की इत्तिला न हुई। ख़िदमत में मशग़ूल रहे यहाँ तक कि अल्लाह के हुक्म से दीमक ने आपका आसा खा लिया और आपका जिस्म मुबारक जो लाठी के सहारे से क़ायम था ज़मीन पर आ गया। उस वक़्त जिन्नात को आपकी वफ़ात का इल्म हुआ। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 22/8, जलालैन 360)

सवालः हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने कितने साल हुक्मुरानी

फ़रमाई?

जवाबः चालीस साल आपने हुक्मुरानी फ़रमाई।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 22/8, अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/178)

दूसरी रिवायत के मुताबिक़ आपने बीस साल हुकूमत की।

(अल बिदाया 2/32)

सवालः हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की उम्र शरीफ़ कितनी हुई?

जवाबः आपकी उम्र शरीफ़ तिरेप्पन साल हुई।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 22/8, अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/178)

एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ आपकी उम्र शरीफ़ उनसठ साल हुई।

(हाशिया 8, जलालैन 275)

सवालः वादी नम्ल से गुज़रते हुए हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम और चींटी के बीच जो बातचीत हुई उसकी तफ़्सील क्या है?

जवाबः हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का जब वादी नमूल में गुज़र हुआ तो एक चींटी ने कहा ऐ चींटियो! अपने अपने घरों में घुस रहो। कहीं हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम और उनके लश्कर वाले कुचल न डालें। फिर हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम और उस चींटी के बीच जो बातचीत हुई वह यह हैः

हज़रत सुलेमानः अस्सलामु अलैकुम!

चींटीः वअलइकुम अस्सलाम! ऐ फ़ानी और अपने मुल्के फ़ानी में मशग़ूल रहने वाले। ऐ सुलेमान! क्या आपका गुमान है कि आप ही हुक्म व मुमानिअत करते हैं। मैं एक ज़ईफ़ सी चींटी हूँ। मेरे चालीस हज़ार अफ़सर हैं और हर अफ़सर की मातहती में चींटियों की चालीस चालीस सफ़ें हैं। और हर सफ़ मश्रिक़ से लेकर मग़रिब तक चली गई है।

हज़रत सुलेमानः ऐ चींटी! तूने स्याह लिबास क्यों पहना है?

चींटीः इसलिए कि दुनिया दारे मुसीबत है और मुसीबत वालों का लिबास स्याह है।

हज़रत सुलेमानः तेरी कमर में कटे हुए का निशान कैसा है?

चींटीः यह अबूदियत के लिए ख़िदमत का पटका है।

हज़रत सुलेमानः तुम्हारी यह हालत है कि तुम ख़ल्क़ से दूर-दूर रहते हो?

चींटीः इसलिए कि वे ग़फ़लत में पड़े हुए हैं। उनसे दूरी ही अच्छी है।

हज़रत सुलेमानः तुम सब नंगे क्यों रहते हो?

चींटीः हम दुनिया में ऐसे ही आए हैं और ऐसे ही जाएंगे।

हज़रत सुलेमानः एक चींटी कितना उठा सकती है।

चींटीः एक दो दाने।

हज़रत सुलेमानः ऐसा क्यों?

चींटीः इसलिए कि हम मुसाफ़िर हैं और मुसाफ़िर का बार जितना हल्का हो उतना ही उसकी पुश्त हलकी रहती है।

हज़रत सुलेमानः तेरा नाम क्या है?

चींटीः मुन्ज़रा। मैं अपने साथियों को दुनिया के जादू से डराती हूं और उन्हें आख़िरत की रग़बत दिलाती हूँ।

चींटीः ऐ सुलेमान! जो कुछ आपको अपने मुल्क व सलतनत में मिला है उसमें सबसे अफ़ज़ल या क़ाबिले फ़ख़्र कौन सी शै है?

हज़रत सुलेमानः मेरी अंगूठी। क्योंकि वह जन्नत की है।

चींटीः आप इसके माने जानते हैं?

हज़रत सुलेमानः नहीं।

चींटीः इससे मुराद यह है कि ख़ुदा ने आपके क़ब्ज़े में इस अंगुश्तरी की मिक़्दार दुनिया अता की है।

चींटीः कुछ और भी है?

हज़रत सुलेमानः हाँ मेरा फ़र्श, वह भी जन्नत का है जो हवा पर उड़ता है।

चींटीः आप इसके माने जानते हैं?

हज़रत सुलेमानः नहीं।

चींटीः इससे इस अम्र पर तंबीह मक़सूद है कि जो कुछ आपके पास है हवा की तरह है। आज आपके पास है और कल न रहेगा।

हज़रत सुलेमानः उसकी सुवह की रफ़्तार एक माह की मुसाफ़त है और शाम की मुसाफ़त की रफ़्तार एक माह की मुसाफ़त है।

चींटीः इसमें यह इशारा है कि आपकी उम्र परवाज़ कर रही है और आप सैर में शताबकारी कर रहे हैं।

चींटीः ऐ सुलेमान! और भी कुछ है?

हज़रत **सुलेमानः** हाँ खुदा तआला ने मुझे परिन्दों की ज़बान तालीम की है।

चींटीः तो आप बजाए मुनाजाते खुदावंदी के परिन्दों की सरगोशियाँ सुनने में मशग़ूल रहते हैं।

चींटीः और भी कुछ है?

हज़रत **सुलेमानः** हाँ, परवरदिगारे आलम ने जिन्न व इन्स को मेरा ख़िदमतगुज़ार बनाया है।

चींटीः इसमें यह इशारा है कि खुदा की जानिब से फ़रमान सादिर होता है कि ख़ल्क़ तो आपकी ख़िदमत गुज़ारी में मशग़ूल है। लिहाज़ा आपको चाहिए कि आप मेरी ख़िदमत व ताअत की बजा आवरी में मशग़ूल हों।

चींटीः क्या और भी कुछ है?

हज़रत सुलेमानः नगीना अंगुश्तरी से मुझे उन्स हासिल होता है क्योंकि उसमें खुदा का नाम लिखा है।

चींटीः जब आप मुसम्मी के साथ मानूस हो जाएं तो आपका इस्म की उन्सियत से क्या सरोकार।

उसी वक़्त हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को उस चींटी और उसकी सुख़न तराज़ी से हैरत हुई। आप उसी हैरत अंगेज़ी की हालत में उससे रुख़्सत हुए और उसने अपनी राह ली। (नज़हतुल मजालिस 6/695, 596)

○ ○ ○

हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के बारे में सवाल व जवाब

सवालः हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के वालिद का नाम क्या है?

जवाबः बक़ौल इब्ने इस्हाक़ आपके वालिद मोहतरम का नाम अबीज़ है। जो क़ौमे बनी इस्राईल से थे और बक़ौल इब्ने जरीर आपके वालिद माजिद का नाम मौस है। (अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/178)

सवालः हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम का सिलसिला नसब किन वास्तों से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम तक पहुँचता है?

जवाबः आपके सिलसिले नसब में इख़्तिलाफ़ है। बक़ौल इब्ने जरीर आपका नसब अय्यूब बिन मौस बिन रूह बिन ऐस बिन इस्हाक़ अलैहिस्सलाम के ज़रिए हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह तक पहुँचता है।
(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/178)

सवालः हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के नाना का नाम क्या है?

जवाबः इब्ने असाकर ने बयान किया है कि आपके नाना हज़रत लूत अलैहिस्सलाम हैं। (अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/178)

सवालः हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम का ज़माना किस नबी के बाद और किस नबी से पहले है?

जवाबः बक़ौल इब्ने असाकर आपका ज़माना मूसा अलैहिस्सलाम से पहले है। बक़ौल इब्ने जरीर शुऐब अलैहिस्सलाम के बाद और बक़ौल इब्ने अबि ख़शीमा आपका ज़माना हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के बाद है। (अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/178)

सवालः जो शैतान हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के पीछे पड़ा हुआ था उसका नाम क्या है?

जवाबः उसका नाम "मसअत" था।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/188)

हज़रत नूफ़ कहते हैं कि उसका नाम "मबसूत" था।

(इब्ने कसीर 17/6)

सवालः हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम किस दिन इब्तिला में मुब्तला हुए?

जवाबः जवाबः आप बुध के दिन बीमारी में मुब्तला हुए थे।

(मिश्कात शरीफ़ 391)

वाक़िआ–

हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने हर तरह की नेमतें अता फ़रमाई थीं। हसीन सूरत भी, औलाद की कसरत और कसरते अमवाल भी। बारह बेटे, चार सौ ग़ुलाम, बाग़ात, हज़ारों ऊँट और हज़ारों बकरियाँ थीं। एक रोज़ जिब्राईल अमीन आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ कीः अय्यूब! मुद्दत गुज़र गई आप नाज़ व नेमत में गुज़ार रहे हैं। अब हुक्मे इलाही है कि आपकी हालत बदली जाए। नाज़ व नेमत, रंज व मेहनत से बदल ली जाए। मालदारी का बदला दरवेशी से हो, तंदरुस्ती रुख़्सत हो जाए, बीमारी ख़ेमा डाले। आपने फ़रमाया, कोई फ़िक्र नहीं। जिब्राईल अमीन जवाब सुनकर रुख़्सत हुए और हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम मेज़बान मेहमाने बला व मसाइब बनकर मुन्तज़िर रहे।

एक रोज़ शाम की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर महराब की तरफ़ पीठ फ़रमाकर हाज़िरीने जलसा का वाअज़ फ़रमा रहे थे कि अचानक आहो बुका की आवाज़ें आयीं। आप हैरान हुए। इतने में एक ग़ुलाम आया और रोकर कहने लगा, हुज़ूर दरिया का सैलाब आया और तमाम बकरियों को बहा ले गया। अभी आप जवाब देने न पाए थे कि दूसरा आया और रोकर पुकारा कि अचानक बादे समूम ने तमाम ऊँट हलाक कर दिए। यह सुन ही रहे थे कि बाग़ के मुहाफ़िज़ चीखते हुए और कपड़े फाड़ते हुए आ पुकारे कि हुज़ूर अभी अभी बिजली गिरी और तमाम पेड़ों को जला गई। आप यह सब वाक़िआत निहायत इत्मिनान से सुनते रहे और ज़बान मुबारक पर शुक्रे इलाही और तस्बीह व तह्लील जारी करते रहे कि इतने

में बेटे अतालीक़ सीना कूटता हुआ आया और चीख़ मारकर पुकारा: ऐ पैग़ंबरे खुदा! साहबज़ादे जो मेहमानी में गए थे अचानक साहिबेख़ाना की छत गिरी और सब उसमें दब गए। इसको सुनकर हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम कुछ बेचैन हुए मगर फ़ौरन सज्दे में गिर गए और हिम्मत करके फ़रमाया: कुछ परवाह नहीं अगर महबूब हक़ीक़ी की मुहब्बत दिल में है तो सब कुछ है।

जब माल व मनाल का यह हश्र हो चुका तो तरह तरह की बलाएं आपकी ज़ात के साथ मख़्सूस हुईं। आप बीमार हो गए। बदन पर आबले पड़ गए। जिस्म शरीफ़ ज़ख़्मों से भर गया। सब लोगों ने आपको छोड़ दिया सिवाए आपकी बीवी साहिबा कि वह आपकी ख़िदमत करती रहीं और यह हालत सालों साल रही।

आख़िर एक रोज़ हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से दुआ की तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि आप ज़मीन में पाँव मारिए। उन्होंने पाँव मारा तो एक चश्मा ज़ाहिर हुआ। हुक्म दिया गया इससे ग़ुस्ल कीजिए। ग़ुस्ल किया तो ज़ाहिर बदन की तमाम बीमारियाँ दूर हो गयीं। फिर आप चालीस क़दम चले और दोबारा ज़मीन पर पाँव मारने का हुक्म हुआ। आप ने पाँव मारा। उससे भी एक चश्मा जारी हुआ जिसका पानी निहायत ठंडा था। आपने अल्लाह के हुक्म से पिया तो उससे बातिन की तमाम बीमारियाँ दूर हो गयीं और आपको आला दर्जे की सेहत हासिल हुई।

हज़रत इब्ने मसऊद व इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुम और अक्सर मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने तमाम औलाद को ज़िंदा फ़रमा दिया और आपको इतनी ही औलाद और इनायत की। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की दूसरी रिवायत में है कि अल्लाह तआला ने आपकी बीवी साहिबा को दोबारा जवानी इनायत की और उनकी कसीर औलादें हुईं। फिर आपका तमाम हलाक शुदा माल व मवेशी और असबाब व समान भी आपको मिल गया बल्कि पहले जिस क़द्र माल व दौलत का ख़ज़ाना था उससे कहीं ज़्यादा मिल गया।

(अवराक़े ग़म 55 व अजाएबल क़ुरआन)

सवालः हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम की उम्र उस वक़्त कितनी थी जब आप आज़माइश में मुब्तला हुए थे?

जवाबः उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ सत्तर साल की थी।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/178)

सवालः हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम कितनी मुद्दत आज़माइश में मुब्तला रहे?

जवाबः मुख़्तलिफ़ रिवायातों के मुताबिक़ मुद्दते मर्ज़ तीन या सात या तेरह या अठ्ठारह साल थी।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/178, जलालनै 276)

तफ़्सीरे मज़हरी में सात साल सात माह सात दिन और सात घंटे हैं।

सवालः हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम की उन बीवी मोहरमा का क्या नाम है जो आज़माइश के दिनों आपकी ख़िदमत किया करती थीं?

जवाबः आपकी वह बीवी साहिबा हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की पोती थीं। उनका नाम रहमत बिन्ते अफ़राईम बिन यूसुफ़ या माहीर बिन मीशा बिन यूसुफ़ रज़ियल्लाहु अन्हा था। (हाशिया 3, जलालैन 276)

तफ़्सीर इब्ने कसीर में है कि वह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की बेटी रहमत रज़ियल्लाहु अन्हा थीं। (13/1 व हाशिया 4, जलालैन 199)

एक क़ौल यह भी है कि वह यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की बहन लिया बिन्ते याक़ूब अलैहिस्सलाम थीं। (हाशिया 13, जलालैन 383)

सवालः हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम की उम्र कितनी हुई?

जवाबः तिबरानी की रिवायत है कि आपकी उम्र शरीफ़ तिरानवे साल हुई।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/178)

○ ○ ○

हज़रत ज़करिया व याह्या अलैहिमस्सलाम के बारे में सवाल व जवाब

सवालः हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम उस वक़्त कितनी थी जब आपको विलादते फ़रज़ंद की यानी याह्या अलैहिस्सलाम की ख़ुशख़बरी दी गई।?

जवाबः उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ एक सौ बीस साल और आपकी बीवी मोहतरमा की उम्र अठ्ठानवे साल थी।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 3/12)

बाज़ ने आपकी उम्र बियानवे साल और बाज़ ने निन्नानवे साल कहा है। (अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/179)

सवालः हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम को बुढ़ापे की वजह से बेटे की विलादत का यक़ीन न हुआ तो आपने अल्लाह तआला से निशानी तलब की तो आपको क्या निशानी दी गई?

जवाबः उसकी निशानी यह बताई गई थी कि "सही सालिम होकर भी बग़ैर किसी बीमारी के और बग़ैर गूंगा होने के तीन दिन रात लोगों से बात न कर सकेंगे।"

चुनाँचे ऐसा ही हुआ कि इन दिनों में आप लोगों से कलाम करने पर क़ादिर न हुए और जब अल्लाह तआला का ज़िक्र करना चाहते तो ज़बान खुल जाती। यह एक अज़ीम मौजिज़ा है कि जिसमें जवारेह सही सालिम हों और ज़बान से तस्बीह तक़्दीस के कलिमात अदा होते रहें मगर लोगों के साथ बातचीत न हो सके। यह अलामत इसलिए मुक़र्रर की गई कि इस नेमते अज़ीमा के अदाए हक़ में ज़बान ज़िक्र व शुक्र के सिवा और किसी बात में मशग़ूल न हो। (हाशिया 12, जलालैन 254)

सवालः हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम को जब बेटे की ख़ुशख़बरी दी गई थी तो उसके कितने सालों बाद याह्या अलैहिस्सलाम की विलादत हुई?

जवाबः इस ख़बर बशारत के तेरह बरस बाद हज़रत याह्या अलैहिस्सलाम दुनिया में तशरीफ़ लाए। (हाशिया 12, जलालैन 254)

सवालः हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम क्या काम करके अपना गुज़ारा करते थे?

जवाबः सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि आप बढ़ई का पेशा करके अपना गुज़ारा करते थे। (इब्ने कसीर 16/4)

सवालः हज़रत याह्या अलैहिस्सलाम का नाम "याह्या" क्यों रखा गया?

जवाबः आप "याह्या" के नामसे इसलिए मौसूम हुए कि ख़ुदा वंद तआला ने आपको हयाते ईमानी अता फ़रमाई थी या इसलिए कि आपने अपनी ज़ईफ़ा माँ के रहम को ज़िंदा फ़रमाया दिया था कि वह शुरू ही से बांझ थीं मगर आपके साथ हामला होने से रहम मादर को हयाते तौलीद मिल गई या इसलिए आपका नाम याह्या रखा गया कि आपको शहीद होना था और शहीद ज़िंदा हुआ करता है।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/179)

सवालः हज़रत याह्या अलैहिस्सलाम की वालिदा का नाम क्या है?

जवाबः आपकी वालिदा मोहतरमा का नाम ऐशा बिन्ते फ़ाक़ूज़ा है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 3/12)

बाज़ ने अशया ओर बाज़ ने अशीअ कहा है।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/186)

सवालः हज़रत याह्या अलैहिस्सलाम के नाना का नाम क्या है?

जवाबः फ़ाक़ूज़ा। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 3/12, अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/186)

बाज़ ने इमरान कहा है। (हाशिया 20, ज़लालैन 276)

सवालः हज़रत याह्या अलैहिस्सलाम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम

से छोटे थे या बड़े?

जवाबः आप हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से उम्र में छः माह बड़े थे।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 3/12

सवालः हज़रत याह्या अलैहिस्सलाम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के रिश्ते में क्या लगते थे?

जवाबः आप, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की वालिदा हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा के ख़ालाज़ाद भाई थे। आपकी वालिदा ऐशाअ और मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा की वालिदा हिन्ना दोनों फ़ाक़ूज़ा की नेक बेटी थीं।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 3/12)

सवालः हज़रत याह्या अलैहिस्सलाम कितनी उम्र में नबुव्वत से सरफ़राज़ हुए थे?

जवाबः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि आपकी उम्र शरीफ़ तीन साल की थी कि अल्लाह तआला ने आपको अक़्ले कामिल अता फ़रमाई और आपकी तरफ़ "वही" की, नबुव्वत से सरफ़राज़ फ़रमाया।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 3/12)

सवालः हज़रत ज़करिया व याह्या अलैहिमस्सलाम की शहादत का वाक़िआ किस तरह है?

जवाबः आप दोनों बाप बेटे की शहादत का वाक़िआ यूँ हैः

उस ज़माने में जो बादशाह था उसकी बीवी पहले शौहर से एक लड़की हमराह लाई थी जो निहायत हसीन व जमील थी। क्योंकि वह खुद बुढ़िया हो चुकी थी अपनी असाइश का ख़्याल करते हुए उसने यह सोचा कि अगर बादशाह कोई बाहरी बीवी ले आया तो मेरी कुछ न चलेगी। लिहाज़ा अपनी लड़की उसके निकाह में दे दूं। बादशाह से इसका ज़िक्र किया। बादशाह ने हज़रत याह्या अलैहिस्सलाम से इसका मश्वरा किया। आपने फ़रमाया कि यह लड़की तुझ पर हराम है। इस वाक़िए की इत्तिला उर्स ज़ानिया फ़ाहिशा को पहुँची। सुनते ही उसने अपने दिल में हज़रत याह्या की तरफ़ से कीना पैदा किया और मौक़े की तलाश में रही।

एक रोज़ बादशाह नशे में चूर था। मौक़ा पाकर लड़की को सजा कर

उसके सामने पेश किया। बादशाह ने उसके जमाल बा कमाल पर दीवान होकर उसकी तरफ़ इरादा किया तो उस बदकार औरत ने फ़ौरन रोक दिया। और कहाः यह सूरत तुझे जब मिल सकती है जब तू याह्या को क़त्ल कर दे। इसलिए कि शेर वहा मेरी लड़की का सरे याहया है। बादशाह ने ख़्वाहिशे नफ़्सानी से क़त्ले याह्या अलैहिस्सलाम का हुक्म दे दिया। उलमाए वक़्त ने कहा यह बुरा काम है इससे बाज़ आओ। हज़रत याह्या के ख़ून का क़तरा जिस पर गिरेगा वहाँ घास न उगेगी। बादशाह ने हुक्म दिया कि सरे याह्या तश्त में रखा जाए और ख़ून किसी कुँए में डाल दिया जाए।

लिहाज़ा सिपाही हज़रत याह्या अलैहिस्सलाम को लेने को भेजे गए। एक आदमी ने जो मुक़र्रब बारगाहे शाही था अर्ज़ कीः हुज़ूर! याह्या के वालिद ज़करिया (अलैहिस्सलाम) मुस्तजबुद्दावात हैं, अव्वल उन्हें क़त्ल कीजिए ताकि बेटे के क़त्ल पर वह बद्दुआ न कर सकें। बादशाह ने इस बिना पर यह भी हुक्म दे दिया कि याह्या (अलैहिस्सलाम) के क़त्ल से पहले ज़करिया (अलैहिस्सलाम) क़त्ल कर दिए जाएं। शाही मुलाज़िम हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम की भी गिरफ़्तारी के लिए रवाना हुए। वहाँ आकर देखा तो बाप बेटे दोनों नमाज़ में मशग़ूल हैं। पहले इन बेदीनों ने ज़करिया अलैहिस्सलाम के पहलू से हज़रत याह्या अलैहिस्सलाम को खींचा और मश्कें कसीं। दूसरी जमाअत ने आपकी गिरफ़्तारी का क़स्द किया तो आप वहाँ से भागे मगर उस जमाअत ने आपका पीछा किया। हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम भागते भागते बेताक़त होकर एक पेड़ के साए में बैठे थे कि पीछा करने वाले नज़र आए। आपने उस पेड़ की तरफ़ इशारा फ़रमाया वह शक़ हो गया और हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम उसमें रूपोश हो गए। शैतान ने आपकी चादर मुबारक का एक कोना पेड़ से बाहर कर दिया। ज़करिया अलैहिस्सलाम के दुश्मन ढूंढते हुए जब यहाँ पहुँचे तो शैतान एक उम्र दराज़ बुज़ुर्ग की सूरत में नज़र आया और पूछा। उन्होंने कहाः इस हुलिए के आदमी की तलाश है।

उस मलऊन मतऊन ने अंजान बनकर कहा इस हुलिए के आदमी को

मैंने इस पेड़ में रूपोश होते हुए देखा है और चादर मुबारक का कोना दिखाया। उन्होंने शैतान से पूछा कि अब इस पेड़ से बाहर निकलने की क्या तदबीर है? शैतान ने कहाः बाहर निकालने की क्या ज़रूरत है? तुम्हारा मक़सद इसे हलाक करना है। लिहाज़ा इसकी हलाकत यूँ भी मुमकिन है और आरे की सूरत बताई और कहा कि इसके ज़रिए इस पेड़ के दो टुकड़े कर दो। लिहाज़ा यह ख़बीस इस राय को पसंद करके आरा लाए और पेड़ पर रखकर उसके दो परकाले करने लगे। आरा पेड़ काटते काटते ज़करिया अलैहिस्सलाम के सर मुबारक तक पहुँचा। आरा सर से चल गया और जस्दे मुबाक के दो परकाले हो गए मगर आपने आह तक न की।

इधर आप शहीद हुए उधर मासूम हस्ती हज़रत याह्या अलैहिस्सलाम बादशाह के महल में लाए गए। बारगाहे शाही से हुक्म हुआः ज़िंदा हमारे सामने पेश न करो बल्कि सर लाया जाए। उन संगीन दिलों ने जफ़ाकारी से याह्या अलैहिस्सलाम की बहालते मज़लूमी महल के बाहर शहीद कर डाला। सर मुबारक को तश्त में रखा और ख़ून कुँए में डाला। वह कुँआ जोश में आया और बादशाह को अल्लाह तआला ने बख़्त नसर बाबली या तरतूस रूमी के हाथों हलाक किया।

एक रिवायत यह भी है कि आपको दमिश्क़ के बादशाह हदा बिन हदाद की बीवी ने मस्जिदे जबरून में सज्दे की हालत में शहीद किया। दूसरी रिवायत के मुताबिक़ बैतुल मुक़द्दस में हैकले सुलेमानी और क़ुर्बानगाह के बीच जहाँ इससे पहले सत्तर अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम शहीद हुए आपको शहीद कराया। (ग़राएबुल क़ुरआन 75)

इब्ने असाकर ने "अल मुक्तज़ा फ़ी फ़ज़ाइलुल अक़्सा" में हज़रत याह्या अलैहिस्सलाम की शहादत का वाक़िआ इस तरह तहरीर फ़रमाया है कि दमिश्क़ के बादशाह हदा बिन हदार ने अपनी बीवी को तीन तलाक़ें दे दी थीं। फिर वह चाहता था कि बग़ैर हलाले उसको वापस करके अपनी बीवी बना ले। उसने हज़रत याह्या अलैहिस्सलाम से फ़तवा तलब किया तो आपने फ़रमाया कि वह अब तुझ पर हराम हो चुकी है। उसकी बीवी को यह बात सख़्त नागवार गुज़री और हज़रत याह्या अलैहिस्सलाम के

क़त्ल पर अड़ गई। चुनाँचे उसने बादशाह को मजबूर करके क़त्ल की इजाज़त हासिल कर ली और जब हज़रत याह्या अलैहिस्सलाम मस्जिदे जबरून में नमाज़ पढ़ रहे थे, सज्दे की हालत में आपको क़त्ल करा दिया और एक तश्त में आपका सर मुबारक अपने सामने मंगवाया मगर कटा हुआ सर इस हालत में भी यही कहता रहा कि "तू बग़ैर हलाला कराए बादशाह के लिए हलाल नहीं।" और इसी हालत में उस पर ख़ुदा का अज़ाब नाज़िल हो गया कि वह औरत सर मुबारक के साथ ज़मीन में धंस गई। यहूदियों ने जब हज़रत याह्या अलैहिस्सलाम को क़त्ल कर दिया तो फिर ये लोग हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम की तरफ़ मुतवज्जेह हुए कि उनको भी शहीद कर दें मगर जब हज़रत जकरिया अलैहिस्सलाम ने यह देखा तो वहाँ से हट गए और पेड़ के शगाफ़ में रूपोश हो गए। ज़ालिम यहूदियों ने पेड़ के साथ आपके भी दो टुकड़े कर दिए।

(अल बिदाया वन्निहाया 2/55, तारीख़ इब्ने कसीर 2/52, हवाला ग़राइबुल क़ुरआन 74)

सवालः हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम को जिस आरे से ज़िब्ह किया गया था उसके कितने दंदाने थे?

जवाबः वह एक हज़ार दंदाने वाला आरा था।

(मलफ़ूज़ात ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैहि 148)

सवालः हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम कहाँ दफ़न हैं?

जवाबः सनतुतिया नाइलूस में। (नज़हतुल मजालिस 6/13)

○ ○ ○

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में सवाल और जवाब

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बीच कितने सालों का फ़ासला है?

जवाबः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और आपके बीच तक़रीबन दो हज़ार तीन सौ (2300) साल का फ़ासला है। (तफ़्सीर नईमी 1/810)

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का ज़माना हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम कि कितने साल बाद है?

जवाबः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और आपके बीच एक हज़ार नौ सौ पिच्हत्तर (1975) साल का फ़ासला है। (हाशिया 33, 51)

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बीच कितने पैग़ंबर मबऊस हुए?

जवाबः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और आपके बीच चार हज़ार पैग़ंबर गुज़रे। और सबके सब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की शरिअत के मुहाफ़िज और उसके मुहाफ़िज़ और उसके अहकाम को जारी करने वाले थे। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 1/11)

एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ उन पैग़ंबरों की तादाद सत्तर हज़ार है। (हाशिया 31, जलालैन 13)

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम शिकमे मादर में कितने अरसा रहे?

जवाबः इस ताल्लुक़ से अइम्मा तफ़्सीर व मौर्रिख़ीन रहमतुल्लाह अलैहि इख़्तिलाफ़ रखते हैं:

1. आप माँ के पेट में एक साअत रहे।
2. तीन साअत।
3. छः माह।
4. आठ माह।

5. और नौ माह की रिवायतें भी हैं।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/179)

एक क़ौल सात माह का भी है। (हाशिया 17, जलालैन 255)

और आप अपनी माँ की नाफ़ से पैदा हुए थे।

(नज़्हतुल मजालिस 12/41)

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के नाना और नानी साहिबा के नाम क्या हैं?

जवाबः आपके नाना का नाम इमरान बिन मासान और नानी साहिबा का नाम हिना बिन्ते फ़ाक़ूज़ा है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 3/12)

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की जाए पैदाइश कहाँ हैं?

जवाबः आप "बैतुल हम" में पैदा हुए जो बैतुल मुक़द्दस से आठ मील के फ़ासले पर एक बस्ती है। एक रिवायत में यही भी है कि आपकी पैदाइश की जगह बैतुल मुक़द्दस की मश्रिक़ी जानिब का एक हुजरा है।

(इब्ने कसीर 16/5)

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की उम्र उस वक़्त कितनी थी जब आपने आग़ोशे मादर में लोगों से कलाम फ़रमाया था?

जवाबः उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ चालीस दिन की या एक दिन की थी। (हाशिया 31, जलालैन 255)

वाक़िआ–

जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की विलादत हुई तो अल्लाह तआला ने हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमायाः जब कोई शख़्स तुझसे मामला पूछे तो खुद कुछ मत कहना बल्कि इसी बच्चे की तरफ़ इशारा कर देना। लिहाज़ा हज़रम मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपने बच्चे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को गोद में लेकर अपनी क़ौम के पास आयीं तो लोगों ने यह अजीब बात देखकर कि कुँवारी मरियम की गोद में बच्चा है कहाः ऐ मरियम! तूने यह अच्छा काम नहीं किया। तेरे माँ-वाप तो ऐसे न थे। अफ़सोस तूने बहुत बुरी बात की। हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा ने बच्चे की तरफ़ इशारा करके कहाः मुझसे कुछ न कहो। अगर कुछ कहना है तो इससे कहो। लोग यह बात सुनकर और भी गुस्से में

आए और बोलेः हम इस दूध पीते बच्चे से कैसे बात करें?

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने दूध पीना छोड़ दिया और अपने बाएं हाथ पर टेक लगाकर कौम की तरफ़ मुख़ातिब होकर फ़रमाने लगे:

सुनो! मैं अल्लाह का बंदा हूँ, अल्लाह ने मुझे किताब दी है और नबी बनाया है और मुबारक किया है चाहे मैं कहीं भी हूँ और अल्लाह तआला ने मुझे नमाज़ ज़कात की ताकीद फ़रमाई है और मुझे अपनी माँ के साथ नेक सलूक करने वाला बनाया है और बदबख़्त नहीं बनाया।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की इस शहादत से लोग हैरान और ख़ामोश हो गए। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 16)

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने वाला पहला शख़्स कौन है?

जवाबः आप पर ईमान लाने में पहल करने वाले हबीब नज्जार हैं जिनको काफ़िरों ने पत्थर मार मारकर शहीद कर दिया था।

(इब्ने कसीर 23/1 व 27,14)

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की विलादत से पहले आप पर ईमान लाने वाले फ़र्द का नाम क्या है?

जवाबः वह हज़रत याह्या अलैहिस्सलाम हैं जो आपसे उम्र में छः माह बड़े थे। हज़रत याह्या अलैहिस्सलाम की वालिदा हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा से मिलीं और उन्हें अपने हामला होने की इत्तिला दी। हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमायाः मैं भी हामला हूँ। हज़रत याह्या अलैहिस्सलाम की वालिदा ने कहा, ऐ मरियम! मुझे मालूम होता है कि मेरे पेट का बच्चा तुम्हारे पेट के बच्चे को सज्दा करता है। लिहाज़ा विलादत से पहले आप पर ईमान लाने वाले और आपकी तस्दीक़ करने वाले हज़रत याह्या अलैहिस्सलाम हैं। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 3/12)

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हव्वारियों की तादाद कितनी थी और उनके नाम क्या हैं?

जवाबः हव्वारी वह मुख़्लिस और ईमानदार बंदे थे जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के लाए हुए दीन (दीने इस्लाम) के मददगार और राहे हक़

पर पूरी तरह गामज़न थे। यह बार शख़्स थे उनके नाम इस तरह हैं:

1. शमऊन यानी बतरस,
2. अंदरयास,
3. याक़ूब बिन ज़ैदी,
4. यूहन्ना,
5. फ़लीस,
6. बर्तलमानी,
7. तौमा,
8. मिना याक़ूब इब्ने हलफ़ी,
9. तज़्ज़ी
10. अशमऊल,
11. क़नानी,
12. यहूदा असकरपोती।

एक दूसरे क़ौल के मुताबिक़ उनके नाम यूँ हैं:

1. फ़रतूस,
2. बाक़ूबस,
3. रहदा यनजस,
4. अंदार इब्लीस,
5. फ़ेलबस,
6. इब्ने यलमक,
7. मंशा,
8. तूमास,
9. याक़ूब बिन हलक़ाया,
10. नदावसीस,
11. क़तबया,
12. लियोदस

बाज़ कहते हैं कि वह तेरह हज़रात थे और तेरहवें का नाम "सरजस" था। और बाज़ कहते हैं कि वह "सतरह" थे। (इब्ने कसीर 6/2)

सवाल: हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने वालों को नसारा क्यों कहा जाता है?

जवाब: इसलिए कि आपकी वालिदा माजिदा हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा ने जिस गाँव में रहना शुरू किया उसका नाम नासरा था। इसी गाँव से आपने तबलीग़े दीन शुरू की। उस गाँव की तरफ़ निस्बत करते हुए आपकी जमाअत को नसारा कहा जाने लगा।

(अल कामिल फ़ी तारीख़ 1/124, मदारिज नबुव्वत 1/191)

सवाल: हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से जब लोगों ने यह मौजिज़ा तलब किया कि मिट्टी का परिन्दा बनाकर हवा में उड़ा दीजिए तो आपने कौन सा परिन्दा उड़ाया?

जवाब: आपने मिट्टी से चमगादड़ की सूरत बनाई। फिर उसमें फूंक मारी तो वह उड़ने लगी। चमगादड़ की यह खुसूसियत है कि उड़ने वाले जानवरों में बहुत अकमल है और अजीब तर है। और क़ुदरत पर दलालत

करने में औरों से अवलवग़ क्योंकि वह वग़ैर परों के उड़ती है, दांत रखती है और हंसती भी है। उसकी मादा की छाती होती है और वह बच्चा भी जनती है बावजूद यह कि उड़ने वाले जानवरों में ये बातें नहीं हैं।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 3/13)

वह चमगादड़ एक दिन रात तक ज़िंदा रही।(हाशिया 26, जलालैन 51)

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने कितने मुर्दों को ज़िंदा फ़रमाया?

जवाबः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने चार शख़्सों को ज़िंदा कियाः

1. आज़र नामी शख़्स को जो आपका मुख़्लिस था। जब उसकी हालत नाज़ुक हुई तो उसकी बहन ने आपको इत्तिला दी मगर वह आपसे तीन रोज़ की दूरी पर था। जब आप तीन रोज़ में वहाँ पहुँचे तो मालूम हुआ कि उसके इंतिक़ाल को तीन रोज़ हो चुके हैं। आपने उसकी बहन से फ़रमायाः हमें उसकी क़ब्र पर ले चलो। वह ले गई। आपने अल्लाह तआला से दुआ फ़रमाई। आज़र अल्लाह के हुक्म से ज़िंदा होकर क़ब्र से बाहर आया।

2. एक बुढ़िया का लड़का जिसका जनाज़ा आपके साथ जा रहा था। आपने उसके लिए दुआ की वह ज़िंदा होकर लाश उठाने वालों के कंधों से उतर पड़ा और कपड़े पहनकर घर आया।

3. एक आशर (चुंगी वसूल करने वाले) की लड़की, शाम को मरी, अल्लाह तआला ने आपकी दुआ से उसको ज़िंदा फ़रमाया।

4. साम बिन नूह अलैहिस्सलाम। जिनकी वफ़ात को हज़ारों साल गुज़र चुके थे। लोगों ने ख़्वाहिश की कि आप इनको ज़िंदा करें। आप लोगों की निशानदिही से उनकी क़ब्र पर पहुँचे और अल्लाह तआला से दुआ की। साम ने सुना कोई कहने वाला कहता हैः जब रूहुल्लाह। यह सुनते ही वह मरऊब और ख़ौफ़ज़दा उठ खड़े हुए और उन्हें गुमान हुआ कि क़यामत क़ायम हो गई। इस हौल से उनका निस्फ़ सर सफ़ेद हो गया था।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 3/13)

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने जिन मुर्दों को ज़िंदा

फ़रमाया वे कितने दिनों तक ज़िंदा रहे?

जवाबः साम बिन नूह अलैहिस्सलाम के अलावा कि उन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ की कि दोबारा उन्हें सकराते मौत की तकलीफ़ न हो। बग़ैर इसके वापस किया जाए। चुनाँचे उसी वक़्त इंतिक़ाल हो गया। बाक़ी तीन हज़रात ज़िंदा होने के बाद लंबे अरसे तक ज़िंदा रहे। शादी भी हुई और बच्चे भी हुए। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 3/13)

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हव्वारियों के लिए आसमान से जो दस्तरख़्वान नाज़िल होता था उसमें कितने क़िस्म का खाना होता था?

जवाबः इस बारे में मुख़्तलिफ़ क़ौल वारिद हुए हैं:

1. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं: उसमें सात मछलियाँ और सात रोटियाँ होती।

   (जलालैन 111, इब्ने कसीर 7/5)

2. इसमें बग़ैर कांटे की तली हुई एक मछली होती थी और हर क़िस्म की सब्ज़ियाँ सिवाए मूली के। उसके सर की तरफ़ और दुम की तरफ़ नमक होता था। सब्ज़ियों के अतराफ़ पाँच रोटियाँ होती थीं जिनमें से एक पर घी, दूसरी पर ज़ैतून, तीसरी पर शहद, चौथी पर पनीर और पाँचवीं पर क़ीमाशुदा गोश्त होता था।

   (इब्ने कसीर 7/5, हाशिया 5, जलालैन 111)

3. हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियलल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः उसमें रोटी और गोश्त होता था। (इब्ने कसीर 7/5, जलालैन 111)

4. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ उसमें रोटी और गोश्त के अलावा हर चीज़ होती थी।

5. हज़रत सईद बिन जुबैर रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि बकरी के गोश्त के सिवा हर चीज़ होती थी। (इब्ने कसीर 7/5)

रोटियों के बारे में हज़रत इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह कहते हैं कि वह जौ की रोटियाँ होती थीं। और हज़रत इकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल है

कि वह चावल की रोटियाँ होती थीं। (इब्ने कसीर 7/5)

वाक़िआ

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हव्वारियों ने अर्ज़ किया कि ऐ ईसा! क्या आपका रब यह कर सकता है कि वह आसमान से हमारे पास एक दस्तरख़्वान उतार दे। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः इस तरह की निशानियाँ तलब करने से अगर तुम मोमिन हो तो खुदा से डरो। यह सुनकर हव्वारियों ने कहा कि हम निशानी तलब करने के लिए यह सवाल नहीं कर रहे हैं बल्कि हमारा मक़सद यह है कि हम पेट भरकर ख़ूब खाएं और हमको अच्छी तरह आपकी सदाक़त का इल्म हो जाए ताकि हमारे दिलों को क़रार आ जाए और हम इस बात के गवाह बन जाएं ताकि बनी इस्राईल को हमारी शहादत का यक़ीन और पूरा इत्मिनान हासिल हो जाए। मोमिनीन का यक़ीन और बढ़ जाए और कुफ़्फ़ार ईमान लाएं। हव्वारियों के यह अर्ज़ करने पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने उन्हें तीस रोज़े रखने का हुक्म दिया और फ़रमाया जब तुम इन रोज़ों से फ़ारिग़ हो जाओगे तो अल्लाह तआला से जो दुआ करोगे क़ुबूल होगी। उन्होंने रोज़े रखकर दस्तरख़्वान उतरने की दुआ की। उस वक़्त हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने गुस्ल फ़रमाया, मोटा लिबास पहना, दो रक्अत नमाज़ अदा की, सर झुकाया और रोकर दस्तरख़्वान उतारने की दुआ की। लिहाज़ा अल्लाह तआला के हुक्म से कुछ फ़रिश्ते एक दस्तरख़्वान लेकर आसमान से उतरे। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान व जमल 7)

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हव्वारियों के लिए आसमान से उतरने वाले दस्तरख़्वान का रंग कैसा था?

जवाबः हज़रत वहब और सलमान ख़ैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि इस दस्तरख़्वान का रंग सुर्ख़ था। (इब्ने कसीर 7/5)

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हव्वारियों के लिए नाज़िल होने वाला खाना जन्नती था या दुनियावी?

जवाबः हव्वारियों के सरदार शमऊन ने पूछाः या रूहुल्लाह! यह दुनिया का खाना है या जन्नत का? हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः न यह दुनिया का खाना है और न जन्नत का बल्कि अल्लाह

तआला ने इन दोनों के अलावा अपनी क़ुदरत कामिला से तैयार कराकर भेजा है। (इब्ने कसीर 7/5, हाशिया 5, जलालैन 111)

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल होने वाला खाना कितने आदमी खाया करते थे?

जवाबः इसको रोज़ाना चार हज़ार आदमी खाते थे।

(इब्ने कसीर 7/5)

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर दस्तरख़्वान कितने दिनों तक नाज़िल होता रहा?

जवाबः यह चालीस दिनों तक नाज़िल होता रहा। (इब्ने कसीर 7/5)

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की क़ौम के जिन लोगों को ख़िन्ज़ीर बना दिया गया था उनकी तादाद कितनी थी?

जवाबः उनकी तादाद तीन सौ तीस थी। ये लोग ख़िन्ज़ीर बनाए जाने के बाद सिर्फ़ तीन दिनों तक ज़िंदा रहे। बाज़ ने कहा कि चार दिन तक ज़िंदा रहेऔर बाज़ ने कहा है कि सात दिन तक ज़िंदा रहे फिर मर गए।

(हाशिया 4, जलालैन 111)

वाक़िआ

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने जब अल्लाह तआला से दस्तरख़्वान नाज़िल फ़रमाने की दुआ की थी तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया था कि मैं दस्तरख़्वान तो उतार दूंगा लेकिन उसके बाद बनी इस्राईल में जो कुफ़्र करेगा मैं उसको अज़ाब दूंगा। चुनाँचे जब दस्तरख़्वान नाज़िल हुआ तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल को हुक्म दिया कि ख़ूब पेट भरकर खाओ और ख़बरदार इसमें किसी क़िस्म की ख़्यानत न करना और कल के लिए ज़ख़ीरा बनाकर न रखनां मगर बनी इस्राईल ने इसमें ख़्यानत कर डाली और कल के लिए ज़ख़ीरा बनाकर भी रख लिया। इस नाफ़रमानी की वजह से अल्लाह तआला का उन लोगों पर यह अज़ाब आया कि ये लोग रात को सोए तो अच्छे ख़ासे थे मगर सुबह को उठे तो सूरतें मसख़ करके ख़िन्ज़ीर बना दिए गए। फिर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने उन लोगों की मौत के लिए दुआ मांगी तो ये लोग मरकर दुनिया से नेस्त व नाबूद हो गए और किसी को भी यह मालूम नहीं हुआ कि उनकी

लाशों को ज़मीन निगल गई या अल्लाह तआला ने उनको क्या कर दिया। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 7, अजाइबुल क़ुरआन 102)

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की गिरफ़्तारी का हुक्म जारी करने वाले बादशाह का नाम क्या था?

जवाबः उस बादशाह का नाम दाऊद था। (इब्ने कसीर 6/2)

सवालः उस आदमी का नाम क्या है जिसे लोगों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम समझकर सूली दे दी थी?

जवाबः उस शख़्स का नाम तेतानूस था। (हाशिया 9, जलालैन 52)

एक रिवायत यह भी है कि जब लोगों ने आपके घर का घेराव कर रखा था तो आपने महसूस किया कि ये लोग तो मकान में घुसकर आपको गिरफ़्तार कर लेंगे या फिर खुद आपको बाहर निकलना पड़ेगा। उस वक़्त आपने अपने हव्वारियों से फ़रमायाः तुममें से कौन इस बात को पसंद करता है कि उस पर मेरी मुशाबिहत डाल दी जाए और इनके हाथों गिरफ़्तार हो ताकि मुझे खुदा तआला निजात दे। मैं उसके लिए जन्नत का ज़ामिन हूं। इसको सुनकर सरजस नामी मोमिन सादिक़ जो सरफ़रोश था उन्होंने खुद को हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की बशारत पर सूली चढ़ाया जाना मंज़ूर किया। (इब्ने कसीर 6/2)

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम किस रात को आसमान में उठा लिए गए?

जवाबः क़द्र की रात को। (तफ़्सीर नईमी 3/537, जलालैन 52)

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की उम्र उस वक़्त कितनी थी जब आप आसमान में उठा लिए गए?

जवाबः उस वक़्त आपकी उम्र तैंतीस साल की थी।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 1/1, अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/179)

दूसरी रिवायत के मुताबिक़ उस वक़्त आपकी उम्र एक सौ बीस साल की थी। (हाशिया 16, जलालैन 51)

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान दुनिया में किस जगह उतरेंगे और किस वक़्त?

जवाबः आप जामा मस्जिद दमिश्क़ की मशिरक़ी सिम्त सफ़ेद मीनार

से उतरेंगे। उस वक़्त फ़ज्र की इक़ामत हो चुकी होगी। आप हज़रत इमाम महदी को इमामत के लिए आगे बढ़ाएंगे। (बहारे शरिअत 1/23)

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम दज्जाल को किस जगह क़त्ल करेंगे?

जवाबः आप दज्जाल को "बाबुल्लाह" में क़त्ल करेंगे जो बैतुल मुक़द्दस के क़रीब एक बस्ती है।

(इब्ने कसीर 17/7)

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम दुनिया में तशरीफ़ लाएंगे तो क्या आप निकाह भी फ़रमाएंगे या नहीं?

जवाबः हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने कहा है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम दुनिया में तशरीफ़ लाएंगे तो निकाह भी करेंगे और साहिबे औलाद भी होंगे।

(हाशिया 12, जलालैन 52)

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम दुनिया में कितने साल क़याम फ़रमाएंगे?

जवाबः इस बारे में तीन रिवायतें हैं:

1. सात साल क़याम फ़रमाएंगे।

(हदीस मुस्लिम शरीफ़ बहवाला जलालैन 52)

2. चालीस साल क़याम फ़रमाएंगे।

(हदीस अबि दाऊद बहवाले जलालैन 52)

3. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि रसूले काएनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पैंतालीस साल दुनिया में क़याम फ़रमाएंगे।

(हाशिया 12, जलालैन 52, मिश्कात 2/480)

सवालः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के विसाल के कितने दिनों बाद सूर फूंका जाएगा?

जवाबः आपके विसाल के एक सौ बीस साल बाद सूरे ऊला फूंका जाएगा। लेकिन यह एक सौ बीस साल का साल महीने बराबर, महीना हफ़्ते बराबर हफ़्ता दिन के और दिन घंटे के बराबर होंगे। इस हिसाब से यह मुद्दत सिर्फ़ बारह साल होगी। (हाशिया 8, जलालैन 277)

हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में सवाल और जवाब

सवालः हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा के वालिद और वालिदा का नाम क्या है?

जवाबः आपके वालिद का नाम इमरान और वालिदा साहिबा का नाम हिना है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 3/12

सवालः हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा के नाना और दादा का नाम क्या है?

जवाबः आपके दादा मोहतरम का नाम मासान और नाना जान का नाम फ़ाक़ूज़ा है।

दूसरी रिवायत के मुताबिक़ आपके दादा मोहतरम का नाम याशम है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 3/12

सवालः हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा का सिलसिला नसब दाऊद अलैहिस्सलाम तक कितने वास्तों से पहुँचता है?

जवाबः हज़रत मरियम दाऊद अलैहिस्सलाम तक आपका सिलसिला नसब इस तरह हैः

मरियम बिन्त इमरान बिन याशम बिन मीशा बिन हज़क़िया बिन इब्राहीम बिन अराया बिन नावश बिन अजर बिन बहवा बिन नाज़िम बिन मक़ासित बिन ईशा बिन अयाज़ बिन रख़ईम बिन सुलेमान बिन दाऊद अलैहिस्सलमुस्सलाम। (इब्ने कसीर 3/1

सवालः हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा ने किस किस औरत का दूध पिया?

जवाबः आपने किसी भी औरत का दूध नहीं पिया। आपके लिए बेफ़सल जन्नत से मेवे उतरते थे। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 3/12

सवालः हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा एक दिन में कितना बढ़ती थीं?

जवाबः आप एक दिन में इतना बढ़ती थीं जितना और बच्चे एक साल में।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 3/12)

सवालः हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा किस तरह हामला हुई?

जवाबः हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने आपके गिरेबान में या आस्तीन में या दामन में या मुँह में दम किया और अल्लाह की क़ुदरत से उसी वक़्त हामला हो गयीं।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 16/5)

सवालः हमल के वक़्त हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा कितने साल की थीं?

जवाबः उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ा तेरह या दस साल की थी।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 16/5)

बाज़ ने पंद्रह साल भी कहा है।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/179)

सवालः हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा के हामला होने की ख़बर सबसे पहले किसको हुई?

जवाबः इसका इल्म सबसे पहले आपके चचाज़ाद भाई यूसुफ़ नज्जार को हुआ जो बैतुल मुक़द्दस का ख़ादिम था। और बहुत बड़ा इबादतगुज़ार था। उसको जब यह मालूम हुआ कि मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा हामला हैं तो निहायत हैरत हुई। जब चाहता था कि उन पर तोहमत लगाए तो उनकी इबादत व तक़्वा और हर वक़्त हाज़िर रहना, किसी वक़्त ग़ायब न होना याद करता तो ख़ामोश हो जाता था और जब हमल का ख़्याल करता तो उन्हें बरी समझना मुश्किल होता था। आख़िर उसने हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा से कहाः मेरे दिल में एक बात आई है। हर चंद चाहता हूँ कि ज़बान पर न लाऊँ मगर अब सब्र नहीं होता है। आप इजाज़त दीजिए कि मैं कह गुज़रूं ताकि मेरे दिल की परेशानी दूर हो। हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा अच्छी बात है कहो। उसने कहाः ऐ मरियम! मुझे बताओ क्या खेती बग़ैर तुख़्म, पेड़ बग़ैर बारिश

और बच्चा बग़ैर बाप के हो सकता है?

हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहाः हाँ तुझे मालूम नहीं अल्लाह तआला ने सबसे पहले खेती पैदा की वह बग़ैर बीज के थी और अपनी क़ुदरत से पेड़ बग़ैर बारिश के उगाए। क्या तू यह कह सकता है कि अल्लाह तआला पानी की मदद के बग़ैर पेड़ पैदा करने पर क़ादिर नहीं। यूसुफ़ ने कहाः मैं यह तो नहीं कहता। बेशक मैं इसका क़ायल हूँ कि अल्लाह तआला हर शै पर क़ादिर है। जिसे "कुन" फ़रमाए हो जाता है। हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहाः क्या तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह तआला ने हज़रत आदम और उनकी बीवी को बग़ैर माँ-बाप के पैदा किया। हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा के इस कलाम से यूसुफ़ का शुब्हा रफ़ा हो गया।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 16/3)

सवालः हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के आसमान उठा लिए जाने के बाद कितने साल ज़िंदा रहीं?

जवाबः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को आसमान में उठा लिए जाने के बाद आप छः साल दुनिया में रहीं।

(जलालैन 52)

और एक रिवायत में है छियासठ साल। (नज़हतुल मजालिस 12/56)

सवालः हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र कितनी हुई?

जवाबः आपकी उम्र शरीफ़ इक्कियावन (51) साल हुई।

(तफ़्सीर नईमी 3/357)

और एक क़ौल के मुताबिक़ आपकी उम्र एक सौ बारह साल हुई।

(नज़हतुल मजालिस 12/56)

○ ○ ○

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में सवाल और जवाब

सवालः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत बसआदत, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के कितने साल बाद हुई?

जवाबः आपकी विलादत हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से छः हज़ार सात सौ पचास (6750)साल बाद है।

(तफ़्सीर नईमी 4/416, मआरिज नवुव्वत 2/32)

सवालः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बीच कितना फ़ासला है?

जवाबः आपकी विलादत शरीफ़ और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बीच चार हज़ार चार सौ नव्वे साल का फ़ासला है।(मअरिजुन्नवुव्वत 32, रुक्न दोम)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के कितने साल बाद दुनिया में तशरीफ़ लाए?

जवाबः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के तीन हज़ार सत्तर साल के बाद ख़्वाजा काएनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रौनक़ बख़्शे आलम हुए। (मअरिजुन्नबुव्वत 32 रुक्न दोम)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तशरीफ़ आवरी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के कितने साल बाद है?

जवाबः ज़माना मूसा अलैहिस्लाम के दो हज़ार तीन सौ साल मुकम्मल होने के बाद रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लाम दुनिया में रौनक़ अफ़रोज़ हुए। (मअरिजुन्नबुव्वत 32 रुक्न दोम)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रौनक अफ़रोज़ी हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के दिन बाद हुई?

जवाबः हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के एक हज़ार आठ सौ साल बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आलम को अपनी तशरीफ़ आवरी से मुशर्रफ़ फ़रमाया। (मआरिजुन्नबूवत ...)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बीच का ज़माना कितने साल का है?

जवाबः इस सिलसिले में अइम्मा तफ़्सीर और मौर्रिख़ीन के कई क़ौल हैं:

1. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के दर्मियान पाँच सौ पचास बरस का ज़माना है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान ...)

2. तफ़सीर जलालैन में इसकी मुद्दत पाँच सौ उनहत्तर साल है।

(जलालैन ...)

3. हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं पाँच सौ साठ साल।
4. अबू उस्मान हिंदी के मुताबिक़ छः सौ साल।

(हाशिया 41, जलालैन ...)

5. पाँच सौ चालीस।
6. चार सौ से कुछ ऊपर तीस।
7. और छः सौ बीस साल के अक़्वाल भी हैं। (इब्ने कसीर ...)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नसब शरीफ़ वालिद और वालिदा की तरफ़ से किस किस तरह है?

जवाबः नबी करीम के सिलसिला नसब शरीफ़ा को मवाहिब लदुन्निया में इस तरह बयान किया गया है:

मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्द मुनाफ़ बिन कस्सी बिन कलाब बिन मर्रा बिन कअब बिन लव्वी बिन ग़ालिब बिन फहर बिन मालिक बिन नज़र बिन कनाना बिन ख़ुज़ैमा बिन मदरका बिन इलयास बिन मज़र बिन फ़ज़ार बिन माद बिन अदनान।

यहाँ तक सिलसिला नसब में अरबाब सैर व अस्हाबे ख़बर और उलमाए इल्मुल अंसाब में सब का इत्तिफ़ाक़ है। और इससे ऊपर तक मालूम नहीं क्योंकि अदनान से हज़रत इस्माईल से हज़रत आदम

अलैहिस्सलाम तक बहुत इख़्तिलाफ़ है। चुनाँचे किसी ने अदनान से हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम तक तीस ऐसी पुश्तों का ज़िक्र किया है जिनका कुछ अता पता नहीं। और किसी ने इससे कम, किसी ने इससे ज़्यादा पुश्तों का ज़िक्र किया है। क्योंकि हमें उस पर एतिमाद नहीं और उलमा के अक़्वाल के भी मुख़ालिफ़ है। इसलिए हमने उनका ज़िक्र नहीं किया। (मदारिज नबुव्वत 2/7)

और वालिदा मोहतरमा की तरफ़ से सिलसिला नसब इस तरह है:

आमना रज़ियल्लाहु अन्हा बिन्ते वहब बिन अब्दे मुनाफ़ बिन ज़ोहरा बिन कलाब बिन मर्रा बिन कलाब में जाकर दोनों सिलसिले मिल जाते हैं। (मआरिज नबुव्वत 2/7)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दादा दादी, नाना और नानी का नाम क्या है?

जवाबः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दादा मोहतरम का नाम अब्दुल मुत्तलिब, दादी साहिबा का नाम फ़ातिमा बिन्त उमरू, नाना जान का नाम वहब बिन अब्दे मुनाफ़ और नानी मोहतरमा का नामे नामी बर्रा (बिन्त अब्दुल उज़्ज़ा) है। (मअरिजुन्नबुव्वत 1/153, 157)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नुत्फ़ा ज़किया सदफ़े रहम मादर में किस माह किस तारीख़ को क़रार पाया?

जवाबः नुत्फ़ा ज़किया मुहम्मदिया सदफ़ रहम आमना रज़ियल्लाहु अन्हा में कब क़रार पाया इसके बारे में तीन क़ौल हैं:

1. अय्यामे हज की दर्मियानी तशरीक़ के दिनों शबे जुमा को हुआ था। (मदारिज नबुव्वत 2/20)
2. शबे जुमा अरफ़ा को। (मअरिजुन्नबुव्वत 156/1)
3. बारहवीं ज़िल हिज्जा में हुआ कि हज़रत अब्दुल्लाह जमार की रमी करके आए और मुक़ारबत की। (तफ़्सीर नईमी 2/289)

हकीमुल उम्मत मुफ़्ती यार ख़ान रहमतुल्लाह अलैहि नईमी में उसी जगह फ़रमाते हैं: यह असल में रजब का महीना था जिसे कुफ़्फ़ार ने उसी साल ज़िल हिज्जा क़रार देकर हज किया था।

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत किस

मकान में हुई?

जवाबः उस मकान में जो मक्का मौज़्ज़मा में दार मुहम्मद बिन यूसुफ़ के नाम से मशहूर है।(अल कामिल फी तारीख़ 1/185, मआरिजुन्नबुव्वत 2/35)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत मक्का मुकर्रमा के किस मौहल्ले में हुई?

जवाबः उस मौहल्ले में जिसको अज़्क़ाक़ुल मौअल्लद कहते हैं।

(मआरिजुन्नबुव्वत 35/2)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत के इंतिज़ाम जचख़ाना के लिए कौन कौन सी औरतें आयीं थीं और कहां से?

जवाबः हज़रत आमना रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि जब आप पैदा हुए तो चार औरतें कि मक्का मुकर्रमा की औरतों से मुशाबिहत न रखती थीं आसमान से उतरीं। मैं उनको देखकर डरी। कहाः ख़ौफ़ न करो। हम चारों हव्वा, सारा, हाजरा और आसिया (रज़ियल्लाहु अन्नाहुन्ना) हैं। हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास सोने का तबक़, सारा के पास अबरीक़ नुक़रा आबे कौसर से भरा हुआ, हाजरा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास जन्नती इत्र और आसिया के पास मुंदील सब्ज़। फिर उन्होंने हज़रत को उस तश्ते ज़र्री में आबे कौसर से नहलाया और मुंदील सब्ज़ सर मुबारक पर बांधकर इत्र बहश्त उसमें मल दिया और आपको आमना रज़ियल्लाहु अन्हा की गोद में लिटा दिया।

(तफ़्सीर अलम नशरह 95)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत में क्या-क्या ख़ुसूसियात हैं?

जवाबः आप शिकमे मादर में ख़त्ना शुदा, ग़ैर आलूदा, पाक और नाफ़ बरीदा पैदा हुए। (मदारिज नबुव्वत 1/22)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दाया का नाम क्या है?

जवाबः हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु की वालिदा मोहतरमा हैं जिनका नाम शिफ़ा है। (मआरिजुन्नबुव्वत 2/38)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को किन-किन औरतों

ने दूध पिलाया और कितने-कितने दिन ?

जवाबः 1. इब्तिदाए विलादत से सात दिनों तक सौबिया ने दूध पिलाया जो अबू लहब की आज़ाद की हुई बांदी थीं। उसके बाद हलीमा सादिया का क़ाफ़िला आया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके सुपुर्द कर दिए गए।

(अल कामिल फ़ी तारीख़ 1/186)

2. सात रोज़ तक आपने आमना रज़ियल्लाहु अन्हा का दूध पिया और चंद दिन सौबिया का दूध पिया उसके बाद हलीमा सादिया ने दूध पिलाने की सआदत हासिल की।

(मदारिज नबुव्वत.2/30)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सौबिया ने कितने दिन दूध पिलाया?

जवाबः एक रिवायत में सात रोज़ है।

(अल कामिल फ़ी तारीख़ 1/186)

और एक रिवायत में सत्ताईस रोज़। (मअरिजुन्नबुव्वत 42/2)

सवालः हज़रत हलीमा सादिया के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त व देखभाल के फ़राईज़ किसने अंजाम दिए?

जवाबः हलीमा सादिया रज़ियल्लाहु अन्हा के बाद उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा ने आपकी हिफ़ाज़त देखभाल के फ़राईज़ अंजाम दिए। यह उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत अब्दुल मुत्तलिब की बांदी थीं और वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हज़रत अब्दुल्लाह की मीरास में हासिल हुई थीं। मवाहिब लदुन्निया से मालूम होता है कि उम्मे ऐमन का परवरिश के फ़राईज़ अंजाम देना सैय्यदा आमना की रहलत के बाद था।

(मदारिज नबुव्वत 2/37)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रज़ाई भाई बहन कौन-कौन हैं?

जवाबः हज़रत सुल्ताने रिसालत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दूध शरीक भाईयों में से एक तो आपके चचा हज़रत हम्ज़ा हैं। दूसरे अबू सलमा बिन अब्दुल असद शौहर उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा उनकी वालिदा बर्रा बिन अब्दुल मुत्तलिब जो आपकी फूफी हैं। उनको और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हज़रत सौबिया ने अपने बेटे मसरूह

विन सौविया का दूध चार बरस के फ़र्क़ में पिलाया। पहले हज़रत हम्ज़ा को उनके बाद आप को और आपके बाद अबू सलमा अब्दुल्लाह बिन अब्दुल असद को। तीसरे अबू सुफ़ियान बिन हारिस को जो कि आपके चचा हारिस के बेटे हैं। उनको और आपको सैय्यदा दाई हलीमा सादिया ने दूध पिलाया। इनके अलावा हलीमा सादिया की औलाद भी आपके रज़ाई भाई बहन हैं। (मदारिज नबुव्वत 2/848)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सीनाए मुबारक को कितनी बार शक़ किया गया और कब-कब?

जवाबः शक़ सदर चार बार हुआः

1. जब आप हलीमा सादिया के घर थे। उस बार शक़े सदर में यह नुक्ता था कि खेल की रग़बत जो लड़कों के दिल में होती है आपके दिल से दूर हो जाए और बुज़ुर्गों की तरह तमकीन और वक़ार हासिल हो।
2. दस बरस की उम्र शरीफ़ में सीना मुबारक फ़रिश्तों ने चाक किया और शफ़क़्क़त व मेहरबानी से भर दिया ताकि ग़ज़ब और गुस्सा कि इस उम्र का मुक़्तज़ी है की दबा रहे और मेहर व मुहब्बत कि गुनाहगार उम्मत को इसकी हाजत होती है, आदत हो जाए।
3. बेअसत के क़रीब दिल मुक़द्दस को चाक किया ताकि बारे "वही" का तहम्मुल हों और कलामे इलाही के समझने की क़ुव्वत हासिल हो।
4. मैराज की रात यह मामला वाक़ेअ हुआ कि दिले मुबारक में अनवार व तजल्लियाते और उलूम व मआरिफ़ की इस्तेदाद और क़ाबलियत पैदा हो और उसका हौसला बक़द्र उन तरक़्क़ियात व कमालात के कि इस रात इनायात होंगे वसीअ और फ़राख़ हो जाए। (तफ़्सीर अलम नशह 10/16, मदारिज नबुव्वत 1/222)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सबसे पहले अपनी ज़बान "वही" तर्जुमान से कौन सा कलिमा अदा फ़रमाया?

जवाबः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं: अव्वल कलिमा जो रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बान

मुबारक से निकला यह था:

الله اكبر كبيرا والحمد لله كثيرا فسبحان الله بكرة واصيلا

(तफ़्सीर अलम नशरह 95)

हज़रत सैय्यदा हलीमा सादिया फ़रमाती हैं:

सबसे पहली बात जो मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुनी रात के दौरान थी। पूरी फ़साहत से यह कलिमा मुबारक ज़बान मुबारक से अदा फ़रमाया:

لا اله الا الله قدوسا قدوسا نامت العيون والرحمن لا تاخذه سنة ولا نوم

दूसरी रिवायत में यूँ वारिद है:

لا اله الا الله والله اكبر والحمد لله رب العلمين.

(मआरिजुन्नबुव्वत 47/2)

सवाल: वे हज़रात कितने और कौन-कौन से हैं जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत व इज़्हारे नबुव्वत से पहले आप पर ईमान लाकर मुशर्रफ़ बाइस्लाम हुए?

जवाब: ऐसे खुशनसीब अफ़राद की जो तादाद हमें मिली वह नीचे लिखी है:

1. तबा हमीरी शाह यमन (असद अबू करीब यमानी)
2. हबीब इब्ने नज्जार,
3. ज़ैद बिन अमरू मवहि्द जाहिलया।
   ये वे हज़रात हैं जो विलादत से पहले सिर्फ़ आपके अवसाफ़ सुनकर ईमान लाए।
   (तफ़्सीर अलम नशरह 60)
4. वरक़ा बिन नोफ़ल।
5. बुहैरा राहिब।
   (हाशिया 12 जलालैन 569)

ये दो वे हज़रात हैं जो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर आपके इज़्हारे नबुव्वत से पहले ईमान लाए। (मदारिज नबुव्वत 2/41)

सवाल: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुल्के शाम का पहला सफ़र किस उम्र में किया?

जवाब: बारह साल की उम्र में।

(मदारिज नबुव्वत 2/40)

एक दूसरी रिवायत में बारह साल दो माह दस दिन है।

(मअरिजुन्नबुव्वत 2/58)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ,"मैं दो ज़बीहों का बेटा हूँ।" ये दो ज़बीह के मिस्दाक़ कौन कौन हैं?

जवाबः दो ज़बीह से मुराद एक तो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम हैं जिनकी औलाद में से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। दूसरे ज़बीह आपके वालिद माजिद हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब हैं। उनका ज़बीह नाम के साथ मौसू होने का वाक़िआ अस्हाबे अहादीस व मोर्रिख़ यूँ बयान करते हैं:

वाक़िआ

क़ौम जरहम जब मक्का से भाग खड़ी हुई और यमन की जानिब चली गई तो भागते भागते इब्ने उमरू बिन हारिस ने जो क़ौम का हाकिम था हिजरे असवद को रुक्ने काबा से उखाड़कर दो सोने की हिरन की मूर्तियों को जो सोने व जवाहरात से जड़ी से हुई थीं और चंद हथियार जो काबा में थे सबको ज़मज़म के कुँए में छिपाकर उसे पाट दिया और जगह को ज़मीन के बराबर कर दिया। धीरे-धीरे उसका मुक़ाम और जगह भी किसी को मालूम न रही। ज़मज़म के कुंए का सिर्फ़ तज़्किरा ही तज़्किरा लोगों की ज़बान पर रह गया था और ज़मज़म का कुँआ उसी दिन से गुम और बेनिशान रहा। अल्लाह तआला का इरादा जब ज़मज़म के कुंए को ज़ाहिर करने का हुआ तो हक़ तआला ने हज़रत मुत्तलिब को ख़्वाब में ज़मज़म के कुंए का मुक़ाम दिखाकर हुक्म दिया कि उसे ज़ाहिर करो। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने हुक्मे इलाही को पूरा करने के लिए जब ज़मज़म के कुंए को खोदना चाहा तो क़ौमे क़ुरैश आड़े आई और लड़ने को तैयार हो गई क्योंकि ज़मज़म के कुँए की जगह पर दो बुत नसब थे जिनका नाम असाफ़ और नाएला था। और क़ुरैश नहीं चाहते थे कि बुतों के बीच कुँआ खोदा जाए। यह सिर्फ़ दो ही बाप बेटे थे अब्दुल मुत्तलिब और उनका एक बेटा हारिस। और कोई मददगार व साथ देने वाला उनका न था। फिर भी ये ग़ालिब हुए और कुँआ खोदने के काम में मशग़ूल हो गए। उसी वक़्त अब्दुल मुत्तलिब ने अपनी तन्हाई को महसूस

किया और मन्नत मानी कि अगर ख़ुदा तआला मुझको दस बेटे अता करे और चश्मा भी निकल आए तो मैं अपने बेटों में से एक की हक़ तआला के हुज़ूर क़ुर्बानी दूंगा।

लिहाज़ा कुछ रोज़ की मेहनत के बाद चश्मा भी निकल आया। और फिर ख़ुदा तआला ने अब्दुल मुत्तलिब को दस बेटे भी अता किए। ज़मज़म के कुँए के निकल आने से क़ुरैश में अब्दुल मुत्तलिब की इज़्ज़त व मंज़िलत दोबाला हो गई। सब उनकी बुज़ुर्गी और सरदारी के क़ायल हो गए। जब मुत्तलिब के सभी बेटे बुलूग़ की हद को पहुँचे तो उन्होंने अपनी मानी हुई मन्नत पूरी करनी चाही और अपने तमाम बेटों को जमा करके सारा हाल बयान किया। तमाम बेटों ने एक ज़बान होकर कहा: आपको इख़्तियार है, अगर आप हम सब की क़ुर्बानी देने पर राज़ी हैं तो हम सब तैयार हैं। हज़रत मुत्तलिब को अपने बेटों की यह इताअत और सआदतमंदी बहुत भली मालूम हुई और फ़रमाया पर्ची डालो। जब पर्ची डाली गई तो इत्तिफ़ाक़ की बात कि कुर्रे का तीर सबसे छोटे बेटे अब्दुल्लाह के नाम निकला। हज़रत अब्दुल्लाह अपने वालिद के नज़दीक बहुत महबूब और प्यारे थे क्योंकि उनकी पेशानी पर नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ताबां व रोशन था। और वह साहब हुस्न व जमाल बड़े बहादुर पहलवान और तीरअंदाज़ थे। इसके बावजूद हज़रत मुत्तलिब हज़रत अब्दुल्लाह को लेकर क़ुर्बानगाह की तरफ़ चले। हज़रत अब्दुल्लाह के तमाम भाईयों बहनों और रिश्तेदारों और क़ुरैश के सरदारों ने हज़रत मुत्तलिब को अब्दुल्लाह के ज़िब्ह करने से रोकना चाहा मगर हज़रत मुत्तलिब न माने। आख़िर बड़ी खेंचतान के बाद यह मामला सजा नामी काहिना की तरफ़ रुजू किया गया जो हज्जाज़ में तमाम काहिनों में दाना और अक़्लमंद थी। तमाम माजरा सुनने के बाद उस काहिना औरत ने कहा: तुम्हारे यहाँ एक आदमी का ख़ून बहा दस ऊँट है। बस तुम एक तरफ़ दस ऊँट को रखो और एक तरफ़ अब्दुल्लाह को रखो और कुर्रा डालो। अगर क़ुर्रा ऊँटों के नाम निकल आए तो ऊँटों की क़ुर्बानी दे दो और अगर क़ुर्रा हज़रत अब्दुल्लाह के नाम पर आए तो दस ऊँट और बढ़ाकर बीस ऊँट अब्दुल्लाह के मुक़ाबिल रखो और फिर क़ुर्रा डालो।

इसी तरह हर मर्तबा दस दस ऊँट बढ़ाते जाओ। यहाँ तक कि क़ुर्रा ऊँटों के नाम पर निकल आए।

लिहाज़ा ऐसा ही किया गया और क़ुर्रा अब्दुल्लाह ही के नाम निकलता रहा। यहाँ तक कि जब ऊँटों की तादाद सौ हो गई तो ऊँटों के नाम पर क़ुर्रा निकला। हज़रत मुत्तलिब ने अपनी तसल्ली के लिए दोबारा फिर क़ुर्रा डाला और अब हर मर्तबा ऊँटों ही के नाम क़ुर्रा निकला। हज़रत मुत्तलिब ने शुक्रे इलाही अदा किया और हज़रत अब्दुल्लाह ने ज़िब्ह से खुलासी पाई। इसके बाद सौ ऊँटों को ज़िब्ह करके ख़ास व आम और दरिन्दों और परिन्दों को खिलाया गया। फिर अरब में एक शख़्स की दइय्यत सौ ऊँट मुक़र्रर हो गई हालाँकि उससे पहले दस ऊँट मुक़र्रर थी।

(मदारिज नबुव्वत 2/16,17 तवारिखुल हबीब 9)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहरे नबुव्वत जिस्म मुबारक के किस हिस्से में थी और उस मुहर की शक्ल व सूरत कैसी थी?

जवाबः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दोनों कंधों के बीच मुहरे नबुव्वत थी। मुहरे नबुव्वत एक ऐसी उभरी हुई चीज़ थी जो हमरंग बदन, मुशाबह जस्दे अतहर और साफ़ नूरानी थी। रावियों ने मुहरे नबुव्वत की सूरत व शक्ल का भी ज़िक्र किया है और समझाने के लिए तश्बीह इस्तेमाल की है।

लिहाज़ा किसी ने इसे कबूतर के अंडे से और किसी ने सुर्ख़ ग़ुदूद (गोश्त की सख़्त गिरह) से जो आमतौर पर जिस्म पर होता है तश्बीह दी है। मुराद यह है कि ग़ुदूद के तरह और सुर्ख़ से लाली की तरफ़ माइल है। लिहाज़ा यह उस रिवायत के मुनाफ़ी नहीं जिसमें कहा गया है कि मुहरे नबुव्वत का रंग जिस्मे अतहर के रंग के हमरंग था बल्कि इससे उस क़ौल का रद्द करना मक़सूद था जिसमें है कि उसका रंग स्याह या सब्ज़ था।

एक रिवायत में है कि मुहरे नबुव्वत ज़र्र हजला की मानिन्द थी। ज़र्र बमानी तकमा (घुंडी) जो पैरहन के गिरेबान में होता है और हजला बमानी वह गोशा जहाँ दुल्हन को बिठाया ज़ाता है। बाज़ कहते हैं कि हजला एक

मशहूर परिन्दा और ज़र्र उसका अंडा है। यह उस हदीस के मुवाफ़िक़ है जिसमें कहा गया है कि मुहरे नबुव्वत कबूतर के अंडे की मानिन्द थी।

और तिर्मिज़ी की एक और हदीस में है कि मुहरे नबुव्वत गोश्त का एक टुकड़ा था। एक और हदीस में मुश्त की मानिन्द आया है जिसमें सालैल की मानिन्द थे। सालैल उन दानों को कहते हैं जो जिल्द के नीचे चने के दाने की मानिन्द निकल आते हैं।

यह सब कुछ मुहरे नबुव्वत की ज़ाहिरी शक्ल व सूरत के बारे में था लेकिन उसके पीछे खुदा तआला का अज़ीम असर कार फ़रमा है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मख़्सूस है जो किसी और नबी को हासिल न हुआ। (मदारिज नबुव्वत 1/36, 37)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहरे नबुव्वत पर क्या लिखा हुआ था?

जवाबः शेख़ इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाह अलैहि शरह मिश्कात में फ़रमाते हैंः

आपकी मुहरे नबुव्वत में लिखा हुआ थाः

اَللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ تَوَجَّهْ حَيْثُ كُنْتَ فَاِنَّكَ مَنْصُوْرٌ.

(मदारिज नबुव्वत 1/36)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के मुताबिक़ मुहरे नबुव्वत पर "ला इलाहा इलल्लाह" के अल्फ़ाज़ लिखे हुए थे। और एक रिवायत के मुताबिक़ "मुहम्मदुर्रसूलल्लाह" के अल्फ़ाज़ थे।

(शवाहिद नबुव्वत 251)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाले हक़ के बाद मुहरे नबुव्वत बाक़ी रही थी या नहीं?

जवाबः बाज़ रिवायतों में आया है कि आप के विसाले हक़ के बाद वह मुहरे नबुव्वत रूपोश हो गई थी और इसी अलामत से मालूम हुआ कि आप ने पर्दा फ़रमाया है क्योंकि लोगों में शुब्हा और इख़्तिलाफ़ वाक़ेअ हो गया था। या इसलिए कि यह दलीले नबुव्वत थी। अब इसके इस बात की हाजत न रही या यह कि अल्लाह तआला का कोई ख़ास भेद हो जिसे वही ख़ूब जानता है लेकिन यह ग़लत है कि बाद विसाल, नबुव्वत बाक़ी

इसी तरह हर मर्तबा दस दस ऊँट बढ़ाते जाओ। यहाँ तक कि क़ुर्रा ऊँटों के नाम पर निकल आए।

लिहाज़ा ऐसा ही किया गया और क़ुर्रा अब्दुल्लाह ही के नाम निकलता रहा। यहाँ तक कि जब ऊँटों की तादाद सौ हो गई तो ऊँटों के नाम पर क़ुर्रा निकला। हज़रत मुत्तलिब ने अपनी तसल्ली के लिए दोबारा फिर क़ुर्रा डाला और अब हर मर्तबा ऊँटों ही के नाम क़ुर्रा निकला। हज़रत मुत्तलिब ने शुक्रे इलाही अदा किया और हज़रत अब्दुल्लाह ने ज़िब्ह से खुलासी पाई। इसके बाद सौ ऊँटों को ज़िब्ह करके ख़ास व आम और दरिन्दों और परिन्दों को खिलाया गया। फिर अरब में एक शख़्स की दइय्यत सौ ऊँट मुक़र्रर हो गई हालाँकि उससे पहले दस ऊँट मुक़र्रर थी।

(मदारिज नबुव्वत 2/16,17 तवारिखुल हबीब 9)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहरे नबुव्वत जिस्म मुबारक के किस हिस्से में थी और उस मुहर की शक्ल व सूरत कैसी थी?

जवाबः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दोनों कंधों के बीच मुहरे नबुव्वत थी। मुहरे नबुव्वत एक ऐसी उभरी हुई चीज़ थी जो हमरंग बदन, मुशाबह जस्दे अतहर और साफ़ नूरानी थी। रावियों ने मुहरे नबुव्वत की सूरत व शक्ल का भी ज़िक्र किया है और समझाने के लिए तश्बीह इस्तेमाल की है।

लिहाज़ा किसी ने इसे कबूतर के अंडे से और किसी ने सुर्ख़ गुद्दूद (गोश्त की सख़्त गिरह) से जो आमतौर पर जिस्म पर होता है तश्बीह दी है। मुराद यह है कि ग़ुद्दूद के तरह और सुर्ख़ से लाली की तरफ़ माइल है। लिहाज़ा यह उस रिवायत के मुनाफ़ी नहीं जिसमें कहा गया है कि मुहरे नबुव्वत का रंग जिस्मे अतहर के रंग के हमरंग था बल्कि इससे उस क़ौल का रद्द करना मक़सूद था जिसमें है कि उसका रंग स्याह या सब्ज़ था।

एक रिवायत में है कि मुहरे नबुव्वत ज़र्र हजला की मानिन्द थी। ज़र्र बमानी तकमा (घुंडी) जो पैरहन के गिरेबान में होता है और हजला बमानी वह गोशा जहाँ दुल्हन को बिठाया ज़ाता है। बाज़ कहते हैं कि हजला एक

मशहूर परिन्दा और ज़र्र उसका अंडा है। यह उस हदीस के मुवाफ़िक़ है जिसमें कहा गया है कि मुहरे नबुव्वत कबूतर के अंडे की मानिन्द थी।

और तिर्मिज़ी की एक और हदीस में है कि मुहरे नबुव्वत गोश्त का एक टुकड़ा था। एक और हदीस में मुश्त की मानिन्द आया है जिसमें सालैल की मानिन्द थे। सालैल उन दानों को कहते हैं जो जिल्द के नीचे चने के दाने की मानिन्द निकल आते हैं।

यह सब कुछ मुहरे नबुव्वत की ज़ाहिरी शक्ल व सूरत के बारे में था लेकिन उसके पीछे खुदा तआला का अज़ीम असर कार फ़रमा है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मख़्सूस है जो किसी और नबी को हासिल न हुआ।

(मदारिज नबुव्वत 1/36, 37)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहरे नबुव्वत पर क्या लिखा हुआ था?

जवाबः शेख़ इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाह अलैहि शरह मिश्कात में फ़रमाते हैं:

आपकी मुहरे नबुव्वत में लिखा हुआ था:

اَللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ تَوَجَّهْ حَيْثُ كُنْتَ فَاِنَّكَ مَنْصُوْرٌ

(मदारिज नबुव्वत 1/36)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के मुताबिक़ मुहरे नबुव्वत पर "ला इलाहा इलल्लाह" के अल्फ़ाज़ लिखे हुए थे। और एक रिवायत के मुताबिक़ "मुहम्मदुर्रसूलल्लाह" के अल्फ़ाज़ थे।

(शवाहिद नबुव्वत 251)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाले हक़ के बाद मुहरे नबुव्वत बाक़ी रही थी या नहीं?

जवाबः बाज़ रिवायतों में आया है कि आप के विसाले हक़ के बाद वह मुहरे नबुव्वत रूपोश हो गई थी और इसी अलामत से मालूम हुआ कि आप ने पर्दा फ़रमाया है क्योंकि लोगों में शुब्हा और इख़्तिलाफ़ वाक़ेअ हो गया था। या इसलिए कि यह दलीले नबुव्वत थी। अब इसके इस बात की हाजत न रही या यह कि अल्लाह तआला का कोई ख़ास भेद हो जिसे वही ख़ूब जानता है लेकिन यह ग़लत है कि बाद विसाल, नबुव्वत बाक़ी

न रही क्योंकि नबुव्वत व रिसालत मौत के बाद भी बरक़रार रहती है।
(मदारिज नबुव्वत 1/5?)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कितने मौजिज़े अता हुए?

जवाबः और पैग़ंबरों को एक एक या दो दो मौजिज़े मिले। सबसे ज़्यादा हज़रत मूसा कलीमुल्लाह को अता हुए यानी नौ। लेकिन हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को छः हज़ार मौजिज़े तो रिवायतों में आते हैं और हक़ यह है कि खुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सर से लेकर क़दम मोहतरम तक मौजिज़ा हैं यानी आपका हर अज़्व शरीफ़ मौजिज़ा बल्कि हर वस्फ़, हर हाल में मौजिज़ा है।(तफ़्सीर नईमी 1/257)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसकी ख़्वाहिश पर चाँद के दो टुकड़े फ़रमाए थे?

जवाबः हबीब बिन मालिक वाली यमन की ख़्वाहिश पर।
(शाने हबीबुर्रहमान)

दूसरी रिवायत के मुताबिक़ वलीद बिन मुग़ैरा, अबू जहल, आस बिन वाइल, आस बिन हिशाम, असवद बिन यग़ूस, असवद बिन मुत्तलिब, ज़ामा बिन असवद, नज़र बिन हारिस और ऐसे ही दूसरे अफ़राद की ख़्वाहिश पर।
(दलाईल नबुव्वत उर्दू 244)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शक़े क़मर का मौजिज़ा किस जगह ज़ाहिर फ़रमाया था और चाँद के दो टुकड़े किस-किस जगह गिरे थे?

जवाबः आपने यह मौजिज़ा कोहे सफ़ा पर ज़ाहिर फ़रमाया था। चाँद का एक टुकड़ा अबू क़बीस पर और दूसरा कोहे क़इक़ान पर गिरा था।
(शाने हबीबुर्रहमान 188, दलाइल नबुव्वत उर्दू 244)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कितनी बार मैराज हुई। उनमें से रूहानी कितनी थीं और जिस्मानी कितनी?

जवाबः बाज़ आरिफ़ीन फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की असरात और मैराजें बहुत थीं। और बाज़ ने चौंतीस कहा है। जिनमें से एक तो बचश्म सर बेदारी से थी बाक़ी ख़्वाब में रूहानी।
(मदारिज नबुव्वत 1/288, शाने हबीबुर्रहमान 187)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मैराज जिस्मानी की सैर की मुद्दत कितनी है?

जवाबः मैराज की मुद्दत बाज़ ने चार साअत, बाज़ ने तीन साअत और बाज़ ने इससे भी कम कहा है।

(हाशिया 16, जलालैन 228, मआरिज नवुव्वत 3/150)

सवालः शबे मैराज में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बैतुल मुक़द्दस में तमाम अंबिया किराम को जो नमाज़ पढ़ाई उस नमाज़ की अज़ान व इक़ामत किसने कही थी और नमाज़ में हुज़ूर ने कौनसी सूरत तिलावत फ़रमाई?

जवाबः उस नमाज़ की अज़ान व इक़ामत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने कही थी। (तफ़्सीर नईमी 2/5)

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस नमाज़ की पहली रकअत में सूरः काफ़िरून और दूसरी रकअत में सूरः इख़्लास तिलावत फ़रमाई थी। (नज़्हतुल मजालिस 9/79, रूहुल मानी 15/12)

सवालः शबे मैराज को बैतुल मुक़द्दस में पढ़ी गई उस नमाज़ में अंबिया व मुरसलीन की कितनी सफ़ें थीं और किस तर्तीब से?

जवाबः इस नमाज़ में अंबिया व मुरसलीन अलैहिमुस्सलाम की सात सफ़ें थीं। तीन में मुरसलीन और चार में अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पुश्त मुबारक के बिलमुक़ाबिल हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, दाएं इस्माईल अलैहिस्सलाम और बाएं इस्हाक़ अलैहिमस्सलाम थे।

(हाशिया 17, जलालैन 408, रूहुल बयान 5/112 व रूहुल मानी 5/12)

सवालः शबे मैराज में अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कितनी चीज़ें अता फ़रमायीं?

जवाबः तीन चीज़ें:

1. पांच वक़्तों की नमाज़ें,
2. सूरः बक़रा की आख़िरी आयतें,
3. आपकी उम्मत में जो मुश्रिक न हो उनके गुनाहों की बख़्शिश।

(अल अतक़ान फी उलूमुल क़ुरआन 1/31, इब्ने कसीर 127)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कितनी बार तमाम अंबिया और मुरसलीन अलैहिमुस्सलाम की इमामत फ़रमाई और कहाँ-कहाँ?

जवाबः आला हज़रत फ़ाज़िल बरेलवी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं: अव्वलीन व आख़िरीन अंबिया व मुरसलीन अलैहिस्सलाम ने एक बार हुज़ूर की इक़्तिदा में (शबे मैराज को) बैतुल मुक़द्दस में नमाज़ पढ़ी और दूसरी बार बैतुल मामूर में सब अंबिया और उम्मत मरहूमा ने भी।

(मलफ़ूज़ात 4/37)

शेख़ इमादुद्दीन बिन कसीर रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं:

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शबे मैराज को उरूज से पहले और उरूज के बाद दोनों हालतों में अंबिया अलैहिमुस्सलाम की इमामत फ़रमाई। (मदारिज नबुव्वत 1/295)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कितनी बार दीदारे इलाही से मुशर्रफ़ व मुमताज़ हुए?

जवाबः तर्जुमानुल क़ुरआन हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दो बार अपने दीदार से इम्तियाज़ बख़्शा।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 27 सूरः नमज, मदारिज नबुव्वत 1/135)

और जलालैन स० 229 के हाशिया 21 पर है कि शबे मैराज को हुज़ूर दस बार दीदोर इलाही से मुशर्रफ़ फ़रमाए गए। एक बार जब मुलाक़ात के लिए गए उसके बाद फिर नौ बार जब आप नमाज़ें कम कराने को गए।

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम को उनकी असली सूरत में कितनी बार देखा और कब-कब?

जवाबः किसी नबी ने भी हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम को उनकी असल शक्ल में नहीं देखा सिर्फ़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम को उनकी असल शक्ल में देखा और ऐसा चार बार वाक़ेअ हुआः

1. ग़ारे हिरा में: जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्राईल

अलैहिस्सलाम से उनकी असल शक्ल देखने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की और जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने अपनी असल शक्ल दिखाई।

2. शबे मैराज को सिदरतुल मुन्तहा पर।
3. नुज़ूल वही की इब्तिदाई ज़माने में मक्का मुकर्रमा के मुक़ाम अजयाद पर। (तफ़्सरी ख़ाज़िन फ़त्हुल बारी 1/18)

पहले दो वाक़िए तो सनद सही से साबित है अलबत्ता तीसरा वाक़िआ सनद कमज़ोर होने के बाइस मशकूक है।

4. काबा मेंः हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जिब्राईल अलैहिस्सलाम को उनकी असली सूरत में देखने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पहले तो मना फ़रमाया लेकिन उनके इसरार पर आपने फ़रमाया बैठ जाइए। फिर कुछ देर बाद जिब्राईल काबा पर उतरे। आपने चचा हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमायाः देखिए जिब्राईल अपनी असली सूरत में आ गए। उन्होंने जब देखा तो बेहोश होकर गिर पड़े। (दलाइल नबुव्वत, मदारिज नबुव्वत 1/392)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ाहिरी हयात तैय्यबा का वह कौन सा ज़माना है जो आपकी उम्र में शामिल नहीं?

जवाबः मैराज की सैर का ज़माना आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र शरीफ़ में शुमार नहीं क्योंकि उम्र इस ज़मीन पर ज़िंदा रहने की मुद्दत का नाम है। (तफ़्सीर नईमी 2/515)

सवालः हिजरत की रात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मकान का जिन कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन ने मुहासरा कर रखा था उनकी तादाद कितनी थी?

जवाबः यह बारह कुफ़्फ़ार थे। उनके नाम हस्बे ज़ैल हैंः

1. अबू जहल,
2. हकम बिन आस,
3. उक़्बा बिन मुईत,
4. नज़र बिन हारिस,
5. उमैया बिन ख़लफ़,
6. इब्ने ऐतिया,
7. ज़ामा बिन मसऊद,
8. तैईमा,

पहले से उन्हें ख़ूब चारा पानी देकर मोटा ताज़ा कर रहे थे। दोनों
उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश किया ता
उनमें से एक को क़ुबूल फ़रमाएं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
फ़रमाया मैंने इसे क़ुबूल किया मगर उसकी क़ीमत लेनी होगी। चुनां
आपने उस ऊँट को नौ सौ दिरहम में ख़रीद लिया। उसका नाम बकौ
सही "क़सवा" था और एक क़ौल के मुताबिक़ "जदा" था।

(मदारिज नबुव्वत 2/9

सवालः हिजरत के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कि माह की किस तारीख़ को मक्का से रवाना हुए थे और किस तारी को मदीना मुनव्वरा में रौनक़ अफ़रोज हुए?

जवाबः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मक्का निकलना सत्ताइस (27) सफ़र को हुआ था और ग़ारे सौर से पह रबीउल अव्वल को निकले थे। और मदीना मुनव्वरा में रौनक़ अफ़रो से मुताल्लिक़ उलमा सैर के दर्मियान इस पर पूरा इत्तिफ़ाक़ है कि मंगल का दिन था और महीना रबीउल अव्वल का था लेकिन तारीख़ इख़्तिलाफ़ है। बाज़ बारह रबिउल अव्वल कहते हैं और बाज़ तेरह। इख़्तिलाफ़ तारीख़ चाँद का इख़्तिलाफ़ है। इमाम नुव्वी रहमतुल्ला अलैहि ने किताब रौज़े से बारह रबीउल अव्वल पर जज़्म किया है। भी चंद क़ौल हैं लेकिन वह मुक़ाम सेहत से बईद है।

(मदारिज नबुव्वत 2/1

सवालः मदीना मुनव्वरा के जिस मकान में हुज़ूर सल्लल्ला अलैहि वसल्लम ने क़याम फ़रमाया था उस मकान को कि बनवाया था?

जवाबः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि बयान करते हैं:

जब ताएफ़ के बादशाह तबा ने मदीना मुनव्वरा पर चढ़ाई की थी उसने ऐलान किया था कि मैं शहर मदीना को वीरान कर दूंगा और उ रहने वालों को अपने उस लड़के के इंतिक़ाम में क़त्ल कर डालूंगा उन्होंने फ़रेब और धोके से क़त्ल किया है। तो उस वक़्त सामोल

ने जो उस ज़माने में यहूदियों का सबसे बड़ा आलिम था उसने कहा: ऐ बादशाह! यह वह शहर है जिसकी तरफ़ बनी इस्माईल से नबी आख़िरुज़्ज़मा की हिजरत होगी। और उस नबी की जाए विलादत मक्का मुकर्रमा है। उसका इस्मे गिरामी अहमद है। यह शहर उसका दारे हिजरत है और उसकी क़ब्रे अनवर भी उसी जगह होगी। यह सुनकर तबा यूँ ही वापस हो गया।

मुहम्मद बिन इस्हाक किताब मग़ाज़ी में नक़ल करते हैं:

तबा ने नबी आख़िरुज़्ज़मा के लिए एक आलीशान महल तामीर कराया। तबा के साथ तौरैत के चार सौ उलमा थे जो उसकी सोहबत छोड़कर मदीना मुनव्वरा में इस आरज़ू में ठहर गए कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सोहबत की सआदत हासिल करेंगे। तबा ने उन चार सौ आलिमों में से हर एक के लिए एक एक मकान बनवाया और एक एक बांदी बख़्शी और उनको माले कसीर दिया। तबा ने एक ख़त भी लिखा जिसमें अपने इस्लाम लाने की शहादत दी। वह मकान जो ख़ातिमुन्नबी के लिए बनाया गया था वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दम रंजा फ़रमाने तक मौजूद रहा। कहते हैं कि हज़रत अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु का वह मकान जिसमें हुज़ूर ने हिजरत के बाद नुज़ूल फ़रमाया था वही मकान था। (मदारिज नबुव्वत 1/204)

सवाल: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मेरे चार वज़ीर हैं।" ये चार हज़रात कौन हैं?

जवाब: वे चार वज़ीर ये हैं:

दो अहले आसमान में से जिब्राईल व मीकाईल अलैहिमस्सलाम और दो अहले ज़मीन से हुज़ूर सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा। (तफ़्सीर अलम नशरह 196)

सवाल: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कितने हज और कितने उमरे किए?

जवाब: हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिजरत के बाद एक हज किया जिसे हज्जतुल विदा और हज्जतुल इस्लाम कहते हैं और हिजरत से पहले बाज़ कहते हैं कि दो हज किए और बाज़ कहते हैं कि

तीन ओर बाज़ इससे ज़्याद लेकिन क़ौल मुहक़्क़िक यह है कि कोई अदद मुईन व महफ़ूज़ नहीं है।

और आपके उमरे के बारे में बाज़ उलमा तीन कहते हैं क्योंकि हुदैबिया में हक़ीक़तन उमरा न हुआ था लेकिन जम्हूर उलमा उसे उमरे का हुक्म देकर कुल उमरे की तादाद चार बताते हैं।

(मदारिज नबुव्वत 725-726, अल कामिल फ़ी तारीख़ 2/127)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दाढ़ी मुबारक के कितने बाल सफ़ेद थे?

जवाबः उन्नीस बाल सफ़ेद थे। (तफ़्सीर अलम नशरह 199)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गोद में कितने बच्चों ने पेशाब किया?

जवाबः पाँच बच्चों नेः

1. सुलेमान बिन हिशाम,
2. हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु,
3. हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु,
4. हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर,
5. इब्ने उम्मे कैस। (अवजज़ुल मसालिक 1/162)

सवालः गज़्वाए ख़ैबर के मौके पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ज़हर मिला हुआ गोश्त किस औरत ने दिया था?

जवाबः ज़ैनब बिन्ते हारिस यहूदिया ने जो मरहब की भतीजी और सलाम बिन शिकम की बीवी थी। (मदारिज नबुव्वत 2/424)

सवालः उस यहूदी का क्या नाम है जिसने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू किया था यह वाक़िआ किस सन में पेश आया और आप पर जादू का असर कितने दिनों रहा?

जवाबः लबीद बिन आसिम यहूदी और उसकी बेटियों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू किया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जिस्म मुबारक और आज़ा ज़ाहिरा पर उसका असर हुआ, क़ल्ब व अक़्ल ओर ऐतिक़ाद पर कुछ असर न हुआ। कुछ रोज़ बाद जिब्राईल अलैहिस्सलाम आए और उन्होंने अर्ज़ किया कि एक यहूदी ने

आप पर जादू किया है और जादू का जो कुछ सामान है वह (अज़दान नामी) कुँए में एक पत्थर के नीचे दबा दिया है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा। उन्होंने कुँए का पानी निकालने के बाद पत्थर उठाया। उसके नीचे से खजूर के गाभे की थैली बरामद हुई। इसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुए शरीफ़ जो कंघी से बरामद हुए थे और हुज़ूर की कंघी के चंद दंदाने, एक डोरा या कमान का चिल्ला जिसमें ग्यारह गिरहें लगी थीं और एक मोम का पुतला जिसमें सूंईया चुभी थीं। यह सब सामान पत्थर के नीचे से निकला और हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर किया गया। अल्लह तआला ने सूरः फ़लक़ और सूरः नास नाज़िल फ़रमायीं। इन दोनों सूरतों में ग्यारह आयतें हैं हर एक आयत के पढ़ने के साथ साथ एक एक गिरह खुलती जाती थी यहाँ तक कि सब गिरहें खुल गयीं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बिल्कुल तंदरुस्त हो गए। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 30/सूरः फ़लक़)

यह हादसा हुदैबिया से वापसी के बाद सन् 6 हि० के माह ज़िल हिज्जा में हुआ और इस आरज़े के बाक़ी रहने की मुद्दत एक क़ौल के मुताबिक़ जब चालीस रोज़ है। एक रिवायत में छः महीने और एक रिवायत में एक साल है। (मदारिज नबुव्वत 1/415)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज्जतुल विदा और सुलह हुदैबिया के मौके पर कितने कितने ऊँट ज़िब्ह फ़रमाए थे?

जवाबः हज्जतुल विदा के मौके पर कुल सौ ऊँट क़ुर्बान किए। तिरेसठ ऊँट अपने दस्ते मुबारक से ज़िब्ह फ़रमाए। जो आपकी उम्र शरीफ़ के सालों के अदद पर है और सैंतीस ऊँटों के लिए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म फ़रमाया कि वह क़ुर्बानी करें।

(मदारिज नबुव्वत 2/672)

और हुदैबिया वाले दिन सत्तर ऊँट ज़िब्ह किए थे। (इब्ने कसीर) बीस ऊँटों को अपने दस्त मुबारक से नहर फ़रमाया और बाक़ी को नाहिया बिन जुंदब को दिया कि वह ज़िब्ह करे। (मदारिज नबुव्वत 2/371)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कितनी मिक़्दार पानी से वुज़ू और ग़ुस्ल फ़रमाया करते थे?

जवाबः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गुस्ल एक साअ पानी से करते थे जो कि पाँच मुद के बराबर है और वुज़ू एक मुद पानी से और एक हदीस में है कि वुज़ू दो रतल पानी से करते थे।

(मदारिज नवुब्वत 1/589)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नमाज़ में कुल कितनी बार सह्व हुआ?

जवाबः साहिब सफ़र सआदत फ़रमाते हैं कि पाँच मुक़ामात ऐसे हैं जहाँ तमाम उम्र हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नमाज़ में सह्व से मुत्तसिफ़ फ़रमाया गया। इनके सिवा कहीं साबित नहीं:

1. ज़ोहर की नमाज़ में हुआ कि अव्वल तशहहुद में बैठे और फिर खड़े हो गए जब नमाज़ पूरी कर ली तो दो सज्दे किए और सलाम फेरा।
2. दूसरा मुक़ाम एक और मौक़ा है कि ज़ोहर की नमाज़ में दूसरी रकअत के बाद क़ादा फ़रमाया और सलाम फेरा। फिर याद आया तो नमाज़ को पूरा फ़रमाया ओर दो सजदे किए। उसके बाद सलाम फेरा।
3. तीसरा मौक़ा यह है कि एक रोज़ नमाज़ पढ़ी और बाहर तशरीफ़ ले आए एक रकअत बाक़ी रह गई थी। हज़रत तल्हा बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा आपके पीछे बाहर आए और अर्ज़ किया: या रसूलुल्लाह! एक रकअत आपने फ़रामोश कर दी। उसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में तशरीफ़ लाए और बिलाल को कहा कि इक़ामत कहें और एक रकअत जो फ़रामोश की थी अदा की।
4. चौथा मौक़ा यह है कि नमाज़ ज़ोहर अदा की और एक रकअत ज़्यादा की। सहाबा किराम ने अर्ज़ किया: एक रकअत ज़्यादा हो गई। फ़रमाया: कैसे? अर्ज़ किया: पाँच रकअतें पढ़ी हैं। उस वक़्त दो सज्दे सह्व किए और सलाम फेरा और उसी पर इख़्तिसार किया।
5. पाँचवाँ मौक़ा यह है कि अस्र की नमाज़ तीन रकअतें पढ़ीं और

काशाना अक़्दस में तशरीफ़ ले गए। सहाबा किराम ने बाद में बताया तो मस्जिद में तशरीफ़ लाए और एक रकअत अदा करके दो सज्दे किए फिर दोबारा सलाम फेरा।

यही पाँच मुक़ामात हैं जहाँ सह्व फ़रमाया है:

लेकिन ख़बरदार रहना चाहिए कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सह्व व निस्यान उन अक़्वाल में जो अहकाम व तबलीग़ से मुताल्लिक़ हैं बिलइत्तिफ़ाक़ जाएज़ नहीं लेकिन अफ़आल में चाहे नमाज़ में हो या ग़ैर नमाज़ में इख़्तिलाफ़ है। अहले हक़ के नज़दीक मुख़्तार उसके जाएज़ होने में है। हक़ीक़त में यह सह्व व निस्यान, हक़ तआला की हिकमत बालिग़ा से मुताल्लिक़ है कि उसकी बदौलत उम्मत को शरिअत के अहकाम और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इक़्तिदा की सआदत नसीब होती है। (मदारिज नबुव्वत 1/646, 647)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इमामत में पढ़ी जाने वाली आख़िरी नमाज़ कौन सी थी और उस नमाज़ में आपने कौन सी सूरत तिलावत फ़रमाई?

जवाबः वह मग़रिब की नमाज़ थी। उस नमाज़ में आपने सूरः "मुरसिलात" तिलावत फ़रमाई। (इब्ने कसीर 29/ सूरः मुरसिलात)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीमारी की मुद्दत कितने दिन रही?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुद्दत अलालत में अहले सैर का इख़्तिलाफ़ है। अक्सर का मज़हब यह है कि तेरह रोज़ थे। एक रिवायत में चौदह रोज़ है और बाज़ ने बारह रोज़ बयान किया है और एक गिरोह का मज़हब यह है कि दस रोज़। यह इख़्तिलाफ़ इब्तिदाए मर्ज़ और रोज़ वफ़ात में इख़्तिलाफ़ की वजह है।(मदारिज नबुव्वत 2/708)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दौरान बीमारी कितने गुलामों को आज़ाद फ़रमाया?

जवाबः चालीस गुलामों को आज़ाद फ़रमाया।(मदारिज नबुव्वत 710)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रूह क़ब्ज़ करने के लिए मलकुल मौत अलैहिस्सलाम अपने हमराह कितने फ़रिश्ते लाए थे?

जवाबः मलकुल मौत के साथ दो बड़े फ़रिश्ते और थे। एक जिब्राईल अलैहिस्सलाम और दूसरे इस्माईल अलैहिस्सलाम जो सत्तर हज़ार बरिवायत दीगर एक लाख फ़रिश्तों पर हाकिम है जिनमें का हर एक फ़रिश्ता सत्तर हज़ार या एक लाख फ़रिश्तों पर हाकिम है। यह सब फ़रिश्ते उनके हमराह थे।

(मदारिज नबुव्वत 2/727)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आख़िरी तीन सौंसों में क्या फ़रमाया था?

जवाबः आपने अपनी आख़िरी तीन सौंसों में से एक सांस में फ़रमायाः "अस्सलात" दूसरी में फ़रमायाः वमा मलकत ऐमानुकुम और आख़िरी सांस में फ़रमायाः अल्लाहुम्मा बिर्रफ़ीकिल आला।

(तफ़्सीर-नईमी 2/197)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को किन-किन हज़रात ने गुस्ल दिया?

जवाबः आपको गुस्ल देने के लिए चारों तरफ़ से चादर को ताना गया और उसमें हज़रत अब्बास, हज़रत अली, हज़रत फ़ज़्ल व क़सम, एक रिवायत में क़सम के बजाए अबू सुफ़ियान का नाम है और हज़रत उसामा बिन ज़ैद व शक़रान रज़ियल्लाहु अन्हुमा जमा हुए। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपको अपने सीने पर लिया और हाथों में दस्ताने पहनकर हाथों को पैरहन मुबारक में दाख़िल किया। हज़रत उसामा और शक़रान रज़ियल्लाहु अन्हुमा क़मीज़ मुबारक के ऊपर से पानी डालते थे हज़रत अब्बास व क़सम रज़ियल्लाहु अन्हुमा एक पहलू से दूसरे पहलू पर ले जाने पर। हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की इआनत व इमदाद करते थे और ग़ैब से भी गुस्ल में इआनत वाक़ेअ हुई।

(मदारिज नबुव्वत)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को किस कुँए के पानी से गुस्ल दिया और कितनी मिक्दार पानी से?

जवाबः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तीन मर्तबा पाक व साफ़ पानी बेरी के पत्ते और काफ़ूर के पानी से गुस्ल दिया गया। इब्ने माजा ने बसनद जैय्यद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल किया

फ़रमाया कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि जब मुझे गुस्ल दो बेर ग़रस के पानी के सात मश्कीज़े से देना। बेर ग़रस वह एक कुँवा है जो मदीना तैय्यबा से शुमाल की जानिब निस्फ़ मील की मुसाफ़त पर वाक़ेअ है। (मदारिज नबुव्वत 2/745)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को किस तरह के और कितने कपड़ों का कफ़न दिया गया?

जवाबः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तीन सफ़ेद सहूली कपड़ों में कफ़न दिया गया। सहूली से मुराद या तो सफ़ेद धुले हुए कपड़े हैं या फिर मुल्के यमन शहर सहूल की तरफ़ मंसूब है। एक रिवायत में "करसफ़" आया है यानी रूई। और करसफ़ एक बस्ती का नाम भी बताते हैं। एक रिवायत में आया है कि दो सफ़ेद कपड़े थे और एक यमनी चादर। एक रिवायत में सात की तादाद भी है। यह रिवायत ज़ईफ़ है।

(मदारिज नबुव्वत 2/746)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़े जनाज़ा किस तरह पढ़ी गई?

जवाबः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ अदा करना जमाअत के साथ न था बल्कि एक जमाअत आपके क़रीब आती और बग़ैर जमाअत के नमाज़ पढ़ती और निकल जाती फिर दूसरी जमाअत आती थी और पढ़ती थी। आपका जस्दे अक़्दस उसी हुज्रे मुबारक में था जहाँ आपको गुस्ल दिया गया। सबसे पहले मर्द दाख़िल हुए जब मर्द फ़ारिग़ हो गए तो औरतें दाख़िल हुईं और औरतों के बाद बच्चे आए।

अमीरुल मोमिनीन सैय्यदना अली रज़ियल्लाहु अन्हु से मंक़ूल है, फ़रमाया रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जनाज़ा शरीफ़ पर किसी ने इमामत न की इसलिए कि हुज़ूर अय्यामे हयात व ममात में हमारे इमाम हैं। बहुत सी नमाज़ें हुई और तन्हा तन्हा लोगों ने पढ़ीं।

(मदारिज नबुव्वत 2/74)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कितनी नमाज़ें पढ़ी गयीं?

रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कितनी नमाज़ें पढ़ी गयीं?

जवाबः अल्लामा इब्ने माजसून रहमतुल्लाह अलैहि से लोगों ने पूछाः उन्होंने फ़रमायाः सत्तर लोगों ने पूछाः आपको यह कहाँ से पता चला। फ़रमायाः उस संदूक़ से जो इमाम मालिक ने अपनी तहरीर से छोड़ा और वह नाफ़े से और वह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है। लिहाज़ा ज़ाहिर है कि इससे फ़रिश्तों के सिवा सहाबा किराम की नमाज़ें होंगी।
(मदारिज नबुव्वत 2/749)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़े जनाज़ा सबसे पहले किन लोगों ने पढ़ी?

जवाबः एक रिवायत में है कि सबसे पहले जिन्होंने जनाज़े शरीफ़ की नमाज़ पढ़ी वे अहले बैत नबुव्वत थे। हज़रत अली, हज़रत अब्बास और बनू हाशिम रज़ियल्लाहु अन्हुम। उसके बाद मुहाजिरीन। उनके बाद अंसार आए फिर और लोग। जमाअत की जमाअत दाख़िल होती और नमाज़ अदा करती जाती थी। (मदारिज नबुव्वत 2/748)

यह तर्तीब तो सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की नमाज़ की थी। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जब लोगों ने पूछा था कि आप पर सबसे पहले कौन जनाज़ा पढ़े? तो आपने फ़रमाया थाः सबसे पहले जो मेरी नमाज़ जनाज़ा पढ़ेगा वह मेरे दोस्त जिब्राईल होंगे। फिर मीकाईल फिर इसराफ़ील फिर मलकुल मौत गिरोह मलाकइा के साथ। एक रिवायत में आया है कि सबसे पहले जो मुझ पर नमाज़ पढ़ेगा वह मेरा रब है। उसके बाद यह फ़रिश्ते जिनका ज़िक्र हुआ। उसके बाद फ़ौज दर फ़ौज आयीं और नमाज़ें पढ़ीं और नमाज़ की इब्तिदा मेरे अहले बैत करें। (मदारिज नबुव्वत 2/748)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़े जनाज़ा में पढ़ी जाने वाली दुआ कौन सी थी?

जवाबः मन्क़ूल है कि जिस वक़्त अहले बैत ने नमाज़ पढ़ ली तो लोगों को मालूम न हुआ कि क्या पढ़ें और क्या दुआ करें? फिर लोगों ने हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा। उन्होंने बताया कि तुम हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछो। फिर लोगों ने हज़रत अली

रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा तो आपने फ़रमाया:

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهُ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا. اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ صَلٰوتُ اللّٰهِ الْبَرِّ الرَّحِيْمِ، وَالْمَلٰٓئِكَةِ الْمُقَرَّبِيْنَ وَالنَّبِيِّيْنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ وَمَا سَبَّحَ لَكَ مِنْ شَيْءٍ يَا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ عَلٰى مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ. خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ وَسَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَاِمَامِ الْمُتَّقِيْنَ وَرَسُوْلِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ الشَّاهِدِ الْبَشِيْرِ، الدَّاعِيْ بِاِذْنِكَ السِّرَاجِ الْمُنِيْرِ وَعَلَيْهِ السَّلَامُ.

(मदारिज नबुव्वत 2/749)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तदफ़ीन के सिलसिले में सहाबा किराम के बीच क्या राय मश्वरे हुए और किस किस राय पर अमल किया गया?

जवाबः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तदफ़ीन में इख़्तिलाफ़ हुआ कि कहाँ दफ़न करें। एक जमाअत ने कहा कि उस हुजरे में जहाँ आपने इंतिक़ाल फ़रमाया। एक जमाअत ने कहा मस्जिद शरीफ़ में। एक गिरोह ने कहा बक़ी के मक़बरे में और कुछ और लोगों ने कहा "क़ुद्दस" में क्योंकि तमाम नबियों की क़ब्रें वहाँ हैं। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः मैंने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि एक रिवायत में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि फ़रमाया रूए ज़मीन पर कोई ख़ित्ता ख़ुदा तआला के नज़दीक इस ख़ित्ते गिरामी तर नहीं है जिसमें नबी की रूह का क़ब्ज़ किया गया। उसके बाद आपके बिस्तर मुबारक को उठाया गया और इसी ख़ास जगह पर क़ब्र खोदना तय पाया।

(मदारिज नबुव्वत 2/750)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्रे मुबारक किसने खोदी और किस तरीक़े पर खोदी?

जवाबः मदीना तैय्यबा में दो शख़्स क़ब्र खोदने वाले थे एक हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु जो बतरीक़े शक़ जिसे शामी भी

कहते हैं क़ब्र खोदते थे। और दूसरे हज़रत अबू तल्हा अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु जो बतरीक़ लहद खोदते थे। इस पर हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः ऐ खुदा! अपने हबीब के लिए वह चीज़ इख़्तिया फ़रमा जो महबूब व मुख़्तार हो। और फिर दो आदमी भेजे एक हज़रत अबू तल्हा को बुलाने और दूसरे हज़रत अबू उबैदा को बुलाने के लि और फ़रमायाः जो पहले आ जाए वही अपने तरीक़े पर काम करे। हज़रत अबू उबैदा उस शख़्स को न मिले जो उन्हें बुलाने गया था और हज़रत अबू तल्हा आ गए। उसके बाद लहद के तरीक़ तैयार की गई।

(मदारिज नबुव्वत 2/75

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किस रोज़ विसा हक़ फ़रमाया और किस दिन और किस वक़्त आपकी तदफ़ी अमल में आयी?

जवाबः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोज़ पीर व विसाल हक़ फ़रमाया था और मंगल का पूरा दिन आपका तख़्त शरी आपके हुजरे मुबारक में रहा और लोग नमाज़ पढ़ते रहे। बुध को सु का वक़्त था कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दफ़न किया गय

(मदारिज नबुव्वत 2/749, 75

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़ब्र की कि जानिब से क़ब्र में उतारा गया?

जवाबः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़दम अक़ की जानिब से क़ब्रे अनवर में दाख़िल किया गया।

(मदारिज नबुव्वत 2/7

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र मुबारक कौन कौन हज़रात उतरे थे?

जवाबः सही यह है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़ अब्बास, हज़रत फ़ज़ल बिन अब्बास और क़सम बिन अब्बास ह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र अनवर में दाख़िल हुए।

(मदारिज 2/7

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब क़ब्र मुबार

उतारा गया तो आप अपने लबों मुबारक को जुंबिश फ़रमा रहे थे, तो किस सहाबी ने कान लगाकर सुना और आप क्या फ़रमा रहे थे?

जवाबः हज़रत क़सम बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैंः मैंने क़ब्र में देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने लब मुबारक को जुंबिश फ़रमा रहे हैं। मैंने कानों को आपके दहन मुबारक के क़रीब किया मैं सुना कि आप फ़रमाते थे, "रब्बी उम्मती उम्मती।"

(मदारिज नबुव्वत 2/751)

सवालः वह आख़िरी सहाबी कौन थे जिन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रूए अनवर क़ब्र अतहर में देखा था?

जवाबः वह हज़रत क़सम बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा हैं। उन्होंने खुद फ़रमाया कि आख़िरी शख़्स जिसने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रूए अनवर क़ब्र अतहर में देखा, मैं था।

(मदारिज नबुव्वत 2/751)

सवालः क़ब्रे अनवर में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नीचे क्या बिछाया गया और किसने बिछाया?

जवाबः बहरैन की सुर्ख़ मख़मली चादर जो ख़ैबर के रोज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहुँची थी और उसे आप ओढ़ते थे उसे बिछाया गया। कहते हैं कि उसके बिछाने वाले शक़रान रज़ियल्लाहु अन्हु थे। उसने कहाः मैं नहीं पसंद करता कि आपके बाद उसे कोई दूसरा ओढ़े। (मदारिज नबुव्वत 2/751)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र अनवर को किन चीज़ों से बनाया गया?

जवाबः कच्ची ईंट से बनाई गई। उसके बाद लहद पर मिट्टी डाली गई और सुर्ख़ व सफ़ेद संगरेज़े जमाए गए। (मदारिज नबुव्वत 2/751)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्रे मुबारक ज़मीन से किनती ऊँची की गई?

जवाबः क़ब्र शरीफ़, ज़मीन से एक बालिश्त जितनी ऊँची की गई। एक रिवायत में चार उंगल आया है।

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र मुबारक पर

कितना पानी छिड़का गया और किसने छिड़का?

जवाबः हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने कब्र शरीफ़ पर एक मश्कीज़ा पानी छिड़का और सरहाने की तरफ़ से छिड़कना शुरू किया।

(मदारिज नबुव्वत 2/752)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तर्के में क्या चीज़ें छोड़ी?

जवाबः वह ये हैंः

एक दराज़ गोश (गधा), अस्लहा, क़मीज़ मुबारक, चादर शरीफ़ और इसी क़िस्म के कुछ और लिबास और बनी नज़ीर, ख़ैबर और फ़िदक की ज़मीन जो आपके लिए ख़ास थीं। (मदारिज नबुव्वत 2/757)

○ ○ ○

मुख़्तलिफ़ अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम के बारे में सवाल और जवाब

सवालः दुनिया में कितने अंबिया, मुरसलीन अलैहिमुस्सलाम तशरीफ़ लाए?

जवाबः हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत सुल्ताने रिसालत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तादाद अंबिया व मुरसलीन अलैहिमुस्सलाम के बारे में पूछा तो आपने फ़रमायाः

दुनिया में एक लाख चौबीस हज़ार अंबिया और तीन सौ तेरह रसूल अलैहिमुस्सलाम तशरीफ़ लाए।(मिश्कात शरीफ़ 511, तफ़्सीर नईमी 1/855)

एक रिवायत में रसूलों की तादाद तीन सौ पंद्रह है। (मिश्कात 511)

सवालः हज़रत शीस अलैहिस्सलाम की विलादत के वक़्त आदम अलैहिस्सलाम की उम्र कितनी थी?

जवाबः उस वक़्त हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की उम्र शरीफ़ एक सौ तीन साल की थी। (रूहुल बयान 1/555)

दूसरी रिवायत के मुताबिक़ एक सौ बीस साल।

सवालः हज़रत शीस अलैहिस्सलाम की विलादत क़त्ल हाबील के कितने साल बाद हुई?

जवाबः आपकी विलादत हाबील के क़त्ल के पाँच साल बाद हुई।

(अल कामिल फि तारीख़ 1/20)

सवालः हज़रत शीस अलैहिस्सलाम की क़ब्र मुबारक कहाँ है?

जवाबः आपकी क़ब्र शरीफ़ अयोध्या फ़ैज़ाबाद में है।

(तफ़्सीर नईमी 3/664)

सवालः हज़रत लूत अलैहिस्सलाम के वालिद का नाम क्या है?

जवाबः आपके वालिद का नाम हारान बिन आज़र है।

(अल अतक़ान फी उलूमुल क़ुरआन 2/176)

एक रिवायत यह भी है कि आपके वालिद मोहतरम का नाम आज़ूर
(हाशिया 32, जलालेन 185)
बिन आज़र है।

सवालः हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की काफ़िरा बीवी का नाम क्या था?

जवाबः आपकी उस बीवी का नाम वाएला था।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 28/20)

बाज़ ने वालिहा और बाज़ ने वाहिला कहा है।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/189, हाशिया 6, जलालेन 315)

सवालः हज़रत हूद अलैहिस्सलाम का असली नाम क्या है?

जवाबः इब्ने हिशाम ने आपका असली नाम आविर बिन अरफ़हशज़ कहा है। लेकिन राजेह क़ौल यह है कि आपका असली नाम हूद ही था।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/177)

सवालः हज़रत हूद अलैहिस्सलाम के वालिद का नाम क्या है?

जवाबः इब्ने हिशाम ने आपके वालिद का नाम अरफ़हशज़ बिन साम कहा है लेकिन बक़ौल सही अब्दुल्लाह बिन रियाह नाम है।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/177)

सवालः हज़रत हूद अलैहिस्सलाम का सिलसिला नसब नूह अलैहिस्सलाम तक़ किन वास्तों से है?

जवाबः राजेह क़ौल के मुताबिक़ हज़रत नूह अलैहिस्सलाम तक आपका सिलसिला नसब यूँ हैः

हूद बिन अब्दुल्लाह बिन रियाह बिन हाविज़ बिन आद बिन औस बिन इरम बिन साम बिन नूह अलैहिस्सलाम।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/177)

सवालः हज़रत हूद अलैहिस्सलाम की क़ब्रे अनवर कहाँ है?

जवाबः हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रमूत के रहने वाले एक आदमी से कहा कि क्या तुमने सरज़मीन हज़रमूत में कोई सुर्ख़ टीला देखा है जिसकी मिट्टी सुर्ख़ है और उस टीले के फ़लां फ़लां किनारे पर बेरी और पैलू के पेड़ कसरत से हैं? उसने कहाः हाँ अमीरुल मोमिनीन! ख़ुदा कि क़सम आप तो इस तरह फ़रमा रहे हैं जैसे ख़ुद अपनी आँखों से देखा

हो। आपने फ़रमायाः देखा तो नहीं लेकिन मुझ तक एक ऐसी हदीस पहुँची है। उसने कहाः या अमीरुल मोमिनीन आप इस बारे में क्या चाहते हैं? आपने कहाः यहीं हज़रत हूद अलैहिस्सलाम की क़ब्र शरीफ़ है।

(इब्ने कसीर 8/16)

एक रिवायत में है कि आपकी क़ब्र शरीफ़ बैतुल्लाह में रुक्ने यमानी और रुक्ने असवद के बीच उस बुक़अ में है जिसको रौज़तु मिन रियाज़ुल जन्नः कहते हैं। (हाशिया 17, जलालैन 184)

सवालः हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम के वालिद का क्या नाम है?

जवाबः आपके वालिद माजिद का नाम मीकाईल और दादा का नाम यशजन है। (अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/177)

सवालः हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम का शजरा नसब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम तक किन वास्तों से है?

जवाबः हज़रत इमाम नुव्वी रहमतुल्लाह अलैहि की तहक़ीक़ के मुताबिक़ आपका सिलसिला नसब यूँ हैः

हज़रत शुएब बिन मीकाईल बिन यशजन बिन मदयन बिन इब्राहीम अलैहिस्सलाम।

और हज़रत इब्ने इस्हाक़ ने आपका सिलसिला नसब यूँ बयान किया हैः हज़रत शुएब बिन मीकाईल बिन यशजन बिन लावा बिन याक़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम अलैहिमुस्सलाम।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/177)

सवालः हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम की उम्र कितनी हुई?

जवाबः आपकी उम्र शरीफ़ तीन हज़ार साल हुई। एक क़ौल के मुताबिक़ तीन हज़ार छः सौ साल। (हाशिया 1 जलालैन 32)

सवालः हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम की क़ब्रे मुक़द्दस कहाँ है?

जवाबः आपकी क़ब्र शरीफ़ बैतुल्लाह में उस बुक़अ में है जिसको रौज़तु मिन रियाज़ुल जन्नः कहते हैं। (हाशिया 27/184)

सवालः हज़रत ज़ुल किफ़्ल अलैहिस्सलाम का असली नाम क्या है और आपको ज़ुल किफ़्ल क्यों कहा जाता है?

जवाबः आपका नाम हज़क़ील अलैहिस्सलाह है। आपको ज़ुल किफ़्ल

इसलिए कहते हैं कि एक दफ़ा आपने सत्तर पैग़ंबरों का ज़ामिन बनकर उनको क़त्ल से बचाया था। ज़ुल किफ़्ल के माने हैं ज़मानत वाले। आप हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के तीसरे ख़लीफ़ा हैं कि मूसा अलैहिस्सलाम के ख़लीफ़ा हज़रत यूशा बिन नून, उनके ख़लीफ़ा कालब इब्ने यूहन्ना और उनके ख़लीफ़ा आप हैं। (तफ़्सीर नईमी 2/512)

हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन स्युती रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि आपका असली नाम बशर है।(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/178)

सवालः हज़रत ज़ुल किफ़्ल अलैहिस्सलाम के वालिद का नाम क्या है?

जवाबः आपके वालिद का नाम यूज़ी है। (तफ़्सीर नईमी 2/512)

हज़रत वहब रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि आप हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के बेटे हैं। आपका नाम बशर बिन अय्यूब है।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/178)

सवालः हज़रत ज़ुल किफ़्ल अलैहिस्सलाम का इंतिक़ाल किस जगह हुआ और आपकी उम्र कितनी हुई?

जवाबः आप मुल्के शाम में मुक़ीम रहे और वहीं आपका विसाले हक़ हुआ और आपकी उम्र पिचहत्तर साल हुई।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/178)

सवालः हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का मछली के पेट में पहुँचने का वाक़िआ क्या है?

जवाबः अइम्मा तफ़्सीर आपका वाक़िआ यूँ बयान करते हैं:

आपकी क़ौम कुफ़्र और शिर्क में मुब्तला थी। आपने बुतपरस्ती छोड़ने और ईमान लाने का हुक्म दिया। उन लोगों ने इंकार किया और आपको झुठलाया। आपने अल्लाह के हुक्म से उन्हें अज़ाबे इलाही के नाज़िल होने की ख़बर दी। उन लोगों ने आपस में कहा कि हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने कभी कोई बात ग़लत नहीं कही है। देखो अगर वह रात को यहाँ रहे तब तो कोई अंदेशा नहीं और अगर उन्होंने रात यहाँ न गुज़ारी तो समझ लेना कि अज़ाब आएगा।

हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम शब में वहाँ से तशरीफ़ ले गए और सुबह

को अज़ाब के आसार नमूदार हो गए। आसमान पर स्याह हैबतनाक अब्र आया और कसीर धुँआ जमा हुआ जो तमाम शहर पर छा गया। यह देखकर क़ौम को यक़ीन हुआ कि अज़ाब आने वाला है तो उन्होंने आपकी तलाश की और आपको न पाया। अब उन्हें और ज़्यादा अंदेशा हुआ। वे अपने औरतों और जानवरों से समेत जंगल को निकल गए। और तौबा की। इस्लाम का इज़्हार किया। सबने बारगाहे इलाही में गिरया व ज़ारी शुरू की। कहा कि जो यूनुस ईमान लाए उस पर हम ईमान लाए और सच्ची तौबा की। जो ज़ुल्म उनसे हुए थे उनको दफ़ा किया, पराए माल वापस किए और अल्लाह तआला से इख़्लास के साथ मग़फ़िरत की दुआएं की। परवरदिगार आलम ने उन पर रहम किया, दुआ क़ुबूल फ़रमाई और अज़ाब उठा लिया। इधर हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम वहाँ से चलकर एक किश्ती पर सवार हो गए। किश्ती चलते ही चारों तरफ़ से मौजें उठी और सख़्त तूफ़ान आया। यहाँ तक कि सबको अपनी मौत और किश्ती के डूब जाने का यक़ीन हो गया। सब आपस में कहने लगे कि पर्ची डालो जिसके नाम पर्ची निकले उसको समुन्दर में डाल दो ताकि सब बच जाएं और किश्ती इस तूफ़ान से निकल जाए। तीन दफ़ा पर्ची डाली गई और तीनों दफ़ा हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का नाम निकला। किश्ती वाले आपको दरिया में डालना नहीं चाहते थे लेकिन क्या करते बार बार की पर्ची डालने पर आपका नाम ही निकलता रहा। और फिर आप खुद कपड़े उतारकर उन लोगों के रोकने के बावजूद समुन्दर में कूद पड़े। उसी वक़्त बहरे अख़्ज़र की बड़ी मछली को अल्लाह तआला का हुक्म हुआ कि वह दरियाओं को चीरती फाड़ती जाए और हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को निगल ले। लिहाज़ा उस मछली ने आपको निगल लिया और समुन्दर में चलने फिरने लगी। (इब्ने कसीर 17/6)

सवालः हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम मछली के पेट में कितनी मुद्दत रहे?

जवाबः इस बारे में चंद अक़वाल हैं:

1. हज़रत इब्ने अबि हातिम ने अबू मालिक से रिवायत की है कि आप मछली के पेट में चालीस दिन रहे।

2. जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत के मुताबिक़ सात दिन।
3. क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत के मुताबिक़ तीन दिन।
4. शावई रहमतुल्लाह अलैहि की रिवायत के मुताबिक़ चार घंटे।

(अल अतक़ान फी उलूमुल क़ुरआन 2/178)

5. बीस दिन।
6. और चौदह दिन की भी रिवायतें हैं। (हयातुल हैवान 1/479)

सवालः हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने मछली के पेट से बाहर आने के बाद सबसे पहले क्या चीज़ खाई?

जवाबः जब आप मछली के पेट से बाहर आए तो वहीं दरिया के किनारे पर अल्लाह तआला ने आपके लिए कद्दू का पेड़ उगाया। उसको आपने तनावुल फ़रमाया। और अल्लाह के हुक्म से रोज़ाना एक बकरी आती और अपना थन हज़रत के मुँह मुबारक में देकर आपको सुबह शाम दूध पिला जाती। यहाँ तक कि आप तंदरुस्त और सेहतमंद हो गए।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 23/9)

सवालः हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम के वालिद का क्या नाम है?

जवाबः आपके वालिद का नाम मता है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 17/6)

सवालः हज़रत यूशा बिन नून अलैहिस्सलाम और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बीच क्या रिश्ता है?

जवाबः आप हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बेटे अफ़रातीम के पोते थे। (इब्ने कसीर 13/1)

सवालः हज़रत इलयास अलैहिस्सलाम के वालिद और दादा का नाम क्या है?

जवाबः आपके वालिद का नाम नसी और दादा का नाम फ़ख़ास है।

(तफ़्सीर नईमी 2/526)

अल्लामा स्युती रहमतुल्लाह अलैहि ने बयान किया है कि इब्ने इस्हाक़ का क़ौल है कि आपके वालिद का नाम यासीन बिन फ़ख़ास है।

(अल अतक़ान फी उलूमुल क़ुरआन 2/179)

सवालः हज़रत इलयास अलैहिस्सलाम का सिलसिला नसब किस तरह है?

जवाबः आपका सिलसिला नसब यूँ हैः

इलयास बिन नसी बिन फ़ख़ास बिन अनीरार बिन हारून अलैहिस्सलाम।

(तफ़्सीर नईमी 2/526)

इब्ने इस्हाक़ के मुताबिक़ यूँ हैः

इलयास बिन यासीन बिन फ़ख़ास बिन अनीरार बिन हारून अलैहिस्सलाम। (अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/179)

सवालः हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम के वालिद का नाम क्या है?

जवाबः आपके वालिद का नाम शरख़िया है।

(हाशिया 15, जलालैन 40)

सवालः हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम की उम्र उस वक़्त कितनी थी जब आप वफ़ात पाकर दोबारा ज़िंदा हुए?

जवाबः उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ चालीस साल की थी।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 3/3)

सवालः हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम के वफ़ात पाने फिर दोबारा ज़िंदा होने के वाक़िए की तफ़्सील क्या है?

जवाबः इस वाक़िए की तफ़्सील यूँ हैः

जब बख़्ते नसर बादशाह ने बैतुल मुक़द्दस को वीरान किया, बनी इस्राईल को गिरफ़्तार किया और तबाह कर डाला तब हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम वहाँ से गुज़रे। आपके साथ एक बर्तन खजूर और एक प्याला अंगूर का रस था। आप एक गधे पर सवार थे। तमाम बस्ती में फिरे। किसी शख़्स को वहाँ न पाया। बस्ती की इमारत को ढाए हुए देखा तो आपने ताज्जुब के साथ कहाः اَنّٰى يُحْيٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا

इसे क्यों कर जिलाएगा अल्लाह तआला इसकी मौत के बाद।

आपने अपनी सवारी के गधे को वहाँ बांध दिया और आराम फ़रमाने ल और इसी हालत में आपकी रूह क़ब्ज़ कर ली गई। गधा भी मर गया। यह सुबह के वक़्त का वाक़िआ है। इसके सत्तर बरस बाद अल्लाह तआला ने शाहाने फ़ारस में से एक को मुसल्लत किया। वह अपनी फ़ौजें लेकर बैतुल मुक़द्दस पहुँचा। बैतुल मुक़द्दस को पहले से भी बेहतर तरीक़े पर आबाद किया। बनी इस्राईल में से कुछ लोग बाक़ी रहे थे।

अल्लाह तआला उन्हें फिर यहाँ लाया। उस ज़माने में अल्लाह तआला ने हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम को दुनिया की आँखों से पोशीदा रखा और कोई आपको न देख सका। जब आपकी वफ़ात को सौ बरस गुज़र गए तो अल्लाह तआला ने आपको ज़िंदा किया। पहले आँखों में जान आई अभी तक तमाम जिस्म मुर्दा था। वह आपके देखते देखते ज़िंदा किया गया। आपने अपना खाना और पानी यानी खजूर और अंगूर के रस को देखा। वैसा ही था उसमें बू तक न आई। फिर आपने अपने गधे को देखा जो मरकर घुल गया था। उसके आज़ा बिखर गए थे, हड्डियाँ सफ़ेद चमक रही थीं। आपकी निगाह के सामने उसके आज़ा जमा हुए और अपने अपने ठिकाने पर आए, हड्डियों पर गोश्त चढ़ा, गोश्त पर खाल आई, बाल निकले। फिर उसमें रूह फूंकी गई। वह उठ खड़ा हुआ और आवाज़ करने लगा। आपने अल्लाह की क़ुदरत का मुशाहिदा किया और फ़रमायाः मैं ख़ूब जानता हूँ कि अल्लाह तआला हर शय पर क़ादिर है। फिर आप अपनी सवारी पर सवार होकर मौहल्ले में तशरीफ़ लाए।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 3/3)

सवालः हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम वफ़ात पाने के कितने साल बाद दोबारा ज़िंदा हुए और लोगों ने आपको किस तरह पहचाना?

जवाबः जब आप सौ बरस के बाद ज़िंदा हुए और अपने मौहल्ले में तशरीफ़ लाए। आपके सर अक़्दस और दाढ़ी मुबारक के बाल सफ़ेद थे। उम्र वही चालीस साल थी। कोई आपको न पहचानता था। अंदाज़े से अपने मकान पर पहुँचे। एक ज़ईफ़ बुढ़िया मिली जिसके पाँव रह गए थे। वह नाबीना हो गई थी। वह आपके घर की बांदी थी। उसने पहले भी आपको देखा था। आपने उससे पूछा कि यह उज़ैर का मकान है? उसने कहाः हाँ। और उज़ैर कहाँ? बोलीः उन्हें गुज़रे हुए सौ साल गुज़र गए हैं। यह कहकर ख़ूब रोई। आपने फ़रमायाः मैं उज़ैर हूँ। उसने कहाः सुब्हानअल्लाह! यह कैसे हो सकता है? आपने कहाः अल्लाह तआला ने मुझे सौ बरस मुर्दा रखा फिर ज़िंदा किया। उसने कहाः हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम मुस्तजाबुद्दावात थे जो दुआ करते क़ुबूल होती। आप दुआ कीजिए, मैं बीना हो जाऊँ ताकि मैं अपनी आँखों से आपको देख

सकूं। आपने दुआ फ़रमाई। वह बीना हुई। आपने उसका हाथ पकड़कर फ़रमाया: उठ ख़ुदा के हुक्म से! यह फ़रमाते हुए उसके मरे हुए पाँव सही हो गए।। उसने आपको देखा, पहचाना और कहा: मैं गवाही देती हूँ कि आप बेशक हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम हैं। वह आपको बनी इस्राईल के मौहल्ले में ले गई। वहाँ एक मज्लिस में आपके बेटे थे जिनकी उम्र एक सौ अठ्ठारह साल हो चुकी थी और आपके पोते भी थे जो बूढ़े हो चुके थे। बुढ़िया ने मज्लिस में पुकारा कि यह हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम तशरीफ़ ले आए। मज्लिस वालों ने उसको झुठलाया। उसने कहा: मुझे देखो, आपकी दुआ से मेरी यह हालत हो गई। लोग उठे और आपके पास गए। आपके बेटे ने कहा कि मेरे वालिद साहब के कंधों के बीच काले बालों को एक हिलाल था। जिस्मे मुबारक खोलकर दिखाया तो वह मौजूद था। उस ज़माने में तौरैत का कोई नुस्ख़ा न रहा था। कोई उसका जानने वाला भी न था। आपने तमाम तौरैत हिफ़्ज़ पढ़ दी। एक आदमी ने कहा: मुझे अपने वालिद से मालूम हुआ कि बख़्ते नसर की सितम अंगेज़ियों के बाद गिरफ़्तारी के ज़माने में मेरे दादा ने तौरैत एक जगह दफ़न कर दी थी। उसका पता मुझे मालूम है। उस पते पर तलाश करके तौरैत का वह नुस्ख़ा निकाला गया और हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम ने अपनी याद से जो तौरैत लिखाई थी उससे मुक़ाबला किया गया तो एक हर्फ़ का भी फ़र्क़ न था। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 3/3)

सवाल: कितने अंबिया किराम के नाम अरबी हैं और कितनों के अजमी?

जवाब: चार अंबिया मुरसलीन किराम अलैहिमुस्सलाम के नाम अजमी हैं। वे चार ये हैं:

1. हज़रत आदम अलैहिस्सलाम,
2. हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम,
3. हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम,
4. हज़रत सैय्यदुल अंबिया मुहम्मद रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। (अल अतक़ान फी उलूमुल क़ुरआन 175)

सवाल: औलादे आदम में सबसे पहले नबी कौन हैं?

जवाबः वह हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम हैं।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 16/7, अल अतक़ान फी उलूमुल क़ुरआन 2/175)

सवालः सबसे पहले साहिबे शरिअत पैग़ंबर कौन हैं?

जवाबः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम हैं। (तफ़्सीर नईमी 2/348)

सवालः अव्वलीन नबी जो कुफ़्फ़ार के रुश्द व हिदायत के लिए मबऊस हुए कौन हैं?

जवाबः हज़रत नूह अलैहिस्सलाम पहले नबी हैं जो कुफ़्फ़ार की हिदायत के लिए आए। आपसे पहले के पैग़म्बर मोमिनीन को ही हिदायत पर रखने के लिए आए थे। (तफ़्सीर नईमी 2/348)

सवालः अव्वलीन नबी जो नबुव्वत के साथ साथ सलतनत से भी सरफ़राज़ हुए कौन हैं?

जवाबः हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पहले नबी हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने नबुव्वत के साथ साथ सलतनत से भी सरफ़राज़ फ़रमाया। आप से पहले सलतनत व नबुव्वत दोनों का एज़ाज़ एक साथ किसी को नहीं मिला। (हाशिया 1, जलालैन 382)

सवालः वे कौन कौन से नबी हैं कि उनका नाम उनके वजूदे आदमियत में आने से पहले ही रखा गया?

जवाबः पाँच अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम के नाम वे ये हैं:

1. नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, इर्शादे बारी है:

وَمُبَشِّرًا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْ بَعْدِي اسْمُهٗ اَحْمَدُ

2. हज़रत याहया अलैहिस्सलाम, इर्शादे बारी है:

اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ۨاسْمُهٗ يَحْيٰى

3. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, इर्शादे रहमानी है: مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का एक नाम मसदक़ और एक कलीमतुल्लाह है।

4. हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम

5. हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम, इर्शादे क़ुरआनी है:

فَبَشَّرْنَاهَا بِإِسْحٰقَ وَمِنْ وَّرَآءِ إِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/179)

सवालः कितने और कौन-कौन से नबी ख़त्ना शुदा पैदा हुए?

जवाबः वह तेरह अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम हैं। उनके नाम नीचे लिखे हैं:

1. हज़रत आदम अलैहिस्सलाम, 2. हज़रत शीस अलैहिस्सलाम, 3. हज़रत नूह अलैहिस्सलाम 4. हज़रत साम अलैहिस्सलाम, 5. हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम 6. हज़रत लूत अलैहिस्सलाम, 7. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम, 8. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, 9. हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम, 10. हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम, 11. हज़रत याह्या अलैहिस्सलाम, 12. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, 13. हज़रत सैय्यदुल अंबिया मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

मुहम्मद बिन हबीब हाशमी से चौदह नक़ल किए हैं:

1. हज़रत आदम अलैहिस्सलाम, 2. हज़रत शीस अलैहिस्सलाम, 3. हज़रत नूह अलैहिस्सलाम 4. हज़रत हूद अलैहिस्सलाम, 5. हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम, 6. हज़रत लूत अलैहिस्सलाम, 7. हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम, 8. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम, 9. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, 10. हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम, 11. हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम, 12. हज़रत हंज़ला बिन अबि सफ़्वान अलैहिस्सलाम, 13. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, 14. हज़रत ख़ातिमुन्नबिय्यीन अलैहिस्सलातु वस्सलाम।

(हयातुल हैवान 1/97)

सवालः ऊलुल अज़्म अंबिया अलैहिमुस्सलाम कितने हैं?

जवाबः पाँच अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम हैं:

1. हज़रत नूह अलैहिस्सलाम, 2. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, 3. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, 4. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, 5. हज़रत मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

(हयातुल हैवान 1/97)

सवालः कितने और कौन-कौन से नबी ज़ाहिरी हयाते तैय्यबा के साथ मौजूद हैं?

जवाबः ये चार अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम हैं:

दो आसमान पर हज़रत ईसा और हज़रत इदरीस अलैहिमुस्सलाम और दो ज़मीन पर हज़रत इलयास और हज़रत ख़िज़र अलैहिमुस्सलाम।

(तफ़्सीर नईमी 1/881, तफ़्सीर अलम नश्रह 191)

सवालः आसमान पर उठाए जाने वाले नबी कितने और कौन-कौन से हैं?

जवाबः दो हज़रत ईसा और हज़रत इदरीस अलैहिमस्सलाम।

(सावी, ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 3 /13, 16/7)

सवालः कितने पैग़ंबरों के ज़रिए मुर्दे ज़िंदा हुए?

जवाबः छः अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम के ज़रिए। उनकी तफ़्सील ज़ैल में दर्ज है:

1. हज़रत हज़कील अलैहिस्सलाम, आपकी दुआ से बनी इस्राईल के उन सत्तर हज़ार आदमियों को अल्लाह तआला ने ज़िंदा फ़रमाया जो ताउन के ख़ौफ़ से आबादी से निकलकर जंगल की तरफ़ चले गए थे और उन्हें वहीं मौत आ गई थी।
2. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, जिनके ज़रिए चार जानवर ज़िब्ह और क़ीमा कर देने के बाद ज़िंदा हुए।
3. हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम, आपके ज़रिए मुर्दा गधा ज़िन्दा हुआ।
4. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, जिन्होंने कई मुर्दों को ज़िन्दा फ़रमा दिया।

इन चारों रसूलों का मुर्दा ज़िन्दा फ़रमाना क़ुरआन में साफ़ ज़िक्र है।

5. हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिन सरकार ने अपने वालदैन हज़रत आमना व हज़रत अब्दुल्लाह और बहुत से मुर्दों को ज़िंदा फ़रमाया। जिसका ज़िक्र अहादीस शरीफ़ और तारीख़ की किताबों, शामी शरीफ़ और मदारिज में है।

(तफ़्सीर नईमी 2/510, 51

6. हज़रत जरजीस अलैहिस्सलाम, आपकी दुआ से सत्रह आदमी

अल्लाह के हुक्म से ज़िंदा हो गए जिनमें से नौ मर्द और पाँच औरतें और तीन बच्चे थे। आपके अहद के बादशाह ने कहा था कि अगर तेरा खुदा मुर्दों को ज़िंदा कर दे तो हम उसकी पूजा करेंगे। लिहाज़ा पास ही में एक पुराना क़ब्रिस्तान था। वहाँ आप लोगों के साथ तशरीफ़ लाए और मुर्दों को ज़िंदा फ़रमाया।

(मल्फ़ूज़ात ख़्वाजा हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया 130)

सवालः कितने नबी अल्लाह तआला से बिला वास्ता हमकलाम हुए और कहाँ कहाँ?

जवाबः दो नबियों नेः

1. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, तूरे सीना पर,
2. हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, शबे मैराज को उरूज अर्श पर। (सावी, जमल 3/245)

सवालः कितने नबियों के लिए मकड़ियों ने जाला तना और कहाँ कहाँ?

जवाबः दो नबियों के लिएः

1. नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए हिजरत के मौक़े पर,
2. हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के लिए जब तालूत ने आपको क़त्ल करने का इरादा किया तो आप एक ग़ार में जा छिपे। तालूत को मालूम हुआ तो ग़ार पर तलाश करने लगा। तब मकड़ी ने उस ग़ार के दहाने पर जाला तन दिया था जिसे देखकर तालूत तलाश में ग़ार के अंदर न गया। (हयातुल हैवान 2/286, मदारिज नबुव्वत 2/99)

सवालः वे कितने और कौन कौन से नबी हैं जिनके दो दो नाम हैं?

जवाबः ऐसे सिर्फ़ दो नबी हैंः

1. हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कि आपका ज़ाती नाम "मुहम्मद" और "अहमद" है और सिफ़ाती नाम सैंकड़ों बल्कि हज़ारों हैं।

2. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, (ईसा और मसीह)।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/179)

सवालः वे कितने और कौन कौन से नबी हैं कि जिन्होंने निकाह नहीं किया?

जवाबः दो नबियों ने निकाह नहीं फ़रमायाः

ईसा और याह्या अलैहिमस्सलाम।

सवालः बनी इस्राईल के सबसे पहले नबी कौन हैं और सबसे आख़िरी नबी कौन?

जवाबः बनी इस्राईल के सबसे पहले नबी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम हैं और सबसे आख़िरी नबी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम। एक क़ौल यह है कि बनी इस्राईल के सबसे पहले नबी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम हैं।

(इब्ने कसीर 6/3

सवालः वे कौन से नबी हैं कि जिन्होंने कुँए का पानी कभी न पिया?

जवाबः वह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हैं। आपने हमेशा बारिश का पानी पिया, कुँए का पानी कभी न पिया। (तफ़्सीर नईमी 1/33

46. सवालः वे कौन से नबी हैं जो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हम शबीहा थे?

जवाबः नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

मैंने शबे मैराज को इब्राहीम अलैहिस्सलाम को देखा कि वह बिल्कुल मेरे मुशाबेह थे। (इब्ने कसीर 15/

सवालः वे कौन से नबी हैं जिन्होंने उम्मते मुहम्मदिया को सलाम कहलवाया?

जवाबः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब मैराज को तशरीफ़ ले गए। फिर मराजिअत फ़रमाई तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उम्मते मुहम्मदिया को सलाम कहलवाया। (मिश्कात शरीफ़ 2/20

सवालः वे कौन से नबी हैं जिनके वालिद भी नबी, बेटा भी नबी, दादा भी नबी और नाना भी नबी

जवाबः यह ऐज़ाज़ हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम को है कि आपके वालिद माजिद हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम नबी, दादा इब्राहीम

अलैहिस्सलाम नबी, नाना हज़रत लूत अलैहिस्सलाम नबी और बेटे हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम नबी। (तफ़्सीर नईमी 1/871)

सवालः अंबिया किराम में से सबसे आख़िर में जन्नत में कौन जाएंगे और क्यों?

जवाबः हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम क्योंकि आप तवंगर थे।

(कीमियाए सआदत उर्दू 794)

सवालः वे कौन से नबी हैं कि जिन्होंने दुआ की थी कि मुझे उम्मते मुहम्मदिया दफ्न करे?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

हज़रत दानिया अलैहिस्सलाम ने अपने रब से दुआ की थी कि उन्हें मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत दफ़न करे। जब अबू मूसा अशअरी ने किला तुस्तुर फ़तेह किया तो उन्होंने हज़रत दानियाल अलैहिस्सलाम को उनके ताबूत में इस हाल में पाया कि उनके तमाम जिस्म और गर्दन की सब रगें बराबर चल रही थीं फिर उन्होंने उनको दफ़न किया। (अल बिदाया 2/4, वहवाले सच्ची हिकायात 17/5)

सवालः वे कौन सी ख़ुशनसीब औरत है जिनके वालिद भी नबी, शौहर भी नबी, सुसर भी नबी और बेटा भी नबी?

जवाबः वह ख़ुशनसीब हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की बीवी मोहतरमा हैं। आपके वालिद मोहतरम हज़रत लूत अलैहिस्सलाम भी नबी, शौहर हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम भी नबी, खुसर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम भी नबी, बेटे हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम भी नबी और पोते हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम भी नबी। (तफ़्सीर नईमी 1/871)

सवालः वे कौन से नबी हैं कि जिनकी चार पुश्तें शर्फ़े नबुव्वत से मुशर्रफ़ हुईं?

जवाबः वह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हैं कि आपके बेटे हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम, उनके बेटे हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम और उनके बेटे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम सबके सब नबुव्वत से सरफ़राज़ हुए। आपके अलावा किसी नबी को भी यह फ़ज़ीलत हासिल न हुई।

(तफ़्सीर नईमी 1/871)

सवालः किस नबी ने कौनसा पेशा इख़्तियार फ़रमाया?

जवाबः बाज़ अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम के मुबारक पेशे ये हैं:

1. हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम कपड़े सीकर गुज़र बसर करते थे,

2. हज़रत नूह अलैहिस्सलाम बढ़ई का काम करते थे,

3. हज़रत हूद व सालेह अलैहिमस्सलाम तिजारत किया करते थे,

4. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम भी काश्तकारी करते थे,

5. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कुछ मुद्दत बकरियाँ चरायीं,

6. हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ज़िरह बनाकर गुज़ार अवक़ात करते थे।

7. हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम जो रूए ज़मीन के बादशाह थे पेड़ के पत्तों से पंखे और ज़ंबीलें वग़ैरह बनाकर गुज़र करते थे।

8. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने कोई पेशा अख़्तियार नहीं किया बल्कि हमेशा सैर फ़रमाते थे। और फ़रमाते थे जिसने मुझे नाश्ता दिया है वही शाम का खाना भी देगा। (तफ़्सीर नईमी 1/331)

सवालः कोई नबी भी किसी का शागिर्द न हुआ, सिवाए एक के वह कौन है?

जवाबः कोई भी नबी किसी का शागिर्द नहीं हुआ सिवाए हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम कि आप इल्मे असरार व तरीक़त हासिल करने के लिए हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम के पास गए। (तफ़्सीर नईमी 1/29

सवालः वे कौन से नबी है कि जिनकी उम्र तीन हज़ार साल हुई

जवाबः वह हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम हैं कि आपकी उम्र तीन हज़ार साल हुई। दूसरी रिवायत के मुताबिक़ तीन हज़ार छः सौ साल (हाशिया 1, जलालैन 3

○ ○ ○

हज़रत ज़ुल क़रनैन और हज़रत लुक़मान के बारे में सवाल और जवाब

सवालः हज़रत ज़ुल क़रनैन का असली नाम क्या है?

जवाबः आपका नाम इसकन्दर है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 16/2)

बाज़ ने अब्दुल्लाह बिन ज़हाक बिन साअद। बाज़ ने मुसअब बिन क़रीब बिन हिलाल और बाज़ ने अलमंज़र बिन असमा कहा है।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/184)

सवाल : हज़रत ज़ुल क़रनैन का लक़ब "ज़ुल क़रनैन" क्यों हुआ?

जवाबः ज़ुल क़रनैन के मानी दो गेसुओं या दो सींगों वाला। आपका लक़ब ज़ुल क़रनैन क्यों हुआ इस सिलसिले में कई क़ौल हैं:

1. हज़रत वहब कहते हैं क्योंकि उनके सर के दोनों तरफ़ तांबा रहता था इसलिए ज़ुल क़रनैन लक़ब हुआ।
2. क्योंकि आप ज़मीन की दोनों शाख़ों यानी मश्रिक़ व मग़रिब तक पहुँच गए इसलिए आप ज़ुल क़रनैन लक़ब हुआ।
3. यह भी कहा जाता है कि आप रोम व फ़ारस जैसी दो अज़ीम मुमलिकतों के बादशाह थे इसलिए यह लक़ब हो गया।
4. बाज़ का क़ौल है कि हक़ीक़त में आपके सर पर दो सींगें थीं जिनको आप अपने ताज में छिपाए रखते थे। इसलिए यह लक़ब हुआ।
5. हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: आप ख़ुदा के नेक बंदे थे अपनी क़ौम को दावत तौहीद दी तो क़ौम आपकी मुख़ालिफ़ हो गई और आप के सर के एक जानिब इस क़द्र मारा कि आप शहीद हो गए। अल्लाह तआला ने आपको दोबारा ज़िंदा फ़रमाया। क़ौम ने फिर सर के दूसरी जानिब मारा जिससे आप फिर शहीद हो गए।

इसलिए आपका लक़ब ज़ुल क़रनैन हुआ।

6. एक क़ौल यह है कि आपके ज़माने में आदमियों के दो क़र्न (सदी) गुज़र गए थे। आप इतनी मुद्दत तक ज़िंदा रहे। इसलिए यह लक़ब पड़ा।
7. यह भी क़ौल है कि आपको इल्म ज़ाहिर व बातिन दोनों अता किए गए इसलिए यह लक़ब हुआ।
8. और एक क़ौल यह भी है कि नूर व ज़ुलमत दोनों की तरफ़ आपका मैलाने तबा था इसलिए ज़ुल क़रनैन के लक़ब से मशहूर हो गए।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/184, इब 16/2

सवालः हज़रत ज़ुल क़रनैन और हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम के बीच क्या रिश्ता है?

जवाबः आप हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम के ख़ालाज़ाद भाई हैं।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 16/2

सवालः हज़रत ज़ुल क़रनैन ने किस नबी के साथ तवाफ़ बैतुल्लाह किया?

सवालः आपने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के साथ तवाफ़ बैतुल्लाह किया और ख़ुदा के नाम पर बहुत सी क़ुर्बानियाँ कीं।(इब्ने कसीर 16/2

सवालः हज़रत ज़ुल क़रनैन की उम्र कितनी हुई?

जवाबः आपकी उम्र एक हज़ार छः सौ साल हुई। (इब्ने कसीर 16/

सवालः हज़रत लुक़मान हकीम के वालिद और दादा का नाम क्या है?

जवाबः मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने कहा है कि आपके वालिद का नाम बाओर और दादा का नाम नाहोर बिन तारख़ है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 21/11)

दूसरे क़ौल के मुताबिक़ वालिद का नाम उनक़ा बिन सदून है।

(इब्ने कसीर 21/11)

सवालः हज़रत लुक़मान हकीम का हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम से क्या रिश्ता है?

जवाबः वहब रहमतुल्लाह अलैहि का क़ौल है कि आप हज़रत अय्यूब

अलैहिस्सलाम के भांजे थे और मक़ातिल रहमतुल्लाह अलैहि ने कहा कि आप अय्यूब अलैहिस्सलाम के ख़ालाज़ाद भाई थे।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 21/11)

सवालः हज़रत लुक़मान हकीम ने किस नबी की ख़िदमत में रहकर इल्म हासिल किया?

जवाबः आपने हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का ज़माना पाया और उनकी ख़िदमत में रहकर इल्म हासिल किया और खुद कामिल व मुकम्मल थे। अपने दौर के क़ाज़ी व मुफ़्ती थे मगर दाऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में फ़तवा देना तर्क कर दिया था। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 21/11)

सवालः हज़रत लुक़मान हकीम कितने अंबिया किराम की बारहगाह में हाज़िरी से मुशर्रफ़ हुए?

जवाबः आपको चार हज़ार अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम की बारगाह में हाज़िरी का शर्फ़ हासिल हुआ। (ग़राइबुल क़ुरआन 159)

सवालः हज़रत लुक़मान हकीम के उस बेटे का नाम क्या है जिसका ज़िक्र क़ुरआन पाक में है?

जवाबः बाज़ के मुताबिक़ उस बेटे का नाम अनअम या अशकम है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 21/11)

बाज़ ने उस बेटे का नाम बारान बाज़ ने दारान और बाज़ ने मशकम कहा है। (अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/188)

सुहैली ने सारान बयान किया है। (इब्ने कसीर 21/11)

सवालः हज़रत लुक़मान हकीम की उम्र कितनी हुई?

जवाबः आपकी उम्र एक हज़ार साल हुई।(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 21/11)

सवालः हज़रत लुक़मान हकीम की क़ब्र कहाँ है?

जवाबः आपकी क़ब्र शरीफ़ मुक़ाम हरफ़ंद में है जो रमला के क़रीब है और हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा है कि आपकी क़ब्र रमला में मस्जिद और बाज़ार के दर्मियान में है। (ग़राइबुल क़ुरआन 161)

o o o

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलाद किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन के बारे में सवाल व जवाब

सवालः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कितनी औलादें थीं और उनमें से कितने साहबज़ादे और कितनी साहज़ादियाँ थीं?

जवाबः जिन औलाद किराम पर तमाम अहले सैर का इत्तिफ़ाक़ बयान किया गया है वह छः रसूलज़ादे हैं, दो बेटे हज़रत क़ासिम और और हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु अन्हुमा औ चार बेटियाँ सैय्यदा ज़ैनब, सैय्यदा रुक़ैय्या, सैय्यदा उम्मे कुलसूम और सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अनहुम। उनके सिवा में इख़्तिलाफ़ है।

बाज़ उलमा तैय्यब व ताहिर को भी शुमार करते हैं लिहाज़ा कुल आठ रसूल ज़ादे हुए। चार बेटे और चार बेटियाँ।

बाज़ कहते हैं कि हज़रत इब्राहीम और क़ासिम रज़ियल्लाहु अन्हुमा के सिवा एक बेटे अब्दुल्लाह हैं जो कि मक्का मुकर्रमा में कम उम्री में के आलम ही में इस जहाँ से रुख़्सत हो गए और तैय्यब व ताहिर इन्हीं का लक़्ब है। अक्सर उलमाए अंसाब का मज़हब यही है। लिहाज़ा कुल सात रसूल ज़ादे हुए। तीन बेटे और चार बेटियाँ।

मवाहिब लदुन्निया ने दार क़ुतनी से नक़्ल किया है कि तैय्यब व ताहिर, अब्दुल्लाह के सिवा हैं इस विना पर बेटों की तादाद पाँच हो जाती है और कुल तादाद नौ होती है।

बाज़ लोगों ने नक़्ल किया है कि तैय्यब व मुतय्यब एक हमल से तैय्यब व ताहिर दूसरे हमल से पैदा हुए। इस क़ौल को साहिबे सफ़्वा ने बयान किया है। इस लिहाज़ से बेटों की तादाद सात और कुल ताद

ग्यारह हो जाती है।

इन तमाम अक़्वाल से आठ फ़रज़ान्दाने रसूल की तादाद हासिल हुई जिनमें से दो हज़रत क़ासिम व इब्राहीम मुत्तफ़िक़ अलैहि हैं और छः मुख़्तलिफ़ फ़ीह।

1. अब्दे मुनाफ़,
2. अब्दुल्लाह,
3. तैय्यब,
4. मुतैय्यब,
5. ताहिर,
6. मुताहिर।

असह यह है कि तीन बेटे, क़ासिम, इब्राहीम और अब्दुल्लाह और चार बेटियाँ, ज़ैनब, रुक़ैय्या, उम्मे कुलसूम और फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हुम।
(मदारिज नबुव्वत 2/770, 771)

सवालः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलाद किराम किस किस बतन से पैदा हुए?

जवाबः हज़रत इब्राहीम, मारिया किब्तिया के बतन से और बाक़ी तमाम औलाद किराम हज़रत सैय्यदा ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के शिकम अनवर से पैदा हुए। (मदारिज नबुव्वत 2/771)

सवालः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलादे किराम में सबसे बड़े कौन थे और सबसे छोटे कौन?

जवाबः तमाम औलाद किराम में सबसे बड़े हज़रत क़ासिम और सबसे छोटे हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु अन्हु थे।(मदारिज नबुव्वत 2/772, 773)

इनकी तर्तीब में इख़्तिलाफ़ हैं। एक क़ौल के मुताबिक़ तर्तीब इस तरह हैः क़ासिम, ज़ैनब, रुक़ैय्या, उम्मे कुलसूम, अब्दुल्लाह और फिर इब्राहीम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन। (हाशिया 5, जलालैन 205)

सवालः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बेटों में से बड़े कौन थे और सबसे छोटे कौन और बेटियों में सबसे बड़ी कौन थी और सबसे छोटी कौन?

जवाबः सबसे बड़े बेटे हज़रत क़ासिम, सबसे बड़ी बेटी बक़ौल अक्सर उलमा सैय्यदा ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा। सबसे छोटे बेटे हज़रत इब्राहीम और सबसे छोटी बेटी एक क़ौल के मुताबिक़ सैय्यदा फ़ातिमा, एक क़ौल के मुताबिक़ सैय्यदा रुक़ैय्या और एक क़ौल के मुताबिक़ सैय्यदा उम्मे

कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा हैं। (मदारिज नबुव्वत 2/772, 787)

सवालः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बेटों में तैय्यब व ताहिर किस का लक़ब है और क्यों?

जवाबः यह हज़रत अब्दुल्लाह बिन रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का लक़ब है क्योंकि यह बेटे अहदे इस्ला में पैदा हुए।

(मदारिज नबुव्वत 2/771)

सवालः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलाद में से कौन कौन नबुव्वत के इज़्हार से पहले पैदा हुए और कौन कौन नबुव्वत के इज़्हार के बाद?

जवाबः इब्ने इस्हाक़ का क़ौल है कि हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु अन्हु के सिवा सबके सब औलाद नबुव्वत के इज़्हार से पहले पैदा हुए। एक क़ौल है कि सिवाए अब्द मुनाफ़ के तमाम औलादे किराम नबुव्वत के ऐलान के बाद वजूद में आयीं। और एक क़ौल यह भी है कि सिर्फ़ अब्दुल्लाह अहदे इस्लाम में पैदा हुए। इसी बिना पर उनका लक़ब ताहिर हुआ। (मदारिज नबुव्वत 2/171)

सवालः हज़रत क़ासिम बिन रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात कब हुई?

जवाबः इनकी वफ़ात नबुव्वत के इज़्हार से पहले हुई। साहिबे मवाहिब ने फ़रमाया कि मुस्तदरक में ऐसी रिवायत है कि जो अहदे इस्लाम में उनकी वफ़ात पाने पर दलालत करती है।

(मदारिज नबुव्वत 2/772)

सवालः हज़रत क़ासिम रज़ियल्लाहु अन्हु की उम्र कितनी हुई?

जवाबः इनकी उम्र में इख़्तिलाफ़ हैः

1. बाज़ कहते कि यह पाँव चलने की उम्र तक हयात रहे।
2. बाज़ का क़ौल कि सवारी पर सवार होने की उम्र तक इस दुनिया में रहे।
3. बाज़ दो साल की उम्र बताते हैं।
4. और बाज़ सत्रह महीने। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/772)

सवालः हज़रत अब्दुल्लाह बिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम की विलादत कब हुई और विसाल कब हुआ?

जवाबः यह बेटे मक्का मुकर्रमा में इस्लाम के ज़हूर के बाद वजूद में तशरीफ़ लाए और बचपन के ज़माने में ही इंतिक़ाल फ़रमा गए।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/772)

सवालः हज़रत इब्राहीम बिन रसूलल्लाह किस सन में पैदा हुए?

जवाबः आपकी विलादत मदीना तैय्यबा में माह ज़िलहिज्जा सन् 8 हि० में हज़रत मारिया किब्तिया रज़ियल्लाहु अन्हा के बतन से हुई।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/772)

सवालः हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु अन्हु के अक़ीक़े में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क्या ज़िब्ह किया?

जवाबः दो भेड़ों को ज़िब्ह फ़रमाया। और एक क़ौल के मुताबिक़ एक बकरी को ज़िब्ह किया। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/773)

सवालः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुज़ूर में हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु अन्हु की विलादत की ख़बर किसने पहुँचाई और आपने उन्हें क्या ईनाम से सरफ़राज़ फ़रमाया?

जवाबः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुलाम हज़रत अबू राफ़े रज़ियल्लाहु अन्हु ने। हुज़ूर ने इस खुशख़बरी पर उन्हें गुलामी से आज़ाद फ़रमा दिया। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/773)

सवालः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इब्राहीम रज़ियल्लाहु अन्हु को दूध पिलाने के लिए किसके सुपुर्द फ़रमाया?

जवाबः उम्मे सैफ़ रज़ियल्लाहु अन्हा के सुपुर्द फ़रमाया कि हज़रत अबू सैफ़ रज़ियल्लाहु अन्हा की बीवी थीं। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत इब्राहीम को देखने के लिए अबू सैफ़ के घर तशरीफ़ ले जाते थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/773)

सवालः हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु अन्हु का इंतिक़ाल किस तारीख़ को हुआ?

जवाबः उनका इंतिक़ाल दसवीं मुहर्रम या दसवीं रबिउल अव्वल सन् 10 हि० को हुआ था। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/775)

सवालः हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु अन्हु की उम्र कितनी हुई?

जवाबः इनकी उम्र के बारे में अहले सैर इख़्तिलाफ़ रखते हैं:

1. सत्तर दिन, जैसा कि अबू दाऊद ने ज़िक्र किया है।

2. सोलह महीने आठ दिन,

3. एक साल दो महीने और छः दिन।

4. तक़रीबन डेढ़ साल। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/774)

सवालः हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु अन्हु को किसने ग़ुस्ल दिया?

जवाबः अहले सैर कहते हैं कि हज़रत इब्राहीम को उनकी दाया हज़रत सलमा ज़ौजा अबू राफ़ेअ रज़ियल्लाहु अन्हा ने ग़ुस्ल दिया। और एक क़ौल में है कि हज़रत फ़ज़ल बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने ग़ुस्ल दिया और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने पानी डाला। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी तशरीफ़ फ़रमा थे।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/775)

सवालः हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु अन्हु की नमाज़ जनाज़ा पढ़ी गई या नहीं?

जवाबः सही यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। और यह कि जो हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की रिवायत है कि उनकी नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ी गई, उलमा इसकी इस तरह तावील करते हैं कि मुमकिन है कि हुज़ूर ने खुद न पढ़ी हो और सहाबा किराम को हुक्म फ़रमाया हो कि वे नमाज़ पढ़ लें या यह मुराद हो कि जमाअत के साथ नमाज़ हुई हो। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/775)

सवालः हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र मुबारक कहाँ है?

जवाबः जन्नतुल बक़ी में हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन की क़ब्र शरीफ़ से मिली हुई। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/775)

सवालः सैय्यदा ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत किस सन में हुई?

जवाबः इनकी विलादत 30 मिलादुन्नबी में हुई।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/779)

सवालः सैय्यदा ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह किससे हुआ?

जवाबः आपके ख़ालाज़ाद भाई अबुल आस बिन रबीअ से जो सैय्यदना ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की बहन हिंद बिन ख़ुवेलद के बेटे थे। हज़रत अबुल आस मशहूर अपनी कुन्नियत के साथ हैं और उनके नाम में इख़्तिलाफ़ है। लफ़ीज़ है या मुक़सम या क़ासिम या यासिर। अक्सर के नज़दीक कौले अव्वल सही है यानी लफ़ीज़।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/779)

सवालः सैय्यदा ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा की कितनी औलादें हुईं?

जवाबः ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा का हज़रत अबुल आस से एक ही बेटा था जिसका नाम अली था जो बालिग़ होने के क़रीब दुनिया से रुख़्सत हो गए और एक बेटी थीं जिनका नाम उमामा था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की रहलत के बाद हज़रत फ़ातिमा की वसीयत के मुताबिक़ उमामा रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह फ़रमाया। उनसे एक बेटे मुहम्मद औसत पैदा हुए।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/781, 782)

सवालः सैय्यदा ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा की रहलत किस सन में हुई?

जवाबः हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ने सन् 8 हि० को इंतिक़ाल फ़रमाया। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/782)

सवालः सैय्यदा ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को ग़ुस्ल किस किस ने दिया?

जवाबः इन चार औरतों ने:

1. हज़रत सौदा बिन्ते ज़अमा, 2. हज़रत उम्मे सलमा,
3. हज़रत उम्मे ऐमन, 4. हज़रत उम्मे अतिया अंसारिया रज़ियल्लाहु अन्नाहुन्ना। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/782)

सवालः सैय्यदा ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को ग़ुस्ल कितनी बार दिया गया?

जवाबः मुत्तफ़िक़ अलैहि हदीस में आया है कि हज़रत उम्मे अतिया रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

हमारे पास इस हाल में तशरीफ़ लाए कि हम आपकी बेटी हज़रत ज़ैनब को ग़ुस्ल दे रहे थे। आपने फ़रमायाः इनको तीन मर्तबा ग़ुस्ल दो या इससे ज़्यादा। एक रिवायत में पाँच या सात मर्तबा आया है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/782)

सवालः सैय्यदा ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को क़ब्र में किसने उतारा?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ुद उनको क़ब्र में उतारा। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/783)

सवालः सैय्यदा रुक़ैय्या रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत किस सन में हुई?

जवाबः हज़रत रुक़ैय्या रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत ज़ैनब की विलादत के तीन साल बाद 33 मीलादुन्नबी में पैदा हुई। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/783)

सवालः सैय्यदा रुक़ैय्या रज़ियल्लाहु अन्हा का पहला निकाह किससे हुआ था और जुदाई क्यों हुई थी?

जवाबः रुक़ैय्या रज़ियल्लाहु अन्हा इज़्हारे नबुव्वत से पहले उत्बा बिन अबि लहब की निकाह में थीं। जब रसूले काएनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐलाने नबुव्वत फ़रमाया और सूरः "तब्बत यदा अबि लाहब" नाज़िल हुई तो अबू लहब ने अपने बेटे उत्बा से कहाः ओ उत्बा! तेरा सर हराम है। मतलब यह है कि मैं तुझसे बेज़ार हूँ अगर तू मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेटी को अपने से जुदा न करे। इस पर उसने जुदाई कर ली और अलैहिदा हो गया। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/783)

सवालः सैय्यदा रुक़ैय्या रज़ियल्लाहु अन्हा का दूसरा निकाह किससे हुआ?

जवाबः उत्बा बिन अबि लहब से जुदाई के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सैय्यदा रुक़ैय्या रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह हज़रत उस्मान ज़ुन्नून रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ मक्का मुकर्रमा में कर दिया।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/784)

दोलाबी ने बयान किया है कि हज़रत उस्मान का हज़रत रुक़ैय्या रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ निकाह ज़मानाए जाहिलियत में हुआ था और

दूसरे तमाम अहले सैर ने बाद इस्लाम बयान किया है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/784)

सवालः सैय्यदा रुक़ैय्या रज़ियल्लाहु अन्हा की कितनी औलादें हुई?

जवाबः सैय्यदा रुक़ैय्या रज़ियल्लाहु अन्हा का हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से एक बेटा अब्दुल्लाह पैदा हुआ। जब वह दो साल के हुए तो एक मुर्ग़ ने उनकी चश्म मुबारक में चोंच मारी जिससे वह बीमार हो गए और इसी बीमारी में दुनिया से रुख़सत हो गए। (मद 2/260, 286)

सवालः सैय्यदा रुक़ैय्या रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल किस सन में हुआ और उनके दफ़न में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मौजूद थे या नहीं?

जवाबः शव्वाल सन् 2 हि० में जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शव्वाल मुकर्रम के पहले रोज़ हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़तेह जंगे बदर की बशारत के साथ मदीना मुनव्वरा रवाना किया और वह चाश्त के वक़्त मदीना तैय्यबा पहुँचे तो लोगों को सैय्यदा रुक़ैय्या बिन्ते रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दफ़न से फ़ारिग़ होते हुए पाया। यही क़ौल ज़्यादा सही है और एक रिवायत में आया है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत रुक़ैय्या रज़ियल्लाहु अन्हा के दफ़न में खुद मौजूद थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/172)

सवालः सैय्यदा उम्मे कुलसूम बिन्ते रसूल पहले किसकी ज़ौजियत में थीं?

जवाबः इज़्हारे नबुव्वत से पहले सैय्यदा कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा उत्बा या अतीबा बिन अबू लहब के निकाह में थीं। ऐलाने नबुव्वत के बाद उससे जुदाई कर ली। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/785)

सवालः सैय्यदा उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा के पहले शौहर से जुदाई क्यों हुई और पहले शौहर का अंजाम क्या हुआ?

जवाबः मन्क़ूल है कि उत्बा ने जब हज़रत कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा से जुदाई कर ली तो वह बारगाहे रिसालत में आया और कहने लगा, मैं काफ़िर हुआ आपके दीन से, न आपका दीन मुझे महबूब है और न आप

मुझे प्यारे हैं। इस बदबख़्त ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज़्यादती की और आपकी क़मीज़ मुबारक को फाड़ दिया। एक रिवायत में आता है कि इस मलऊन ने इतनी गुस्ताख़ी की कि इसने अपने नापाक मुँह का थूक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जानिब फेंका और कहा, मैंने कुलसूम को तलाक़ दे दी। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ऐ ख़ुदा! इस मलऊन पर अपने कुत्तो में से एक कुत्ता मुसल्लत कर दे। अहले सैर कहते हैं कि हज़रत अबू तालिब उस वक़्त मज्लिस में हाज़िर थे। उन्होंने फ़रमाया कि मैं नहीं जानता कि तुझे कौन सी चीज़ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ के तीर से बचा सकेगी।

यह मलऊन तिजारत की गर्ज़ से शाम की तरफ़ जा रहा था। रास्ते में जब उसने एक ऐसी मंज़िल पर पड़ाव डाला जहाँ दरिन्दे थे तो अबू लहब ने क़ाफ़िले वालों से कहा, आज की रात तुम हमारी मदद करो कि मैं डरता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! की दुआ मेरे बेटे के हक़ में कहीं आज की रात असर न करे। इस पर सबने अपने अपने बोझों को इकठ्ठा किया और नीचे ऊपर करके चुना। फिर उन बोझों के ऊपर उत्बा के सोने के लिए जगह बनाई। और उसके चारों तरफ़ घेरा डालकर बैठ गए। उसके बाद हक़ तआला ने उन पर नींद को मुसल्लत किया। एक शेर आया उसने एक एक के मुँह को सूंघा और किसी को उसने नहीं छेड़ा। फिर उसने छलांग लगाई और उत्बा पर पंजा मारा और उसके सीने को फाड़ दिया। एक रिवायत में है कि उत्बा की गर्दन को दबोचा। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/78...)

सवालः सैय्यदा उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा का दूसरा निकाह किस के साथ और किस सन में हुआ?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रुक़ैय्या रज़ियल्लाहु अन्हा के इंतिक़ाल के बाद उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा का हिजरत के तीसरे साल हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से निकाह फ़रमाया।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/786)

सवालः सैय्यदा उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा ने किस सन में

रहलत फ़रमाई?

जवाबः सन् 9 हि० को इंतिक़ाल फ़रमाया। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/786)

सवालः सैय्यदा उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा की नमाज़े जनाज़ा किसने पढ़ाई?

जवाबः उनकी नमाज़े जनाज़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पढ़ाई। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/786)

सवालः सैय्यदा उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा को क़ब्र में किसने उतारा?

जवाबः बाद नमाज़े जनाज़ा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम से फ़रमायाः

तुम में कोई ऐसा है जिसने आज रात अपनी बीवी से हमबिस्तरी न की हो? इस पर अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! मैं हूँ। फ़रमायाः इनको क़ब्र में उतारो। बाज़ शारिहीन ने कहा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह फ़रमाना हज़रत उस्मान ग़नी पर तारीज़ था क्योंकि उन्होंने उस रात अपनी बांदी से जमा किया था इस वजह से कि उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा की बीमारी लंबी हो गई थी। जब वे बेताक़त हो गए तो अपनी बांदी के पास गए और जमा किया। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/786)

सवालः सैय्यदा उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा के इंतिक़ाल के बाद रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके शौहर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से क्या फ़रमाया?

जवाबः रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा की रहलत के बाद हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमायाः

अगर मेरे पास तीसरी साहबज़ादी होती तो उसे भी तुम्हारे निकाह में ले आता। एक रिवायत में है कि अगर दस बेटियाँ होतीं तो मैं उनको एक के बाद एक देता जाता और वफ़ात पाती रहतीं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/786)

सवालः सैय्यदा उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा की कितनी औलादें हुईं?

जवाबः अहले सैर कहते हैं कि सैय्यदा उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा अरसे तक हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ौजियत में रहीं लेकिन उनसे कोई औलाद न हुई। बाज़ रिवायतों में आया है कि दो बेटे पैदा हुए लेकिन ज़िंदा न रहे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/786)

सवालः सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत किस सन में हुई?

जवाबः सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत बक़ौल इब्ने जौज़ी सन् 35 हि० यानी इज़्हार नबुव्वत से पाँच साल पहले है। मशहूर तर रिवायत यही है। एक क़ौल यह है कि आपकी विलादत, विलादते नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इक्तालिसवें साल में हुई। अहले सैर कहते हैं कि यह क़ौल अबू बक्र राज़ी का है और यह क़ौल इसके मुख़ालिफ़ है जिसे इब्ने इस्हाक़ ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलाद पाक के बारे में बयान किया है कि तमाम औलाद किराम नबुव्वत से पहले पैदा हुई सिवाए हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु अन्हु के। इसलिए कि इस क़ौल के मुताबिक़ जब फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत ऐलाने नबुव्वत के एक साल बाद होती है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/787)

सवालः सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का नाम "फ़ातिमा" किसने रखा और क्यों?

जवाबः साहिबे रौज़तुल वाईज़ीन फ़रमाते हैं कि जब हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा हमल हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से हामला हुईं तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मुझको रूहुल अमीन ने ख़बर दी कि यह बेटी जो होगी उसका नाम फ़ातिमा रखना कि यह उनका नस्ली नाम है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/787)

सवालः सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत के वक़्त इंतिज़ाम ज़च्चाख़ाना के लिए कौन सी औरतें आयीं और कहाँ से?

जवाबः जब हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत क़रीब हुई तो हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने इंतिज़ाम ज़च्चाख़ाने के लिए हस्ब रिवाज क़ुरैश में से औरतों को बुलाया। सबने इंकार कर दिया कि हम तुम्हारी इम्दाद व निज़ाम ज़च्चाख़ाना को हर्गिज़ न आएंगे क्योंकि तुमने

हमारी बात न मानी और मालदार को छोड़कर यतीम मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बीवी बनी। मालदारी पर दरवेशी को तरजीह दी। आप इस जवाब से दुखी व ग़मगीन हुईं कि अचानक चार औरतें ज़ाहिर हुईं जो गंदुमी रंग और लंबे क़द की थीं। हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा अजनबी औरतों को देखकर डरीं तो उनमें से एक ने कहाः ख़दीजा! ग़म न कर और ख़ौफ़ व ख़तर दिल में न ला। हमें अल्लाह तआला ने तेरी ख़िदमत के लिए भेजा है और हम तुम्हारी बहनें हैं। मैं सारा बिन्त इस्हाक़ हूँ, यह मरियम बिन्त इमरान हैं, यह कलसूम हमशीरा मूसा है और यह आसिया फ़िरऔन की बीवी हैं। यह कहकर एक दायीं तरफ़ बैठ गई, एक बायीं तरफ़ बैठ गई, एक पीछे को और एक आगे को। इतने में आसार बच्चे की पैदाइश के ज़ाहिर हुए और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत हुई। उन औरतों ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को तश्त में बिठाकर आबे कौसर से ग़ुस्ल दिया और एक सफ़ेद कपड़ा जो जन्नत के इत्र से मौत्तर था निकाला। इसमें सैय्यदा को लपेट लिया और हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की गोद में देते हुए कहा लो ख़दीजा मुबारक हो। (अवराक़ ग़म 119)

सवालः सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का ख़िताब और लक़ब क्या क्या है?

जवाबः ख़िताब सैय्यदतुन्निसाअल आलमीन और सैय्यदतुन्निसा अहलल जन्नः है और लक़ब ज़ोहरा, बतूल, ज़किया और राज़िया हैं। ज़ोहरा इस बिना पर ज़हरत बहजत और जमाल में कमाल मर्तबा में हैं और बतूल इस बिना पर कि आप अपने ज़माने की तमाम औरतों से फ़ज़ीलत, दीन और हुस्न व जमाल में जुदा हैं और मासिवा अल्लाह से बेनियाज़ हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/787)

सवालः सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए निकाह का पयाम किस किस ने दिया था और हुज़ूर ने उन्हें क्या जवाब दिया था?

जवाबः रिवायतों में आया है कि सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हा पैयाम दिया था और हुज़ूर

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इल्लत बयान करते हुए फ़रमायाः मैं उनके निकाह में "वही" का इंतिज़ार कर रहा हूँ। उसके बाद हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने पयाम दिया। उनको भी इसी तरह जवाब मरहमत फ़रमाया। मिश्कात शरीफ़ में मरवी है कि जब हज़रत अबूबक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने उनके लिए पयाम दिया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कम उम्र है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/127)

सवालः हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हा को किसने तर्ग़ीब दी कि हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए पयाम दें और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस पयाम का क्या जवाब दिया?

जवाबः हज़रत उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को तर्ग़ीब दी कि आप जाकर हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पयाम दें। रौज़ातुल अहबाब में कहा गया है कि सहाबा किराम ने हज़रत अली से कहाः आप हुज़ूर के अहल व ख़ास में से हैं। आप जाकर फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पयाम दें। हज़रत अली ने फ़रमाया, मैं रसूलल्लाह सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम से इस बारे में शर्म रखता हूँ और फ़रमाया, हुज़ूर ने अबूबक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का पयाम रद फ़रमा दिया तो मेरा पयाम क्यों क़ुबूल फ़रमाएंगे। सहाबा किराम ने कहाः आप हुज़ूर की बारगाह में बहुत ज़्यादा मुक़र्रब और आपके चचा के बेटे और हज़रत अबू तालिब के बेटे हैं, जाओ शर्म न करो। उसके बाद हज़रत अली ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का पयाम अपने लिए पेश किया। इस पर रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मरहबा फ़रमाया और इससे ज़्यादा और कुछ न फ़रमाया। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि उस वक़्त मैं रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में मौजूद था। उस वक़्त आप पर वह कैफ़ियत तारी हुई जो नुज़ूले "वही" के वक़्त तारी होती है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने हाल में आए तो फ़रमायाः अनस! रब्बुल अर्श के पास से मेरे हुज़ूर जिब्राईल अलैहिस्सलाम आए और कहा

कि हक़ तआला इर्शाद फ़रमाता है: कि फ़ातिमा का निकाह अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) के साथ कर दो तो ऐ अनस! जाओ और अबूबक्र, उमर, उस्मान, तल्हा, ज़ुबैर और जमाअत अंसार (रज़ियल्लाहु अन्हुम) को बुला लाओ और फिर जब ये सब हज़रात हाज़िर हो गए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बलीग़ ख़ुत्बा पढ़ा। उसके बाद हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ कर दिया।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/128)

सवालः सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह किसने पढ़ाया, महर अक़्द कितना तय हुआ और निकाह के बाद क्या तक़्सीम किया गया?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चार सौ मिस्क़ाल चाँदी पर अक़्द बांधा। फिर एक तबाक़ खजूरों का लिया और जमाअत सहाबा किराम में बखेरकर लुटा दिया।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/128)

सवालः सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह हज़रत अली से किस सन में हुआ?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनका निकाह हिजरत के दूसरे साल रमज़ानुल मुबारक में ग़ज़वा बदर की वापसी पर फ़रमाया। बाज़ ग़ज़वा ओहद के बाद कहते हैं। और माह ज़िलहिज्जा में शब उरूसी वाक़ेअ हुई। एक क़ौल यह है कि माह रजब में निकाह हुआ और एक क़ौल से माह सफ़र में।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/788)

सवालः सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत अली की उम्र निकाह के वक़्त कितनी थी?

जवाबः हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र शरीफ़ निकाह के वक़्त पंद्रह साल साढ़े पाँच माह की थी। बाज़ सोलह साल और बाज़ अठ्ठारह साल कहते हैं। और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की उम्र मुबारक इक्कीस साल पाँच माह की थी। दूसरे अक़्वाल भी हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/127, 788)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को जहेज़ में क्या क्या चीज़ें अता फ़रमायीं?

जवाबः हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को जो जहेज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अता फ़रमाया था वह नीचे लिखी हैं:

1. दो रज़ाई जो कतान से ममलू थीं, 2. चार बालिश्त कपड़ा,
3. दो चाँदी के बाज़ूबंद, 4. गद्दा,
5. तकिया, 6. एक प्याला,
7. एक चक्की, 8. एक मशकीज़ा।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/130)

दूसरे क़ौल के मुताबिक़ जहेज़ के सामान इस तरह हैं:

1. दो जोड़े, 2. दो बाज़ू चाँदी के,
3. एक चादर, 4. एक प्याला,
5. एक चक्की, 6. दो गिलास,
7. एक मशकीज़ा, 8. एक कटोरा पानी का
9. दो रज़ाई, 10. चार गद्दे दो ऊन से भरे हुए थे और दो खजूर की छाल से। (आवराके ग़म 131)

सवालः हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हा ने वलीमे में क्या खाना खिलाया?

जवाबः हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी ज़िरह को एक यहूदी के पास गिरवी रखकर वलीमा किया। उनके वलीमे में चंद साअ जौ, खजूरें और हीस (एक क़िसम का खाना जो खजूर, सत्तू और घी से तैयार किया जाता है) का खाना था। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/13)

सवालः सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के कितने अरसे बाद किस माह की किस तारीख़ को हुआ?

जवाबः हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल फ़रमा जाने के छः माह बाद 3 रमज़ानुल मुबारक सन् 11 हि० मंगल की रात को दुनिया से कूच फ़रमाई। यही क़ौल मशहूर व सही है। और भी कई क़ौल हैं लेकिन वह दर्जा सेहत से दूर हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/790)

सवालः सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को गुस्ल किसने

दिया और कफ़न किसने पहनाया?

जवाबः आपको हज़रत असमा बिन्ते उमैस ज़ौजा सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हा ने हस्बे वसीयत ग़ुस्ल दिया और आपने ही कफ़न पहनाया। (अवराके ग़म 140)

सवालः सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का जनाज़ा किस चीज़ में छिपाकर उठाया गया?

जवाबः हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा जब बिस्तरे मर्ग पर थीं तो हज़रत असमा बिन्ते उमैस की तरफ़ मुतवज्जेह होकर फ़रमाने लगीं, असमा! मुझे इसकी ज़्याद फ़िक्र है कि मेरा जनाज़ा बाहर जाएगा और लोग देखेंगे। उन्होंने अर्ज़ किया, सैय्यदा! मैंने हब्शा में देखा है कि औरतों के जनाज़े पर नरम शाख़ें कमान की तरह बांधकर ऊपर चादर डाल देते हैं। इस तरीके से जनाज़ा निकालने में बेपर्दगी नहीं होती। आपने वह गहवारा बनवाकर देखा और बहुत ख़ुश हुई। फिर वसीयत फ़रमाई कि मेरा जनाज़ा इस गहवारे में उठाया जाए। आपकी वसीयत के मुताबिक़ गहवारे में पोशीदा करके जनाज़ा उठाया गया। (अवराके ग़म 138)

सवालः सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की नमाज़ जनाज़ा किसने पढ़ाई?

जवाबः एक क़ौल के मुताबिक़ हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने और एक क़ौल के मुताबिक़ हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/790)

एक क़ौल यह भी है कि जब आपका जनाज़ा शरीफ़ रखा गया ताकि नमाज़ पढ़ी जाए तो हज़रत अली ने फ़रमाया, ऐ अबूबक्र! आगे आओ। हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मैं आगे आऊँ हालाँकि तुम मौजूद हो। हज़रत अली ने फ़रमाया, हाँ मैं मौजूद हूँ मगर तुम्हारे सिवा कोई इनकी नमाज़े जनाज़ा न पढ़ाएगा। उसके बाद हज़रत अबूबक्र आगे बढ़े और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/759, नज़हतुल मजालिस 11/59)

सवालः सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा कहाँ दफ़न हुईं?

जवाबः हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के दफ़न की जगह में

इख़्तिलाफ़ है। बाज़ का ख़्याल है कि आपका मरक़द बक़ीअ में हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ुब्बे में है जहाँ तमाम अहले बैत नबुव्वत आसूदा हैं। और बाज़ का ख़्याल है आपका मदफ़न आपके घर में है जोकि मस्जिदे नबवी शरीफ़ में है। आपका जनाज़ा घर से बाहर न निकाला गया। आज भी आपकी ज़ियारतगाह वहीं मशहूर है। एक क़ौल यह भी है कि आपका मज़ार शरीफ़ बक़ीअ की मस्जिद में है जो क़ुब्बाए अब्बासी के नाम से मंसूब है। और कहते हैं कि यह मस्जिद बैतुल हुज़्न के नाम से मारूफ़ है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/791)

सवालः सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की कितनी औलादें हुईं?

जवाबः छः औलादें हुईं,

तीन बेटेः 1. हज़रत हसन, 2. हज़रत हुसैन और 3. हज़रत मोहसिन रज़ियल्लाहु अन्हुम।

और तीन बेटियाः 1. सैय्यदा ज़ैनब, 2. सैय्यदा उम्मे कुलसूम और 3. सैय्यदा रुक़ैय्या रज़ियल्लाहु अन्नहुन्ना।

हज़रत मोहसिन और रुक़ैय्या बचपन में ही इंतिक़ाल फ़रमा गए। सैय्यदा ज़ैनब हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र की और सैय्यदा उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ौजियत में आयीं और उनकी औलाद बाक़ी न रही अगरचे उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा को हज़रत उमर से एक बेटा पैदा हुआ और उसका नाम ज़ैद था।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/788)

सवालः सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र कितनी हुई?

जवाबः आपकी उम्र अठ्ठाईस साल हुई।

(असमाउर्रिजाल मिश्कात 613, नज़्हतुल मजालिस 11/59)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलाद किराम में सबसे पहले किसने वफ़ात पाई?

जवाबः हज़रत क़ासिम बिन रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पहले बेटे हैं जिसने औलादे शरीफ़ में सबसे पहले वफ़ात पाई।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/772)

सवालः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के किस बेटे के विसाल पर सूरः कौसर का नुज़ूल हुआ?

जवाबः हज़रत अब्दुल्लाह बिन रसूलल्लाह के विसाल पर।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/772)

सवालः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस बेटे का नाम क्या है जिनके बारे में आपने फ़रमायाः "उसके लिए अल्लाह तआला ने जन्नत में एक दूध पिलाने वाली को मुक़र्रर फ़रमा दिया जो मुद्दते रज़ाअत तक दूध पिलाती रहेगी।"

जवाबः हज़रत इब्राहीम बिन रसूलल्लाह की वफ़ात के दिन रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

इब्राहीम मेरे फ़रज़ंद की वफ़ात मुद्दते रज़ाअत पूरी किए वग़ैर दुनिया से हुई है और उनके लिए एक दूध पिलाने वाली मुक़र्रर की गई है। एक रिवायत में है कि जन्नत में है ताकि मुद्दते रज़ाअत पूरी करे।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/776)

सवालः सैय्यदा उम्मे कुलसूम बिन्ते रसूलल्लाह का असली नाम क्या है?

जवाबः अहले सैर कहते हैं कि उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा का असली नाम मालूम न हो सका। बाज़ लोग "आमना" बताते हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/785)

○ ○ ○

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दादा और वालदैन के बारे में सवाल और जवाब

सवालः हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के वालिद और दादा का नाम क्या है?

जवाबः आपके वालिद कान नाम हाशिम बिन अब्दे मनाफ़ है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/1

और वालिदा का नाम सलमा। (मअरिजुन्नबुव्वत 14

सवालः हज़रत अब्दुल मुत्तलिब की उम्र इस वक़्त कितनी थी जबकि आपके वालिद का इंतिक़ाल हुआ?

जवाबः उस वक़्त हज़रत अब्दुल मुत्तलिब की उम्र पच्चीस साल की थी। एक रिवायत में है कि आपकी पैदाइश से पहले ही वालिद हाशिम का इंतिक़ाल हो गया था। (मअरिजुन्नबुव्वत 142/

सवालः हज़रत अब्दुल मुत्तलिब का नाम "अब्दुल मुत्तलिब" क्यों हुआ?

जवाबः आपका नाम अब्दुल मुत्तलिब रखे जाने में बहुत से वजूह मशहूर हैं:

1. इस वजह से कि आपके वालिद हाशिम किसी ज़माने में मदीना मुनव्वरा जाकर बस गए तो उनसे ये बेटे (अब्दुल मुत्तलिब) पैदा हुए। जब हाशिम के भाई मुत्तलिब मदीना में आए तो उन्होंने बच्चे को देखा जो हसीन सूरत और खुश जमाल था। पूछने लगे कि यह बच्चा किसका है? हम ही में से मालूम होता है और हमारा ही नक़्शा रखता है। लोगों ने कहा कि यह हाशिम बिन अब्दे मनाफ़ का बेटा है। फिर तो उन्होंने इस बच्चे को उठाकर अपने पीछे बिठा लिया। क्योंकि बच्चे के कपड़े मैले कुचैले और बुरी शक्ल में थे।

जब लोगों ने पूछा कि यह कौन है तो उन्होंने कहा कि यह मेरा "अब्द" है। इसी बिना पर उन्हें अब्दुल मुत्तलिब कहा जाने लगा।

2. या इस वजह से कि बाज़ लोग कहते हैं कि जब हाशिम इस जहान से कूच फ़रमाने लगे तो अपने भाई "मुत्तलिब" से वसीयत फ़रमाई कि अपने इस "अब्द" को ले लो जो यसरिब (मदीना) में है। और अपने उस फ़रज़ंद की तरफ़ इशारा किया जो मदीना मुनव्वरा में मुक़ीम था। इसी बिना पर लोग इनको अब्दुल मुत्तलिब कहने लगे।

3. बाज़ लोग कहते हैं कि जब ये बच्चे ही थे इनके वालिद ने वफ़ात पाई और उनके चचा मुत्तलिब ने उनकी परवरिश की। अरब में यह दस्तूर था कि ज़ेरे परवरिश बच्चे को अब्द कहते थे। इसलिए अब्दुल मुत्तलिब के नाम से मशहूर हो गए। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/9)

सवालः हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के कितने भाई थे?

जवाबः तीन भाई थेः

1. असद, जो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की वालिदा के वालिद हैं।

2. नफ़ीला, 3. सफ़ी। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/11)

सवालः हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने कितनी शादियाँ कीं और किस बीवी से कितनी औलादें हुईं?

जवाबः आपने पाँच शादियाँ कीं। उनकी तफ़्सील नीचे लिखी हैः

1. फ़ातिमा बिन्ते अमरू बिन आबिद से। उनसे आठ औलादें हुईं। तीन बेटे और पाँच बेटियाँः
   ज़ुबैर, अबू तालिब, अब्दुल्लाह, फ़ातिमा (या आएला), बैज़ा, बर्रा, उमैमा और अरवी।
2. दूसरा निकाह हाला बिन्ते वहब से किया। उनसे एक बेटी और तीन बेटे पैदा हुए। सफ़िया, मक़्म हज्ल और हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु।
3. तीसरी शादी नतीला बिन्ते हब्बाब या शीला बिन्ते ख़ब्बाब से की। उनसे तीन बेटे अब्बास, ज़रा और क़सम पैदा हुए।
4. चौथा निकाह सफ़िया बिन्ते जुन्दब से फ़रमाया। उनसे सिर्फ़ एक लड़का हारिस पैदा हुआ।

5. पाँचवाँ निकाह तुस्सी या लही बिन्त हाजर से किया। उनसे अबू लहब पैदा हुआ। (मअरिजुन्नबुव्वत145/1, मदारिजुन्नबुव्वत 2/…)

सवालः हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के कितने बेटे थे और कितनी बेटियाँ?

जवाबः आपके बेटों की तादाद के बारे में इख़्तिलाफ़ है। बाज़ तेरह, बाज़ बारह, बाज़ ग्यारह और बाज़ दस कहते हैं। उनके नाम इस तरह हैं:

1. हारिस,
2. अबू तालिब,
3. ज़ुबैर,
4. हम्ज़ा,
5. अबू लहब,
6. ग़ैदाक़ या इंदाक़,
7. मक़ूम,
8. ज़रार,
9. अब्बास,
10. क़सम,
11. अब्दुल काबा,
12. हजूल,
13. अब्दुल्लाह।

जो दस कहते हैं वे अंदाक़ और हजूल एक ही नाम बताते हैं और क़सम व अब्दुल काबा को औलादे अब्दुल मुत्तलिब में शुमार नहीं करते हैं। जो बारह बताते हैं वह मक़ूम को साक़ित करते हैं। इसमें और भी बहुत अक़्वाल हैं।

और साहज़ादियाँ छः थीं:

1. बैज़ा,
2. सफ़िया,
3. आतिका या फ़ातिमा,
4. बर्रा,
5. उमैमा,
6. अरवा।

(मअरिजुन्नबुव्वत 1/145, मअरिजुन्नबुव्वत 2/…)

सवालः हज़रत अब्दुल मुत्तलिब की क़ब्रे मुबारक कहाँ है?

जवाबः आपकी क़ब्र मक्का मुकर्रमा में हजून नामी क़ब्रिस्तान में है। (मअरिजुन्नबुव्वत …)

सवालः हज़रत अब्दुल मुत्तलिब की उम्र कितनी हुई?

जवाबः आपकी उम्र एक सौ दस साल हुई। एक रिवायत में एक सौ बीस साल और एक रिवायत में एक सौ चालीस साल है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/…)

एक रिवायत ब्यास्सी साल की भी है। (शवाहिद नबुव्वत 85)

सवालः हज़रत अब्दुल्लाह का इंतिक़ाल के वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र शरीफ़ कितनी थी?

जवाबः मुहम्मद बिन इस्हाक़ कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अभी पेट में ही थे कि हज़रत अब्दुल्लाह का इंतिक़ाल हो गया। बाज़ कहते हैं कि आठ या सात माह या दो माह के गोद में थे कि हज़रत अब्दुल्लाह ने वफ़ात पाई। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/22)

सवालः हज़रत अब्दुल्लाह का इंतिक़ाल किस जगह हुआ?

जवाबः हज़रत अब्दुल्लाह की वफ़ात मदीना मुनव्वरा में हुई। उन दिनों वे तिजारत के सिलसिले में क़ुरैश के साथ थे। जब वापसी में मदीना तैय्यबा से गुज़र हुआ तो क़ाफ़िले से जुदा होकर अपने भाईयों के पास जो बनी नजार थे ठहर गए। जब क़ाफ़िले के लोग मक्का मुकर्रमा पहुँचे तो हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने हज़रत अब्दुल्लाह के बारे में पूछा। क़ाफ़िले वालों ने बताया कि हमने उन्हें बीमार छोड़ा है। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने अपने बड़े बेटे हारिस को उनको लाने के लिए भेजा। जब हारिस मदीना पहुँचे तो अब्दुल्लाह का इंतिक़ाल हो चुका था और दफ़न भी किए जा चुके थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 22)

सवालः हज़रत अब्दुल्लाह की उम्र कितनी हुई?

जवाबः आपकी उम्र पच्चीस साल हुई।

(मअरिजुन्नबुव्वत 157/1, नज़हतुल मजालिस 8/115)

सवालः हज़रत अब्दुल्लाह की क़ब्र शरीफ़ कहाँ हुई?

जवाबः मदीना मुनव्वरा के "दारे नाबग़ा" में।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/22)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र शरीफ़ उस वक़्त कितनी थी जब आप अपनी वालिदा मोहतरमा के साथ मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले गए थे?

जवाबः उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ चार, पाँच, छः या सात साल की थी।

एक रिवायत में बारह साल कहा गया है। मगर सही छः या सात साल

है। (मदारिजुन्नवुव्वत 2/37)

सवालः मदीना मुनव्वरा के उस सफ़र में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी वालिदा के अलावा और कौन थे?

जवाबः उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा जो हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु की बांदी थीं, इस सफ़र में साथ थीं। (मदारिजुन्नवुव्वत 37)

सवालः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वालिदा हज़रत आमना का इंतिक़ाल किस जगह हुआ और आपकी क़ब्र शरीफ़ कहाँ है?

जवाबः हज़रत आमना जब मदीना मुनव्वरा से मक्का मुकर्रमा को वापस होने लगीं तो दौराने सफ़र मुक़ाम "अबवा" में इंतिक़ाल फ़रमाया और उसी जगह दफ़न की गयीं। अबवा मदीना के क़रीब एक जगह का नाम है। एक रिवायत में है कि हज़रत आमना की क़ब्रे अनवर मक्का मुकर्रमा के मुक़ाम "हजून" में जानिब मअल्लाह है। बाज़ कहते हैं कि मुमकिन है कि अबवा में दफ़न होने के बाद उन्हें मक्का मुकर्रमा मुन्तक़िल किया गया हो। (मदारिजुन्नवुव्वत 2/38)

○ ○ ○

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचाओं और फूफियों के बारे में सवाल और जवाब

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कितने चचा थे और कौन कौन इस्लाम लाए?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचाओं की तादाद में इख़्तिलाफ़ है। बाज़ नौ, बाज़ दस और बाज़ ग्यारह कहते हैं। जैसा कि उनकी तफ़्सीले औलाद हज़रत अब्दुल मुत्तलिब में गुज़री। चचाओं में सिवाए हज़रत हम्ज़ा और अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के कोई मुसलमान न हुआ। अबू तालिब और अबू लहब ने ज़मानाए इस्लाम पाया लेकिन इस्लाम की तौफ़ीक़ न पाई। जम्हूर उलमा का मज़हब यही है। साहिब जामेउल उसूल नक़ल करते हैं कि उनके अहले बैत ने गुमान किया है कि अबू तालिब दुनिया से मुसलामन गए हैं। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/842)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फूफियाँ कितनी थीं और कौन कौन मुसलमान हुई.

जवाबः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फूफ़ियाँ छः थीं जिनका नाम तफ़्सीली ज़िक्र औलाद अब्दुल मुत्तलिब में गुज़रा। उनमें सिर्फ़ हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा जो हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु की वालिदा हैं बिल्तिफ़ाक़ मुसलमान हुई। और आतिका के इस्लाम में इख़्तिलाफ़ है। अबू जाफ़र अक़ीली उनके इस्लाम की तरफ़ हैं और उनको सहाबियात में शुमार किया है। लेकिन इब्ने इस्हाक़ ने कहा है कि मुसलमान न हुई मगर सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/842)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचाओं में सबसे बड़े कौन थे और सबसे छोटे कौन थे?

जवाबः सबसे बड़े हारिस थे और सबसे छोटे हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/22, 848)

सवालः हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की विलादत कौन से सन में हुई?

जवाबः हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की विलादत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत से चार साल पहले हुई। बाज़ किताबों में दो साल कहा गया है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/841)

सवालः हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने किस सन में इस्लाम क़ुबूल किया और आपके इस्लाम लाने का वाक़िआ क्या है?

जवाबः उनका इस्लाम लाना ऐलाने नबुव्वत के दूसरे साल में था। बाज़ ने छठे साल में, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दारे अरक़म में दाख़िल होने के बाद कहा है। और हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लाम लाने से तीन दिन पहले इस्लाम लाए।

वाक़िआ

वाक़िआ यूँ है कि एक दिन अबू जहल बेअक़्ल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ईज़ा पहुँचा रहा था और बदतमीज़ी कर रहा था। हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु शिकार को गए हुए थे। जब आप वापस आए तो उनकी बांदी ने बताया कि आज अबूजहल तुम्हारे भतीजे को इस तरह ईज़ा पहुँचा रहा था। हज़रत हम्ज़ा को ग़ुस्सा आया और अबूजहल के पास पहुँचे और अपनी कमान जो हाथ में थी उसके सर पर मारी और उसका सर फाड़ दिया फिर इस्लाम ले आए। इससे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बहुत मसरूर हुए। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/842)

सवालः हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु किस ग़ज़वे में शहीद हुए?

जवाबः जंगे ओहद में।(तफ़्सीर नईमी 4/130, मदारिजुन्नबुव्वत 2/207)

सवालः हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ातिल का क्या नाम है?

जवाबः वहशी बिन हर्ब जो बाद में मुसलमान हुए।

(तफ़्सीर नईमी 4/130, मदारिजुन्नबुव्वत 2/207)

सवालः हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत का वाक़िआ क्या है?

जवाबः वाक़िआ यूँ है कि जनाब हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने जंगे बदर में तईमा बिन अदी और उत्वा को जो हिंदा का बाप था, क़त्ल किया था। जुबैर बिन मौतिम जो तईमा का भतीजा था उसने अपने गुलाम वहशी से कहा, अगर तू हज़रत हम्ज़ा से मेरे चचा तईमा का बदला ले और उन्हें शहीद कर दे तो तू आज़ाद है। इधर हिंदा ज़ौजा अबू सुफ़ियान ने वहशी से कहा, अगर तू मेरे बाप उत्वा का बदला हम्ज़ा से ले ले तो मैं तुझे सोना, जवाहर और दूसर ईनाम से नवाज़ूं।

लिहाज़ा जब जंगे ओहद की सफ़बंदी हुई और जंग गर्म हुई तो सवअ बिन अब्दुल उज़्ज़ा ख़ज़ाई कुफ़्फ़ार की सफ़ों से निकलकर आया और अपना मुक़ाबिल मांगा। इस पर हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु मैदान में उसके मुक़ाबिल हुए। उस पर हमलावर हुए और उसका क़िस्सा तमाम कर दिया। जब उस क़त्ल से लौटे तो वहशी पहाड़ के दामन में छिपा बैठा था। जब हज़रत हम्ज़ा उसके क़रीब से गुज़रे तो वहशी ने पत्थर की आड़ से आप पर नेज़े का वार किया जो जेरे नाफ़ लगा और आर पार हो गया। आप वहशी की तरफ़ मुतवज्जेह हुए। वह भाग खड़ा हुआ। एक जगह वहशी मुड़ा। आप भी मुड़े। वहाँ एक ख़ंदक़ थी। जिसमें आप फिसलकर ज़मीन पर गिर पड़े और जामे शहादत नोशं फ़रमाया। वहशी लौटकर ग़ार के मुँह पर पहुँचा जहाँ मर्दे मुजाहिद अब्दी नींद सो रहा था। मौत पर यक़ीन न आया तो कंकरी मारी मगर जिस्म शरीफ़ में हरकत न पाई तो यक़ीन हुआ। ग़ार में उतरकर निहायत बेदर्दी से आपका सीना चाक किया और कलेजा निकालकर हिंदा ज़ौजा अबू सुफ़ियान को पेश किया। हिंदा ने कच्चा कलेजा दांतों से चबाया। फिर हज़रत हम्ज़ा की लाश पर आई। छुरी से आपके गुर्दे, नाक, कान और आज़ाए निहानी काटे। उन सबको एक धागे में पिरोकर हार बनाकर अपने गले में पहना और अपने गले का तलाई हार वहशी को ईनाम में दिया। मक्का पहुँचकर दस अशरफ़ियाँ और देने का वादा किया।

अल्लाह तेरी शान! यह हिंदा अबू सुफ़ियान की बीवी और अमीर

माविया रज़ियल्लाहु अन्हु की माँ है जिसने आज यह हरकत की और फिर फ़तेह मक्का के दिन इस्लाम से मुशर्रफ़ हुई। फिर ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में इसी हिंदा ने इस्लामी लश्कर के साथ शामिल होकर बड़ी इस्लामी ख़िदमात अंजाम दीं। और बार बार कहती थीः मैं अपने जुर्म की भरपाई और अपने गुनाहों का कफ़्फ़ारा कर रही हूँ। जंगे क़ादसिया और जंगे यरमूक में हिंदा के कारनामे ताक़यामत याद रहेंगे। वहशी भी इस्लाम के दायरे में दाख़िल हुए और अहदे सिद्दीक़ी में नबुव्वत के दाई मुसैलमा कज़्ज़ाब को इसी नेज़े से क़त्ल करके बोले कि यह हम्ज़ा के क़त्ल का बदला है। (तफ़्सीर नईमी 4/130, मदारिजुन्नबुव्वत 2/207)

सवालः हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को किस जगह दफ़न किया गया?

जवाबः आपको मैदाने ओहद के दामने कोह में दफ़न किया गया। (तफ़्सीर नईमी 4/130)

सवालः हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र में और किसको दफ़न किया गया?

जवाबः आपके भांजे हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश को जो ओहद के शहीदों में से थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/229)

सवालः हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की उम्र कितनी हुई?

जवाबः उन्सठ साल। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/844)

सवालः हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु किस सन में पैदा हुए?

जवाबः इनकी विलादत आमुल फ़ील से तीन साल पहले है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दो या तीन साल उम्र में ज़्यादा थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/844)

सवालः ज़मानए जाहिलियत में हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के सुपुर्द क्या क्या ज़िम्मेदारियाँ थीं?

जवाबः इमारत बैतुल हराम आपके सुपुर्द थी यानी तामीर और उसकी देखभाल और मंसबे सक़ाया यानी हाजियों को ज़मज़म पिलाना भी आपके हाथ में था। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/844)

सवालः हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु किस सन में ईमान लाए?

जवाबः जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़तेह मक्का के लिए तशरीफ़ ले जा रहे थे तो हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु मक्का से हिजरत करके राह में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हो गए थे। हुज़ूर ने उनके अयाल को मदीना तैय्यबा भेज दिया और उनको अपने हमराह रखा। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़तेह मक्का में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ ही थे। बाज़ बयान करते हैं कि हज़रत अब्बास फ़तेह ख़ैबर से पहले इस्लाम लाए थे मगर उन्होंने अपने इस्लाम को पोशीदा रखा था और फ़तेह मक्का के दिन इस्लाम को ज़ाहिर फ़रमा दिया। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/845)

अहले सैर यह भी कहते हैं कि आप जंगे बदर से पहले भी मुसलमान थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/845)

सवालः हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु का इंतिक़ाल किस सन में किस माह की किस तारीख़ को हुआ?

जवाबः आपका इंतिक़ाल हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त में उनकी शहादत से दो साल पहले बारह या चौदह माहे रजब या माहे रमज़ान सन 32, 33 हि० में हुआ। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/847)

सवालः हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र शरीफ़ कहाँ है?

जवाबः बक़ी शरीफ़ में। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/847)

सवालः हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की उम्र कितनी हुई?

जवाबः आपकी उम्र अठास्सी या नवास्सी साल हुई और आप बत्तीस साल ज़मानाए इस्लाम में रहे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/847)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उन चचा का नाम क्या है जो आपके रज़ाई भाई भी थे?

जवाबः हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु कि इनको और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सौबिया ने दूध पिलाया था।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/847)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उन चचा का नाम क्या है जो आपके हमज़ुल्फ़ भी हैं?

जवाबः हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के निकाह में उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा की बहन उम्मे फ़ज़ल रज़ियल्लाहु अन्हा थीं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/831)

○ ○ ○

उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में सवाल और जवाब

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के वालिद और वालिदा का नाम क्या है?

जवाबः आपके वालिद का नाम ख़वेलद बिन असद और वालिदा का नाम फ़ातिमा बिन्त ज़ाएद था। यह क़बीला बनी आमिर बिन लुवी से थीं। (असदुल ग़ालिग़ा 5/434, मदारिजुन्नबुव्वत 2/797)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का सिलसिला नसब क्या है और आपका नसब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नसब शरीफ़ से कहाँ मिलाती है?

जवाबः आपका सिलसिला नसब नामा यह है:

ख़दीजा बिन्त ख़वेलद बिन असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा बिन क़स्सी बिन कलाब बिन मर्रा बिन कअब बिन लुवी।

आपका नसब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नसब शरीफ़ से "क़ुस्सी" में मिल जाता है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/797)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले किसके निकाह में थी और उनकी कितनी औलदें हुई?

जवाबः नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में आने से पहले हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की दो शादियाँ हो चुकी थीं। एक अबू हाला बिन नियास बिन ज़ुरारह से और दूसरी अतीक़ बिन आएज़ मख़ज़ूमी से। बाज़ ने अतीक़ को अबू हाला पर मुक़द्दम किया है। अबू हाला का असली नाम मालिक, एक क़ौल से ज़ुराराह और एक क़ौल से हिन्द था।

इनसे आपके दो बेटे हुए, एक हिंद और दूसरा हाला। और अतीक़ से एक लड़की हिंद पैदा हुई। रौज़ा अहवाब में एक लड़का और एक लड़की कहा गया है। (सीरत इब्ने हिशाम जि० 2 स० 789 पर इस लड़के का नाम अब्दुल्लाह बताया गया है।)।

(असदुल ग़ालिग़ा 5/434, मदारिजुन्नबुव्वत 2/797)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का लक़ब जमाना जाहिलियत में क्या था?

जवाबः ज़मानाए जाहिलियत में आपका लक़ब ताहिरा था।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/797)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने किस ज़रिए से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास पयाम निकाह भेजा था और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसका क्या जवाब दिया?

जवाबः नफ़ीसा बिन्ते उमैय्या नामी औरत। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने चचा अबू तालिब से इस पयाम के बारे में मशवरा फ़रमाया। आपके दूसरे चचा हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हा वग़ैरह ने भी इस रिश्ते को बख़ुशी मंज़ूर फ़रमाया।

(असदुल ग़ालिग़ा 5/435)

सवालः निकाह के वक़्त उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र कितनी थी?

जवाबः उस वक़्त हज़रत ख़दीजा की उम्र चालीस बरस की थी। और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र शरीफ़ पच्चीस साल की थी। और एक क़ौल के मुताबिक़ इक्कीस साल की थी। बाज़ ने तीस साल भी कहा है। पहला क़ौल ज़्यादा सही है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/797)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का यह निकाह किसने कराया। महफ़िले निकाह में और कौन लोग शामिल थे?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत अबू तालिब व हम्ज़ा और दीगर चचाओं के साथ और हज़रत सिद्दीक़े अकबर व दीगर शहर

के रईसों के साथ हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के मकान पर तशरीफ़ ले गए। वहाँ सैय्यदा के चचाज़ाद भाई वरक़ा बिन नौफ़ल, चचा उमरू बिन असद। एक रिवायत के मुताबिक़ ख़दीजा के वालिद ख़्वेलद बिन असद पहले ही से मौजूद थे। हज़रत अबू तालिब ने एक बलीग़ ख़ुत्बा पढ़ा। जब हज़रत अबू तालिब ने ख़ुत्बा मुकम्मल किया तो वरक़ा बिन नौफ़ल ने भी ख़ुत्बा दिया कि मैंने ख़दीजा बिन्ते ख़्वेलद को मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में दिया। अबू तालिब ने कहा कि ऐ वरक़ा! मैं चाहता हूँ कि ख़दीजा के चचा उमरू बिन असद भी आपके निकाह में शरीक हों। इस पर उमरू बिन असद ने कहाः ऐ गिरोह क़ुरैश! गवाह हो जाओ कि मैंने ख़दीजा दुख़्तर ख़्वेलद को मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह की ज़ौजियत में दिया। फिर दोनों जानिब से ईजाब व क़ुबूल पक्का हुआ। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/43, 44)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का महर कितना मुक़र्रर हुआ?

जवाबः हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के मेहर के बारे में मुख़्तलिफ़ क़ौल हैंः

1. हज़रत अबूतालिब के ख़ुत्बे में है कि उन्होंने अपने माल से बीस ऊँट मेहर क़रार दिया।
2. वरक़ा बिन नौफ़ल के ख़ुत्बे में चार सौ मिस्क़ाल चाँदी का ज़िक्र है।
3. मवाहिब लदुन्निया में बाज़ रिवायतों से नक़ल किया गया है कि ख़दीजा का मेहर साढ़े बारह औक़िया था। एक औक़िया चालीस दिरहम का है। गोया इस रिवायत के मुताबिक़ पाँच सौ दिरहम हुआ। इन रिवायतों में ततबीक़ की सूरत यह हो सकती है कि उस ज़माने में बीस ऊँट की क़ीमत पाँच सौ दिरहम या चार सौ मिस्क़ाल चाँदी होती होगी। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/44)

एक रिवायत यह है कि हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का मेहर उनतिस जवान ऊँट थे और एक रिवायत में है कि बारह औक़िया सोना था। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/797)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के

अक़्द के बाद वलीमा किसने किया और क्या खिलाया?

जवाबः बाज़ रिवायतों से मालूम होता है कि ईजाब व क़ुबूल के बाद हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने एक गाय ज़िब्ह कराई और खाना पकवाकर मेहमानों को खिलाया। (ज़रक़ानी 3/221)

रौज़ातुल अहबाब में मन्क़ूल है कि हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि आप अपने चचा अबू तालिब से फ़रमाएं कि मेहर के ऊँटों में से एक को ज़िब्ह करके लोगों को खाना खिलाएं। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/44)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ कितनी मुद्दत रहीं?

जवाबः हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पच्चीस या चौबीस साल शरीके हयात रहीं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/797)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के बतन से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कितनी औलादें हुईं?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तमाम औलाद ख़्वाह बेटे हों या बेटी सब ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से पैदा हुए सिवाए हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु अन्हु के जो हज़रत मारिया क़िब्तिया रज़ियल्लाहु अन्हा के बतन से पैदा हुए थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/797)

सवालः वह कौन सा शर्फ़ है जो उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के अलावा दुनिया की किसी औरत को हासिल न हुआ?

जवाबः वह है रब्बुल आलमीन का सलाम कहना कि हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा को रब्बे तक़द्दुस व तआला ने सलाम, जिब्राईल अलैहिस्सलाम की मारिफ़त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बानी कहलवाया। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/798)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का विसाल किस सन में किस माह किस तारीख़ को हुआ?

जवाबः हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा दसवीं रमज़ानुल मुबारक

10 नबवी हिजरत से तीन साल पहले विसाल फ़रमाया। दूसरा क़ौल हिजरत से पाँच साल पहले का है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/798)

और तीसरा क़ौल हिजरत के चार साल पहले का है।

(असदुल ग़ालिवा 5/439)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की नमाज़े जनाज़ा किसने पढ़ाई और उनको क़ब्र में किसने उतारा?

जवाबः हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा को खुद रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी क़ब्र में दाख़िल होकर दफ़न फ़रमाया और दुआए ख़ैर फ़रमाई। नमाज़ जनाज़ा उस वक़्त मशरूअ नहीं हुई थी।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/798, असदुवालिग़ा 439)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की क़ब्र मुबारक कहाँ है?

जवाबः आपकी क़ब्र शरीफ़ मक़बराए हजून में है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/798, असदुवालिग़ा 439)

हजून मक्का मुकर्रमा में पहाड़ी के दामन का वह क़ब्रिस्तान जिसको आजकल जन्नतुल मअला के नाम से मौसूम किया जाता है।

(अस्माए रिजाल मिश्कात 593)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र कितनी हुई?

जवाबः आपकी उम्र शरीफ़ पैंसठ साल हुई।

(मदारिजुन्नबुव्वत न/798, अस्माए रिजाल मिश्कात 593)

○ ○ ○

उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में सवाल व जवाब

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत किस सन में हुई?

जवाबः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत यकुम मिलादुन्नबी में हुई। (असह सैर 56)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा के वालिद और वालिदा का नाम क्या है?

जवाबः आपके वालिद का नाम ज़ामा बिन कैस और वालिदा का नाम शमूस बिन्ते कैस है।

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा का सिलसिला नसब किस तरह है और कहाँ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नसब शरीफ़ से मिलता है?

जवाबः जवाबः आपका नसबनामा इस तरह हैः

सौदा बिन्ते ज़ामा बिन कैस बिन अब्दूद बिन नज़र बिन मालिक बिन फ़हर बिन आमिर बिन लुवी बिन ग़ालिब। (मआरिजुन्नबुव्वत 65)

इनका नसब नामा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नसब से "लुवी" पर मिल जाता है।

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा पहले किसकी ज़ौजियत में थीं?

जवाबः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा पहले अपने चचाज़ाद भाई हज़रत सकरान बिन उमरू रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ौजियत में थीं। सैय्यदना सौदा और हज़रत सकरान रज़ियल्लाहु अन्हुमा दोनों एक साथ इस्लाम लाए और दोनों ने हब्शा की जानिब हिजरत सानिया की।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/81)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा अपने पहले शौहर के साथ कब इस्लाम से मुशर्रफ़ हुईं?

जवाबः दोनों मियाँ-बीवी इस्लाम के इब्तिदाई दौर में ही मक्का मुकर्रमा में मुसलमान हुए। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/801)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा के पहले शौहर का इंतिक़ाल किस जगह हुआ और उनसे कितनी औलादें हुईं?

जवाबः हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा के शौहर हज़रत सकरान ने हब्शा की हिजरत से वापसी में मक्का मुकर्रमा में इंतिक़ाल फ़रमाया। एक रिवायत में है कि हब्शा ही में अपनी जान जान आफ़रीन के सुपुर्द की। उनसे एक बेटा पैदा हुआ था जिनका नाम अब्दुर्रहमान है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 801)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा का रिश्ता हुज़ूर से किसने तय किया था?

जवाबः हज़रत सकरान रज़ियल्लाहु अन्हु का इंतिक़ाल हो गया और हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा बेवा हो गयीं। और इधर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत ख़दीजा की रहलत से बहुत दुखी व ग़मज़दा हुए तो ख़ौला बिन्ते हकीम ज़ौजा उस्मान बिन मज़ऊन रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने हुज़ूर से इजाज़त लेकर हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा के बाप से यह रिश्ता तय किया। (असूह सैर 570)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा किस सन में हुज़ूर की अज़वाजे मुताहिरात में दाख़िल हुईं और उस वक़्त आपकी उम्र कितनी थी?

जवाबः माह शव्वाल सन् 10 नबवी में हुज़ूर ने हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा को अपने निकाह में आने का शर्फ़ बख़्शा। उस बक़्ति हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र पचास साल की थी।

(मआरिजुन्नबुव्वत 65/ 3, मदारिजुन्नबुव्वत 2/802)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह किसने कराया?

जवाबः यह निकाह सुलैत विन उमरू, दूसरी रिवायत के मुताबिक़ अवू हातिव विन उमरू ने कराया। (सीरत इब्ने हिशाम उर्दू 2/7..)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा का मेहर अक्द कितना मुक़र्रर हुआ?

जवाबः चार सौ दिरहम हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा का मुक़र्रर हुआ था। (मदारिजुन्नवुव्वत 2/802, मआरिजुन्नवुव्वत 3/6..)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कि.. सन में रहलत फ़रमाई?

जवाबः हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा ने माह शव्वाल सन् 54 हि.. ज़माना इमारत हज़रत माविया रज़ियल्लाहु अन्हु में रहलत फ़रमाई। एक रिवायत के मुताबिक़ आपका इंतिक़ाल ज़माना ख़िलाफ़त फ़ारूक़ी के आख़िरी दौर में है। (मदारिजुन्नवुव्वत 2/80..)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा क.. दफ़न हैं?

जवाबः आप जन्नतुल वक़ी में दफ़न हैं। (मआरिजुन्नवुव्वत 66/3)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा से कितनी हदीसें मरवी हैं?

जवाबः आपकी मरवियात पाँच हदीसें हैं। उनमें से एक बुख़ारी शरीफ़ में वाक़ी सुनन अरवा में। (मदारिजुन्नवुव्वत 2/802)

○ ○ ○

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में सवाल और जवाब

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत किस सन में हुई?

जवाबः हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा इज़्हारे नबुव्वत के चार या पाँच साल बाद रौनक़ अफ़रोज़ हुईं। (असदुल ग़ाबा 5/501)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा के वालिद और वालिदा का नाम क्या है?

जवाबः आपके वालिद माजिद हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हैं और वालिदा का नाम ज़ैनब बिन्त आमिर और कुन्नियत उम्मे रूमान हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/399, असमाउर्रिजाल मिश्कात 612)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ौजियत में आने से पहले किससे नामज़द थीं?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह से पहले जुबैर बिन मौतम से नामज़द थीं। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/803)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह किस सन में हुआ, उस वक़्त आपकी उम्र और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र कितनी थी?

जवाबः 10 नबवी में आपका निकाह हुआ। उस वक़्त आकी उम्र छः या सात साल की थी।(मदारिजुन्नबुव्वत 2/118, सीरत इब्ने हिशाम 2/789)

और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र शरीफ़ पचास साल की थी।

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की

रुख़्सती किस सन में और कितने साल की उम्र में हुई?

जवाबः हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की रुख़्सती पहली सन हिजरी में नौ माह बाद माह शव्वाल में हुई। उस वक़्त सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र नौ साल की थी। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/118, 805)

दूसरी रिवायत के मुताबिक़ 2 हि० में आठवें महीने के आख़िर में हुई। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/805)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह किसने कराया?

जवाबः यह निकाह हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कराया था। (सीरत इब्ने हिशाम 2/789)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा का महर अक़्द कितना तय हुआ?

जवाबः आपका मेहर अक़्द चार सौ दिरहम मुक़र्रर हुआ। (सीरत इब्ने हिशाम 2/790)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा के वलीमे में क्या खाना खिलाया गया?

जवाबः वलीमे के बारे में खुद हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं: कोई ऊँट या बकरी ज़िब्ह करके वलीमे का खाना तैयार न हुआ बल्कि एक प्याला दूध जो साअद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु के घर से आया हुआ था, वही वलीमा था। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/119)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की कुन्नियत क्या थी?

जवाबः आपकी कुन्नियत उम्मे अब्दुल्लाह है। अपने भांजे अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, अस्मा बिन्ते अबीबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की निस्बत से है। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दरख़्वास्त की कि उनकी कुन्नियत मुक़र्रर फ़रमाएं। आपने फ़रमाया अपनी बहन के बेटे से अपनी कुन्नियत रख लो यानी अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा पैदा हुए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लुआबे दहन मुबारक उनके मुँह में डाला और हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु

अन्हा से फ़रमायाः यह अब्दुल्लाह हैं और तुम हो उम्मे अब्दुल्लाह।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/803)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर मुनाफ़िक़ीन का तोहमत लगाना किस सन में पेश आया। इस वाक़िए की तफ़्सील क्या है?

जवाबः क़िस्सा इफ़्क यानी मुनाफ़िक़ीन का हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर तोहमत लगाना सन् 5 हि० में पेश आया। उसकी कुछ तफ़्सील यह हैः

ग़ज़्वा बनी मुस्तलक़ से वापसी के वक़्त मुसलमानों का क़ाफ़िला क़रीब मदीना एक पड़ाव पर ठहरा तो उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ज़रूरत के लिए किसी गोशे में तशरीफ़ ले गयीं। वहाँ हार आपका टूट गया। आप उसकी तलाश में मसरूफ़ हो गयीं। इधर क़ाफ़िले ने कूच किया और आपका हौदज ऊँट पर कस दिया और उन्हें यही ख़्याल रहा कि उम्मुल मोमिनीन इसमें हैं (क्योंकि उस वक़्त आपकी उम्र बारह साल की थी और जिस्म भी हलका था। इसलिए हौदज उठाने वाले को आपके ना होने का एहसास न हुआ) क़ाफ़िला चल दिया। आप आकर क़ाफ़िले की जगह बैठ गयीं और आपने ख़्याल कि या कि मेरी तलाश में क़ाफ़िला ज़रूर वापस होगा। क़ाफ़िले के पीछे पड़ी गिरी चीज़ उठाने के लिए एक साहब रहा करते थे। उस मौक़े पर हज़रत सफ़वान इस काम पर थे। वह जो आए और उन्होंने आपको देखा तो बुलंद आवाज़ से "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" पुकारा। आपने कपड़े से पर्दा कर लिया। उन्होंने अपनी ऊँटनी बिठाई। आप उस पर सवार होकर लश्कर में पहुँचीं। मुनाफ़िक़ीन स्याह बातिन ने ग़लत वहम फैलाए। आपकी शान में बदगोई शुरू की। बाज़ मुसलमान भी उनके फ़रेब में आ गए। उनकी ज़बान से भी कोई कलिमा बेजा सरज़द हुआ। उम्मुल मोमिनीन बीमार हो गयीं और एक माह तक बीमार रहीं। उस ज़माने में उन्हें इत्तिला न हुई कि उनकी निस्बत मुनाफ़िक़ीन क्या बक रहे हैं। एक रोज़ उम्मे मस्तह से उन्हें यह ख़बर हुई। इससे आपका मर्ज़ और बढ़ गया। इस सदमे में इस तरह रोयीं कि आपका आँसू न थमता था

और न एक लम्हे के लिए नींद आती थी। इस हाल में सैय्यद आलम पर "वही" नाज़िल हुई और हज़रत उम्मुल मोमिनीन की तहारत में आयतें उतरीं। और आपका शर्फ़ व मर्तबा अल्लाह तआला ने इतना बढ़ाया कि क़ुरआन करीम की बहुत सी आयतों में आपकी तहारत व फ़ज़ीलत बयान की गई और बोहतान लगाने वालों पर रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म से हद क़ायम की गई और अस्सी अस्सी कोड़े लगाए गए। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 18/8)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर तोहमत लगाने के बाइस किन किन लोगों को हदे हज़्फ़ लगाई गई?

जवाबः इन चार लोगों पर हदे क़ज़फ़ लगाई:

1. अब्दुल्लाह बिन उबई,
2. हज़रत हिस्सान बिन साबित,
3. हज़रत मस्तह बिन असासा,
4. और हमना बिन्ते जहश।

(इब्ने कसीर 18/8)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की बरा'त व तहारत में अल्लाह तआला ने कितनी आयतें नाज़िल फ़रमायीं?

जवाबः हक़ सुब्हानहु तआला ने सत्रह या अठ्ठारह आयतें आपके दामने इज़्ज़त की बरा'त व तहारत और जमाअत मुनाफ़िक़ीन की मज़म्मत व ख़बासत में नाज़िल फ़रमायीं।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 18/8, मदारिजुन्नबुव्वत 2/[illegible])

सवालः वह कौनसी फ़ज़ीलतें हैं जो उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा के अलावा किसी और अज़वाजे मुतह्हरात को हासिल न हुईं?

जवाबः हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाया करती थीं कि मुझे तमाम उम्माहतुल मोमिनीन पर कुछ ऐसी फ़ज़ीलतें हासिल हैं जो किसी और अज़वाजे मुतहरात को हासिल न हुईं। मसलनः

1. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरे सिवा किसी कुँवारी से शादी नहीं फ़रमाई।

2. इससे पहले कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे निकाह का पयाम दें जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने रेशमी कपड़े पर मेरी सूरत हुज़ूर को दिखा दी और कहा कि यह आपकी ज़ौजा मुताहिरा है। इसी तरह आप तीन रातें ख़्वाब में मुझे मुलाहिज़ा फ़रमाते रहे।
3. मेरे सिवा अज़वाज में से कोई भी ऐसी नहीं जिनके माँ-बाप दोनों मुहाजिर हों।
4. अल्लाह तआला ने मेरी बरा'त व तहारत का बयान आसमान से क़ुरआन पाक में नाज़िल फ़रमाया।
5. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ तहज्जुद अदा फ़रमाते और मैं आपके आगे सीधी लेट रहती थी और यह सुलूक मेरे साथ ही ख़ास था।
6. मैं और हुज़ूर अकरम एक ही बर्तन से पानी ले लेकर ग़ुस्ल किया करते थे यह शर्फ़ किसी और अज़वाज को हासिल नहीं।
7. किसी ज़ौजा मुताहिरा के जामाए ख़्वाब में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर "वही" नहीं आई सिवाए मेरे जामाए ख़्वाब के।
8. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरे ही घर में बीमारी का ज़माना गुज़ारा और मेरी ही बारी के दिन आपकी रूह मुक़द्दस क़ब्ज़ की गई।
9. हुज़ूर की इस हाल में रूह क़ब्ज़ हुई कि आप मेरे सीने और छाती पर आराम फ़रमा थे।
10. और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे हुजरे में दफ़न हुए।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/802 से 804)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि के साथ कितने दिन रहीं?

जवाबः आप हुज़ूर की सोहबत व मआशरत में नौ साल रहीं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/804)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र उस वक़्त कितनी थी जिस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने विसाल फ़रमाया?

जवाबः उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ अठ्ठारह साल की थी। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/804)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने किस माह की किस तारीख़ को और किस दिन रहलत फ़रमाई?

जवाबः हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने बरोज़ मंगल 17 रमज़ान सन् 58 हि० में दुनिया से रहलत फ़रमाई। दूसरे क़ौल के मुताबिक़ सन् 57 हि० को। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/804, असदुल ग़ाबा 5/504)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की नमाज़ जनाज़ा किसने पढ़ाई?

जवाबः आपकी नमाज़े जनाज़ा हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने पढ़ाई। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/804, असदुल ग़ाबा 5/504)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहाँ दफ़न हुईं?

जवाबः आपकी वसीयत के मुताबिक़ आपको जन्नतुल बक़ी में दफ़न किया गया। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/804, असदुल ग़ाबा 5/504)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र कितनी हुई?

जवाबः आपकी उम्र शरीफ़ छियासठ साल हुई। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/804)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से कितनी हदीसें मरवी हैं?

जवाबः हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मौतबर किताबों में दो हज़ार दो सौ हदीसें मरवी हैं। उनमें से बुख़ारी व मुस्लिम में एक सौ चौहत्तर मुत्तफ़िक़ अलैहि हैं। सिर्फ़ बुख़ारी शरीफ़ में चौव्वन और सिर्फ़ मुस्लिम शरीफ़ में सरसठ (67) हैं। बक़िया तमाम किताबों में हैं।

और मआरिज नबुव्वत रुक्न चार स० 19 पर इनकी रिवायत हदीस की तादाद दो हज़ार दो सौ दस बताई गई है। जिनमें से सहीहैन में दो सौ सत्तावन, एक सौ चौहत्तर मुत्तफ़िक़ अलैहि हैं, चव्वन बुख़ारी में और उन्हत्तर (69) मुस्लिम शरीफ़ में। बाक़ी दीगर किताबों में।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में सवाल व जवाब

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत कब हुई?

जवाबः उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत ऐलाने नबुव्वत से पाँच साल पहले हुई। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/814)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा के वालिद और वालिदा का नाम क्या है?

जवाबः आप, सैय्यदना उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी हैं और आपकी वालिदा मोहतरमा का नाम ज़ैनब बिन्ते मज़ऊन हैं जो हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ियल्लाहु अन्हु की बहन हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/812)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ौजियत में आने से पहले किसके निकाह में थीं?

जवाबः आप, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हरम में आने से पहले हज़रत ख़ुनीस बिन हुज़ाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ौजियत में थीं। हज़रत ख़ुनीस ग़ज़्वा बदर में ज़ख़्मी होकर बाद में शहीद हो गए और एक क़ौल के मुताबिक़ ग़ज़्वाए ओहद में शहीद हुए।

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा का हुज़ूर सललल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़्द में आने का सबब और वाक़िआ क्या है?

जवाबः आपका हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में आने का वाक़िआ यूँ है:

जब उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा ख़नीस रज़ियल्लाहु अन्हु से बेवा हुईं तो उसी ज़माने में रुक़ैय्या बिन्ते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ौजियत में थीं फ़ौत हुईं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए और हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा की पेशकश की। हज़रत उस्मान ने कहा, मुझे मोहलत दो कि मैं अपना मामला सोच समझ लूँ। कुछ रातें गुज़ारने के बाद हज़रत उस्मान ने जवाब दिया कि मेरी राय यह क़ायम हुई कि चंद दिन निकाह न करूं। उसके बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात की और फ़रमाया कि अगर आपकी ख़्वाहिश हो तो हफ़्सा का निकाह आपके साथ कर दूं। हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ामोशी अपनाई और कोई जवाब न दिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर होकर दोनों की शिकायत की। आपन फ़रमाया: हक़ तआला हज़रत उस्मान के लिए तुम्हारी बेटी से बेहतर ज़ौजा अता फ़रमाए और और तुम्हारी बेटी हफ़्सा के लिए उस्मान से बेहतर शौहर शौहर अता फ़रमाए। और ऐसा ही वाक़िआ हुआ कि हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ुबूल फ़रमाया और हज़रत उम्मे कुलसूम बिन्ते रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को मरहमत हो गयीं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं फिर जब हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझसे मुलाक़ात की और फ़रमाया कि शायद तुम मुझसे उस वक़्त नाराज़ हो गए थे जब तुमने पेशकश की थी और मैंने कोई जवाब नहीं दिया था। मैंने कहा, हाँ मैं नाराज़ हो गया था। उन्होंने फ़रमाया, तुमने जो पेशकश की थी उसका जवाब मैंने तुम्हें इंकार में नहीं दिया था। अलबत्ता मैं जानता था कि रसूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हफ़्सा को याद फ़रमाया था और मैंने आपका राज़ फ़ाश करना नहीं चाहा अगर रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ुबूल नहीं फ़रमाते तो मैं क़ुबूल कर लेता। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/813, असदुल ग़ाबा 5/425)

5. सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा

केस सन में हुज़ूर की ज़ौजियत में दाख़िल हुई?

जवाबः आप सन् 3 या 2 हि० में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ौजियत में दाख़िल हुईं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/813, असदुल ग़ाबा 5/425)

सवालः निकाह के वक़्त उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र कितनी थी और रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र कितनी थी?

जवाबः उस वक़्त आपकी उम्र बीस साल की थी और हुज़ूर की उम्र शरीफ़ पचपन साल। (असहह सैर 573)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह किसने पढ़ाया?

जवाबः आपका यह निकाह आपके वालिद उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पढ़ाया। (सीरत इब्ने हिशाम 2/791)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा का महर अक़्द कितना मुक़र्रर हुआ?

जवाबः आपका दैन मेहर चार सौ दिरहम मुक़र्रर हुआ।

(सीरत इब्ने हिशाम 2/791)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा को कितनी तलाक़ें दी थी और किसके कहने पर रुजू फ़रमाया था?

जवाबः एक रिवायत में मरवी है कि हुज़ूर ने हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा को एक तलाक़ रजई दी। जब उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को इसकी ख़बर पहुँची तो उन्हें बहुत दुख हुआ। इसके बाद जिब्राईल अलैहिस्सलाम आए और "वही" लाए और हुक्मे इलाही यह है कि हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा से रुजू फ़रमा लें क्योंकि वह बहुत ज़्यादा रोज़ादार और रातों को जागने वाली हैं और वह जन्नत में आपकी ज़ौजा हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/814)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल किस सन में हुआ?

जवाबः आपका इंतिक़ाल सन् 41 या 45 या 47 हि० ज़माना इमारत माविया रज़ियल्लाहु अन्हु में हुआ। बाज़ ख़िलाफ़ते उस्मानी के ज़माने में बताते हैं। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/814)

और बाज़ ने 27 हि० कहा है। (असदुल ग़ाबा 5/486)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा की नमाज़ जनाज़ा किसने पढ़ाई?

जवाबः आपकी नमाज़े जनाज़ा मरवान (जो उस ज़माने में मदीना तैय्यबा का हाकिम था) ने पढ़ाई। (मदारिजुन्नबुव्वत 63/4)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र कितनी थी?

जवाबः आपकी उम्र शरीफ़ साठ साल हुई। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/814)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा से कितनी हदीसें मरवी हैं?

जवाबः हदीस की किताबों में आप से साठ हदीसें आपसे मरवी हैं। उनमें से चार मुत्तफ़िक़ अलैहि यानी बुख़ारी व मुस्लिम में हैं। और तन्हा मुस्लिम में छः हदीसें बाक़ी पचास दीगर तमाम किताबों में मरवी हैं। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/814)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा कहाँ दफ़न हैं?

जवाबः आप जन्नतुल बक़ी में दफ़न हैं।

○ ○ ○

उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्त खुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में सवाल और जवाब

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते खुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा का पहला निकाह किससे हुआ था?

जवाबः हज़रत ज़ैनब बिन्ते खुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा पहले अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ौजियत में थीं। वह ग़ज़वा ओहद में शहीद हो गए। बाज़ कहते हैं कि उबैदा बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब की ज़ौजियत में थीं और वह ग़ज़वा बदर में शहीद हो गए थे। बाज़ कहते हैं कि वह पहले तुफ़ैल बिन हारिस की बीवी थीं। उन्होंने इनको तलाक़ दे दी तो उबैदा बिन हारिस ने उनको अपनी ज़ौजा बना लिया। एक क़ौल यह है कि अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको पयाम दिया। बाज़ अहले सैर इस क़ौल को तरजीह देते हैं। और मवाहिब लदुन्निया में फ़रमाया कि पहला क़ौल ज़्यादा सही है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/814)

एक क़ौल यह भी है कि उबैदा बिन हारिस से पहले जहम बिन उमरू बिन हारिस की ज़ौजियत में रहीं जो आपके चचाज़ाद भाई थे।

(सीरत बनी हिशाम /793)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते खुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा किस सन में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ौजियत में दाख़िल हुई?

जवाबः रमज़ान सन् 3 हि० में रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपको अपने निकाह में लाए।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/814, मआरिजुन्नबुव्वत 4/63)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते खुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ किसने कराया?

जवाबः यह निकाह क़बीसा बिन उमरू व बिलाली ने कराया।

(सीरत इब्ने हिशाम 2/793)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा का मेहर कितना मुक़र्रर हुआ?

जवाबः रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको मेहर में चार सौ दिरहम इनायत फ़रमाए। (सीरत इब्ने हिशाम 2/793)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल किस माह और सन में हुआ?

जवाबः हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा माह रबिउल आख़िर सन् 4 हिजरी को दुनिया से आख़िरत की तरफ़ रवाना हुई।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/815)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सोहबत में कितनी मुद्दत रहीं?

जवाबः हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में बहुत कम मुद्दते हयात रहीं। बाज़ अरबाब सैर दो माह, बाज़ छः माह और बाज़ आठ माह मुद्दते सोहबत बताते हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/814)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा की नमाज़े जनाज़ा किसने पढ़ाई?

जवाबः आपकी नमाज़े जनाज़ा ख़ुद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पढ़ाई। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/814)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा किस जगह मदफ़ून हुई?

जवाबः आपको जन्नतुल बक़ी में दफ़न किया गया।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/815)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र कितनी हुई?

जवाबः आपकी उम्र शरीफ़ तीस साल हुई।

(असाबा 4/316, ज़रक़ानी 3/249)

○ ○ ○

उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में सवाल व जवाब

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा की पैदाइश किस सन में हुई?

जवाबः उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा सन् 31 मिलादुन्नवी को दुनिया में रौनक़ अफ़रोज़ हुई? (उमदतुल क़ारी 2)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा का असली नाम क्या है?

जवाबः आपका असली नाम हिंद है। बाज़ रमला बताते हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/715)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा के वालिद और वालिदा का नाम क्या है?

जवाबः आपके वालिद का नाम अबू उमैय्या सहल बिन मुइज़्ज़ा बिन अब्दुल्लाह है और वालिदा का नाम आतिका बिन्ते आमिर।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/815)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा पहले किसके निकाह में थीं?

जवाबः आप पहले अबू सलमा अब्दुल्लाह बिन अल असद की ज़ौजियत में थीं जो हुज़ूर की फूफी बर्रा बिन्ते अब्दुल मुत्तलिब के बेटे हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/815)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पहले शौहर का इंतिक़ाल कब हुआ और उनसे आपकी कितनी औलाद हुईं?

जवाबः हज़रत अबू सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु ग़ज़्वा ओहद में ज़ख़्मी

होकर तंदरुस्त हुए। उसके बाद आपको एक लश्कर के साथ भेजा गया जब वहाँ से वापस हुए तो आपके ज़ख़्म फिर ताज़ा हो गए। और उन ज़ख़्मों से सन् 4 हि० को इंतिक़ाल फ़रमाया। एक क़ौल 3 हि० का है।

इनसे उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा के चार बच्चे हुए:

1. ज़ैनब, 2. सलमा, 3. उमरू, 4. दुर्रा। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/816)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा जब बेवा हुईं तो आपको किस किस ने पैग़ाम दिया?

जवाबः एक रिवायत में आया है कि जब उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा बेवा हुईं तो हज़रत सिद्दीक़े अकबर व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने अपना पयाम भेजा मगर हज़रत उम्मे सलमा रज़ियलल्लाहु अन्हा ने उनके पयाम को मंज़ूर न फ़रमाया। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/816)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पयाम लेकर कौन गया था?

जवाबः आपके पास हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पयाम हज़रत हातिब बिन अबि बतलआ रज़ियल्लाहु अन्हु लेकर आए थे।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/816)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पैग़ाम गया तो उन्होंने क्या उज़्र किया और हुज़ूर ने उसका क्या जवाब दिया?

जवाबः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा को अपना प्यामे निकाह भेजा तो कहा मरहबा रसूलल्लाह लेकिन मैं बड़ी उम्र की औरत हूँ। मेरे साथ मेरे यतीम बच्चे हैं और मैं बहुत ग़ैरतमंद हूँ। आप औरतों को जमा फ़रमाएंगे (तो रश्क व इख़्तिलाफ़ अंदेशा है)। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरी उम्र तुम्हारी उम्र से ज़्यादा है। तुम्हारे यतीमों की परवरिश खुदा और रसूल के ज़िम्मे है। एक रिवायत में है कि फ़रमायाः तुम्हारे बच्चे मेरे बच्चे हैं और यह जो तुम कहती हो कि मैं बहुत ग़ैरतमंद हूँ तो मैं दुआ करता हूँ कि हक़ तआला इस बात को तुम से दूर फ़रमाए। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/816)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा को किस सन में ज़ौजा होने का शर्फ़ हासिल हुआ?

जवाबः आप माह शव्वाल सन् 4 हि० को ज़ौजियत में दाख़िल हुई।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/816)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह किसने कराया और कितने मेहर पर?

जवाबः यह निकाह उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटे अबू सलमा ने कराया। आपके मेहर में रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक फ़र्श जिसमें पत्तियों का भराओ था, एक प्याला, एक रकाबी और चक्की दी।

(सीरत इब्ने हिशाम 2/790)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल किस सन और किस माह में हुआ?

जवाबः उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल शव्वाल सन् 59 हि० में हुआ। बाज़ सन् 62 हि० में ज़माना यज़ीद बिन माविया में हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद बताते हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/816)

और बाज़ सन् 61 हि० में कहते हैं।(अल कामिल फ़ि तारीख़ 2/128)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा की नमाज़े जनाज़ा किसने पढ़ाई?

जवाबः आपकी नमाज़े जनाज़ा हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने पढ़ाई। बाज़ कहते हैं कि हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने पढ़ाई।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/817)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा किस जगह दफ़न हुई?

जवाबः हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा बक़ीअ शरीफ़ में दफ़न हुई।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/817)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र कितनी हुई?

जवाबः हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र शरीफ़ चौरासी

साल हुई। (मदारिजुन्नवुव्वत 2/817)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से कितनी हदीसे मरवी हैं?

जवाबः उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से तीन सौ अठहत्तर हदीसें मरवी हैं। उनमें से मुत्तफ़िक़ अलैहि यानी बुख़ारी व मुस्लिम में तेरह हदीसें हैं। सिर्फ़ बुख़ारी शरीफ़ में तीन हदीसें और तन्हा मुस्लिम शरीफ़ में तेरह हदीसें हैं बाक़ी दीगर किताबों में। (मदारिजुन्नवुव्वत 2/817)

○ ○ ○

उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में सवाल व जवाब

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा का हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से और क्या रिश्ता था?

जवाबः फूफीज़ाद बहन कि ज़ैनय बिन्ते जहश की वालिदा हुज़ूर की फूफी उमैमा बिन्ते अब्दुल मुत्तलिब थीं।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 22/2, मदारिजुन्नबुव्वत 2/817)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा का पहला नाम क्या था और आपकी कुन्नियत क्या है?

जवाबः आपका नाम पहले बर्रा था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह नाम तब्दील फ़रमाकर ज़ैनब रखा और आपकी कुन्नियत उम्मे हकम थी। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/817, अलबदाया 146/4)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा पहले किसके निकाह में थीं और यह निकाह किसने कितने मेहर पर कराया था?

जवाबः आपके अज़वाजे मुतहरात में दाख़िल होने से पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ौजियत में थीं। यह निकाह ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दस दीनार साठ दिरहम, एक जोड़ा कपड़ा, पचास मुद खाना और तीस साअ खजूर देकर कराया था।(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 22/2)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा अपने पहले शौहर के निकाह में कितनी मुद्दत रहीं और जुदाई क्यों हुई?

जवाबः आप हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु के निकाह में एक साल या कुछ ज़्यादा अरसा रहीं। क्योंकि हज़रत ज़ैनब ख़ूबसूरत थीं और हज़रत ज़ैद आज़ाद करदा गुलाम, इस वजह से दोनों के बीच नासाज़गारी पैदा हुई और हज़रत ज़ैनब की जानिब से हज़रत ज़ैद के साथ बर्ताव बदलना शुरू हो गया। यहाँ तक कि यह हद पहुँच गई और हज़रत ज़ैद ने तलाक़ दे दी। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/818)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा के पास हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पयाम लेकर कौन गया था?

जवाबः मन्क़ूल है कि जब हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा की इद्दत पूरी हो गई तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैद से फ़रमायाः जाओ और ज़ैनब को मेरे लिए पैग़ाम दो। हज़रत ज़ैद को इस काम के लिए ख़ास करने में हिकमत यह थी कि लोग यह गुमान न करें कि यह निकाह बग़ैर हज़रत ज़ैद की रज़ामंदी के जबरन वाक़ेअ हुआ है। और उन्हें यह मालूम हो जाए कि ज़ैद के दिल में ज़ैनब की कोई ख़्वाहिश नहीं है और वह इस बात से राज़ी व ख़ुश हैं। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/819)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा के पास जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पयाम पहुँचा तो उन्होंने क्या कहा?

जवाबः जब हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा के पास हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पयाम पहुँचा तो हज़रत ज़ैनब ने कहाः मैं इस बात का कोई जवाब नहीं दे सकती जब तक कि मैं अपने रब से मशवरा न कर लूँ। इसके बाद वह उठीं और मुसल्ले पर पहुँचीं। सर को सज्दे में रखकर बारगाहे बेनियाज़ में अर्ज़ नियाज़ की। बाज़ रिवायतों में आया है कि दो रकअत नमाज़ पढ़कर सज्दे में गयीं और यह मुनाजात कीः ऐ ख़ुदा! तेरा नबी मेरी ख़्वास्तगारी फ़रमाता है अगर मैं उनकी ज़ौजियत के लायक़ हूँ तो मुझे उनकी ज़ौजियत में दे दे। उसी वक़्त उनकी यह दुआ क़ुबूल हुई। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/820)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु

अन्हा किस माह और किस सन में अज़्वाजे मुतहरात में दाख़िल हुई?

जवाबः हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा माह ज़ीक़ादा सन् 5 हि० को अज़्वाजे मुतहरात में दाख़िल हुई। यह क़ौल क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु का है और बक़ौल अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु सन् 3 हि० में।

(अल बिदाया वन्निहाया 148)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा का यह निकाह किसने किस जगह कराया और गवाह कौन थे?

जवाबः यह निकाह खुद अल्लाह तआला ने अर्शे मुअल्ला पर किया। और गवाह जिब्राईल अलैहिस्सलाम थे।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/821, तफ़सीर अलम नश्रह 203)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा का मेहर कितना मुक़र्रर हुआ?

जवाबः आपका मेहर अक़्द चार सौ दिरहम मुक़र्रर हुआ।

(सीरत इब्ने हिशाम 2/790)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा को उनका निकाह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ हो जाने की बशारत किसने सुनाई?

जवाबः हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा जो कि हुज़ूर की ख़ादिमा थीं उन्होंने ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को यह बशारत सुनाई।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/820)

और इस खुशख़बरी सुनाने पर वे ज़ेवरात जो ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा पहने हुए थीं उतारकर सलमा को पहना दिए।

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ निकाह होने की खुशी और इस नेमत के शुक्राने में कितने दिन रोज़ेदार रहीं?

जवाबः आप इस खुशी में लगातार दो माह रोज़ेदार रहीं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/820)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा की वह फ़ज़ीलतें क्या क्या हैं जो किसी और अज़वाजे मुतहरात में नहीं हैं?

जवाबः हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते: मुझे चंद फ़ज़ीलतें ऐसी हासिल हैं जो किसी और ज़ौजा को हासिल नहीं। एक यह कि मेरे जद और तुम्हारे जद एक हैं। दूसरा यह कि मेरा निकाह आसमान में हुआ और तीसरा यह कि इस क़िस्से में जिब्राईल अलैहिस्सलाम सफ़ीर और गवाह थे।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/822)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल किस सन में हुआ?

जवाबः हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल सन् 20 या 21 हि० को हुआ। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/822)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा की नमाज़े जनाज़ा किसने पढ़ाई?

जवाबः आपकी नमाज़े जनाज़ा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पढ़ाई। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/822, असदुल ग़ाबा 5/463)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा की क़ब्र मुबारक कहाँ है?

जवाबः आपकी क़ब्र अनवर बक़ीअ शरीफ़ में है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/822, असदुल ग़ाबा 5/463)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र कितनी हुई?

जवाबः आपकी उम्र तिरेप्पन साल की हुई। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/822)

दूसरा क़ौल पचास साल का है। (असदुल ग़ाबा 5/463)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा से कितनी हदीसें मरवी हैं?

जवाबः आपसे ग्यारह हदीसें मरवी हैं। उनमें से मुत्तफ़िक़ अलैहि दो हदीसें हैं बक़िया नौ दूसरी किताबों में है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/822)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में सवाल व जवाब

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा के वालिद का नाम क्या है और उनका ताल्लुक़ किस क़बीले से है?

जवाबः हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा के वालिद का नाम हारिस बिन ज़रार जो क़बीला बनी मुस्तलक़ के सरदार और पेशवा थे।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/825, अल कामिल फी तारीख़ 2/129)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा का पहला नाम क्या था?

जवाबः हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा का असली नाम भी बर्रा था। नबी करीम ने यह नाम तब्दील फ़रमा कर जुवेरिया तजवीज़ फ़रमाया।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/522)

एक क़ौल के मुताबिक़ तैरा नाम था। (मअरिजुन्नबुव्वत 96/4)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा किस ग़ज़वा में कै़द करके लायी गयीं और माले ग़नीमत की तक़सीम में किसके हिस्से में आयी?

जवाबः हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा ग़ज़वा मरीसीअ यानी ग़ज़वा मुस्तलक़ में क़ैद होकर आयीं और जब माले ग़नीमत तक़सीम हुआ तो हज़रत साबित बिन क़ैस रज़ियल्लाहु अन्हु के हिस्से में आयीं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/825)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा के निकाह में आने से पहले किसके निकाह में थीं?

जवाबः हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा हुज़ूर के निकाह में आने से पहले अपने चचाज़ाद भाई अब्दुल्लाह की ज़ौजियत में थीं।

(सीरत इब्ने हिशाम 2/792)

एक क़ौल यह है कि मसाफ़े बिन सफ़वान के निकाह में थीं।
(अल कामिल 2/129)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में कैसे आयीं?

जवाबः हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत साबित बिन क़ैस के माले ग़नीमत के हिस्से में आयीं तो हज़रत साबित ने उन्हें मकातब बना दिया यानी यह कह दिया कि इतना माल इतनी रक़म करो तो तुम आज़ाद हो जाओगी। हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा मुसलमान होकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अर्ज़ किया कि मेरे मौला ने मुझे मकातिब बना दिया है। मैं किताबत की रक़म अदा नहीं कर सकती। मैं उम्मीद रखती हूँ कि आप मेरी मदद फ़रमाएंगे। हुज़ूर ने किसी को भेजा कि साबित बिन क़ैस के पास जाए और वह किताबत की रक़म अदा करे। उसके बाद आप उनको आज़ाद करके अपने निकाह में ले आए।
(मदारिजुन्नबुव्वत 2/825)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा किस सन और कितनी उम्र में अज़वाजे मतहरात में दाख़िल हुई?

जवाबः हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा माह शाबान सन् 5 हि० में अज़वाजे मुतहरात में दाख़िल हुईं। उस वक़्त उनकी उम्र बीस साल की थी?
(मदारिजुन्नबुव्वत 2/825)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा का मेहर कितना मुक़र्रर हुआ?

जवाबः हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा का मेहर क़बीला बनी मुस्तलिक़ के तमाम क़ैदियों की आज़ादी को बनाया कि इसी क़बीले से आप ताल्लुक़ रखती थीं। एक क़ौल यह है कि चार सौ दिरहम मेहर मुक़र्रर हुआ। सहाबा किराम जब इस हक़ीक़ते हाल से बाख़बर हुए तो आपस में कहने लगे कि हमें यह ज़ेब नहीं देता कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रिश्तेदारों को क़ैदी और ग़ुलामी में रखें। इसके बाद तमाम सहाबा किराम ने उन क़ैदियों को आज़ाद कर दिया। अहले तारीख़ बताते हैं कि बनी मुस्तलिक़ के क़ैदियों की मजमूई तादाद सौ से ज़्यादा

थी और सब ही ने उस कै़द से रिहाई पाई। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/825)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ किसने कराया?

जवाबः यह निकाह हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा के वालिद हारिस बिन अबि ज़रार ने कराया। (सीरत इब्ने हिशाम 2/792)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा का विसाल किस सन में हुआ?

जवाबः हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा सन् 50 हि० या 56 हि० में आलमे विसाल की तरफ़ रहलत फ़रमाई। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/826)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा की नमाज़े जनाज़ा किसने पढ़ाई?

जवाबः आपकी नमाज़े जनाज़ा मरवान ने पढ़ाई जो हज़रत अमीर माविया की तरफ़ से मदीना का हाकिम था। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/826)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र कितनी हुई?

जवाबः आपकी उम्र पैंसठ साल हुई। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/826)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा से कितनी हदीसें मरवी हैं?

जवाबः मौतबर किताबों में आपसे सात हदीसें मरवी हैं। बुख़ारी शरीफ़ में दो, मुस्लिम शरीफ़ में दो बाक़ी दीगर किताबों में।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/826)

○ ○ ○

उम्मुल मोमिनीन हज़रत हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में सवाल व जवाब

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा के वालिद और वालिदा का नाम क्या है?

जवाबः हज़रत हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा के वालिद का नाम सख़र बिन हर्ब था जो कि अबू सुफ़ियान की कुन्नियत से मशहूर थे। और वालिदा का नाम सफ़िया बिन्ते आस था जो कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की फूफी थीं? (मदारिजुन्नबुव्वत 2/826, असमाउर्रिजाल 592)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा का असली नाम रमला था। एक क़ौल के मुताबिक़ हिंद। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/826)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा का पहला निकाह किससे हुआ था और उनसे कितनी औलादें हुईं?

जवाबः हज़रत हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा अज़वाजे मुतहरात में दाख़िल होने से पहले उबैदुल्लाह बिन जहश की ज़ौजियत में थीं। शुरू ही हालात में मुसलमान हुईं और हब्शा की जानिब दूसरी हिजरत की। उसके बाद उबैदुल्लाह मुरतिद हो गया और नसरानियत की तरफ़ रुजू होकर शराबख़ोरी मशग़ला बनाया और इसी हाल में मर गया। उबैदुल्लाह से एक बेटी पैदा हुई जिसका नाम हबीबा था। उसी से आपकी कुन्नियत उम्मे हबीबा हुई। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/826)

सवालः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मुल ने मोमिनीन हज़रत हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा का पयाम देकर किस को किस के पास भेजा था?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमरू बिन उमैय्या ज़मरी रज़ियल्लाहु अन्हु को नजाशी बादशाह के पास भेजा कि हज़रत

हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा को हमारा पयाम दें और निकाह करें।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/826)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पयाम की बशारत लेकर कौन गया था?

जवाबः मरवी है कि नजाशी बादशाह ने अपनी बांदी जिसका नाम अबरहा था, हज़रत हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास यह कहला भेजा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक मक्तूब इस मज़मून का यानी निकाह का पयाम आया है अगर तुम को मंज़ूर हो तो वकील की ताय्युन करूं ताकि अक़्द निकाह अंजाम पाए। हज़रत हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास जब यह पयाम पहुँचा तो बहुत खुशी का इज़्हार किया और इस ख़बर बशारत सुनाने पर अपने हाथ पाँव की उंगलियों में जितना ज़ेवर था उतार कर बांदी को दे दिया। फिर जब अक़्द निकाह हो गया तो मेहर में से पचास मिस्क़ाल सोना अबरहा की बांदी को भेजा और माफ़ी चाही कि उस रोज़ कि जब तुम खुशख़बरी लाई थीं तो वाक़िए के मुताबिक़ ईनाम न दे सकी थी। अबरहा बांदी ने यह पचास मिस्क़ाल सोना, पिछले ईनाम वाले ज़ेवर के साथ यह कहकर वापस कर दिया कि बादशाह ने लेने से मना कर दिया। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/423)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा किस सन में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में आयीं?

जवाबः हज़रत हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा सन् 6 हि० में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में आयीं। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/422)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा का यह निकाह किसने पढ़ाया और दोनों तरफ़ से वकील कौन कौन थे?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वकील नजाशी बादशाह थे और हज़रत हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा के वकील ख़ालिद बिन सईद और ख़ुत्बा निकाह नजाशी ने पढ़ा। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/826)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा का

मेहर अक़्द कितना मुक़र्रर हुआ और किसने अपनी तरफ़ से अदा किया?

जवाबः आपका मेहर अक़्द चार सौ मिस्क़ाल सोना या चार हज़ार दिरहम मुक़र्रर हुआ जिसे नजाशी बादशाह ने अपनी तरफ़ से अदा किया। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/423)

सवालः निकाह के वक़्त उम्मुल मोमिनीन हज़रत हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र कितनी थी?

जवाबः इस वक़्त हज़रत हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा कुछ ऊपर तीस साल की थीं। (मदारिजुन्नबुव्वत 423)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा को लाने के लिए किसको भेजा था?

जवाबः जब इस अक़्द के मज़बूत करने के सिलसिले की ख़बर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहुँची तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत शिरजील बिन हसना रज़ियल्लाहु अन्हु को हब्शा भेजा कि हज़रत हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा को मदीना मुनव्वरा लाएं। एक क़ौल यह है कि हज़रत उमरू बिन ज़मरी लेकर आए थे।(मदारिजुन्नबुव्वत 2/828)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात किस जगह और किस सन में हुई?

जवाबः हज़रत हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात मदीना तैय्यबा में सन् 40 या 44 हि० में बक़ौल सही वाक़ेअ हुई। एक क़ौल यह है कि वफ़ात मुल्के शाम में वाक़ेअ हुई। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/828)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा से कितनी हदीसें मरवी हैं?

जवाबः हज़रत हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा से हदीस की किताबों में पैंसठ हदीसें मरवी हैं। इनमें दो मुत्तफ़िक़ अलैहि हैं एक तन्हा मुस्लिम में है। बाक़ी हदीसें दीगर किताबों में मरवी हैं। (मअरिजुन्नबुव्वत 151/4)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा की क़ब्र कहाँ है?

जवाबः आपकी क़ब्रे अनवर बक़ीअ में है। (मअरिजुन्नबुव्वत 151/4)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में सवाल और जवाब

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा के वालिद का नाम क्या है?

जवाबः हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा के वालिद का नाम "हय्यि बिन अख़्तब" है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/828)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा पहले किस के निकाह में थी?

जवाबः हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा पहले सलाम बिन मुस्लिम की ज़ौजियत में थीं। जब इनमें जुदाई हो गई तो फिर किनाना बिन रबी बिन अबिल हक़ीक़ की ज़ौजियत में आ गयीं। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/828) किनाना ग़ज़्वे ख़ैबर में मारा गया।

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा किस ग़ज़्वे में क़ैद होकर आयीं और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हिस्से में कैसे आयीं?

जवाबः हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा फ़तेह ख़ैबर में जंगी क़ैदियों के साथ क़ब्ज़े में आयीं। लोगों ने उनके हुस्न व जमाल का हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज़िक्र किया तो हुज़ूर ने उनको अपने लिए चुन लिया। एक रिवायत में है कि हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा तक़सीम माले ग़नीमत में हज़रत वहिया कलबी रज़ियल्लाहु अन्हु के हिस्से में आयीं। लोगों ने कहा वह हसीना, जमीला क़बीले की सरदार यहूद के बादशाहों में से एक बादशाह की बेटी और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की औलाद में से हैं। मुनासिब है कि हुज़ूर के साथ मख़्सूस हों। सहाबा किराम में हज़रत वहिया की मानिन्द बहुत हैं और ग़नीमत में सफ़िया की

मानिन्द कम और उन्हें वहिया रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ मख़्सूस करना बहुत से सहाबा के दिल टूटने का सबब होगा। आम मसलेहत यही है कि उनको हज़रत वहिया से वापस लेकर अपने लिए ख़ास कर लिया जाए। एक रिवायत में आया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत वहिया कलबी से फ़रमायाः इन क़ैदियों में से कोई और ले लो। बाज़ रिवायतों में आया है कि हज़रत वहिया को हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा के चचा की लड़की उनके बदले में मरहमत फ़रमाई। एक रिवायत में है कि हज़रत वहिया ने हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा को सात बांदियों के बदले ख़रीदा। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/421)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा किस सन में अज़्वाजे मुतहरात में दाख़िल हुईं?

जवाबः हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा फ़तेह ख़ैबर के बाद सन् 7 हि० में अज़्वाजे मुतहरात में दाख़िल हुईं। उस वक़्त उनकी उम्र सत्रह साल की थी। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/421)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा का मेहर अक़्द क्या मुक़र्रर हुआ?

जवाबः हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा का मेहर अक़्द उनकी आज़ादी मुक़र्रर हुआ। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/422)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा के वलीमे में क्या खिलाया गया और कहाँ?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वापसी पर मंज़िले सहबा में पहुँचे तो बाद तहारत हैज़ हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा से ज़फ़ाफ़ फ़रमाया और जिस (एक क़िस्म का खाना जौ, खजूर, घी और सत्तू से तैयार होता है) का वलीमा किया। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया जो भी हज़रात मिलें सफ़िया के वलीमे में बुला लें। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/422)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात किस सन में हुई?

जवाबः हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात सन् 36 हि० में

वाक़ेअ हुई।

एक क़ौल यह भी है कि ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में हुई। और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/830)

एक क़ौल सन् 50 हि० का भी है।

(असदुल ग़ाबा 5/491, असमाउर्रिजाल मिश्कात 601)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा किस जगह दफ़न हुईं?

जवाबः हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा जन्नतुल बक़ी में दफ़न हुईं।

(असमाउर्रिजाल मिश्कात 601)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा से कितनी हदीसें मरवी हैं?

जवाबः हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा से दस हदीसें मरवी हैं। उनमें से एक मुत्तफ़िक़ अलैहि बाक़ी दीगर किताबों में।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/830)

○ ○ ○

उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में सवाल व जवाब

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत किस सन में हुई?

जवाबः हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा सन् 25 मिलादुन्नबी में पैदा हुई। (असदुल ग़ाबा 5/550)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा के वालिद और वालिदा का नाम क्या है?

जवाबः हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा के वालिद का नाम हारिस और वालिदा का नाम हिंद बिन्ते औफ़ है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/830)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा का पहला नाम क्या था?

जवाबः हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा का नाम भी बर्रा था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह नाम तब्दील फ़रमाकर मैमूना तजवीज़ फ़रमाया। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/831)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा पहले किसके निकाह में थीं?

जवाबः हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा ज़मानाए जाहिलियत में मसऊद बिन उमर सक़फ़ी की निकाह में थीं। आपसी नाइत्तेफ़ाक़ी होने पर जुदाई हो गई। फिर अबू रहम बिन अब्दुल उज़्ज़ा की ज़ौजियत में आयीं। एक क़ौल यह है कि पहला निकाह अबू रहम बिन अब्दुल उज़्ज़ा से हुआ था। एक क़ौल के मुताबिक़ संजरा बिन अबि रहम से। एक क़ौल के मुताबिक़ हवीतब बिन अब्दुल उज़्ज़ा से और एक क़ौल यह भी है कि पहला निकाह फ़रुह बिन अब्दुल उज़्ज़ा बिरादर हवीतब बिन अब्दुल

उज़्ज़ा से हुआ था। (असदुल बाग़ा 5/550)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किस सन व माह में निकाह फ़रमाया?

जवाबः हुज़ूर अकरम ने हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा से माह ज़ीक़ादा सन 7 हि० में उमरतुल क़ज़ा में निकाह फ़रमाया।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/831)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा के पास हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पयाम लेकर कौन गया था?

जवाबः हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा के पास यह पैग़ाम हज़रत जाफ़र बिन अबि तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु लेकर गए थे।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/444)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा का यह निकाह किसने कराया और कितना मेहर मुक़र्रर हुआ?

जवाबः हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब ने यह निकाह कराया और आप ही ने अपनी तरफ़ से चार सौ दिरहम मेहर अक़्द मुक़र्रर फ़रमाया। (सीरत इब्ने हिशाम 2/792, मदारिजुन्नबुव्वत 2/444)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल किस जगह और किस सन में हुआ?

जवाबः हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा की सन् वफ़ात के बारे में इख़्तिलाफ़ है। मशहूर तर क़ौल सन् 51 हि० है और दूसरे क़ौल सन् 61 या 63 हि० बताया गया है। और एक क़ौल 38 हि० ज़माना ख़िलाफ़त हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु भी है और वफ़ात की जगह मौज़ा "सर्फ़" है जो मक्का मुकर्रमा से दो मील के फ़ासले पर वाक़ेअ है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/832)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा की नमाज़े जनाज़ा किसने पढ़ाई और क़ब्र में किसने उतारा?

जवाबः हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा की नमाज़े जनाज़ा उनके

भांजे हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने पढ़ाई। यह और दूसरे भांजों ने उनको क़ब्र में उतारा। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/833)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा से कितनी हदीसें मरवी हैं?

जवाबः हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा से पिच्हत्तर हदीसें मरवी हैं। उनमें से सात मुत्तफ़िक अलैहि हैं। बाक़ी दीगर किताबों में हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/833)

○ ○ ○

उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हुन्ना के बारे में सवाल व जवाब

सवालः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कितनी अज़्वाजे मुतहरात थीं?

जवाबः नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़्वाजे मुतहरात की तादाद में अरबाब सैर अब अस्हाबे ख़बर इख़्तिलाफ़ रखते हैं। मुख़्तलिफ़ अक़्वाल में से ग्यारह बीवियाँ मुत्तफ़िक़ अलैहि हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/796)

बाक़ी दीगर अक़्वाल हस्बे ज़ैल हैं:

1. इमाम ज़हरी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बारह औरतों से निकाह फ़रमाया।
2. हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल है: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पंद्रह औरतों से निकाह फ़रमाया।
3. हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हा का कहना है: वह अठ्ठारह औरतें हैं जो ख़्वाजाए काएनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़्द में आयीं। (सैरुल आलामुल नवला 2/254)
4. बाज़ का क़ौल है: अज़्वाजे मुतहरात नौ हैं।
5. और एक क़ौल के मुतबिक़ जिन औरतों से आपका रिश्ताए अज़्वाज क़ायम हुआ उनकी तादाद तेरह है। (सीरत इब्ने हिशाम 2/789)

सवालः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़्वाजे मुतह्हरात में कितनी क़ुरैशिया और कितनी ग़ैर क़ुरैशिया हैं?

जवाबः अज़्वाजे मुतह्हरात में से क़ुरैशिया छः हैं:

1. हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा,
2. हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा

3. हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा,
4. हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा,
5. हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा,
6. हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा,

और अरबिया ग़ैर क़ुरैशिया चार हैं:

1. हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा,
2. हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा,
3. हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा,
4. हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा।

और एक ग़ैर अरबिया बनी इस्राईल से वह हैं हज़रत सफ़िया बिन्ते हय्यि रज़ियल्लाहु अन्हा। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/796)

सवालः उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के इंतिक़ाल के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़्द में कौनसी ज़ौजा आयीं?

जवाबः इसमें इख़्तिलाफ़ है कि उम्मुल मोमिनीन ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के इंतिक़ाल के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़्द में कौनसी ज़ौजा आयीं। हज़रत क़तादा और हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हुमा का क़ौल है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ख़दीजा के इंतिक़ाल के बाद सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी फ़रमाई इससे पहले कि आएशा रज़ियल्लाहु अन्हु से अक़्द हो। बाज़ कहते हैं कि हज़रत आएशा से निकाह हज़रत सौदा से पहले हुआ था। इन दोनों क़ौलों को इस तरह जमा किया जा सकता है कि हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के विसाले हक़ के बाद हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का अक़्द, हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा से पहले हुआ हो। लेकिन कमउम्री की वजह से हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की रुख़्सती न हुई और इसमें किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं है कि हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा की रुख़्सती हज़रत आएशा से पहले हुई।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/801, तारीख़ुल उमम व वलमलूक 2/411)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में आने वाली सबसे आख़िरी ज़ौजा कौन हैं?

जवाबः हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा आख़िरी ज़ौजा मुताहिरा हैं। उनके बाद हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी से निकाह न फ़रमाया। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/832)

इसमें भी उलमा इख़्तिलाफ़ रखते हैं कि अज़्वाजे मुतहरात किस तर्तीब से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में ज़ौजियत के शर्फ़ से मुशर्रफ़ हुईं। मदारिज नबुव्वत की तर्तीब इस तरह है:

1. सैयदतना ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा,
2. सैयदतना सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा,
3. सैयदतना आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा,
4. सैयदतना हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा,
5. सैयदतना ज़ैनब बिन्त ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा,
6. सैयदतना उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा,
7. सैयदतना ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा,
8. सैयदतना जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा,
9. सैयदतना उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा,
10. सैयदतना सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा,
11. सैयदतना मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/796, ताज 2/830)

सैर अलामुन्नबला जि० 2, स० 254 पर तर्तीब यूँ है:

1. सैयदतना ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा,
2. सैयदतना सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा,
3. सैयदतना आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा,
4. सैयदतना उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा,
5. सैयदतना हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा,
6. सैयदतना ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा,
7. सैयदतना जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा,
8. सैयदतना उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा,

9. सैयदतना सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा,
10. सैयदतना मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा,
11. सैयदतना ज़ैनब बिन्त खुजैमा रज़ियल्लाहु अन्हा।

और एक तर्तीब यूँ भी है:

1. सैयदतना ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा,
2. सैयदतना आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा,
3. सैयदतना सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा,
4. सैयदतना ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा,
5. सैयदतना उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा,
6. सैयदतना हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा,
7. सैयदतना उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा,
8. सैयदतना जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा,
9. सैयदतना सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा,
10. सैयदतना मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा।
11. सैयदतना ज़ैनब बिन्त खुजैमा रज़ियल्लाहु अन्हा।

(सीरत इब्ने हिशाम 2/789 से 79

सवाल: अज़्वाजे मुतहरात में से उस ज़ौजा मोहतरमा का क्या नाम है जो हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की औलाद में से हैं?

जवाब: वह सैयदतना सफ़िया बिन्ते हय्यि रज़ियल्लाहु अन्हा है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/82

सवाल: अज़्वाजे मुतहरात में से इस ज़ौजा मुताहिरा का क्या नाम है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फूफी ज़ाद बहन भी थीं?

जवाब: वह सैयदतना ज़ैनब बिन्त जहश रज़ियल्लाहु अन्हा हैं कि उनकी वालिदा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फूफी उमैमा बिन्त अब्दुल मुत्तलिब थीं। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/817)

बाज़ ने सैयदतना उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा की वालिदा का नाम आतिका बिन्त अब्दुल मुत्तलिब बताया है जो महल नज़र है। और सही यह है कि उनकी वालिदा का नाम आतिका बिन्त आमिर बिन रबिआ है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/815)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किस ज़ौजा मुताहिरा के निकाह पर सबसे बड़ी दावत वलीमा फ़रमाई?

जवाबः सैयदतना ज़ैनब बिन्त जहश रज़ियल्लाहु अन्हा के वलीमे में रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम को रोटी और गोश्त से सैर फ़रमाया। इस एहतिमाम से वलीमा किसी दूसरी ज़ौजा के निकाह में न फ़रमाया।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/821)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किस ज़ौजा मुताहिरा से हालत एहराम में निकाह फ़रमाया?

जवाबः वह हैं सैयदतना मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा कि हालते एहराम में रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे निकाह फ़रमाया।

(तफ़्सीर नईमी 2/291)

सवालः उस ज़ौज मुताहिरा का नाम क्या है जिन्होंने अपनी बारी का दिन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा को हिबा कर दिया था?

जवाबः वह हैं सैयदतना सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/802)

सवालः हुज़ूर सल्ललाहु अलैहि वसल्लम की सबसे ज़्यादा मुद्दत सोहबत पाने वाली ज़ौजा का नाम क्या है और सबसे कम मुद्दत सोहबत पाने वाली ज़ौजा का नाम क्या है?

जवाबः सबसे ज़्यादा मुद्दते सोहबत पाने वाली हज़रत सैयदतना ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं कि उन्होंने आग़ोशे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में चौबीस या पच्चीस साल गुज़ारी। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/798)

और सबसे कम मुद्दत सोहबत पाने वाली सैयदतना ज़ैनब बिन्त ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में दो माह या छः माह या आठ माह रहकर आलमे विसाल की तरफ़ रहलत फ़रमा गयीं। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/814)

सवालः हुज़ूर की ज़ाहिरी हयाते तैय्यबा में ही वफ़ात पाने वाली अज़वाज कौन हैं?

जवाबः वह हैं सैयदतना ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा और ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

की हयाते ज़ाहिरा में ही विसाल हक़ फ़रमा गयीं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/796)

सवालः उस ज़ौजा मुतहरा का क्या नाम है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हम उम्र थीं?

जवाबः वह हैं सैयदतना सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हम उम्र थीं।

(असहु सैर 569)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाले हक़ के वक़्त कितनी अज़वाजे मुतहरात ज़िंदा थीं?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के वक़्त बिला इख़्तिलाफ़ नौ अज़वाजे मुतहरात रज़ियल्लाहु अन्हुम मौजूद थीं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/796)

सवालः वह कौन सी ज़ौजा मुतहरा हैं जिनको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ुद दफ़न तो फ़रमाया लेकिन नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ाई और क्यों?

जवाबः वह हैं सैयदतना ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ुद उनको दफ़न फ़रमाया। नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ाई क्योंकि उस वक़्त तक शुरू न हुई थी।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/798, असदुल ग़ाबा 5/439)

सवालः वह कौन सी बीवी है कि जिनकी नमाज़े जनाज़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पढ़ाई?

जवाबः वह हैं सैयदतना ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा कि उनकी नमाज़े जनाज़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पढ़ाई। हज़रत सैयदतना ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के विसाले हक़ के वक़्त तक नमाज़ मशरू न हुई थी। बाक़ी दीगर अज़वाजे मुतहरात का विसाल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के बाद हुआ।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/798, असदुल ग़ाबा 5/439)

सवालः वह कौनसी बीवी हैं कि जिनका निकाह, ज़फ़ाफ़ और वफ़ात सब एक ही बस्ती में वाक़ेअ हुई?

जवाबः वह हैं सैयदतना मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा कि उनका निकाह

ज़फ़ाफ़ और वफ़ात एक ही बस्ती में वाक़ेअ हुई जिसे "सर्फ़" कहते हैं। और यह मक्का मुकर्रमा से दो मील के फ़ासले पर है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/832)

18. **सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के बाद सबसे पहले इंतिक़ाल फ़रमाने वाली बीवी का क्या नाम है?**

जवाबः वह हैं सैयदतना ज़ैनब बिन्त जहश रज़ियल्लाहु अन्हा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से सेहत के साथ मरवी है कि एक दिन रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अज़्वाजे मुतहरात से फ़रमाया कि तुम में से जिसके हाथ दराज़ हैं वह मुझसे मिलने में तुम सबसे पहले सबक़त करने वाली है। मतलब यह है कि इस दुनिया से मेरे जाने के बाद वह तुम में से सबसे पहले वफ़ात पाएगी। उसके बाद अज़्वाजे मुतहरात ने बांस का टुकड़ा लेकर अपने अपने हाथ को नापना शुरू कर दिया ताकि जानें कि किसके हाथ सबसे ज़्यादा दराज़ हैं। जब नापा तो उन्होंने जाना कि सैयदतना सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा के हाथ ज़्यादा लंबे हैं और जब हुज़ूर के विसाल फ़रमाने के बाद सैयदतना ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा ने इंतिक़ाल फ़रमाया तो उन्होंने जाना की दराज़ी से मुराद सदक़ा ख़ैरात की कसरत थी इसलिए कि सैयदतना ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा अपने हाथ से दस्तकारी करतीं और सदक़ा देती थीं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/822)

सवालः अज़्वाजे मुतहरात में से सबसे आख़िर में इंतिक़ाल करने वाली ज़ौजा का नाम क्या है?

जवाबः वह सैयदतना उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं। उम्महातुल मोमिनीन में उन्होंने सबसे आख़िर में वफ़ात पाई। उनकी सने वफ़ात 59 हि० है और बाज़ ने सन् 62 हि० कहा है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/816)

उम्मुल मोमिनीन सैयदतना मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात के बारे में एक क़ौल सन् 63 हि० का भी है। इस क़ौल के मुताबिक़ सैयदतना मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा आख़िरी ज़ौजा क़रार पाती हैं जिन्होंने सबके बाद वफ़ात पायी। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/832)

सवालः उन ग्यारह अज़्वाजे मुतहरात के अलावा वे कौन कौन

सी औरतें हैं कि जिनसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निकाह तो फ़रमाया मगर ज़फ़ाफ़ न फ़रमाया या इख़्तियार दिए जाने पर वह निकाह से निकल गयीं?

जवाबः इन ग्यारह अज़वाजे मुतहरात उम्महातुल मोमिनीन के अलावा औरतों की एक जमाअत और भी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ से निकाह तो किया लेकिन ज़फ़ाफ़ न फ़रमाया और बाज़ वह हैं जिनसे ज़फ़ाफ़ भी हुआ मगर आयते करीमाः

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا

ऐ नबी अपनी बीवियों से फ़रमा दो कि अगर तुम दुनिया की ज़िंदगी और उसकी आराइश चाहती हो।

के तहत इख़्तियार दिए जाने के वक़्त निकाह से निकल गयीं। उनमें से जिनके नाम व हालात मिलें हैं वे ये हैंः

उन औरतों में से एक औरत कलाबिया थीं। जिसने दुनिया को इख़्तियार किया था। आख़िरकार उसका हाल इस हद तक पहुँचा कि खजूरों की गुठलियाँ और मेंगनियाँ चुनती थी। एक शख़्स ने उसको देखा तो पूछा तू कौन है? उसने सर उठाकर कहा कि मैं वह बदबख़्त औरत हूँ जिसने अल्लाह और उसके रसूल पर दुनिया को इख़्तियार किया था।

दूसरी औरत असमा कुन्दिया है जिसे जामेअल उसूल में जोबिया कहा है। वह मवाहिब लदुन्निया में अस्मा बिन्त नौमान बिन अबिल जून कुन्दिया जूवेनिया नाम बताया गया है। और कहा है कि इस पर सबका इत्तिफ़ाक़ है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उससे निकाह फ़रमाया। अलबत्ता उसको अपने से अलैहिदा करने के बारे में इख़्तिलाफ़ है। चुनाँचे क़तादा और अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर ने उसे अपने क़ुर्ब से नवाज़ना चाहा और उससे फ़रमाया कि क़रीब आ तो उसने इंकार किया। और सरकशी की। बाज़ कहते हैं कि उस औरत ने कहाः मैं आपसे ख़ुदा की पनाह मांगती हूँ। हुज़ूर ने फ़रमाया कि तू पनाह तलाश करती है और बहुत बड़ी पनाह मांगती है। बिलाशुब्हा हक़ तआला ने तुझे पनाह दे दी। जा अपने घरवालों से मिल

जा। यह कलिमा ऐसा है जो तलाक़ की नीयत से बोला जाता है। जामेअल उसूल में इसी बिन्ते जौन के क़िस्से को उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत करते हुए बयान करते हैं कि उन्होंने फ़रमायाः बिन्ते जौन रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आई और उसने कहा, **आऊज़ु बिल्लाहि मिन-क।**

इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तूने बड़ी पनाह तलाश की है। जा अपने अहल के साथ मिल जा। बाज़ कहते हैं कि उस औरत का नाम उमैमा था। और बाज़ ने उमाम कहा है।

तीसरी औरत शराफ़ बिन्ते ख़लीफ़ा कलबिया रज़ियल्लाहु अन्हा थीं जो हज़रत वहिया कलबी रज़ियल्लाहु अन्हु की बहन थीं। हुज़ूर ने उनसे निकाह फ़रमाया और वह दुख़ूल से पहले ही फ़ौत हो गयीं।

चौथी औरत लैला बिन्त ख़तीम, क़ैस की बहन थीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे निकाह फ़रमाया। यह बड़ी ग़य्यूर औरत थीं। फिर उसने इक़ाला यानी फ़स्ख़े निकाह चाहा। हुज़ूर ने उसे इक़ाला किया। उसके बाद उसे भेड़िये ने खा लिया। बाज़ कहते हैं कि यह वही औरत हैं जिसने अपने आपको हिबा किया था।

अहले सैर बयान करते हैं कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ फ़रमा थे। तो लैला बिन्ते ख़तीम हुज़ूर की पुश्त की तरफ़ से आयीं। आपकी पुश्त मुबारक पर एक मुक्का मारा। हुज़ूर ने फ़रमायाः कौन है यह जिसे भेड़िया खाएगा। उसने कहा मैं ख़तीम की बेटी हूं। फिर अपने बाप की तारीफ़ें करने लगी। उसने कहा, मैं आयी हूं ताकि अपने नफ़्स को आप पर हिबा कर दूं। आपने फ़रमाया कि मैं तुझे अपनी ज़ौजियत के लिए पसंद करता हूं। लेकिन इसके बाद वह अपनी क़ौम की तरफ़ गयीं और उनको इससे बाख़बर किया। क़बीले के लोगों ने कहा, तूने बुरा किया। तू एक ग़य्यूर औरत है और वह बहुत सी बीवियाँ रखते हैं। तू ग़ैरत में जलती रहेगी और बातें करेगी। वह तुझ पर ग़ज़ब फ़रमाएंगे और दुआए बद करेंगे। उनकी दुआ मक़्बूल है। जा और फ़स्ख़े निकाह का मुतालबा कर। फिर वह आपके पास आयीं और निकाह फ़स्ख़ करने का मुतालबा किया। आपने निकाह फ़स्ख़ फ़रमा दिया। उस

औरत ने दूसरा शौहर कर लिया। एक दिन मदीना के किसी बाग़ में नहा रही थी कि अचानक भेड़िए ने उस पर एक छलांग मारी और उसके टुकड़े टुकड़े कर दिए। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/833 से 834)

पांचवी औरत शंबा बिन्ते उमरू ग़फ़्फ़ारिया थी। आपने उससे निकाह फ़रमाया। उसने हुज़ूर अकरम से कहा: अगर आप नबी होते तो आपके बेटे जो आपको अपनी औलाद में सबसे महबूब थे इंतिक़ाल न फ़रमाते। इसलिए आपने उसे दख़ूल से पहले ही तलाक़ दे दी।

छठी औरत ग़ज़िया बिन्त जाबिर थीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब शब को उनके पास तशरीफ़ ले गए तो उसने आपसे कहा: आऊज़ु बिल्लाहि मिन-क।

आपने दख़ूल से पहले ही उसके घरवालों के पास पहुँचा दिया।

इब्ने कलबी का क़ौल है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके पास पहुँचे। उसे बड़ी उम्र की पाया। आपने उसे इस्लाम की दावत दी। उन्होंने इस्लाम क़ुबूल किया। उसके बाद आपने उसको तलाक़ दे दी।

सातवीं औरत आलिया बनू गफ़्फ़ार से थीं। आपने उनसे निकाह किया। उसके पास तशरीफ़ फ़रमा हुए। उसके पहलू में सफ़ेद दाग़ नज़र आए। आपने उसे उसके घरवालों तक मेहर समेत पहुँचा देने का हुक्म फ़रमाया।

आठवीं औरत उम्मे शरीक हैं। यह उन औरतों में से थीं जिन्होंने अपने को हुज़ूर के लिए हिबा कर दिया था। आपने दख़ूल से पहले ही उनको तलाक़ दे दी।

नवीं औरत फ़ातिमा बिन्ते ज़हाक थी। अहले सैर ने उनके नाम में इख़्तिलाफ़ किया है:

1. कलाबिया, 2. आलिया बिन्ते ज़ैबान, 3. सना बिन्ते सुफ़ियान, 4. अमरू बिन्त यज़ीद।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब उसे अपने क़ुर्ब से नवाज़ना चाहा तो उसने पनाह मांगी। आपने फ़रमाया तू अपने घर चली जा।

दसवीं औरत क़तलिया अशअस की बहन हैं। आपने उनसे निकाह

फ़रमाया मगर वह ज़फ़ाफ़ से पहले ही रहलत कर गयीं।

ग्यारहवीं औरत हैं ख़ौला बिन्त हकीम।

(तारीखुल उमम व ममलूक 2/416, सैर आलामुल नबला 2/260)

बारहवीं औरत का नाम मलिका बिन्ते कअब था। एक क़ौल है कि क़बीला लैस की लड़की थी। दख़ूल से पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अलैहिदगी फ़रमाई। बाज़ कहते हैं कि उस औरत ने पनाह मांगी थी। बाज़ कहते हैं कि उससे दख़ूल हुआ और हुज़ूर ही के पास वफ़ात पाई। लेकिन पहला क़ौल ज़्यादा सही है। बाज़ कहते हैं कि निकाह भी न किया था। सिर्फ़ ख़्वास्तगारी फ़रमाई थी जैसा कि मवाहिब में है। रौज़तुल अहबाब में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके साथ ख़लवत फ़रमाई। जब उससे पोशिश दूर हुई तो उसके जिस्म में सफ़ेदी नज़र आयी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उससे अलैहिदा हो गए। और फ़रमाय कि अपने लोगों में चली जाओ।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/832)

सवालः वे कौन सी औरतें हैं कि जिनको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पयामे निकाह तो दिया लेकिन निकाह वाक़ेअ न हुआ और क्यों?

जवाबः इस क़िस्म की औरतें हस्बे ज़ैल हैं:

1. हज़रत उम्मे हानी बिन्ते अबि तालिब रज़ियल्लाहु अन्हा जिनका नाम फ़ाख़्ता है। बाज़ आतिका बताते हैं और बाज़ हिंद। आप हबीरा बिन वहब के निकाह में थीं। जब उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हा मुसलमान हो गयीं तो इनके और हबीरा के दर्मियान इस्लाम ने जुदाई कर दी। इसके बाद रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको पयाम दिया। इस पर उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा, खुदा की क़सम! मैं आपको ज़मानाए जाहिलियत में भी पसंद करती थी। अब जबकि मैं इस्लाम से भी मुहब्बत रखती हूँ, आपको कैसे नापसंद करूं। बिलाशुब्ह आप मेरी आँख और कान से ज़्यादा महबूब हैं। लेकिन मैं एक ऐसी औरत हूँ जो कई यतीम बच्चे रखती है। और मैं डरती हूँ कि अगर मैं इन बच्चों की

देखभाल में मशगूल हुई तो आपका हक़ बजा न ला सकूंगी। और अगर जैसा आपका हक़ और आपकी ख़िदमत फ़र्ज़ है उसके बजा लाने मशगूल हुई तो बच्चों की देखभाल न कर सकूंगी और ये ज़ाए हो जाएंगे। और मैं शर्म करती हूँ कि आप मेरे बिस्तर पर तशरीफ़ लाएं और मेरे एक बच्चे को तो मेरे पास लेटा मुलाहिज़ा फ़रमाएं और दूसरे बच्चे को दूध पिलाता देखें। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः वे औरतें बेहतरीन हैं जो ऊँटों को सवार करती हैं। मतलब यह है कि अरब की बीवियाँ और क़ुरैशी की औरतें अपने औलाद पर ज़्यादा माइल व मेहरबान और दिल में अपने शौहर की ज़्यादा अमानतदार और देखभाल करने वाली हैं।

2. एक औरत सना या सबा या असमा बिन्ते सलत सलमिया थी। अरबाबे सैर कहते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसे पयाम दिया तो वह इस ख़बर के सुनते ही खुशी से मर गयीं।

3. एक औरत क़बीला मरू बिन औफ़ बिन साअद की थीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके बाप को पयाम भेजा। उसने कहा यह लड़की बर्स रखती है। यह बात उसने झूठ कही थी ताकि उसे पेश न करना पड़े। जब वह घर लौटकर आया तो वह लड़की बर्स में मुब्तला हो चुकी थी। अहले सैर कहते हैं कि उसके बाप ने उसको अपने भतीजे के साथ ब्याह दिया।

(मदारिजुन्नबुव्वत /838)

4. ज़बाअ बिन्ते आमिर बिन क़रत नामी औरत को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने प्यामे निकाह दिया। ज़्यादा उम्र वाली होने की वजह से निकाह न फ़रमाया।

5. सफ़िया बिन्ते बशामा, और अंबरी की बहन को भी पयाम दिया मगर निकाह न फ़रमाया।

6. जमरा बिन्ते हारिस बिन अबि हारसा को बर्स की वजह से पयाम देने के बाद निकाह न फ़रमाया। (तारीख़ तिबरी 2/418)

सवालः वे कौनसी औरतें हैं कि जिनको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि

सल्लम की ख़िदमत में पेश किया गया लेकिन आपने उनसे निकाह न फ़रमाया और क्यों?

जवाबः इस तरह की औरतें तीन हैं:

1. एक औरत अमामा बिन्ते हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु बिन अब्दुल मुत्तलिब पेश की गई। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: वह मेरे रज़ाई भाई की बेटी है कि अबू लहब की बांदी सौबिया चचा हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को दूध पिलाया था।
2. एक औरत ग़ज़्वा बिन्त अबू सुफ़ियान जो कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा की बहन थीं, पेश की गयीं। आपने फ़रमाया, वह मेरे लिए हलाल नहीं कि इनकी बहन उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा मौजूद हैं।
3. बनी सुलैम का एक शख़्स हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में आया और अर्ज़ किया: या रसूलुल्लाह एक लड़की है जो बड़ी हसीन व जमील है। आपके सिवा किसी और के लिए वह मुनासिब नहीं। हुज़ूर ने उसकी ख़्वास्तगारी फ़रमाई या ख़्वास्तगारी का इरादा फ़रमाया। उस शख़्स ने लड़की की तारीफ़ के इरादे से कहा: वह एक और सिफ़्त भी रखती है वह न कभी बीमार हुई और न उसे कोई तकलीफ़ पहुँची है। हुज़ूर ने फ़रमाया हमें तेरी लड़की की ज़रूरत नहीं है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/838)

○ ○ ○

हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में सवाल व जवाब

सवालः हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की विलादत किस सन में हुई?

जवाबः आपकी विलादत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत मुबारका से दो साल और चंद माह बाद है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/914)

एक रिवायत में है कि आपकी विलादत आमुल फ़ील के तीन साल बाद सन् 574 ई० में हुई। (अल कामिल फी तारीख़ 2/175)

सवालः हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के वालिद और वालिदा का नाम क्या है?

जवाबः आपके वालिद मोहतरम का नाम उस्मान बिन आमिर है, कुन्नियत अबू क़हाफ़ा।(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 603, अवराक़े ग़म 179)

और वालिदा साहिबा का नाम सलमा बिन्ते सख़र, कुन्नियत उम्मुल ख़ैर। (अवराक़े ग़म 193)

सवालः हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का असली नाम क्या है और ज़माना जाहिलियत में आपका नाम क्या था?

जवाबः ज़मानाए जाहिलियत में आपका नाम अब्दुल काबा या अब्द रब्बुल काबा था। जब आपने इस्लाम क़ुबूल किया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपका नाम अब्दुल्लाह रखा। एक क़ौल है कि अतीक़ रखा। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/915)

सवालः हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का लक़ब सिद्दीक़ और अतीक़ क्यों हुआ?

जवाबः आपका लक़ब सिद्दीक़ इस वजह से हुआ कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तसदीक़ में आपने पहल की और तमाम अहवाल में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सदाक़त पर आपने

तसदीक़ को लाज़िम जाना। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/915)

या इस वजह से कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैराज से वापस तशरीफ़ लाए और सुबह हुई तो आपने लोगों से इसका ज़िक्र फ़रमाया तो कमज़ोर ईमान वाले लोग इस पर मुरतिद हो गए और कुछ मुश्रिकीन दौड़कर हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास पहुँचे और कहने लगे कि कुछ अपने यार और रफ़ीक़ की ख़बर है कि वह क्या कहते हैं? वह फ़रमाते हैं, आज रात मुझे बैतुल मुक़द्दस ले जाया गया। हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने दर्याफ़्त फ़रमाया, क्या यक़ीनन ऐसा फ़रमाते हैं? मुश्रिकीन ने कहाः हाँ, यही फ़रमाते हैं। तो हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया फिर तो वह जो कुछ फ़रमाते हैं ठीक ही फ़रमाते हैं। मैं इस पर ईमान लाता हूँ। आपने बिला हील व हुज्जत वाक़िआ मैराज की तसदीक़ की। लिहाज़ा उसी दिन से आपका लक़ब सिद्दीक़ मशहूर हो गया।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/310 व मआरिजुन्नबुव्वत 3/151)

और अतीक़ लक़ब इस वजह से हुआ कि तिर्मिज़ी शरीफ़ में मरवी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो चाहता है कि ऐसे आदमी को देखे जो जहन्नम से आज़ाद (अतीक़) है तो उसे चाहिए कि वह अबूबक्र को देखे। बाज़ कहते हैं कि हुस्न व जमाल की वजह से आपका लक़ब अतीक़ हुआ। बाज़ का क़ौल है कि आपका लक़ब अतीक़ इस बिना पर था कि आपके नसब में कोई बात ऐसी न थी जिससे आप पर ऐब लगाया जाता क्योंकि आप पहले ही से ख़ैर पर थे।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/914)

सवालः इस्लाम क़ुबूल करने के वक़्त हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की उम्र कितनी थी?

जवाबः आपकी उम्र मुबारक इस्लाम क़ुबूल करने के वक़्त सैंतीस या अड़तिस साल की थी। (अबराके ग़म 180)

हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ाहिरी हयाते तैय्यबा में सत्रह नमाज़ें पढ़ायीं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/715)

सवालः हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु जब ख़लीफ़ा हुए तो सबसे पहले किसने आपसे बैअत की?

जवाबः जब आप ख़लीफ़ा मुन्तख़ब हुए तो सबसे पहले हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपकी बैअत की। फिर सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने आपकी ख़िलाफ़त पर इज्मा और इत्तिफ़ाक़ किया।

(तफ़्सीर अलम नशरह 109)

सवालः हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कितनी शादियाँ कीं?

जवाबः ज़मानाए जाहिलियत में आपने दो निकाह किए। अव्वल क़बीला बिन्ते अब्दुल उज़्ज़ा से और दूसरा अक़्द हज़रत उम्मे रूमान बअद बिन्त आमिर से। और बाद इस्लाम मदीना तैय्यबा में दो निकाह किए। पहला हज़रत असमा बिन्ते उमैस से जो हज़रत जाफ़र बिन अबि तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी थीं और दूसरा हबीबा बिन ख़ारजा से। पहली बीवी से एक बेटा अब्दुल्लाह पैदा हुए और एक बेटी असमा हुईं। दूसरी बीवी से एक बेटा अब्दुर्रहमान और हज़रत आएशा सिद्दीक़ा पैदा हुईं। तीसरी बीवी से एक बेटा मुहम्मद बिन अबिबक्र पैदा हुए और चौथी बीवी से जो आपके विसाल के वक़्त हामला थीं। आपके इंतिक़ाल के बाद उम्मे कुलसूम पैदा हुईं। आपकी पहली बीवी आपकी ज़िंदगी में ही इंतिक़ाल फ़रमा गयीं। बाक़ी तीनों आपके इंतिक़ाल के बाद ज़िंदा रहीं। एक बेटे अब्दुल्लाह आपकी ज़िंदगी में इंतिक़ाल कर गए थे। दो बेटे और दो बेटियाँ आपके इंतिक़ाल के बाद ज़िंदा रहीं। (अवराके ग़म 190)

सवालः हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को ज़हर किसने दिया था और आप कितने दिन मर्ज़ुल वफ़ात में मुब्तला रहे?

जवाबः बाज़ ने कहा है कि वफ़ात से एक साल पहले "अल हसूद" नामी एक औरत ने आपको चावल या हरीरे में ज़हर दे दिया। आपने हारिस बिन कुलदा के साथ वह खाना खाया। हारिस तबीब थे। उन्होंने ज़हर को महसूस करके आप से अर्ज़ किया, इस खाने में यक़ीनन ज़हर था और यह ज़हर ऐसा है कि एक साल बाद इसका असर ज़ाहिर होगा। मुमकिन है कि आप और हम एक ही दिन दुनिया से रुख़्सत हों। अक्सर

मौर्रिख़ों का बयान है कि पेशगोई के मुताबिक़ आप और हारिस दोनों ने एक ही तारीख़ में इंतिक़ाल फ़रमाया। बाज़ ने कहा है कि आपने गर्मी की ज़्यादती की वजह से सर्द हवा में ठंडे पानी से ग़ुस्ल फ़रमाया जिससे आपको बुख़ार हुआ और पंद्रह दिन बुख़ार में मुब्तला रहकर आलम विसाल की तरफ़ कूच फ़रमाया।

(अल कामिल फी तारीख़ 2/175, अवराक़ ग़म 189)

सवालः हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का विसाल किस दिन और किस तारीख़ को हुआ और आपके आख़िरी अल्फ़ाज़ क्या थे?

जवाबः आपने 28 जमादिउल उख़रा मंगल 13 हि० मंगल की रातः تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ कहते हुए अपनी जान जान आफ़रीन के सुपुर्द कर दी। (अल कामिल फि तारीख़ 2/175)

एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ 22 और 23 जमादिउस्सानी सन् 13 हि० की दर्मियानी जो शब सह शंबा थी बाद नमाज़ मग़रिब आपका विसाल हुआ। (असाउर्रिजाल मिश्कात 587, नज़हतुल मजालिस 10/105)

11. सवालः हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की नमाज़े जनाज़ा किसने पढ़ाई और आपको किस तख़्त पर उठाया गया?

जवाबः आपको उस तख़्त पर उठाया गया जिस पर रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आराम फ़रमाया करते थे और इसी तख़्त पर आपको भी उठाया गया था। और आपकी नमाज़े जनाज़ा हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाह अन्हु ने पढ़ाई।

(अल कामिल फि तारीख़ 2/76 नज़हतुल मजालिस 10/105)

12. सवालः हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को ग़ुस्ल किसने दिया और आपकी क़ब्र में कौन कौन दाख़िल हुए?

जवाबः आपको ग़ुस्ल आपकी वसीयत के मुताबिक़ आपकी ज़ौजा मोहतरमा असमा बिन्ते उमैस रज़ियल्लाहु अन्हा ने दिया।

(असमाउर्रिजाल मिश्कात 587, नज़हतुल मजालिस 10/105)

और आपके बेटे हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी मदद की। (अवराक़े ग़म)

और आपकी क़ब्र में हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़, हज़रत उमर फ़ारूक़, हज़रत उस्मान ग़नी और हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हुम दाख़िल हुए। (अल कामिल फि तारीख़ 2/76, नज़्हतुल मजालिस 10/105)

सवालः हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की मुद्दते ख़िलाफ़त कितनी रही और आपकी उम्र कितनी हुई?

जवाबः आपकी मुद्दते ख़िलाफ़त दो साल तीन माह आठ दिन है। (हयातुल हैवान 1/86)

दूसरा क़ौल यह है कि दो साल चार माह।(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 587)

तीसरा क़ौल दो साल तीन माह छब्बीस दिन का और चौथा क़ौल दो साल तीन माह दस दिन का है। (अवराक़े ग़म 190)

और आपकी उम्र शरीफ़ तिरेसठ साल हुई।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 587, मदारिजुन्नबुव्वत 2/914)

○ ○ ○

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में सवाल व जवाब

सवालः हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की विलादत किस सन में हुई?

जवाबः हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की विलादत आमुल फ़ील के तेरह साल बाद मुहर्रम की चांद रात को हुई। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/915)

सवालः हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का लक़ब "फ़ारूक़" क्यों हुआ?

जवाबः आपका लक़ब फ़ारूक़ होने का वाक़िआ यूँ है:

एक यहूदी और एक मुनाफ़िक़ के दर्मियान ज़मीन की सैरावी पर झगड़ा हुआ और मामला बारगाहे रिसालत में पेश हुआ। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वाक़िए को सुनने के बाद यहूदी के हक़ में फ़ैसला दिया। मुनाफ़िक़ ने वह फ़ैसला न माना। और यहूदी से कहा, चलो उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास दोबारा फ़ैसला कराएं। दोनों ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आकर मामला रखा। यहूदी ने अव्वल फ़ैसले की भी ख़बर दी कि हुज़ूर ने यह फ़ैसला सादिर फ़रमाया है लेकिन इसने यह फ़ैसला न माना और मुझे आपके पास ले आया। उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह सुनकर फ़रमाया कि अब मैं ऐसा फ़ैसला करूंगा कि इसको इंकार का मौक़ा ही नहीं मिलेगा। यह कहकर आप घर में गए और तलवार लाकर उस मुनाफ़िक़ का सर क़लम कर दिया। फ़रमाया जो अल्लाह के रसूल का फ़ैसला न माने उसका मेरे यहाँ यही अंजाम है। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब इस वाक़िए को सुना तो उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को "फ़ारूक़" के लक़ब से नवाज़ा कि उनके इस अमल से हक़ व बातिल में फ़र्क़ हो गया। (ख़ाज़िन 397)

हाशिया 14 जलालैन 300 पर है कि इस के बाद जिब्राईल अलैहिस्सलाम हाज़िर ख़िदमत रिसालत हुए और आपका लक़ब फ़ारूक़ रखा। दूसरा क़ौल यह है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जिस दिन मुशर्रफ़ इस्लाम हुए उसी दिन मस्जिद हराम में अलल ऐलान की गई तब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको इस लक़ब से नवाज़ा।

सवालः हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने किस सन में इस्लाम क़ुबूल किया और उस वक़्त आपकी उम्र कितनी थी?

जवाबः आप सन् 6 नबवी को सत्ताईस साल की उम्र में इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा 105)

बाज़ ने 5 नबवी कहा है। (अस्माउर्रिजाल मिश्कात 602)

सवालः हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम लाने के वक़्त तक कितने लोग इस्लाम के दायरे में दाख़िल हो चुके थे?

जवाबः जब आप इस्लाम के दायरे में दाख़िल हुए तो उस वक़्त तक तैंतीस मर्द और छः औरतें इस्लाम क़ुबूल कर चुकी थीं।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 10/4)

दूसरा क़ौल यह है कि चालीस मर्द और तेईस औरतें इस्लाम ला चुकी थीं। तीसरा क़ौल यह है कि उन्तालिस मर्दों और तेईस औरतों के बाद इस्लाम क़ुबूल किया। चौथा क़ौल यह है कि पैंतालीस मर्द और ग्यारह औरतों के बाद आप इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए।

और पाँचवा क़ौल यह है कि आप से पहले चालीस मर्द और ग्यारह औरतें इस्लाम से मुशर्रफ़ हो चुकी थीं। (अस्माउर्रिजाल मिश्कात 602)

सवालः हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने कितनी शादियाँ कीं?

जवाबः आपका पहला निकाह ज़माना जाहिलियत में ज़ैनब बिन्ते मज़ऊन से हुआ था जिनके बतन से अब्दुल्लाह, अब्दुर्रहमान और हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा पैदा हुईं। हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा मक्का में ही ईमान लायीं और वहीं इंतिक़ाल हुआ। दूसरा निकाह जाहिलियत के ज़माने में ही मलिका बिन्ते जरूल से किया जिससे अब्दुल्लाह पैदा हुए क्योंकि यह बीवी ईमान न लायीं। इसलिए सन् 6 हि० में उसको तलाक़

दे दी। तीसरी बीवी क़रीबा बिन्ते उमैया मख़्ज़ूमी थी जिससे जाहिलियत में ही निकाह किया और सन् 6 हि० के वाद सुलह हुदैबिया में इस्लाम न लाने की वजह से तलाक़ दे दी। चौथा निकाह इस्लाम के ज़माने में उम्मे हकीम बिन्ते हारिस बिन हिशाम मख़्ज़ूमी से किया। जिनके बतन से फ़ातिमा पैदा हुईं। पाँचवां निकाह मदीना मुनव्वरा आकर सन् 7 हि० में जमीला बिन्ते आसिम बिन साबित से किया जिनके बतन से आसिम पैदा हुए। लेकिन उनको भी किसी वजह से तलाक़ दे दी। छठा निकाह सन् 7 हि० में उम्मे कुलसूम बिन्ते अली रज़ियल्लाहु अन्हा से किया। उनके बतन से रुक़ैया और ज़ैद पैदा हुए।

आतिका बिन्ते ज़ैद बिन उमरू जो आपकी चचाज़ाद बहन थीं और फ़कीहा यमीना भी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवियों में शुमार की जाती हैं। फ़कीहा के बारे में बाज़ ने लिखा है कि वह लौंडी थीं। उनके बतन से अब्दुर्रहमान और अवसत पैदा हुए।

(तारीख़ इस्लाम 1/366)

सवालः हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ातिल का नाम क्या है और आपकी शहादत का वाक़िआ क्या है?

जवाबः आपकी शहादत का वाक़िआ इस तरह है:

मदीना तैय्यबा में मुग़ीरा बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु का एक नसरानी गुलाम रहता था जिसका नाम फ़ैरूज़ था और कुन्नियत अबू लूलू। उसने एक दिन बाज़ार में आपसे शिकायत की कि मेरा आक़ा मुग़ीरा मुझसे ज़्यादा महसूल लेता है, आप कम करा दीजिए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उससे पूछा किस क़द्र महसूल वह वसूल करता है। अबू लूलू ने कहा, दो दिरहम रोज़ाना। आपने दर्याफ़्त फ़रमाया, तू क्या काम करता है? उसने कहा, लौहार, नक़्क़ाशी और बढ़ई गिरी। आपने फ़रमाया कि इन कामों के मुक़ाबले में यह रक़म ज़्यादा नहीं है। यह सुनकर अबू लूलू अपने दिल में सख़्त नाराज़ हुआ। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उससे मुख़ातिब होकर फ़रमाया कि मैंने सुना है कि तू ऐसी चक्की बनाना जानता है जो हवा के ज़रिए चलती है। तू मुझको भी ऐसी चक्की बना दे। उसने जवाब में कहा, बहुत ख़ूब मैं ऐसी चक्की बना दूंगा जिसकी

आवाज़ अहले मशिरक़ व मग़रिब सुनेंगे। दूसरे दिन नमाज़े फ़ज्र के लिए लोग मस्जिद में जमा हुए। अबू लूलू एक ख़ंजर लिए हुए मस्जिद में दाख़िल हो गया। जब नमाज़ के लिए सफ़ें सही हो गयीं और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु इमामत के लिए आगे बढ़कर नमाज़ शुरू कर चुके तो अबू लूलू ने निकलकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पर ख़ंजर के छः वार किए। जिनमें से एक वार नाफ़ के नीचे पड़ा। अबू लूलू मस्जिदे नबवी से भागा लोगों ने उसे पकड़ने की कोशिश की। उसने कई शख़्सों को ज़ख़्मी किया और कलीब इब्ने अबि बकीर रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद कर दिया। आख़िर वह गिरफ़्तार कर लिया गया लेकिन उसने गिरफ़्तार होते ही ख़ुदकशी कर ली। (तारीख़ इस्लाम 364)

जब आपको ख़ंजर का ज़ख़्म लगा तो आपकी ज़बान मुबारक पर यह जुमला थाः **व का-न अमरुल्लाहि क़दरन मक़दूरन।** (अबराके ग़म 196)

सवालः हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु जिस नमाज़ के दौरान ज़ख़्मी हुए उस नमाज़ को मुकम्मल किसने कराया?

जवाबः आप जब हालते नमाज़ में ज़ख़्मी हुए तो आपने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ को खींचकर अपनी जगह खड़ा कर दिया। और ज़ख़्मों के सदमे में गिर पड़े। हज़रत अब्दुर्रहमान ने उन लोगों को इस हालत में नमाज़ पढ़ाई कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु सामने तड़प रहे थे। (तारीख़ इस्लाम 1/364)

सवालः हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु किस तारीख़ को ज़ख़्मी हुए और किस तारीख़ को शहादत के मर्तबे पर फ़ाएज़ होकर दफ़न हुए?

जवाबः आप छब्बीस ज़िलहिज्जा बरोज़ मंगल सन् 23 हि० को ज़ख़्मी होकर यकुम मुहर्रम सन् 24 हि० बरोज़ विसाल फ़रमाकर दफ़न हुए। (अस्माउर्रिजाल मिश्कात 602)

एक रिवायत में है कि आप छः ज़िलहिज्ज 23 हि० को ज़ख़्मी हुए थे। (नज़हतुल मजालिस 10/107)

तीसरा क़ौल यह है कि 27 ज़िलहिज्ज 23 हि० को ज़ख़्मी हुए और यकुम मुहर्रम 24 हि० को बरोज़ हफ़्ते को विसाल फ़रमाकर दफ़न हुए। (तारीख़ इस्लाम 1/366)

सवालः हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की नमाज़ जनाज़ा किसने पढ़ाई और क़ब्र में किस किस ने उतारा?

जवाबः आपकी नमाज़े जनाज़ा हज़रत सुहैब रूमी रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाई। (अस्माउर्रिजाल 602)

और क़ब्र में हज़रत उस्मान ग़नी, हज़रत अली और हज़रत ज़ुबैर और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुम ने उतारा। (तारीख़ इस्लाम 1/366)

सवालः हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की मुद्दते ख़िलाफ़त कितनी रही?

जवाबः आपकी मुद्दते ख़िलाफ़त दस साल और छः माह है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/915)

एक क़ौल के मुताबिक़ दस साल छः माह तेरह दिन और एक क़ौल के मुताबिक़ दस साल छः माह पाँच रातें। (हयातुल हैवान 2/92)

एक और रिवायत में है दस साल छः माह और दस रोज़ है। (नज़हतुल मजालिस 10/107)

सवालः हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने में कितने शहर फ़तेह हुए और कितनी मस्जिदें तामीर हुईं?

जवाबः आपकी ख़िलाफ़त के ज़माने में एक हज़ार छत्तीस शहर और उसके क़स्बात और देहात के साथ फ़तेह हुए। चार हज़ार मस्जिदें तामीर हुईं, चार हज़ार मंदिर, बुतकदे और आतिश कदे ढहे। और एक हज़ार नौ सौ मिंबर जवामे में रखे गए। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/915)

सवालः हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की बीमारी में कितने दिन नमाज़ों की इमामत की?

जवाबः आपने हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की इजाज़त से उनकी बीमारी के दिनों में पंद्रह रोज़ नमाज़ों की इमामत फ़रमाई। (अवराक़े ग़म 189)

सवालः हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की मुहर पर क्या लिखा हुआ था?

जवाबः आपकी मुहर मुबारक पर "व कफ़ा बिल मौति वाअइज़ा" खुदा हुआ था। (अवराके ग़म 196)

सवालः हज़रत उमर फ़ारूक रज़ियल्लाहु अन्हु की उम्र कितनी हुई?

जवाबः आपकी उम्र शरीफ़ तिरेसठ साल हुई। (अस्माउर्रिजाल मिश्कात 602)

○ ○ ○

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में सवाल और जवाब

सवालः हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की पैदाइश किस सन में हुई?

जवाबः आपकी विलादत आमुल फ़ील से छठे साल में है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/916)

सवालः हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के वालिद और वालिदा का नाम क्या है?

जवाबः आपके वालिद माजिद का नाम अफ़्फ़ान बिन अबिल आस है। और आपकी वालिदा का नाम वरदा बिन्त करीर है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फूफीज़ाद बहन थीं।

(अबराके ग़म 196, 198)

एक दूसरी रिवायत में अरवी बिन्ते करीज़ है।

(इस्तेयाब 2/487, उम्दतुल क़ारी 742)

सवालः हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु कितने अफ़राद के बाद और किसकी दावत पर इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए?

जवाबः आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दारे अरक़म में दाख़िल होने से पहले इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए। आप चौथे मुसलमान हैं। आप हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़, हज़रत अली और हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ियल्लाहु अन्हु के बाद हज़रत सिद्दीक़े अकबर की दावत पर इस्लाम लाए। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/916)

सवालः हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने कितनी मुद्दत ख़िलाफ़त की?

जवाबः आपकी ख़िलाफ़त का दौर बारह साल रहा। दूसरा क़ौल है बारह दिन कम बारह साल और तीसरा क़ौल है कि ग्यारह साल ग्यारह माह और चौदह दिन। (हयातुल हैवान 1/96, मदारिजुन्नबुव्वत 2/917)

एक क़ौल अठ्ठारह दिन कम बारह साल का भी है।

(इस्तेयाब 2/491)

सवालः हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत किस दिन और किस तारीख़ को हुई?

जवाबः आप 18 ज़िल हिज्जा सन् 35 हि० बरोज़ जुमा को शहादत के मर्तबे पर फ़ाएज़ हुए। (अस्माउर्रिजाल मिश्कात 602)

दूसरा क़ौल यह है कि 35 हि० के अय्यामे तशरीक़ के वक़्त बरोज़ जुमा। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/917)

दूसरे क़ौल के मुताबिक़ इतवार को। (अवराक़े ग़म 201)

सवालः हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ातिल का नाम क्या है?

जवाबः आपके क़ातिल का नाम "असवद तजीबी" है।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 206)

दूसरे क़ौल के मुताबिक़ उसका नाम कनाना बिन बशीर है।

(तारीख़े इस्लाम 1/414)

सवालः हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की नमाज़ किसने पढ़ाई और आपको किस जगह दफ़न किया गया?

जवाबः आपकी नमाज़े जनाज़ा किसने पढ़ाई, इस सिलसिले में इख़्तिलाफ़ है:

1. हज़रत ज़ुबैर बिन मुतअम ने,
2. या हज़रत हकीम बिन हज़्ज़ाम ने। (हयातुल हैवान 1/96)
3. या आपके बेटे हज़रत उमरू बिन उस्मान ने,
4. या हज़रत मुसव्विर बिन। (इस्तेयाब 2/491)
5. या हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने। (अस्माउर्रिजाल 602)

सवालः हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की उम्र कितनी हुई?

जवाबः आपकी उम्र शरीफ़ ब्यास्सी साल हुई। बाज़ छियास्सी, अठ्ठासी और नवास्सी साल भी बताते हैं। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/917)

और एक क़ौल नव्वे बरस का भी है। (नज़्हतुल मजालिस 10/119)

हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में सवाल व जवाब

सवालः हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की विलादत किस दिन और किस तारीख़ को हुई?

जवाबः आपकी विलादत मक्का मुअज़्ज़मा में आमुल फ़ील के तीस साल बरोज़ जुमा 13 रजब को हुई।

(अवराक़े ग़म 146, नज़्हतुल मजालिस 11/5)

सवालः हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के वालिद और वालिदा का नाम क्या है?

जवाबः आपके वालिद का नाम अबू तालिब और वालिदा का नाम फ़ातिमा बिन्ते असद है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/917)

सवालः हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की विलादत किस जगह हुई और विलादत का वाक़िआ क्या है?

जवाबः अहले सैर कहते हैं कि आपकी विलादत जौफ़े काबा में हुई।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/917)

आपकी विलादत का वाक़िआ खुद आपकी वालिदा साहिबा यूँ बयान करती हैं: मैं ख़ाना काबा में तवाफ़ में मशग़ूल थी। तीन चक्कर इत्मिनान से पूरे कर चुकी। चौथा चक्कर कर रही थी कि दर्दे ज़ह महसूस हुआ। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरे चेहरे के बदलाव से मुझे पहचाना और फ़रमायाः क्या बात है जो आप का रंग बदल रहा है। मैंने अर्ज़ हाल किया। फ़रमायाः फ़ातिमा! तवाफ़ पूरा कर लो। अगर इसी हाल में दर्द बढ़ जाए तो अंदरूने काबा में चली जाना कि इसमें कोई हिकमते इलाही है। साहिबे बशाइरुल मुस्तफ़ा नक़ल फ़रमाते हैं कि मैं अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब और चंद क़बीला बनी अब्दुल उज़्ज़ा के लोगों के साथ

मस्जिदे बैतुल हराम में बैठा हुआ था कि फ़ातिमा बिन्ते असद रज़ियल्लाहु अन्हा मस्जिद में आयीं और उनको नवां महीना था। जब वह मशग़ूल तवाफ़ हुईं तो चौथे चक्कर में चलने की क़ुव्वत न रही तो आप पुकारने लगीं: ऐ खुदा वंदे काबा! काबे की हुरमत से इस विलादत को मुझ पर आसान फ़रमा। एक लख़्त दीवार काबा शक़ हुई और फ़ातिमा बिन्त असद अंदरूने काबा तशरीफ़ ले गयीं और हमारी नज़रों से ग़ायब हो गयीं। हमने अंदरूने काबा आपको तलाश किया मगर न मिलीं। चौथे रोज़ आप उसी काबा से बाहर तशरीफ़ लायीं और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को गोद में लिए हुए थीं। (अवराक़े ग़म 148)

सवाल: हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम "अली" किसने रखा और क्यों?

जवाब: अहले सैर कहते हैं कि आपकी वालिदा ने अपने बाप के नाम जो असद था हैदर रखा था। जब अबू तालिब तशरीफ़ लाए तो उन्होंने यह नाम नापसंद किया और अली नाम रखा। और हुज़ूर ने आपका नाम सिद्दीक़ रखा जैसा कि रियाज़ुन्नज़र में है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/917)

एक दूसरी रिवायत में है कि जब ख़बर विलादते अली हज़रत सरवरे आलम को पहुँची तो फ़रमाया, उसका क्या नाम रखा? अबू तालिब ने कहा, मैंने उसका नाम ज़ैदर रखा है और उनकी माँ ने असदर रखा है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, उसका नाम अली रखो जो आली हिम्मती की ख़बर दे। आपकी वालिदा ने अर्ज़ की: खुदा की क़सम! मुझे ग़ैब से आवाज़ें आती थीं कि फ़ातिमा इसका नाम अली रखो मगर मैंने इसको छिपाया था। (अवराक़े ग़म 149)

सवाल: हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु इज़्हारे नबुव्वत के कितने दिनों बाद इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए और उस वक़्त आपकी उम्र कितनी थी?

जवाब: अबू याअला ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि उन्होंने फ़रमाया कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पीर को इज़्हारे नबुव्वत फ़रमाया और मैं पीर ही के दिन इस्लाम लाया। उस वक़्त आपकी उम्र दस साल या आठ साल की थी जैसा कि अल्लामा

स्युती रहमतुल्लाह अलैहि ने नक़ल किया है। वाज़ का ख़्याल है कि पंद्रह साल की थी। और वाज़ का चौदह साल। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/917)

एक क़ौल सोलह साल भी है। (अस्माउर्रिजाल मिश्कात 602)

सवालः हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की कुन्नियत "अबू तुराब" होने का वाक़िआ क्या है?

जवाबः आपकी कुन्नियत अबू तुराब होने का क़िस्सा यूँ है:

हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ग़ज़वाए अशीरा में खजूर के एक पेड़ की जड़ में सो रहे थे वह ज़मीन रेतीली थी और हम गर्दआलूद हो गए थे। फिर हुज़ूर सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम हमारे सिरहाने तशरीफ़ लाए और हमें जगाया। और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, उठ ऐ अबू तुराब! लेकिन आपकी कुन्नियत अबू तुराब होने का मशहूर क़िस्सा वह है कि जिसे बुख़री व मुस्लिम ने हज़रत सहल बिन साअद रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के घर हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ़ लाए। इससे पहले हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु घर से बाहर तशरीफ़ ले जाकर मस्जिद में सो गए थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमायाः तुम्हारे इब्ने अम यानी अली मुर्तज़ा कहाँ हैं? हज़रत फ़ातिमा ने अर्ज़ किया, मेरे और उनके दर्मियान रंजिश सी हो गई है। और वह ग़ुस्से में बाहर चले गए हैं। इसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी से फ़रमाया, देखो वह कहाँ है? तो उस आदमी ने आकर बताया कि अली रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद में आराम कर रहे हैं। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके सिरहाने तशरीफ़ लाए। और उनके पहलू पर सोते हुए मुलाहिज़ा फ़रमाया। उनके पहलू पर निशानात पड़े हुए थे और उनका बदन ख़ाक आलूदा हो गया था। इस पर हुज़र ने फ़रमायाः **क़ुम अबा तुराब** "अबू तुराब उठो।" उस दिन से आपकी कुन्नियत अबू तुराब हो गई।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/136)

सवालः हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का लक़ब "कर्रार'

किसने रखा और क्यों?

जवाबः आपका लक़ब "कर्रार" हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रखा। कर्रार के माने हैं "बार बार हमला करना" क्योंकि आप भी दुश्मन पर बार बार हमला करते थे। इसलिए आप का लक़ब कर्रार रखा।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/136)

सवालः हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ातिल का नाम क्या है और आपकी शहादत का वाक़िआ क्या है?

जवाबः आपके के क़ातिल का नाम अब्दुर्रहमान बिन मुलजुम मुरादी है।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 602)

आपकी शहादत का वाक़िआ मुख़्तसर यूँ हैः

यह इब्ने मुलजुम मिस्री था और जब लोग हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के क़त्ल को मिस्र से आए तो उनके साथ यह भी आया था। फिर वहाँ से कूफ़ा आ गया और तोबा करके लश्कर शेर खुदा में शरीक हो गया। जंग नहरवान की फ़तेह के बाद इब्ने मुलजुम अहले कूफ़ा को बशारत फ़तेह सुनाने गया। उस मौक़े पर कूफ़ा में उसकी एक औरत क़तामा नामी से मुलाक़ात हुई। यह क़तामा अरब भर में हसीन व जमील मशहूर थी। इब्ने मुलजुम की नज़र जैसे ही उस पर पड़ी, शोलाए फ़िस्क़ उसके सीने में भड़का और सब्र को मुहब्बत की बिजली ने जला दिया। बातों ही बातों में इब्ने मुलजुम पूछ बैठा तू शादी करना चाहती है या नहीं? क़तामा ने कहा, चाहती ज़रूर हों मगर मेरी शराइत पूरी करने वाला मुझे अब तक न मिला। इब्ने मुलजुम ने कहाः वह क्या है? क़तामा रोने लगी और यूँ बोली कि ऐ इब्ने मुलजुम लश्करे अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने हर्बे नहरवान में मेरे बारह रिश्तेदार क़त्ल किए हैं। जब से मैंने अपना मेहर तीन बातों को रखा है, नंबर एक तीन हज़ार दिरहम नक़द, नंबर दो एक कनीज़ हसीन व जमील और नंबर तीन क़त्ले अली (रज़ियल्लाहु अन्हु)। इब्ने मुलजुम ने कहाः दो बातें तो मुमकिन हैं मगर मौला अली शेरे खुदा का क़त्ल बड़ी ज़बरदस्त शर्त है। क़तामा ने कहाः दिरहम और कनीज़ से दस्तबरदारी मुमकिन है मगर सबसे बड़ी शर्त यही है। इब्ने मुलजुम ने सोच विचार करके कहाः अच्छा! क़तामा मैं तैयार हूँ। मगर

सिर्फ़ एक ज़र्ब का ज़िम्मेदार हूँ। क़ताामा ने कहाः अच्छा! एक ही ज़र्ब सही अपनी तलवार मुझे लाकर दे। चुनाँचे इब्ने मुलजुम अपनी तलवार लाया और क़तामा ने उस तलवार को ज़हर में बुझा दिया। कुछ दिन बाद इब्ने मुलजुम उसके पास आया और उसने वह तलवार उसे दे दी। इब्ने मुलजुम ने अपनी मदद के लिए शुएब बिन बुहैरा शजई ख़ारजी और वरदान तैमी ख़ारजी को तैयार कर लिया।

मुख़्तसर यह कि रमज़ान की एक शब को हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद में तशरीफ़ लाए। देखा कि अहले कूफ़ा चारों तरफ़ से हिफ़ाज़त कर रहे हैं। फ़रमायाः यह क़ैदियों की सी हिफ़ाज़त क्या है? तक़्दीरे इलाही मिट नहीं सकती। जो होना है वह होगा और ज़रूर होगा। तुम जाओ और घरों में आराम करो। वे मजबूर होकर चले गए और आप अकेले मस्जिदे कूफ़ा में। तमाम शब मश्गूल इबादत रहे। फिर आपने सुबह की अज़ान दी और सुन्नत फ़ज्र में मश्गूल हो गए। इब्ने मुलजुम दोनों साथियों के साथ ज़हर में बुझी तलवार लेकर लपका। अभी आप एक ही रकअत पूरी कर पाए थे कि उस ख़बीस ने वार किया। वार मुकाम पर लगा जहाँ पहले जंगे ख़ंदक का ज़ख़्म था। वही ज़ख़्म खुल गया और सर मुबारक से मगज़ बाहर आ गया। ख़बीस इब्ने मुलजुम भागा और पुकारता चलाः अफ़सोस! अमीरुल मोमिनीन शहीद हो गए। तमाम अहले कूफ़ा मस्जिद में भर गए। देखा कि हज़रत शेरे खुदा करमल्लाहु वज्हु अपनी ख़ून आलूद रेश मुबारक पर हाथ फेर रहे हैं और फ़रमा रहे हैं कि इसी तरह मैं दरबारे रिसालत में जाऊँगा। फ़ातिमा ज़ोहरा से मिलूंगा, चचा हम्ज़ा से मुलाक़ात करूंगा, यही हुलिया अपने भाई जाफ़र तैय्यार को दिखाऊँगा। इधर शबीब लोगों के ज़रिए हलाक हुआ। और इब्ने मुलजुम आपके हुक्म से क़ैद में डाला गया।

(अवराक़ 169 से 177)

सवालः हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु किस तारीख़ को ज़ख़्मी हुए और उसके कितने दिनों बाद विसाल फ़रमाया?

जवाबः आपने 19 रमज़ान को ज़ख़्मी होकर बीस रमज़ान सन् 40 हि० को तारीख़ ख़त्म फ़रमाकर इक्कीसवीं शब की आग़ाज़ में आलमे

विसाल की तरफ़ कूच फ़रमाया।

(अक्बाक़ ...)

दूसरी रिवायत के मुताबिक़ 18 रमज़ान 40 हि० को ज़ख़्मी होकर ... रात गुज़रने के बाद दारुल बक़ा की तरफ़ रवाना हुए।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 60...)

सवालः हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को ग़ुस्ल किस... दिया और आपकी नमाज़े जनाज़ा किसने पढ़ाई?

जवाबः आपको इमाम हसन व हुसैन और अब्दुल्लाह बिन जाफ़... रज़ियल्लाहु अन्हुम ने ग़ुस्ल दिया और नमाज़े जनाज़ा हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने पढ़ाई। (अस्माउर्रिजाल मिश्कात 60...)

सवालः हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की मुद्दत ख़िलाफ़त कितनी रही?

जवाबः आपकी ख़िलाफ़त की मुद्दत चार साल सात माह और ... दिन या बारह दिन है। बाज़ चार साल नौ माह बताते हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/91...)

एक क़ौल पाँच साल का और एक क़ौल कुछ रोज़ कम पाँच साल का है।

(नज़्हतुल मजालिस 11/2...)

सवालः हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की उम्र कितनी हुई?

जवाबः आपकी उम्र शरीफ़ तिरेसठ साल मुवाफ़िक़ उम्रे नबवी हुई। बाज़ पैंसठ साल, बाज़ सत्तर साल और बाज़ अठ्ठावन साल कहते हैं।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 60...)

सवालः हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कितनी शादियां कीं और किस बीवी से कितनी औलादें हुईं?

जवाबः आपके नौ, दस अक़्द हुएः

पहली बीवी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं। उनसे दो शहज़ादे हुए।

दूसरी बीवी उम्मुल बनीन बिन्ते ख़राम हैं। उनसे अब्बास, जाफ़र, अब्दुल्लाह और उस्मान चार बेटे हुए।

तीसरी बीवी लैला बिन्ते मसऊद हैं उनसे अब्दुल्लाह और अबू बक्र हुए।

चौथी असमा बिन्ते अमीस हैं उनसे मुहम्मद असग़र और याहया पैदा हुए।

पाँचवीं बीवी उमामा बिन्ते आस जो ज़ैनब बिन्ते रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेटी थीं। उनसे मुहम्मद औसत पैदा हुए थे।

छठी बीवी ख़ैला बिन्ते जाफ़र हनफ़िया हैं जिनसे मुहम्मद अकबर जो मुहम्मद हनफ़िया से मारूफ़ हैं पैदा हुए।

सातवीं बीवी सईदा बिन्ते उरवा हैं उनसे उम्मुल हुस्न, मिल्लतुल कुबरा और उम्मे कुलसूम तीन लड़कियाँ पैदा हुईं।

आठवीं बीवी सहबा बिन्ते ज़ामा हैं उनसे रुक़ैय्या पैदा हुईं। नवीं और दसवीं बीवी के बारे में मालूमात हासिल न हुईं। (अवराक़े ग़म 187)

एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से इमाम हसन, इमाम हुसैन, मोहसिन, ज़ैनब, उम्मे कुलसूम और रुक़ैय्या पैदा हुए। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/788)

○ ○ ○

खुलफ़ाए राशिदीन के बारे में सवाल और जवाब

सवालः खुलफ़ाए राशिदीन में सबसे लंबी मुद्दत ख़िलाफ़त किसकी रही और सबसे कम किस की?

जवाबः खुलफ़ाए राशिदीन में सबसे लंबी मुद्दत ख़िलाफ़त हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की रही जो बारह साल कुछ दिन या कुछ दिन कम बारह साल है। और सबसे कम मुद्दत हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त रही जो दो साल तीन या चार माह और कुछ दिन है।

(हयातुल हैवान 2/96, 86)

सवालः खुलफ़ाए राशिदीन में से वह कौन हैं जिनको अल्लाह तआला ने सलाम कहलवाया?

जवाबः वह हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि अल्लाह तआला ने आपको सलाम कहलवाया। वाक़िआ इस तरह है कि एक दिन हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु बारगाहे रिसालत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में इस हाल मे हाज़िर हुए कि आपके जिस्मे मुबारक पर कुर्ते की जगह एक फटा हुआ कंबल था जिसमें बटनों की जगह कांटे लगे हुए थे। हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और यूँ अर्ज़ कियाः अबूबक्र का क्या हाल हो गया कि मालदारी में भी फ़क़ीराना लिबास पहने हुए हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अबूबक्र अपना तमाम माल मुझ पर और मेरे रास्ते पर ख़र्च करके मुफ़लिस हो गए हैं। हज़रत जिब्राईल ने अर्ज़ कियाः अल्लाह तआला ने अबूबक्र को सलाम कहा है और पूछा है कि अबूबक्र इस फ़क़ीराना लिबास में मुझसे राज़ी है या नाराज़? हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब यह सुना तो कैफ़ियते वज्द तारी हो गई और आलमे सरमस्ती में बुलदं आवाज़ में बार बार यह कहने लगे कि मैं अपने रब से राज़ी हूँ, मैं अपने रब से राज़ी हूँ। (तफ़्सीर अज़ीज़ी)

सवालः खुलफ़ाए राशिदीन में से वह कौन हैं कि जिन्होंने ख़िलाफ़त पर तंख़्वाह नहीं ली?

जवाबः वह हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि जिन्होंने ख़िलाफ़त पर तंख़्वाह नहीं ली। आपके सिवा तमाम खुलफ़ाए राशिदीन ने तंख़्वाह ली। (तफ़्सीर नईमी 2/557)

सवालः खुलफ़ाए राशिदीन में सबसे ज़्यादा दराज़ क़द कौन थे?

जवाबः वह हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि आप खुलफ़ाए राशिदीन में सबसे ज़्यादा दराज़ क़द थे।(तफ़्सीर नईमी 2/537)

सवालः खुलफ़ाए राशिदीन में से वह कौन हैं कि जो इस हाल में शहीद हुए कि तिलावात क़ुरआन फ़रमा रहे थे?

जवाबः वह हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि आप इस हाल में शहीद हुए कि तिलावत क़ुरआन फ़रमा रहे थे। और आपके ख़ून का पहला क़तरा की आयतः فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللّٰهُ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ पर गिरा था। (शाने हबीबुर्रहमान 254)

○ ○ ○

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के बारे में सवाल व जवाब

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत की तस्दीक़ सबसे पहले किसने की?

जवाबः उलमा का इख़्तिलाफ़ है कि रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सबसे पहले कौन ईमान लाया और तस्दीक़ अव्वले किसने की। जम्हूर का मज़हब यह है कि सबसे पहले खुल्लम खुल्ला ईमान लाने वाली हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं क्योंकि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़ारे हिरा से तशरीफ़ लाए और उनको नुज़ूल "वही" की ख़बर दी तो वह ईमान लायीं और तस्दीक़ की। उनके बाद सबसे साबिक़ुल ईमान अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। इसी मज़हब पर हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु, हिस्सान बिन साबित, असमा बिन्त अबिबक्र सिद्दीक़, नख़ई रज़ियल्लाहु अन्हुम वग़ैरह ताबईन, सहाबा की एक जमाअत और दीगर उलमा अल्लाम हैं। बाज़ कहते हैं कि सबसे पहले हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ईमान लाए क्योंकि वह आग़ोशे मुस्तफ़ा में परवरिश पा रहे थे और उस वक़्त बच्चे थे। इसीलिए उन्होंने फ़रमाया, "मैंने इस्लाम की तरफ़ उस वक़्त सबक़त की जब मैं बच्चा था और बालिग़ नहीं हुआ था।" जैसा कि तिबरी ने बयान किया है। अबू उमरू बिन अब्दुल बर्र ने कहा है कि वे हज़रात जो इस तरफ़ गए हैं कि सबसे पहले जो ईमान लाए थे। सलमान, अबूज़र, मिक़्दाद, ख़ब्बाब, जाबिर, अबू सईद खुदरी और ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं। और बाज़ कहते हैं कि सबसे पहले वरक़ा बिन नौफ़ल ईमान लाए थे। और शैख़ इब्ने सलाह फ़रमाते हैं कि सबसे ज़्यादा मोहतात और मौज़ूं तर कौल है कि आज़ाद मर्दों में हज़रत अबूबक्र, बच्चों और नौ उम्रों में हज़रत अली

और औरतों में हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा, आज़ादकर्दा गुलामों में हज़रत ज़ैद बिन हारसा और गुलामों में हज़रत बिलाल हब्शी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/58)

सवालः वे कौन कौन से सहाबी हैं कि जिनके पीछे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़ें पढ़ीं?

जवाबः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि उन्होंने फ़रमया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी उम्मती के पीछे नमाज़ नहीं पढ़ी सिवाए हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के पीछे एक मर्तबा और एक सफ़र में हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ के पीछे एक रकअत। जैसा कि अबि सलमा बिन अब्दुर्रहमान अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि वह रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक सफ़र जिहाद में थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ज़ाए हाजत के लिए तशरीफ़ ले गए और आपको आने में बहुत देर हो गई। तो सहाबा किराम ने तक्बीर कहकर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ को आगे बढ़ा दिया। फिर जब आप तशरीफ़ लाए तो अब्दुर्रहमान एक रकअत पढ़ा चुके थे। जब उन्होंने देखा तो चाहा कि पीछे हट आएं लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इशारा फ़रमाया कि अपनी जगह खड़े रहो और हुज़ूर ने एक रकअत हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु के पीछे पढ़ी। फिर खड़े होकर एक रकअत फ़ौत शुदा अदा फ़रमाई।

एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ुब्बा की जानिब तशरीफ़ ले गए। जब नमाज़ का वक़्त हो गया तो हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से कहाः क्या ख़्याल है कि नमाज़ का वक़्त हो गया है, अज़ान कह दो शायद कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी तशरीफ़ ले आएं। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आने में ताख़ीर हो गई तो तमाम सहाबा किराम मुत्तफ़िक़ा तौर पर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को नमाज़ के लिए आगे बढ़ा दिया। अचानक हुज़ूर भी तशरीफ़ ले आए। हज़रत अबूबक्र ने चाहा कि अपनी जगह से पीछे आएं और हुज़ूर लोगों को नमाज़ पढ़ाएं। इस पर हुज़ूर ने इशारा फ़रमाया कि अपनी जगह रहो। फिर आपने उनके पीछे

नमाज़ अदा फ़रमाई। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/717, 719)

सवालः वह कौन सहाबी हैं कि जिनकी चार पुश्ते शर्फ़ सहाबियत से मुशर्रफ़ हुई?

जवाबः वह हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि जिनकी चार पुश्तें शर्फ़े सहाबियत से मुशर्रफ़ हुईं। आपके वालदैन सहाबी, आप खुद सहाबी, आपके बेटे मुहम्मद, अब्दुल्लाह और अब्दुर्रहमान सहाबी, आपकी बेटियाँ हज़रत आएशा और हज़रत असमा सहाबिया और आपके पोते मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान भी सहाबी। यह फ़ज़ीलत आपके सिवा और किसी को हासिल न हुई। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 26/2)

सवालः हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के बाद दायरा इस्लाम में दाख़िलहोने वाली सबसे पहली ख़ातून कौन है?

जवाबः औरतों में हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के बाद सबसे पहली ख़ातून जो दायरा इस्लाम में दाख़िल हुईं वह हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ौजा मोहतरमा उम्मे फ़ज़ल लबाना बिन्ते हारिस रज़ियल्लाहु अन्हा हैं। (अस्माउर्रिजाल मिश्कात 613)

सवालः वह कौन से सहाबी हैं कि जिनको अल्लाह तआला ने सलाम कहलवाया?

जवाबः वह सहाबी और सहाबिया हज़रत अबूबक्र और हज़रत ख़दीजा हैं कि जिनको अल्लाह तआला ने सलाम कहलवाया। तफ़्सीली वाक़िआ "ख़ुलफ़ाए राशिदीन" और "उम्महातुल मोमिनीन" में बयान कर दिया गया है।

सवालः वह कौन से सहाबी हैं कि जिनके के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "फ़िदा-क उम्मी व अबि" कि मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान?

जवाबः वह खुशनसीब सहाबी हज़रत साद बिन अबि वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा हैं कि जिनके लिए नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "कि मेरे माँ बाप तुम पर क़ुर्बान।" इन दोनों के अलावा किसी और को यह शर्फ़ हासिल न मिला।

(मिश्कात शरीफ़ 565, अस्माउर्रिजाल मिश्कात 596)

सवालः वह कौन से सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जिनकी नमाज़े जनाज़ा सत्तर बार पढ़ी गई?

जवाबः वह हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। शोहदा ओहद की नमाज़ पढ़ने के ज़िम्न में मुहद्दिसीन किराम और अहले सैर से रिवायतें मरवी हैं कि सबसे पहले हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी गई। उनके बाद जो जनाज़ा आता वह हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के क़रीब रखा जाता रहा और नमाज़ पढ़ी जाती रही। यहाँ तक कि सत्तर नमाज़ें हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु पर गुज़ारी गयीं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/228, तफ़्सीर नईमी 4/130)

सवालः वह कौन से सहाबी हैं जिनकी नमाज़े जनाज़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मस्जिदे नबवी में पढ़ाई?

जवाबः वह हज़रत सहल व सुहैल रज़ियल्लाहु अन्हुमा हैं कि उनकी नमाज़े जनाज़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मस्जिदे नबवी में अदा फ़रमाई।

(मिश्कात 1/261)

सवालः वे कौन कौन हज़रात हैं कि जिनकी नमाज़े जनाज़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सत्तर तकबीरों से पढ़ाई?

जवाबः वह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की वालिदा मोहतरमा फ़ातिमा बिन्ते असद हैं कि उनकी नमाज़े जनाज़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सत्तर तकबीरों, दूसरी रिवायत के मुताबिक़ नौ तकबीरों के साथ पढ़ी।

और हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की भी नमाज़े जनाज़ा में सत्तर तकबीरें फ़रमायीं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/843)

सवालः वे कौन कौन हज़रात हैं कि जिनके कफ़न के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी क़मीज़ मुबारक और तहबंद इनायत फ़रमाए?

जवाबः वह हज़रात तीन हैं कि जिनके कफ़न के लिए हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी क़मीज़ मुबारक और तहबंद इनायत फ़रमाए:

1. हज़रत फ़ातिमा बिन्ते असद वालिदा हज़रत अली रज़ियल्लाहु

अन्हु। उनके कफ़न के लिए अपनी क़मीज़ मुबारक इनायत फ़रमाई।

2. सैय्यदा ज़ैनब बिन्ते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। उनके कफ़न के लिए अपना तहबंद मुबारक दिया।

3. अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल। उसके कफ़न को भी अपनी क़मीज मुबारक इनायत फ़रमाई। इब्ने उबई के कफ़न के लिए क़मीज़ मुबारक देना सिर्फ़ उसके बेटे की ख़ातिर से था क्योंकि वह मुहिब्बाने सादिक़ व मुख़्लिसान बारगाह में से था।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/161, 634, 2/783)

सवालः वे कौन कौन से सहाबी हैं कि जिनकी क़ब्र में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दाख़िल हुए?

जवाबः हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ से मंक़ूल है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी की क़ब्र में दाख़िल न हुए सिवाए पाँच शख़्सों के। तीन औरतों की क़ब्र में और दो मर्दों की। एक हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की क़ब्र में, बाक़ी चार मदीना तैय्यबा में। एक हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के लड़के की क़ब्र में जिसने आग़ोशे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में परवरिश पाई थी। तीसरे हज़रत अब्दुल्लाह मुज़नी, चौथे हज़रत उम्मे रूमान रज़ियल्लाहु अन्हा जो हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की वालिदा थीं और पाँचवे फ़ातिमा बिन्ते असद रज़ियल्लाहु अन्हा की क़ब्र में। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/262)

सवालः वह कौन से सहाबी हैं कि जिन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस्ते मुबारक से दफ़न होने का शर्फ़ पाया?

जवाबः वह हज़रत अब्दुल्लाह ज़ुल बजादीन रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि जिन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस्ते अक़्दस से दफ़न होने का शर्फ़ पाया। (हाशिया 6, हदाया 1/182)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बोल मुबारक पीने का शर्फ़ पाने वाले हज़रात कौन कौन हैं?

जवाबः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बोल पीने का शर्फ़ पाने वालों में एक उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा जो आपकी ख़िदमत

में रहा करती थीं। चुनाँचे मंक़ूल है कि रात के वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तख़्त मुबारक के नीचे एक प्याला रखा जाता कि रात में उसमें बोल मुबारक फ़रमा दें। एक रात जब आपने बोल मुबारक फ़रमाया और सुबह हुई तो आपने उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया कि इस तख़्त के नीचे एक प्याला है उसे ज़मीन के सुपुर्द कर दो। मगर उन्होंने कुछ न पाया। उम्मे ऐमन ने अर्ज़ कियाः खुदा की क़सम! रात मुझे प्यास मालूम हुई मैंने उसे पी लिया था। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तबस्सुम फ़रमाया और उन्हें अपना मुँह धोने का हुक्म फ़रमाया और फ़रमाया कि अब तुम्हें कभी पेट का दर्द नहीं होगा।

दूसरे बरका नामी एक ख़ादिमा थीं रज़ियल्लाहु अन्हा। वह भी आपकी ख़िदमत में रहा करती थीं। उसने भी एक दिन बोल शरीफ़ पी लिया था। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ऐ बरका तुम हमेशा के लिए तंदरुस्त बन गयीं। चुनाँचे वह औरत कभी बीमार नहीं हुई सिवाए उस बीमारी के जिसमें उसने दुनिया से कूच किया।

तीसरे, बाज़ रिवायतों में आता है कि एक शख़्स ने आपका बोल पी लिया था तो उसके जिस्म से हमेशा खुशबू महकती रहती थी हत्ताकि उसकी औलाद में कई नस्लों तक खुशबू रही। (मदारिजुन्नबुव्वत 1/49)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ून मुबारक पीने का शर्फ़ पाने वाले सहाबी कौन कौन है?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का लहू मुबारक का पीना सहाबा से बहुत बार वाक़ेअ हुआ। चुनाँचे उस हज्जाम (अबू तैय्यबा) ने कि जिसने आपके पुंछने लगवाए थे तो सिंघी या चुस्की से जितना लहू शरीफ़ निकलता है वह उसये हलक़ से अपने शिकम में उतारता जाता। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछाः तुम ख़ून का क्या करते हो? उसने अर्ज़ कियाः मैं ख़ून निकालकर अपने पेट में उतारता जाता हूँ। मैं नहीं चाहता कि आपका ख़ून मुबारक ज़मीन पर बहे। आपने फ़रमायाः बिला शुब्ह तुमने अपनी पनाह तलाश कर ली। और अपने नफ़्स को महफ़ूज़ बना लिया यानी बला और अमराज़ से बच गए।

ग़ज़वा ओहद के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मजरूह हो गए तो हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु के वालिद हज़रत मालिक बिन सनान रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने आपके ज़ख़्मों को अपने मुँह से चूसकर ज़बान से ज़ख़्मों को पाक और साफ़ किया। लोगों उनसे कहा कि अपने मुँह से ख़ून बाहर निकालो। उन्होंने कहाः नहीं खुदा की क़सम ज़मीन पर आ के ख़ून को हर्गिज़ न गिरने दूंगा। वह ख़ून निगल गए। इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया जो शख़्स ख़्वाहिश करता है कि किसी जन्नती शख़्स को देखे तो वह इन्हें देख लें

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पुंछने लगवाए और अपना ख़ून मुबारक मुझे देकर फ़रमाया कि इसे किसी ऐसी जगह ग़ायब कर दो जहां किसी की नज़र न पड़े। मैंने उसे पी लिया क्योंकि इससे ज़्यादा पोशीदा जगह मैं नहीं पाता था। इस पर हुज़ूर ने फ़रमायाः वाए! तुम्हें लोगों से और वाए लोगों को तुमसे। यह उनकी क़ुव्वते मर्दानगी, शुजाअत और बहादुरी से किनाया था जो उन्हें ख़ून मुबारक के पी लेने से हासिल हुई।

(मदारिजुन्नबुव्वत 1/50)

सवालः वे कौन से सहाबी हैं जिनके लिए जनाबत की हालत में मस्जिद में जाना हलाल था?

जवाबः हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ऐसे सहाबी हैं कि जिनका हालते जनाबत में मस्जिद में जाना हलाल था। (तन 2/547, व 1/433)

सवालः वह कौन से सहाबी हैं जिनकी सूरत में हज़रत जिब्राईल अमीन अलैहिस्सलाम आया करते थे?

जवाबः वह हज़रत वहिया कलबी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि जिनकी सूरत में जिब्राईल अलैहिस्सलाम कभी कभी आया करते थे।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 593)

सवालः वह कौन से सहाबी हैं जिनकी अकेले की गवाही दो आदमियों के बराबर थी?

जवाबः वह हज़रत खुज़ैमा बिन साबित अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं

कि जिनके बारे में रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हारी अकेले की गवाही दो आदमियों के बराबर है।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 1/78)

जिसका मुख़्तसर वाक़िआ यूँ है:

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक अराबी से एक घोड़ा ख़रीदा। सौदा तय होने के बाद आप पैसे लेने के लिए घर तशरीफ़ ले गए। इधर दूसरे लोगों ने उस घोड़े की क़ीमत लगाई। इसी दौरान हुज़ूर भी तशरीफ़ ले आए। और उस अराबी से फ़रमाया कि तूने यह घोड़ा मेरे पास बेच दिया है। वह देहाती इंकार करते हुए कहने लगा कि आपके पास इस बात पर कोई गवाह है कि इस घोड़े को मैंने आपके हाथ बेच दिया है? जो भी मुसलमान आता वह देहाती से कहता: अफ़सोस है तुझ पर, खुदा का नबी नहीं फ़रमाता मगर हक़। लेकिन देहाती किसी की बात न मानता। हज़रत खुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हु आए और उन्होंने कहा: मैं गवाही देता हूँ कि तूने यह घोड़ा हुज़ूर के हाथ बेचा है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ऐ खुज़ैमा! तुम कैसे गवाही देते हो हालाँकि मैंने तुम्हें गवाह नहीं बनाया। इस पर उन्होंने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! हम आपकी आसमानी बातों की तस्दीक़ करते हैं तो क्या हम इस देहाती पर तस्दीक़ न करें? इस बिना पर हज़रत खुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हु की गवाही को दो गवाहों के बराबर क़रार दिया और इस फ़ज़ीलत में उन्हें मख़्सूस फ़रमाया। (मदारिजुन्नबुव्वत 1/254, हयातुल हैवान 2/346)

सवालः वह कौनसे सहाबी हैं कि जिनकी आज़ादी के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद अपने दस्ते अक़्दस से तीन सौ खजूर के पौदे लगाए?

जवाबः वह हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि जब आपने अपने मौला से आज़ादी मांगी तो उसने कहा इस शर्त पर तुम्हें आज़ाद कर दूंगा कि तीन सौ खजूर के पौदे इस तरह लगाओ कि एक भी ज़ाए न हो। जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गोश मुबारक तक यह बात पहुँची तो आपने अपने दस्ते मुबारक से तीन सौ खजूर के पौदे लगाए और एक भी ज़ाए नहीं हुआ। एक पौदा हज़रत

उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने या खुद सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु ने लगाया था जिसमें फल नहीं आया। फिर आपने उसे दोबारा लगाया।

(मदारिजुन्नबुव्वत 1/366, तफ़्सीर अलम नशरह 597)

सवालः वह कौन से सहाबी हैं कि जिन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का ज़माना पाया?

जवाबः हज़रत शेख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि बाज़ कहते हैं कि हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का ज़माना भी पाया था।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/121, हाशिया अस्माउर्रिजाल मिश्कात 597)

सवालः उस सहाबी का नाम बताओ जो अरब के मशहूर सख़ी हातिम ताई के बेटे थे?

जवाबः वह हज़रत अदी बिन हातिम रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जो अरब के मशहूर सख़ी हातिम ताई के बेटे थे। (अस्माउर्रिजाल मिश्कात 606)

सवालः उस सहाबी का नाम क्या है जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हमशक्ल थे?

जवाबः वह हज़रत उरवा बिन मसऊद सक़फ़ी हैं जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हमशक्ल थे। (इब्ने कसीर 15/1)

सवालः उस सहाबी का नाम क्या है जिनको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक़्बूल दुआ होने की दुआ दी थी?

जवाबः वह हज़रत साद बिन अबि वक़्क़ास हैं कि हुज़ूर ने उनको दुआ दी थी कि ऐ साअद! अल्लाह तुम्हें मक़्बूल दुआ बनाए। चुनांचे आप ऐसे मक्बूल दुआ हुए कि सहाबा किराम आपसे दुआ कराने आते थे। आख़िर में आप नाबीना हो गए थे लेकिन कभी अपने लिए दुआ नहीं फ़रमाई। (तफ़्सीर नईमी 4/131, मिश्कात शरीफ़ 2/566)

सवालः वह कौनसे सहाबी हैं कि जिन पर गर्मी और सर्दी बिल्कुल असर न करती थी और क्यों?

जवाबः वह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके लिए दुआ फ़रमाई कि वह गर्मी सर्दी से महफ़ूज़ रहें। तो आपकी यह हालत थी कि गर्मी में सर्दी के और सर्दी में गर्मी के

कपड़े पहनते थे मगर आपको गर्मी व सर्दी कुछ नुक़सान न पहुँचाती।
(मदारिजुन्नबुव्वत 1/346, तफ़्सीर नईमी 1/453)

सवालः वह कौनसे सहाबी हैं कि जिनकी आवाज़ आठ मील दूरी तक सुनाई देती थी?

जवाबः वह हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि आपकी आवाज़ आठ मील दूरी तक सुनाई देती थी। (हाशिया 12 जलालैन 157)

सवालः हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु के वालिद और वालिदा का नाम क्या है और आपकी क़ब्र कहाँ है?

जवाबः हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु के वालिद का नाम रबाह और वालिदा का नाम हम्माम है। (मअरिजुन्नबुव्वत 26/3)

और आपकी क़ब्र शरीफ़ क़ौल के मुवाफ़िक़ दमिश्क़ के बाबे सग़ीर में है। आपका विसाल सन् 20 हि० को हुआ था और उम्र 63 साल हुई।
(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 587)

सवालः उस सहाबी का क्या नाम है जो अपनी दस बीवियों के साथ इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए?

जवाबः वह हज़रत ग़ैलान बिन सलमा सक़फ़ी हैं कि अपनी दस बीवियों के साथ इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म से उनमें से चार को बाक़ी रखा, बाक़ी को तलाक़ दे दी। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 4/12)

सवालः सबसे आख़िर में इंतिक़ाल करने वाले सहाबी का नाम क्या है?

जवाबः वह हज़रत अबू तुफ़ैल आमिर बिन वासला रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि जिन्होंने सहाबा किराम में से सबसे बाद में विसाल फ़रमाया। आपका इंतिक़ाल सन् 107 या 110 हि० में हुआ। आप खुद कहा करते थे कि अब रूए ज़मीन पर कोई शख़्स नहीं है सिवाए मेरे कि जिसने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा हो।
(मदारिजुन्नबुव्वत 2/1015)

सवालः कुल सहाबा किराम की तादाद कितनी है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाले हक़ के वक़्त सहाबा किराम

की तादाद कितनी थी?

जवाबः एक लाख चौबीस हज़ार सहाबी हैं जिनमें सात सौ

(मलफ़ूज़ात 3/

मालूमुल इस्म हैं।

और इब्ने सलाह ने बयान किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने एक लाख चौबीस हज़ार सहाबियों को छोड़कर विसाले

(नज़हतुल मजालिस 10, 7

फ़रमाया था।

सवालः अहदे रिसालत में कितने सहाबा किराम को ज़िना के

जुर्म में संगसार किया गया?

जवाबः अहदे रिसालत अक़्दस में ज़िना का सबूत गवाहों से

नहीं हुआ। अलबत्ता दो बार यह हुआ कि मुजरिमों ने खुद इक़रार का

लिया। पहला वाक़िआ हज़रत मआज़र रज़ियल्लाहु अन्हु। दूसरा ए

सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा का। दोनों मुजरिम बारगाहे रिसालत में

हाज़िर हुए और शरई सज़ा के ख़्वास्तगार हुए कि हम पाक हो जाएं।

(मलफ़ूज़ 1/73)

चुनाँचे दोनों को संगसार किया गया।

○ ○ ○
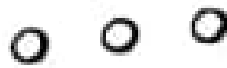
बारगाहे रिसालत के ख़ादिमों, निगहबानों, मुफ़्तियों, कातिबों, शायरों और आज़ाद कर्दा गुलामों के बारे में सवाल व जवाब

सवालः बारगाहे रिसालत के ख़ुद्दाम सहाबा किराम कौन कौन थे?

जवाबः यूँ तो तमाम सहाबा किराम सबके सब ख़ुद्दाम बारगाह और हाज़िरीने मज्लिस रिसालत पनाह थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिससे जो चाहते ख़िदमत के लिए फ़रमा देते थे। अलबत्ता कुछ हज़रात ख़िदमत के लिए मुताइय्यन थे जिनको अहले सैर लिखते हैं कि वह हस्बे ज़ैल हैं:

1. हज़रत अनस बिन मालिक,
2. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद,
3. हज़रत ऐमन इब्ने ऐमन,
4. हज़रत रबिया बिन काब,
5. हज़रत साअद मवाली अबिबक्र,
6. हज़रत उक़्बा बिन आमिर,
7. हज़रत अफ़लह बिन शरीक,
8. हज़रत अबूज़र ग़फ़्फ़ारी,
9. हज़रत मुहाजिर मौला सैय्यदा उम्मे सलमा,
10. हज़रत हनीन,
11. हज़रत नईम बिन अबि रबिई,
12. हज़रत अबुल हमर हिलाल इब्ने हारिस,
13. हज़रत अबुल समह बाज़,

14. हज़रत बिलाल हब्शी,
15. हज़रत दो मख़्मर,
16. हज़रत बकीर बिन शदाह,
17. हज़रत शरीक,
18. हज़रत असद बिन मालिक बिन असदी,
19. हज़रत साअलबा बिन अब्दुर्रहमान अंसारी,
20. हज़रत जुज़ बिन मालिक,
21. हज़रत सालिम मौला रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम,
22. हज़रत साबिक़ बिन हातिब,
23. हज़रत सलमा,
24. हज़रत अबू सलाम,
25. हज़रत अबू उबैदा मौला रसूल,
26. हज़रत हिंद बिन हारसा,
27. हज़रत असमा बिन्ते हारसा। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/850, 2/86...

सवालः बारगाहे रिसालत की ख़िदमत गुज़ार औरतें कौन कौन थीं?

जवाबः बारगाहे रिसालत की ख़िदमत गुज़ार औरतें नीचे लिखी हैं

1. हज़रत ऐमन बरकत,
2. हज़रत ख़ौला,
3. हज़रत सलमा उम्मे राफ़े,
4. हज़रत मैमूना बिन्ते साअद,
5. हज़रत उम्मे अय्याश,
6. उम्मतुल्लाह बिन्ते रज़ीना,
7. हज़रत सफ़िया,
8. हज़रत ख़ज़रा,
9. ज़रीबा उम्मे उत्बा,
10. मारिया उम्मे रुबाब,
10 मारियादादी मुसन्ना बिन सालेह,
12. सैय्यदा मारिया किब्तिया रज़ियल्लाहु अन्हुन्ना।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/859, 2/8...

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नालैन पहनाने और उतारने की ख़िदमत किसके सुपुर्द थी?

जवाबः वह हज़रत अब्दुर्रहमान बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि नालैन शरीफ़ैन, मिस्वाक, असा मुबारक, तकिया और बिछौना यह तमाम चीज़ें उनके सुपुर्द थीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़याम फ़रमाते तो यह नालैन मुबारक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहनाते। और जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नशिस्त फ़रमाते तो यह पाए अक़्दस से नालैन मुबारक उतारते और अपनी आस्तीन में महफ़ूज़ रखते थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/852)

सवालः दौराने सफ़र हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पानी की छागल को उठाने का काम किसके सुपुर्द था?

जवाबः पानी की छागुल उठाने की ख़िदमत हज़रत ऐमन बिन उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के सुपुर्द थी। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/852)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए वुज़ू के वास्ते पानी मुहैय्या करने की ख़िदमत किसके सुपुर्द थी?

जवाबः हज़रत रबिया बिन कअब असलमी रज़ियल्लाहु अन्हु थे जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए वुज़ू का पानी मुहैय्या करते थे।

सवालः दौराने सफ़र हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ऊँट कौन खींचा करता था?

जवाबः वह हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जो दौराने सफ़र हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ऊँट खींचते थे।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/852)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऊँट पर राहिला बांधने की ज़िम्मेदारी किसके सुपुर्द थी?

जवाबः ऊँट पर राहिला बांधने का काम हज़रत अफ़लह बिन शरीक के सुपुर्द था। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/852)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब गुस्ल फ़रमाते तो किस सहाबी से अपनी पुश्त मुबारक मलवाते थे?

जवाबः वह हज़रत अबाद अबुस्समह रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि जब

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़ुस्ल फ़रमाते तो अपनी पुश्त मुबारक उनसे मलवाते थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/858

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की घरेलू आमद व ख़र्च की ख़िदमत किसके सुपुर्द थी?

जवाबः यह ख़िदमत हज़रत बिलाल हब्शी रज़ियल्लाहु अन्हु के सुपुर्द थी। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/862)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में वाजिबुल क़त्ल मुजरिमों की गर्दने मारने का काम कौन कौन करते थे?

जवाबः हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम, हज़रत मुहम्मदबिन सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु और चंद दीगर ऐसे अस्हाब थे जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म पर काफ़िरों और वाजिबुल क़त्ल मुजरिमों की गर्दने उड़ाते थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/868)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अंगुश्तरी मुबारक यानी मुहर शरीफ़ की हिफ़ाज़त किसके ज़िम्मे थी?

जवाबः वह हज़रत मइक़ब रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अंगूठी यानी मुहर मुबारक की हिफ़ाज़त उन्हीं के ज़िम्मे थी। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/869)

सवालः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निगहबानी करने वाले सहाबा किराम कौन-कौन थे और किसने किस मौक़े पर निगहबानी की?

जवाबः जिन सहाबा किराम ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पहरा दिया उनकी तफ़्सील नीचे लिखी है:

1. हज़रत सअद बिन मुआज़ अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु। उनकी निगहबानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए रोज़े बदर थी। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए एक अरीश बनाया गया था। आप इसमें ख़्वाबे इस्तराहत फ़रमाते थे और हज़रत सअद बिन मुआज़ अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु इस अरीश की निगहबानी कर रहे थे।
2. हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु भी रोज़े बदर अरीश में

नंगी तलवार खींचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिरहाने खड़े पहरा दे रहे थे ताकि कोई मुश्रिक क़रीब न आ सके।

3. हज़रत मुहम्मद बिन मुसलिमा अंसारी मदनी रज़ियल्लाहु अन्हु उनकी निगहबानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रोज़े ओहद थी।
4. हज़रत ज़कवान बिन अब्दुल्लाह बिन क़ैस रज़ियल्लाहु अन्हु। आप हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ रोज़े ओहद पहरेदार थे।
5. हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु। ग़ज़वाए ख़ंदक़ में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निगहबानी करते थे।
6. हज़रत साअद बिन अबि वक़ास रज़ियल्लाहु अन्हु। आपकी निगहबानी के सिलसिले में मरवी है कि एक रात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बेदार थे और नींद नहीं आ रही थी। फ़रमायाः काश! कोई मर्दे सालेह मेरे अस्हाब में से मेरी पासबानी करे। अचानक हथियारों की आवाज़ सुनी, फ़रमायाः कौन शख़्स है? अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं सअद हूँ। फिर वह पासबानी के लिए मुस्तइद हो गए।
7. हज़रत उबाद बिन बशर रज़ियल्लाहु अन्हु। ग़ज़वा ख़ंदक़ में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निगहबानी करते थे।
8. हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निगहबानी ग़ज़वाए ख़ैबर में की थी।
9. हज़रत बिलाल हब्शी रज़ियल्लाहु अन्हु। वादी क़ुरा में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पासबान थे।
10. हज़रत मुग़ैरह बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु रोज़े हुदैबिया, नंगी तलवार लिए रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पासबानी में हुज़ूर के सिरहाने खड़े थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/902, 912)

वाज़ेह हो कि सहाबा किराम की निगहबानी इस मानी में नहीं है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी निगहबानी के लिए उनको मुक़र्रर किया था बल्कि सहाबा किराम में से कुछ हज़रात अपने आप इस

काम में मशग़ूल होते और सआदत से मुशर्रफ़ होते थे। मुमकिन है उनमें से कुछ हज़रात इस सआदत पर हमेशा क़ायम रहे हों और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बइत्तिबाए सुन्नते इलाही ऐसे उमूर की रिआयत मलहूज़ रखते थे जब आयते करीमाः वल्लाहु यअ्सिमु-क मिनन्नासि नाज़िल हुई तो आपने इसे तर्क फ़रमा दिया।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/...)

सवालः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में फ़तवा कौन-कौन दिया करते थे?

जवाबः अस्हाबे फ़तावा छः लोग थेः

1. हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु,
2. हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु,
3. हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु,
4. हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु,
5. हज़रत अबू ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु,
6. हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/93)

हयातुल हैवान में इन अस्हाब की तादाद चौदह हैः

1. हज़रत अबूबक्र,
2. हज़रत उमर फ़ारूक़,
3. हज़रत उस्मान ग़नी,
4. हज़रत अली मुर्तज़ा,
5. हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़,
6. हज़रत उबई बिन क़अब,
7. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद,
8. हज़रत मुआज़ बिन जबल,
9. हज़रत अम्मार बिन यासिर,
10. हज़रत हुज़ैफ़ा यमान,
11. हज़रत ज़ैद बिन साबित,
12. हज़रत सलमान फ़ारसी,
13. हज़रत अबू दरदा,
14. और हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन।

सवालः बारगाहे रिसालत के कातिब कितने और कौन-कौन थे?

जवाबः वाज़ेह हो कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बहुत से कातिब थे। बाज़ "वही" की किताबत करते थे, बाज़ सुलतानों व उमरा वग़ैरह के नाम ख़ुतूत लिखा करते थे। बाज़ सदक़ात के अमवाल

किताबत करते थे और बाज़ मदानियात, मामलात और शर्तों वग़ैरह लिखा करते थे। रौज़ातुल अहबाब में कातिबों की तादाद चालीस बयान की गई है:

1. हज़रत सिद्दीके अकबर,
2. हज़रत उमर फ़ारूक़,
3. हज़रत उस्मान ग़नी,
4. हज़रत अली मुर्तज़ा,
5. हज़रत तल्हा बिन उबैदुल्लाह,
6. हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम,
7. हज़रत सअद बिन अबि वक़्क़ास,
8. हज़रत आमिर बिन फ़ुहीरा,
9. हज़रत साबित बिन क़ैस,
10. हज़रत ख़ालिद बिन सअद,
11. हज़रत अबान बिन सअद,
12. हज़रत हंज़ला,
13. हज़रत अबू सुफ़ियान,
14. हज़रत यज़ीद बिन अबू सुफ़ियान,
15. हज़रत अमीर माविया,
16. हज़रत ज़ैद बिन साबित,
17. हज़रत शरजील बिन हसना,
18. हज़रत अला हज़रमी,
19. हज़रत ख़ालिद बिन वलीद,
20. हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा,
21. हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा,
22. हज़रत अम्र बिन आस,
23. हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा,
24. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह,
25. हज़रत जहम बिन सलत,
26. हज़रत अरक़म बिन अबि अरक़म,
27. हज़रत अला बिन उत्वा,
28. हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद,
29. हज़रत अबू अय्यूब अंसारी,
30. हज़रत हुज़ैफ़ा यमानी,
31. हज़रत बरैदा बिन हसीब,
32. हज़रत हसीन बिन नमीर,
33. हज़रत अब्दुल्लाह बिन साअद,
34. हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुल असद,
35. हज़रत हुवैतब बिन अब्दुल उज़्ज़ा,
36. हज़रत हातिब बिन अम्र,
37. हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़तल मुरतद,
38. हज़रत उबई बिन काब,
39. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अरक़म,
40. हज़रत मईक़ब बिन अबि फ़ातिमा रिज़्वानुल्लाहि अन्हुम अजमईन।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/913 से 965)

सवाल: "वही" की किताबत करने वाले सहाबा कौन कौन थे?

जवाब: अस्हाबे किताबत "वही" नौ थे:

1. हज़रत उबई बिन काब,
2. हज़रत ज़ैद बिन साबित,
3. हज़रत अमीर माविया बिन अबू सुफ़ियान,
4. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़,
5. हज़रत उमर फ़ारूक़,
6. हज़रत उस्मान ग़नी,
7. हज़रत अली मुर्तज़ा,
8. हज़रत हंज़ला बिन रबीअ,
9. हज़रत ख़ालिद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुम। (हयातुल हैवान 1/7)

सवाल: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुरासिलात लिखने वाले सहाबी कौन थे?

जवाब: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुरासिलात लिखने वाले हमेशगी तौर पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु थे।
(मदारिजुन्नबुव्वत 2/...)

सवाल: अहदनामे या सुलहनामे कि किताबत कौन किया करते थे?

जवाब: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब किसी से अहद व सुलह करते थे तो कातिब अहूद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु होते थे।
(मदारिजुन्नबुव्वत 2/...)

सवाल: हुज़ूर सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में अज़ान देने वाले हज़रात कितने थे और कौन कहाँ अज़ान देते थे?

जवाब: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में अज़ान देने वाले हज़रात चार थे:

1. हज़रत बिलाल हब्शी रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना तैय्यबा में अज़ान देते थे।

2. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम रज़ियल्लाहु अन्हु, यह भी मदीना तैय्यबा, हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ अज़ान दिया करते थे।

3. हज़रत सअद बिन आएज़ क़रज़ी रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिदे क़ुबा में मौज़्ज़िन मुक़र्रर थे। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किराए

फ़रमाया तो हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने अज़ान देनी छोड़ दी तो आपको मस्जिदे नववी शरीफ़ में मुन्तक़िल कर दिया गया और सारी ज़िंदगी अज़ान देते रहे।

4. हज़रत अबू महज़ूरा औस बिन मुग़ैरा रज़ियल्लाहु अन्हुमा मक्का मुकर्रमा में अज़ान दिया करते थे।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/1003 से 1008, नज़हतुल मजालिस 3/111)

सवालः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ुद्दाम शोअरा कितने थे?

जवाबः रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ुद्दाम शायर मर्दों में से एक सौ साठ थे और औरतों में से बारह थीं। उन शायरों में से जो हज़रात काफ़िरों के शर को इस्लाम और मुसलमानों से दफ़ा करते और बाज़ रखते और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मदह करते और काफ़िरों की हिज्जो मुज़म्मत करते थे वे तीन लोग शुमार किये गए हैं:

1. हज़रत हिस्सान बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु,
2. हज़रत कअब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु,
3. हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/1008)

सवालः वह हज़रात कितने और कौन-कौन थे जिनको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अतराफ़ व अकनाफ़ के सुलतानों और अमीरों की तरफ़ भेजा था?

जवाबः रौज़ातुल अहबाब में है कि वह ग्यारह अस्हाब कामिल नसाब थे जिनको हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अकनाफ़ व अतराफ़ के सुलतानों और अमीरों की तरफ़ भेजा था। उनकी तफ़्सील हस्बे ज़ैल है:

1. हज़रत अम्र बिन उमैय्या ज़मरी रज़ि अन्हु। इनको नजाशी शाह हब्शा, मुसैलमा कज़्ज़ाब और फ़रदा बिन अम्र जुज़ामी की तरफ़ जो कि क़ैसर शाहे रोम की तरफ़ से गवर्नर भेजा था।
2. हज़रत दहिया कलबी रज़ियल्लाहु अन्हु। इनको हरक़ुल रोम की तरफ़ क़ासिद बनाकर भेजा गया था।

3. हज़रत अब्दुल्लाह बिन हज़ाफ़ा सहमी रज़ियल्लाहु अन्हु। इनको किसरा परवेज़ बिन मरमुज़ शाह फ़ारस की तरफ़ भेजा गया।
4. हज़रत हातिब बिन अबि बलता रज़ियल्लाहु अन्हु। इनको मक़ूक़स शाहे मिस्र व स्कंदरिया की तरफ़ भेजा गया था।
5. हज़रत शुजाअ बिन वाहिब असदी रज़ियल्लाहु अन्हु। इनको हारिस बिन अबि शिमर ग़स्सानी हाकिम शाम की तरफ़ भेजा गया था।
6. हज़रत सुलैत बिन अम्र आमरी रज़ियल्लाहु अन्हु। इनको हूदा बिन अली ख़फ़ी वाली यमामा की तरफ़ भेजा गया था।
7. हज़रत अला हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु। इनको मंदरा बिन सावा वाली बहरीन की तरफ़ भेजा गया था।
8. हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु। इनको ताएफ़ के एक बादशाह शाह ज़ुलकला की तरफ़ भेज गया था।
9. हज़रत मुहाजिर बिन उमैया मख़्ज़ूमी रज़ियल्लाहु अन्हु। इनको हारिस बिन अब्दु कलाल हमीरी शाह यमन की जानिब भेजा गया।
10. हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु। इनको मुल्के अम्मान के जलंदर के बेटे जैफ़र व अब्द की जानिब भेजा गया था।
11. हज़रत उरवा बिन मसऊद सक़फ़ी रज़ियल्लाहु अन्हु। इनको इन्हीं के क़बीले की तरफ़ क़ासिद बनाकर भेजा गया था।

ये ग्यारह अस्हाबे किराम हैं जिनको रौज़तुल अहबाब में सफ़ीरों और क़ासिदों के ज़िम्न में बयान किया गया है। इसके बाद कहते हैं कि बाज़ अहले सैर हज़रत अबू मूसा अशअरी और मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बाज़ ने हज़रत वतरा बिन मोहिसन और हज़रत हबीब बिन हबीब बिन ज़ैद को भी हुज़ूर के क़ासिदों और सफ़ीरों में शुमार किया है। इस बिना पर इन अस्हाब की तादाद पंद्रह हो जाती है। मवाहिब लदुन्निया में अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत ऐनिया बिन हुसैन, हज़रत बरीरा बिन हसीब, हज़रत उबादा बिन बशर, हज़रत राफ़ेअ बिन मकीस, हज़रत ज़हाक बिन सुफ़ियान, हज़रत बशीर बिन सुफ़ियान और हज़रत अब्दुल्लाह बिन नसीर रज़ियल्लाहु अन्हुम को

भी क़ासिदों और सफ़ीरों के ज़िम्न में बयान किया है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/968 से 978)

सवाल: क़बाइल से माल सदक़ात व ज़कात वसूल करने वाले सहाबा कौन कौन थे?

जवाब: क़बाइल से अमवाल और सदक़ात को वसूल करने वाले चंद अस्हाब थे जिनके अस्मा मुबारक ये हैं:

1. हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु जो बनी कल्ब के सदक़ात पर आमिल थे।
2. हज़रत अदी बिन हातिम रज़ियल्लाहु अन्हु उनको अपने ही क़बीले बनी तय पर आमिल बनाकर भेजा गया था।
3. हज़रत ऐनिया बिन हसीन रज़ियल्लाहु अन्हु को क़बीला बनी कअब की शाख़ ख़ज़ाअ पर आमिल मुक़र्रर फ़रमाया।
4. हज़रत अयास बिन क़ैस असदी रज़ियल्लाहु अन्हु उनको बनी असद पर भेजा गया था।
5. हज़रत वलीद बिन उक़्बा बिन अबि मुईत रज़ियल्लाहु अन्हु। आप क़बीला बनी मुस्तलक़ पर आमिल मुक़र्रर थे।
6. हज़रत हारिस बिन औफ़ मुज़नी रज़ियल्लाहु अन्हु। उनको क़बीला बनी मुर्रा पर आमिल मुक़र्रर किया गया था।
7. हज़रत मसऊद बिन रजील रज़ियल्लाहु अन्हु। यह बनी अवस पर आमिल थे।
8. हज़रत अजम बिन सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु जो अज़रा सलामान वैली जहैनिया और उब्नी पर आमिल थे।
9. हज़रत अब्बास बिन मरदास रज़ियल्लाहु अन्हु। इनको क़बीला बनी सुलैम की जानिब आमिल बनाकर भेजा गया था।
10. हज़रत लुबैब बिन हासिब रज़ियल्लाहु अन्हु, आप क़बीला दारम पर आमिल थे।
11. हज़रत आमिर बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु, यह क़बीला बनी आमिर बिन साअसा पर आमिल थे।
12. हज़रत सअद बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु, आप क़बीला बनी

कलाब पर आमिल थे।

13. हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु, इनको क़बीला हवाज़न नज़र और सक़ीफ़ पर आमिल मुक़र्रर किया गया था।
14. हज़रत ज़हाक बिन सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु, आप अपनी क़ौम के सदक़ात पर आमिल मुक़र्रर थे।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/ 990 से 1000)

सवालः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मवाली यानी आज़ाद कर्दा गुलाम कितने और कौन कौन थे?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मवाली यानी आज़ादकर्दा गुलामों में जिनके नाम मिल सके वे ये हैं:

1. हज़रत ज़ैद बिन हारसा,
2. हज़रत उसामा बिन ज़ैद बिन हारसा,
3. हज़रत सोबान बिन बज्दूमा,
4. हज़रत अबू क़बशा नाम सुलैम या औस या सामा,
5. आनिसा या अबू आनिसा या अबू सरूह या अबू सरह,
6. हज़रत सालेह मुलक़्क़ब शक़रान,
7. हज़रत रबाह,
8. हज़रत यसार,
9. हज़रत अबू राफ़ेअ नाम असलम या सबित या यज़ीद या इब्राहीम या हरमुज़,
10. हज़रत अबू मवेहबा,
11. हज़रत अबू लहबी नाम राफ़ेअ,
12. हज़रत मदम,
13. हज़रत ज़ैद, हिलाल बिन यसार के दादा,
14. हज़रत उबैदा बिन अब्दुल ग़फ़्फ़ार,
15. हज़रत सफ़ीना नाम महरमान या मुलहमान या रूमान या कैसान या फ़रूख़,
16. हज़रत माबूर क़िब्ती,
17. हज़रत वाक़िद या अबू वाक़िद,

18. हज़रत हिशाम,
19. हज़रत अबू ज़मीरा नाम सोदिया या रूह बिन सनद रियाह रूह बिन शैर ज़ाद या सअद हमीरी,
20. हज़रत हुसैन,
21. हज़रत अबू असीब नाम अहमर या मर्रा,
22. हज़रत अबू उबैदा,
23. हज़रत असलम बिन उबैद,
24. हज़रत अफ़लाह,
25. हज़रत अंदशा,
26. हज़रत बाज़ाम,
27. हज़रत हातिम,
28. हज़रत बदर,
29. हज़रत रबीफ़ा,
30. हज़रत ज़ैद बिन हिलाल,
31. हज़रत सईद बिन ज़ैद,
32. हज़रत सईद बिन कुन्दिया,
33. हज़रत सलमान फ़ारसी,
34. हज़रत संदर,
35. हज़रत शमऊन बिन ज़ैद क़ज़ी,
36. हज़रत ज़मीरा बिन अबू ज़मीरा,
37. हज़रत अब्दुल्लाह बिन असलम,
38. हज़रत ग़ैलान,
39. हज़रत फ़ुज़ाला,
40. हज़रत नज़ीर,
41. हज़रत करीब,
42. हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान
43. हज़रत मकहूल,
44. हज़रत नाफ़े अबू साएब,
45. हज़रत मनिया,

46. हज़रत नहीक बिन असवद,
47. हज़रत नाफ़े बिन हारिस या नफ़ी बिन मसरूह या मसरूह बिन कलाह,
48. हज़रत हरमुज़ अबू कैसान नाम कैसान या महरान या तहमान या ज़कवान,
49. हज़रत मरदान,
50. हज़रत यसार,
51. हज़रत अबू वासला राशिद,
52. हज़रत अबू बशीर,
53. हज़रत अबू सफ़िया,
44. हज़रत अबू क़बीला,
55. हज़रत अबू लुबाबा,
56. हज़रत अबू लक़ीत,
57. अहज़रत अबू असीर,
58. हज़रत ज़कवान।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/869 से 900)

सवालः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सरारी यानी बांदियां कितनी थीं?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सरारी यानी बांदियों की तफ़्सील यह हैः

1. हज़रत मारिया बिन्ते शमऊन क़िब्तिया रज़ियल्लाहु अन्हा,
2. रेहाना बिन्ते ज़ैद बिन्ते अम्र। बाज़ कहते हैं कि यह शमऊन की बेटी हैं। यह बनी नज़ीर की बांदियों में से हैं। एक क़ौल के मुताबिक़ बनी क़रीज़ा से।
3. जमीला, जो किसी सबाया में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हासिल हुई थीं।
4. वह बांदी जिसे हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा ने पेश किया था।
5. उम्मे राफ़ेअ ज़ूबा अबि राफ़ेअ,
6. रिज़वी,
7. उमैमा,
8. दरीहा,
9. साएवा,
10. उम्मे ज़मीरा।

(मदारिजुन्नबुव्वत /840, 2/900)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जंग के हथियार मवेशी और घरेलू समानों के बारे में सवाल और जवाब

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कुल कितनी तलवारें थीं?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दस तलवारें बयान की गयी हैं। और हमें यह मालूम नहीं कि ये दस तलवारें एक ही वक़्त में जमा थीं या मुतादिद अवक़ात में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस्ते मुबारक में रहीं जिनकी तादाद उम्र भर में दस तक पहुँची है। उनमें से बाज़ के नाम ये हैं:

1. ज़ुलफ़क़ार, 2. मासूर,
3. अज़ब, 4. मख़ज़म,
5. रसूब, 6. क़लई,
7. क़ज़ब, बाज़ अहले सैर ख़्याल करते हैं कि क़ज़ब और ज़ुलफ़क़ार दोनों एक ही हैं। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/1026 से 1028)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मशहूर तलवार ज़ुलफ़क़ार का नाम ज़ुलफ़क़ार क्यों रखा गया?

जवाबः क्योंकि इस तलवार के दर्मियान में फ़क़ार ज़हर (फ़क़ार के मानें रीढ़ की हड्डी की गुरियाँ) यानी मुहर हाय पुश्त थे। इसलिए उसका नाम ज़ुलफ़क़ार हुआ। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/1027)

सवालः ज़ुलफ़क़ार नामी तलवार पहले किसकी थी फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ब्ज़े में कैसे आई?

जवाबः यह तलवार मंबा बिन अल हज्जाज सहमी की थी और बदर के दिन उसका बेटा आस बिन मंबा लिए हुए था। हज़रत अली

रज़ियल्लाहु अन्हु ने आस बिन मंबा को क़त्ल किया तो तलवार को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में लाए। हुज़ूर ने उसे अपने लिए पसंद फ़रमाया। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/1027)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी ज़ुलफ़क़ार नामी तलवार को किसको किस मौक़े पर अता फ़रमाया था?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस तलवार को हज़रत अली को ग़ज़वा अहज़ाब में अता फ़रमा दिया था।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/1026)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मिल्कियत में आने वाली सबसे पहली तलवार का नाम क्या है?

जवाबः वह मासूर नामी तलवार है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मिल्कियत में सबसे पहले आई। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/1026)

सवालः उस तलवार का क्या नाम है जिसके साथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिजरत की थी?

जवाबः वह मासूर नामी तलवार है जिसके बारे में अहले सैर कहते हैं कि इसके साथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिजरत की।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/1026)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कुल कितनी ज़िरहें थीं और उनके नाम क्या हैं?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास छः ज़िरहें थीं। उनके नाम और तफ़्सील हस्बे ज़ैल हैः

1. एक ज़िरह सुअदिया थी। इसे "सअदिया" भी कहते हैं।
2. दूसरी ज़िरह "फ़ुज़्ज़ा" नाम की थी। ये दोनों ज़िरहें क़ैनक़ा के यहूदियों के अस्लहे से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहुँची थी।
3. तीसरी ज़िरह "ज़ातुल फ़ुज़ूल" नाम की थी। यह नाम इसकी लंबाई और चौड़ाई की बिना पर था। इसे सअद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्ललाहु अलैहि वसल्लम के मदीना तैय्यबा रौनक़ अफ़रोज़ी के वक़्त बतौर हदिया पेश किया था।

4. चौथी ज़िरह थी "ज़ातुल हवाशी व तरा" नाम की। यह नाम इसलिए था कि थी वह इकलौती थी।
5. पांचवीं ज़िरह का नाम "हरीफ़" था। इसके नाम की वजह मालूम न हुई।
6. छठी ज़िरह थी "रूहा" नाम की। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/1028)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उस ज़िरह का नाम क्या है जो हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की थी?

जवाबः वह "सअदिया" नामी ज़िरह है कि जो हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की थी जिसे उन्होंने जालूत का क़त्ल करते वक़्त पहना था। रौज़ातुल अहवाब में "रूहा" नामी ज़िरह को ज़िरह दाऊदी कहा गया है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/1028)

सवालः उस ज़िरह का क्या नाम है जिसको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ओहद के दिन पहना था?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोज़े ओहद "ज़ातुल फ़ज़ूल" नामी ज़िरह को और उसके ऊपर "फ़ुज़्ज़ा" नामी ज़िरह को पहना था। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/1028)

सवालः जंगे हुनैन और ख़ैबर के मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किन किन ज़िरहों को पहना था?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोज़े हुनैन व ख़ैबर में "साअदिया" और "ज़ातुल फ़ज़ूल" नामी दोनों ज़िरहों को पहना था। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/1028)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उस ज़िरह का क्या नाम है जो अरसे दराज़ तक हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ब्ज़े में महफ़ूज़ रही?

जवाबः वह "ज़ातुल फ़ज़ूल" नामी ज़िरह थी कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने तबर्रुक व यमन के तौर पर महफ़ूज़ कर रखा था जिसे जंगों में पहनते थे। अहले सियर कहते हैं कि जंगे जमल में आप इस ज़िरह को पहने हुए थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/1028)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उस ज़िरह का क्या नाम है जो आपके विसाल के वक़्त एक यहूदी के पास गिरवी थी?

जवाबः वह ज़िरह "ज़ातुल फ़ज़ूल" है जिसको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू शहम यहूदी के पास तीस साअ जौ में गिरवी रखा था और आपके विसाल के वक़्त भी यह ज़िरह गिरवी थी।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/1028)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कितने मग़फ़र थे?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दो मग़फ़र थे। एक को "मोशह" और दूसरे को "ज़ुलबूअ" कहते थे। मग़फ़र बुनी हुई ज़िरह को कहते हैं जो टोपी के नीचे पहनी जाती है। या वह चादर जिससे मुसल्लह आदमी अपने आपको ढांपता है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/1029)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कितनी ढालें थीं और उनके नाम क्या थे?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास तीन ढालें थीं। एक को "अज़लक़" दूसरी को "फ़तक़" और तीसरे को "दोफ़र" कहते हैं। मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक और ढाल भी थी जिसमें कवश या उक़ाब की तस्वीर थी यह तोहफ़े के तौर पर भेजी गई थी। आपने उसकी तस्वीर को मकरूह जाना और उस पर दस्ते मुबारक रखा तो उसकी तस्वीर मादूम हो गई। एक रिवायत में आया है कि एक रोज़ सुबह को उठे तो हक़ तआला ने उस ढाल की तस्वीर को मिटा दिया था। साहब रौज़तुल अहबाब फ़रमाते हैं कि मालूम नहीं कि यह ढाल उन तीनों में से एक थी या जिनके नाम बयान किए गए हैं या कोई और थी। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/1029)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास नेज़े कितने थे?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चार नेज़े थे। तीन बनी कैंक़ाअ के यहूदियों के अस्लहे से पसंद फ़रमाए थे। एक और था। इन

नेज़ों में से एक का नाम "मसवी" और एक का नाम "मसनी" था। बाक़ी दो के नाम नहीं रखे गए थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/1029)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास हर्बे कितने थे?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कई हर्बे थे। एक को "नबआ" कहते थे। नबअ एक पेड़ है जिससे कमान बनाई जाती है और उसकी टहनियों से तीर बनाए जाते हैं। नबअ उसकी लकड़ी है और नबअः उसका हिस्सा। दूसरे हर्बे को "बैज़ा" कहते थे। वह सफ़ेद लकड़ी का था। तीसरे हर्बे को "अंतर क़ुर्रा" कहते थे जो कि तीर जैसा था। उसे ख़ुद्दाम सहाबा किराम हमराह रखते थे ताकि उससे सुतरा बनाएं या इस्तंजे के लिए ढीले खोदें। ईद के दिनों में उसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वल्लम के आगे गाड़ते थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/1030)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कमाने कितनी थीं?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कमानें छः थीं जो बनी क़ैंक़ाअ के अस्लहे से मिली थीं। एक को "रूहा" दूसरे को "बैज़ा" और दो कमानें दरख़्त शूत की थीं। और एक नबअ पेड़ की जिसे "सफ़रा", "क़तूम" और "हंजकशत" कहते थे उसे अबू क़तादा ने लिया था। इसे "मुतसल्ला" भी कहते थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/1030)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ेमे का नाम क्या था?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक ख़ेमा था जिसे "कन्न" कहते थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/1030)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के झंडे और अलम कितने थे और उनका रंग कैसा था और नाम क्या था?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कई झंडे और अलम थे। एक अलम स्याह था जिसका "उक़ाब" नाम था। दूसरा अलम सफ़ेद था और कभी अपनी अज़्वाज मुतहरात की चादरों का भी अलम मुतरत्तब फ़रमाते थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/1031)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कुल कितने

घोड़े थे?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस घोड़े बताए गए हैं और उनके नाम भी लिखे हुए हैं:

अव्वल "सकब"। इसका नाम सकब इस बिना पर था कि वह अपने रफ़्तार में पानी के बहाव की तरह रवां दवां था। सकब ऐसे घोड़े को कहते हैं जो रफ़्तार में उम्दा, तेज़ और सरिउस्सैर हो। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस घोड़े को दस औक़िआ में ख़रीदा था। इस घोड़े का नाम उसके पहले मालिक के पास "ज़रमीन" था।

इब्नुल असीर ने कहा कि यह घोड़ा अदहम यानी स्याह रंग का था।

दूसरा घोड़ा "मज़तजर" था। इस घोड़े का यह नाम रखना इस वजह से था कि इसकी हिनहिनाहट अच्छी थी। इसको एक देहाती असवद बिन हारिस से ख़रीदा था।

तीसरा घोड़ा "लज़ाज़" है जिस मक़ूक़स शाह स्कंदरिया ने हदिए में भेजा था। इस घोड़े का नाम लज़ाज़ इस बिना पर है कि वह घोड़ा मोहकम और तेज़ रफ़्तार था।

चौथा घोड़ा "लहीफ़" नामी था। लजीफ़ और लख़ीफ़ भी मरवी है मगर अव्वल मशहूर व मारूफ़ है। इसे रबिया बिन अबिल बरा ने हदिया किया था। उस घोड़े का यह नाम रखना इसके मोटापे और बड़ा होने की वजह से है।

पाँचवां घोड़ा "विर्द" नाम का था। उसको हज़रत तमीम दारी, हदिए के तौर पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में लाए थे। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस घोड़े को हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को अता फ़रमा दिया।

छठा घोड़ा "ज़रीस" था। इस घोड़े को ज़रीस इसकी मज़बूती की बिना पर कहते हैं।

सातवां घोड़ा "ज़रब" है। इसे फ़रवा बिन अम्र हज़ामी ने हदिए के तौर पर भेजा था। उसको सलाबती व शिद्दत की वजह ज़रब कहते हैं।

आठवां घोड़ा था, "मलावह"। यह घोड़ा पहले हज़रत अबू बरदा रज़ियल्लाहु अन्हु की मिल्कियत में था।

नवां घोड़ा "मसजः" था। इसे एक देहाती से दस ऊँट के बदले ख़रीदा था।

दसवां घोड़ा "वहर" नाम का था। इस घोड़े को उन ताजिरों से ख़रीदा था जो यमन से आए थे। उस घोड़े पर तीन मर्तबा मुसाबिक़त फ़रमाई और तीनों मर्तबा यह साबिक़ यानी आगे रहा। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना दस्ते मुबारक उसकी पेशानी पर फेरकर फ़रमायाः तू दरिया है मैंने तेरा नाम "वहर" रखा। यह घोड़ा सफ़ेद था। इब्ने असीर ने कहा वह कमियत था।

ये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस घोड़े हैं जो कि अक्सर कुतुब सैर में लिखे हैं। बाज़ ने और नाम भी बयान किए हैं जैसे उबलक़, ज़ुल अक़ाल, ज़ुल लममा, मुरतजल, तरादेह, सरहान, यअसूब, नहीब, अदहम, सजा, सजल, तरफ़ और मंदूब वग़ैरह।(मदारिजुन्नबुव्वत 2/1031)

सवालः उस घोड़े का नाम क्या है जो सबसे पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मिल्कियत में आया?

जवाबः "सकब" नामी घोड़ा पहला घोड़ा है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मिल्कियत में आया था। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/1031)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ख़च्चर कितने थे?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़च्चर बहुत से थे। एक नाम "दलदल" था। उसे मक़ूक़स शाह स्कंदरिया ने हदिए में भेजा था। यह पहला ख़च्चर था जो अहदे इस्लाम सवारी में लाए। दूसरा ख़च्चर जिसका नाम "फ़ुज़्ज़ा" था। इसे फ़रवा बिन अम्र हज़ामी ने हदिए में भेजा था। बाज़ कहते हैं कि दलदल और फ़ुज़्ज़ा एक ही था। तीसरा ख़च्चर जिसे इब्ने अला साहब ऐला ने भेजा था और उस ख़च्चर को "ऐलिया" कहते थे। एक ख़च्चर दौमतुल जिंदल से आया था और एक ख़च्चर नजाशी शाह हब्शा के पास से भी आया था।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/1037)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कितने गधे थे?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तीन गधे थे। एक नाम

"अफ़ीर" जो मक़ूक़स शाह स्कंदरिया ने भेजा था। दूसरे का नाम "याफ़ूर" था जो फ़रवा जुदामी ने भेजा था। और तीसरा गधा जिसे हज़रत सअद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु ने पेश किया था। एक रिवायत में यह भी है कि याफ़ूर नामी गधा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़तेह ख़ैबर में मिला था। उसने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कलाम किया। आपने उसका नाम पूछा तो उसने कहा, मेरा नाम यज़ीद बिन शहाब है। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, तेरा नाम याफ़ूर है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/1040)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस गधे का नाम क्या है जिसकी जद की नस्ल के तमाम गधों पर सिर्फ़ अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम सवार हुए?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़तेह ख़ैबर के मौक़े पर एक गधा मिला। आपने उसका नाम पूछा तो उसने अपना नाम "यज़ीद बिन शहाब" बताया और अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला ने मेरे जद की नस्ल से साठ गधे पैदा किए हैं। उन पर सिवाए अंबिया किराम के कोई सवार न हुआ और मैं उम्मीद रखता हूं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझ पर सवारी फ़रमाएंगे। मेरे जद की नस्ल से सिवाए मेरे कोई गधा बाक़ी नहीं रहा है। और अंबिया में सिवाए आपके कोई बाक़ी नहीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी सवारी के लिए उसे मुन्तख़ब फ़रमा लिया। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/1040, तफ़्सीर अलम नशरह 186)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस गधे का क्या नाम है जो सहाबा किराम को बुलाकर लाने का काम करता था?

जवाबः यह याफ़ूर नामी गधा था जिसका क़िस्सा गुज़रा। जब किसी को बुलाना होता तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसे भेजते। वह उस सहाबी के मकान पर जाता। और अपने सर से दरवाज़े को कूटता। जब मालिक मकान बाहर आता तो याफ़ूर उससे इशारा करता जिससे वह शख़्स जान लेता कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे बुलाने के लिए भेजा है। फिर वह हाज़िर ख़िदमते अक़्दस होता।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/1041, तफ़्सीर अलम नशरह 187)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कुल कितने ऊँट थे और उनके नाम क्या हैं?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ऊँट सवारी के पंद्रह से ज़्यादा थे। उनमें से बाज़ के नाम ये हैं:

एक ऊँट क़सवा नामी था। एक का नाम "अज़्बा" और एक का नाम "जदआ" था। बाज़ अस्हाबे सैर कहते हैं कि ये दोनों नाम उसी नाक़ा के थे जिसको क़सवा कहा जाता है। इन नामों में से "सरमा" "सलमा" और "महज़रमा" भी आया है। इन नामों के बारे में भी अहले सैर कहते हैं कि ये क़सवा के ही नाम थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/1042)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास दूध देने वाली ऊँटनियाँ कितनी थीं?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास दूध देने वाली ऊँटनियाँ कुल पैंतालिस थी। जिनको हज़रत सअद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश किया था।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/1043)

28. सवालः उस ऊँटनी का क्या नाम है जिस पर सवार होकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिजरत फ़रमाई?

जवाबः उस ऊँटनी का नाम बक़ौल सही क़सवा था। और एक क़ौल के मुताबिक़ "जदआ" था। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/96)

सवालः उस ऊँटनी का क्या नाम है जिसकी सवारी के वक़्त "वही" नाज़िल हुई थी?

जवाबः क़सवा नामी ऊँटनी की सवारी के वक़्त "वही" नाज़िल होती थी। अहले सैर कहते हैं कि इस ऊँटनी के सिवा कोई और ऊँटनी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की "वही" के नुज़ूल का बोझ बर्दाश्त न कर सकती थी। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/1042)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बकरियाँ कितनी थीं?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास सौ बकरियाँ थीं। अगर सौ से ज़्यादा बकरियाँ हो जातीं तो ज़िब्ह कर लेते थे।

(तफ़्सीर अलम नशरह् 158)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास दूध देने वाली बकरियाँ कितनी थीं?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास दूध पिलाने वाली बकरियाँ सात थीं जिनको हज़रत ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा चराती थीं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/1045)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अमामे कितने थे और उनका रंग कैसा था और उनके नाम क्या थे?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक अमामा था जिसका नाम "सहाब" रखा हुआ था। एक और अमामा था जिसका रंग स्याह था।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/1045)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अमामे की लंबाई कितनी थी?

जवाबः मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अमामा शरीफ़ चौदह गज़ शरई से ज़्यादा न होता और कभी सात गज़ शरई होता।

(मदारिजुन्नबुव्वत 1/787)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की टोपी मुबारक का रंग कैसा था?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की टोपी मुबारक का रंग सफ़ेद था।

(मदारिजुन्नबुव्वत 1/787)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चादरें कितनी और किस रंग की थीं?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास दो सब्ज़ रंग की चादरें थीं। एक और चादर शरीफ़ थी जो "बरदीमानी" के नाम से मशहूर है क्योंकि उसमें सुर्ख़ धारियाँ थीं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 1/793)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चादर मुबारक की लंबाई और चौड़ाई कितनी थी?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चादर मुबारक की लंबाई चार गज़ शरई और चौड़ाई दो गज शरई और एक बालिश्त था।

(मदारिजुन्नबुव्वत 1/793)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जुब्बे कितने थे?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास तीन जुब्बे थे। एक जुब्बा सब्ज़ सुंदुस का था। दूसरा जुब्बा अतलस का था और तीसरा जुब्बा मालूम न हुआ कि किस कपड़े का था। (मदारिजुन्नबुव्वत 3/1047)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़मीज़ मुबारक किस क़िस्म के कपड़े की थी और उसका रंग कैसा था?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़मीज़ मुबारक सूती सफ़ेद रंग की थी। उसकी आस्तीन पहुँचे (कलाई) तक और दामन निस्फ़ पिंडली तक होता था। आपकी क़मीज़ मुबारक में तिकम्मे यानी घुंडियाँ लगी होती थीं और सीना मुबारक के मुक़ाम पर जेब भी थी।

(मदारिजुन्नबुव्वत 1/789, 2/84)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पाजामा कितने में ख़रीदा था?

जवाबः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ बाज़ार गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक सरावील (पाएजामा) चार दिरहम में ख़रीदा। पाएजामा ख़रीदना मुत्तफ़िक़ अलैहि है लेकिन आप का उसके पहनने में इख़्तिलाफ़ है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 1/84)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास मोज़े कितने और किस रंग के थें?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास स्याह व सादा दो मोज़े थे जिसको नजाशी शाह हब्शा ने बतौर नज़राना भेजा था। और यह भी मरवी है कि हज़रत दहिया कलबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए दो मोज़े भेजे थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 1/800)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नालैन शरीफ़ैन कैसी थीं?

जवाबः बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नालैन शरीफ़ दो क़बाल की

थीं। "क़वाल" जूती के फ़ीते को कहते हैं और तिर्मिज़ी ने शमाइल में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की है कि दो तस्मे थे जो वरसा के थे।
(मदारिजुन्नबुव्वत 1/800)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पलंग मुबारक कैसा था और उस पर बिस्तर किस तरह के थे?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक पलंग था जिसके पट्टी पाए रशाह की थी। उस पर चमड़े का बिस्तर था जिसमें खजूर के पेड़ के रेशे कूटे हुए भरे थे। एक रिवायत में है कि दो तह की हुई टाट का बिस्तर था। और एक टाट का तकिया खजूर की छाल से भरा था।
(मदारिजुन्नबुव्वत 1/801, 1/1047)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास और दीगर घरेलू सामान क्या क्या थे?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घरेलू सामान क्या क्या थे, उसकी तफ़्सील हस्बे ज़ैल है:

चार प्याले थे, एक का नाम "रय्यान", एक का नाम "मुग़ीबस", एक का नाम "मुज़ीब" और एक प्याला "ईदान" का था जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिरहाने रखा जाता था। आप उसमें बोल शरीफ़ करते थे। एक और प्याला ज़जाज (शीशे) का था जिसे किसी बादशाह ने हदिए में भेजा था। दो तग़ारी थीं, एक पत्थर की और एक पीतल की। एक चमड़े का बर्तन था जिससे ग़ुस्ल फ़रमाते थे, उसे सादरा कहते हैं। एक मदहन था जिसमें तेल रखा जाता था। एक रबअ असकन्दरिया था यानि आईना दान जिसमें आईना रखा जाता था। एक कंघी थी जो आज की थी। एक सुरमेदानी थी। बाज़ अहले सैर ने उस्तरे और चक़माक़ का भी ज़िक्र किया है। एक तबला था जिसमें कंघी, मिस्वाक, क़ैंची, सुरमादानी और आईना रखा जाता था। एक क़सआ (कासा बुज़ुर्ग) था उसका नाम "ग़ज़्ज़ा" था। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/1045 ता 1047)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आइने मुबारक का नाम क्या था?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने आईने का नाम

"मुदल्लाह" तदलिया से रखा। तदलिया के माने हैं इश्क़ में अक़्ल का जाते रहना और बेख़ुद हो जाना कि ख़ुद अपने आप पर आशिक़ हो जाते थे या दूसरे लोग आईने में आपका जलवा और जमाल को देखकर बेख़ुद और फ़रेफ़्ता हो जाते थे।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/1046)

नोटः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ये तमाम चीज़ें यानी मलबूसात, मरकूबात, आलाते हर्ब और दीगर जानवरों की तादाद ज़माने के लिहाज़ से है जिनमें से बाज़ में तो हमेशगी है और बाज़ ख़ास ख़ास मौक़े और ज़माने के लिहाज़ से हैं।

○ ○ ○

ग़ज़वात के बारे में सवाल और जवाब

सवालः कुल कितने ग़ज़वात और सराया पेश आए?

जवाबः उन ग़जवात की तादाद जिनमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुद अपनी ज़ात से शरीक होकर तशरीफ़ लाए सत्ताईस है। और साहब रौज़तुल अहबाब के क़ौल के मुताबिक़ इक्कीस। एक क़ौल के मुताबिक़ चौबीस और बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु से उन्नीस ग़ज़वात मरवी हैं। और सराया की तादाद सैंतालिस है। बाज़ छप्पन कहते हैं। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/15)

सवालः वे कितने और कौन कौन से ग़ज़वात हैं कि जिनमें क़िताल वाक़ेअ हुआ?

जवाबः नौ ग़ज़वात ऐसे हैं कि जिनमें क़िताल वाक़ेअ हुआः

1. ग़ज़ावा बदर,
2. ग़ज़वा ओहद,
3. ग़जवा अहज़ाब,
4. ग़ज़वा बनी क़रीज़ा,
5. ग़ज़वा बून मुस्तलिक़,
6. ग़ज़वा ख़ैबर,
7. फ़तेह मक्का,
8. ग़ज़वा हुनैन।
9. ग़ज़वा ताएफ़। (मदारिजुन्नबुव्वत 15)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सबसे पहले कौन सा ग़ज़वा किया?

जवाबः सही बुख़ारी में आया है कि हज़रत इब्ने इस्हाक़ से मर्वी है कि सबसे पहला ग़ज़वा जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किया था अबवा का था। उसके बाद बवात और उसके बाद अशीरा।

(मदारिजुन्नबुव्वत 15)

सवालः ग़ज़वा बदर के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किस तारीख़ को मदीना तैय्यबा से रवाना हुए थे और जंग किस तारीख़ को हुई?

जवाबः ग़ज़वा बदर के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हिजरत के उन्नीसवें महीने में बारह रमज़ानुल मुबारक को रवाना हुए थे। बाज़ ने आठ रमज़ान कहा है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/140)

बाज़ ने छः और बाज़ ने तीन रमज़ान कहा है।

(मअरिजुन्नबुव्वत 31/4)

और क़िताल सत्रह रमज़ानुल मुबारक बरोज़ जुमा वाक़ेअ हुआ। बाज़ ने बरोज़ इतवार कहा है।

(मअरिजुन्नबुव्वत 2/140)

सवालः ग़ज़वाए बदर के मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीना में किसको अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया था?

जवाबः इस ग़जवे के लिए निकलते वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू लुबाबा रज़ियल्लाहु अन्हु को मदीना तैय्यबा में ख़लीफ़ा बनाया था।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/140)

सवालः ग़ज़वाए बदर को "ग़ज़वाए बदर" क्यों कहते हैं?

जवाबः बदर एक बस्ती का नाम है जो बदर में मुख़ल्लद बिन नज़र से मंसूब व मशहूर है। उसने इस जगह पड़ाव किया था। या यह बस्ती बदर बिना हारिस से मंसूब है जिसने यहाँ कुँआ खोदा था। और बाज़ कहते हैं कि वहाँ एक बूढ़ा आदमी मुद्दतों से रहता था जिसका नाम बदर था। इसी बिना पर इस बस्ती को इस नाम से मंसूब कर दिया था। या इसका नाम इस वजह से कि उस कुँए का दायरा वसीअ था। उसका पानी इतना साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ था कि उसमें बदर कामिल नज़र आता था। क्योंकि इसी जगह पर यह वाक़िआ पेश आया था इसलिए इसको ग़ज़वा बदर कहते हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/139)

सवालः ग़ज़वाए बदर में शरीक मुसलमानों की तादाद कितनी थी और मुश्रिकों की तादाद कितनी?

जवाबः इस ग़ज़वे में मुसलमानों की तादाद तीन सौ तेरह थी जिनमें से सत्तर मुहाजिरीन और दो छब्बीस अंसार थे। मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सिर्फ़ तीन सौ पाँच अस्हाब थे बक़िया आठ अस्हाब वे थे जो किसी उज़्र की वजह से हाज़िर न हो सके। मगर माले ग़नीमत में से उनको भी हिस्सा अता फ़रमाया गया था। अहले सैर उनको

भी अहले वदर में शुमार किया करते हैं। इनमें तीन मुहाजिर और तीन अंसार थे।

मुहाजिरीन में से एक हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म से अपनी बीवी हज़रत रुक़ैय्या बिन्ते रसूलल्लाह की बीमारी और तीमारदारी के लिए रुके थे। दूसरे तल्हा बिन उवैदुल्लाह और तीसरे हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा जो मुश्रिकीन के क़ाफ़िले की जुस्तजू में गए हुए थे।

(मदारिजुन्नवुव्वत 2/140)

और उन पाँच अंसार के नाम यह हैं:

1. हज़रत अबू लुबावा,
2. हज़रत आसिम विन अदी,
3. हज़रत हारिस विन हातिव,
4. हज़रत हारिस विन अलक़ीमा,
5. हज़रत हवाएव विन ख़वीर रज़ियल्लाहु अन्हुम।

(मअरिजुन्नवुव्वत 314)

एक रिवायत में मुसलमानों की तादाद तीन सौ पंद्रह है और एक रिवायत में तीन सौ सत्रह। (मअरिजुन्नवुव्वत 4/31)

एक रिवायत में तीन सौ चौदह भी है जिनमें तिरास्सी मुहाजिरीन और दो सौ इकत्तिस अंसार थे। (सीरत इब्ने हिशाम 2/796, व 2/815)

और मुश्रिकों की तादाद एक हज़ार या नौ सौ या पाँच सौ पचास जंगी मर्दों की थी और एक क़ौल के मुताविक़ एक हज़ार से कम और नौ से ज़्यादा थी। (मदारिजुन्नवुव्वत 2/141)

सवालः ग़ज़वए बदर में दोनों तरफ़ के लश्करों में से किसके पास कितने साज़ व सामान थे?

जवाबः इस ग़ज़वे में मुसलमानों के पास तीन घोड़े, सत्तर ऊँट, छः ज़िरहें और आठ तलवारें थीं। (मदारिजुन्नवुव्वत 2/140)

एक रिवायत के मुताविक़ दो सौ अस्सी ऊँट, दो घोड़े, एक हज़रत मिक्दार बिन अम्र और एक हज़रत मुरसिद इब्ने अबि मुरसिद रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पास। छः ज़िरहें और सात तलवारें थीं।

(मअरिजुन्नवुव्वत 33/4)

एक रिवायत में है कि इन दो घोड़ों में से एक हज़रत ज़ुबैर और एक हज़रत मिक़्दार रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पास था।

(इब्ने कसीर 30/सूरः आदियात)

और सीरत इब्ने हिशाम में है कि सात घोड़े थे। काफ़िरों के पास सौ घोड़े सात सौ या कुछ ज़्यादा ऊँट और मुकम्मल साज़ व सामान थे। उनके सवार भी ज़िरह पोश थे और प्यादा भी ज़िरह पोश।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/141)

सवालः ग़ज़्वए बदर में दोनों तरफ़ के लश्करों में कितने झंडे थे और कौन कौन उठाए हुए थे?

जवाबः मुसलमानों के पास तीन झंडे थे। एक मुहाजिरीन का और दो अंसार के। मुहाजिरीन के अलमबरदार थे हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु और अंसार के अलमबरदार एक हज़रत ख़ब्बाब मंज़र थे और एक साअद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा।

मुश्रिकीन के पास भी तीन ही झंडे थे। एक तल्हा बिन तल्हा के पास एक अबू उज़ैर अम्र के पास और नज़र बिन हारिस के पास।

(मअरिजुन्नबुव्वत 41/4)

सवालः ग़ज़्वए बदर में शैतान किसकी शक्ल में आकर लश्करे कुफ़्फ़ार की हौसला अफ़ज़ाई कर रहा था?

जवाबः इस ग़ज़्वे में शैतान सुराक़ा बिन मालिक की शक्ल में आकर काफ़िरों के लश्कर की हौसला अफ़ज़ाई कर रहा था।

(मअरिजुन्नबुव्वत 4/35, नज़्हतुल मजालिस 8/97)

सवालः ग़ज़्वए बदर में लश्करे कुफ़्फ़ार की जानिब से कौन कौन मैदाने जंग में आए और मुसलमानों की तरफ़ से किस किस ने उनका मुक़ाबला किया?

जवाबः काफ़िरों के लश्कर में से सबसे पहले उत्बा बिन रबिया अपने भाई शैबा और बेटे वलीद के साथ मैदाने जंग में आए और अपना मुक़ाबिल तलब किया। मुसलमानों के लश्कर में से तीन आदमी हज़रत औफ़, हज़रत मुआज़ पिसराने हारिस और हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हुम मुक़ाबले पर आए। काफ़िरों ने पूछाः तुम कौन हो?

उन्होंने जवाब दियाः हम अंसार हैं। उन काफ़िरों ने कहाः तुम्हारे साथ हमारा कोई सरोकार नहीं। हम अपने चचाओं के बेटों को बुलाते हैं। और उनमें से एक ने आवाज़ देकर कहाः ऐ मुहम्मद! हमारी क़ौम में से हमारे बिरादर भेजो। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबैद बिन हारिस, हज़रत हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हुम से फ़रमायाः जाओ उनके साथ मुक़ाबला करो। फिर ये तीनों मैदान में मुक़ाबले पर आए। हज़रत उबैद उत्बा के मुक़ाबिल हुए, हज़रत हम्ज़ा शैबा के मुक़ाबिल आए। एक रिवायत में इसके बरअक्स आया है। और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने वलीद से मुक़ाबला किया। हज़रत अली ने वलीद को क़त्ल कर दिया। हज़रत हम्ज़ा ने अपने मुक़ाबिल को हलाक किया। लेकिन हज़रत उबैद और उनके मुक़ाबिल के दर्मियान हथियार चले और हज़रत उबैद के ज़ानों पर एक ज़ख़्म पड़ा जिससे वह ज़ख़्मी हो गए। इसके बाद हज़रत अली और हज़रत हम्ज़ा ने हज़रत उबैद की मदद के लिए उनके मुक़ाबिल पहुँच गए और क़त्ल करने में हज़रत उबैद की मदद की। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/145)

सवालः गज़वए बदर में मुसलमानों की मदद के लिए कितने फ़रिश्ते आए थे और वह किस किस लिबास में थे?

जवाबः इस ग़ज़वे में मुसलमानों की मदद के लिए अव्वल हज़ार फ़रिश्ते आए फिर तीन हज़ार फिर पाँच हज़ार।(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 9/15)

फ़रिश्ते इंसानी शक्ल व सूरत में अलबक़ घोड़ों पर सवार थे। उस वक़्त उनके जिस्मों पर सफ़ेद लिबास और सरों पर सफ़ेद अमामे थे। बाज़ रिवायतों में आया है कि स्याह अमामे थे। बाज़ रिवायतों में सफ़ेद सुर्ख़, ज़र्द भी आया है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/160)

सवालः गज़वए बदर में कितने मुजाहिदीन ने शहादत पाई, कुफ़्फ़ार में से कितने क़त्ल हुए और कितने क़ैद?

जवाबः इस ग़ज़वे में क़त्ल हुए काफ़िरों की तादाद सत्तर थी और इतने ही क़ैद हुए थे। मुसलमानों में से चौदह हज़रात ने जामे शहादत नोश किया था जिनमें से छः मुहाजिरीन में से और आठ अंसार में से।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/165)

उनके नाम ये हैं:

मुहाजिरीन में से:

1. हज़रत उबैद बिन हारिस,
2. हज़रत उमैर बिन अबि वक़्क़ास,
3. हज़रत ज़ूश् शमालीन बिन अब्दे अम्र,
4. हज़रत आक़िल बिन बकीर,
5. हज़रत महजा मवाली उमर फ़ारूक़,
6. हज़रत सुफ़ियान बिन बैज़ा रज़ियल्लाहु अन्हुम।

और अंसार में से:

1. हज़रत सअद बिन ख़ैसमा,
2. हज़रत मुबश्शिर बिन अब्दुल मंज़र,
3. हज़रत यज़ीद बिन हारिस जो अबू फ़सहम कहलाते थे,
4. हज़रत उमैर बिन हम्माल,
5. हज़रत राफ़ेअ बिन मुअल्ला,
6. हज़रत हारसा बिन सुराक़ा,
7. हज़रत औफ़ बिन रिफ़ाअ,
8. हज़रत मउज़ बिन हारिस बिन रिफ़ाआ रज़ियल्लाहु अन्हुम।

(सीरत इब्ने हिशाम 1/816)

सवाल: ग़ज़वए बदर में कुफ़्फ़ार में से सबसे पहले कौन मारा गया और सबसे बाद कौन?

जवाब: असवद बिन अब्दुल असद है जो मैदाने बदर में सबसे पहले मारा गया। (मोहसिने इंसानियत 705)

और उक़्बा बिन अबि मुईत है जो मैदाने बदर में सब के बाद मारा गया। (इब्ने कसीर 9/16)

सवाल: हुज़ूर सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम ने किस तारीख़ को ग़ज़वए बदर से फ़राग़त पाई और मदीना तैय्यबा फ़तेह की बशारत सुनाने किसको रवाना फ़रमाया?

जवाब: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस कज़िए से आख़िर रमज़ान मुबारक और शव्वाल के पहले रोज़ फ़ारिग़ हो गए तो हज़रत

अब्दुल्लाह बिन रवाहा और हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ियल्लाहु अन्हुमा को मदीना मुनव्वरा रवाना फ़रमाया ताकि अहले मदीना को फ़तेह की बशारत सुनाएं। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/172, सीरत इब्ने हिशाम 1/740)

सवालः ग़ज़वए ओहद किस माह और सन में वाक़ेअ हुआ था?

जवाबः ग़ज़वा ओहद हिजरत के तीसरे साल माह शव्वाल की ग्यारह रातें या सात रातें गुज़रने के बाद वाक़ेअ हुआ। बाज़ हज़रात निस्फ़ शव्वाल कहते हैं और मालिक से मन्क़ूल है कि बदर के एक साल बाद वाक़ेअ हुआ। उन्हीं से यह भी मन्क़ूल है कि बदर के एक साल बाद वाक़ेअ हुआ। उन्हीं से यह भी मन्क़ूल है कि हिजरत के इकत्तिसवें महीने के शुरू में वाक़ेअ हुआ। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/191)

सवालः ग़ज़वए ओहद की वजह तस्मिया क्या है और यह जगह मदीना मुनव्वरा से कितने मुसाफ़त पर वाक़ेअ है?

जवाबः ओहद मदीना मुनव्वरा का एक मशहूर पहाड़ है। यह "तवह्हुद" से बना है। इस बिना पर यह दूसरे पहाड़ों से अलैहिदा अकेला और मुन्क़ता है। यह पहाड़ का एक टुकड़ा है जो मदीना मुनव्वरा के शुमाल की तरफ़ दो मील कुछ या इससे कुछ ज़्यादा मुसाफ़त पर वाक़ेअ है। कोई पहाड़ इससे मिला हुआ नहीं है। इसी बिना पर इसका नाम ओहद है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/192, तन 4/127)

सवालः ग़ज़वए ओहद के मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीना मुनव्वरा में किसको अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया था?

जवाबः इस ग़ज़वे के मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अब्दुल्लाह बिन मक्तूम रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया था। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/198, तन 13)

सवालः ग़ज़वए ओहद में दोनों तरफ़ के लश्करों की तादाद कितनी थी और किसके पास कितने साज़ व सामान थे?

जवाबः इस ग़ज़वे में लश्करे इस्लाम की तादाद एक हज़ार थी। एक रिवायत के मुताबिक़ नौ सौ। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/198)

एक और रिवायत के मुताबिक़ सात सौ की तादाद थी। (तन 4/128, सीरत इब्ने हिशाम 2/46)

और काफ़िरों की तादाद तीन हज़ार जंगी मर्दों की थी जिनमें से सात सौ ज़िरह पोश थे, दो सौ घोड़े, तीन हज़ार ऊँट और पंद्रह सौ औरतों के अलावा थे।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/194)

इस्लामी लश्कर में सौ ज़िरह पोश थे और उनके पास दो ही घोड़े थे एक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास और एक अबू बरदा के पास।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/198, मआरिजुन्नबुव्वत 4/66)

सवालः वह कितने और कौन कौन हज़रात थे कि जिन्हें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कमउम्री की वजह से ग़ज़वा ओहद में शरीक होने से रोक दिया था?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा के बच्चों की एक टोली को देखा तो उनसे उनकी कम उम्री की बिना पर फ़रमाया कि मदीना मुनव्वरा वापस चले जाएं। ये कुल आठ हज़रात थे। इनके नाम इस तरह हैं:

1. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर,
2. ज़ैद बिन साबित,
3. उसामा बिन ज़ैद,
4. हज़रत ज़ैद बिन अरक़म,
5. हज़रत बरा बिन आज़िब,
6. अबू सईद ख़ुदरी,
7. हज़रत समरा बिन जुन्दुब,
8. हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज़

रज़ियल्लाहु अन्हुम।

इनमें से किसी ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! राफ़ेअ अच्छा तीर अंदाज़ है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लश्कर में शामिल रहने की इजाज़त दे दी। फिर समरा बिन जन्दुब ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! राफ़ेअ को तो शामिल होने की इजाज़त मिल गई हालाँकि मैं उनको कुश्ती में पछाड़ सकता हूँ। फ़रमाया, अच्छा तुम कुश्ती करके दिखाओ। जब कुश्ती हुई तो हज़रत समरा ने राफ़ेअ को पछाड़ लिया। इस पर समरा को भी शामिल होने की इजाज़त मिल गई, रज़ियल्लाहु अन्हुमा।

(मदारिजुन्नबुव्वत 67/4)

एक रिवायत के मुताबिक़ इन हज़रात के नाम यूँ हैं:

1. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर,
2. हज़रत ज़ैद बिन अरक़म,
3. हज़रत बरा बिन आज़िब,
4. हज़रत अराबा बिन औस,

5. हज़रत असद बिन ज़ोहर,
6. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी,
7. हज़रत समरा बिन जुन्दुब,
8. हज़रत राफ़ेअ बिन ख़ज़फा रज़ियल्लाहु अनहुम।

(मदारिजुन्नबुव्वत 67/

और सीरत इब्ने हिशाम जि० 2 स० 47 कुछ फ़र्क़ के साथ ये ना इस तरह हैं:

1. हज़रत उसामा बिन ज़ैद,
2. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर,
3. हज़रत ज़ैद बिन साबित,
4. हज़रत बरा बिन आज़िब,
5. हज़रत अम्र बिन हज़्म,
6. हज़रत असद बिन ज़ुहैर,
7. हज़रत समरा बिन जुंदुब,
8. हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज

रज़ियल्लाहु अन्हुम।

सवालः गज़वए ओहद में लश्करे इस्लाम के लिए कितने अलम मुतरत्तिब किए गए थे और अलमबरदारे कौन कौन थे?

जवाबः इस गज़वे में लश्करे इस्लाम के तीन झंडे मुरत्तब किए गए थे। मुहाजिरीन का झंडा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को, बाज़ कहते हैं कि हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु को। क़बीला औस का झंडा हज़रत सअद बिन उबादा और क़बीला ख़िज़रज का झंडा हज़रत ख़ब्बाब बिन मंज़र को अता फ़रमाया था, रज़ियल्लाहु अन्हुम।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/198, तफ़्सीर नईमी 4/127)

और काफ़िरों का झंडा तल्हा बिन अबि तल्हा उठाए हुए था।

(तफ़्सीर नईमी 4/127, मदारिजुन्नबुव्वत 2/198)

सवालः गज़वए ओहद के मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस्ते अक़्दस में जो तलवार थी उस पर क्या लिखा हुआ था?

जवाबः अरबाबे सैर बयान करते हैं कि जो शमशीर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस्ते मुबारक में थी उस पर यह शे'र लिखा हुआ था:

فِی الْجُبْنِ عَارٌ وَفِی الْاِقْبَالِ مُکْرَمَۃٌ
وَالْمَرْءُ بِالْجُبْنِ لَا یَنْجُوْ مِنَ الْقَدَرِ

तर्जुमाः बुज़दिली में आर है और दुश्मन का सामना करने में इज़्ज़त और आदमी बुज़दिली करके तक़दीर से निजात नहीं पा सकता। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/201, तफ़्सीर नईमी 4/127)

और एक रिवायत के मुताबिक़ यह शे'र इस तरह है:

في العس والاقبال مكرمة

بالجبن لا ينجو المرء من القدر (मआरिजुन्नबुव्वत 69/4)

सवालः गज़वए ओहद में लश्करे कुफ़्फ़ार की तरफ़ से सबसे पहले किसने लश्करे इस्लाम की तरफ़ तीर फेंका था?

जवाबः अरबाबे सैर कहते हैं कि काफ़िरों के लश्कर में जिसने लश्करे इस्लाम की जानिब तीर फेंका वह अबू आमिर फ़ासिक़ था। उसे अबू आमिर राहिब भी कहते हैं। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/201)

सवालः लश्करे कुफ़्फ़ार का पहला शख़्स जो गज़वए ओहद में मारा गया कौन था और उसको किसने क़त्ल किया?

जवाबः काफ़िरों के लश्कर का पहला शख़्स जो इस मार्के में मारा गया वह तल्हा बिन अबि तल्हा है जिसे शेर ख़ुदा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़त्ल किया था। (तफ़्सीर नईमी 4/128)

बाज़ रिवायतों में है कि उसे हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हलाक किया था। (मआरिजुन्नबुव्वत 2/202)

सवालः उस काफ़िर का क्या नाम था कि जिसने पत्थर से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नीचे का लब मुबारक और दांत मुबारक शहीद हुए थे?

जवाबः वह उत्बा बिन अबि वक़्क़ास ज़हरी जो हज़रत सअद बिन वक़्क़ास का भाई था। उसने हुज़ूर की जानिब ऐसा पत्थर फेंका जिससे आपका निचला होंठ लहूलुहान हो गया और आगे के निचले दांत मुबारक शहीद हो गए। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/222)

सवालः उस काफ़िर का क्या नाम है जिसके पत्थर से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रुख़्सार मुबारक ख़ून आलूदा हो गया था?

जवाबः वह अब्दुल्लाह इब्ने क़मिया मलऊन था कि उसने आप पर ऐसा पत्थर फेंका कि आपका रुख़्सार मुबारक ख़ून आलूदा हो गया। और ख़ूद की कड़ियाँ आपके सर में पेवस्त हो गयीं।(मदारिजुन्नबुव्वत 2/2..)

सवालः वह कौन से सहाबी थे जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़ख़्मी रुख़्सार मुबारक में पेवस्त ख़ुद की कड़ियाँ अपने दांतों से पकड़कर निकालने लगे तो ख़ुद उनके दाँत टूट गए?

जवाबः जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रुख़्सार मुबारक ज़ख़्मी हुआ और ख़ुर्द की कड़ियाँ उसमें पेवस्त हो गयीं तो हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु ने बैठकर अपने आगे के दोनों दांत को ख़ुर्द की एक कड़ी पर रखकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रुए अनवर से खींचा। तो उनका दांत टूट कर गिर पड़ा। फिर दूसरा दांत दूसरी कड़ी पर रखकर खींचा तो वह दांत भी टूटकर गिर पड़ा। इसी बिना पर हज़रत अबू उबैदा को रुस्तम कहते हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/22.)

सवालः ग़ज़वए ओहद में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कितने ज़ख़्म आए थे?

जवाबः ओहद के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सत्तर ज़ख़्म आए। (मअरिजुन्नबुव्वत ..)

रौज़ातुल अहबाब में बरिवायत शेख़ इब्ने हजर शरह बुख़ारी से नक़्ल करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिर्फ़ चेहराए अनवर पर तलवार के सत्तर ज़ख़्म आए थे। उलमा फ़रमाते हैं कि सत्तर के अदद से शायद हक़ीक़त में सत्तर ही हों या कसरत से मुबालग़ा मक़सूद हो।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/222)

सवालः वह कौन से सहाबी हैं जो ग़ज़वए ओहद में मुसलमानों ही के हाथों धोके से शहीद हो गए थे?

जवाबः हज़रत यमान जो हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के वालिद हैं उस ग़ज़वे में मुसलमानों ही के हाथों धोके से शहीद हो गए थे।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/20.)

सवालः ग़ज़वए ओहद में कितने मुसलमान शहीद हुए और

कुफ़्फ़ार में से कितने क़त्ल हुए?

जवाबः इस ग़ज़्वे में सत्तर मुसलमान शहीद हुए थे। चार मुहाजिरीन से और छियासठ अंसार में से और कुफ़्फ़ार के लश्कर से तक़रीबन तीस लोग जहन्नम रसीद हुए थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/231)

सवालः ग़ज़्वए ख़ंदक़ को गज़्वए ख़ंदक़ या गज़्वए अहज़ाब क्यों कहा जाता है?

जवाबः इस गज़्वे को गज़्वा ख़ंदक़ इस बिना पर कहा जाता है कि इस ग़ज़्वे में मदीना तैय्यबा के गिर्द ख़ंदकें खोदी गई थीं और ग़ज़्वा अहज़ाब इस बिना पर कहा जाता है कि क़ुरैश के साथ दुश्मनी की बिना पर यहूद के बहुत से क़बीले और उनके गिरोह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जंग व क़िताल में जमा हुए थे। और सब मुत्तफ़िक़ होकर आए थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/289)

अहज़ाब हिज़्ब की जमा है बमाने गिरोहें, जमाअतें, फ़ौजें।

सवालः गज़्वए ख़ंदक़ किस सन के किस माह में वाक़ेअ हुआ था?

जवाबः इस ग़ज़्वे के वक़ूअ की तारीख़ में अस्हाबे सैर इख़्तिलाफ़ करते हैं। चुनाँचे मूसा बिन उक़्बा ने कहा है कि इसका वक़ूअ चार हिजरी के माह शव्वाल में हुआ। इब्ने इस्हाक़ ने कहा है कि साल पंजुम में हुआ। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/290)

सवालः ग़ज़्वए ख़ंदक़ में दोनों तरफ़ के लश्करों की तादाद कितनी हुई?

जवाबः अबू सुफ़ियान लश्करे क़ुरैश के साथ मक्का से बाहर निकला तो उसके साथ तीन सौ घोड़े और एक हज़ार ऊँट थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/291)

एक रिवायत के मुताबिक़ चार हज़ार लश्कर, पंद्रह सौ ऊँट और तीन सौ घोड़े थे। (मआरिजुन्नबुव्वत 4/102)

यह मदीने तैय्यबा की तरफ़ रवाना हो गए। मर्रा ज़हरान में क़बाइले अरब असलम, अशजा, अबू मरआ, किनाना, फ़राज़ा, और ग़तफ़ान बड़ी तादाद के साथ आकर मिलते गए। इन सबकी मजमूई तादाद दस हज़ार

की हो गई। मुसलमानों के लश्कर की तादाद तीन हज़ार थी। उनमें छत्तीस घोड़े थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/291, मअरिजुन्नबुव्वत 102/4)

सवालः ग़ज़वए ख़ंदक़ के मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीना तैय्यबा में किसको अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया था?

जवाबः इस मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मक्तूम रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया था। (मअरिजुन्नबुव्वत 103/4)

सवालः ग़ज़वए ख़ंदक़ के मौक़े में मुसलमानों के पास कितने झंडे थे और कौन कौन उठाए हुए थे?

जवाबः इस गज़वे में दो झंडे थे। एक मुहाजिर का और एक अंसार का। मुहाजिरीन का झंडा हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ में और अंसार का झंडा हज़रत सअद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ में था। (मअरिजुन्नबुव्वत 103)

सवालः गज़वए ख़ंदक़ के मौक़े पर ख़ंदक़ खोदने को मशवरा किसने दिया था?

जवाबः यह मशवरा हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु ने दिया था। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/291, मअरिजुन्नबुव्वत 103/4)

सवालः गज़वए ख़ंदक़ में ख़ंदक़ की खुदाई के लिए हर एक सहाबी के हिस्से कितनी कितनी जगह आई थी?

जवाबः ख़ंदक़ की खुदाई जब शुरू की गई तो हर दस आदमियों के लिए चालीस ग़ज़ तक़्सीम किए गए। एक रिवायत में है कि हर दस आदमियों के लिए दस गज़ जगह हिस्से में आई। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/292)

एक और रिवायत के मुताबिक़ हर एक शख़्स के हिस्से में दस गज़ जगह आई। (मअरिजुन्नबुव्वत 103/4)

सवालः गज़वए ख़ंदक़ में सहाबा किराम रोज़ाना कितनी मिक़्दार में ख़ंदक़ खोदते थे?

जवाबः अरबाबे सैर कहते हैं कि सहाबा किराम रोज़ाना पाँच गज़

ख़ंदक़ खोदते थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/292, मआरिजुन्नबुव्वत 103)

सवालः गज़वए ख़ंदक़ में खोदी गई ख़ंदक़ की गहराई और लंबाई कितनी थी?

जवाबः इस ख़ंदक़ की गहराई पाँच गज़ थी।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/292, मआरिजुन्नबुव्वत 103)

और लंबाई साढ़े तीन मील।

सवालः गज़वए ख़ंदक़ की खुदाई कितने दिनों में मुकम्मल हुई थी?

जवाबः ख़ंदक़ का काम बीस रोज़ तक जारी रहा। वाक़दी कहते हैं कि चौबीस रोज़ जारी रहा। इमाम नुव्वी रहमतुल्लाह अलैहि ने रौज़ा में पंद्रह दिन फ़रमाए हैं। बाज़ रिवायतों के मुताबिक़ कामिल एक माह तक खुदाई होती रही। रौज़तुल अहबाब में है कि छः दिन में काम पूरा हो गया था।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/293)

सवालः गज़वए ख़ंदक़ में कुफ़्फ़ार ने कितने दिनों तक मुसलमानों को मुहासरा कर रखा था?

जवाबः इस ग़ज़्वे में क़ुरैश ने बीस रोज़ या चौबीस या सत्ताइस रोज़ तक बाइख़्तिलाफ़ अक़्वाल मुसलमानों का मुहासरा जारी रखा था।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/297)

एक क़ौल उनत्तिस रोज़ का भी है। (मदारिजुन्नबुव्वत 4/112)

सवालः गज़वए ख़ंदक़ में कितने मुसलमान शहादत के मर्तबे पर फ़ाएज़ हुए थे और काफ़िरों में से कितने जहन्नम वासिल हुए?

जवाबः इस ग़ज़्वे में छः अंसारी सहाबी शहीद हुएः

1. हज़रत सअद बिन मुआज़, 2. हज़रत अनस बिन औस,
3. हज़रत अब्दुल्लाह बिन सुहैल, 4. हज़रत तुफ़ैल बिन नौमान,
5. हज़रत कअब बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुम।

और काफ़िरों के लश्कर में से तीन लोग जन्नहम रसीद हुए थेः

1. उमर बिन अबदूद,
2. नौफ़ल बिन अब्दुल्लाह मख़्ज़ूमी,

3. उस्मान बिन ख़ैबर।

(मअरिजुन्नबुव्वत 112/4)

सवालः सुलह हुदैबिया के मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किस तारीख़ को उमरे के इरादे से मदीना तैय्यबा से रवाना हुए थे?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यकुम ज़ीक़ादा सन् 6 हि. बरोज़ पीर को उमरे के इरादे से मदीना से रवाना हुए थे।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/345, मअरिजुन्नबुव्वत 123/4)

सवालः सुलह हुदैबिया में लश्करे इस्लाम की तादाद कितनी थी?

जवाबः लश्करे इस्लाम की तादाद में मुख़्तलिफ़ रिवायतें हैं। एक रिवायत में चौदह सौ हैं। एक रिवायत में पंद्रह सौ। एक रिवायत में तेरह सौ है और एक रिवायत में पंद्रह सौ बीस है। सोलह सौ और सत्रह सौ की भी रिवायतें हैं। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/346, मअरिजुन्नबुव्वत 123/4)

सवालः सुलह हुदैबिया के मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसको अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया था?

जवाबः इस मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मक्तूम रज़ियल्लाहु अन्हु को मदीना तैय्यबा में ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया था। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/345)

सवालः सुलह हुदैबिया के मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस ऊँटनी पर सवार थे उसका नाम क्या है?

जवाबः इस मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस ऊँटनी पर सवार थे उसका नाम क़सवा है। (मअरिजुन्नबुव्वत 4/125)

सवालः हुदैबिया को हुदैबिया क्यों कहा जाता है और यह जगह मक्का मुअज़्ज़मा से कितनी दूरी पर वाक़ेअ है?

जवाबः हुदैबिया एक मुक़ाम का नाम है जो मक्का मुकर्रमा से नौ मील की फ़ासले पर है। असल में हुदैबिया एक कुँए का नाम है या किसी पेड़ का जो इस मुक़ाम पर है। इसी से मंसूब इस जगह का नाम हुदैबिया हुआ। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/345)

सवालः हुदैबिया में क़याम के दौरान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बातचीत करने के लिए मक्का वालों में से कौन कौन

आए थे?

जवाबः क़ुरैश अपना मुद्दा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर साबित करने के लिए लोगों को दर्मियान में ले आए। उन्होंने सबसे पहले बुदैल बिन वरक़ा ख़ज़ाई को उनके क़बीले के कुछ लोगों के साथ भेजा। बुदैल हुज़ूर के पास आए। बातचीत हुई। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके सामने अपना इरादा ज़ाहिर फ़रमाया। उसके बाद वह मज्लिस शरीफ़ से उठा और मुश्रिकीन की तरफ़ चला गया और कहाः ऐ गिरोहे क़ुरैश! तुम मुहम्मद! के साथ जंग व क़िताल में जल्दी न करो। वह ख़ाना काबा की ज़ियारत के लिए आए हैं। उनका तुम्हारे साथ जंग का इरादा नहीं है। क़ुरैश ने बुदैल की बातों का यक़ीन न किया और गुमान किया कि बुदैल ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ साज़िश कर ली है। इस बीच उरवा बिन मसऊद सक़फ़ी खड़ा हुआ और कहने लगा, ऐ गिरोह क़ुरैश! अगर मुझे इजाज़त दो तो मैं जाऊं और उनसे बातें करूं ताकि मैं देखूं कि वह क्या कहते हैं और क्या मसलेहत है। उसके बाद उरवा सरवरे काएनात की ख़िदमत में आया। हुज़ूर ने वही बात जो बुदैल से फ़रमाई इर्शाद फ़रमाई। अहले सैर बयान करते हैं कि बातचीत के दौरान उरवा बिन मसऊद कनखियों से हुज़ूर की मज्लिस में सहाबा किराम को देख रहा था। और उनके आदाब व ताज़ीम, एहतिराम और अज़मत का मुशाहिदा कर रहा था। और हैरान था। जब मुश्रिकों में वापस गया तो उरवा ने कहाः ऐ गिरोह क़ुरैश! मैं बड़े बड़े मुतकब्बिरों, मग़रूर सुलतानों, बादशाहों की मज्लिसों में रहा हूं और उनकी सोहबतें उठाई हैं लेकिन किसी बादशाह के किसी ख़िदमत गार को ऐसा अदब व एहतिराम करते नहीं देखा जैसा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अस्हाब को करते देखा। जब वह अपने दहने मुबारक से लुआब शरीफ़ निकालते हैं तो सहाबा उसे अपने हाथों में लेकर अपने गालों पर मलते हैं। जब वह वुज़ू करते हैं तो सहाबा किराम वुज़ू का पानी लेने में झगड़ते हैं। जब उनके हुज़ूर कोई बात करता है तो वह आवाज़ को दबाकर बात करता है। जब वह बातचीत करते हैं तो सहाबा इंतिहाई अदब व एहतिराम के साथ सुनते हैं। ये वे हालात हैं जिनका मैंने मुशाहिदा किया।

उरवा बिन मसऊद की बातों से क़ुरैश की क़सावत दूर न हुई। लेकिन उरवा की कोशिश और उसके आने जाने से सुलह की बुनियाद रखी गई। फिर क़बीला अहाबीश का एक आदमी जिसका नाम हलीस था हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुलाक़ात करने की ग़र्ज़ से खड़ा हुआ। और क़ुरैश से इजाज़त लेकर लश्करे इस्लाम के नज़दीक पहुँचा। वह उसी वक़्त हुज़ूर से मुलाक़ात किए बग़ैर लौट गया और क़ुरैश के पास आकर कहने लगा, मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनके सहाबा को देखा। वह ख़ाना काबा बैतुल्लाह की ज़ियारत के लिए आए हैं। मैं अच्छा नहीं जानता कि उनको इससे रोका जाए। साथ में उसने यह भी कहा कि अगर तुम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़ाना काबा के तवाफ़ से रोकोगे तो मैं तमाम अहाबीश के लोगों के साथ तुमसे जुदा होकर चला जाऊँगा। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/353 से 357)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किस किस सहाबी को मक्का मुकर्रमा भेजा था ताकि ज़ादीद क़ुरैश को अपना माफ़ी ज़मीर समझाएं?

जवाबः अस्हाबे सैर बयान करते हैं कि जब क़ुरैश की जानिब से लोग आ रहे थे और क़ुरैश की क़सावत को दूर करने की कोशिश कर रहे थे। और उन शक़ियों की शिद्दत में कमी नहीं हो रही थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी चाहा कि किसी को भेजकर इस मामले में कोशिश फ़रमाएं। आपने पहले बनी ख़ज़ाअ के हिराश बिन उमैय्या काबी नामी सहाबी को भेजा। उसे एक ऊँट दिया ताकि वह उनको दिलनशीन कराए कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तशरीफ़ लाना ज़ियारते काबा और उमरा अदा करने के लिए है, जंग व क़िताल नहीं। जब वह क़ुरैश के पास पहुँचे तो वह उनके ऊँट दर पे होकर हज़रत हिराश बिन उमैय्या के क़त्ल पर उतर आए। उनकी क़ौम ने जो मक्का में थी उनकी हिमायत करके छुड़ाया और उन्हें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ वापस भेज दिया। इसके बाद सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को मुख़ातिब करके फ़रमायाः तुम्हें मक्का जाना चाहिए ताकि उन्हें समझाओ कि हम जंग के इरादे से नहीं बल्कि

उमरा करने के लिए आए हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! आप पर रोशन है कि क़ुरैश की अदावत मेरे साथ कितनी है और उनकी शिद्दत व गिलज़त किस हद तक है। अगर वह मुझ पर क़ाबू पा लें तो यक़ीनन ज़िंदा न छोड़ें और बनी अदी में से कोई मक्का में नहीं है जो उनकी शरारतों पर मेरी हिमायत और हिफ़ाज़त कर सके। अगर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजें तो मुनासिब होगा क्योंकि वह क़ुरैश के नज़दीक ज़्यादा अज़ीज़ हैं और मक्का में उनके अज़ीज़ व अक़ारिब बहुत हैं। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उस्मान को बुलाया और मक्का मुकर्रमा भेजा ताकि सनादीद क़ुरैश को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का माफ़ी ज़मीर समझाएं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/359)

बाज रिवायतों में आया है कि दस और मुहाजिरीन भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इजाज़त से मक्का मुकर्रमा गए थे।

सवालः सुलह हुदैबिया के मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस पेड़ के नीचे सहाबा किराम की बैअत ली थी वह किस चीज़ का पेड़ था?

जवाबः लश्करे इस्लाम में जब यह ख़बर फैली कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को दीगर उन दस मुहाजिरीन के साथ जो मक्का गए थे मक्का वालों ने शहीद कर दिया है तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तमाम सहाबा किराम से साबित क़दम रहने पर जिस पेड़ के नीचे बैअत ली वह बबूल या बेरी का पेड़ था। बाद में यह पेड़ क़ुदरते इलाही से ग़ायब हो गया। (शाने हबीबुर्रहमान 175, इब्ने कसीर)

सवालः सुलह हुदैबिया के मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस्ते अक़्दस पर सबसे पहले बैअत करने वाले सहाबी का नाम क्या है?

जवाबः वह सहाबी हज़रत अबू सनान बिन वहब असदी हैं कि जिन्होंने इस मौक़े पर बैअत करने में सबसे पहले पहल की।

(इब्ने कसीर 26/126)

सवालः सुलह हुदैबिया के मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम के दस्ते अक़्दस पर तीन बार बैअत करने वाले सहाबी का नाम क्या है?

जवाबः वह हज़रत सलमा बिन अकूअ हैं कि जिन्होंने इस मौक़े पर तीन बार बैअत की। वह खुद फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा बैअत करके मैं हटकर एक तरफ़ खड़ा हो गया तो आपने फ़रमायाः सलमा! तुम बैअत नहीं करते? मैंने अर्ज़ किया, हुज़ूर मैंने तो बैअत कर ली। फ़रमाया, फ़िर आओ बैअत करो। चुनाँचे मैंने क़रीब जाकर फिर बैअत की। फिर एक बार मेरी तरफ़ तवज्जेह फ़रमाई और फ़रमायाः सलमा! तुम बैअत नहीं करते। मैंने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! पहली मर्तबा जिन लोगों ने बैअत की मैंने उन लोगों के साथ ही बैअत की थी। फिर बीच में दोबारा बैअत कर चुका हूँ। आपने फ़रमायाः अच्छा फिर सही। चुनाँचे मैंने फिर बैअत की। (इब्ने कसीर 26/10)

सवालः सुलह हुदैबिया के मौक़े पर मौजूद तमाम सहाबा किराम ने रज़ामंदी के साथ बैअत की सिवाए एक के। उसका नाम क्या है?

जवाबः इस मौक़े पर जितने सहाबा किराम मौजूद थे सबने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस्ते अक़्दस पर रज़ामंदी से बैअत की सिवाए जद बिन क़ैस के जो क़बीला बिन सलमा का एक शख़्स था। वह अपनी ऊँटनी की आड़ में छिप गया था।

(हवाला इब्ने कसीर 26/10, मअरिजुन्नबुव्वत 4/127)

सवालः सुलह हुदैबिया के मौक़े पर सुलह के लिए अहले मक्का की तरफ़ से कौन कौन हज़रात आए थे?

जवाबः क़ुरैश ने सुलह के सिलसिले में अपने ख़तीब सुहेल बिन अम्र को भेजा। उसके साथ करज़ बिन हफ़्स और ख़्वेतब बिन अब्दुल उज़्ज़ा भी थे लेकिन इस मुहिम्म की ज़िम्मेदारी सुहेल पर थी।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/359)

सवालः सुलह के लिए मक्का वालों की तरफ़ क्या क्या शर्तें रखीं गयीं थीं और मसालेहत की मुद्दत कितनी थी?

जवाबः मशहूर है कि मुद्दते मसालेहत दस साल की थी जैसा कि कुतुब सैर में मज़्कूर है लेकिन अबूदाऊद में बरिवायत हज़रत इब्ने उमर

रज़ियल्लाहु अन्हुमा और अबू नईम मुसनद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन दीनार रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल करते हैं कि मुद्दत मसालेहत चार साल की थी।

सुलह की सबसे पहली शर्त जो सुहैल ने रखी यह थी कि इस साल तो यहाँ से आप लौट जाएं और आइंदा साल उमरे के लिए तशरीफ़ लाएं।

मुद्दते मसालेहत में जंग व मुक़ाबला और जदाल न होगा।

और एक दूसरे के शहरी अमन व सलामती से रहेंगे।

एक दूसरे के साथ ताअर्रुज़ न करेंगे।

हलीफ़ और हम अहद एक दूसरे को नुक़सान न पहुँचाएंगे।

दूसरी शर्त यह थी कि साल आइंदा आएं तो तीन दिन से ज़्यादा क़याम न करेंगे और यह कि तलवारें म्यान में रहेंगी।

और तीसरी शर्त अजीब शनीअ थी। वह यह कि जो कोई हमारी जानिब से बग़ैर इजाज़त के खुद तुम में चला जाए उसे हमारी तरफ़ लौटा देंगे। अगरचे मुसलमान होकर ही पहुँचे और अगर जो कोई आपकी तरफ़ से आ जाएगा उसे हम न लौटाएंगे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/361)

सवालः सुलह हुदैबिया के मौक़े पर सुलहनामा किस सहाबी ने लिखा था?

जवाबः बातचीत से जब सुलह की शर्तें तय पा गयीं तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़लम दवात और काग़ज़ हज़रत औस बिन ख़ौली अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु को दिया ताकि वह सुलहनामा लिखें। यह ख़त व किताबत में महारत रखते थे। सुलैह ने कहा, ऐ मुहम्मद! सुलहनामा आपके चचा के बेटे अली को लिखना चाहिए। एक रिवायत में है कि हज़रत उस्मान लिखें। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाकर फ़रमाया, सुलहनामा लिखो।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/263)

सवालः वह कौन से सहाबी हैं कि सुहलनामा की किताबत के दौरान मक्का मुकर्रमा से अपने बाप की क़ैद से छूटकर आए लेकिन मुसलमानों ने उन्हें सुलहनामे के तहत मुश्रिकों के हवाले कर दिया?

जवाबः वह अबू जिन्दल हैं जो सुहैल बिन अम्र के लड़के थे और वह पहले से मुसलमान थे। उनको उनके बाप ने क़ैदख़ाने में बेड़ियाँ पहनाकर मजबूर कर रखा था। उन्होंने कलिमा शहादत पढ़ते हुए ख़ुद को मुसलमानों के दर्मियान डाल दिया। मुसलमानों ने उन्हें सुलहनामे के तहत मुश्रिकों के सुपुर्द कर दिया। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/362)

सवालः हुदैबिया में लश्करे इस्लाम की इक़ामत कितनी मुद्दत रही और इस मौक़े पर मुसलमानों ने कितने ऊँट ज़िब्ह किए?

जवाबः हुदैबिया के मुक़ाम पर लश्करे इस्लाम की इक़ामत तक़रीबन बीस रोज़ रही। इस मौक़े पर वह सत्तर ऊँट जो मुसलमान क़ुर्बानी के वास्ते लाए थे ज़िब्ह किए गए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बीस ऊँटों को जिनमें अबू जहल का भी एक ऊँट था जो ग़ज़वा बदर में ग़नीमत में हाथ आया था अपने दस्ते मुबारक से नहर फ़रमाया। बाक़ी को हज़रत नाजिया बिन जुन्दुब को दिया कि वह ज़िब्ह करें।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/348, 2/371)

सवालः सुलह हुदैबिया के मौक़े पर शहीद होने वाले वाहिद सहाबी का नाम क्या है?

जवाबः वह वाहिद सहाबी जो सुलह हुदैबिया के मौक़े पर शहीद हुए इब्ने ज़नीम रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। (इब्ने कसीर 26/11)

सवालः ग़ज़वा ख़ैबर किस माह व सन में हुआ था?

जवाबः ग़ज़वा ख़ैबर हिजरत के सातवें साल माह मुहर्रम के आख़िरी दिनों में हुआ। बाज़ ने कहा है कि आख़िरी सन् 6 हि० में है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/400)

सवालः ग़ज़वा ख़ैबर में लश्करे इस्लाम की तादाद कितनी थी?

जवाबः इस गज़वे के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक हज़ार चार सौ सहाबा किराम के साथ तशरीफ़ ले गए। मवाहिब में है कि तेरह सौ अस्हाब थे। लश्करे इस्लाम में दो सौ घोड़े थे जिनमें तीन घोड़े ख़ास रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के थे और ऊँट बकसरत थे।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/401)

सवालः ग़ज़वा ख़ैबर के मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने मदीना मुनव्वरा में किसको अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया था?

जवाबः इस मौक़े पर रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत सबा बिन अरफ़ता ग़फ़्फ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु को मदीना तैय्यबा में ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया था। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/401)

सवालः ख़ैबर में कुल कितने क़िले थे और उनके नाम क्या हैं?

जवाबः ख़ैबर में कुल आठ क़िले थे। उनके नाम इस तरह हैं:

1. क़ैसा,
2. नाअम,
3. सअब,
4. शक़,
5. ग़मूस,
6. बताता,
7. सतीह,
8. सालिम।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/440)

सवालः ग़ज़वा ख़ैबर में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो दरे ख़ैबर उखाड़ फेंका था उसका वज़न कितना था?

जवाबः मन्क़ूल है कि इस दरवाज़े का वज़न आठ सौ मन था।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/415, मअरिजुन्नबुव्वत 146/4)

सवालः ग़ज़वा ख़ैबर में कितने मुसलमान शहीद हुए थे और कितने यहूदी मारे गए थे?

जवाबः इस ग़ज़वे में पंद्रह मुसलमान शहादत के मर्तबे पर फ़ाएज़ हुए और तिरानवें यहूदी मारे गए।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/421, मअरिजुन्नबुव्वत 4/148)

सवालः फ़तेह मक्का के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना मुनव्वरा से किस तारीख़ को रवाना हुए थे?

सवालः इस ग़ज़वे के लिए हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दस रमज़ानुल मुबारक सन् 8 हि० बरोज़ बुध बाद नमाज़ अस्र मदीना तैय्यबा से रवाना हुए। जैसा कि वाक़दी ने कहा है और इमाम अहमद के नज़दीक सही सनद से हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि उन्होंने कहा कि आमुल फ़तेह में दूसरी तारीख़ रमज़ान को चले। तारीख़ की ताय्युन में और कई क़ौल मरवी हैं। मसलन बारह, सोलह,

सत्रह, अठ्ठारह और उन्नीस रमज़ान। पहले दोनों सेहत के ज़्यादा क़रीब हैं और दूसरा ज़्यादा सही है। (मदारिजुन्नवुव्वत 2/476)

सवालः फ़तेह मक्का के मौक़े पर लश्करे इस्लाम की तादाद कितनी थी?

जवाबः जव हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना तैय्यवा से वाहर तशरीफ़ लाए और लश्कर को मुलाहिज़ा फ़रमाया तो सात सौ मुहाजिरीन में से थे जो तीन सौ घोड़े रखते थे। और चार हज़ार अंसार में से जिनके पास पाँच सौ घोड़े थे। इसी तरह क़वाइल अरव, असलम, ग़फ़्फ़ार, जहीनिया, अशजअ और सुलैम वग़ैरह में से चार सौ, पाँच सौ और एक हज़ार अदद मख़्सूस के साथ पेश ख़िदमत होते और रास्ते में आकर शामिल होते रहे। यहाँ तक कि मजमूई तादाद दस हज़ार की हो गई। वाज़ ने वारह हज़ार कहा है। और वाज़ ने तेरह हज़ार भी कहा है। (मदारिजुन्नवुव्वत 2/476)

सवालः फ़तेह मक्का के मौक़े पर मुसलमानों के पास कितने झंडे थे?

जवाबः इस ग़ज़वे में मुहाजिरीन के पास तीन झंडे थे। एक हज़रत अली, एक हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम और एक हज़रत सअद बिन अबि वक़्क़ास के पास, रज़ियल्लाहु अन्हुम। (मअरिजुन्नवुव्वत 4/163)

और हज़रत सअद बिन उवादा के क़ब्ज़े में अंसार का अलम था। (मदारिजुन्नवुव्वत 2/480)

सवालः फ़तेह मक्का के मौक़े पर मदीना मुनव्वरा में ख़लीफ़ा किसको मुक़र्रर किया गया था?

जवाबः इस मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीना तैय्यबा में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मक्तूम रज़ियल्लाहु अन्हु को और बाज़ कहते हैं कि हज़रत अबूज़र ग़फ़्फ़ारी को ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया। (मदारिजुन्नवुव्वत 2/476)

सवालः मक्का मुकर्रमा किस तारीख़ को फ़तेह हुआ था?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मक्का मुकर्रमा में दाख़िल होना और मक्का फ़तेह होना बीस रमज़ानुल मुबारक सन् 8 हि०

को हुआ था। (मदारिजुन्नवुव्वत 2/508)

सवालः ख़ाना काबा में दाख़िल होते वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ कौन कौन सहाबी थे?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, हज़रत उसामा, हज़रत बिलाल, हज़रत उस्मान बिन तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हुम के साथ ख़ाना काबा में दाख़िल हुए और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा को उसके दरवाज़े पर खड़ा किया। हज़रत उसामा और बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हुमा अंदर चले गए और दरवाज़े को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए बंद किया ताकि भीड़ न हो। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तवील वक़्फ़े तक अंदर रहे और ख़ाना काबा के गोशों में दुआ और तज़र्रो फ़रमाते रहे। उसके बाद बाहर तशरीफ़ लाए और निकलते वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया कि अंबिया और फ़रिश्तों की तस्वीरों को जिन्हें काफ़िरों ने काबा की दीवारों पर नक़्श कर रखा है मिटा दो। फिर उन्होंने तमाम तस्वीरों को मिटा दिया।

(मदारिजुन्नवुव्वत 2/488, मअरिजुन्नवुव्वत 4/170)

सवालः अहले मक्का में से वे कितने लोग थे जिनके बारे में हुज़ूर सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम ने हुक्म फ़रमाया था कि हिल्ल व हरम में जहाँ पाए जाएं क़त्ल कर दिए जाएं?

जवाबः अगरचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अहले मक्का को अमन दे दी थे लेकिन एक जमाअत को इस हुक्म से मुस्तसना क़रार दिया और उनके ख़ून बहाने की इजाज़त दे दी और हुक्म दिया कि हिल्ल व हरम में जहाँ पाए जाएं क़त्ल कर दिए जाएं। लेकिन बाज़ के क़त्ल होने और ख़ून बहाने के बाद उनमें से कुछ लोग तोबा व रुजू और ईमान की वदौलत मामून हुए और क़त्ल से निजात पाई। ऐसे लोग मर्दों में ग्यारह और औरतों में छः थे। मर्दों में चार क़त्ल कर दिए गए और सात मामून रहे। औरतों में तीन मारी गयीं और एक में इख़्तिलाफ़ है और दो मामून रहीं। वे चार मर्द जो क़त्ल किए गए ये हैंः

1. अब्दुल्लाह बिन ख़तल,
2. हवेरस बिन नक़ीद,
3. मुक़ीस बिन सबावा,
4. हारिस बिन तलातला।

और वे सात जो मामून रहेः

1. अब्दुल्लाह बिन अबि सरज,
2. इकरमा बिन अबि जहल,
3. सफ़वान बिन उमैय्या,
4. हिबार बिन असवद,
5. कअब बिन ज़हीर,
6. वहशी बिन हर्ब,
7. अब्दुल्लाह बिन जबअरी।

औरतों में वे दो जो मामून रहीं ये हैंः

1. हिंद बिन्त उतबा ज़ौजा अबू सुफ़ियान,
2. क़रतना, जो इब्ने ख़तल की बांदी थी और एक जिसमें इख़्तिलाफ़ है वह है सारा। सारा जो बनी मुत्तलिब की बांदी थी।

इस रोज़ हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ से मारी गई थी। बाज़ कहते हैं कि लोगों ने उसके लिए अमान मांगी और उसे अमान दे दी गई।

और वे तीन औरतें जो मक़्तूल हुई वे ये हैंः

1. क़रीबा इब्ने ख़तल की बांदी,
2. अरनब इब्ने ख़तल की बांदी,
3. उम्मे सअद।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/494 से 507,
मअरिजुन्नबुव्वत 2/172 से 176/4)

सवालः उस काफ़िर का क्या नाम है जो फ़तेह मक्का के दिन इस हाल में क़त्ल हुआ कि ग़िलाफ़े काबा से लिपटा हुआ था?

जवाबः वह इब्ने ख़तल है। इसका नाम जाहिलियत मे अब्दुल उज़्ज़ा था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसका नाम अब्दुल्लाह रखा। बाज़ लोग बिलाल बताते हैं। बाद में वह मुरतिद हो गया और अहले मक्का से जा मिला। जब मक्का फ़तेह हुआ तो उसने ख़ाना काबा में पनाह ली। और ग़िलाफ़े काबा से लिपट गया। जिस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तवाफ़ फ़रमा रहे थे, किसी सहाबी ने उसे देखा और अर्ज़ कियाः या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह इब्ने ख़तल है और ग़िलाफ़ काबा से लिपटा हुआ है। फ़रमायाः जहाँ हो क़त्ल कर दो तो फ़रमान की वजह से वहीं क़त्ल कर दिया गया।(मदारिजुन्नबुव्वत 2/494)

सवालः फ़तेह मक्का के मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कितने दिन क़याम फ़रमाया था?

जवाबः मवाहिब लदुन्निया में कहा गया है कि मक्का मुकर्रमा में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क़याम पंद्रह दिन रहा था। एक रिवायत में उन्नीस दिन है। एक और रिवायत में सत्रह दिन और तिर्मिज़ी में अठ्ठारह दिन है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/508)

सवालः गज़वा हुनैन को गज़वा हुनैन क्यों कहते हैं?

जवाबः हुनैन एक चश्मे का नाम है जो मक्का मुकर्रमा से तीन रात की मुसाफ़त पर वाक़ेअ है और ताएफ़ के क़रीब है। क्योंकि इसी जगह यह जंग लड़ी गई थी इसलिए इसको गज़वा हुनैन कहते हैं। इस गज़वे को गज़वा हवाज़न भी कहते हैं। हवाज़न उस जगह रहने वाले क़बीले का नाम है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/514)

सवालः गज़वा हुनैन के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किस तारीख़ को रवाना हुए थे और हुनैन किस तारीख़ को पहुँचे?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम छः शव्वाल सन् 8 हि० बरोज़ हफ़्ता मक्का मुकर्रमा से रवाना हुए और मंगल की रात दसवीं शव्वाल को हुनैन पहुँचे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/515)

सवालः गज़वा हुनैन के मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ने मक्का मुकर्रमा में किसको ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया था?

जवाबः इस मौक़े पर हज़रत अत्ताब बिन असीद रज़ियल्लाहु अन्हु को मक्का मुकर्रमा में ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया।

(मआरिजुन्नबुव्वत 4/179, मदारिजुन्नबुव्वत 2/515)

सवालः गज़वा हुनैन में दोनों तरफ़ के लश्करों की तादाद कितनी थी?

जवाबः इस गज़वे में लश्करे इस्लाम की तादाद बारह हज़ार थी।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/514)

एक रिवायत के मुताबिक़ सोलह हज़ार की तादाद थी। (179/4)

और लश्करे कुफ़्फ़ार की तादाद चार हज़ार थी।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/515)

एक दूसरी रिवायत में तीन हज़ार है। (मआरिजुन्नबुव्वत 4/178)

सवालः गज़वा हुनैन में कितने मुसलमान शहीद हुए थे और

कितने काफ़िर वासिल जहन्नम हुए?

जवाबः अरबावे सैर बयान करते हैं कि इस ग़ज़वे में चार हज़ार मुसलमान शहीद हुए और अहले शिर्क व शक़ियों में से सत्तर लोग जहन्नम रसीद हुए। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/523)

शहादत हासिल करने वाले चार मुसलमानों के नाम ये हैं:

1. हज़रत ऐमन बिन उबैद,
2. हज़रत यज़ीद बिन ज़मआ,
3. सुराक़ा बिन हारिस,
4. हज़रत अबू आमिर अशअरी। (सीरत इब्ने हिशाम 2/549)

सवालः ग़ज़वा हुनैन में मुसलमानों को कितना माले ग़नीमत मिला था?

जवाबः इस ग़ज़वे में मुसलमानों को जो ग़नीमत मिली वह छः हज़ार नव्वे घोड़े, चौबीस हज़ार ऊँट, चालीस हज़ार से ज़्यादा बकरियाँ और चार हज़ार औक़िया चांदी था। एक औक़िया चालीस दिरहम का होता है। एक रिवायत में है कि बकरियाँ इतनी ज़्यादा थीं कि उनका शुमार ही न हो सकता था। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/532, मआरिजुन्नबुव्वत 182/4)

सवालः ग़ज़वा तबूक की वजह तस्मिया क्या है?

जवाबः तबूक एक मुक़ाम का नाम है जो मदीना तैय्यबा और शाम के दर्मियान मदीना मुनव्वरा से चौदह मंज़िल की मुसाफ़त पर है। बाज़ कहते हैं कि यह एक क़िले का नाम है। और क़ामूस में है कि मदीना और शाम के दर्मियान ज़मीन के टुकड़े का नाम है। बाज़ कहते हैं कि एक चश्मे का नाम है जो इस जगह पर वाक़ेअ है क्योंकि इस सफ़र में लश्कर की आख़िरी मुसाफ़त इस चश्मे तक हुई थी। इस बिना पर इसको इस नाम से मौसूम और मंसूब किया गया। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/577)

सवालः ग़ज़वा तबूक के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किस तारीख़ को रवाना हुए थे?

जवाबः इस ग़ज़वे के लिए मदीना तैय्यबा से रवाना होने की तारीख़ बिला इख़्तिलाफ़ जुमेरात माह रजब सन् 9 हि० है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/578)

सवालः ग़ज़वा तबूक में इस्लामी लश्करों की तादाद कितनी थी?

जवाबः अरबाबे सैर कहते हैं कि इस ग़ज़वे में इस्लामी लश्करों की तादाद तीस हज़ार थी। बाज़ ने सत्तर हज़ार कहा है। और यह बहुत ज़्यादा मशहूर रिवायत है। एक रिवायत में एक लाख और एक रिवायत में चालीस हज़ार। इस लश्कर में दस हज़ार घोड़े सवार और बारह हज़ार ऊँट सवार थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/588)

सवालः ग़ज़वा तबूक के मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीना तैय्यबा में किसको ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया था?

जवाबः इसमें उलमा इख़्तिलाफ़ रखते हैं कि इस मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसे ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया। बाज़ कहते कि मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ियल्लाहु अन्हु को बनाया और कहते हैं कि सबसे ज़्यादा सही यही रिवायत है। एक रिवायत में है कि हज़रत सबा बिन अरफ़ता रज़ियल्लाहु अन्हु को बनाया। एक रिवायत में है कि हज़रत अबू दहम गफ़्फ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु को बनाया। एक और रिवायत में है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़लीफ़ा बनाया। इब्ने अब्दुल बर ने इस रिवायत को तरजीह दी है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/587)

सवालः ग़ज़वा तबूक के मौक़े पर इस्लामी लश्कर की ज़रूरियात की तक्मील के लिए हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने कितना माल और साज़ व सामान दिया था?

जवाबः जब इस ग़ज़वे की तैयारी हो रही थी तो हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने दो सौ ऊँट जिन पर पालान, पोशिश और चादर वग़ैरह पड़े हुए थे और हर तरह से मुकम्मल मअ दो सौ औक़िया चांदी, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश की और अर्ज़ किया कि इन से लश्कर की ज़रूरियात मुकम्मल फ़रमाएं। एक रिवायत में है कि तीन सौ ऊँट चार बस्ते मुकम्मल और एक मिस्क़ाल सोना लाए। मवाहिब लदुन्निया में हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हज़रत उस्मान ग़नी ने इस ग़ज़वे में हज़ार ऊँट और सात सौ घोड़े सवारी के दिए। और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन समरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हज़रत उस्मान ग़नी एक हज़ार दीनार अपनी आस्तीन में लाए।

जिस वक़्त के ग़ज़वा तबूक की तैयारी की जा रही थी। एक रिवायत में दस हज़ार दीनार हैं। और एक रिवायत में चालीस हज़ार दिरहम हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/591)

सवालः ग़ज़वा तबूक के मौक़े पर पीछे रह जाने वाले सहाबा कितने और कौन कौन से थे?

जवाबः इस ग़ज़वे से पीछे रह जाने वाले मुनाफ़िक़ीन में से बहुत हैं जिनमें माज़ूर सही उज़्र वाले भी हैं और ग़ैर सही उज़्र वाले भी। लेकिन वे लोग जो बग़ैर उज़्र और बिलाशक व इरतियाब के इस ग़ज़वे से पीछे रह गए वे सहाबा में से पाँच लोग हैं:

1. हज़रत अबूज़र ग़फ़्फ़ारी, 2. हज़रत अबू ख़ैसमा सालमी, 3. हज़रत कअब बिन मालिक, 4. हज़रत मरारा बिन रबीअ, 5. हिलाल बिन उमैय्या रज़ियल्लाहु अन्हुम।(मदारिजुन्नबुव्वत 2/597)

बैहिक़ी में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि वे दस लोग थे जिन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ग़ज़वा तबूक में ख़िलाफ़ किया। और बाज़ हज़रत लुबाबा बिन अब्दुल मुंज़िर और हज़रत अबू उमैय्या बिरादर उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हुमा का भी मुतख़ल्लिफ़ीन में शुमार करते हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/604-605)

सवालः तमाम ग़ज़वात में कुल कितने काफ़िर मारे गए?

जवाबः तमाम ग़ज़वात में कुल एक हज़ार आठ काफ़िर मारे गए।

(तफ़सीर नईमी 2/337)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथों एक काफ़िर मारा गया उसका नाम क्या है?

जवाबः वह बदबख़्त उबई बिन ख़लफ़ है जो वाहिद काफ़िर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथों से मारा गया। ग़ज़वा ओहद के मौक़े पर उस बदबख़्त ने आप पर हमला करना चाहा। आप उस वक़्त ख़ाली हाथ थे। आपने हारिस बिन समा रज़ियल्लाहु अन्हु से नेज़ा लिया। एक रिवायत में है कि हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु से नेज़ा लिया और एक रिवायत में है कि उसी बदबख़्त का नेज़ा उसके हाथ से

लेकर उस पर फेंका। उस शक़ी की गर्दन पर पड़ा और नेज़ा उसके आर पार हो गया। वह बैल की तरह चीखता हुआ घोड़े से गिरा। उसके साथी उसे उठाकर ले गए। और एक दिन वह मुक़ाम "सर्फ़" में वासिल जहन्नम हुआ।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/224, नम 4/200)

○ ○ ○

बैतुल्लाह और बैतुल मामूर के बारे में सवाल और जवाब

सवालः काबा को काबा क्यों कहा जाता है?

जवाबः काबा को काबा कहने की दो वजहें हैंः

एक यह कि काबा के लफ़्ज़ी माने हैं उठा हुआ होना या ऊँचा होना क्योंकि काबा सतह समुन्दर से ऊँची है इसलिए उसे काबा कहा जाता है।

दूसरी वजह यह है कि मुकअब बाक़ादा वह अक़लीदस है। जिसको छः बराबर की सतह घेरें। अगरचे बिना इब्राहीमी में काबा बशक्ल मुस्ततील था लेकिन नुज़ूल क़ुरआन के वक़्त बशक्ल मकअब था यानी उसकी लंबाई चौड़ाई और बुलंदी बराबर थी। इसलिए इसको काबा कहा गया। (तफ़्सीर नईमी 1/826)

सवालः काबा की तामीर कितनी बार हुई और किस किस ने कराई?

जवाबः काबा की तामीर दस बार हुईः

1. पहली बार मलाइका ने की।
2. दूसरी बार हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने की।
3. तीसरी बार हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की औलाद (हज़रत शीस अलैहिस्सलाम) ने की।
4. चौथी बार हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने की।
5. पाँचवी बार तामीर क़ौमे अमालक़ा ने की।
6. छठी बार क़बीला जरहम ने की।
7. सातवीं बार हुज़ूर के परदादा कुस्सी बिन कलाब ने की।
8. आठवीं बार क़बीला क़ुरैश ने की।
9. नवीं बार हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने की।

10. दसवीं बार हिज्जाज़ बिन यूसुफ़ ने काबे की तामीर की।

(हाशिया 11 जलालैन 281, हाशिया 4, बुख़ारी 215)

दूसरा क़ौल यह है कि काबा की तामीर नौ बार हुई:

1. मलाइका ने,
2. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने,
3. क़ौमे अमालक़ा ने,
4. क़बीला जरहम ने,
5. क़ुस्सी बिन कलाब ने,
6. क़ुरैश ने,
7. इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने,
8. हिज्जाज़ बिन यूसुफ़,
9. सुलतान मुराद इब्ने अहमद ख़ा शाह क़ुस्तुनतुनिया ने।

(तफ़्सीर नईमी 1/821 से 824)

और सीरत जलसिया में है कि काबे की तामीर सिर्फ़ तीन बार हुई:

1. पहली बार हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने तामीर की।
2. दूसी बार क़ुरैश ने।
3. तीसरी बार हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने।

मलाइका और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का तामीर करना साबित नहीं है और क़बीला जरहम, क़ौम अमालक़ा और क़ुस्सी बिन कलाब इन तीनों ने काबा की सिर्फ़ मरम्मत कराई। नए सिरे से तामीर नहीं की।

(हाशिया 4 बुख़ारी 215)

सवाल: काबा की तामीर फ़रिश्तों ने किन पहाड़ों से की थी?

जवाब: फ़रिश्तों ने काबा की तामीर पाँच पहाड़ों के पत्थरों से की थी:

1. कोहे लबनान,
2. कोहे तूर,
3. कोहे जूदी,
4. कोहे हिरा,
5. तूरे ज़ीता।

(तफ़्सीर नईमी 1/721)

सवाल: फ़रिश्तों ने काबा की तामीर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से कितने साल पहले की थी?

जवाब: फ़रिश्तों ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाईश से दो हज़ार साल पहले काबा शरीफ़ की इमारत बनाई थी।

(तफ़्सीर नईमी 4/18)

सवाल: हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने काबा की तामीर कितने

और किन किन पहाड़ों से की थी?

जवाबः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने काबा की तामीर पाँच पहाड़ों के पत्थरों से की थीः

1. कोहे हिरा, 2. तूरे सीना,
3. तूरे ज़ीता, 4. कोहे लबनान,
5. कोहे जूदी। (इब्ने कसीर 1/15)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तामीर के वक़्त काबा में कितने पहाड़ों के पत्थर लगाए गए थे?

जवाबः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तामीर के वक़्त काबा में तीन पहाड़ों के पत्थर लगाए गएः

1. कोहे अबि क़बीस, 2. कोहे हिरा,
3. कोहे वरक़ान। (तफ़्सीर नईमी 1/822)

एक दूसरे क़ौल के मुताबिक़ पाँच पहाड़ों के पत्थरों से तामीर फ़रमाई थीः

1. कोहे हिरा, 2. कोहे शब्बीर,
3. कोहे लबनान, 4. कोहे तूर,
5. कोहे जूदी

और बाज़ रिवायतों में कोहे हिरा, कोहे अबू क़बीस, कोहे वरक़ान और कोहे रिज़वी ज़िक्र हुआ है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/46)

एक क़ौल के मुताबिक़ इन पाँच पहाड़ों के नाम ये हैंः

1. कोहे हिरा, 2. तूरे सीना,
3. कोहे जूदी, 4. तूरे ज़ैतून,
5. कोहे लबनान। (शिफ़ाउल ग़राम बअख़बारुल बलदुल हराम 1/115)

सवालः तामीरे इब्राहीमी के वक़्त काबा की बुलंदी और लंबाई चौड़ाई कितनी थी और उसमें दरवाज़े कितने थे?

जवाबः तामीरे इब्राहीमी के वक़्त काबा मुअज़्ज़मा की बुलंदी नौ हाथ थी और उसकी चौड़ी रुक्ने असवद से रुक्ने शामी तक तैंतीस हाथ। रुक्ने शामी से रुक्ने ग़रबी तक बाइस हाथ। रुक्ने ग़रबी से रुक्ने यमानी तक इक्कीस हाथ। रुक्ने यमानी से फिर रुक्ने असवद तक बीस हाथ।

इसका दरवाज़ा ज़मीन से मिला हुआ था जिसमें किवाड़ वग़ैरह न थे। दरवाज़े दो थे एक दाख़िल होने का और एक निकलने का।

(तफ़्सीर नईमी 2/822)

एक क़ौल के मुताबिक़ उस वक़्त काबा की बुलंदी सात गज़ थी।

(हाशिया 11 जलालैन 281)

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने काबा की तामीर किस तारीख़ को शुरू की थी और किस तारीख़ को ख़त्म फ़रमाई?

जवाबः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने पहली ज़ीक़ादा को तामीरे काबा शुरू फ़रमाई और इसी महीने की पच्चीसवीं तारीख़ को ख़त्म फ़रमा दी।

(तफ़्सीर नईमी 1/845)

सवालः क़ुरैश के दौर में काबा की तामीर करने वाले कारीगर का नाम क्या है?

जवाबः इस मौक़े पर रूम से याक़ूम नामी एक आदमी मक्का आया हुआ था जो फ़न तामीर का माहिर व उस्ताद था। क़ुरैश के कहने पर उसने तामीर का काम अंजाम दिया। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/45)

सवालः क़बीला क़ुरैश ने जो काबा की तामीर की थी उसकी बुलंदी और उसका तूल व अर्ज़ कितना था?

जवाबः क़ुरैश ने जो काबा की तामीर की थी उसकी बुलंदी बीस गज़ थी, लंबाई तीस गज़, चौड़ाई बीस और छः सुतून रखे गए थे।

(मआरिजुन्नबुव्वत 78ऊ4)

सवालः तामीरे इब्राहीमी और तामीरे क़ुरैश के दर्मियान कितने ज़माने का फ़ासला है?

जवाबः तामीरे इब्राहीमी और तामीरे क़ुरैश के बीच सत्रह सौ पिच्हत्तर (1775) साल का फ़ासला है और तामीर क़ुरैश और तामीर अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के बीच ब्यास्सी साल का।

(हाशिया 4/215)

सवालः बैतुल्लाह के अतराफ़ को हरम क्यों कहते हैं?

जवाबः इसकी कई वजूहात हैं:

1. जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम मुर्ग़ज़ार बहिश्त से मुसीबतगाह

दुनिया में तशरीफ़ लाए तो आपको अपने नफ़्स पर शैतान का ख़ौफ़ हुआ तो अल्लाह तआला से पनाह चाहने लगे। हक़ तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के लिए फ़रिश्तों को भेजा। फ़रिश्ते हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के लिए मक्का मुअज़्ज़मा के चारों तरफ़ फैल गए तो उस वक़्त फ़रिश्तों ने जहाँ तक घेरा डाला था वहाँ तक अल्लाह तआला ने हरम बना दिया।

2. जिस वक़्त हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हिज्रे असवद को बैतुल्लाह शरीफ़ में नसब किया तो हिज्रे असवद से एक नूर की रोशनी नमूदार हुई जिससे बैतुल्लाह शरीफ़ के चारों तरफ़ रोशन और मुनव्वर हो गए तो जहाँ तक वह रोशनी फैली थी वहाँ तक हरम बना दिया गया। (नज़हतुल मजालिस 5/56)

3. खुदा वंदे क़ुद्दूस ने जब ज़मीन व आसमान से फ़रमायाः आ जाओ खुशी खुशी या ज़बरदस्ती तो ज़मीन व आसमान ने जवाबन अर्ज़ कियाः हम फ़रमांबरदार बनकर आए। यह जवाब सिर्फ़ हरम की ज़मीन ने दिया था। इसलिए इस जगह को हरम मोहतरम और मुक़द्दस बना दिया। (शिफ़ाउल ग़राम बअख़बारुल बलदुल हराम 1/85)

4. हिज्रे असवद जब जन्नत से आया तो उसकी रोशनी कई मील तक जाती थी। जहाँ तक उसकी शुआएं पहुँचती थीं उसी हद तक हरम की हदें क़ायम हो गयीं। (तफ़्सीर नईमी 1/331)

सवालः ज़मानाए जाहिलियत में काबा किस दिन खोला जाता था?

जवाबः इब्ने सअद अपनी किताब तब्क़ात में हज़रत उस्मान बिन तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि ज़माना जाहिलियत में ऐसा दस्तूर था कि ख़ाना काबा को पीर और जुमेरात के सिवा न खोलते थे। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/487)

सवालः काबा मौज़्ज़िमा में सबसे पहले कौन सा बुत रखा गया?

जवाबः उमर बिन हय्यि बिन हारसा शाह हिजाज़ ने सबसे पहले काबा की छत पर हबल नामी बुत रखा था। (तारीख़ुल इस्लाम 1/68)

सवालः काबा मौज़्ज़िमा में नसब सबसे पहले बुत का नाम क्या था?

जवाबः काबा मौज़्ज़मा का सबसे बड़ा बुत हबल था।

(तफ़्सीर अलम नशरह् 96)

सवालः उन दो मर्द व औरत का नाम क्या है जिन्होंने ज़माना जाहिलियत में ज़िना किया था और उन पर क्या क़हर नाज़िल हुआ?

जवाबः मर्द का नाम इसाफ़ और औरत का नाम नाएला था। इन दोनों पर खुदा की तरफ़ से यह क़हर नाज़िल हुआ कि दोनों पत्थर बन गए। क़ुरैश ने उन्हें काबा से बाहर रख दिया ताकि लोग उन्हें देखकर इबरत हासिल करें। फिर क़ुरैश ने अपनी कमाले जिहालत और गुमराही से उन्हें पूजना शुरू कर दिया और इन दो पत्थरों से अपने सर मारने लगे। (तफ़्सीर नईमी 2/92, मदारिजुन्नबुव्वत 2/485)

सवालः हिजरत के कितने दिनों बाद काबा को क़िब्ला बनाया गया?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना मुनव्वरा में रौनक़ अफ़रोज़ी के बाद एक साल साढ़े पाँच माह तक बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ नमाज़ अदा फ़रमाते रहे। उसके बाद बैतुल मुक़द्दस का क़िब्ला मंसूख़ हो गया और काबा मौज़्ज़मा क़िब्ला बन गया। (तफ़्सीर नईमी 2/5)

इसमें इख़्तिलाफ़ है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का मुकर्रमा में तशरीफ़ लाए थे उस वक़्त आपका क़िब्ला बैतुल मुक़द्दस था या काबा मौज़्ज़मा। अकसर उलमा का ख़्याल यह है कि बैतलु मुक़द्दस ही क़िब्ला था लेकिन हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ में इस तरह रुख़ फ़रमाते थे कि काबा आपके दर्मियान होता और क़िब्ला बैतुल मुक़द्दस होता और आप इसी हाल में क़ायम रहे। यहाँ तक कि मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए। और दूसरी जमाअत का ख़्याल यह है कि पहले क़िब्ला यही काबा था और फिर बाद में मक्का में ही बैतुल मुक़द्दस को क़िब्ला बना दिया गया था। इसकी तरफ़ आप तीन साल नमाज़ें पढ़ते रहे और मदीना मुनव्वरा में रौनक़ अफ़रोज़ी के सत्रह या अठ्ठारह महीने बाद काबा को क़िब्ला बना दिया गया।

(मदारिजुन्नबुव्वत 126)

सवालः तहवीले क़िब्ला का हुक्म किस माह की किस तारीख़ को

नाज़िल हुआ था?

जवाबः हिजरत के एक साल और साढ़े पाँच महीने बाद पंद्रह रजब सन् 2 हि० बरोज़ पीर को तहवीले क़िब्ला की "वही" नाज़िल हुई।

(तफ़्सीर नईमी 2/5)

सवालः अब्रहा कितनी फ़ौज और कितने हाथियों के साथ काबा को ढाने के लिए आया था और उस हाथी का क्या नाम था जिस पर वह ख़ुद सवार था?

जवाबः अब्रहा बिन सबाह चालीस हज़ार हाथियों और तीन लाख फ़ौजियों के साथ काबा को ढाने के लिए आया था और वह ख़ुद जिस हाथी पर सवार था उसका नाम महमूद था और उसका रंग सफ़ेद था।

(मआरिजुन्नबुव्वत 149/1)

सवालः फ़रिश्तों की मस्जिद का नाम क्या है?

जवाबः फ़रिश्तों की मस्जिद का नाम बैतुल मामूर है।

(कन्ज़ुल उम्माल 11/498)

सवालः बैतुल मामूर को "बैतुल मामूर" क्यों कहते हैं?

जवाबः मामूर के माने आबाद। क्योंकि यह मस्जिद फ़रिश्तों की ज़ियारत से हर वक़्त आबाद रहती है इसी वजह से इसको बैतुल मामूर कहते हैं। (तफ़्सीर हुसैनी 13/1/493)

सवालः बैतुल मामूर किस आसमान पर वाक़ेअ है?

जवाबः इस सिलसिले में दो क़ौल हैं एक यह कि बैतुल मामूर सातवें आसमान पर ख़ाना काबा के मुक़ाबिल और सामने है। अगर कोई चीज़ बैतुल मामूर से गिराई जाए तो वह बैतुल्लाह पर आकर गिरे।

(अल बिदाया 1/142, कन्ज़ुल उम्माल 11/498)

दूसरा क़ौल यह है कि बैतुल मामूर चौथे आसमान पर वाक़ेअ है।

(हाशिया तफ़्सीर हुसैनी 13/493)

सवालः बैतुल मामूर किस चीज़ का बना हुआ है?

जवाबः बैतुल मामूर ज़मर्रुद या याक़ूत का है। दूसरा क़ौल यह है कि वह सुर्ख़ याक़ूत का बना हुआ है। (हाशिया तफ़्सीर हुसैनी 13/1/493)

सवालः बैतुल मामूर को किस नबी के लिए ज़मीन पर उतारा

गया और वह कब तक ज़मीन पर रहा?

जवाबः तारीख़ अज़राक़ी में मक़ातिल से हदीस मरफ़ूअ मज़्कूर है कि जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने बारगाहे इलाही में दुआ की कि ऐ मेरे रब! मैं अपने आपको जानता हूँ और मैंने तेरे इस नूर को देखा है जिसकी इबादत की जाती है। फिर हक़ तआला शानुहू ने बैतुल मामूर को ज़मीन पर उतारा जहाँ आज ख़ाना काबा है और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को हुक्म हुआ कि उसका तवाफ़ करें। इससे पहले उनके दिल में जो ग़म व अफ़सोस था उसे हक़ तआला ने दूर फ़रमा दिया। उसके बाद बैतुल मामूर को हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के ज़माने में आसमान पर उठा लिया गया। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/46)

सवालः बैतुल मामूर में कितने फ़रिश्ते दाख़िल होते हैं?

जवाबः रोज़ाना सत्तर हज़ार फ़रिश्ते बैतुल मामूर की ज़ियारत को आते और इसमें दाख़िल होते हैं जो फ़रिश्ता एक बार दाख़िल होता है तो फिर क़यामत तक दोबारा उसको दाख़िल होने का मौक़ा नहीं मिलता।

(अल बिदाया 1/42, मदारिजुन्नबुव्वत 1/301)

सवालः बैतुल मामूर में सबसे पहले कौन सा फ़रिश्ता दाख़िल हुआ?

जवाबः बैतुल मामूर में सबसे पहले जो फ़रिश्ता दाख़िल हुआ उसका नाम इस्माईल है। (अल बिदाया 1/42)

o o o

मस्जिदे नबवी और गुंबद ख़ज़रा के बारे में सवाल और जवाब

सवालः शुरू में जहाँ मस्जिदे नबवी तामीर की गई वह जगह
किसकी थी और मस्जिद के लिए किसने कितने में ख़रीदी?

जवाबः जिस जगह मस्जिद नबवी शरीफ़ की तामीर की गई थी वह
जगह दो यतीम बच्चों सहल और सुहैल पिसरान राफ़ेअ बिन अम्र की
थी। वह इस जगह खजूरों को सुखाकर तमर बनाते थे। नबी करीम
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, इस जगह को ख़रीद लो। तो
बनी नजार ने कहा कि हम इन दोनों यतीमों को इसकी क़ीमत अदा
करके इस ज़मीन को आपकी नज़्र करते हैं। एक रिवायत में है कि हुज़ूर
उन दोनों यतीमों ने कहा कि हम इसकी क़ीमत नहीं लेंगे। हम इसको
आपकी नज़्र करते हैं मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इंकार
फ़रमाया। और हज़रत सिद्दीक़े अकबर के उस माल में से जो वह अपने
साथ लाए थे ज़मीन की क़ीमत में दस सोने के मिस्क़ाल उनको अदा
फ़रमाए। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/115, मआरिजुन्नबुव्वत 4/1..

सवालः मस्जिद की तामीर के शुरू में मस्जिद की लंबाई और
चौड़ाई कितनी थी और उसमें कितने दरवाज़े थे?

जवाबः इब्तिदाए तामीर के वक़्त मस्जिदे नबवी शरीफ़ की लम्बाई
क़िब्ला में शुमाल तथा चौवन गज़ और मश्रिक़ से मग़रिब तक साठ गज़
थी। उस वक़्त मस्जिद शरीफ़ में तीन दरवाज़े छोड़े गए थे। एक दरवाज़ा
जिसका नाम बाबे रहमत है। दूसरा दरवाज़ा जिससे आप सल्लल्लाहु
अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए थे और तीसरा दरवाज़ा आम सहाबा किराम
के लिए था। (मदारिजुन्नबुव्वत 154)

सवालः मस्जिदे नबवी की तामीर के लिए सब सहाबा किराम ने

एक एक ईंट लाते लेकिन वह कौन से सहाबी हैं जो दो दो ईंट लाते थे?

जवाबः वह हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि सब सहाबा किराम तो एक एक ईंट लाते थे यह दो दो ईंट लाते। और फ़रमाते एक ईंट अपनी तरफ़ से और एक हुज़ूर की जानिब से।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/116)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी हयात ज़ाहिरी में कितनी बार मस्जिदे नबवी की तामीर फ़रमाई?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी हयाते ज़ाहिरी में दो बार मस्जिदे नबवी की तामीर फ़रमाई। पहली बार तो उस वक़्त जब आप मदीना मुनव्वरा रौनक़ अफ़रोज़ हुए और दूसरी बार सन् 7 हि० फ़तेह ख़ैबर के बाद। इस तामीर में मस्जिद की तौसीअ करके दोनों जानिब से सवा दो सौ गज़ कर दी गई। (मदारिजुन्नबुव्वत 117)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ललम के लिए ख़ुत्बा देने के वास्ते मस्जिदे नबवी में मिंबर किसने बनवाया था?

जवाबः मिंबर शरीफ़ के बनाने वाले के नाम में कई अक़वाल हैं:

1. हज़रत तमीम दारी रज़ियल्लाहु अन्हु ने बनवाया था।
2. क़बीसा मख़ज़ूमी ने बनाया जो एक औरत का गुलाम था।
3. हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के ग़ुलाम ने बनाया जिसका नाम सबाह या कलाब था।
4. सईद बिन आस के ग़ुलाम ने बनाया था जिसका नाम बाक़ूल था।
5. एक अंसारिया औरत के ग़ुलाम ने बनाया था जिसका नाम मीना था।
6. हज़रत सुहैल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं बाज़ ने इस बढ़ई का नाम मैमून बताया है। (तारीख़ हरमैन 97)

सवालः मस्जिदे नबवी का मिंबर शरीफ़ किस पेड़ की लकड़ी का बनाया गया था?

जवाबः मिंबर शरीफ़ असल ग़ाबा की लकड़ी का बनाया गया। असल एक पेड़ का नाम है और ग़ाबा एक जंगल का जहाँ बहुत पेड़ थे। यह

मदीना तैय्यबा से नौ मील के फ़ासले पर है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/545)

सवालः मिंबर शरीफ़ की लंबाई और चौड़ाई कितनी थी?

जवाबः मिंबर शरीफ़ की लंबाई दो गज़ थी और चौड़ाई एक गज़ थी।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/545)

सवालः मिंबर शरीफ़ की कितनी सीढ़ियाँ थीं और हर सीढ़ी की चौड़ाई कितनी थी?

जवाबः मिंबर शरीफ़ की तीन सीढ़ियाँ थीं और सीढ़ी की चौड़ाई एक बालिश्त थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तीसरी पर बैठते और दूसरी पर क़दम मुबारक रखते थे। जब हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ख़लीफ़ा मुक़र्रर हुए तो आप दूसरी सीढी पर बैठते और पहली पर क़दम रखते। जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा बने तो आप पहली सीढ़ी पर बैठते और ज़मीन पर क़दम रखते थे और जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु अमीरुल मोमिनीन चुने गए तो अपनी ख़िलाफ़त के छः साल बाद आप पहली सीढ़ी के जो हज़रत अबूबक्र सिद्दीके अकबर के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इख़्तियार फ़रमाई थी से बैठने लगे जो सैय्यदे आलम की जलवस मुबारक की जगह थी और सबब यह बताया कि आक़ा और ख़ादिम में बराबरी का इम्कान ही नहीं। बरख़िलाफ़ सिद्दके अकबर व उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा की नशिस्त गाह के वहाँ तो हम मसावात मुमकिन है।(मदारिजुन्नबुव्वत 2/545, मआरिजुन्नबुव्वत 188/4)

बरिवायत हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा मिंबर शरीफ़ की चार सीढ़ियाँ थीं। (दलाइल... 361)

सवालः मिंबर शरीफ़ पर सबसे पहले किसने ग़िलाफ़ चढ़ाया था?

जवाबः सबसे पहले जिसने मिंबर शरीफ़ पर किब्ती कपड़े का ग़िलाफ़ चढ़ाया वह हज़रत उस्मान ग़नी हैं। एक क़ौल यह है कि हज़रत माविया ने अपनी इमामत के ज़माने में सबसे पहले मिंबर शरीफ़ पर ग़िलाफ़ चढ़ाया। जिस वक़्त वह शाम से मदीना तैय्यबा आए और चाहा था कि मिंबरे रसूल को वहाँ से मुल्के शाम मुन्तक़िल करके ले जाएं। जब उन्होंने मिंबर शरीफ़ को अपनी जगह से हिलाया तो ऐसी तारीकी फैली की सारा

शहर तारीक हो गया। आफ़ताब को ग्रहन लगा हत्ताकि दिन में सितारे नज़र आने लगे। इस पर हज़रत अमीर माविया इस ख़्याल से रुक गए। और पशेमान होकर सहाबा किराम से माज़रत चाहने लगे और कहने लगे, मेरा मक़सद इसकी देखभाल ही थी कि इसको घुन वग़ैरह तो नहीं लगा। इसके बाद छः दर्जे और बढ़ाए और मिंवर शरीफ़ को उसके ऊपर रखा ताकि बुलंद हो जाए। और तमाम हाज़िरीने मस्जिद ख़तीव को देख सकें।

(मदारिजुन्नवुब्वत 2/545)

सवालः रौज़ाए रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर गुंबद सबसे पहले किसने तामीर किया और किस सन में?

जवाबः रौज़ाए रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर मलक मंसूर क़लाउन सालिही के ज़माने में सन् 678 हि० को गुंबद की तामीर हुई। इससे पहले हुजराए मुक़द्दसा के ऊपर गुंबद न था। एक रिवायत में यह है कि मज़्कूरा गुंबद कमाल अहमद बिन बरजान अब्दुल क़वी रबई ने यह सवाब की नियत से बनाया।(वफ़ाउल वफ़ा बअख़्बार दार मुस्तफ़ा 609/2)

सवालः गुंबदे ख़ज़रा को "गुंबद ख़ज़रा" कब से कहा जाने लगा? इससे पहले क्या कहा जाता था?

जवाबः गुंबद रसूल की पहली तामीर के बाद बहुत से बादशाहों ने अपने अपने दौर में उसकी तामीर जदीद और आराईश में हिस्से लिए। क्योंकि उस वक़्त गुंबद का रंग सफ़ेद था। इसलिए "क़ुब्बतुल बैज़ा" के नाम से याद किया जाता था। सन् 1233 हि० में सुलतान महमूद ने भी इसकी तामीर का शर्फ़ हासिल किया। और सन् 1255 हि० में इस गुंबद पर सब्ज़ रंग कराया। जिसके बाद इस क़ुब्बे को गुंबदे ख़ज़रा कहा जाने लगा।

(माहाना अशरफ़िया शुमारा जून 1998 ई०)

○ ○ ○

औरतों और बच्चों के बारे में सवाल और जवाब

सवालः औरतों में सबसे पहले किसने ऊन कातकर सूत तैयार किया?

जवाबः वह हज़रत हव्वा हैं कि सबसे पहले ऊन कातकर सूत तैयार किया।

सवालः औरतों में सबसे पहले सीने का काम किसने किया?

जवाबः वह हज़रत सारा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं कि औरतों में सबसे पहले सीने का काम किया।

सवालः औरतों में सबसे पहले किसको हदे कज़फ़ लगाई गई?

जवाबः औरतों में हज़रत हमना रज़ियल्लाहु अन्हा को हदे कज़फ़ लगाई गई। (तारीख़े इस्लाम, मोहसिने इंसानियत)

सवालः औरतों में सबसे पहले कान किसके बींधे गये?

जवाबः औरतों में सबसे पहले हज़रत हाजरा रज़ियल्लाहु अन्हु के कान बींधे और छेदे गए।

सवालः औरतों में सबसे पहले किसने मुशिरक को क़त्ल किया?

जवाबः मुशिरक को क़त्ल करने वाली सबसे पहली औरत हज़रत सफ़िया बिन्त अब्दुल मुत्तलिब हैं।

सवालः शीर ख़्वारी की उम्र में कितने बच्चों ने गवाही दी?

जवाबः शीरख़्वारी की उम्र में चार बच्चों ने गवाही दीः

1. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम।

2. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर फ़िरऔन को शुब्हा हुआ तो फ़िरऔन की बेटी के बाल संवारने वाली औरत की बच्ची ने गवाही दी।

3. बनी इस्राईल के बुज़ुर्ग हज़रत जरीह पर ज़िना की तोहमत की एक बड़ी साज़िश बांधी गई तो एक नौ ज़ाएदा बच्चे ने उनकी बराअत की शहादत दी।

4. ज़ुलेख़ा की तोहमत पर उस घर के एक बच्चे ने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम

की बेगुनाही की शहादत दी। (हयातुल हैवान 1/90, इब्ने कसीर 12/13)

सवालः गहवारे में कितने बच्चों ने कलाम किया?

जवाबः कुल ग्यारह बच्चों ने गहवारे में कलाम कियाः

1. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
2. हज़रत याहया अलैहिस्सलाम,
3. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम
4. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम,
5. हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा,
6. हज़रत जरीह की गवाही देने वाला बच्चा,
7. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का गवाह,
8. खाई वालों का बच्चा।
9. उस लौंडी का बच्चा जिस पर ज़मानए बनी इस्राईल में ज़िना की तोहतम लगाई गई थी,
10. हज़रत आसिया ज़ौजा फ़िरऔन की ख़ादिमा का वह बच्चा जिसे खौलते तेल में जलाया गया,
11. यहूदी का वह बच्चा जो अपने माँ बाप को लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हुआ और सलात व सलाम अर्ज़ किया। (तफ़सीर नईमी 3/462)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत के क़रीब कितने लोगों ने इस उम्मीद पर अपने बच्चों का नाम मुहम्मद रखा कि नबी आख़िरुज़्ज़मां वही हों?

जवाबः बारह लोगों ने यह बात सुनकर कि ज़माना आख़िरुज़्ज़मां का क़रीब ही है। उनका नाम पाक मुहम्मद होगा अपनी औलाद का नाम मुहम्मद रखा, इस उम्मीद पर कि नबी आख़िरुज़्ज़मा वही हों। और अजाएब क़ुदरते इलाही से यह कि उनमें से किसी ने भी दावा नबुव्वत न किया और न वह लोग इस नाम से मशहूर हुएः

1. मुहम्मद बिन अदी
2. मुहम्मद बिन अजख़ा,
2. मुहम्मद बिन उसामा,
4. मुहम्मद बिन बर्रा,
5. मुहम्मद बिन हारिस,
6. मुहम्मद बिन ख़ज़ाई,

7. मुहम्मद बिन ख़ौली, 8. मुहम्मद बिन यहमद,
9. मुहम्मद बिन क़समी, 10. मुहम्मद बिन मुसैलमा,
11. मुहम्मद बिन ख़ज़मान तारी, 12. मुहम्मद बिन हरमान जाफ़ी,

इनमें से मुहम्मद बिन मुसैलमा और मुहम्मद बिन वर्रा मुसलमान हैं।
(तफ़्सीर अलम नशरह 192)

सवालः बतने मादर में बच्चे के अंदर रूह कब डाली जाती है?

जवाबः वतने मादर में वच्चे के अंदर चार माह में रूह डाली जाती है।
(सावी)

सवालः उस सहाबिया का क्या नाम है जो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में औरतों को गुस्ल दिया करती थीं?

जवाबः वह हज़रत उम्मे अतिया रज़ियल्लाहु अन्हा हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में औरतों को गुस्ल दिया करती थीं। इसी वजह से उनका लक़ब ग़साला पड़ गया था। असल नाम नसीबा है। (बुख़ारी 168)

सवालः हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तरह औरतों में बेमिस्ल हसीन कौन थीं?

जवाबः जिस तरह मर्दों में हज़रत यूसुफ़ बेमिस्ल हसीन थे इसी तरह औरतों में हज़रत सारा रज़ियल्लाहु अन्हा बेमिस्ल हसीन थीं बल्कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का हुस्न हज़रत सारा ही की मीरास था।
(तफ़्सीर नईमी 1/840)

सवालः वह कौनसी औरत है जिन्होंने सबसे पहले बैतुल्लाह में रेशम का ग़िलाफ़ चढ़ाया?

जवाबः हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की वालिदा नतीला बिन्ते हबाब सबसे पहली अरब औरत हैं कि जिन्होंने वैतुल हराम में देबा (रेशमी कपड़े) का गिलाफ़ चढ़ाया। इसलिए कि हज़रत अब्बास बचपने में गुम हो गए थे तो उनकी वालिदा ने नज़्र मानी थी कि वह आ जाएं तो बैतुल्लाह पर ग़िलाफ़ चढ़ाएंगी। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/341)

○ ○ ○

फ़रिश्तों के बारे में सवाल और जवाब

सवालः फ़रिश्ते ज़मीन पर कब आबाद किए गए?

जवाबः हक़ तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश से साठ हज़ार साल पहले मलाकइका को आमसान पर बसाया और जिन्नात को ज़मीन पर। जिन्नात ज़मीन पर सात हज़ार साल आबाद रहे। फिर उनका आपस में हक़द व हसद और बुग्ज़ व किना शुरू हुआ। चुनाँचे उन्होंने आपस में ख़ूब ख़ूं रेज़ी व जंग व जदाल किया। उस वक़्त तक इब्लीस कि जिसका नाम अज़ाज़ील था बहुत मक़्बूल बारगाहे इलाही था। और तमाम मलाइका में बड़ा आलिम व आबिद। उसको हुक्म हुआ कि अपने साथ फ़रिश्तों की एक जमाअत ले जा और जिन्नात को ज़मीन में से निकालकर जज़ीरों और पहाड़ों की तरफ़ धकेल दे। चुनाँचे इब्लीस ख़बीस ने ऐसा ही किया। जो फ़रिश्ते कि इब्लीस के साथ आए थे वे ज़मीन में आबाद किए गए। इस तरह अब फ़रिश्तों के दो हिस्से हो गए, एक ज़मीन वाले और दूसरे आसमान वाले। (तफ़्सीर नईमी 1/279)

सवालः फ़रिश्तों की कितनी क़िस्में है?

जवाबः मलाइका चंद क़िस्म के हैं:

1. अर्श के उठाने वाले, 2. अर्शे आज़म के गिर्द घूमने वाले, 3. जलीलुल क़द्र मलाइका जेसे जिब्राईल अलैहिस्सलाम व मीकाईल अलैहिस्सलाम, 4. जन्नत के फ़रिश्ते, 5. मलाइका जहन्नम, 6. वे जो इंसान की हिफ़ाज़त पर मामूर किए गए हैं, 7. आमालनामे लिखने वाले जिसे किरामन कातिबीन कहते हैं, 8. वे जिनके सुपुर्द दुनिया के इंतिज़ामात हैं, फिर इनकी बहुत सी क़िस्में है। मसलन पानी बरसाने वाले, रहमे मादर में बच्चे बनाने वाले, मुसीबत में इंसानों की मदद करने वाले वग़ैरह वग़ैरह। (तफ़्सीर नईमी 2/279)

सवालः फ़रिश्तों की तादाद कितनी है?

उनकी तादाद हद व हिसाब से बाहर है। उनकी कसरत का यह हाल है कि कि साहब तफ़्सीर कबीर रूहुल बयान वग़ैरह ने फ़रमायाः इंसान व जिन्नात का दसवाँ हिस्सा हैं। जिन्न व इन्स खुश्की के जानवरों का दसवाँ हिस्सा। ये सब मिलकर परिन्दों का दसवाँ हिस्सा। फिर ये सब मिलकर दरियाई जानवरों का दसवाँ हिस्सा और ये सब मिलकर ज़मीन के फ़रिश्तों का दसवाँ हिस्सा। फिर ये सब मिलकर पहले आसमान के फ़रिश्तों का दसवाँ हिस्सा। ये दूसरे आसमान के फ़रिश्तों का दसवाँ हिस्सा। इसी तरह सातवें आसमान तक यही तर्तीब है। फिर ये तमाम मख़्लूक़ात मिलकर कुर्सी के फ़रिश्तों के मुक़ाबिल बहुत कम। ये सब मिलकर अर्शे आज़म के एक पर्दे के फ़रिश्तों के मुक़ाबले में बहुत कम। ख़्याल रहे कि अर्शे आज़म के छः लाख पर्दे हैं। हर पर्दे में इसी क़द्र मलाइका हैं। फिर ये तमाम मख़्लूक़ उन फ़रिश्तों के मुक़ाबले में जो अर्शे आज़म के इर्दगिर्द घूमते रहते हैं ऐसे हैं जैसे दरिया के मुक़ाबले में क़तरा। इससे मालूम हुआ कि सबसे बड़ी मख़्लूक़ फ़रिश्ते ही हैं। उनकी तादाद रब्ब तबारक तआला ही जानता है। इसी जगह यह रिवायत भी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शबे मैराज में एक जगह फ़रिश्तों की क़तारें जाती हुई देखीं। जिब्राईल अलैहिस्सलाम से दर्याफ़्त फ़रमायाः ये कहाँ जा रहे हैं? जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं जब से पैदा हुआ हूँ इस क़तार को ऐसे ही जाते देख रहा हूँ। मुझे ख़बर नहीं है कि कहाँ से आ रहे हैं और कहाँ जा रहे हैं। फ़रमायाः चलो, इनसे पूछें। चुनाँचे उनमें से एक से सवाल किया गयाः तेरी उम्र कितनी है? उसने जवाब दियाः मुझे ख़बर नहीं। हाँ इतना जानता हूँ कि रब तबारक तआला हर चार लाख साल बाद एक तारा पैदा फ़रमाता है और मैंने ऐसे चार लाख तारे पैदा होते देखे हैं।

(तफ़्सीर नईमी 1/278)

सवालः आसमाने अव्वल के ख़ाज़िन फ़रिश्ते का नाम क्या है और उनके मातहत कितने फ़रिश्ते हैं?

जवाबः इस ख़ाज़िन फ़रिश्ते का नाम इस्माईल अलैहिस्सलाम है और

इनके तावे बारह हज़ार ऐसे फ़रिश्ते हैं कि उनमें से हर फ़रिश्ते के मातहत बारह हज़ार जमियत है। एक रिवायत में एक लाख फ़रिश्ते हैं कि हर के ज़ेरे हुक्म एक एक लाख और फ़रिश्ते हैं। एक और रिवायत में इन फ़रिश्तों की तादाद सात लाख है। जो इस्माईल अलैहिस्सलाम की मातहती में है और इनमें से हर के मातहत सात सात लाख फ़रिश्ते।

(मअरिजुन्नवुव्वत 3/98)

सवालः आसमाने अव्वल के फ़रिश्तों की तस्बीह क्या है?

जवाबः इन फ़रिश्तों की तस्बीह यह हैः

سبحان الملك الاعلى سبحان العلى الاعلى سبحان من ليس كمثله شئ

(मअरिजुन्नवुव्वत 3/99)

सवालः आसमान अव्वल के फ़रिश्ते किस हालत में मसरूफ़ इबादत हैं?

जवाबः ये तमाम फ़रिश्ते सफ़-ब-सफ़ हालते क़याम में खुशू व खुज़ू के साथ हर वक़्त इबादत में मसरूफ़ हैं। (मअरिजुन्नवुव्वत 3/99)

सवालः दूसरे आसमान के दरबान फ़रिश्ते का नाम क्या है और उनके मातह कितने फ़रिश्ते हैं?

जवाबः उनका नाम इसराफ़ील अलैहिस्सलाम है। उनकी फ़रमांबरदारी में दो लाख मलाइका हैं कि उनमें से हर के मातहत दो दो लाख फ़रिश्ते हैं।

(मअरिजुन्नवुव्वत 3/102)

सवालः दूसरे आसमान के फ़रिश्तों की तस्बीह क्या है?

जवाबः उनकी तस्बीह यह हैः

سبحان الله كل ما يسبح الله مسبح والحمد لله كل احمدالله حامد

ولا اله الا الله كلما هلل الله والله اكبر كلما كبر الله مكبر.

(मअरिजुन्नवुव्वत 3/102)

सवालः दूसरे आसमान के फ़रिश्ते किस हालत में मसरूफ़ इबादत हैं?

जवाबः ये फ़रिश्ते हर वक़्त हालते रुकू में मसरूफ़ इबादत हैं।

(मअरिजुन्नवुव्वत 3/103)

सवालः तीसरे आसमान के ख़ाज़िन फ़रिश्ते का नाम क्या है?

जवाबः इस आसमान के दरबान फ़रिश्ते का नाम सरहाइल अलैहिस्सलाम है। (मअरिजुन्नबुव्वत 3/103)

सवालः तीसरे आसमान के ख़ाज़िन फ़रिश्ते के ज़ेरे हुक्म कितने फ़रिश्ते हैं?

जवाबः इनके ज़ेरे हुक्म ऐसे तीन लाख फ़रिश्ते हैं कि उनमें से हर एक के तावे तीन तीन लाख दीगर फ़रिश्ते हैं। (मअरिजुन्नबुव्वत 3/102)

सवालः तीसरे आसमान के फ़रिश्तों की तस्बीह क्या है?

जवाबः इन फ़रिश्तों की तस्बीह यह हैः

سبحان معطی الوهاب سبحان فتاح العليم سبحان المجيب لمن دعاه

(मअरिजुन्नबुव्वत 3/102)

सवालः तीसरे आसमान के फ़रिश्ते किस हालत में मसरूफ़ इबादत हैं?

जवाबः हर वक़्त सज्दे की हालत में अल्लाह की इबादत में मसरूफ़ हैं। (मअरिजुन्नबुव्वत 3/102)

सवालः चौथे आसमान के सरदार फ़रिश्ते का नाम क्या है और उनके ज़ेरे इताअत कितने फ़रिश्ते हैं?

जवाबः उनका नाम एक रिवायत में इज़राईल, एक रिवायत में मूज़ियाईल और एक रिवायत में मूमियाईल है। उनकी इताअत में चार लाख मलाइका हैं कि जिनमें से हर के ज़ेरे हुक्म चार चार लाख फ़रिश्ते हैं। (मअरिजुन्नबुव्वत 3/103)

सवालः चौथे आसमान के फ़रिश्तों की तस्बीह क्या है?

जवाबः उनकी तस्बीह हैः

سبحان خالق الظلمات والنور سبحان خالق الشمس
والقمر المنير سبحان الرفيق الاعلىٰ

(मअरिजुन्नबुव्वत 103)

सवालः चौथे आसमान के फ़रिश्ते किस हालत में मसरूफ़ इबादत हैं?

जवाबः ये फ़रिश्ते अल्लाह की इबादत हालते क़ादे में रहते हैं।

(मअरिजुन्नबुव्वत 3/104)

सवालः पाँचवें आसमान के ख़ाज़िन फ़रिश्ते का नाम क्या है और उनकी फ़रमांबरदारी में कितने फ़रिश्ते हैं?

जवाबः उनका नाम सक़ताईल है और उनके तावे पाँच लाख ऐसे फ़रिश्ते हैं कि उनमें से हर के मातहत पाँच पाँच लाख फ़रिश्ते हैं।

(मअरिजुन्नबुव्वत 106)

सवालः पाँचवे आसमान के फ़रिश्तों की तस्बीह क्या है?

जवाबः उनकी तस्बीह यह है:

قدوس قدوس ربّ الارباب سبحان ربنا على الاعظم

قدوس قدوس رب الملئكة والروح

(मअरिजुन्नबुव्वत 106)

सवालः पाँचवे आसमान के फ़रिश्ते किस हालत में मसरूफ़ इबादत हैं?

जवाबः ये फ़रिश्ते हर वक़्त क़याम में मसरूफ़ इबादत रहते हैं।

(मअरिजुन्नबुव्वत 106)

सवालः छठे आसमान के सरदार फ़रिश्ते का नाम क्या है और उनके ज़ेरे हुक्म कितन फ़रिश्ते हैं?

जवाबः इस सरदार फ़रिश्ते का नाम रूआईल अलैहिस्सलाम है। उनके ज़ेरे हुक्म छः लाख फ़रिश्ते हैं और उनमें से हर एक की मातहती में छः छः लाख दीगर फ़रिश्ते हैं। (मअरिजुन्नबुव्वत 3/107)

सवालः छठे आसमान के फ़रिश्तों की तस्बीह क्या है?

जवाबः उनकी तस्बीह इस तरह है:

سبحان الله الكريم سبحان النور المبين سبحانه من اله

من في السموت واله من في الارض

(मअरिजुन्नबुव्वत 3/107)

सवालः छठे आसमान के फ़रिश्ते किस हालत में मसरूफ़ इबादत हैं?

जवाबः ये फ़रिश्ते हालते क़ौमा में इबादत गुज़ार हैं।

(मआरिजुन्नबुव्वत 3/107)

सवालः सातवें आसमान के दरबान फ़रिश्ते का नाम क्या है और उनके मातहत कितन फ़रिश्ते हैं?

जवाबः उनका नाम रूहाईल अलैहिस्सलाम है। सात लाख मलाइका उनके मुतीअ व फ़रमांबरदार हैं कि उनमें से हर एक सात सात लाख फ़रिश्तों का हाकिम है। (मआरिजुन्नबुव्वत 3/106)

सवालः सातवें आसमान के फ़रिश्तों की तस्बीह क्या है?

जवाबः उनकी तस्बीह यह है:

سبحان الذی بسط السموت فرفعها سبحان الذی سطح الارضین ففرشها

سبحان الذی اطلع الکواکب وازهرها سبحان الذی ارسٰی الجبال فیہا ها

(मआरिजुन्नबुव्वत 3/109)

सवालः सातवें आमसामन के फ़रिश्ते किस हालत में मसरूफ़ इबादत हैं?

जवाबः ये फ़रिश्ते क़याम की हालत में अल्लाह की इबादत में मसरूफ़ हैं। (मआरिजुन्नबुव्वत 3/109)

सवालः अव्वलीन फ़रिश्ता जिसने सजदा किया कौन है?

जवाबः अव्वल फ़रिश्ता जिसने सज्दा किया वह इसराफ़ील अलैहिस्सलाम हैं।

(अल बिदाया 1/46)

सवालः फ़रिश्तों की मस्जिद का नाम क्या है और वह कहाँ है?

जवाबः उसका नाम बैतुल मामूर है जो सातवें आसमान पर बैतुल्लाह शरीफ़ के बिलमुक़ाबिल है। अगर कोई चीज़ बैतुल मामूर से गिराई जाए तो वह ठीक बैतुल्लाह पर आकर गिरेगी। एक क़ौल यह है कि यह छटे आसमान पर है। (अल बिदाया 1/42, कन्ज़ुल उम्माल 11/498)

सवालः आसमानी फ़रिश्तों का क़िब्ला क्या है?

जवाबः उन फ़रिश्तों का क़िब्ला अर है। (अजाइबुल मख़्लूक़ात 41)

सवालः हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम के कितने बाज़ू हैं?

जवाबः जिब्राईल अलैहिस्सलाम के छः सौ बाज़ू हैं।(इब्ने कसीर 27/5)

सवालः जिब्राईल अलैहिस्सलाम के घोड़े का नाम क्या है?

जवाबः जिब्राईल अमीन के घोड़े का नाम हैज़ूम है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/160)

सवालः फ़रिश्तों ने कितने और किन किन हज़रात को ग़ुस्ल दिया?

जवाबः तीन हज़रात कोः

1. हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को, 2. हज़रत हंज़ला बिन अबि आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु। (हदाया 1/183)

3. हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम की शहादत से मुताल्लिक़ एक रिवायत है कि जब काफ़िरों ने आपको चीर कर बीच से दो टुकड़े कर दिए तो ख़ुदा तआला ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया और फ़रिश्तों ने ग़ुस्ल देकर आपकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। (नज़हतुल मजालिस 113)

सवालः उस फ़रिश्ते का क्या नाम है कि शब क़दर को आमाल का नुस्ख़ा जिसके हवाले किया जाता है?

जवाबः उसका नाम इस्माईल है। (रूहुल मानी 52/113)

सवालः वह कौन सा फ़रिश्ता है जो जब से पैदा हुआ सिवाए एक बार के न कभी हंसा और न कभी हंसेगा?

जवाबः वह हज़रत मालिक अलैहिस्सलाम हैं। शबे मैराज को रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखकर पहली बार हंसे थे। इससे पहले न कभी हंसे थे और न कभी हंसेंगे। (मआरिजुन्नबुव्वत 108)

सवालः जिब्राईल अलैहिस्सलाम जब इंसानी शक्ल में दुनिया में आते थे तो उस वक़्त आप किस रंग के कपड़ों में मलबूस होते थे?

जवाबः उस वक़्त आपके कपड़े सफ़ेद और बाल स्याह होते थे।

(तफ़्सीर नईमी 1/688)

सवालः फ़रिश्ते किस रंग की पगड़ियाँ पहनकर मैदाने जंग में इस्लामी लश्करों की मदद के लिए आते थे?

जवाबः जंगे बदर में फ़रिश्ते स्याह पगड़ियों में और जंगे ओहद में सुर्ख़ पगड़ियों, दूसरी रिवायत में ज़र्द पगड़ियों में देखे गए। और उनके घोड़े चितकबरे रंग के थे। (तफ़्सीर नईमी 4/144)

हज़रत इब्ने अबि हातिम व उरवा बिन ज़ुबैर के मुताबिक़ जंगे बद्र में मलाइका की पगड़ियों का रंग ज़र्द था। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के मुताबिक़ सफ़ेद। और इब्ने मरविया के मुताबिक़ उनका रंग काला था। (हाशिया 2, जलालैन 60)

और जंगे हुनैन में सुर्ख़ रंग की पगड़ियाँ थीं।

(हाशिया 13 जलालैन 157)

सवालः रूह क़ब्ज़ करने के लिए मलकुल मौत कितने फ़रिश्तों को अपने हमराह लेकर चलते हैं?

जवाबः मोमिनों की रूह क़ब्ज़ करने के लिए मलकुल मौत अपने साथ रहमत के छः लाख फ़रिश्ते लाते हैं और काफ़िरों के छः लाख अज़ाब के फ़रिश्ते उनके साथ होते हैं। (मअरिजुन्नबुव्वत 3/105)

सवालः उस फ़रिश्ते का क्या नाम है जो क़यामत के दिन ज़मीन को पलटेगा?

जवाबः इस फ़रिश्ते का नाम रियाफ़ील है।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 1/60)

सवालः वह कौन सा फ़रिश्ता है जिसकी पेशानी पर सारा क़ुरआन लिख दिया गया है?

जवाबः वह हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम हैं।

(तफ़्सीर नईमी 1/309)

सवालः वह कौन सा फ़रिश्ता है जो क़यामत के दिन लोगों को मैदाने हशर की तरफ़ बुलाएगा?

जवाबः वह हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम हैं कि निदा तो हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम देंगे और सूर हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम फूंकेंगे। (सावी 3/63)

सवालः हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम के मातहत कितने फ़रिश्ते हैं और उनकी तस्बीह क्या है?

जवाबः आपके ज़ेरे हुक्म सात लाख ऐसे मलाइका हैं कि उनमें से हर एक के मातहत सात सात लाख मलाइका हैं। और उनकी तस्बीह यह है

سبحان السميع العليم سبحان المحتجب من خلقه سبحان ربنا وتعالىٰ

(मअरिजुन्नबुव्वत 3/110)

सवालः जन्नत के ख़ाज़िन फ़रिश्ते का क्या नाम है?

जवाबः उनका नाम रिज़वान अलैहिस्सलाम है।

(मअरिजुन्नबुव्वत 3/137)

सवालः दोज़ख़ के ख़ाज़िन फ़रिश्ते का क्या नाम है?

जवाबः उन फ़रिश्ते का नाम मालिक अलैहिस्सलाम है।

(अल अतक़ान फी उलूमुल क़ुरआन फी उलूमुल क़ुरआन 1/60)

सवालः हज़रत मालिक अलैहिस्सलाम जिस मिंबर के पास बैठे हैं उस मिंबर के कितन पाए हैं?

जवाबः मालिक अलैहिस्सलाम स्याह मिंबर पर बैठे हुए हैं। उस मिंबर के आठ लाख पाए हैं। (मअरिजुन्नबुव्वत 3/108)

सवालः हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम किस नबी की ख़िदमत में कितनी बार हाज़िर हुए?

जवाबः बाज़ उलमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम चौबीस हज़ार मर्तवा नाज़िल हुए, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर बारह मर्तबा, हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम पर चार मर्तवा, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम पर पचास मर्तवा, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर बयालिस मर्तवा, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर एक सौ चार मर्तबा और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर दस मर्तवा।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/57)

○ ○ ○

जिन्नात के बारे में सवाल व जवाब

सवालः जिन्नात किस दिन पैदा किए गए?

जवाबः हज़रत अबुल आलिया फ़रमाते हैं:

जिन्नात को जुमेरात के दिन पैदा किया गया। (इब्ने कसीर 1/4)

सवालः जिन्नात ज़मीन पर कब आबाद हुए?

जवाबः अल्लाह जल्ले शानुहू ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश से साठ हज़ार साल पहले जिन्नात को ज़मीन में बसाया था। (तफ़्सीर नईमी 1/279)

सवालः जिन्नात ज़मीन पर कितने सालों तक आबाद रहे?

जवाबः जिन्नात ज़मीन पर सात हज़ार साल तक आबाद रहे। (तफ़्सीर नईमी 1/279)

सवालः जिन्नात को ज़मीन से क्यों भगाया गया और किसने भगाया?

जवाबः जिन्नात जब ज़मी पर आबाद हुए तो उनका आपस में हसद व हक़द शुरू हुआ। उन्होंने ज़मीन पर फ़साद किया, ख़ून बहाया और क़त्ल व ग़ारत किया। इब्लीस जो उस वक़्त तक बहुत मक़्बूल बारगाहे इलाही था उसे हुक्म हुआ कि अपने साथ फ़रिश्तों की एक जमाअत ले जा और जिन्नात को ज़मीन से निकालकर पहाड़ों और जज़ीरों की तरफ़ धकेल दे। चुनाँचे इब्लीस ने ऐसा ही किया। उसने अपने साथियों के साथ जिन्नात को मार मार कर पहाड़ों और जज़ीरों पर भगा दिया। (तफ़्सीर नईमी 1/179, इब्ने कसीर 1/4)

सवालः जिन्नात को ज़मीन से भगाने का वाक़िआ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश से कितने साल पहले का है?

जवाबः यह वाक़िआ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश से दो

हज़ार साल पहले का है।

(इब्ने कसीर 1/4)

ऊपर तफ़्सीर नईमी का जो क़ौल गुज़रा कि "जिन्नात ज़मीन पर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश से साठ हज़ार साल पहले बसाए गए और सात हज़ार साल तक ज़मीन पर आबाद रहे।" इससे मालूम हुआ कि जिन्नात को ज़मीन से निकालने वाला वाक़िआ विलादत आदम अलैहिस्सलाम से तिरेप्पन हज़ार साल पहले पेश आया। (मुअल्लिफ़)

सवालः जिन्नात की कितनी क़िस्में हैं?

जवाबः जिन्नता की तीन क़िस्में हैं:

1. वे जिनके पर होते हैं और वे हवा में उड़ते हैं।
2. वे जो सांपों की शक्ल में रहते हैं।
3. वे जो इंसानों की तरह हैं।

(हयातुल हैवान)

सवालः किस क़िस्म के जिन्नात से हिसाब व किताब होगा?

जवाबः तीसरी क़िसम के जिन्नात से यानी जो इंसानों की तरह है।

(हयातुल हैवान)

सवालः जो जिन्नात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए थे उनकी तादाद कितनी थी?

जवाबः जिन्नात की इस जमाअत की तादाद में इख़्तिलाफ़ है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि सात जिन्न थे। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि ये नौ थे। बाज़ हज़रात से मरवी है कि ये पंद्रह थे। एक रिवायत में है कि साठ ऊँटों पर आए थे। एक रिवायत में यह है कि ये तीन सौ थे। एक रिवायत में छः हज़ार की तादाद है। और यह भी मरवी है कि बारह हज़ार थे। इन सबमें ततबीक़ यह है कि क्योंकि कई वफ़्द आए थे मुमकिन है कि किसी में सात, नौ ही हों किसी में ज़्यादा और किसी में उससे भी ज़्यादा।

(इब्ने कसीर 26/4 मदारिजुन्नबुव्वत 83)

सवालः जो जिन्नात इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए थे उनके नाम क्या हैं?

जवाबः उनके नाम ये हैं:

1. हस्सी, 2. हस्सा, 3. मन्सी, 4. सासिर, 5. नासिर, 6. अलादर

बयान, 7. अलाहम।

इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि ये नौ थे एक का नाम रदिया था। वाज़ ने कहा है कि इनके सरदार का नाम वरदान था।

(इब्ने कसीर 26/4)

अल्लामा स्युती रहमतुल्लाह अलैहि ने ग्यारह नाम गिनवाए हैं:

1. ज़ौविया, 2. हिस्सी, 3. मिस्सी, 4. शासिर, 5. मासिर, 6. मुंशी, 7. नाशी, 8. हक्व, 9. सरक़, 10. वरदान, 11. उमर विन जाविर।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 1/191)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जो जिन्नात ईमान लाए वे कहाँ के रहने वाले थे?

जवाबः हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाह अलैहि कहते हैं:

ये जिन्नात नसीवैन के रहने वाले थे। हज़रत इब्ने मसऊद फ़रमाते हैं कि यह असल नख़ला से आए थे। अबू हम्ज़ा शिमाल का कहना है कि वून शैसान के थे। हज़रत इकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल है कि यह जज़ीरा मौसल से आए थे। (इब्ने कसीर 26/4)

सवालः मुसलमान जिन्नों ने जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज़ाद व तोशा तलव किय तो आपने उनके लिए क्या ज़ाद व तोशा मुक़र्रर फ़रमाया?

जवाबः हज़रत अब्दुल्लाह विन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जव उन्होंने ज़ाद व तोशा तलव किया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हड्डियाँ उनके लिए तोशा और गोवर उनका चारा मुक़र्रर फ़रमाया। और फ़रमायाः हर हड्डी उनके हाथ लगते ही ऐसी हो जाएगी जैसी उस वक़्त थी जव खाई गई यानी गोश्त वाली होकर उन्हें मिलेगी। और गोवर में भी वही दाने पाए जाएंगे जो उस रोज़ थे जव वे दाने खाए गए थे। वस कोई शख़्स भी हड्डी व गोवर से इस्तिन्जा न करे।

(इब्ने कसीर 26/4)

सवालः जबले अबू क़ैस पर खड़े होकर जिस जिन्न ने बुतों की हिमायत की थी और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुश्मनी पर काफ़िरों और मुश्रिकों को जोश दिलाया था उसका नाम क्या है?

जवाबः उस जिन्नत का नाम मुसअर था। (मअरिजुन्नबुव्वत 37/3)

सवालः कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन को जोश दिलाने वाले उस जिन्न का किस जिन्न ने क़त्ल किया?

जवाबः उसका नाम समह या मसमह था। नबी करीम सल्लललाहु अलैहि वसल्लम ने उसका नाम बदलकर अब्दुल्लाह रखा।

(मअरिजुन्नबुव्वत 3/37)

सवालः उस जिन्न का क्या नाम है जो हज़रत नूह अलैहिस्सलाम से लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक हर नबी की ख़िदमत में हाज़िर होता रहा?

जवाबः हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हम रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर थे। एक बूढ़ा आदमी लकड़ी हाथ में लिए हुए आया। उसने आपको सलाम किया। हुज़ूर ने सलाम का जवाब दिया और फ़रमायाः यह जिन्न की आवाज़ है। फिर फ़रमायाः तू कौन है? उसने कहाः मैं हामा बिन अलीम बिन इलक़ीस बिन इबलीस हूँ। मैंने हज़रत नूह अलैहिस्सलाम से भी मुलाक़ात की है और उनके बाद हर नबी से मिलता रहा हूँ (अब आपकी ख़िदमत में हाज़िर हूँ)।

○ ○ ○

शैतानों के बारे में सवाल व जवाब

सवालः इब्लीस की पैदाइश किस तरह हुई?

जवाबः शेख़ फ़रीदुद्दीन अत्तार रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमायाः अल्लाह जल्ले शानुहू ने दरकाए सिज्जीन में भेड़िया और साँप की शक्ल में दो सूरतें पैदा फ़रमायीं। दोनों ने आपस में जुफ़्ती खाई और अल्लाह तआला ने उनसे इब्लीस को पैदा फ़रमाया।

(मअरिजुन्नबुव्वत 15/1)

सवालः इब्लीस के बाप का और माँ का नाम क्या है?

जवाबः उसके बाप का नाम ख़बलीस था जिसकी शकल शेर या साँप की मानिन्द थी और माँ का नाम नबलीस जिसकी शक्ल भेड़िए की मानिन्द थी। (मअरिजुन्नबुव्वत 1/181)

सवालः रांदाए बारगाह से पहले इब्लीस का क्या नाम था?

जवाबः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमायाः उसका पहला नाम अज़ाज़ील था। इमाम सुद्दी रहमतुल्लाह अलैहि कहते हैं कि उस वक़्त उसका नाम हारिस था। और ख़त्ताबी रहमतुल्लाह अलैहि ने बयान किया है कि उसका नाम फ़तरा था।

(अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/181)

सवालः इब्लीस का नाम इब्लीस क्यों हुआ?

जवाबः खुदाए पाक की सरीह नाफ़रमानी और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से बुग़ज़ व इनाद की वजह से वह खुदाए करीम की हर नेमत व रहमत से मायूस कर दिया गया या वह नेकी व बदी को बंदगाने खुदा के लिए ख़लत मलत कर देता है इसलिए इब्लीस नाम से मशहूर हो गया। (तफ़्सीर नईमी 1/310, अल अतक़ान 2/181)

सवालः इब्लीस की कुन्नियत और लक़ब क्या है?

जवाबः उसकी कुन्नियत अबू करदोसी या अबू क़तरा या अबू मर्रा या अबू लबीनी है। (अल अतक़ान 2/181)

और लक़ब शेख़ नजदी। (लुग़ात किशोरी 436)

सवालः इब्लीस कितने सालों तक जन्नत का ख़ज़ांची रहा?

जवाबः हज़रत कअब अहबार रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः

शैतान चालीस हज़ार साल तक जन्नत का ख़ज़ांची रहा।(सवी 1/22)

सवालः इब्लीस ने अर्श का तवाफ़ कितने साल तक किया?

जवाबः चौदह हज़ार साल तक। (सावी 1/50, जमल 1/50)

सवालः इब्लीस कितने सालों तक मलाइका का सरदार रहा?

जवाबः अस्सी हज़ार साल तक मलाइका के साथ रहा। जिसमें से बीस हज़ार साल तक मलाइका को वअज़ व नसीहत करता रहा। तीस हज़ार साल तक मलाइका करों बय्यीन का सरदार रहा और एक हज़ार साल तक मलाइका रूहानीन का सरदार रहा। (जमल 1/50)

सवालः इब्लीस किस आसमान में किस नाम से पुकारा जाता था?

जवाबः हज़रत कअब अहबार रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि इब्लीस ख़सीस को आसमाने अव्वल पर आबिद के नाम से पुकारा जाता था। आसमान दोम पर ज़ाहिद, तीसरे पर आरिफ़, चौथे पर वली, पाँचवें पर तक़ी, छठे पर ख़ाज़िन और सातवें आसामन पर अज़ाज़ील के नाम से पुकारा जाता था। (मल 1/50)

बरिवायत दीगर पहले आसमान पर आबिद, दूसरे पर राकेअ, तीसरे पर साजिद, चौथे पर ख़ाशेअ, पाँचवें पर सानित, छठे पर मुजतहिद और सातवें पर ज़ाहिद के नाम से पुकारा जाता था। (नज़्हतुल मजालिस 7/82)

सवालः इब्लीस पर सबसे पहले लानत किसने की?

जवाबः सबसे पहले जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने लानत व मलामत की फिर मीकाईल अलैहिस्सलाम ने फिर इसराफ़ील अलैहिस्सलाम ने फिर इज़राईल अलैहिस्सलाम ने। (मअरिजुन्नबुव्वत 1/39)

सवालः इब्लीस आसमान से दुनिया में किस दिन उतारा गया?

जवाबः मंगल के दिन।

(मलफ़ूज़ात ख़्वाजा निज़ामुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहि 16)

सवालः शैतानों का आसमानों में जाना कब से बंद हुआ?

जवाबः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमायाः पहले श्यातीन आसमानों में दाख़िल होते थे और वहाँ की ख़बरें काहिनों के पास लाते थे। जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए तो श्यातीन तीन आसमानों से रोक दिए गए। जब सैय्यद आलम सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम की विलादत हुई तो तमाम आसमानों से मना कर दिए गए।
(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 14/2, मदारिजुन्नबुव्वत 225)

सवालः शैतान के बच्चे किस तरह पैदा होते हैं?

जवाबः ख़रपोती शरह क़सीदा वरदा में है कि शैतान की दाहिनी रान में नर की अलामत है और बायीं रान में मादा की अलामत। दोनों रानों को मिलाकर खुद ही अपने जमा करता है और खुद हामला होता है और खुद बच्चे जनता है। इसके अलावा इनकी पैदाइश के और भी बहुत से तरीक़े हैं। (तफ़्सीर नईमी 1/174, सावी 35, जमल 3/35)

सवालः शैतान के रोज़ाना कितने बच्चे पैदा होते हैं?

जवाबः वह रोज़ानादस अंडे देता है और हर अंडे से सत्तर शैतान और सत्तर शैतानिया होते हैं। (सावी 3/35, जमल 3/35)

सवालः उस शैतान का क्या नाम होता है जो हर इंसान के साथ पैदा होता है?

जवाबः उसका नाम हमज़ाद है। लोग उसे भूत वग़ैरह भी कहते हैं।
(तफ़्सीर नईमी 1/674)

सवालः शैतान की कुल कितनी औलाद है और किसके ज़िम्मे क्या काम है?

जवाबः कुल औलाद की तादाद तो मालूम नहीं अलबत्ता बाज़ के नाम और काम का ज़िक्र किया जा रहा है।

हज़रत मुजाहिद फ़रमाते हैं:

शैतान की औलादों में से एक का नाम लाक़स और दूसरे का नाम वल्हान है। इन दोनों के ज़िम्मे यह काम है कि नमाज़ और तहारत में वसवसा डालें।

तीसरे शैतान का नाम मर्रा है। इसी वजह से शैतान की कुन्नियत अबू मर्रा है। चौथा ज़नबूर नाम का है। उसका यह काम है कि यह लोगों के लिए बाज़ारों को मरसअ और मुज़य्यन करता है। झूठी क़स्में खिलवाता है और सामानों की झूठी तारीफ़ें करवाता है।

पाँचवां शैतान बतर है। यह वक़्त मुसीबत लोगों को आहो ज़ारी करने, मुँह पर तमांचा मारने और कपड़े फाड़ने पर तैयार करता है।

छठे का नाम आऔर है। यह लोगों को ज़िना बदकारी पर उभारता है। यहाँ तक कि लोगों को शहवतों को भड़काने के लिए मर्दों के ज़कर और औरतों के फ़रज में फूंक मार मार कर उनमें ख़्वाहिश पैदा करता है।

सातवाँ शैतान मतरूस है। यह लोगों से अफ़वाहें फैलाता है। आठवां दासम नाम का है। उसके ज़िम्मे यह काम है कि जो शख़्स बग़ैर सलाम किए घर में दाख़िल हो तो यह भी इसके साथ घर दाख़िल हो जाता है। और घरवालों को ग़ुस्सा दिलाता है ताकि लड़ाई झगड़ा हो।

(जमल 3/35, सावी 3/35, हाशिया जलालैन 247)

एक रिवायत में है कि एक मर्तबा सहाबा किराम की मज्लिस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मलऊन पर ख़ुदा की लानत हो। फिर सर मुबारक झुका लिया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ कियाः या रसूलुल्लाह! आपने किस पर लानत की? फ़रमायाः शैतान लईन दुश्मन ख़ुदा पर। इस मरदूद ने अपनी दुम को अपनी मक़अद में दाख़िल किया और सात अंडे दिए और उनसे उसके साथ बच्चे पैदा हुए। फिर उनमें से हर बच्चे आदम अलैहिस्सलाम की औलाद को गुमराह करने पर मामूर हुआ।

चुनाँचे एक का नाम ''मदहश'' है जो आलिमों को हवा व हिर्स की तर्ग़ीब देने पर मुक़र्रर हुआ।

दूसरे का नाम ''हदीस'' है जो नमाज़ियों को नमाज़ भुलाने, खेलकूद में दिल लगाने, बहकाने, जमाही लेने और ऊंघने में मुब्तला करता है।

तीसरे शैतान का नाम ''ज़बनून'' है जिसके सुपुर्द बाज़ारों का इंतिज़ाम है। यह दिन रात बाज़ारों में रहता है। लोगों को कम तोलने की तर्ग़ीब देता है। ख़रीद व फ़रोख़्त में झूठ बोलने, सामान को सजाने और उसकी तारीफ़ें करने के रास्ते बताता है।

चौथे शैतान का नाम ''बतरहे'' है जो मुसीबत के वक़्त लोगों के अपने गिरेबान फाड़ने की रग़बत दिलाता है।

पाँचवें शैतान का नाम ''मन्सूत'' है। यह लोगों को झूठ बोलने, चुग़ली खाने, लाअन व तश्नीअ करने और इसी क़िस्म के दूसरे गुनाहों की तर्ग़ीब देता है।

छठे शैतान का नाम "वासिम" है जो मर्द के ज़कर और औरत की सुरीन में फूंकता है ताकि आपस में ज़िना करें।

सातवें शैतान का नाम "आऔर" है जो चोरी करना सिखाता है। यो कहता है कि चोरी करने से तुम्हारा फ़ाक़ा दूर होगा। अपना क़र्ज़ दूर कर सकोगे। अच्छे कपड़े पहन सकोगे और चोरी करने के बाद तोबा कर लेना। (गुन्नियतुत्तालिबीन 217)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मेरी नमाज़ और क़िरात के दर्मियान शैतान आकर दाख़िल हो जाता है। आपने फ़रमाया इस शैतान का नाम "ख़तर" है। इसको देखो तो अल्लाह तआला के यहाँ से उससे पनाह मांगो और दाएं बाएं तीन दफ़ा थूक दिया करो।(गुन्नियतुत्तालिबीन 217)

सवालः वह कौन सा शैतान है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाया?

जवाबः वह शैतान जो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क़रीन था। और बतने नख़ला में जो जिन्नात इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए थे उनमें से एक इब्लीस का बेटा भी था जो मुसलमान हुआ था।

(तफ़्सीर अलम नशरह 199, तफ़्सीर नईमी 2/221)

सवालः मैदान बदर में शैतान किसकी शक्ल में शैतानी लश्करों की क़यादत कर रहा था?

जवाबः मैदाने बदर में मुश्रिकीने मक्का की मदद के लिए शैतान बशक्ल सुराक़ा बिन मालिक बिन जअसम अपने शैतानी लश्करों की क़यादत कर रहा था। (मआरिजुन्नबुव्वत 4/43, हाशिया 10 जलालैन 152)

(यह सुराक़ा वही है जिसने हिजरत के मौक़े पर रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तआक़ुब किया था फिर बाद में इस्लाम लाया)।

सवालः इब्लीस की बीवी का नाम क्या है?

जवाबः इब्लीस की बीवी का नाम रसल है।

(नज़हतुल मजालिस 6/117)

○ ○ ○

अस्हाबे कहफ़ के बारे में सवाल व जवाब

सवालः अस्हाबे कहफ़ की तादाद कितनी है और उनके नाम क्या हैं?

जवाबः ये सात हज़रात थे। उनके नाम नीचे लिखे हैं:

1. मक्सलमीना,
2. यमलीख़ा,
3. मरतूनुस,
4. बेनूनुस,
5. सारेनूनुस,
6. ज़ुनवानुस,
7. कशफ़ीत तनूनुस। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 15/13)

और हाशिया 14 जलालैन स० 243 पर उनके नाम इस तरह हैं:

1. यमलीख़ा,
2. मक्सलमीना,
3. मशलीना,
4. मरनूश,
5. वबरनूश,
6. शादनूश,
7. कफ़तीशी तूलुस।

एक दूसरी रिवायत में है उनकी तादाद नौ है और नाम यूँ हैं:

1. फहशलमीन,
2. तमलीख़,
3. मरतूनस,
4. कशतूनस,
5. बैरूनस,
6. दलीमूस,
7. बतूनस,
8. क़ाबूस,
9. मिक्सलमीन। (इब्ने कसीर 15/13)

सवालः अस्हाबे कहफ़ किस शहर के रहने वाले थे?

जवाबः यह हज़रात शहर अफ़सोस के शुरफ़ा, मौज़्ज़ीन में से ईमानदार लोग थे। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 15/13)

ईस्लाम में इस शहर का नाम तरतूस रखा गया। बाज़ का कहना है कि रोम के शहर में है। बाज़ का यह कहना है कि यह "एला" के क़रीब है और बाज़ बिल्क़ाअ और जैनबा के पास बताते हैं।

सवालः अस्हाबे कहफ़ में सबसे बड़े साहब का नाम क्या है?

जवाबः इसका नाम मिक्सलमिना है।

सवालः अस्हाबे कहफ़ किस नबी की शरिअत पर पैरा थे?

जवाबः ये लोग हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की शरिअत पर अमल पैरा थे। बाज़ कहते हैं कि यहूद की किताब में अस्हाबे कहफ़ का ज़िक्र मौजूद है और यहूद की किताब नसरानियत से पहले की है। बस मालूम हुआ कि आप लोग हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से पहले के हैं।

(इब्ने कसीर 15/14)

सवालः अस्हाबे कहफ़ जिस बादशाह के ज़ुल्म व जबर से तंग आकर ग़ार में जा छिपे थे उसका नाम क्या था?

जवाबः उसका नाम दक़ियानूस था। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 15/13)

सवालः इस ग़ार का क्या नाम है जिसमे अस्हाबे कहफ़ पनाह गुज़ीं हुए थे?

जवाबः उस ग़ार का नाम हैज़ूम कहा गया है। (इब्ने कसीर 15/13)
बाज़ ने बेजलूस और बाज़ ने नेजलूस बताया है। (सावी 3/5)

सवालः उस पहाड़ का क्या नाम है जिसमें अस्हाबे कहफ़ का ग़ार है?

जवाबः उस पहाड़ का नाम या तो रक़ीम है या बख़लूस।

(इब्ने कसीर 15/13)

सवालः उस वादी का क्या नाम है जिसमें अस्हाबे कहफ़ का ग़ार और पहाड़ है?

जवाबः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि इस वादी का नाम रक़ीम है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 15/13)

सवालः अस्हाबे कहफ़ के कुत्ते का नाम क्या है?

जवाबः उसका नाम क़तमीर है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 15/13)
शुएब जबाई कहते हैं कि उसका नाम हमरान है। (इब्ने कसीर 15/16)

सवालः अस्हाबे कहफ़ के कुत्ते का रंग कैसा है?

जवाबः उसका रंग पीला है। बाज़ ने गंदुमी रंग बताया है।

(हाशिया 16, जलालैन 242)

सवालः अस्हाबे कहफ़ का कुत्ता किसका था और यह कुत्ता उन लोगों के हमराह क्यों हुआ?

जवाबः बाज़ कहते हैं कि यह उन्हीं अस्हाब में से किसी का शिकारी कुत्ता पला हुआ था। एक क़ौल यह भी है कि बादशाह के बावर्ची का यह कुत्ता था। क्योंकि वह भी उनके हम मसलक था और उनके साथ हिजरत में था। हिजरत के वक़्त ही उनका यह कुत्ता उनके पीछे हो लिया था।

(इब्ने कसीर 15/15)

सवालः अस्हाबे कहफ़ ग़ार में किस वक़्त दाख़िल हुए थे और जब बेदार हुए तो वह कौनसा वक़्त था?

जवाबः ये लोग ग़ार में तुलू आफ़ताब के वक़्त दाख़िल हुए थे और जब उठे तो आफ़ताब क़रीब ग़ुरूब था। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 15/15)

सवालः अस्हाबे कहफ़ कितने दिनों तक सोते रहे?

जवाबः शम्सी तारीख़ के एतिबार से ये लोग तीन सौ साल सोए। और बाएतिबार क़मरी तीन सौ नौ साल। (जलालैन 244)

सवालः अस्हाबे कहफ़ किस सन में सोए थे और किस सन में बेदार हुए?

जवाबः ये लोग 249 ई० में सोए और सन् 549 ई० में बेदार हुए। उनके बेदार होने का वाक़िआ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत से तक़रीबन इक्कीस बरस पहले पेश आया था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत सन् 570 ई० में हुई।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 15/71)

सवालः अस्हाबे कहफ़ की बेदारी के वक़्त जो बादशाह हुक्मरान था उसका नाम क्या था?

जवाबः उस बादशाह का नाम बेदरूस था।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 15/13)

बक़ौल दीगर उसका नाम तंद व सीस था। (इब्ने कसीर 15/15)

सवालः अस्हाबे कहफ़ के सोने और जागने के वाक़िए की तफ़्सील क्या है?

जवाबः उलमा तफ़्सीर व मौर्रिख़ीन वाक़िआ यूँ बयान करते हैं:

हज़रत ईसा अैहिस्सलाम के बाद अहले इंजील की हालत अबतर हो गई। वह बुतपरस्ती में मुब्तला हुए और दूसरों को बुतपरस्ती पर मजबूर करने लगे। उनमें बादशाह बड़ा जाबिर था। जो बुतपरस्ती पर राज़ी न होता उसको क़त्ल कर डालता। अस्हाबे कहफ़ शहर अफ़सोस के शरीफ़ और मौज़्ज़ि ईमान दार लोगों में से थे। रूमी बादशाह की औलाद और रूम के सरदार थे। एक मर्तबा क़ौम के साथ ईद मनाने गए। उन्होंने जब वहाँ शिर्क व बुतपरस्ती का तमाशा देखा तो उनके दिल में ख़्याल आया कि बुतपरस्ती महज़ लग़ू और बातिल चीज़ है। इबादतें सिर्फ़ नामे ख़ुदा पर होनी चाहिएं जो आसमान व ज़मीन का ख़ालिक़ और मालिक है। बस ये लोग एक एक करके यहाँ से सरकने लगे। उनमें से एक साहब एक पेड़ के नीचे जाकर बैठ गए। दूसरे भी यहीं आ गए। तीसरे भी आए फिर चौथे भी। ग़र्ज़ एक एक करके सब यहीं जमा हो गए। हालाँकि एक दूसरे में जान पहचान न थी लेकिन ईमान की रोशनी ने एक दूसरे को मिला दिया। सब ख़ामोश थे। एक को एक से डर था कि अगर मैं अपने अंदर की बात को बता दूँ तो ये दुश्मन हो जाएंगे। किसी को भी दूसरे के बारे में मालूम न था कि वह भी इसी तरह क़ौम की इस अहमक़ाना और मुश्रिकाना रस्म से बेज़ार है। आख़िर एक दाना और जरी नौजवान ने कहा, दोस्तो! कोई न कोई बात ज़रूरी है कि लोगों के इस आम शग़ल को छोड़कर तुम उनसे यकसू होकर यहाँ आ बैठे हो। मेरा तो दिल चाहता है कि हर शख़्स इस बात को ज़ाहिर कर दे जिसकी वजह से उसने क़ौम को छोड़ा है। इस पर एक ने कहा, भाई! बात यह है कि मुझे अपनी क़ौम की यह रस्म एक आँख नहीं भाती जबकि आसमान व ज़मीन का और हमारा तुम्हारा ख़ालिक़ सिर्फ़ अल्लाह वहदहू ला शरीक ही है तो फिर हम उसके सिवा दूसरों की इबादत क्यों करें। यह सुनकर दूसरे ने कहा, ख़ुदा की क़सम! यही नफ़रत मुझे यहाँ लाई है। तीसरे ने भी यही कहा। जब हर एक ने यही वजह बयान की तो सब के दिल में मुहब्बत की एक लहर दौड़ गई। और ये सब रोशन ख़्याल मवाहिद आपस में सच्चे दोस्त और मा जाए भाईयों से भी ज़्यादा एक दूसरे के ख़ैर ख़्वाह बन गए। आपस में इत्तिफ़ाक़ हो गया। अब उन्होंने एक जगह मुक़र्रर कर ली। वहीं ख़ुदाए

वाहिद की इबादत करने लगे। धीरे धीरे क़ौम को भी पता चल गया। वे इन सबको पकड़कर उस ज़ालिम और मुश्रिक बादशाह के पास ले गए और शिकायत पेश की। बादशाह ने उनसे पूछा तो उन्होंने निहायत दिलेरी से अपनी तौहीद और अपना मसलक बयान किया बल्कि बादशाह और अहले दरबान को भी इस की दावत दी। बादशाह बहुत बिगड़ा और उन्हें डराया धमकाया और हुक्म दिया कि इनके लिबास उतार लो और अगर यह बाज़ न आएं तो मैं सख़्त सज़ा दूंगा। अब इन लोगों के दिल और मज़बूत हो गए। साथ में उन्हें यह भी मालूम हो गया कि यहाँ रहकर हम दीनदारी पर क़ायम नहीं रह सकते। इसलिए उन्होंने क़ौम, देस और रिश्ते, कुंबे को छोड़ने का इरादा पक्का कर लिया। और एक दिन मौक़ा पाकर यहाँ से भाग निकले। और क़रीब के एक पहाड़ में एक ग़ार में पनाह गुज़ीं हुए। वहाँ वह सो गए और तीन सौ साल से ज़्यादा अरसे तक इसी हाल में रहे। बादशाह को जुस्तजू से मालूम हुआ कि वे लोग ग़ार के अंदर हैं तो उसने हुक्म दिया कि ग़ार को एक संगीन दीवार खींचकर बंद कर दिया जाए ताकि वे इसमें मरकर रह जाएं। और वह उनकी क़ब्र हो जाए। यही इनकी सज़ा है। उम्माले हुकूमत में से यह काम जिसके सुपुर्द किया गया वह नेक आदमी था। उसने उन अस्हाब के नाम, तादाद और पूरा वाक़िआ रांग की तरह तख़्ती पर कुंदा कराकर तांबे के संदूक़ में दीवार की बुनियाद के अंदर महफ़ूज़ कर दिया। यह भी बयान किया गया है कि इस तरह की एक तख़्ती शाही ख़ज़ाने में भी महफ़ूज़ करा दी गई। कुछ अरसे के बाद यह ज़ालिम बादशाह हलाक हुआ। ज़माने गुज़रे सतलनतें बदलीं यहाँ तक कि एक बादशाह फ़रमांबरदार हुआ। फिर मुल्क में फ़िरक़ा बंदी पैदा हुई। और बाज़ मरने के बाद उठने और क़यामत आने के मुन्किर हो गए। बादशाह एक तन्हा मकान में बंद हो गया। और उसने गिरया व ज़ारी से बारगाहे इलाही में दुआ की, या रब कोई ऐसी निशानी ज़ाहिर फ़रमा जिससे लोगों को मुर्दों के उठने और क़यामत का यक़ीन हासिल हो।

इसी ज़माने में एक शख़्स ने अपनी बकरियों के लिए आराम की जगह हासिल करने के वास्ते इसी ग़ार को तय किया। और दीवार गिरा दी।

दीवार गिरने के बाद कुछ ऐसी हैवत तारी हुई कि गिराने वाला भाग गया। अस्हावे कहफ़े अल्लाह के हुक्म से खुशहाल उठे, चेहरे शगुफ़्ता, तबियतें खुश और ज़िंदगी में तर व ताज़गी मौजूद। एक ने दूसरे को सलाम किया। नमाज़ के लिए खड़े हो गए। फ़ारिग़ होकर एक से कहा, आप जाइए और बाज़ार से कुछ खाने को भी लाइए और यह भी ख़बर लाइए कि दक़ियानूस बादशाह का हमारे बारे में क्या इरादा है। वह बाज़ार गए और शहर पनाह के दरवाज़े पर इस्लामी अलामत देखी। नए नए लोग पाए। उन्हें ईसा अलैहिस्सलाम के नाम की क़सम खाते सुना। ताज्जुब हुआ कि यह क्या मामला है। कल तो कोई शख़्स अपना ईमान ज़ाहिर नहीं कर सकता था, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का नाम लेने से क़त्ल कर दिया जाता था और आज इस्लामी अलामतें शहर पनाह पर ज़ाहिर हैं। लोग बेख़ौफ़ व ख़तर हज़रत के नाम की क़समें खाते हैं। उन्हें इन बातों से हैरत इसलिए हो रही थी कि वे अपने नज़दीक यही समझे हुए थे कि हमें यहाँ पहुँचे एक आध दिन गुज़रा है हालाँकि इस दौरान ज़माने गुज़र चुके थे, सदियाँ बीत गयीं थीं। फिर रोटी वाले की दुकान पर गए। खाना खरीदने के लिए उसको दक़ियानूसी सिक्के का एक रुपया दिया जिसका चलन सदियों से मौक़ूफ़ हो गया था और उसका देखने वाला भी बाक़ी न रहा था। दुकानदार ने उस सिक्के को देखकर सख़्त ताज्जुब किया। और उसे अपने पड़ोसी को दिया और कहा, मियाँ देखना, यह सिक्का कब का है और किस ज़माने का है? उसने दूसरे को दिया, दूसरे से किसी और ने देखने को मांग लिया। अलग़र्ज़ वह एक तमाशा बन गया। बाज़ार वालों ने ख़्याल किया कि कोई पुराना ख़ज़ाना उनके हाथ लग गया। उन्हें पकड़कर हाकिम के पास ले गए। वह नेक आदमी था। उसने भी उनसे पूछा कि ख़ज़ाना कहाँ हैं? उन्होंने कहा, ख़ज़ाना कहीं नहीं है। यह रुपया हमारा अपना है। हाकिम ने कहा, यह बात किसी तरह यक़ीन के क़ाबिल नहीं। इसमें जो सन मौजूद है वह तीन सौ बरस पहले का है। और आप नौजवान हैं हम लोग बूढ़े हैं। हमनें तो कभी यह सिक्का देखा ही नहीं। आपने फ़रमाया कि जो मैं पूछूं ठीक ठीक बताओ तो मसअला हल हो जाएगा। यह बताओ कि दक़ियानूस बादशाह

किस हाल ख़्याल में है? हाकिम ने कहा, आज रूए ज़मीन पर इस नाम का कोई बादशाह नहीं। सैकड़ों बरस हुए जब एक बेईमान बादशाह इस नाम का गुज़रा है। आपने फ़रमाया, कल ही तो हम उसके ख़ौफ़ से जान बचाकर भागे हैं। मेरे साथी क़रीब के पहाड़ में एक ग़ार में पनाह लिए हैं, चलो मैं तुम्हें उनसे मिला दूं। हाकिम शहर के अमाइद और भीड़ उनके साथ सरे ग़ार पहुँचे। उधर अस्हाबे कहफ़ अपने साथी के इंतिज़ार में थे। बहुत से लोगों की आवाज़ और खटके सुनकर समझा कि साथी पकड़ा गया और दक़ियानूसी फ़ौज हमारी तलाश में आ रही है। अल्लाह की हम्द और शुक्र बजा लाने लगे। इतने में ये लोग पहुँचे और साथी ने सारा क़िस्सा सुनाया। इन हज़रात ने समझ लिया कि हम अल्लाह के हुक्म से इतना तवील ज़माना सोए और अब इसलिए उठाए गए हैं कि लोगों के लिए बाद मौत ज़िंदा किए जाने की दलील और निशानी हों। हाकिम सरे ग़ार पहुँचा तो उसने तांबे का संदूक़ देखा। उसको खोला तो तख़्ती बरामद हुई। उसमें इन अस्हाब के नाम और उस कुत्ते का नाम लिखा हुआ था। यह भी लिखा था कि यह जमाअत अपने दीन की हिफ़ाज़त के लिए दक़ियानूस के डर से इस ग़ार में पनाह गुज़ीं हुई। यह तख़्ती पढ़कर सबको ताज्जुब हुआ और लोग अल्लाह की हम्द व सना बजा लाए कि उसने ऐसी निशानी ज़ाहिर फ़रमा दी जिससे मौत के बाद उठने का यक़ीन हासिल होता है। हाकिम ने अपने बादशाह को इत्तिला दी। वह उमरा और वज़ीरों के लेकर हाज़िर हुआ और सज्दा शुक्रे इलाही बजा लाया कि अल्लाह तआला ने उसकी दुआ क़ुबूल की। अस्हाबे कहफ़ ने बादशाह से मुआनक़ा किया और फ़रमाया कि हम तुम्हें अल्लाह के सुपुर्द करते हैं और अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाहि व बरकातुहू। अल्लाह तेरी और तेरे मुल्क की हिफ़ाज़त फ़रमाए और जिन्न व इन्स के शर से बचाए। बादशाह खड़ा ही था कि वे हज़रात अपनी ख़्वाबगाहों में वापस होकर मसरूफ़ ख़्वाब हुए। अल्लाह तआला ने उन्हें वफ़ात दी। बादशाह ने साल के संदूक़ में उनके बदनों को महफ़ूज़ किया। और अल्लाह तआला ने रोब से उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाई कि किसी की मजाल नहीं कि वहाँ पहुँच सके। बादशाह ने सरे ग़ार मस्जिद बनाने का हुक्म दिया और खुशी का

दिन तय किया कि हर साल लोग ईद की तरह वहाँ आया करें।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 15/13, इब्ने कसीर 15/13)

सवालः अस्हाबे कहफ़ में से बाज़ार सौदा लेने कौन गया था?

जवाबः यमलीख़ा गया था। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 15/13)

सवालः अस्हाबे कहफ़ साल में कितनी बार करवट लेते हैं और किस तारीख़ को?

जवाबः साल में एक मर्तबा दसवीं मुहर्रम को करवट लेते हैं।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 15/15)

एक क़ौल के मुताबिक़ साल में दो मर्तबा करवट बदलते हैं।

(इब्ने कसीर 15/15)

और बाज़ कहते हैं कि हर नौ साल के बाद।(हाशिया 15 जलालैन 242)

सवालः अस्हाबे कहफ़ अब किस ज़माने में बेदार होंगे?

जवाबः इमाम रब्बानी महबूब रहमानी मुजद्दिद अलफ़ेसानी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि अस्हाबे कहफ़ इमाम महदी के ज़माने में बेदार होंगे और आपके हमराह जिहाद करेंगे। (हाशिया 14 जलालैन 243)

सवालः अस्हाबे कहफ़ के नामों के फ़वाइद क्या क्या हैं?

जवाबः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से उनके नामों के बहुत से फ़वाइद मंक़ूल हैं:

1. ये नाम लिखकर दरवाज़े पर लगा दिए जाएं तो मकान जलने से महफ़ूज़ रहता है।
2. सरमाए पर रख दिए जाएं तो चोरी नहीं जाता।
3. किश्ती या जहाज़ इनकी बरकत से ग़र्क़ नहीं होता।
4. भागा हुआ शख़्स इनकी बरकत से वापस आ जाता है।
5. कहीं आग लगी हो तो इन नामों को कपड़े में लिखकर आग में डाल दिए जाएं तो वह आग बुझ जाती है।
6. अगर कोई बच्चा ज़्यादा रोता है तो इन नामों को लिखकर सर के नीचे रख दिया जाए तो रोना बंद हो जाएगा।
7. अगर बारी का बुख़ार आता है तो इन नामों को लिखकर तावीज़ के तरीक़े पर बाज़ुओं पर बांधे तो बुख़ार बंद हो जाएगा।

8. दर्दसर,
9. उम्मेसोबान,
10. खुश्की व तरी के सफ़र में जान व माल की हिफ़ाज़त के लिए।
11. अक्ल की तेज़ी।
12. क़ैदियों की आज़ादी के लिए इन नामों को अपने पास रखना मुफ़ीद है।
13. खेती की हिफ़ाज़त के लिए इन नामों का तावीज़ लकड़ी में बांधकर खेत के बीच में इसे गाड़ दिया जाए।
14. अगर किसी हाकिम व अफ़सर के पास जाना हो तो इन नामों का तावीज़ रान पर बांधकर जाए, हाकिम नरम दिल होगा।
15. अगर किसी बच्चे की विलादत में परेशानी हो रही हो तो ये नाम लिखकर औरत की बायीं रान पर बांध दिए जाएं तो विलादत में आसानी होगी।(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 15/13, हाशिया 14 जलालैन 243)

○ ○ ○

याजूज व माजूज के बारे में सवाल और जवाब

सवालः याजूज व माजूज किसकी औलाद में से हैं?

जवाबः यह याफ़त बिन नूह अलैहिस्सलाम की औलाद से फ़सादी गिरोह है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 16/2)

सवालः याजूज व माजूज की तादाद कितनी है और उन्हें क़ैद क्यों किया गया है?

जवाबः इनकी तादाद बहुत ज़्यादा है। ये ज़मीन में फ़साद करते थे। रबीअ के ज़माने में निकलते थे तो खेतियाँ और सब्ज़े सब खा जाते थे और सूखी चीज़ें लादकर ले जाते थे। आदमियों, दरिन्दों, वहशी जानवरों और सांप बिच्छुओं तक को खा जाते हैं। हज़रत ज़ुल क़रनैन से लोगों ने इनकी शिकायत की तो आपने मज़बूत चारदीवारी में इन सबको क़ैद कर दिया। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 16/2)

सवालः हज़रत ज़ुलक़रनैन ने जिस चारदीवारी में याजूज व माजूज को क़ैद किया उसकी तामीर किन चीज़ों से की गई है?

जवाबः आपने दीवार की तामीर के लिए दीवार खुदवाई। जब पानी तक पहुँची तो उसमें पत्थर, पिघलाए हुए तांबे जमाए गए और लोहे के तख़्त ऊपर नीचे चिनकर उनके दर्मियान में लकड़ी और कोयला भरवा दिया और आग दे दी। इस तरह यह दीवार पहाड़ की बुलंदी तक ऊँची कर दी गई और दोनों पहाड़ों के बीच कोई जगह न छोड़ी गई। ऊपर से पिघला हुआ तांबा दीवार में फैला दिया गया। यह सब मिलकर एक सख़्त जिस्म बन गया। (ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 16/2)

सवालः उस दीवार की लंबाई चौड़ाई और ऊँचाई कितनी है जिसमें याजूज व माजूज क़ैद हैं?

जवाबः इसकी बुलंदी सौ ग़ज चौड़ाई पचास ग़ज और दोनों दीवारों के

पाँच सौ मील का फ़ासला है। (हाशिया 14 जलालैन 252)

सवालः याजूज व माजूज इस आहिनी दीवार से कब और किस तरह निकल आएंगे?

जवाबः हदीस शरीफ़ में है कि याजूज माजूज रोज़ाना इस दीवार को तोड़ते हैं। दिन भर मेहनत करते करते जब इसके तोड़ने के क़रीब होते हैं तो इनमें कोई कहता है कि बाक़ी कल तोड़ लेंगे। दूसरे दिन जब आते हैं तो वह बहुक्मे इलाही दीवार पहले से ज़्यादा मज़बूत हो जाती है। क़यामत के क़रीब जब उनके निकलने का वक़्त आएगा तो उनमें से कहने वाला कहेगा, अब चलो बाक़ी दीवार कल तोड़ लेंगे, इंशाअल्लाह। इंशाअल्लाह कहने का यह समरा होगा कि उस दिन की मेहनत बेकार नहीं जाएगी। और अगले रोज़ दीवार उन्हें उतनी टूटी हुई मिलेगी जितनी पहले रोज़ तोड़ गए थे। अब वे निकल आएंगे।(ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 16/2)

सवालः याजूज व माजूज क़ैद से निकलने के बाद किन किन शहरों में दाख़िल न हो सकेंगे?

जवाबः ये मक्का मुकर्रमा, मदीना तैय्यबा और बैतुल मुक़द्दस में दाख़िल न हो सकेंगे। (ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 16/2)

सवालः अल्लाह तआला किसकी दुआ से याजूज व माजूज को हलाक फ़रमाएंगे?

जवाबः अल्लाह तआला ईसा अलैहिस्सलाम की बद्दुआ से उन्हें हलाक फ़रमाएंगे। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 16/2)

सवालः याजूज व माजूज किस तरह हलाक होंगे?

जवाबः इस तरह कि उनकी गर्दनों में कीड़े पैदा होंगे जो उनकी हलाकत का सबब होंगे। (ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 16/2)

○ ○ ○

औज बिन अनक के बारे में सवाल और जवाब

सवालः औज बिन अनक़ के बाप और माँ का नाम क्या था?

जवाबः औज बिन अनक़ के बाप का नाम रासिहान था और माँ का नाम औंक़ या अनक़ जो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की बेटी थी। औज अपनी माँ के नाम के साथ मशहूर हुआ (मअरिजुन्नबुव्वत 73/1)

सवालः औज बिन अनक़ किस नबी के ज़माने में पैदा हुआ और किस नबी के ज़माने तक रहा?

जवाबः औज बिन अनक़ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की हयात ही में पैदा हुआ था और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने तक रहा।

(मअरिजुन्नबुव्वत 1/73)

सवालः औज बिन अनक़ का क़द कितना लंबा था और उसके जिस्म की चौड़ाई कितनी थी?

जवाबः औज बिन अनक़ का क़द तेंतीस सौ तेंतीस गज़ लंबा था और जिस्म की चौड़ाई तीस गज़ थी। (इब्ने कसीर 6/6)

एक क़ौल मुताबिक़ उसके क़द की लंबाई तेंतीस सौ तीस ग़ज थी।

(हाशिया 19 जलालैन 96)

और एक क़ौल के मुताबिक़ बीस हज़ार तीन सौ तीन ग़ज़।

(मअरिजुन्नबुव्वत 1/73)

सवालः औज बिन अनक़ की हर उंगली की लंबाई कितनी थी और उसकी हर उंगली में कितन नाख़ून थे?

जवाबः औज बिन अनक़ की हर उंगली की लंबाई तीन गज़ थी और चौड़ाई दो गज़, हर उंगली में दो दो नाख़ून थे दरांती की तरह निहायत ही तेज़। (मअरिजुन्नबुव्वत 1/73)

सवालः औज बिन अनक़ क्या खाता था?

जवाबः औज बिन अनक़ समुंदर से मछलियाँ पकड़ता और सूरज की गर्मी में उसे सेंककर खाता था।

(मअरिजुन्नबुव्वत 1/73)

सवालः तूफ़ाने नूह का पानी औज बिन अनक़ के कहाँ तक पहुँचा था?

जवाबः तूफ़ाने नूही के जिसका पानी ऊँचे से ऊँचे पहाड़ों से भी चालीस गज़ ऊँचा था। वह पानी औज के घुटनों तक भी नहीं पहुँचता था।

(मअरिजुन्नबुव्वत 1/73)

सवालः औज बिन अनक़ को किसने क़त्ल किया था और किस तरह?

जवाबः इब्ने जरीर कहते हैं कि औज बिन अनक़ को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने इस तरह क़त्ल किया कि आपके हाथ में दस हाथ का लंबा असा मुबारक था और आपका क़द मुबारक भी दस हाथ का था। और आपने दस हाथ ज़मीन से उछलकर औज को असा मारा जो उसके टख़ने पर लगा और उसी वक़्त मर गया।

(मअरिजुन्नबुव्वत 1/73, इब्ने कसीर 6/8)

सवालः औज बिन अनक़ के मरने के बाद उसके पाँव की हड्डी से क्या बनाया गया था?

जवाबः औज बिन अनक़ के मर जाने के बाद उसके पाँव की हड्डी से दरियाए नील का पुल बनाया गया जिस पर से साल भर तक अहले नील आते जाते रहे। औफ़ बकाली कहते हैं कि उसका तख़्त तीन सौ गज़ का था।

(इब्ने कसीर 5/8)

सवालः औज बिन अनक़ की उम्र कितनी थी?

जवाबः औज बिन अनक़ की उम्र तीन हज़ार साल हुई।

(हाशिया 19 जलालैन 92)

बक़ौल दीगर तीन हज़ार छः सौ साल। (मअरिजुन्नबुव्वत 1/73)

○ ○ ○

उम्मतों और क़ौमों के बारे में सवाल व जवाब

सवालः कुल उम्मतें कितनी हैं?

जवाबः कुल उम्मतें सत्तर हैं। तिर्मिज़ी ने हज़रत बहज़ा बिन हकीम रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ऐ मुसलमानो! तुम से उम्मतों का सत्तर का अदद पूरा हुआ।
(तफ़्सीर नईमी 4/78)

एक रिवायत में है कि कुल एक हज़ार उम्मतें हैं जिनमें से छः सौ तरी यानी दरिया में और चार खुश्की यानी ज़मीन पर रहती हैं।
(मिश्कात 2/472, हयातुल हैवान 2/46)

सवालः सबसे लंबे क़द वाली उम्मत कौन सी थी?

जवाबः क़ौमे आद सबसे तवील क़द थी। उनका बड़ा आदमी सौ गज़ का और छोटा आदमी साठ ग़ज़ का होता था। (जलालैन 135)

एक दूसरे क़ौल के मुताबिक़ इस क़ौम का लंबा आदमी चार सौ या पाँच सौ गज़ का होता था और छोटा आदमी तीन सौ ग़ज का। सर बड़े गुंबद के बराबर होता था और आँखें इतनी बड़ी होती थीं कि उनके मरने के बाद उनकी आँखों में बिज्जू बच्चा जना करती थी।
(हाशिया 14 जलालैन 135)

एक रिवायत में है कि क़ौम अमालक़ा के जिस्म सात सौ गज़ होते थे।
(तफ़्सीर नईमी 1/451)

सवालः वह कौनसी क़ौम है जिसने दिन के एक हिस्से में तीन सौ अंबिया किराम को क़त्ल कर डाला?

जवाबः वह क़ौमे बनी इस्राईल है कि दिन के अव्वल हिस्से की एक साअत में तीन सौ अंबिया किराम क़त्ल कर डाले। फिर एक सौ सत्तर बनी इस्राईल के ईमानदार जो उन्हें इस काम से रोकने के लिए खड़े हुए और भलाई का हुक्म देने लगे क़त्ल कर डाला। (इब्ने कसीर 3/11)

सवालः वह कौन सी क़ौम थी जिस पर एक अज़ाब यह भी नाज़िल हुआ था कि क़ौम की सारी औरतें बांझ हो गयीं?

जवाबः क़ौमे आद यानी हज़रत हूद अलैहिस्सलाम की क़ौम पर एक अज़ाब यह भी नाज़िल हुआ था कि क़ौम की तमाम औरतें बांझ हो गयीं थीं। (12/5)

सवालः पहली उम्मतों के कितने गिरोहों की सूरतें मसख़ हुईं?

जवाबः पहली उम्मतों के पच्चीस गिरोह थे जिनकी सूरतें मसख़ हुईं। उनकी तफ़्सील इस तरह है:

1. बंदर, 2. ख़ूक (ख़िंज़ीर), 3. सूसमार (गोह), 4. हाथी, 5. बिच्छू, 6. कुत्ता, 7. ज़ंबूर (भिड़), 8. सितारा ज़ोहरा, 9. सितारा सुहैल, 10. साँप, 11.मछली, 12. नेवला, 13. तूती, 14. जंगली चूहा, 15. अक़अक़ (जंगली कव्वा), 16.. मकड़ी 17. चूहे पकड़ने वाला, 18. सफ़ेद लोमड़ी, 19. चिड़िया, 20. उल्लू, 21. कव्वा, 22. कासा पुश्त, 23. घरेलू चूहे, 24. रीछ, 25. किफ़लैल।

बंदर

वह क़ौम थी जिसे अल्लाह तआला ने हफ़्ते के रोज़ मछली पकड़ने के लिए मना किया था। उन्होंने नाफ़रमानी की। अल्लाह तआला ने उनकी सूरत मसख़ करके बंदर बना दिया।

ख़िंज़ीर

यह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की क़ौम थी जो माएदा की मुन्किर हुई। अल्लाह तआला ने इस कुफ़राने नेमत के सबब उन्हे इस सूरत का बना दिया।

सूसमार (गोह)

वे कफ़न चोर थे। उस ज़माने के पैग़ंबर ने दुआ की अल्लाह तआला ने उसे सूसमार बना दिया।

रीछ

इसमें वे लोग शामिल थे कि जो हमेशा पैगंबरे वक़्त पर सुख़न चीनी करते थे। उस वक़्त जिरजीस अलैहिस्सलाम पैगंबर थे। हुक्म हुआ कि ऐ

जिरजीस! हमारा हुक्म उन्हें पहुँचा दो कि इस सुख़न चीनी से बाज़ आ जाएं। और तोबा करें। जब हज़रत जिरजीस अलैहिस्सलाम ने हुक्म सुनाया तो उन्होंने परवाह न की तो अल्लाह तआला ने उन्हें रीछ बना दिया।

हाथी

वे लोग थे जो हमेशा चौपायों पर सवार फिरते थे और नमाज़ में नाक नहीं रखते थे। अल्लाह तआला ने उन्हें हाथी बना दिया कि उनकी नाक ज़मीन पर झाड़ू करती रहती है।

बिच्छू

इसमें वे लोग शामिल थे जो हमेशा लोगों से लड़ाई झगड़ा करते थे। अल्लाह तआला ने मना फ़रमाया मगर बाज़ न आए इसलिए बिच्छू बना दिए गए।

भिड़

इसमें वे लोग शामिल थे जिन्होंने हारूत व मारूत को राहेरास्त से बहकाया था।

ज़ोहरा सितारा

इसमें वह ज़ानी शामिल थे जो ज़िना और किसी के वाअज़ व नसीहत का ख़्याल न करते।

सुहैल सितारा

इसमें वे लोग शामिल थे जो हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की क़ौम में से थे और बदज़ुबानी किया करते थे। अल्लाह तआला ने मना फ़रमाया तो परवाह न की बल्कि पहले से भी सौ गुना बदज़ुबानी करने लगे। इसलिए उनकी यह सूरत हुई।

मछली

इसमें कम तोलने वाले लोग शामिल थे। और अल्लाह तआला ने उन्हें इस सूरत का बना दिया। और ये लोग क़ौमे हूद से थे।

नेवला

इसमें वह क़स्साव शामिल थे जो सितम किया करते और कम तोला करते थे। अल्लाह तआला ने उन्हें नेवला वना दिया।

तोती

ये ख़ाइन थे। तमाम कामों में ख़्यानत करते। ये लोग हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम की क़ौम से थे।

चूहा

ये वे लोग थे जो चोरी किया करते थे।

अक़अक़ (जंगली कव्वा)

ये बेहूदा बोलने वाले लोग थे।

मकड़ी

इसमें वे औरतें शामिल थीं जो शौहरों की नाफ़रमानी करती थीं।

चूहे पकड़ने वाला

इसमें वे लोग शामिल थे जो बेधड़क लोगों पर हसद किया करते थे।

सफ़ेद लोमड़ी

इसमें वे लोग शामिल थे जो बेधड़क हमामों में आ जाते और शर्म न करते।

चिड़िया

इसमें वे लोग शामिल थे जो नाचा करते थे और औरतों की तरह बनाव सिंगार किया करते थे। और लोगों के सामने नाचा करते थे। इसलिए ग़ज़बे इलाही नाज़िल हुआ और सब चिड़िया की सूरत बन गए।

उल्लू

इसमें वे लोग शामिल थे जो लोगों के सामने अपने को पारसा ज़ाहिर करते और पीठ पीछे उनके असवाब चुराकर ले जाते।

कव्वा

इसमें वे लोग शामिल थे जो मकर किया करते थे।

कासाए पुश्त

इसमें वे लोग शामिल थे जो लोगों की मुख़ालिफ़त किया करते थे।

घरेलू चूहा

इसमें वे लोग शामिल थे जो बावर्ची का काम किया करते थे। उसमें और चीज़ें डालकर बेचते। जब फ़साद बर्पा होता तो नेकों को नसीहत करते और ख़बर करते और जब फ़साद की आग भड़कती तो ख़ुद अलग हो जाते।

कुत्ता

इसमें वे लोग शामिल थे जो झूठ बोला करते थे।

किफ़लैल (आबी जानवर)

इसमें वे लोग शामिल थे जो लवातित किया करते। यह हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम थी।

(मल्फ़ूज़ात ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया 28,29,30)

सवालः उम्मते मुहम्मदिया के फ़ज़ाइल व ख़ासियतें क्या क्या हैं?

जवाबः उम्मते मुहम्मदिया के फ़ज़ाईल और ख़साईस अलल इत्तेफ़ाक़ बेशुमार और इस बारे में अख़बार व आसार बकसरत हैं। यह फ़ज़ाइल व ख़साइस भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ राजेह होते हैं क्योंकि आप ताबे और फ़रमाबरदार उम्मत रखते थे। इस उम्मत की सबसे बड़ी और अतम व अकमल फ़ज़ीलत यही है कि वह उम्मते मुहम्मदिया में हैं। जिस तरह यह नबी आख़िरुज़्ज़मा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ातिमुन्नबिय्यीन और तमाम नबियों के फ़ज़ाइल और कमालात के जामे हैं इसी तरह आपकी उम्मत ख़ातिमुल उमम है। और कमाले दीन और इतमामे नेमत से मख़्सूस है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः हज़रत मूसा ने अर्ज़ किया ऐ रब तेरे नज़दीक मेरी उम्मत जैसी भी कोई उम्मत है जिस पर तूने बादलों का साया फ़रमाया हो और उनके

लिए मन व सलवा उतारा हो? हक़ तबारक व तआला ने हज़रत मूसा से फ़रमायाः ऐ मूसा! तुम उम्माते मुहम्मदिया की फ़ज़ीलत को नहीं जानते। जितना फ़ज़्ल मेरा तमाम ख़ल्क़ पर है उतना तन्हा उस उम्मत पर। और फ़रमायाः उस वक़्त मेरी तमाम मख़्लूक़ पर जन्नत हराम है जब तक मुहम्मद और उनकी उम्मत उसमें दाख़िल न हो जाएं। हज़रत वहब बिन मुनब्बा रहमतुल्लाह अलैहि से मरवी है कि अल्लाह तआला ने शाअया अलैहिस्सलाम की तरफ़ "वही" फ़रमाई कि मैं नबी उम्मी को भेजूंगा। उनकी उम्मत को तमाम उम्मत पर बेहतरीन बनाउंगा। वह नेकी का हुक्म देगी और बदी से रोकेगी। मेरी वहदानियत मानेगी, मुझ पर ईमान लाएगी, मुझसे इख़्लास बरतेगी और मैंने जो कुछ नबियों पर नाज़िल किया, वह सबकी तस्दीक़ करेगी, आफ़ताब व महताब की हिफ़ाज़त करेगी यानी इबादत के अवक़ात के लिए उनकी मुहाफ़िज़त करेगी। मैं उन्हें तस्बीह, तकबीर, तहमीद व तौहीद को उनकी मज्लिसों में, उनकी आरामगाहों में, उनके सफ़र व हज़र में, हर हरकत व सकून में इल्हाम करूंगा। मस्जिदों में उनकी सफ़ें फ़रिश्तों की मानिन्द हैं। फ़रिश्ते अर्श के गिर्द हैं और वे मेरे दोस्त और मेरे मददगार हैं। मैं उनके ज़रिए अपना कीना बुतपरस्तों और दुश्मनों से निकालूंगा। वह मेरे लिए खड़े होकर बैठकर रुकू सज्दों के साथ नमाज़ अदा करेंगे। वे मेरी ख़ुशनूदी की ख़ातिर अपने घरों और अपने मालों से निकलेंगे और मेरी राह में जिहाद व क़िताल करेंगे। और मैं उनकी किताब यानी क़ुरआन से दीगर किताबों को, उनकी शरिअत से दीगर शरिअतों को, उनके दीन से दीगर दीनों को ख़त्म करूंगा। मैंन उन्हें सारी उम्मतों से अफ़ज़ल और उम्मे वस्त बनाया जो तमाम लोगों पर गवाह हैं। जब ग़ज़ब में आएंगे तो मेरी तहलील यानी ला इलाहा इलल्लाह का नारा लगाएंगे और जब निज़ा करेंगे तो तस्बीह करेंगे और मेरी पाकी बयान करेंगे। अपने चेहरों और आज़ा को पाक साफ़ करेंगे, हर चढ़ाई व उतार पर अल्लाहु अकबर कहेंगे, ख़ून बहाकर क़ुर्बानी देंगे। उनकी किताब यानी क़ुरआन उनके सीने में है। रात में इबादत गुज़ार और दिन में शेर यानी मुजाहिद हैं।

इनके अलावा और भी दीगर फ़ज़ाईल व ख़साईस हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 1/26..)

सवालः उम्मे मुहम्मदिया की क्या क्या खुसूसियात हैं?

जवाबः इबादात उम्मते मुहम्मदिया की बाज़ खुसूसियात ये हैं:

1. अल्लाह तआला ने इस पर ग़नीमतों को हलाल क़रार दिया हालांकि उससे पहले पिछली उम्मतों के लिए ये हलाल न हुई थीं।
2. यह कि तमाम ज़मीन को मस्जिद गरदाना (कि जहाँ चाहे नमाज़ पढ़ें)।
3. यह कि मिट्टी को पाक करने वाला बनाया यानी अगर पानी मयस्सर न हो तो या इस पर क़ुदरत न हो तो मिट्टी से तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली जाए।
4. यह कि पांच वक़्तों का नमाज़ का होना। पिछली उम्मतों में चार नमाज़ें थीं।
5. यह कि अज़ान व इक़ामत में बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम का कहना।
6. यह कि नमाज़ में आमीन का कहना।
7. यह कि नमाज़ में रुकू करना।
8. यह कि नमाज़ व क़िताल में उनकी सफ़ों की क़द्र व मंज़िलत और क़ुर्बे बारगाह में फ़रिश्तों जैसा तक़र्रुब होना।
9. यह कि तह्य्यतुस्सलाम का होना।
10. यह कि नमाज़े जुमा का होना जो दूसरी उम्मतों में नहीं है।
11. यह कि जुमा के दिन में उस घड़ी का होना कि जिसमें अल्लाह तआला से जो मांगा जाए मिलता है।
12. रमज़ान मुबारक की पहली रात को हक़ सुब्हनहू तआला का उनकी तरफ़ नज़रे इनायत से देखना।
13. यह कि जन्नत को उनके लिए मुज़य्यन करना और संवारना।
14. यह कि रोज़ेदार की मुँह की बू अपने नज़दीक मुश्क की खुश्बू से ज़्यादा पाकीज़ा बनाना।
15. यह कि रमज़ान की हर रात में फ़रिश्तों का उनके लिए इस्तिग़फ़ार करना।

16. यह कि रमज़ान में सहरी खाना और इफ़्तार में जल्दी करने को मुस्तहब किया जाना।
17. यह कि रमज़ान की रात में सुबह सादिक़ तक खाने पीने और जमा करने को मुबाह क़रार देना हालाँकि हम से पहले ये चीज़ें हराम थीं।
18. यह कि शब क़द्र जैसी अज़ीम रात को अता फ़रमाया जाना वग़ैरह।

(मदारिजुन्नबुव्वत 1/270 से 273)

सवालः आमाल में उम्मते मुहम्मदिया की क्या क्या ख़ुसूसियात हैं?

जवाबः आमाल में उम्मते मुहम्मदिया की बाज़ ख़ुसूसियात हस्बे ज़ैल हैं:

1. मुसीबत के वक़्त इस्तरजअ यानी इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन कहना जो कि परवरदिगार आलम की तरफ़ से फ़ज़्ल व रहमत को वाजिब करने वाला और उनके लिए सबबे हिदायत है।
2. इसरार व अग़लाल का उठा लिया जाना जोकि पिछली उम्मतों पर था।
3. उन तकलीफ़ों का दूर होना जो पिछली उम्मतों पर लाज़िम थीं मसलन क़त्ले अमद व ख़ता के दर्मियान ताईन व क़सास, ख़ताकार के आज़ा का काटना, मौज़ा निजासत को काटना और तोबा में अपनी जान को हलाक करना वग़ैरह। अगर बनी इस्राईल में से रात को कोई गुनाह करता तो पिछली सुबह के वक़्त उसके दरवाज़े पर लिखा होता कि इस गुनाह का कफ़्फ़ारा यह है कि अपनी दोनों आँखें निकाले। चुनाँचे वह दोनों आँखें निकाल देता।
4. ख़ता व निसयान और हर वह अमल जो जबर व कराह से सरज़द हो उन सबके मुवाख़ज़े से बरी होना।
5. लोगों पर गवाह बनाना और रसूलों के मुक़ाम में उन्हें खड़ा फ़रमाना क्योंकि वे अपनी अपनी उम्मतों पर गवाह हैं।
6. ज़लालत व गुमराही पर मुजतमा न होना।
7. इख़्तिलाफ़ फ़रोई का रहमत होना।
8. ताउन का उनके लिए शहादत व रहमत होना जबकि यह दूसरी

उम्मातों पर अज़ाब था।

9. जब किसी शख़्स के लिए दो आदमी भलाई के साथ गवाही दें तो उसके लिए जन्नत वाजिब हो जाना। पिछली उम्मतों में जबकि सौ आदमी गवाही देते तो जन्नत वाजिब होती थी।
10. उम्रें और आमाल का कम होना मगर उनका अज्र व सवाब ज़्यादा होना।
11. असनाद हदीस का अता किया जाना।
12. तवारीख़ व अन्साब की मारिफ़त होना।
13. उनमें अक़्ताब व अवताद, नजबा और अब्दाल के वजूद का होना वग़ैरह। (मदारिजुन्नबुव्वत 1/273 से 281)

सवालः क़ब्र व हशर में उम्मते मुहम्मदिया के क्या क्या ख़साइस हैं?

जवाबः क़ब्र व हशर में उम्मते मुहम्मदिया के बाज़ ख़साईस नीचे लिखे हैं:

1. क़ब्रों में गुनाह के साथ दाख़िल होना और बेगुनाह होकर वापस निकलना। मुसलमानों के इस्तिग़फ़ार करने की वजह से गुनाहों से पाक साफ़ कर दिया जाएगा।
2. उन्हीं के लिए सबसे पहले ज़मीन फाड़ी जाना मतलब यह है कि तमाम उम्मतों में सबसे पहले ये अपनी क़ब्रों से बाहर आएंगे।
3. अज़ाए वुज़ू का रोशन व ताबा होना।
4. रोज़े हशर मवक़्क़फ़ में बुलंद मुक़ाम पर होना।
5. पेशानियों पर एक निशान का होना जो उनके सज्दा रेज़ी का असर है।
6. नामा आमाल का उनके दाहिने हाथ में दिया जाना, वग़ैरह।

(मदारिजुन्नबुव्वत 1/281)

○ ○ ○

गुज़िश्ता बादशाहों के बारे में सवाल और जवाब

सवालः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़माने के नमरूद का क्या नाम था?

जवाबः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़माने के नमरूद का नाम नमरूद बिन किनआन था। (ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 7/15)

सवालः नमरूद ने कितने साल हुकूमत की?

जवाबः नमरूद बिन किनआन ने चार सौ साल हुकूमत की। इसलिए उसके दिमाग़ में रउनत और अनानियत आ गई थी। (इब्ने कसीर 3/2)

सवालः वे क्या क्या चीज़ें थीं जिनके बाइस नमरूद ने दावा ख़ुदाई का कर दिया था?

जवाबः नमरूद के पास कुछ तिल्समाती चीज़ें थीं मसलनः

1. तांबे की एक बता थी। जिस वक़्त कोई जासूस या चोर इस शहर में आता तो इस बता से आवाज़ निकलती जिससे वह पकड़ा जाता।
2. एक नक़्क़ारा था। जब किसी की कोई चीज़ गुम हो जाती तो उस पर चोब मारा जाता और नक़्क़ारा उस चीज़ का पता देता।
3. एक आइना था जिससे ग़ायब शख़्स का हाल मालूम होता था। जब उस आइने में नज़र की जाती तो वह ग़ायब आदमी, उसका शहर और क़यामगाह उसमें नमूदार हो जाती।
4. नमरूद के दरवाज़े पर एक पेड़ था जिसके साए में दरबारी लोग बैठते थे। जैसे जैसे आदमी बैठते जाते उसका साया फैलता जाता। एक लाख तक आदमियों के लिए साया फैलता जाता था और अगर एक लाख से एक भी ज़्यादा हो जाता तो साया ग़ायब हो जाता और सारे के सारे धूप में आ जाते।
5. एक हौज़ था जिसमें मुक़दमों का फ़ैसला होता था। मुद्दई और मुद्दा अलैहि बारी बारी इस हौज़ में दाख़िल होते तो जो सच्चा होता

तो उसकी नाफ़ के नीचे तक पानी बहता और जो झूठा होता, उसमें ग़ोता खाता। अगर फ़ौरन तोबा कर लेता तो बच जाता वरना हलाक हो जाता।

इस क़िस्म के तिल्समात पर नमरूद ने दावा ख़ुदाई का कर दिया था। (तफ़्सीर नईमी 1/677 से 678)

सवालः नमरूद ने अपने ख़्याल में आसमान वालों से लड़ने के लिए जो इमारत बनवाई थी उसकी बुलंदी कितनी थी?

जवाबः नमरूद ने शहर बाबुल में एक बहुत ऊँची इमारत बनवाई। उसका मकर यह था कि उसने यह बुलंद इमारत अपने ख़्याल में आसमान पर पहुँचने और आसमान वालों से लड़ने के लिए बनाई थी। उस इमारत की बुलंदी पाँच हज़ार गज़ थी। (ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 14/10)

और हज़रत कअब व मक़ातिल का क़ौल है कि उसकी बुलंदी दो मील थी।

अल्लाह तआला ने एक हवा चलाई और वह इमारत गिर पड़ी। जब वह इमारत गिर पड़ी तो घबराहट से लोगों की ज़बानें बदल गयीं। उस दिन से लोग तिहत्तर ज़बाने बोलने लगे जबकि उसके पहले सिर्फ़ एक ज़बान सुरयानी थी। (हाशिया जलालैन 217)

सवालः नमरूद के सर में मच्छर कितने सालों तक घुसा रहा?

जवाबः नमरूद के सर में मच्छर चार सौ साल तक घुसा रहा और उसके भेजे को चाटता रहा। उस मच्छर ने नमरूद को ऐसे सख़्त अज़ाब में मुब्तला कर दिया कि मौत उससे लाख दर्जे बेहतर थी। नमरूद अपना सर दीवारों और पत्थरों पर मारता था। लोगों से अपने सर पर जूते लगवाता और पत्थरों से कुचलवाता। यूँही रींग रींग कर बदनसीब ने हलाकत पाई। (तफ़्सीर नईमी 3/68, तफ़्सीर इब्ने कसीर 3/2)

सवालः जिस मच्छर ने नमरूद को हलाक किया था वह जिस्मानी एतिबार से कैसा था?

जवाबः जिस मच्छर ने नमरूद को हलाक किया था उसके पर और एक पाँव न था कि वह उस रोज़ की आग में जल गए थे जिस रोज़ कि आग में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को डाला गया था। इस मच्छर ने

बारगाहे इलाही में अर्ज़ की थी और उसे हुक्म हुआ था कि मत रो। मैं तेरे हाथों नमरूद को हलाक करूंगा।(मल्फ़ूज़ात ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया 162)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के दौर के फ़िरऔन का नाम क्या था?

जवाबः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने के फ़िरऔन का नाम वलीद बिन मुसअब था। क्योंकि यह बहुत ख़ूबसूरत था इसलिए लोग इसे क़ाबूस कहते थे। (तफ़्सीर नईमी 1/407)

बाज़ ने इसका नाम मुसअब बिन रियान कहा है। (इब्ने कसीर 1/6)

सवालः फ़िरऔन शहर असफ़हान का एक ग़रीब अत्तार था फिर वह मिस्र का बादशाह कैसे बना?

जवाबः फ़िरऔन शहर असफ़हान का एक ग़रीब अत्तार था। जब उस पर बहुत क़र्ज़ हो गया तो असफ़हान से भागकर शाम पहुँचा लेकिन वहाँ कोई ज़रिया माआश हाथ न आया तब वह रोज़ी की तलाश में मिस्र आया। यहाँ उसने देखा कि गाँव में तरबूज़ बहुत सस्ते बिकते हैं और शहर में मंहगे। दिल में सोचा कि नफ़े की तिजारत है चुनाँचे उसने गाँव से बहुत से तरबूज़ ख़रीदे मगर जब शहर की तरफ़ चला तो रास्ते में चुंगी लेने वालों ने कई जगह उससे चुंगी ली। बाज़ार आते आते उसके पास सिर्फ़ एक तरबूज़ बचा। बाक़ी सब चुंगी में चले गए। यह समझ गया कि इस मुल्क में कोई शाही इंतिज़ाम नहीं जो चाहे हाकिम बनकर माल वसूल कर ले। उस वक़्त मिस्र में कोई वबाई बीमारी फैली हुई थी। लोग बहुत मर रहे थे। फ़िरऔन क़ब्रिस्तान में बैठ गया और कहा कि मैं शाही अफ़सर हूँ। मुर्दों पर टैक्स लगा है कि फ़ी मुर्दा मुझे पाँच दिरहम दो और दफ़न करो। इस बहाने से उसने कुछ दिनों में बहुत माल जमा कर लिया। इत्तिफ़ाक़ से एक रोज़ कोई बड़ा आदमी दफ़न के वास्ते लाया गया। फ़िरऔन ने उसके वारिसों से भी रुपए मांगे तो उन्होंने उसे गिरफ़्तार करके बादशाह के पास पहुँचा दिया और सारा वाक़िआ बादशाह को सुना दिया। बादशाह ने फ़िरऔन से पूछा तुझे किसने इस जगह मुक़र्रर किया? फ़िरऔन ने कहा मैंने आप तक पहुँचने का यह बहाना बनाया था। मैं

आपको ख़बर किए देता हूँ कि आपके मुल्क में बड़ी बदनज़्मी है। मैंने तीन महीने के अरसे में ज़ुल्म के साथ इतना माल जमा कर लिया है। आप ख़्याल कर सकते हैं कि दूसरे हुक्काम क्या कुछ करते होंगे। यह कहकर वह सारा माल बादशाह के सामने डाल दिया। और कहा कि अगर आप इंतिज़ाम मेरे हवाले कर दें तो मैं आपका मुल्क दुरुस्त कर दूं। बादशाह को यह बात पसंद आई और फ़िरऔन को कोई मामूली ओहदा दे दिया। फ़िरऔन ने वह तरीक़ा इख़्तियार किया जिससे बादशाह भी खुश रहा और रिआया भी। धीरे-धीरे यह तमाम लश्कर का अफ़सर बना दिया गया। और मुल्क का इंतिज़ाम अच्छा हो गया। जब बादशाह मिस्र मरा तो रिआया ने फ़िरऔन को तख़्त पर बिठा दिया। और इस तरह वह मिस्र का बादशाह बन गया। (तफ़्सीर नईमी 1/410)

सवालः फ़िरऔन ने जब ख़ुदाई का दावा किया तो सबसे पहले उसको किसने सज्दा किया?

जवाबः फ़िरऔन को सबसे पहले उसके वज़ीर हामान ने सज्दा किया। (तफ़्सीर नईमी 1/410)

सवालः फ़िरऔन ने बनी इस्राईल को कितने सालों तक गुलाम बनाए रखा था?

जवाबः फ़िरऔन ने चार सौ साल तक बनी इस्राईल को ग़ुलाम बनाए रखा था। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 19/6)

सवालः फ़िरऔन ने कितने बच्चों का क़त्ल और कितने हमल साक़ित करवाए थे?

जवाब : फ़िरऔन ने बारह हज़ार बरिवायत दीगर सत्तर हज़ार का क़त्ल और नव्वे हज़ार हमल साक़ित करवाए थे।(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 1/6)

एक क़ौल मुताबिक़ एक लाख चालीस हज़ार बच्चों को क़त्ल करवाया था। (नज़हतुल मजालिस 12, 19)

सवालः फ़िरऔन किस माह की किस तारीख़ को किस दिन और किस वक़्त गर्क़ हुआ?

जवाबः फ़िरऔन दसवीं मुहर्रम को जुमा के दिन दोपहर के वक़्त ग़र्क़ हुआ था। (तफ़्सीर नईमी 1/421)

सवालः फ़िरऔन जिस दरिया में ग़र्क़ हुआ उसका नाम क्या है और उसकी लंबाई व चौड़ाई कितनी है?

जवाबः फ़िरऔन और उसका तमाम लश्कर जिस दरिया में ग़र्क़ हुए थे उसका नाम बहर क़ुलज़म था जो बहरे फ़ार के किनारे पर है या वहर मावरा जिसको असाफ़ कहते हैं।

(ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 1/6)

क़ुलज़म एक शहर का नाम है जहाँ यह दरिया ख़त्म होता है। इसलिए इसको भी क़ुलज़म कहा जाता है। इसे बहरे अहमर भी कहा जाता है।

इसकी लंबाई चार सौ साठ फ़रसख़ जुनूबन व शुमालन और चौड़ाई साठ फ़रसख़ और जहाँ फ़िरऔन ग़र्क़ हुआ था वहाँ चौड़ाई चार फ़रसख़ थी। यह दरिया मिस्र से तीन दिन के फ़ासले पर वाक़ेअ है। और यह जो मशहूर है कि दरियाए नील में फ़िरऔन ग़र्क़ हुआ था महज़ ग़लत है।

(तफ़्सीर नईमी 1/417)

सवालः फ़िरऔन जब डूबने लगा था तो उस वक़्त उसके पास जिब्राईल अमीन क्या लेकर आए थे?

जवाबः मरवी है कि एक मर्तबा जिब्राईल अलैहिस्सलाम फ़िरऔन के पास एक इस्तिफ़ता लाए जिसका मज़मून यह थाः

"बादशाह का क्या हुक्म है ऐसे ग़ुलाम के हक़ में जिसने एक शख़्स के माल व नेमत पर परवरिश पाई। फिर उसकी नाशुक्री की और उसके हक़ का मुन्किर हो गया और अपने आप मौला होने का मुद्दई बन गया।"

इस पर फ़िरऔन ने यह जवाब लिखाः

जो ग़ुलाम अपने आक़ा की नेमतों का इंकार करे और उसके मुक़ाबिल आए, उसकी सज़ा यह है कि उसको दरिया में डुबा दिया जाए।

जब फ़िरऔन डूबने लगा तो ज़िब्राईल अलैहिस्लाम ने उसका वही फ़तवा उसके सामने कर दिया और उसको फ़िरऔन ने पहचान भी लिया।

(ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 11/14)

सवालः फ़िरऔन के साथ डूबने वाले फ़िरऔनी लश्करों की तादाद कितनी थी?

जवाबः फ़िरऔन के साथ एक रिवायत में है कि सत्तर हज़ार

घोड़ेसवार फ़ौज उसके लश्कर के आगे आगे थी और बाक़ी फ़ौज के बारे में कुछ सही पता नहीं लगता। तफ़्सीर रूहुल बयान में फ़रमाया कि सत्तर लाख घोड़ेसवार फ़ौज थी। और फ़्सीर अज़ीज़ी में फ़रमाया कि एक लाख तीर अंदाज़ एक लाख नेज़े बाज़, एक लाख गुर्ज़ मारने वाले उनमें थे। ये सब के सब पानी में ग़र्क़ हुए। (तफ़्सीर नईमी 1/420)

सवालः जब बनी इस्राईल को फ़िरऔन के ग़र्क़ होने का यक़ीन न आया तो अल्लाह तआला ने क्या निशानी ज़ाहिर फ़रमाई?

जवाबः जब फ़िरऔन लश्कर समेत ग़र्क़ हुआ और बनी इस्राईल को यक़ीन न आया तो अल्लाह के हुक्म से दरिया ने फ़िरऔन की लाश को दरिया के किनारे फेंक दिया ताकि बनी इस्राईल देखकर यक़ीन कर लें। इससे पहले जो कोई भी पानी में ग़र्क़ होता था उसकी लाश डूब जाया करती थी। लेकिन फ़िरऔन के बाद से पानी ने लाश को क़ुबूल करना बंद कर दिया। (हाशिया 16 जलालैन 178)

सवालः फ़िरऔन ख़ुदाई का दावा करने के कितने सालों बाद ग़र्क़ हुआ?

जवाबः फ़िरऔन ख़ुदाई का दावा करने के चालीस साल बाद ग़र्क़ हुआ। (इब्ने कसीर 17/13)

सवालः फ़िरऔन ने कितने साल हुकूमत की?

जवाबः फ़िरऔन ने चार सौ साल हुकूमत की।(मआलिमुत्तंज़ील 2/19)

सवालः फ़िरऔन व हामान की लाशें अब तक कहाँ मौजूद हैं?

जवाबः फ़िरऔन और हामान की लाशें (क़ाहिरा के अजाएब घर में)अब तक मौजूद हैं। (तफ़्सीर नईमी 1/418)

सवालः फ़िरऔन की उम्र कितनी हुई?

जवाबः फ़िरऔन की उम्र छः सौ बीस साल हुई।

(हाशिया 8 जलालैन 138, मआलिमुत्तंज़ील 2/19)

सवालः कुल कितने बादशाहों का लक़ब नमरूद हुआ?

जवाबः कुल छः बादशाहों का लक़ब नमरूद हुआः

1. नमरूद बिन किनआन बिन हाम बिन नूह। यह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़माने का नमरूद था।

2. नमरूद बिन कोश बिन किनआन बिन हाम।
3. नमरूद बिन संजार बिन गुरूर बिन कोश बिन किनआन।
4. नमरूद बिन माश बिन किनआन।
5. नमरूद बिन सारूग़ बिन अरग़ू बिन मालिख।
6. नमरूद बिन किनआन बिन मसास बिन नक़ता।(हयातुल हैवान 1/98)

सवालः कुल कितने बादशाहों का लक़ब फ़िरऔन हुआ?

जवाबः कुल तीन बादशाह ऐसे गुज़रे जिनका लक़ब फ़िरऔन हुआः

1. सनान अलअशअल बिन अलवान बिन अमीद। यह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़माने का फ़िरऔन है।
2. रय्यान बिन वलीद। यह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ज़माने का फ़िरऔन है।
3. वलीद बिन मुसअब। यह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने का। (हयातुल हैवान 1/99)

सवालः कुल कितने बादशाहों ने पूरी दुनिया पर हुकूमत की?

जवाबः दुनिया में चार बादशाह ऐसे गुज़रे हैं जो तमाम दुनिया पर हुक्मुरान थे। इनमें दो मोमिनः

1. हज़रत ज़ुल क़रनैन, 2. हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम।

और दो काफ़िरः

1. नमरूद, 2. बख़्ते नसर।

और अन्क़रीब एक पाँचवां बादशाह इस उम्मत में से होने वाला है जिनका इस्मे शरीफ़ इमाम मेहदी है। उनकी हुकूमत तमाम रूए दुनिया पर होगी।

(ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 16/2, अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 2/178)

और हाशिया 1 जलालैन 119 पर इन दो काफ़िर बादशाहों के नाम बख़्ते नसर और शद्दाद बिन आद है।

सवालः बख़्ते नसर ने कितन साल हुकूमत की?

जवाबः बख़्ते नसर की हुकूमत सात सौ साल रही है।

(हाशिया 10 जलालैन 230)

सवालः शद्दाद ने जो जन्नत बनवाई थी उसकी तामीर कितने

सालों में मुकम्मल हुई?

जवाबः शद्दाद की जन्नत तीन साल में मुक्कमल हुई थी।

(सावी 4/317)

सवालः शद्दाद की कितनी उम्र हुई?

जवाबः शद्दाद की उम्र नौ सौ साल हुई।

(सावी 4/317)

सवालः पहले ज़माने में किस मुल्क के बादशाहों का लक़ब क्या होता था?

जवाबः पहले ज़माने में किस मुल्क के बादशाह का क्या लक़ब होता था इसकी तफ़्सील इस तरह हैः

फ़ारस के बादशाह का लक़ब किसरा होता था।

तुर्किस्तान के बादशाह का लक़ब ख़ाक़ान होता था।

हब्शा के बादशाह का लक़ब नजाशी।

क़िब्तियों के बादशाह का लक़ब फ़िरऔन।

मिस्र के बादशाह का लक़ब अज़ीज़ और फ़िरऔन।

यमन के बादशाह का लक़ब तबा।

हिंदुस्तान के बादशाह का लक़ब दहमी (एक क़ौल के मुताबिक़ बतलीमूस होता था)।

(इब्ने कसीर 1/6)

चीन के बादशाह का लक़ब फ़ग़फ़ूर।

ज़ंजियों (हब्शियों) के बादशाह का लक़ब ग़ाना।

यूनान के बादशाह का लक़ब बतलमयू।

यहूदियों के बादशाह का लक़ब क़ैतून या मातह।

बरबर मग़रिबी अफ़्रीक़ा की एक क़ौम का लक़ब जालूत।

साएबा (नसारा का एक फ़िरक़ा) के बादशाह का लक़ब नमरूद।

फ़रआना के बादशाह का लक़ब अख़शीद।

अरब के बादशाह का लक़ब क़ब्ल अजम नौमान।

अफ़्रीक़ा के बादशाह का लक़ब जरजीर।

ख़ल्लात के बादशाह का लक़ब शहरमान संदफ़ूर।

सक़ालबा के बादशाह का लक़ब माजदा।

अल अमन के बादशाह का लक़ब तग़फ़ूर।

अल हज़र के बादशाह का लक़ब वतील।
अन्नोबा के बादशाह का लक़ब का काबुल।
अल जात के बादशाह का लक़ब खुदावंद कार।
अशरोशना के बादशाह का लक़ब अफ़शीन।
ख़्वारज़म के बादशाह का लक़ब ख़्वारज़म शाह।
जरजान के बादशाह का लक़ब सोल।
अज़रबजान के बादशाह का लक़ब असबहीन।
और तिबरिस्तान के बादशाह लक़ब सालार होता था।

(उम्दतुल क़ारी 1/93)

सवालः उस बादशाह का नाम क्या है जिसका क़द एक मील लंबा था?

जवाबः वह जालूत बादशाह था कि उसका क़द एक मील लंबा था। उसके सर पर जो खुर्द होता था वह तीन सौ रतल वज़न का होता था।

(हाशिया 3 जलालैन 38)

और तफ़्सीर नईमी जि० 2 स० 555 पर है कि उसका साया एक मील तक जाता था।

सवालः जालूत बादशाह को किसने क़त्ल किया था?

जवाबः जालूत को हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने क़त्ल किया था।

(क़ुरआन 2)

○ ○ ○

आसमान और ज़मीन के बारे में सवाल और जवाब

सवालः ज़मीन व आसमान की पैदाइश कितने दिनों में हुई?
जवाबः ज़मीन और आसमान की पैदाइश छः दिनों में हुई।

(क़ुरआन)

छः दिनों में मुराद इतनी मिक़्दार है क्योंकि दिन व रात और आफ़ताब तो थे ही नहीं। और इतनी मिक़्दार में पैदा करना इतनी मख़्लूक़ को आहिस्तगी और इत्मिनान की तालीम के लिए है वरना अल्लाह तआला एक लम्हे में सब कुछ करने में क़ादिर है। (ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 19/3)

सवालः ज़मीन व आसमान में से सबसे पहले किसकी पैदाइश हुई?

जवाबः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि पहले ज़मीन की पैदाइश हुई फिर आसमान की। अलबत्ता ज़मीन की दुरुस्तगी वग़ैरह बाद में हुई। (इब्ने कसीर 1/3)

ज़मीन से पहले पानी था। क़ुदरत ने उस पर झाग पैदा किए। वह झाग चालीस साल तक एक जगह महफ़ूज़ रहे। फिर वही झाग फैला दिए गए। उन्हें फैले हुए झागों का नाम ज़मीन है। इन झागों की पैदाइश आसमानों की पैदाइश से पहले है और उनका फैलाव उसके बाद।

(तफ़्सीर नईमी 4/18)

सवालः ज़मीन किस चीज़ पर क़ायम है?

जवाबः जैसा कि एक रिवायत जानवरों के बयान में आ रही है कि उस मछली का नाम लूतया या मौत है जिसकी पुश्त पर ज़मीन क़ायम है। एक रिवायत यह है कि नून नामी एक मछली है जो सातों ज़मीन के नीचे है। इस मछली की पीठ पर एक चट्टान है जिसकी मोटाई आसमान व ज़मीन के बराबर है। इस पर एक बैल है जिसके चालीस हज़ार सींग हैं।

उसकी पीठ पर सातों ज़मीन आसमान और उनकी तमाम मख़्लूक़ हैं। एक क़ौल यह भी है कि ज़मीन मछली पर है, मछली पानी में, पानी सिफ़ात पर, सिफ़ात फ़रिश्ते पर, फ़रिश्ता पत्थर पर, पत्थर हवा पर है।

(इब्ने कसीर 1/3)

सवालः पानी पर ज़मीन सबसे पहले किस जगह बनाई गई?

जवाबः पानी पर ज़मीन सबसे पहले उस जगह बनाई गई जहाँ आज ख़ाना काबा है। (तफ़्सीर नईमी 1/839, जलालैन 56)

सवालः ज़मीन का कुल फैलाव कितना है और कितने हिस्से में कौनसी मख़्लूक़ आबाद है?

जवाबः ज़मीन का कुल फैलाव पाँच सौ साल की मुसाफ़त के बराबर है जिसमें तीन सौ हिस्सों पर पानी ही पानी है और एक सौ नव्वे हिस्सों पर याजूज माजूज आबाद हैं। बाक़ी दस में से सात में हब्शी लोग आबाद हैं और तीन हिस्सों में उनके अलावा मख़्लूक़ है।

(हाशिया 7 जलालैन 252, जमल 3/55)

सवालः उन पहाड़ों की तादाद कितनी है जो ज़मीन की पैदाइश के बाद उसकी हरकत को रोकने के लिए पैदा किए गए?

जवाबः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि ज़मीन की पैदाइश के बाद इसकी हरकत को रोकने के लिए अल्लाह तआला ने जिन पहाड़ों को पैदा फ़रमाया उनकी तादाद सत्रह है। कोहे क़ाफ़, कोहे जूदी, कोहे अबुल क़ैस, कोहे लबनान, तूरे सीनीन, इन्हीं पहाड़ों में से हैं। (हाशिया 16 जलालैन 346, सावी 21)

एक रिवायत में है कि इन पहाड़ों की तादाद चार सौ इक्तालिस है।

(नज़हतुल मजालिस 9/90)

सवालः ज़मीन का वह कौन सा हिस्सा है जो हर जगह से अफ़ज़ल है?

जवाबः ज़मीन का वह हिस्सा जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुत्तसिल है वह हर जगह से अफ़ज़ल है। यहाँ तक कि काबा मौज़्ज़मा और अर्शे अज़ीम और कुर्सी से भी अफ़ज़ल।

(मदारिजुन्नबुव्वत 1/257, फ़तावा रिज़विया 4/687)

सवालः ज़मीन का वह कौनसा हिस्सा है जो सबसे ज़्यादा बुलंद और आसमान से सबसे ज़्यादा क़रीब है?

जवाबः सख़राए बैतुल मुक़द्दस। यह ज़मीन का वह हिस्सा है जो सबसे बुलंद और आसमान से सबसे ज़्यादा क़रीब है। इसकी ऊँचाई अठ्ठारह मील है।

(हाशिया 5, जलालैन 201, जमल 3/234, रूहुल बयान 396)

यह वही पत्थर है जब शबे मैराज नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने बुर्राक़ को जिसमें बांधा था। और क़रीब क़यामत हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम यहीं से सूर फूंकेंगे।

सवालः ज़मीन पर कुल कितने पहाड़ हैं?

जवाबः दुनिया में कुल छः हज़ार छः सौ तिहत्तर (6673) पहाड़ हैं।

(तफ़्सीर नईमी 3/90)

सवालः ज़मीन पर कांटेदार पेड़ कब से पैदा होने लगे जबकि पहले तमाम पेड़ फलदार थे?

जवाबः क़त्ले हाबील से पहले तमाम पेड़ फलदार थे। बग़ैर फल का कोई पेड़ न था। जब क़ाबील ने हाबील को क़त्ल किया तो बाज़ पेड़ों पर कांटे पैदा हो गए। (हाशिया 10, जलालैन 344)

सवालः समुंदर का पानी कब से खारा हुआ जबकि पहले मीठा था?

जवाबः पहले समुंदर का पानी मीठा था लेकिन जब क़ाबील ने हाबील को क़त्ल किया तो समुंदर का पानी खारा हो गया।

(हाशिया 10, जलालैन 344)

सवालः पहले आसमान का नाम क्या है और वह किस चीज़ का बना हुआ है?

जवाबः पहले आसमान का नाम रक़ी है जो सब्ज़ ज़मुर्रुद से बना हुआ है। (रूहुल बयान 1/62)

दूसरे क़ौल के मुताबिक़ इसका नाम रक़ीक़ा है और वह मरवारीद सब्ज़ का बना हुआ है। (मआरिजुन्नबुव्वत 99/3)

और तीसरा क़ौल यह है कि वह ठहरे हुए पानी का है।

(रूहुल मानी 30/201)

सवालः दूसरे आसमान का नाम क्या है और वह किस चीज़ का बना हुआ है?

जवाबः दूसरे आसमान का नाम अरफ़लून है यह सफ़ेद चाँदी से बना हुआ है। (रूहुल बयान 1/62)

एक क़ौल यह है कि वह सफ़ेद मोती का है। (रूहुल मानी 30/201)

और एक क़ौल यह है कि इस आसमान का नाम क़ैदूम है और यह सुर्ख़ सोने से तैयार किया गया है। (मअरिजुन्नबुव्वत 101/3)

सवालः तीसरे आसमान का नाम क्या है और वह किस चीज़ का बना हुआ है?

जवाबः तीसरे आसमान का नाम क़ैदूम है जो सुर्ख़ याक़ूत का बना हुआ है। (रूहुल बयान 1/62)

दूसरा क़ौल यह है कि तीसरे आसमान का नाम ज़बलून है और वह सफ़ेद मरवारीद का बना हुआ है। (मदारिजुन्नबुव्वत 3/102)

और तीसरा क़ौल यह है कि वह लोहे का है। (रूहुल मानी 30/201)

सवालः चौथे आसमान का नाम क्या है और वह किस चीज़ का बना हुआ है?

जवाबः चौथे आसमान का नाम माऊन है और वह ज़र्रा अबीज़ से बनाया गया है। (रूहुल बयान 1/64)

एक क़ौल यह है कि चौथे आसमान का नाम ज़यून है। एक क़ौल के मुताबिक़ नुक़रा ख़ाम और एक क़ौल के मुताबिक़ मरवारीद सफ़ेद से बनाया गया है। (मअरिजुन्नबुव्वत 3/103)

एक क़ौल यह भी है कि यह आसमान तांबे का है। (रूहुल मानी 30/201)

सवालः पाँचवें आसमान का नाम क्या है और वह किस चीज़ का बना हुआ है?

जवाबः पाँचवा आसमान सुर्ख़ सोने का है और उसका नाम दबक़ा है। (रूहुल बयान 1/62)

एक क़ौल यह है कि उसका नाम अलबयानीक़ून है। (मअरिजुन्नबुव्वत 3/106)

और वह चांदी का है। (रूहुल मानी 30/201)

सवालः छठे आसमान का नाम क्या है और वह किस चीज़ का बना हुआ है?

जवाबः छठे आसमान का नाम दफ़ना है जो ज़र्द याक़ूत का है। (रूहुल बयान 1/62)

दूसरा क़ौल यह है कि छठा आसमान लुलु से तैयार किया गया है। और इसका नाम आरूस है। (मअरिजुन्नबुव्वत 3/107)

और तीसरे क़ौल के मुताबिक़ यह आसमान सोने का है। (रूहुल मानी 30/201)

सवालः सातवें आसमान का नाम क्या है और वह किस चीज़ का बना हुआ है?

जवाबः सातवां आसमान रोशन नूर से बनाया गया है और उसका नाम अरूवा है। (रूहुल बयान 1/62)

दूसरा क़ौल यह है सातवां आसमान दर्रा सफ़ेद या जोहर सफ़ेद का है और उसका नाम क़ाईल है। (मअरिजुन्नबुव्वत 3/109)

और तीसरा क़ौल यह है कि यह आसमान सफ़ेद ज़मर्रुद का है। (रूहुल मानी 30/201)

सवालः कितने और किन किन हज़रात की मौत पर आसमान रोया?

जवाबः सिर्फ़ दो हस्तियों की शहादत पर आसमान रोयाः

हज़रत याहया अलैहिस्सलाम के क़त्ल पर और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के मौक़े पर। आसमान का रोना उसका सुर्ख़ होना है। (इब्ने कसीर 25/15)

सवालः अल्लाह तआला ने कितनी बाबरकत चीज़ें आसमान से ज़मीन पर उतारा?

जवाबः अल्लाह तआला ने चार बाबरकत चीज़ें आसमान से ज़मीन की तरफ़ उतारींः

1. लोहा, 2. आग, 3. पानी, 4. और नमक। (ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 27/19)

सवालः ज़मीन पर नहरों और चश्मों की पैदाइश किस तरह हुई?

जवाबः नहरों और चश्मों की पैदाइश इस तरह हुई कि जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा फ़रमाने का इरादा किया तो ज़मीन की तरफ़ "वही" भेजी कि तुझसे एक ऐसी मख़्लूक़ पैदा करने वाला हूँ जिनको इताअत पर जन्नत और नाफ़रमानी पर जहन्नम मिलेगी। ज़मीन ने अर्ज़ किया, ऐ परवरदिगार! क्या तू मुझसे ऐसी मख़्लूक़ पैदा करेगा जो जहन्नम में जाएगी। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, हाँ। तो ज़मीन रोने लगी और इतनी रोई कि उसके रोने से नहरे और चश्में जारी हो गए और क़यामत तक जारी रहेंगे। (हाशिया 2/8)

सवालः ज़मीन ख़ुश्क कब से हुई जबकि पहले तमाम रूए ज़मीन तर व ताज़ा थी?

जवाबः क़त्ले हाबील से पहले तमाम दुनिया तर व ताज़ा थी लेकिन क़त्ल के बाद ज़मीन ख़ुश्क हो गई। (हाशिया 10, जलालैन 344)

सवालः उन पेड़ों के नाम क्या हैं और वे कहाँ पाए जाते हैं कि जिनकी तर शाख़ें आपस में रगड़ने से आग पैदा होती है?

जवाबः ये दोनों अरब में होते हैं और वहाँ जंगलों में कसरत से पाए जाते हैं। एक पेड़ का नाम मुर्ख़ और एक का नाम ग़फ़्फ़ार है। उनकी यह ख़ासियत है कि जब उनकी सब्ज़ शाखें काटकर एक दूसरे पर रगड़ी जाएं तो उनसे आग निकलती है बावजूद यह कि वह इतनी तर होती हैं कि उनसे पानी टपकता होता है। (ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 23/4)

सवालः अर्शे आज़म के कितने पर्दे हैं और अर्श के पाए कितने हैं?

जवाबः अर्शे अज़ीम के छः लाख पर्दे हैं। (तफ़्सीर नईमी 1/278)

और उसके तीन लाख साठ हज़ार पाए हैं। (नज़हतुल मजालिस 11)

सवालः सिदरतुल मुन्तहा क्या चीज़ है?

जवाबः सिदरा बेर का पेड़ है जिसके पत्ते हाथी के कान के बराबर और फल मटके की तरह हैं। (जलालैन 229)

कहते हैं कि उस पेड़ की तीन तरह की सिफ़ते हैं एक यह कि साया तवील है। दूसरे यह कि उसका मज़ा लतीफ़ है और तीसरे यह कि उसकी

वू लतीफ़ है। (मदारिजुन्नवुव्वत 1/300)

सवालः सिदरतुल मुन्तहा को "सिदरतुल मुन्तहा" क्यों कहते हैं?

जवाबः क्योंकि इस जगह मख़्लूक़ के आमाल और उनके उलूम ख़त्म हो जाते हैं और अम्रे इलाही नुज़ूल फ़रमाता है। अहकामे इलाही हासिल किए जाते हैं। फ़रिश्ते उसी के पास ठहरते हैं। उससे आगे बढ़ने और वहाँ तजावुज़ करने की किसी में ताब व तमा नहीं है। यहीं सब रुक जाते हैं। हर वह चीज़ आलमे सिफ़ली से ऊपर जाती और हर वह चीज़ आलमे अलवी से अज़ क़िस्म अवामिर व अहकामे इलाही नुज़ूल फ़रमाते हैं। उन सबकी इंतिहा यही है। उसके आगे किसी मख़्लूक़ ने तजावुज़ नहीं किया सिवाए सैय्यदुल मुरसलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के। इसलिए इसको सिदरतुल मुन्तहा कहते हैं।

(हाशिया 12 जलालैन 229, मदारिजुन्नवुव्वत 1/299)

सवालः सिदरतुल मुन्तहा किस आमसान पर है?

जवाबः एक रिवायत के मुताबिक़ सिदरतुल मुन्तहा छठे आसमान पर है और एक और रिवायत के मुताबिक़ सातवें आसमान में है। इन दोनों रिवायतों की ततबीक़ इस तरह करते हैं कि उसकी जड़ तो छठे आसमान में है और उसकी शाख़ें सातवें आसमान में है। (मदारिजुन्नवुव्वत 1/299)

सवालः सिदरतुल मुन्तहा की जड़ से कितनी नहरें जारी हैं?

जवाबः सिदरतुल मुन्तहा की जड़ से चार नहरें जारी हैं:

1. नील,
2. फ़रात,
3. सहान,
4. सजान।

(तफ़्सीर अलम नशरह 194)

सवालः ज़मीन पर गुलाब और चमेली के फूल किस तरह पैदा हुए?

जवाबः बाज़ हदीसों में आया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पसीने मुबारक से गुलाब का फूल पैदा हुआ है। और एक जगह मरवी है कि आपने फ़रमायाः गुल सफ़ेद यानी चमेली मेरे पसीने से शबे मैराज में पैदा हुई। गुल सुर्ख़ यानी गुलाब जिब्राईल अलैहिस्सलाम के पसीने और गुल ज़र्द यानी चंपा बुर्राक़ के पसीने से। नीज़ मरवी है कि फ़रमायाः

मेराज से वापसी पर मेरे पसीने का क़तरा ज़मीन पर गिरा तो उससे गुलाब पैदा हुआ जो कोई मेरी खुशबू सूंघना चाहे वह गुलाब को सूंघे। एक रिवायत में आया है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब मेरे पसीने का क़तरा ज़मीन पर गिरा तो ज़मीन हंसी और गुलाब के फूल को उगाया। लेकिन मुहद्दिसीन इन हदीसों को अपनी इतिस्तलाहों के मुताबिक़ जो वे रखते हैं कलाम करते हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 1/49)

सवालः ज़मीन पर सबसे पहले कौन सा पहाड़ क़ायम किया गया?

जवाबः ज़मीन पर सबसे पहला पहाड़ जो क़ायम किया गया वह मक्का मुकर्रमा का जबल अबू क़ुबीस है और सबसे पहले जिसने उस पर इमारत बनाई अबू क़ुबीस नामी एक शख़्स था। चुनाँचे उसी के नाम से इस पहाड़ का नाम यह पड़ गया। (नज़्हततुल मजालिस 9/111)

सवालः सातों ज़मीनों में से किस ज़मीन में क्या है?

जवाबः सातों ज़मीनों में पहली पर तो हम आबाद हैं। दूसरी ज़मीन हवा का मसकन है, तीसरी ज़मीन में ऐसी मख़्लूक़ है जिनके चेहरे बनी आदम और मुँह कुत्तों के से हैं, पैर बैलों के से और उनके बाल भेड़ के ऊन की तरह हैं। हमारी रात उनका दिन है और हमारा दिन उनकी रात। चौथी ज़मीन में गंधक, पत्थर हैं जिनको खुदा ने जहन्नमियों के लिए पैदा किया है। पाँचवीं ज़मीन में दोज़ख़ियों के लिए विच्छू हैं। छठी ज़मीन में कुफ़्फ़ार की रूहें और सातवीं ज़मीन इब्लीस के लश्कर का ठिकाना।

(नज़्हतुल मजालिस 9/111)

○ ○ ○

जानवरों के बारे में सवाल व जवाब

सवालः सबसे पहले अल्लाह तआला ने किस जानदार को पैदा फ़रमाया?

जवाबः उस मछली का नाम यहमूत या लोतिया है।

(हयातुल हैवान, मदारिजुन्नबुव्वत 1/130)

सवालः कुत्ते की पैदाइश किस तरह हुई?

जवाबः इस तरह खुदा ने जब आदम अलैहिस्सलाम का पुतला मुबारक तैयार फ़रमाया तो फ़रिश्ते हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के इस पुतले की ज़ियारत करते थे मगर शैतान लईन हसद की आग में जलभुन गया। और एक मर्तबा इस मरदूद ने बुग़ज़ व किना में आकर आदम अलैहिस्सलाम के पुतले मुबारक पर थूक दिया। यह थूक हज़रत अलैहिस्सलाम की नाफ़ मुबारक के मुक़ाम पर पड़ा। खुदाए तआला ने हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि इस जगह से उतनी मिट्टी निकालकर उस मिट्टी का कुत्ता बना दो। चुनाँचे इस शैतानी थूक से मिली हुई मिट्टी का कुत्ता बना दिया गया। यह कुत्ता आदमी से मानूस इसलिए है कि मिट्टी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की है। और पलीद इसलिए कि शैतान का थूक मिला है और रात को जागता इसलिए है कि हाथ इसे जिब्राईल अलैहिस्सलाम के लगे हैं। (रूहुल बयान 1/86)

सवालः ख़िंज़ीर की पैदाइश किस तरह हुई?

जवाबः इसकी पैदाईश इस तरह हुई कि किश्ती नूह में जब जानवरों का गोबर फैल गया तो लोग बदबू और अफ़ूनत से परेशान होकर हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की बारगाह में शिकायत करने लगे और अल्लाह तआला ने नूह अलैहिस्सलाम की तरफ़ "वही" भेजी कि हाथी की दुम हिलाओ। आपके हाथी की दुम हिलाते ही उससे ख़िंज़ीर नर व मादा निकल आए और निजासत को खाने लगे।

(इब्ने कसीर 12/4, मआरिजुन्नबुव्वत 75/1)

सवालः चूहे की पैदाइश किस तरह हुई?

जवाबः इस तरह किश्ती नूह में इब्लीस ने जब ख़िंज़ीर की पेशानी पर हाथ फेरा तो दो चूहे नर व मादा पैदा हो गए?

सवालः बिल्ली की पैदाइश किस तरह हुई?

जवाबः इसकी पैदाइश इस तरह हुई कि किश्ती नूह में चूहों ने जब किश्ती के तख़्ते कुतरने शुरू किए तो हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने बारगाहे इलाही में इल्तिजा की। हुक्मे इलाही हुआ कि शेर की पेशानी पर उंगली फेरो। आपने ऐसा ही किया तो शेर को छींक आई और उससे बिल्ली का जोड़ा निकला जिससे चूहे दुबक कर बैठे रहे।

(इब्ने कसीर 12/4, मआरिज 1/75)

सवालः उस मछली का नाम क्या है जिसकी पुश्त पर ज़मीन कायम है?

जवाबः उस मछली का नाम यहमूत या लोतिया है।

(हयातुल हैवान, मदारिजुन्नवुव्वत 1/130)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जब जन्नत से दुनिया में तशरीफ़ लाए तो उस वक़्त ज़मीन पर कौन सा जानवर था?

जवाबः उस वक़्त ज़मीन पर दो ही जानवर थे। खुश्की में टिड्डी और तरी में मछली। (हयातुल हैवान 478)

सवालः उस कीड़े का क्या नाम है जो आग से पैदा होता है?

जवाबः वह समंदल नामी एक कीड़ा है जो आग में पैदा होता है और आग ही में रहता है। बिलादे तुर्क में उसकी ऊन की तौलिया बनाई जाती थीं जो मैली हो जाने पर आग में डालकर साफ़ कर ली जातीं और जलती न थीं। (ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 15/6)

सवालः दुनिया में सबसे पहले किस जानवर को बुख़ार हुआ?

जवाबः इब्ने अबि हातिम की रिवायत में है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने जब तमाम मवेशियों को अपनी किश्ती में सवार कर लिया तो लोगों ने कहा कि शेर की मौजूदगी में ये मवेशी आराम से किस तरह रह सकेंगे? बस अल्लाह तआला ने उस वक़्त शेर

पर बुख़ार डाल दिया। जिससे वह चुपचाप बैठा रहा। यह पहला जानवर है जो दुनिया में बीमार हुआ। (रूहुल मानी 12/53, अल बिदाया 1/111)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कितने और किन किन जानवरों को मारने से मना फ़रमाया?

जवाबः पाँच जानवरों कोः

1. चींटी, 2. शहद की मक्खी, 3. हुदहुद, 4. सर (एक परिन्दा), 5. मेंढक। (हयातुल हैवान 2/637)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किन किन जानवरों के बारे में फ़रमाया कि "वह फ़ासिक़ हैं हरम में हो या हरम से बाहर क़त्ल कर दिए जाएं?"

जवाबः सहीहैन की हदीस में है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया पाँच जानवर फ़ासिक़ हैं, हरम हो या हरम से बाहर क़त्ल कर दिए जाएंः

1. कव्वा, 2. चील, 3. बिच्छू, 4. चूहा, 5. काला कुत्ता। (इब्ने कसीर 1/3)

सवालः वह कौन सा जानवर है जो अंगारों को खाता है?

जवाबः वह शतुरमुर्ग़ है। (ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 15/6)

सवालः वह कौन सा जानवर है जिसकी तली नहीं होती?

जवाबः वह जानवर घोड़ा है। (रूहुल मानी 19/172)

सवालः वह कौन सा जानवर है जिसका पित्ता नहीं होता?

जवाबः वह ऊँट है जिसका पित्ता नहीं होता है। (रूहुल मानी 19/172)

सवालः वह कौन सा जानवर है जिसका मग़ज़ नहीं होता?

जवाबः वह शतुरमुर्ग है। (रूहुल मानी 19/172)

सवालः वह कौन सा जानवर है जो एक साल नर रहता है और दूसरे साल मादा बन जाता है?

जवाबः वह ख़रगोश है। (हयातुल हैवान उर्दू 98/1)

सवालः कितने और कौन जानवर को हैज़ आता है?

जवाबः वे तीन तरह के जानवर हैंः

1. ख़रगोश, 2. चमगादड़, 3. बिज्जू।

(हवाला वाला व नज़हतुल मजालिस 6/35)

सवालः वह कौनसा जानवर है जो बग़ैर परों के उड़ता है?

जवाबः वह चमगादड़ है जो अपने बाज़ुओं से उड़ती है।

(हाशिया 24, जलालैन 51, ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 3/13)

सवालः वह कौन सा परिन्दा है जो बच्चे जनता है?

जवाबः वह चमगादड़ है। (ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 3/13)

सवालः वह कौन सा कीड़ा है जो अपनी हलाकत की जगह पहुँच जाता है?

जवाबः वह मक्खी है जो खुद ही हलाकत की जगह पहुँच जाती है।

सवालः वह कौन सा परिन्दा है जो हंसता है?

जवाबः वह चमगादड़ है। (ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 3/13)

सवालः वह कौन सा परिन्दा है जिसकी मादा की छाती होती है?

जवाबः वह परिन्दा चमगादड़ है। (ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 3/13)

सवालः कौन कौन से मुर्दार हलाल हैं?

जवाबः दो मुर्दार जानवर हलाल हैं:

1. मछली, 2. टिड्डी। (मिश्कात शरीफ़ 361)

सवालः किस जानवर का पेशाब पाक है?

जवाबः चमगादड़ का पेशाब पाक है। (रद्दे मुख़्तार 1/212)

सवालः वह कौन सा जानवर है जब सोता है तो एक आँख खुली रखता है और एक आँख बंद?

जवाबः वह भेड़िया है कि जब सोता है तो एक आंख बंद रखता है और एक आँख खुली होती है। फिर कुछ देर बाद बंद वाली आँख खोल देता है और खुली हुई को बंद कर लेता है। (इब्ने कसीर 15/15)

सवालः वह कौन सा जानवर है जो गिज़ा जमा करने की फ़िक्र करता है?

जवाबः सुफ़ियान बिन ऐनिया रहमतुल्लाह अलैहि कहते हैं कि सिवाए इंसान, चूहा और चींटी के कोई भी जानवर गिज़ा जमा करने की फ़िक्र नहीं करते। (हाशिया 4 जलालैन 340)

सवालः वह कौन सा जानवर है जो ख़ुदा की राह में दो बार

क़ुर्बान हुआ?

जवाबः वह मेंढा है जिसको हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के हुक्म से हज़रत इस्माईल के बदले ज़िब्ह किया था। इसी मेंढे को आप से पहले हाबील ने क़ुर्बान किया था जो मक़्बूल बारगाह होकर फ़ौरन जन्नत में पहुँच गया था। (जलालैन 377, इब्ने कसीर 6/9)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वह कौन सा गधा है जो सहाबा किराम को बुलाकर लाने का काम करता था?

जवाबः वह आपका याफ़ूर नामी गधा था। आप जिसे बुलाना चाहते उसे भेज देते। यह दरवाज़े पर अपना सर मारता जब घरवाला बाहर आता तो इशारा करता कि तुझे हज़रत याद फ़रमाते हैं।

(तफ़्सीर अलम नशरह 186)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वह कौन सा गधा है जिसकी नस्ल से हर गधे को अंबिया किराम की सवारी का शर्फ़ हासिल हुआ?

जवाबः इब्ने असाकर नक़ल करते हैं कि फ़तेह ख़ैबर के हिस्सा माल से हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एक गधा मिला। आपने उससे उसका नाम पूछा। उसने अर्ज़ किया मेरा नाम यज़ीद बिन शिहाब है। खुदा ने मेरी नस्ल में साठ गधे पैदा किए और उन पर हमेशा पैग़ंबर सवार होते रहे। अब इस नस्ल में सिवा मेरे और पैग़ंबरों में सिवा आपके कोई बाक़ी नहीं। मैं उम्मीद वार हूँ कि आपकी सवारी में रहूँ। आपने उसका नाम बदलकर याफ़ूर रखा। जिस रोज़ आपने रहलत फ़रमाई उसको जुदाई की ताब न आई। निहायत ही कर्ब व इज़्तिराब के आलम में एक कुँवे में गिर कर हलाक हो गया।

(तफ़्सीर अलम नशरह 186, मदारिजुन्नबुव्वत 2/1040)

सवालः वह कौनसी मछली है जो अर्शे आज़म से भी ज़्यादा फ़ज़ीलत रखती है?

जवाबः जिस मछली के शिकम से हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम रहे। इस मछली का शिकम अर्शे आज़म से भी अफ़ज़ल क्योंकि उसमें एक नबी की मैराज हुई। (तफ़्सीर नईमी 1/781, शान हबीबुर्रहमान 83)

सवालः वह कौन सा जानवर है जो आतिशे नमरूदी में फूंक मार मार का आग को भड़काने की कोशिश कर रहा था?

जवाबः हज़रत क़तादा फ़रमाते हैं कि जिस दिन हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आतिशे नमरूदी में डाला गया। उस दिन जो भी जानवर निकला वह आग को बुझाने की कोशिश करता रहा सिवाए गिरगिरट के जो फूंक मार मार कर आग भड़काने की कोशिश कर रहा था उसकी इस रसूल दुश्मनी की वजह से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे मार डालने का हुक्म फ़रमाया।

(इब 17/5, हयातुल हैवान 2/147)

सवालः वह कौन सा जानवर है जो अपने मुँह से पानी ला लाकर आतिशे नमरूदी को बुझाने की कोशिश कर रहा था?

जवाबः जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को नारे नमरूद में डाला गया तो उस आग की तरफ़ मेंढक का गुज़र हुआ। वह अपने मुँह में पानी ला-लाकर आग बुझाने की कोशिश कर रहा था। इस रसूल दोस्ती से मारने से मना फ़रमाया है। (हयातुल हैवान 2/147)

सवालः शहद की मक्खियों के सरदार का नाम क्या होता है?

जवाबः हज़ारों और लाखों शहद की मक्खियों में एक सरदार होता है। उसका नाम यऊब होता है जो अज़रूए ख़िलक़त तमाम मक्खियों से बड़ा होता है। सब मक्खियाँ उसी के ताबे होती हैं।

(तफ़्सीर अलम नशरह 189, हाशिया जलालैन 222)

सवालः मक्खी के कितने पैर और कितनी आँखें होती हैं?

जवाबः मकड़ी के आठ पैर और छः आँखें होती हैं।

(हयातुल हैवान 2/283)

सवालः मक्खी की उम्र कितनी होती है?

जवाबः मक्खी की उम्र सिर्फ़ चालीस दिन होती है। (सावी)

सवालः वह कौनसी मछली है जो चलते जहाज़ को रोक देती है?

जवाबः वफ़ातूस नाम की मछली है। (हयातुल हैवान 1/480)

सवालः कोई भी परिन्दा ज़मीन से आसमान की तरफ़ कितनी बुलंदी तक जा सकता है?

जवाबः हज़रत कअब बिन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैंः कोई भी परिन्दा ज़मीन से आसमान की तरफ़ बारह मील से ज़्यादा ऊपर परवाज़ नहीं कर सकता। (हाशिया 24 जलालैन 223)

सवालः जन्नत से निकाले जाने से पहले सांप के कितने पाँव थे?

जवाबः जन्नत से निकाले जाने से पहले सांप के बहुत ही ख़ूबसूरत चार पाँव थे। (मआरिज नबुव्वत 1/45)

सवालः मुर्ग़ क्या देखकर बोलता है?

जवाबः मुर्ग़ उस वक़्त बोलता है जब वह फ़रिश्तो को देखता है। (हयातुल हैवान 1/615)

सवालः गधा कब बोलता है?

जवाबः गधा उस वक़्त बोलता है जब शैतान को देखता है। (हयातुल हैवान 1/615)

सवालः जब शेर दहाड़ता है तो क्या कहता है?

जवाबः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि शेर जब दहाड़ता है तो वह कहता हैः

اَللّٰهُمَّ لَا تُسَلِّطْنِيْ عَلٰى اَحَدٍ مِّنْ اَهْلِ الْمَعْرُوْفِ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह मुझे किसी नेक आदमी पर मुसल्लत मत कीजिये। (हयातुल हैवान 1/7)

सवालः जब दो घोड़ों की आपस में मुठभेड़ होती है तो क्या कहते हैं?

जवाबः दो घोड़ों की आपस में जब मुठभेड़ होती है तो वे यह कहते हैंः سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّ الْمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوْحِ

(हयातुल हैवान, नज़हतुल मजालिस 1/55)

सवालः मुर्ग़ जब बोलता है तो क्या कहता है?

जवाबः मुर्ग़ जब बोलता है तो यह कहता हैः اُذْكُرُوا اللّٰهَ يَا غَافِلُوْنَ.

तर्जुमाः ऐ ग़ाफ़िलो! अल्लाह को याद करो। (रूहुल मानी 19/172)

सवालः मोर जब बोलता है तो क्या कहता है?

जवाबः मोर जब बोलता है तो यह कहता है: كَمَا تَدِيْنُ تُدَانُ
तर्जुमाः जैसा करोगे वैसा भरोगे। (रूहुल मानी 19/171)
सवालः तोता जब बोलता है तो क्या कहता है?
जवाबः तोता जब बोलता है तो यह कहता है: وَيْلٌ لِمَنِ الدُّنْيَا هَمُّهُ
तर्जुमाः जिसने दुनिया का इरादा किया वह हलाक हुआ।
(रूहुल मानी 91/172)
सवालः फ़ाख़्ता जब बोलती है तो क्या कहती है?
जवाबः फ़ाख़्ता जब बोलती है तो यह कहती है:

يٰلَيْتَ ذَا الْخَلْقِ لَمْ يَخْلُقُوْا

तर्जुमाः ऐ काश! मख़्लूक़ पैदा न की जाती। (रूहुल मानी 19/172)
सवालः क़ुमरी जब बोलती है तो क्या कहती है?
जवाबः क़ुमरी जब बोलती है तो यह कहती है:

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى (रूहुल मानी 19/172)

सवालः हुदहुद जब बोलता है तो क्या कहता है?
जवाबः हुदहुद जब बोलता है तो यह कहता है:

اِسْتَغْفِرُوْا اللّٰهَ تَعَالٰى يَا مُذْنِبُوْنَ

तर्जुमाः ऐ गुनाहगारो! अल्लाह से मग़फ़िरत चाहो।
(रूहुल मानी 19/172)
सवालः तीतर जब बोलता है तो क्या कहता है?
जवाबः तीतर जब बोलता है तो यह कहता है:

اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى

तर्जुमाः वह निहायत ही मेहरबान उसने अर्श पर इस्तवा फ़रमाया।
(रूहुल मानी 19/172)
सवालः बाज़ जब बोलता है तो क्या कहता है?
जवाबः बाज़ जब बोलता है तो यह कहता है:

فِى الْبُعْدِ مِنَ النَّاسِ اُنْسٌ

तर्जुमाः लोगों से दूरी में राहत है। (रूहुल मानी 19/172)

सवालः संगख़ोरा जब बोलता है तो क्या कहता है?

जवाबः संगख़ोर जब बोलता है तो यह कहता हैः مَنْ سَكَتَ سَلِمَ

तर्जुमाः जो ख़ामोश रहा निजात पाया। (रूहुल मानी 19/172)

सवालः मेंढक जब बोलता है तो क्या कहता है?

जवाबः मेंढक जब बोलता है तो यह कहता हैः سُبْحَانَ رَبِّيَ الْقُدُّوْسِ

(रूहुल मानी 19/172)

सवालः गिध जब बोलता है तो क्या कहता है?

जवाबः गिध जब बोलता है तो यह कहता हैः

يَا ابْنَ آدَمَ عِشْ مَا عِشْتَ فَإِنَّ آخِرَكَ الْمَوْتُ

तर्जुमाः ऐ इब्ने आदम! जैसा जीना है जी ले आख़िर तुझे मरना है।

(रूहुल मानी 19/172)

सवालः हदी जब बोलता है तो क्या कहता है?

जवाबः हदी जब बोलता है तो यह कहता हैः

كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ

तर्जुमाः अल्लाह की ज़ात के सिवा हर चीज़ हलाक होने वाली है।

सवालः ख़ताफ़ जब बोलता है तो क्या कहता है?

जवाबः ख़ताफ़ जब बोलता है तो यह कहता हैः

قَدِّمُوْا خَيْرًا تَجِدُوْهُ

तर्जुमाः जिस भलाई का मौक़ा मयस्सर आए कर गुज़रो।

(रूहुल मानी 19/172)

सवालः शामा जब बोलता है तो क्या कहता है?

जवाबः शामा जो एक खुश इलहान छोटा परिन्दा है जब बोलती है तो यह कहती हैः سُبْحَانَ اللّٰهِ الْخَلَّاقِ الدَّائِمِ

तर्जुमाः पैदा करने वाली और हमेशा रहने वाली ज़ात पाक है।

(रूहुल मानी 19/172)

सवालः तेंतवा जब बोलता है तो क्या कहता है?

जवाबः तेंतवा जब बोलता है तो यह कहता है:

لِكُلِّ حَيٍّ مَيِّتٌ وَلِكُلِّ جَدِيْدٍ بَالٍ

तर्जुमाः हर जानदार को मरना है और नई चीज़े तो पुरानी होनी है।

(रूहुल मानी 19/172)

सवालः वह कौन से जानवर हैं जो जन्नत में जाएंगे?

जवाबः नीचे लिखे जानवर जन्नत में जाएंगे:

1. अस्हाबे कहफ़ का कुत्ता,
2. हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम का मेंढा,
3. हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊँटनी,
4. हज़रत अज़ीज़ अलैहिस्सलाम का गधा,
5. सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बुर्राक़।

(अल इश्वाह वन्नज़ाख़ज़ाइनुल इरफ़ान 382)

6. हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की चींटी। (हाशिया 19 जलालैन 318)
साहब रूहुल मानी फ़रमाते हैं कि अच्छे अच्छे जानवर भी जन्नत में जाएंगे। (रूहुल मानी 15/236)
7. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़्बा नामी ऊँटनी भी जन्नत में जाएगी। (मल्फ़ूज़ 4/80)
8. बनी इस्राईल की गाय।
9. हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की मछली।
10. बिलक़ीस का हुद्हुद।
11. और हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम का भेड़िया भी जन्नत में जाएगा।

(नज़्हतुल मजालिस 2/64)

सवालः क़यामत के दिन हिसाब व किताब के बाद जानवर कहाँ जाएंगे?

जवाबः क़यामत के दिन जानवरों को आपस में बदला दिलाकर फ़ना कर दिया जाएगा और कहा जाएगा, मिट्टी हो जाओ।

(तफ़्सीर नईमी 2/80)

सवालः अस्हाबे कहफ़ का कुत्ता किस आदमी की शक्ल में जन्नत में जाएगा?

जवाबः अस्हावे का कुत्ता बलअम बाऊर की शक्ल में जन्नत में जाएगा। (मल्फ़ूज़ 4/10)

बलअम बाऊर

यह शख़्स अपने दौर का बहुत् बड़ा आलिम, आबिद और ज़ाहिद था और इसको इस्मे आज़म का भी इल्म था। यह अपनी जगह बैठा हुआ अपनी रूहानियत से अर्शे अज़ीम को देख लिया करता था और यह मुस्तजबुद्दावात था। इसकी दुआएं बहुत ज़्याद क़ुबूल हुआ करती थीं। इसके शार्गिदों की तादाद भी बहुत ज़्यादा थी। मशहूर है कि इसकी दरसगाह में तालिबे इल्मों की दवातें बारह हज़ार थीं।

जब मूसा अलैहिस्सलाम क़ौमे जब्बारीन से जिहाद के लिए बनी इस्राईल के लश्करों के लेकर रवाना हुए तो बलअम बाऊर की क़ौम इसके पास घबराई हुई आई। कहा कि हुज़ूर मूसा अलैहिस्सलाम बहुत ही बड़ा और निहायत की ताक़तवर लश्कर लेकर हमलावर होने वाले हैं। और वह यह चाहते हैं कि हम लोगों को हमारी ज़मीनों से निकालकर यह ज़मीन अपनी क़ौम बनी इस्राईल को दे दें। इसलिए आप हज़रत मूसा के लिए ऐसी बद्दुआ कर दीजिए कि वह हारकर वापस लौट जाएं। आप क्योंकि मुस्तजाबुद्दावात हैं। इसलिए आपकी दुआ ज़रूर क़ुबूल होगी। यह सुनकर बलअम बाऊर कांप उठा और कहने लगा, तुम्हारा बुरा हो, खुदा की पनाह! हज़रत मूसा अल्लाह के रसूल हैं और उनके लश्कर में मोमिनों और फ़रिश्तों की जमआत हैं। उन पर भला मैं किस तरह बद्दुआ कर कसता हूँ। लेकिन उस क़ौम ने रो रोकर और गिड़गिड़ाकर इसरार किया कि उसने यह कह दिया कि इस्तिख़ारा करने के बाद अगर मुझे इजाज़त मिल गई तो बद्दुआ कर दूंगा। मगर इस्तिख़ारे के बाद जब उसको बद्दुआ की इजाज़त नहीं मिली तो उसने साफ़ साफ़ जवाब दे दिया कि अगर मैं बद्दुआ करूंगा तो मेरी दुनिया और आख़िरत दोनों बर्बाद हो जाएंगी। उसके बाद उसकी क़ौम ने बहुत ही क़ीमती हदिए और तोहफ़े उसकी ख़िदमत में पेश करके बेपनाह इसरार किया। यहाँ तक कि बलअम बाऊर पर हिर्स व लालच का भूत सवार हो गया और वह माल के लालच में फंस गया। अपनी गधी पर सवार होकर बद्दुआ के लिए

चल पड़ा। रास्ते में बार बार उसकी गधी ठहर जाती और मुँह मोड़कर भागना चाहती थी मगर यह मार मारकर उसको आगे बढ़ाता रहा। यहाँ तक कि गधी को अल्लाह तआला ने बोलने की क़ुव्वत अता फ़रमाई और उसने कहाः अफ़सोस ऐ बलअम बाऊर कहाँ और किधर जा रहा है। देख मेरे आगे फ़रिश्ते हैं जो मेरा रास्ता रोकते हैं और मेरा मुँह मोड़कर मुझे पीछे धकेल रह हैं। ऐ बलअम! तेरा बुरा हो। क्या तू अल्लाह के नबी और मुसलमानों की जमाअत पर बद्दुआ करेगा। गधी की तक़रीर सुनकर बलअम बाऊर वापस नहीं लौटा यहाँ तककि "हसबान" नामी पहाड़ पर चढ़ गया और बुलंदी से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के लश्करों को ग़ौर से देखा और माल व दौलत के लालच में उसने बद्दुआ शुरू कर दी। लेकिन खुदा की शान कि वह हज़रत मूसा के लिए बद्दुआ करता था मगर उसकी ज़बान पर उसकी क़ौम के लिए बद्दुआ जारी हो जाती थी। यह देखकर कई मर्तबा उसकी क़ौम ने टोका कि ऐ बलअम! तूं उल्टी बद्दुआ कर रहा है। उसने कहाः ऐ मेरी क़ौम मैं क्या करूं, मैं बोलता कुछ और हूँ और मेरी ज़बान से निकलता कुछ और है। फिर अचानक उस पर यह गज़ब नाज़िल हो गया कि नागहां उसकी ज़बान लटककर उसके सीने पर आ गई। उस वक़्त बलअम बाऊर ने अपनी क़ौम से रोकर कहाः अफ़सोस मेरी दुनिया और आख़िरत दोनों बर्बाद हो गई। मेरा ईमान जाता रहा। मैं क़हरे क़हार और ग़ज़ब जब्बार में गिरफ़्तार हो गया। अब मेरी कोई दुआ क़ुबूल नहीं हो सकती। बलअम बाऊर पहाड़ से उतरकर मरदूद बारगाहे इलाही हो गया। आख़िरी दम तक उसकी ज़बान उसके सीने पर लटकी रही। और वह बेईमान होकर मरा। (सावी 2/95)

सवालः क़यामत के दिन मूज़ी जानवरों को कहाँ भेजा जाएगा?

जवाबः जो हैवानात मूज़ी हैं वे दोज़ख़ में काफ़िरों को अज़ाब देने के लिए जाएंगे। उनको खुद कोई तकलीफ़ न होगी। जिस तरह अज़ाब के फ़रिश्तों को कोई तकलीफ़ न होगी। (मल्फ़ूज़ 4/62)

सवालः मकड़ी की कितनी आँखें होती हैं?

जवाबः मकड़ी की छः आँखें होती हैं। (हयातुल हैवान 2/283)

सवालः वह कौनसा परिन्दा है जो भूका रहकर जिंदा रहता है और पेट भरकर मर जाता है?

जवाबः वह मच्छर है (तफ़्सीर नईमी 1/250)

सवालः हिजरत के मौके पर ग़ारे सौर के दहाने में जिन कबूतरों ने अंडे दिए थे उनकी नस्ल अब कहाँ पाई जाती है?

जवाबः हरम के कबूतर उन्हीं दो कबूतरों की नस्ल से हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 1/347)

सवालः शेर ने बकरी पर हमला करना कब शुरू किया?

जवाबः क़त्ल हाबील से पहले शेर बकरी पर हमला नहीं करता था लेकिन जब हावील ने क़ाबील को क़त्ल किया तो उसके वाद बाज़ जानवर का बाज़ जानवर पर तसल्लुत हो गया।

(हाशिया 10, जलालैन 344)

सवालः भैंस जैसे बंदर कहाँ पाए जाते हैं?

जवाबः अजाइबुल में है कि बहरे चीन के बाज़ जज़ीरों में भैंस की तरह बंदर होते हैं जिनका रंग सफ़ेद होता है। (नज़हतुल मजालिस 8/35)

○ ○ ○

नामों के बारे में सवाल व जवाब

सवालः अल्लाह तआला के कुल कितने नाम हैं और कौन सी किताब में कितने नामों का ज़िक्र है?

जवाबः तफ़्सीर कबीर के शुरू में बिस्मिल्लाह के मातहत है कि अल्लाह तआला के तीन हज़ार नाम हैं। जिनमें से एक हज़ार को मलाइका जानते हैं। और एक हज़ार सिर्फ़ अंबिया किराम। बाक़ी एक हज़ार में से तीन सौ नाम तौरात शरीफ़ में हैं, तीन सौ ज़बूर में, तीन सौ इंजील में और निन्नानवें नाम क़ुरआन करीम में और एक नाम वह है जिसको सिर्फ़ हक़ तआला ही जानता है। (तफ़्सीर नईमी 1/38)

दूसरा क़ौल यह है कि अल्लाह तआला के पाँच हज़ार नाम हैं। एक हज़ार क़ुरआन पाक व सुन्नते सहीहा में, एक हज़ार तौरात में, एक हज़ार ज़बूर में, एक हज़ार इंजील में और एक हज़ार लौहे महफ़ूज़ में लिखे हैं।

(इब्ने कसीर 1/सूरः फ़ातिहा)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क्या क्या नाम हैं?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़ाती नाम दो हैं, मुहम्मद अमहद। बाक़ी सिफ़ाती नाम दो सौ एक। (दलाइल ख़ैरात)

और बरिवायत मदारिज नबुव्वत एक हज़ार हैं।(तफ़्सीर नईमी 4/201)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ां साहब बरेलवी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़ाती नाम दो हैं। कुतुबे साबिक़ा में अहमद और क़ुरआने करीम में मुहम्मद सल्ललाहु अलैहि वसल्लम। और आपके सिफ़ाती नाम बेगिनती हैं। अल्लामा अहमद ख़तीब क़स्तानी रहमतुल्लाह अलैहि ने पाँच सौ जमा फ़रमाए। सीरते शामी में तीन सौ और इज़ाफ़ा और मैंने छः और मिलाए कुल चौदह सो हुए। (मल्फ़ूज़ 1/39/1)

सवालः कुतुबे साबिक़ा में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क्या क्या नाम हैं?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम तौरेत में "मीज़मीज़" और इंजील में "ताव ताव", ज़बूर में "आक़िब", दीगर कुतुबे साबिक़ा में से बाज़ में "रूहा" बाज़ में "औलाया" बाज़ में "अहज़ाया" बाज़ में "फ़ारक़लीत" बाज़ में "ज़हूक़" बाज़ में "मसक़ह" बाज़ में "अहीदा" बाज़ में "माज़ माज़" बाज़ में "मुख़्तार" बाज़ में "रूहुल हक़" बाज़ में "मुक़ीमुस्सुनत" बाज़ में "मुक़द्दस" बाज़ में "हिरज़ुल अमीन" बाज़ में "क़सीम" बाज़ में "बनी मुलाहिता" बाज़ में "क़िताल" मज़्कूर है।

(मआरिज नबुव्वत 29/2)

सवालः सातों आसमान व ज़मीन में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क्या क्या नाम हैं?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम आसमाने दुनिया में "मजतबा" आसमाने दोम में "मुर्तज़ा", आसमान सोम में "मुज़क्का", चौथे आसमान में "मुजीब", पाँचवे आसमान में "मुहिब्ब", छठे आसमान में "मज़हर" और सातवें आसमान में "मुक़र्रब" है।

और तब्क़ात ज़मीन में से अव्वल में "मौज़्ज़म", दूसरे में "मुजज्जल", तीसरे में "मुहिब्ब", चौथे में "मुशर्रफ़", पाँचवें में "मज़हर", छठे में "अमीनुल्लाह" और सातवें में "नूरूल्लाह" है। (मअरिज नबुव्वत 29/2)

सवालः काएनात आलम के किस मुक़ाम पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को किस नाम से याद किया जाता है?

जवाबः काएनात आलम में हर मुक़ाम पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अलग अलग नाम और सिफ़ात से याद किया जाता है।

चुनाँचे अहले जन्नत के नज़दीक "अब्दुल करीम"
अहले नार के नज़दीक "अब्दुल जब्बार"
मलाइका हामिलाने अर्श के नज़दीक "मुस्तफ़ा"
मलाइका कर्रो बैन के नज़दीक "मुख़्तार"
मलाइका रूहानीन के नज़दीक "मुकर्रम"
साके अर्श पर 'हबीबुल्लाह"

जुब्बा कुर्सी पर "रसूलल्लाह"
लौहे महफ़ूज़ में "सफ़िउल्लाह"
शजरे तूबा के अवरौक़ पर "सफ़ूतुल्लाह",
लवाए हम्द पर "ख़ैरतुल्लाह",
अहले अर्श के नज़दीक "अब्दुल हमीद"
मलाइका के नज़दीक "अब्दुल मजीद",
अंबिया किराम के नज़दीक "अब्दुल वहाब",
शैतानों के नज़दीक "अब्दुल क़हार",
जिन्नात के नज़दीक "अब्दुर्रहीम",
पहाड़ों में "अब्दुल ख़ालिक़",
जंगलात और खुश्की में "अब्दुल क़ादिर",
तरी में "अब्दुल मुहैमिन",
मछलियों के नज़दीक "अब्दुल क़ुद्दूस",
कीड़े पतंगों के नज़दीक "अब्दुल ग़यास",
वहशी जानवरों के नज़दीक "अब्दुर्रज़्ज़ाक़",
दरिन्दों के नज़दीक "अब्दुस्सलाम",
चौपायों में "अब्दुल मोमिन",
परिन्दों की ज़बान पर "अब्दुल ग़फ़्फ़ार",
अल्लाह के नज़दीक "ताहा, यासीन"
और मुसलमानों के नज़दीक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

(मदारिजुन्नबुव्वत 1/475, मआरिज 29/2)

सवालः हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम का असली नाम अब्दुल्लाह है। (तफ़्सीर नईमी 1/658)

इमाम सुहैली ने फ़रमाया कि जिब्राईल सुरयानी लफ़्ज़ हैं। जिसके माने हैं अब्दुर्रहमान या अब्दुल अज़ीज़ और एक क़ौल यह भी कि ज़िब्राईल अलैहिस्सलाम का असली नाम अब्दुल जलील है और कुन्नियत अबुल फ़तेह। (उम्दतुल क़ारी 1/72)

सवालः हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम का असली नाम अब्दुर्रहमान है?

(तफ़्सीर नईमी 1/658)

एक क़ौल के मुताबिक "अब्दुल ख़ालिक़" कुन्नियत अबुल मुनाफ़ख़।

(उम्दतुल क़ारी 1/72)

सवालः हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम का असली नाम अब्दुल्लाह है।

(तफ़्सीर नईमी 1/658)

दूसरे क़ौल के मुताबिक़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ और कुन्नियत अबुल ग़नाइम।

(उम्दतुल क़ारी 1/72)

सवालः हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम का असली नाम अब्दुल जब्बार है और कुन्नियत अबू याहया है।

(उम्दतुल क़ारी 1/72)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के परदादा "हज़रत हाशिम" का असली नाम क्या है?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के परदादा हज़रत हाशिम का नाम "अम्र" है। हाशिम इस वजह से कहते हैं कि हशम के माने हैं रोटी के टुकड़े टुकड़े करना। सबसे पहले जिसने अपनी क़ौम को क़हत के ज़माने में "अशकना" यानी रोटी के टुकड़े पकाकर खिलाए। वह यही थे और आली मर्तबे के लिहाज़ से उनको "अमरुल अली" भी कहते हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/11)

सवालः हज़रत मुत्तलिब का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत अब्दुल मुत्तलिब का असली नाम "शबिया" था। उनका यह नाम इस वजह से था कि वक़्त विलादत उनके सर में सफ़ेद बाल थे। उन्हें "शबियतुल हम्द" भी कहते हैं क्योंकि उनके अक्सर काम पसन्दीदा और खुश आइंद थे जिसकी वजह से लोग उनकी तारीफ़ व सताइश किया करते थे। बाज़ लोग उनको "आमिर" के नाम से भी याद करते हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/8)

सवालः हज़रत अबू तालिब का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत अबू तालिब का असली नाम "अब्द मुनाफ़" है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/841, नज़हतुल मजालिस 8/113)

सवालः अबू लहब का असली नाम क्या है?

जवाबः अबू लहब का असली नाम "अब्दुल उज़्ज़ा" है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/841, नज़हतुल मजालिस 8/113)

सवालः अबू जहल का असली नाम क्या है?

जवाबः अबू जहल का असली नाम अम्र बिन हिशाम था।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/70)

एक रिवायत में उरवा बिन हिशाम है। (असमाउर्रिजाल मिश्कात 606)

सवालः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु के असली नाम पर काफ़ी इख़्तिलाफ़ है लेकिन सबसे ज़्यादा सही क़ौल के मुताबिक़ आपका नाम ज़मानाए जाहिलियत में "अब्दुशम्स" या "अब्दु अम्र" था और इस्लाम क़ुबूल करने के बाद आपका नाम "अब्दुर्रहमान" या "अब्दुल्लाह" हुआ।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 622)

सवालः हज़रत अबू ज़र ग़फ़्फ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत अबु ज़र ग़फ़्फ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु असली नाम "जुन्दुब बिन जनादा" है।(मदारिजुन्नबुव्वत 2/854, नज़हतुल मजालिस 12/58)

सवालः हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु का असली नाम "अब्दुल बिन क़ैस" है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/978, नज़हतुल मजालिस 12)

सवालः हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु का असली नाम माबा बिन बूज़ ख़शां है। (हाशिया असहु सैर 144)

सवालः हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु का असली नाम

ख़ालिद बिन ज़ैद अंसारी है।(मदारिजुन्नबुव्वत 2/910 नज़हतुल मजालिस 12)

सवालः हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु का असली नाम सख़र बिन हर्ब क़रशी है। (अस्माउर्रिजाल मिश्कात 600)

सवालः हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम हारिस बिन रबई अंसारी है। (अस्माउर्रिजाल मिश्कात 600)

बाज़ ने नौमान बताया है। (नज़हतुल मजालिस 12/59)

सवालः हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ियल्लाहु अन्हु का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत इब्ने मक्तूम रज़ियल्लाहु अन्हु का असली नाम अब्दुल्लाह बिन अम्र है। बाज़ अम्र बिन क़ैस और बाज़ अब्दुल्लाह बिन सरीह कहते हैं। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/1006)

सवालः हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हा का असली नाम ज़ैद बिन सहल अंसारी है। (अस्माउर्रिजाल मिश्कात 601, नज़हतुल मजालिस 12)

सवालः हज़रत अबू दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत अबू दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु का असली नाम अवेमर बिन आमिर है। (अस्माउर्रिजाल मिश्कात 594, नज़हतुल मजालिस 12)

सवालः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्ल्लाहु अन्हु का असली नाम सअद बिन मालिक अंसारी है।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 598, नज़हतुल मजालिस 12)

सवालः हज़रत अबू हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का असली नाम

क्या है?

जवाबः हज़रत अबू हुज़ैफ़ा रज़ियल्ल्लाहु अन्हु का असली नाम महशम या हशम या हाशिम बिन उत्वा है।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 591)

सवालः हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत अबू उवैदा बिन जर्राह रज़ियल्ल्लाहु अन्हु का असली नाम आमिर बिन अब्दुल्लाह बिन जर्राह है।(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 608)

सवालः हज़रत अबू लुबाबा रज़ियल्लाहु अन्हु का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत अबू लुबाबा रज़ियल्ल्लाहु अन्हु का असली नाम रफ़आ बिन अब्दुल अंसारी है। (अस्माउर्रिजाल मिश्कात 615)

सवालः हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हु का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्ल्लाहु अन्हा का असली नाम फ़ाख़्ता है। बाज़ आतिका और बाज़ हिंद बताते हैं। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/838)

सवालः हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु का असली नाम अली बिन हुसैन है। ज़ैनुल आबिदीन लक़ब से मुलक़्क़ब होने की वजह यूँ है कि एक रात आप नमाज़ तहज्जुद में मशग़ूल थे कि शैतान एक सांप की शक्ल में ज़ाहिर हुआ ताकि आपको इबादत से बाज़ रखे। आपने इसकी तरफ़ तवज्जेह न दी। यहाँ तक कि उस सांप नुमा शैतान ने आपके पाँव के अंगूठे को अपने मुँह में लेकर निहायत ही सख़्ती से काटा। जिससे आपको बहुत तकलीफ़ हुई लेकिन आपने नमाज़ क़ता न की। आप पर मुन्कशिफ़ हुआ कि वह शैतान है। इसी बीच आपने एक आवाज़ सुनी, कहने वाला नज़र न आया। कहने वाला कहता था, कि आप ज़ैनुल आबिदीन हैं, ज़ैनुल आबिदीन हैं, ज़ैनुल आबिदीन हैं।

(शवाहिदुन्नबुवत 328)

सवालः हज़रत इमाम आज़म रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम नौमान बिन साबित है।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 624, नज़्हतुल मजालिस 12)

सवालः हज़रत शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ई है।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 625, नज़्हतुल मजालिस 12)

सवालः हज़रत इमाम हंबल रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत इमाम हंबल का असली नाम अहमद बिन हंबल है।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 625, नज़्हतुल मजालिस 12)

सवालः हज़रत इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी है।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 626, नज़्हतुल मजालिस 12)

सवालः हज़रत इमाम मुस्लिम रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत इमाम मुस्लिम रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम मुस्लिम बिन हिज्जाज है।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 627, नज़्हतुल मजालिस 12)

सवालः हज़रत इमाम अबू दाऊद रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत इमाम अबू दाऊद रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम सुलेमान बिन अशअस है।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 627, नज़्हतुल मजालिस 12)

सवालः हज़रत इमाम तिर्मिज़ी रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत इमाम तिर्मिज़ी रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम मुहम्मद बिन ईसा तिर्मिज़ी है।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 627, नज़हतुल मजालिस 12)

सवालः हज़रत इमाम निसाई रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत इमाम निसाई रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम अहमद बिन शुएब निसाई है।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 627, नज़हतुल मजालिस 12)

सवालः हज़रत इमाम इब्ने माजा रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत इमाम इब्ने माजा रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम मुहम्मद यज़ीद बिन माजा है।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 627, नज़हतुल मजालिस 12)

सवालः हज़रत इमाम बैहिक़ी रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत इमाम बैहिक़ी रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम अहमद बिन हुसैन बैहिक़ी है।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 628, नज़हतुल मजालिस 12)

सवालः हज़रत इमाम बग़वी रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत इमाम बग़वी रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम हुसैन बिन मसऊद बग़वी है।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 628, नज़हतुल मजालिस 12)

सवालः हज़रत इमाम इब्ने जौज़ी रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत इमाम इब्ने जौज़ी रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम अब्दुर्रहमान बिन अली बिन जौज़ी है। (अस्माउर्रिजाल मिश्कात 628)

सवालः हज़रत इमाम नुव्वी रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत इमाम नुव्वी रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम मुहि्युद्दीन याह्या बिन शर्फ़ नुव्वी है।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 628, नज़हतुल मजालिस 12)

सवालः हज़रत इब्ने खुलदून रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत इब्ने खुलदून रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम अब्दुर्रहमान बिन खुलदून है। (सरवर्क़ मुक़दमा इब्ने खुलदून)

सवालः हज़रत इब्ने हिशाम रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत इब्ने हिशाम का असली नाम अब्दुल मालिक बिन हिशाम है। (सरवर्क़ सीरत इब्ने हिशाम)

सवालः हज़रत हाफ़िज़ इब्ने कसीर रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम क्या है?

जवाबः हज़रत हाफ़िज़ इब्ने कसीर रहमतुल्लाह अलैहि का असली नाम इमादुद्दीन इब्ने कसीर है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

सवालः उन सहाबी का नाम क्या है कि ज़माना जाहिलियत में उनका नाम ज़ालिम था?

जवाबः वह हज़रत राशिद रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम ज़ालिम था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम राशिद हो।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/897)

सवालः उन सहाबी का नाम क्या है कि ज़माना जाहिलियत में उनका नाम शैतान था?

जवाबः वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन क़रत रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जिनका पहला नाम शैतान था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह नाम तब्दील करके अब्दुल्लाह रखो। (अस्माउर्रिजाल मिश्कात 605)

सवालः हलीमा सादिया के वालिद और शौहर का नाम क्या है?

जवाबः दाई हलीमा सादिया रज़ियल्लाहु अन्हा का नाम अबि ज़वीब

अब्दुल्लाह बिन हरस है और शौहर का नाम हारिस बिन अब्दुल उज़्ज़ा है।

(अल कामिल फ़ी तारीख़ 1/186, मआरिज नबुव्वत 43)

सवालः तालूत बादशाह का असली नाम क्या है?

जवाबः तालूत का नाम शावल इब्ने क़ैस था और लंबे क़द की वजह से उनका नाम तालूत हुआ।

(तफ़्सीर नईमी 2/531)

सवालः कोहे सफ़ा का नाम "सफ़ा" क्यों हुआ?

जवाबः सफ़ा का नाम सफ़ा इसलिए हुआ कि उसमें आदम सफ़िउल्लाह अलैहिस्सलाम बैठे थे।

(हाशिया । जलालैन 23)

सवालः कोहे मरवा का नाम "मरवा" क्यों हुआ?

जवाबः मरवा का नाम मरवा इसलिए रखा गया कि उस पर इमराते आदम यानी हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा बैठीं थीं। (हाशिया । जलालैन 23)

सवालः मदीना तैय्यबा का पहला नाम क्या था और इसकी वजह तस्मिया क्या है?

जवाबः मदीना तैय्यबा का पहला नाम यसरिब था। इसकी वजह तस्मिया यह थी कि अमालीक़ में से सबसे पहले जो शख़्स सबसे पहले यहाँ आकर ठहरा था उसका नाम यसरिब बिन महलाइल था। इसलिए इस शहर को उसी के नाम से मौसूम व मशहूर किया जाता है।

(इब्ने कसीर 21/18)

एक क़ौल के मुताबिक़ उस शख़्स का नाम यसरिब बिन अवाइल था।

(अल अलतक़ान 2/182)

सवालः तौरात शरीफ़ में मदीना तैय्यबा के कितने नाम हैं?

जवाबः तोरात शरीफ़ में मदीना तैय्यबा के ग्यारह नाम आए हैं:

1. मदीना, 2. ताबा, 3. मस्कनिया
4. जाबिरा, 5. मुहिब्बा, 6. महबूबा,
7. क़ासिमा, 8. मजबूर, 9. अज़रा,
10. मरहूमा, 11. तैबा।

(इब्ने कसीर 21/18)

सवालः मक्का मौज़्ज़िमा को मक्का क्यों कहा जाता है?

जवाबः मक्का "मक्क" से बना है जिसके मानी हैं चूस लेना, ख़ुश्क कर देना। चूँकि यह शहर हाजियों के गुनाहों को जज़्ब कर लेता है

इसलिए इसे मक्का कहा जाता है। मक्का को बक्का भी कहते हैं कि जिसके मानी है कुचल देना। क्योंकि इस शहर के दुश्मन अस्हाबे फ़ील वग़ैरह कुचल दिए गए। इसलिए इसे बक्का कहते हैं।

(तफ़्सीर नईमी 4/17)

सवालः मक्का के कुल कितने नाम हैं?

जवाबः मक्का मुअज़्ज़मा के बहुत से नाम हैं इनमें से कुछ ये हैं:

1. मक्का, 2. बक्का, 3. उम्मे रहम,
4. कोह लबना, 5. बशाशा, 6. हातिमा,
7. उम्मुल क़ुरा, 8. बिलादे अमीन, 9. मामून,
10. सलाह, 11. औश, 12. फ़ारस,
13. मुक़द्दस, 14. रास, 15. कोसा,
16. मुबीना।

(तफ़्सीर नईमी 4/17)

सवालः मक्का मुअज़्ज़मा के मशहूर क़बीले क़ुरैश का नाम "क़ुरैश" क्यों हुआ?

जवाबः मक्का मुअज़्ज़मा का मशहूर क़बीला क़ुरैश का नाम क़ुरैश रखने में वजूहात बयान किये गए हैं। मशहूर वजह यह है कि क़ुरैश एक बहुत बड़ा आबी जानवर है जो मछलियों को खाता है। दूसरा आबी जानवर उसको नहीं खा सकता। यह तमाम दरियाई जानवरों पर ग़ालिब और बरतर रहता है। इसी तरफ़ निस्बत करते हुए इस क़बीले का नाम क़ुरैश हुआ। बाज़ कहते हैं कि मुतफ़र्रिक़ और मुन्तशिर हो जाने के बाद हरम में क्योंकि ये लोग दोबार मुज्तमा हुए थे और तक़रीश के माने जमा होने और इकठ्ठा होने के हैं। तीसरी वजह यह बयान की जाती है कि ये लोग अहले तिजारत और साहिबे हुनर थे और क़र्श के के मानी कसब व हुनर और इकठ्ठा करने के हैं। बाज़ कहते हैं कि जब लोग हज के लिए आते तो ये लोग फ़ुक़रा और मसाकीन के अहवाल की तफ़तीश करते और उनकी इमदाद करते थे। यहाँ तक़रीश के माने तफ़तीश के हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/31)

○ ○ ○

अलक़ाब के बारे में सवाल और जवाब

सवालः शेख़ुल अंबिया किस नबी का लक़ब है?

जवाबः शेख़ुल अंबिया हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का है।

(मआरिज नबुव्वत 68/1)

सवालः ख़तीबुल अंबिया किस नबी का लक़ब है?

जवाबः ख़तीबुल अंबिया हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम का लक़ब है।

(अल अतक़ान 2/177)

सवालः अबुल अंबिया किस नबी का लक़ब है?

जवाबः अबुल अंबिया हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को कहा जाता है। (तफ़्सीर नईमी 3/444)

सवालः अबुल बशर और अबू मुहम्मद किस नबी का लक़ब है?

जवाबः अबुल बशर और अबुल मुहम्मद ये दोनों लक़ब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के हैं। दुनिया में आपका लक़ब अबुल बशर है और जन्नत में आपका लक़ब अबू मुहम्मद होगा। (अल बिदया वन्निहाया 1/97)

सवालः हिबतुल्लाह किस नबी का लक़ब है?

जवाबः हिबतुल्लाह (अल्लाह ने दिया) यह लक़ब हज़रत शीस अलैहिस्सलाम का है। (अल कामिल फ़ी तारीख़ 1/30)

सवालः आदम सानी किस नबी को कहा जाता है?

जवाबः आदम सानी हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को कहा जाता है।

(मआरिज नबुव्वत 68/1)

सवालः क़ुरआन में ज़ुन्नून और साहिबे हूत किस नबी को कहा गया है?

जवाबः क़ुरआन में ज़ुन्नून और साहिबे हूत (मछली वाले) हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को कहा गया है। मछली के पेट में रहने की वजह से। (हयातुल हैवान)

सवालः अबू ज़ीफ़ान किस नबी का लक़ब है?

जवाबः अबू ज़ीफ़ान हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का लक़ब है।

(तफ़्सीर नईमी 810)

सवालः हरमुस अल हिरामुस किस नबी का लक़ब है?

जवाबः हरमुस अल हिरामुस यानी हकीमुल हुक्मा हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम का लक़ब है। (मुहाज़रा अल वआइल 84)

सवालः ज़ुल हिजरतैन किस नबी का लक़ब है?

जवाबः ज़ुल हिजरतैन यह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का लक़ब है इसलिए कि आपने दो हिजरतें कीं, एक ईराक़ से कूफ़ा की तरफ़ और कूफ़ा से मुल्के शाम की तरफ़। (तफ़्सीर कशाफ़ 21/3/451)

सवालः इब्ने ज़बीहिय्यीन किस नबी का लक़ब है?

जवाबः इब्ने ज़बीहिय्यीन यह लक़ब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का लक़ब है। दो ज़बीह से मुराद एक हज़रत अब्दुल्लाह और एक इस्माईल अलैहिस्सलाम। (मदारिजुन्नबुव्वत 1/18, तवारीख़ हबीब 10)

सवालः हाज़िमुल्लज़्ज़ात किसका लक़ब है?

जवाबः हाज़िमुल्लज़्ज़ात मलकुल मौत हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम का लक़ब है। (मआरिजुन्नबुव्वत 104/3 ग़यासुल्लुग़ात 546)

सवालः साहिबुज़्ज़मान किसका लक़ब है?

जवाबः साहिबुज़्ज़मान हज़रत इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम का लक़ब है। (ग़यासुल्लुग़ात 340)

सवालः ज़ुश् शहादतैन किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः ज़ुश् शहादतैन यह लक़ब हज़रत ख़ुज़ैमा बिन साबित अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु का है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/254)

आपका इस लक़ब के साथ मुक़ल्लब होने का तफ़्सीली वाक़िआ सहाबा किराम के तहत में बयान कर दिया गया है।

सवालः ज़ुल जनाहैन किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः ज़ुल जनाहैन (दो बाज़ू वाले) यह हज़रत जाफ़र बिन अबि तालिब का लक़ब है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको इस लक़ब से उस वक़्त याद फ़रमाया जब जंगे मौता के मौक़े पर दुश्मनों से

मुक़ाबला करते हुए आपके दोनो बाज़ू कट गए और फिर आप शहीद हो गए। हुज़ूर ने फ़रमाया, मैंने जाफ़र को जन्नत में उड़ते हुए देखा।

एक रिवायत के मुताबिक़ फ़रमायाः

हक़ तआला ने जाफ़र को दो बाज़ू याक़ूत के अता फ़रमाए जिनसे वह फ़रिश्तों के साथ उड़ते फिरते हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/460, हाशिया बुख़ारी शरीफ़ 2/161)

सवालः ज़ुल नताक़तैन किस सहाबिया का लक़ब है?

जवाबः ज़ुल नताक़तैन या ज़ातुल नताक़तैन (दो कमरबंद वाली) यह लक़ब हज़रत असमा बिन्ते अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हा का है। हिजरत के मौक़े पर जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत सिद्दीक़े अकबर ग़ारे सौर में क़याम पज़ीर थे तो उन दिनों हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अन्हा हुज़ूर और सिद्दीक़े अकबर के वास्ते खाने के लिए सत्तू लाया करती थीं। जिस दिन हुज़ूर ग़ारे सौर से कूच करने लगे उस दिन हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अन्हा सत्तू का थैला तो लायीं मगर उस थैले को बांध कर लटकाने के वास्ते तस्मा या डोरी लाना भूल गयीं। जब उस थैले को लटकाने के लिए कोई चीज़ न मिली तो हज़रत असमा ने अपना कमरबंद निकालकर उसके दो टुकड़े किए, एक से थैले का दहाना बांध कर लटकाया और दूसरे टुकड़े से कमर बांधी। उस दिन से उनका लक़ब ज़ातुल नताक़तैन हो गया। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/97)

सवालः ज़ुल हिजरतैन किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः ज़ुल हिजरतैन यह भी हज़रत जाफ़र का लक़ब है।

(हाशिया बुख़ारी 2/161)

सवालः ज़ुल यदैन किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः ज़ुलयदैन, यह लक़ब हज़रत ख़रबाक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का है। (तफ़्सीर नईमी 2/531, अस्माउर्रिजाल मिश्कात 594)

या तो यह कनाया है सख़ावत से या हक़ीक़तन उनके हाथ लंबे थे।

सवालः ज़ुल बजादैन किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः ज़ुल बजादैन (दो चादर वाले) यह लक़ब अब्दुल्लाह मुज़नी रज़ियल्लाहु अन्हु का है। आप क़बीला मुज़निया के बाशिंदों में से थे।

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में इस हाल में पहुँचे कि आपके पास सिर्फ़ एक ही चादर थी। उसके दो हिस्से किए हुए थे। एक हिस्से का तहबंद और दूसरे हिस्से की चादर बनाए हुए थे। सुबह के वक़्त मदीना तैय्यबा पहुँचे और मस्जिदे नबवी शरीफ़ में ठहरे। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ के लिए बाहर तशरीफ़ लाए और हुज़ूर की नज़र मुबारक उन पर पड़ी तो फ़रमाया कि तुम कौन हो? उन्होंने फ़रमाया कि मैं फ़कीर, मुसाफ़िर और आपका आशिक़े जमाल हूँ, मेरा नाम अब्दुल उज़्ज़ा है। हुज़ूर ने फ़रमाया तुम्हारा नाम अब्दुल्लाह और तुम्हारा लक़ब ज़ुल बजादैन है। हमारे काशानाए अक़्दस के क़रीब रहो।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/591)

सवालः ज़ून्नूर किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः ज़ुन्नूर यह हज़रत तुफ़ैल बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु का लक़ब है। तुफ़ैल बिन अम्र ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वल्लम से अपनी क़ौम के लिए कोई निशानी व करामत मांगी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके लिए दुआ फ़रमाई और कहा, खुदावंद! इन्हें नूर अता फ़रमा तो उनकी दोनों आँखों के दर्मियान एक नूर चमकने लगा। इस पर उन्होंने अर्ज़ किया कि मैं डरता हूँ कि लोग इसे बर्स ख़्याल करने लगेंगे। तो इसे बदल दिया गया और वह नूर उनके कोड़े के दस्ते में आ गया। और रात की तारीकी में इनका कोड़ा रोशनी देता था। इस वजह से इनका लक़ब ज़ुन्नूर यानी रोशनी वाले मशहूर हो गया।

(मदारिजुन्नबुव्वत 1/364)

सवालः साहिबे असरार रसूल किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः साहिबे असरार रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह लक़ब हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अन्हु का है। इनको मुनाफ़िक़ों का इल्म था। यह मुनाफ़िक़ों की ज़ातों, उनकी हस्तियों और उनके नामों को ख़ूब पहचानते थे कि कौन कौन हैं। इसलिए उनको इस लक़ब से याद किया जाता है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/953)

सवालः ख़तीबे रसूल किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः ख़तीबे रसूल, यह लक़ब हज़रत साबित बिन क़ैस रज़ियल्लाहु

अन्हु का है। (मदारिजुन्नवुव्वत 2/1023)

सवालः महबूब किस सहाबी को कहा जाता है?

जवाबः महबूब रसूल हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ियल्लाहु अन्हुमा को कहा जाता है। (अस्माउर्रिजाल मिश्कात 595)

सवालः हव्वारी रसूल किस सहाबी को कहा जाता है?

जवाबः हव्वरी रसूल हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु को कहा जाता था। (मिश्कात 2/565, मदारिजुन्नवुव्वत 906)

सवालः हब्बे रसूल किस सहाबी को कहा जाता है?

जवाबः हब्बे रसूल हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा को कहा जाता है। (मदारिजुन्नवुव्वत 2/871)

सवालः सहाबे तहूर रसूल किस सहाबी को कहा जाता है?

जवाबः सहाबे तहूर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु को कहा जाता है क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नालैन शरीफ़ैन और मिस्वाक वग़ैरह की हिफ़ाज़त आपके ज़िम्मे होती थी। (मिश्कात 2/578, मदारिजुन्नवुव्वत 2/852)

सवालः मेज़बाने रसूल किस सहाबी को कहा जाता है?

जवाबः मेज़बाने रसूल हज़र अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु का लक़ब है। (इब्ने कसीर 25/15)

सवालः बलीग़ुल अर्ज़ किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः बलीग़ुल अर्ज़ यह लक़ब हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हु का है। जब कुफ़्फ़ार और मुश्रिकीन ने आपको सूली दे दी तो आप की लाश मुबारक चालीस दिनों तक सूली पर लटकी रही। हज़रत ज़ुबैर अव्वाम और मिक़्दाद बिन असवद रज़ियल्लाहु अन्हुमा मदीना तैय्यबा से आकर लाश मुबारक को सूली से उतारकर चलने लगे। जब सुबह हुई तो मुश्रिकीन को पता चला। और उनका पीछा करने निकले। जब उनके क़रीब पहुँचे तो हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हु की लाश मुबारक को ज़मीन पर रखकर कुफ़्फ़ार और मुश्रिकीन से मुक़बला करने लगे। इस दौरान ज़मीन ने हज़रत ख़ुवैब रज़ियल्लाहु अन्हु की लाश को अपने अंदर समो लिया। इसलिए आपको बलीग़ुल अर्ज़

कहा जाता है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/246)

सवालः फ़ारिसे रसूल किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः फ़ारिसे रसूल हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु को कहा जाता है।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 614)

सवालः साहिबुल अज़ान किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः साहिबुल अज़ान, हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद अंसारी का लक़ब है क्योंकि आप ही को ख़्वाब में अज़ान के अल्फ़ाज़ बतलाए गए थे।

(मदारिजुन्नबुव्वत 1/611)

सवालः सैय्यदुल अंसार किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः सैय्यदुल अंसार यह लक़ब हज़रत सअद बिन मुआज़ अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु का है क्योंकि अंसार में से इन्हीं का घराना सबसे पहले इस्लाम लाया। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें यह लक़ब मरहमत फ़रमाया।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/902)

सवालः साहिबुल किताबैन किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः साहिबुल किताबैन, यह हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु का लक़ब है क्योंकि आप पहले इंजील पर ईमान रखते थे। जब क़ुरआन पाक का नुज़ूल हुआ तो फिर क़ुरआन पर ईमान लाए।

(हाशिया 10 मिश्कात 2/578)

सवालः ख़ातिमुल मुहाजिरीन किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः ख़ातिमुल मुहाजिरीन, हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु का लक़ब है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि तुम ख़ातिमुल मुहाजिरीन हो और मैं ख़ातिमुन्नबिय्यीन।

(अल कामिल फ़ी 2/100)

सवालः हिबर हाज़िहिल उम्मत किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः हिबर हाज़िहिल उम्मत हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा का लक़ब है।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 604, मदारिजुन्नबुव्वत 1/364)

सवालः अमीन हाज़िहिल उम्मत किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः अमीन हाज़िहिल उम्मत हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु

अन्हु का लक़ब है।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 608, मदारिजुन्नवुव्वत 2/566)

सवालः अबुल मसाकीन किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः अबुल मसाकीन यह लक़ब हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु का है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अता फ़रमाया था।

(मिश्कात 2/570)

सवालः उम्मुल मसाकीन किस सहाबिया का लक़ब है?

जवाबः उम्मुल मसाकीन यह लक़व उम्मुल मोमिनीन सैय्यदना ज़ैनव बिन्ते खुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा का है क्योंकि वह मिस्कीनों को खाना खिलातीं और उन पर बड़ी शफ़क़्क़त फ़रमातीं थीं।

(मदारिजुन्नवुव्वत 2/814)

सवालः अबुल खुलफ़ा किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः अबुल खुलफ़ा यह लक़व हज़रत अब्दुल्लाह बिन अव्वास रज़ियल्लाहु अन्हुमा का है। मंक़ूल है कि जब उनकी पैदाइश हुई तो उनकी वालिदा उन्हें हुज़ूर की बारगाह में लायीं। हुज़ूर ने उनके दाएं कान में अज़ान और वाएं कान में इक़ामत कही और फ़रमाया कि अबुल खुलफ़ा को ले जाओ। (मदारिजुन्नवुव्वत 2/847)

सवालः मुस्तजाबुद्दावात किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः मुस्तजाबुद्दावात यह हज़रत साअद बिन अबिं वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु का लक़व है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको मक़्बूलुद्दुआ होने की दुआ दी थी। चुनाँचे आप ऐसे मक़्बूलुद्दुआ थे कि सहाबा किराम आपसे दुआ कराने आते थे।

(तफ़्सीर नईमी 4/131, मिश्कात 2/566)

सवालः तर्जुमानुल क़ुरआन किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः तर्जुमानुल क़ुरआन यह हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा का लक़ब है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/847)

सवालः सैय्यदुश शोहदा किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः सैय्यदुश शोहदा हज़रत अमीर हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का लक़ब है। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/847)

सवालः नाजिया किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः नाजिया, यह लक़ब हज़रत ज़कवान रज़ियल्लाहु अन्हु का है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको इस लक़ब से मुलक़्क़ब उस वक़्त फ़रमाया, जब आपको क़ुरैश से निजात मिली।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 620)

सवालः सफ़ीना किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः यह जिस सहावी का लक़ब है उनके नाम में इख़्तिलाफ़ है। मेहरमान या मलहिमान या रूमान या कैसान या फ़र्रूख़ है। सफ़ीना उनका लक़ब क़रार पाने का सबब यह है कि एक सफ़र में ये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे। मुसलमानों में से जो भी किसी चीज़ का उठाने से मजबूर हो जाता था वह चीज़ उनके हवाले कर दी जाती थी। इस तरह उन्होंने बहुत से लोगों की चीज़ें संभाल कर रखी थीं। इस बिना पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको सफ़ीना यानी किश्ती से तश्बीह दी।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/878)

सवालः तैय्यबुल मुतैय्यब किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः तैय्यबुल मुतैय्यब हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हु का लक़ब है।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 607)

सवालः सैफ़ुल्लाह किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः सैफ़ुल्लाह हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु का लक़ब है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/420)

सवालः ग़स्सैल मलाइका किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः ग़स्सैल मलाइका, यह लक़ब हज़रत हंज़ला रज़ियल्लाहु अन्हु का है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/946)

सवालः मलकुल मलूक आदिला किसका लक़ब है?

जवाबः मलकुल मलूक आदिला हज़रत ज़ुल क़रनैन का लक़ब है।

○ ○ ○

अव्वलियात के बारे में सवाल और जवाब

सवालः औलादे आदम में सबसे पहले नबुव्वत किसको मिली?

जवाबः वह हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम हैं कि जिन्हें औलादे आदम में सबसे पहले नबुव्वत मिली। (अल अतक़ान फ़ी उलूमुल क़ुरआन 175)

सवालः जब अल्लाह तआला ने रूहों को जमा करके फ़रमाया था, "अलस्तु बिरब्बिकुम" तो सबसे पहले "क़ालू बला" किसने कहा था?

जवाबः वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं कि जवाब में सबसे पहले "क़ालू बला" कहा था। (तफ़्सीर नईमी 1/221, मदारिजुन्नबुव्वत 1/122)

सवालः सबसे पहले सुब्हानअल्लाह किसने कहा?

जवाबः वह हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम हैं जिन्होंने सबसे पहले सुब्हानअल्लाह कहा, अर्शे आज़म की अज़मत देखकर।

(तफ़्सीर नईमी 2/393)

सवालः सबसे पहले अलहम्दुलिल्लाह किसने कहा?

जवाबः वह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हैं कि जिन्होंने सबसे पहले अलहम्दुलिल्लाह कहा जब उनमें रूह फूंकी गई।

(ख़ाज़िन 1/46, हवाला बाला)

सवालः सबसे पहले अल्लाहु अकबर किसने कहा?

जवाबः वह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हैं कि सबसे पहले अल्लाहु अकबर कहा हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम का फ़िदया यानी दुंबा देखकर। (तफ़्सीर नईमी 2/393)

सवालः सबसे पहले ला इलाहा इलल्लाह किसने कहा?

जवाबः वह हज़रत नूह अलैहिस्सलाम हैं कि सबसे पहले ला इलाहा इलल्लाह कहा, तूफ़ान देखकर। (तफ़्सीर नईमी 2/393)

सवालः सबसे पहले अम्मा बाअद किसने कहा?

जवाबः वह हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम हैं कि सबसे पहले अम्मा बाअद कहा। (तफ़्सीर नईमी 2/554)

सवालः सबसे पहले सुब्हाना रब्बियल आला किसने कहा?

जवाबः वह हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम हैं कि सबसे पहले सुब्हाना रब्बियल आला कहा। (महाज़िरतुल अवाईल)

सवालः सबसे पहले अपना सर किसने मूंढा?

जवाबः वह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हैं कि सबसे पहले अपना सर मूंढा।

सवालः सबसे पहले मुर्ग़ किसने पाला?

जवाबः वह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हैं कि सबसे पहले मुर्ग़ पाला।

सवालः सबसे पहले कबूतर किसने पाला?

जवाबः वह हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम हैं कि सबसे पहले कबूतर पाला।

सवालः सबसे पहले चांदी से रुपए और सोने से अशरफ़ियाँ किसने बनायीं?

जवाबः वह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हैं कि सबसे पहले चांदी से रुपए और सोने से अशरफ़ियाँ बनायीं। (तफ़्सीर नईमी 1/331)

सवालः सबसे पहले क़लम से किसने लिखा?

जवाबः वह हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम हैं कि सबसे पहले क़लम से लिखा। (ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 16/7)

एक रिवायत में है कि सबसे अव्वल लिखने वाले हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हैं आपने अरबी, फ़ारसी, इबरानी, रूमी, क़िब्ती, बरबरी, उंदलूसी, हिंदी और चीनी ज़बानें मिट्टी पर लिखीं और यह रिवायत कि सबसे पहले लिखने वाले हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम हैं तो यहाँ ख़त से मुराद इल्म जफ़र के नुक़ूश हैं न कि ज़बानों की तहरीर।

(शाने हबीबुर्रहमान 128)

सवालः सबसे पहले कपड़ा किसने सिया?

जवाबः वह हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम हैं कि सबसे पहले कपड़े

सीने का काम किया।

(ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 16/7)

सवालः सबसे पहले सिला हुआ कपड़ा किसने पहना?

जवाबः वह हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम हैं कि सिला सबसे पहले सिला हुआ कपड़ा पहना। आपसे पहले लोग खाले पहनते थे।

(ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 16/7)

सवालः सबसे पहले पाजामा किसने पहना?

जवाबः वह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हैं कि सबसे पहले सिला हुआ पाजामा पहना।

(तफ़सीर नईमी 1/810)

सवालः सबसे पहले हथियार किसने बनाया?

जवाबः वह हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम हैं कि सबसे पहले हथियार बनाए।

(ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 16/7)

सवालः सबसे पहले तराज़ू और पैमाने किसने क़ायम किए?

जवाबः वह हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम हैं कि सबसे पहले तराज़ू और पैमाने क़ायम किए।

(ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 16/7)

सवालः सबसे पहले हमाम किसने बनवाया?

जवाबः वह हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम हैं कि सबसे पहले हमाम बनवाया।

(शामी 5/33, ज़ादुल मआरिज 2/137)

सवालः सबसे पहले जेलख़ाना किसने बनवाया?

जवाबः वह हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि सबसे पहले जेल ख़ाना बनवाया।

(तारीख़ खुलफ़ा 136)

सवालः सबसे पहले पुलिस का महकमा किसने क़ायम किया?

जवाबः वह हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि सबसे पहले पुलिस का महकमा क़ायम किया।

(तारीख़ खुलफ़ा 136)

सवालः सबसे पहले चारागाहें किसने खुदवायीं?

जवाबः वह हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि सबसे पहले चारगाहें खुदवायीं।

(तारीख़ खुलफ़ा 161)

सवालः सबसे पहले बैतुलमाल किसने क़ायम किया?

जवाबः वह हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि सबसे पहले बैतुल माल क़ायम किया।

(तारीख़ खुलफ़ा 136)

सवालः सबसे पहले मुसाफ़िरख़ाना किसने बनवाया?

जवाबः वह हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि सबसे पहले मुसाफ़िर ख़ाने बनवाए। (तारीख़ ख़ुलफ़ा 136)

सवालः सबसे पहले अज़ान किसने दी?

जवाबः वह हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि सबसे पहले अज़ान दी। (महाज़रतुल अवाइल)

सवालः सबसे पहले अज़ान के लिए मीनार किसने बनवाया?

जवाबः वह हज़रत अमीर माविया रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि सबसे पहले अज़ान के लिए मीनार बनवाया। (तारीख़ ख़ुलफ़ा 136)

सवालः सबसे पहले काबे पर गिलाफ़ किसने चढ़ाया?

जवाबः वह हज़रत तबा अकबर असद हुमैरी शाह यमन हैं कि सबसे पहले काबा मुअज़्ज़मा पर गिलाफ़ चढ़ाया। (तफ़्सीर नईमी 1/823)

सवालः सबसे पहले मस्जिद में फ़र्श बिछवाने का काम किसने किया?

जवाबः वह हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि सबसे पहले मस्जिदों में फ़र्श बिछवाने का काम किया।

सवालः सबसे पहले मस्जिदे नबवी में चिराग़ किसने रोशन किया?

जवाबः वह हज़रत तमीम दारी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि सबसे पहले मस्जिदे नबवी में चिराग़ रोशन किया।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 588, नज़्हतुल मजालिस 3/159)

सवालः सबसें पहले जुमा के लिए अज़ान अव्वल का आग़ाज़ किसने किया?

जवाबः वह हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि सबसे पहले जुमा के लिए अज़ान अव्वल का आग़ाज़ किया। आपसे पहले सिर्फ़ ख़ुत्बे के वक़्त अज़ान दी जाती थी। (ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 28/सूरः जुमा)

सवालः सबसे पहले ब-जमाअत तरावीह का एहतिमाम किसने किया?

जवाबः वह हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि सबसे पहले

ब-जमाअत नमाज़े तरावीह का एहतिमाम किया। (तारीख़ खुलफ़ा 136)

सवालः सबसे पहले मस्जिदों में पर्दे किसने लटकवाए?

जवाबः वह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि सबसे पहले मस्जिदे नबवी में पर्दे लटकवाए।

सवालः सबसे पहले सन हिजरी किसने क़ायम किया?

जवाबः वह हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि सबसे पहले सन हिजरी क़ायम किया। (तारीख़ खुलफ़ा 136)

सवालः सबसे पहले दफ़्तर किसने क़ायम किए?

जवाबः वह हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि सबसे पहले दफ़्तर क़ायम किए। (तारीख़ खुलफ़ा 136)

सवालः सबसे पहले इल्मे नुजूम और हिसाब पर किसने नज़र की?

जवाबः वह हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम हैं कि सबसे पहले इल्म नुजूम और इल्मे हिसाब पर नज़र की। (ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 16/7)

सवालः सबसे पहले अपना और अपने बच्चों का ख़तना किसने किया?

जवाबः वह हज़रत इब्राहीम हैं कि सबसे पहले अपना और अपने बच्चों का ख़त्ना किया। (तफ़्सीर नईमी 1/810)

सवालः सबसे पहले नाख़ून किसने तराशे?

जवाबः वह हज़रत इब्राहीम हैं कि सबसे पहले नाख़ून तराशे। (तफ़्सीर नईमी 1/810)

सवालः सबसे पहले मूंछे किसने कटवायीं?

जवाबः वह हज़रत इब्राहीम हैं कि सबसे पहले मूंछे कटवायीं। (तफ़्सीर नईमी 1/810)

सवालः सबसे पहले बग़ल के बाल किसने दूर किए?

जवाबः वह हज़रत इब्राहीम हैं कि सबसे पहले बग़ल के बाल दूर किए। (मअरिजुन्नबुव्वत 1/133)

सवालः सबसे पहले ज़ेरे नाफ़ बाल किसने दूर किए?

जवाबः वह हज़रत इब्राहीम हैं कि सबसे पहले ज़ेरे नाफ़ बाल साफ़

किए। (तफ़्सीर नईमी 1/810)

सवालः सबसे पहले बालों में ख़िज़ाब किसने लगाया?

जवाबः वह हज़रत इब्राहीम हैं कि सबसे पहले बालों में ख़िज़ाब लगाया। (तफ़्सीर नईमी 1/810)

सवालः सबसे पहले अपने हाथ में आसा किसने लिया?

जवाबः वह हज़रत इब्राहीम हैं कि सबसे पहले अपने हाथ में आसा लिया। (तफ़्सीर नईमी 1/810)

सवालः सबसे पहले मुआनक़ा किसने किया?

जवाबः वह हज़रत इब्राहीम हैं कि सबसे पहले मुआनक़ा किया। (तफ़्सीर नईमी 1/810)

सवालः सबसे पहले मिंबर बनाकर ख़ुत्बा किसने दिया?

जवाबः वह हज़रत इब्राहीम हैं कि सबसे पहले मिंबर बनवाया और उस पर ख़ुत्बा दिया। (तफ़्सीर नईमी 1/810)

एक क़ौल में है कि सबसे पहले जिसने ख़ुत्बा दिया वह याअरब बिन क़हतान है। एक क़ौल में कअब बिन लुवी। एक क़ौल में सुब्हान बिन वाइल और एक क़ौल में कस बिन सअदा है। (मदारिजुन्नबुव्वत 1/665)

सवालः सबसे पहले राहे ख़ुदा में जिहाद किसने किया?

जवाबः वह हज़रत इब्राहीम हैं कि सबसे पहले राहे ख़ुदा में जिहाद किया। (तफ़्सीर नईमी 1/810)

सवालः सबसे पहले मेहमान नवाज़ी किसने की?

जवाबः वह हज़रत इब्राहीम हैं कि सबसे पहले मेहमान नवाज़ी की। (तफ़्सीर नईमी 1/810)

सवालः सबसे पहले जुमा के लिए गुस्ल किसने किया?

जवाबः वह हज़रत इब्राहीम हैं कि सबसे पहले जुमा के लिए गुस्ल किया। (मुहाज़िर अवाइल)

सवालः सबसे पहले मिस्वाक किसने किया?

जवाबः वह हज़रत इब्राहीम हैं कि सबसे पहले मिस्वाक किया। (मअरिजुन्नबुव्वत 133/1)

एक क़ौल के मुताबिक़ सबसे पहले मिस्वाक करने वाले हज़रत मूसा

अलैहिस्सलाम हैं।

सवालः सबसे पहले कुल्ली किसने की?

जवाबः वह हज़रत इब्राहीम हैं कि सबसे पहले कुल्ली की।

(मआरिजुन्नबुव्वत 133/1)

सवालः सबसे पहले नाक में पानी किसने डाला?

जवाबः वह हज़रत इब्राहीम हैं कि सबसे पहले नाक में पानी डाला।

(मआरिजुन्नबुव्वत 133/1)

सवालः सबसे पहले पानी से इस्तंजा किसने किया?

जवाबः वह हज़रत इब्राहीम हैं कि सबसे पहले पानी से इस्तंजा किया।

(मआरिजुन्नबुव्वत 133/1)

सवालः सबसे पहले तलवार किसने चलाई?

जवाबः वह हज़रत इब्राहीम हैं कि सबसे पहले तलवार चलाई।

(इब्ने कसीर 1/15)

सवालः सबसे पहले किसके बाल सफ़ेद हुए?

जवाबः वह हज़रत इब्राहीम हैं कि सबसे पहले जिनके बाल सफ़ेद हुए।

(तफ़्सीर नईमी 1/810)

सवालः सबसे पहले कौन सा जानवर बीमार हुआ?

जवाबः वह शेर है जो नूह अलैहिस्सलाम की किश्ती में सवार कर चुके तो लोगों ने कहा कि शेर की मौजूदगी में यह मवेशी कैसे आराम से रह सकेंगे। बस अल्लाह तआला ने शेर पर बुख़ार डाल दिया। इससे पहले ज़मीन पर यह बीमारी नहीं थी।

(रूहुल मानी 12/53, अलबिदाया 1/111, इब्ने कसीर 12/4)

सवालः सबसे पहले समुंदर से मोती किसने निकलवाया?

जवाबः वह हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम हैं कि सबसे पहले समुंदर से मोती निकलवाए।

(ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 23/12)

सवालः इस्लाम में सबसे पहले हज किसने किया?

जवाबः वह हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि जिन्होंने इस्लाम में सबसे पहले हज किया?

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा 74, मोहसिने इंसानियत 710)

सवालः इस्लाम में सबसे ख़लीफ़ा का लक़ब किसको मिला?

जवाबः वह हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि इस्लाम में सबसे पहले ख़लीफ़ा का लक़ब पाया। (तारीख़ ख़ुलफ़ा 74)

सवालः इस्लाम में अमीरुल मोमिन का ख़िताब सबसे पहले किसको मिला?

जवाबः वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि सबसे पहले अमीरुल मोमिनीन का ख़िताब पाया। उस वक़्त जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको आठ अफ़राद के हमराह सिरया अब्दुल्लाह बिन जहश के लिए रवाना फ़रमाया। अहले सैर कहते हैं कि कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का सबसे पहले अमीरुल मोमिनीन लक़ब मुक़र्रर हुआ। इसका मतलब यह है कि तमाम ख़लीफ़ाओं में सबसे पहले जिसको अमीरुल मोमिनीन के लक़ब से मुलक़्क़ब किया गया वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/137)

सवालः इस्लाम में सबसे पहले क़ाज़ी कौन मुक़र्रर हुए?

जवाबः वह हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि सबसे पहले क़ाजी मुक़र्रर हुए। (तारीख़ ख़ुलफ़ा 137)

सवालः मदीना तैय्यबा में सबसे पहले किसको मुअल्लिम इस्लाम मुक़र्रर किया गया?

जवाबः वह हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि सबसे पहले मुअल्लिम इस्लाम मुक़र्रर करके रवाना किए गए।

(मोहसिने इंसानियत 702)

सवालः इस्लाम में सबसे पहले झंडा किसने लहराया?

जवाबः इस्लाम का सबसे पहला झंडा हज़रत बरीदा असलमी रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथों से लहराया गया हिजरत के मौक़े पर।

(मोहसिने इंसानियत 700)

सवालः इस्लाम में सबसे पहले तीर किसने फेंका?

जवाबः इस्लाम की राह में सबसे पहले तीर चलाने वाले हज़रत साअद अबि वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।

(मिश्कात 2/567, मदारिजुन्नबुव्वत 2/133)

सवालः इस्लाम की हिमायत में सबसे पहले तलवार उठाने कौन हैं?

जवाबः इस्लाम की हिमायत में सबसे पहले तलवार म्यान से निकालने वाले सहाबी हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 595)

सवालः सबसे पहले अपने इस्लाम को ज़ाहिर करने वाले सहाबी कौन हैं?

जवाबः पहले सहाबी रसूल जिन्होंने इस्लाम क़ुबूल करने का आम ऐलान किया हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।

(मोहसिने इन्सानियत 700)

सवालः अहले मदीना में सबसे पहले इस्लाम के दायरे में दाख़िल होने वाला कौन शख़्स है?

जवाबः अहले मदीना में सबसे पहले इस्लाम के दायरे में दाख़िल होने वाले हज़रत असअद ज़रारा और हज़रत ज़कवान बिन अब्दे कैस रज़ियल्लाहु अन्हुमा हैं। (सैरुल आलामुल नवला 303)

दूसरे कौल के मुताबिक़ हज़रत सवेद बिन सामत हैं।

(मोहसिने इंसानियत 702)

सवालः काबातुल्लाह में सबसे पहले कलिमा इस्लाम को बाआवाज़ बुलंद पुकारकर मार खाने वाले सहाबी कौन हैं?

जवाबः काबातुल्लाह के अंदर सबसे पहले इस्लाम का कलिमा बुलंद आवाज़ से पुकार कर मार खाने वाले सहाबी हज़रत अबू ज़र ग़फ़्फ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। (मोहसिने इंसानियत 700)

सवालः राहे इस्लाम में सबसे पहले शहादत पाने वाले सहाबी कौन हैं?

जवाबः राहे इस्लाम में सबसे पहले शहादत के मर्तबे पर फ़ाएज़ होने वाले सहाबी हज़रत यासिर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/63)

सवालः राहे इस्लाम में सबसे पहले शहादत पाने वाली सहाबिया कौन हैं?

जवाबः राहे इस्लाम मे सबसे पहले शहादत के मर्तबे पर फ़ाएज़ होने

वाली सहाबिया मोहतरमा हज़रत सुमैय्या रज़ियल्लाहु अन्हा हैं कि अबू जहल बेअक़्ल ने शहीद किया। यह सहाबिया यासिर रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी और हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु की वालिदा मोहतरमा हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/63)

सवालः क़ुबूले इस्लाम के सिलसिले में सबसे पहले किसको सूली दी गई?

जवाबः इस्लाम क़ुबूल करने के सिलसिले में सबसे पहले हज़रत ख़ुबैब बिन अदी रज़ियल्लाहु अन्हु को सूली दी गई। (मोहसिने इंसानियत 701)

सवालः मदीना तैय्यबा हिजरत करने वाले सबसे पहले सहाबी कौन हैं?

जवाबः पहले मुहाजिर मदीना हज़रत अबू सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।

(मोहसिने इंसानियत 701)

सवालः मदीने का पहला शख़्स कौन है जिनका इंतिक़ाल हिजरत से पहले हालते इस्लाम में हुआ?

जवाबः मदीना तैय्यबा का पहला शख़्स जिनका इंतिक़ाल हिजरत से पहले हालते इस्लाम में हुआ वह हज़रत सवेद बिन सामत रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।

(मोहसिने इंसानियत 702)

सवालः मदीना तैय्यबा में मुहाजिर मुसलमानों की सबसे पहली औलाद कौन है?

जवाबः मदीना तैय्यबा में मुहाजिर मुसलमानों की सबसे पहली औलाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा हैं।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 590)

सवालः हिजरत के बाद अंसारी मुसलमानों की सबसे पहली औलाद कौन है?

जवाबः हिजरत के बाद अंसारी मुसलमानों की सबसे पहली औलाद नौमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हुमा हैं। (अस्माउर्रिजाल मिश्कात 620)

सवालः मदीना तैय्यबा में मुहाजिर मुसलमानों में से सबसे पहले किसने इंतिक़ाल किया?

जवाबः मदीना तैय्यबा में मुहाजिरीन सहाबा किराम में सबसे पहले

इंतिक़ाल करने वाले सहाबी हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।

(अस्माउर्रिजाल मिश्कात 603)

सवालः बाद हिजरत अंसारी मुसलमानों में से सबसे पहले इंतिक़ाल करने वाले सहाबी कौन हैं।

जवाबः हिजरत के बाद अंसारी सहाबा में सबसे पहले इंतिक़ाल करने वाले सहाबी हज़रत कुलसूम बिन हदम रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।

(मोहसिने इंसानियत 702)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सबसे पहले किस सहाबी की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई?

जवाबः सबसे पहली नमाज़ जनाज़ा जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पढ़ाई वह असद बिन ज़रारा रज़ियल्लाहु अन्हु की है।

(माहाना आला हज़रत शुमारा अगस्त 97)

सवालः सबसे पहले कोड़े की सज़ा देने वाले कौन हैं?

जवाबः वह हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि सबसे पहले दुर्रे की ईजाद और कोड़े की सज़ा दी।

सवालः इस्लाम में सबसे पहले शराब नोशी पर सज़ा का हुक्म जारी करने वाले कौन हैं?

जवाबः इस्लाम में सबसे पहले शराब पीने पर सज़ा का हुक्म जारी करने वाले हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।

सवालः इस्लाम में सबसे पहले शराब नोशी पर किसको सज़ा दी गई?

जवाबः इस्लाम में सबसे पहले शराब पीने पर सज़ा वहशी बिन हर्ब रज़ियल्लाहु अन्हु को दी गई।

सवालः सबसे पहले शहरों को आबाद करने वाले कौन हैं?

जवाबः वह हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि जिन्हांने सबसे पहले शहरों को आबाद किया। (तारीख़ इस्लाम 1/367)

सवालः सबसे पहले नमाज़े जनाज़ा में चार तकबीरों पर लोगों को किसने जमा किया?

जवाबः सबसे पहले नमाज़े जनाज़ा में चार तकबीरों पर लोगों को

जमा करने वाले हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।(तारीख़ इस्लाम 1/367)

सवालः क़ुरैश मक्का के सामने सबसे पहले बुलंद आवाज़ से क़ुरआन पढ़ने वाले कौन हैं?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद सबसे पहले क़ुरैश मक्का के सामने बाआवाज़ बुलंद क़ुरआन पढ़ने वाले सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हुमा हैं। (तिबरी 2/73)

सवालः सबसे पहले अपनी बीवी के साथ हिजरत करने वाले सहाबी कौन से हैं?

जवाबः अव्वल सहाबी रसूल जिन्होंने अपनी बीवी के साथ हिजरत की हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/64)

सवालः जन्नतुल बक़ी में सबसे पहले दफ़न होने वाले सहाबी कौन हैं?

जवाबः अंसार कहते हैं अव्वल सहाबी जो जन्नतुल बक़ी में दफ़न हुए हज़रत असद बिन ज़रारा रज़ियल्लाहु अन्हु हैं और मुहाजिरीन कहते हैं कि हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/145)

सवालः काबा मौज़्ज़मा में सबसे पहले अज़ान किस दिन और किस वक़्त दी गई?

जवाबः ख़ाना काबा में सबसे पहले अज़ान फ़तेह मक्का के दिन ज़ोहर की दी गई। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने काबा की छत पर चढ़कर दी। (शवाहिद नबुव्वत 172, मोहसिने इंसानियत 704)

सवालः ख़ाना काबा में सबसे पहले नमाज़ किस दिन पढ़ी गई?

जवाबः ख़ाना काबा में सबसे पहली नमाज़ उस दिन पढ़ी गई जिस दिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम क़ुबूल किया।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/73)

सवालः पहली नमाज़ ईदुल फ़ितर किस सन में पढ़ी गई?

जवाबः पहली इदुल फ़ितर की नमाज़ सन् 2 हिजरी को पढ़ी गई।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/131)

सवालः पहली नमाज़ ईदुल अज़्हा कब पढ़ी गई?

जवाबः पहली इदुल अज़्हा की नमाज़ सन् 2 हि० में पढ़ी गई।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/180)

सवालः पहली नमाज़े जुमा कब पढ़ी गई (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इमामत में)?

जवाबः पहली नमाज़ जुमा सन् 1 हि० 12 रबिउल अव्वल को बनी सालिम की आबादी में पढ़ी गई। नमाज़ी सहाबा की तादाद सौ थी (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इमामत में)। (मोहसिने इंसानियत 703)

सवालः इस्लाम की हमीयत में सबसे पहला इत्तिफ़ाकी क़त्ल किसके हाथ से हुआ?

जवाबः इस्लाम की हमियत में सबसे पहला इत्तिफ़ाकी क़त्ल हज़रत सअद बिन अबि वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ से हुआ। वाक़िआ यह था कि शहर से बाहर मुस्लिम जमाअत मसरूफ़ नमाज़ थी। और कुफ़्फ़ार ने शरात की। हज़रत सअद ने हड्डी उठाकर उनकी तरफ़ फेंकी और वह काफ़िर को जा लगी। वह ख़त्म हो गया।

(मोहसिने इंसानियत 700, मअरिजुन्नबुव्वत 7/3)

सवालः हमीयते इस्लाम के तहत सबसे पहला शख़्सी क़त्ल किसका हुआ?

जवाबः हमीयते इस्लाम के तहत पहला शख़्सी क़त्ल औरतों में अस्मा बिन्ते मरदान का हुआ। उनके नौ मुस्लिम भाई अमीर बिन अदी ख़तमी के हाथों और मर्दों में अबू ग़फ़ला यहूदी का हुआ आलिम बिन उमैर अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथों। (मोहसिने इंसानियत 702)

सवालः इस्लाम में सबसे पहले किसका सर काटा गया?

जवाबः पहला सर जो इस्लाम में काटा गया वह कअब बिन अशरफ़ यहूदी का है। (मअरिजुन्नबुव्वत 2/187)

सवालः इस्लाम में सबसे पहले किसने अपने घोड़े को ख़स्सी बनाया?

जवाबः हज़रत जाफ़र बिन अबि तालिब ने हर्ब शर जलील ग़साई के मौक़े पर अपने घोड़े को ख़स्सीं कराया। यह पहला घोड़ा है जो इस्लाम

में ख़स्सी हुआ। (अवराके ग़म 90)

सवालः सहाबा किराम में सबसे पहले किसका नाम मुहम्मद रखा गया?

जवाबः वह मुहम्मद बिन मुस्लिमा अंसारी मदनी अशहली हैं कि अस्हाब में सबसे पहले उन्हीं की नाम मुहम्मद रखा गया।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/903)

सवालः क़यामत के दिन फ़रिश्ते सबसे पहले किस सहाबी से मुसाफ़ा करेंगे?

जवाबः वह हज़रत अबू दरदा हैं कि क़यामत के दिन सबसे पहले फ़रिश्ते उनसे मुसाफ़ा करेंगे। (कन्ज़ुल उम्माल 11/756)

सवालः सहाबा किराम में सबसे पहले कौन हौज़े कौसर का पानी पिएंगे?

जवाबः वह हज़रत सुहैब रूमी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि सबसे पहले हौज़े कौसर का पानी पिएंगे। (कन्ज़ुल उम्माल 11/756)

सवालः सहाबा किराम में सबसे पहले जन्नत का फल कौन खाएंगे?

जवाबः वह हज़रत अबू वाहिद हद्दा रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि सबसे पहले जन्नत का फल खाएंगे। (कन्ज़ुल उम्माल 11/756)

सवालः लश्करे इस्लाम के लिए सबसे पहला अलम कब मुरत्तब हुआ?

जवाबः सबसे पहला अलम जो लश्करे इस्लाम के लिए मुरत्तब हुआ अक्सर अहले सैर के नज़दीक वह अलम है जो सरिया दारे अरक़म के मौक़े पर मुरत्तब हुआ और जिसे हज़रत मसतह बिन असासा रज़ियल्लाहु अन्हु ने उठाया। बाज़ हज़रात कहते हैं कि पहला अलम वह जो सरिया सैफ़ुल बहर के मौक़े पर अबू मरसद ग़नवी रज़ियल्लाहु अन्हु ने उठाया।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/133-134)

सवालः सबसे पहला गुनाह जो आसमान में सरज़द हुआ वह कौन सा है?

जवाबः पहला गुनाह जो आसमान में हुआ वह हसद है जो इब्लीस से

सरज़द हुआ।

(ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 30/सूरः फ़लक़)

सवालः सबसे पहले गुनाह जो ज़मीन पर हुआ कौन सा है और किससे सरज़द हुआ?

जवाबः पहला गुनाह जो ज़मीन पर हुआ जो क़ाबील से हुआ वह हसद है।

(ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 30/सूरः फ़लक़)

सवालः मदीना तैय्यबा की सबसे पहले आबादी कौन सी है?

जवाबः मदीना मुनव्वरा को आवाद करने वाला तबे अकवर असद हुमैरी शाह यमन है जिसने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शौक़े मुलाक़ात में सकूनत इख़्तियार कर ली। उसकी क़ौम के कुछ हज़रात भी यहाँ बस गए। यही मदीना मुनव्वरा की पहली आवादी है।

(तफ़्सीर नईमी 1/823)

सवालः मक्का मुकर्रमा में बसने वाला सबसे पहला क़बीला कौन सा है?

जवाबः मक्का मुकर्रमा में बसने वाला पहला क़बीला क़बीला जरहम है।

(तफ़्सीर नईमी 1/823)

सवालः तहवीले क़िब्ला के बाद पढ़ी जाने वाली सबसे पहली नमाज़ कौन सी है?

जवाबः तहवीले क़िब्ला के बाद पहली नमाज़ जो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने काबा मौअज़्ज़मा की तरफ़ पढ़ी वह अस्र की थी।

(मदारिजुन्नबुव्वत 126, अल अतक़ान 1/27)

सवालः इस्लाम में सबसे पहले मुरतिद कौन हुआ?

जवाबः मुक़ैस बिन जनाना पहला शख़्स है जो इस्लाम में मुरतिद हुआ।

(ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 5/10)

सवालः सबसे पहला हुक्मुरान जो हलक़ा बगोश इस्लाम हुआ कौन सा है?

जवाबः पहला हुक्मुरान जिसने इस्लाम क़ुबूल किया वह शाह हब्श सहमा नजाशी है।

(मोहसिने इंसानियत 709)

सवालः सबसे पहला शख़्स जो फ़तेह मक्का के दिन मुशर्रफ़ बाइस्लाम हुआ कौन है?

जवाबः पहला शख़्स जो फ़तेह मक्का के मौक़े पर इस्लाम लाया वह हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। (मोहसिने इंसानियत 705)

सवालः सबसे पहले ख़िताब जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी सहाबी को दिया कौन सा है?

जवाबः पहला शानदार ख़िताब जो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबी को दिया सैफ़ुल्लाह है। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को जंगे मौता के बाद।

(मोहसिने इंसानियत 705, मदारिजुन्नबुव्वत 2/460)

सवालः सबसे पहला कज़्ज़ाब जिसने नबुव्वत का दावा किया कौन है?

जवाबः पहला कज़्ज़ाब जिसने नबुव्वत का दावा किया मुसैलमा कज़्ज़ाब है। (मोहसिने इंसानियत 704)

सवालः सबसे पहले मुसमलानों को माले ग़नीमत कब हाथ आया?

जवाबः पहला माले ग़नीमत जो मुसलमानों के हाथ आया वह रजब सन् 2 हि० को सिरया नख़ला के मौक़े पर। (मोहसिने इंसानियत 704)

सवालः सबसे पहले क़ैदी जिनको मुसलमानों ने क़ैद किया कौन कौन हैं?

जवाबः उस्मान बिन अब्दुल्लाह और हकम बिन कैसान पहले क़ैदी हैं जिन्हें मुसलमानों ने क़ैद किया।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/138, तफ़्सीर नईमी 2/368)

सवालः सबसे पहला बादशाह जिसने सूली की सज़ा दी कौन है और किसको सूली दी?

जवाबः फ़िरऔन पहला बादशाह है जिसने हाथ पाँव काटने और सूली की सज़ा दी उन जादूगरों को जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाए। (ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 9/5)

सवालः सबसे पहले आग की पूजा किसने की?

जवाबः क़ाबील पहला शख़्स है जिसने आग की पूजा की।

(अल कामिल फ़ी तारीख़ 1/8)

सवालः मक्का मौज़्ज़मा में बनने वाला सबसे पहला घर कौन सा है और किसने बनाया था?

जवाबः मक्का मौज़्ज़मा में बनने वाला पहला घर रिहाइशी "दारुन्नदवा" वह जिसे कुस्सी बिन कलाब ने बनाया था जिसे हज़रत अमीर माविया ने ज़ेर बिन अदी से एक लाख दिरहम में ख़रीदकर मस्जिदे हराम में शामिल किया। (हाशिया 4 जलालैन 150)

सवालः ज़मीन पर उगने वाला सबसे पहला पेड़ कौन सा है?

जवाबः पहला पेड़ जो दुनिया में उगा वह ज़ैतून का है।

(हाशिया 6 जलालैन 299)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि सबसे पहले जो पेड़ ज़मीन पर क़ायम हुआ वह खजूर का पेड़ है। (नज़हतुल मजालिस 1/52)

सवालः सबसे पहले पेड़ जो तूफ़ाने नूह के बाद उगा कौन सा है?

जवाबः पहला पेड़ जो तूफ़ाने नूह के बाद उगा वह ज़ैतून का है।

(हाशिया 5 जलालैन 299)

सवालः ख़ाना काबा का तवाफ़ सबसे पहले किसने किया?

जवाबः ख़ाना काबा का तवाफ़ सबसे पहले फ़रिश्तों ने किया।

(तफ़्सीर नईमी 4/18)

सवालः आसमान में सबसे पहले अज़ान किसने दी?

जवाबः आसमान में सबसे अज़ान हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने दी। (मुहाज़िरा)

सवालः सबसे पहली निदाए ग़ैबी जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वल्लम को की गई वह कौन सी है?

जवाबः उलमा फ़रमाते हैं कि पहली निदाए ग़ैबी जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को की गई वह यह थी, "सतर पोशी को लाज़िम करो।"

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/45)

सवालः सबसे पहला मकान जो ज़मीन पर बना कौन सा है?

जवाबः पहला मकान जो ज़मीन पर बना वह बैतुल्लाह शरीफ़ है।

(तफ़्सीर नईमी 2/18)

सवालः सबसे पहले अपने सर पर ताज रखने वाला बादशाह कौन सा है?

जवाबः पहला बादशाह जिसने अपने सर पर ताज रखा वह नमरूद बिन किनआन था। (ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 7/15)

सवालः इस्लाम में सबसे पहले किसकी मीरास तक़्सीम की गई?

जवाबः इस्लाम में सबसे पहले सअद बिन रबी की मीरास तक़्सीम की गई। (अल इशबाह व नज़ाइर 402)

सवालः इस्लाम पर ख़ात्मे की दुआ सबसे पहले किसने की?

जवाबः इस्लाम पर ख़ात्मा होने की दुआ सबसे पहले हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने मांगी। (इब्ने कसीर 13/5)

सवालः अपनी औलाद और अपने वालिदैन की मग़फ़िरत की दुआ सबसे पहले किसने की?

जवाबः वह हज़रत नूह हैं कि सबसे पहले अपनी औलाद और वालिदैन की मग़फ़िरत की दुआ मांगी। (इब्ने कसीर 13/5)

सवालः सबसे पहले घोड़े पर कौन सवार हुआ?

जवाबः सबसे पहले जो घोड़े पर सवार हुए वह हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम हैं। उससे पहले घोड़ा भी और जानवरों की तरह वहशी जानवर था। (मदारिजुन्नबुव्वत 1037)

सवालः ज़मीन पर सबसे पहली बारिश किस तारीख़ को हुई?

जवाबः दसवीं मुहर्रम को आसमान से ज़मीन पर पहली बारिश हुई। (नज़्हतुल मजालिस 1/181, वहवाला माहनामा अशरफ़िया अप्रैल 99)

सवालः सबसे पहली क़ब्र जिस पर पानी छिड़का गया किसकी है?

जवाबः दफ़न के बाद हज़रत इब्राहीम बिन रसूलल्लाह की क़ब्र पर पानी छिड़का गया। अहले सैर कहते हैं कि यह पहली क़ब्र है जिस पर पानी छिड़का गया। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/775)

सवालः सबसे पहले अरबी ज़बान बोलने वाले कौन हैं?

जवाबः सबसे पहले अरबी ज़बान बोलने वाले हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम हैं। (उम्दतुल क़ारी 1/62)

दिन और महीनों के बारे में सवाल व जवाब

सवालः माह मुहर्रम का नाम मुहर्रम क्यों रखा गया?

जवाबः मुहर्रम का नाम मुहर्रम इस बिना पर रखा गया कि ज़मानाए जाहिलियत में इस माह में ख़ून ख़राबा और लड़ाई झगड़ा हराम था।

(ग़यासुल्लुग़ात 457)

या इसकी ताज़ीम की वजह से इसको मुहर्रम कहते हैं।

सवालः माह सफ़र का नाम सफ़र क्यों रखा गया?

जवाबः सफ़र का नाम सफ़र या तो इस वजह से रखा गया कि यह माख़ूज़ है सफ़र से जिसके माने हैं "ख़ाली होना।" क्योंकि माहे मुहमर्रम में जंग व क़िताल हराम था इसलिए लोग माहे सफ़र में क़िताल के लिए जाया करते थे और घर ख़ाली पड़े रहते थे। इस वजह से इस माह का नाम सफ़र रखा गया। या यह माख़ूज़ है सफ़्र से जिसके मानी हैं "ज़र्दी" जब लोग इस माह का नाम मुताय्यन करने लगे तो इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त पतझड़ का मौसम था जिसमें पेड़ों के पत्ते पीले पड़ जाते थे। इस बिना पर इस माह का नाम सफ़र रखा गया। (ग़यासुल्लुग़ात 308)

सवालः माह रबिउल अव्वल को रबिउल अव्वल क्यों कहते हैं?

जवाबः माह रबिउल अव्वल कहने की वजह यह है कि जब इस माह का नाम रखा जाने लगा तो यह महीना फ़सल रबीअ यानी मौसम बहार के शुरू में हुआ। (ग़यासुल्लुग़ात 229)

सवालः माह रबिउस्सानी का नाम रबिउस्सानी क्यों रखा गया?

जवाबः जब लोग माह रबिउल आख़िर का नाम रखने लगे तो यह महीना फ़सल रबी यानी मौसमे बहार के आख़िर में वाक़ेअ हुआ। इस वजह से इसका नाम रबिउ आख़िर रख दिया गया। (ग़यासुल्लुग़ात 220)

सवालः माह जमादिउल ऊला की वजह तस्मिया क्या है?

जवाबः जमाउिल ऊला की वजह तस्मिया यह है कि जमाद बमानी

जमूद यानी जम जाना। जब लोग इस माह का नाम मुताय्यन करने लगे तो उस वक़्त सर्दी का मौसम शुरू हुआ था। क्योंकि सर्दी के मौसम में हर चीज़ में जमूदियत आ जाती है। इस बिना पर इस माह का नाम जमादिउल ऊला मुक़र्रर हुआ। (ग़यासुल्लुग़ात 148)

सवालः माह जमादिउस्सानी की वजह तस्मिया क्या है?

जवाबः जमादिउस्सानी की वजह तस्मिया यह है कि जब लोग इस माह का नाम रखने लगे तो यह वह वक़्त था कि जब सर्दी की वजह से पानी जम जाता है। इस वजह से इस माह का नाम जमादिउस्सानी रख दिया गया। (ग़यासुल्लुग़ात 148)

सवालः माह रजब का नाम रजब क्यों रखा गया?

जवाबः रजब माख़ूज़ है तरजीब से बमानी ताज़ीम करना। क्योंकि इस माह को अहले अरब शहरुल्लाह कहते थे और इसकी ताज़ीम करते थे। इस बिना पर इसका नाम रजब रखा गया। (ग़यासुल्लुग़ात 230)

सवालः माह शाबान का नाम शाबान क्यों हुआ?

जवाबः शाबान माख़ूज़ है शैबा या यशअबू से बमानी फूटना, निकलना, ज़ाहिर होना। क्योंकि इस माह में ख़ैर कसीर फूटती फैलती है और बंदों का रिज़्क़ तक़्सीम होता है इस वजह से इस माह का नाम शाबान हुआ। (ग़यासुल्लुग़ात 292)

सवालः माह रमज़ान का नाम रमज़ान क्यों रखा गया?

जवाबः रमज़ान या तो माख़ूज़ है रमज़ बमानी जलना से। क्योंकि यह माह गुनाहों को जला देता है। या माख़ूज़ है रम्ज़ बमानी ज़मीन की गर्मी से पाँव का जलना। क्योंकि यह महीना भी तकलीफ़े नफ़्स और जलन का सबब है इस बिना पर इसका नाम रमज़ान रखा गया। (ग़यासुल्लुग़ात 336)

सवालः माह शव्वाल को शव्वाल क्यों कहा जाने लगा?

जवाबः शव्वाल माख़ूज़ है शूल बमानी बाहर निकलना। क्योंकि इस महीने में अहले अरब सैर व सय्याहत के लिए घरों से बाहर निकल जाया करते थे इस वजह से इस माह को शव्वाल कहा जाता है। (ग़यासुल्लुग़ात 300)

सवालः माह ज़ीक़ादा की वजह तस्मिया क्या है?

जवाबः ज़ीक़ादा की वजह तस्मिया यह है कि ज़ी बमाने वाला और क़ादा बमानी बैठ जाना। क्योंकि इस माह में लोग एहतिराम की वजह से लोग क़िताल व जिदाल बंद करके घरों में बैठ जाया करते थे।

(ग़यासुल्लुग़ात 226)

सवालः माह ज़िलहिज्ज को ज़िलहिज्ज कहने की वजह क्या है?

जवाबः ज़िलहिज्ज को ज़िलहिज्ज कहने की वजह यह है कि या तो यह माख़ूज़ हज बमानी हज करना। या यह माख़ूज़ है हज बमानी साल। क्योंकि इस माह में हज करते हैं और यह माह साल का आख़िरी महीना है। इस वजह से इसको ज़िलहिज्ज कहते हैं। (ग़यासुल्लुग़ात 226)

सवालः क़दीम ज़माने में हफ़्ते दिनों के नाम क्या थे?

जवाबः क़दीम ज़माने में हफ़्ते के दिनों के नाम ये थे:

1. अव्वल (इतवार), 2. रहून (पीर), 3. हब्बार (मंगल),
4. मार (बुध), 5. लोतस (जुमेरात), 6. उरूबा (जुमा),
7. शबार (हफ़्ता)। (मदारिजुन्नबुव्वत 1/654)

एक क़ौल के मुताबिक़ ये नाम यूँ हैं:

1. अव्वल 2. रहून, 3. जबार,
4. वबार, 5. मौनत, 6. उरूबा,
7. शबार। (इब्ने कसीर 10/11)

सवालः जुमा का नाम सबसे पहले जुमा किसने रखा और जुमा के दिन को जुमा क्यों कहा जाने लगा?

जवाबः जुमा का क़दीमी नाम उरूबा है। सबसे पहले इस दिन का नाम कअब बिन लूई ने रखा।

इसकी वजह तस्मिया में कई अक़वाल हैं:

1. जुमा इस दिन को इसलिए कहा जाता है कि इस दिन नमाज़ के लिए जमाअतों का इज्तिमा होता है। (ख़ज़ाईनुल इरफान 28/सूरः जुमा)
2. या इस वजह से कि इस दिन में इज्तिमा मख़्लूक़ है।
3. या इस वजह से कि इस दिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश तमाम हुई और रूह व जिस्म को जमा किया गया।

(मदारिजुन्नबुव्वत 1/654)

सवालः हफ़्ते के दिनों में किस दिन क्या चीज़ वजूद में आई?

जवाबः हफ़्ते के दिनों में से इतवार और पीर के दिन ज़मीन बनाई गई। मंगल और बुध में पहाड़, दरिया, पेड़, जानदारों की गिज़ा और बक़िया सामान पैदा किए गए। जुमेरात व जुमा में सातों आसमान, चांद व सूरज सितारे और फ़रिश्ते पैदा किए गए। एक क़ौल यह है कि हफ़्ते के दिन ज़मीन, इतवार को पहाड़, पीर को पेड़, मंगल को मकरूहात, बुध को नूर, जुमेरात को चौपाए और जुमा को हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पैदा किए गए।

हज़रत अबूल आलिया फ़रमाते हैं कि फ़रिश्ते बुध के दिन पैदा हुए और जिन्नात को जुमेरात के दिन पैदा किया गया। (इब्ने कसीर 1/4)

एक क़ौल यह है कि बुराईयाँ मंगल के दिन, नूर बुध के दिन और जानवर जुमेरात के दिन पैदा किए गए। (इब्ने कसीर 21/14)

हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि बारिश की पैदाइश मंगल के दिन हुई। तारीकी और रोशनी बुध के दिन और जन्नत की पैदाइश जुमेरात के दिन हुई। (मल्फ़ूज़ात ख़्वाजा निज़ामुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहि 16, 17)

सवालः मलकुल मौत को रूह क़ब्ज़ करने की ज़िम्मेदारी किस दिन सौंपी गई?

जवाबः मंगल के दिन मलकुल मौत अलैहिस्सलाम को खुदा के बंदों की जाने क़ब्ज़ करने पर मुक़र्रर किया गया।

(मल्फ़ूज़ात ख़्वाजा निज़ामुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहि 16, 17)

सवालः इब्लीस को ज़मीन पर किस दिन उतारा गया?

जवाबः मंगल के दिन इब्लीस रूए ज़मीन पर आया।

(मल्फ़ूज़ात ख़्वाजा निज़ामुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहि 16, 17)

सवालः दोज़ख़ के दरवाज़ किस दिन खोले गए?

जवाबः दोज़ख़ के दरवाज़े मंगल के दिन खुले।

(मल्फ़ूज़ात ख़्वाजा निज़ामुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहि 16, 17)

सवालः वह कौन सा दिन है जिस दिन छः ईदें जमा हुई?

जवाबः 9 ज़िलहिज्ज सन् 10 हि० मुताबिक़ 25 दिसंबर बरोज़ जुमा।

यह वह दिन है जिस दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुत्वा जुमा हज्जतुल विदा फ़रमाया। उस दिन छः ईदें जमा थीं तीन मुसलमानों की और तीन दूसरी क़ौमों की यानी 25 दिसंबर ईसाईयों की ईद, यहूदियों की ईद और मजूसियों की ईद थी। मुसलमानों के लिए जुमा का दिन वह ईद, हज का दिन वह ईद का और महवूब की दीद की ईद। ऐसी ईदें आज तक जमा न हुईं।

(शाने हबीवुर्रहमान 51)

सवालः लोगों के वे आमाल जो सज़ा व जज़ा के लायक़ न हों वे किस दिन आमालनामे से निकाले जाते हैं?

जवाबः लागों के वे आमाल जो सज़ा व जज़ा के लायक़ न हों वे जुमेरात के दिन नामाआमाल से निकाल दिए जाते हैं।

(इब्ने कसीर 13/12)

सवालः अल्लाह तआला साल भर की बलाएं किस माह में नामज़द फ़रमाता है?

जवाबः साल भर जो बलाएं दुनिया में नाज़िल होती हैं अल्लाह तआला उन्हें माह सफ़र में नामज़द फ़रमाता है।

(मल्फ़ूज़ात ख़्वाजा निज़ामुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहि 185)

सवालः वह कौन सा दिन है जिस दिन ऐसा हादसा पेश आया कि लोगों की ज़बानें बदल गयीं?

जवाबः नमरूद बिन किनआन ने अपने शहर बाबुल में एक ऊँची इमारत बनाई। उसका मकर यह था कि उसने यह बुलंद इमारत अपने ख़्याल में आसमान में पहुँचने और आमसान वालों से लड़ने के लिए बनाई थी। अल्लाह तआला ने हवा चलाई और इमारत गिर पड़ी। जब यह इमारत गिरी तो घबराहट में लोगों की ज़बाने बदल गयीं। उस दिन से लोग तिहत्तर ज़बाने बालने लगे जब कि उससे पहले सिर्फ़ एक ज़बान सुरयानी बोलते थे।

(हाशिया जलालैन 217)

○ ○ ○

क़यामत और क़यामत की अलामतों के बारे में सवाल और जवाब

सवालः दज्जाल कहाँ से निकलेगा?

जवाबः दज्जाल "खुरासान" से निकलेगा। (तिर्मिज़ी 2/47)

सवालः दज्जाल की पेशानी पर क्या लिखा हुआ है?

जवाबः इस सिलसिले में तीन रिवायतें हैं कि दज्जाल की पेशानी पर किया लिखा हुआ होगाः

1. उसकी पेशानी पर "काफ़िर" लिखा होगा।
(मिश्कात 2/473, तिर्मिज़ी 2/47)
2. उसकी पेशानी पर "क-फ़-र" लिखा होगा। (मिश्कात 2/473)
3. उसकी पेशानी पर "अलकाफ़, अलफ़ा अर्रा" लिखा होगा।
(हाशिया 8, तिर्मिज़ी 2/46, हाशिया 1, मिश्कात 2/473)

सवालः दज्जाल का क़याम व फ़साद कितने दिनों तक रहेगा?

जवाबः दज्जाल का क़याम और फ़साद सिर्फ़ चालीस रोज़ रहेगा मगर उसका पहला दिन एक साल के बराबर दूसरा दिन एक माह के बराबर और तीसरा दिन एक हफ़्ते के बराबर और बाक़ी दिन आम दिनों की तरह होंगे। (तिर्मिज़ी 2/47, मिश्कात 2/473)

सवालः दज्जाल कौन कोन से शहर में दाख़िल न हो सकेगा?

जवाबः दज्जाल तमाम रूए ज़मीन का गश्त करेगा मगर दो जगह मक्का मुकर्रमा और मदीना तैय्यबा में दाख़िल न हो सकेगा। अल्लाह तआला इन दोनों जगहों की फ़रिश्तों के ज़रिए हिफ़ाज़त फ़रमाएगा इस तरह कि जब दज्जाल मदीना तैय्यबा या मक्का मुकर्रमा की तरफ़ रुख़ करेगा तो फ़रिश्ते उसका चेहरा दूसरी तरफ़ मोड़ देंगे। (तिर्मिज़ी 2/48)

सवालः दज्जाल को कौन क़त्ल करेंगे और किस जगह?

जवाबः दज्जाल को हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम क़त्ल कर देंगे उस बस्ती में जो बैतुल मुक़द्दस के क़रीब है और जिसे बाबुल्लाह कहते हैं।

(इब्ने कसीर 17/18)

सवालः इमाम मेहदी का ज़हूर किस सन में होगा?

जवाबः इमाम मेहदी के बारे में अहादीस बकसरत और मुतावातिर हैं। मगर इनमें किसी वक़्त का ताय्युन नहीं। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं, "बाज़ उलूम के ज़रिए मुझे ऐसा ख़्याल गुज़रता है कि शायद 1837 हि० में कोई सलतनत इस्लामी बाक़ी न रहे और 1900 हि० में इमाम मेहदी ज़हूर फ़रमाएं।"

(अलमलफ़ूज़ 104/1)

सवालः दाब्बतुल अर्ज़ कितना लंबा होगा?

जवाबः दाब्बतुल अर्ज़ साठ ग़ज़ लंबा होगा।

(हाशिया 14, 16 जलालैन 324)

सवालः दाब्बतुल अर्ज़ किस जगह से बरामद होगा और किस दिन?

जवाबः दाब्बतुल अर्ज़ मुज़दलफ़ा की रात को कोहे सफ़ा के जियाद नामी चट्टान से बरामद होगा। (इब्ने कसीर 20/2)

बाज़ कहते हैं कि मस्जिदे हराम से निकलेगा। बाज़ ने कहा है, सफ़ा से, बाज़ ने कहा है, मुक़ामे हिज्र से और बाज़ ने कहा है कि ताएफ़ से निकलेगा। (हाशिया 14, 16 जलालैन 324)

सवालः दाब्बतुल अर्ज़ जिस्मानी एतिबार से कैसा होगा?

जवाबः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि दाब्बतुल अर्ज़ मोटे नेज़े और भाले की तरह होगा। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि उसके बाल और खुर होंगे। दाढ़ी होगी दुम न होगी। हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का क़ौल है कि उसका सर बैल के सर के मुशाबेह होगा, आँखें ख़िंज़ीर जैसी और कान हाथी जैसे होंगे। सींग की जगह ऊँट की तरह होगी, शतुरमुर्ग़ जैसी गर्दन और शेर जैसा सीन होगा, ऊँट जैसे पाँव और बिल्ली जैसी कमर होगी और रंग चीते जैसा होगा। (इब्ने कसीर 20/2)

इसके चार पैर और दो पर होंगे। (हाशिया 16 जलालैन 324)

सवालः दाब्बतुल अर्ज़ के पास क्या क्या चीज़ें होंगी?

जवाबः दाब्बतुल अर्ज़ के पास आसाए मूसवी और अंगूठी सुलेमानी होगी। हर मोमिन की पेशानी पर आसाए मूसवी से निशान लगाएगा जिससे चेहरा मुनव्वर हो जाएगा और ख़ातिम सुलेमानी से हर काफ़िर की नाक पर निशान लगाएगा जिससे उसका चेहरा स्याह हो जाएगा। इस तरह मोमिन और काफ़िर ज़ाहिर हो जाएंगे। (इब्ने कसीर 20/2)

सवालः इमाम मेहदी दुनिया में कितने साल क़याम फ़रमाएंगे?

जवाबः इमाम मेहदी दुनिया में कितने साल रहेंगे इसमें इख़्तिलाफ़ है। बाज़ ने कहा, नौ साल बाज़ ने कहा चालीस और तिर्मिज़ी जि० 2 स० 46 पर पाँच सात और नौ साल का तज़्किरा है।

सवालः मग़रिब से आफ़ताब कितने दिनों तक तुलू होता रहेगा?

जवाबः इमाम नुव्वी रहमतुल्लाह अलैहि के मुताबिक़ मग़रिब से आफ़ताब सिर्फ़ एक दिन तुलू होगा। आफ़ताब बीच आसमान तक आने के बाद फिर मग़रिब की तरफ़ लौटकर ग़ुरूब हो जाएगा। बाज़ का क़ौल है कि मग़रिब से आफ़ताब तीन दिन तुलू होगा।

(हाशिया 20 जलालैन 128)

सवालः सूर क्या चीज़ है?

जवाबः सूर नूर का बना हुआ है एक सींग है। इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैहि ने हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाह अलैहि से नक़ल किया है सूर बूक़ की तरह है और बूक़ के माने हैं नरसिंगा।

(रूहुल मानी 20/194)

सवालः सूर की पैदाइश कब हुई और अब वह कहाँ है?

जवाबः सूर की हदीस में है कि अल्लाह तआला जब आसमान व ज़मीन की पैदाइश कर चुका तो सूर को पैदा किया और उसे हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम को दिया। वह उसे मुँह में लिए हुए आँखें ऊपर की जानिब उठाए हुए अर्श की जानिब देख रहे हैं कि कब हुक्मे खुदा हो और सूर फूंक दें। (इब्ने कसीर 17/8)

सवालः सूर कितनी बार फूंका जाएगा?

जवाबः सूर दो बार फूंका जाएगा। पहले सूर से ज़िंदे मर जाएंगे और दूसरे सूर से मुर्दे ज़िंदे हो जाएंगे। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 24/4)

एक क़ौल यह है कि सूर तीन बार फूंके जाएंगे। पहला सूरे फिज़ा होगा। उससे सारी दुनिया के लोग घबरा उठेंगे और काफ़िर बेहोश हो जाएंगे। दूसरा सूर सअक़ होगा जिससे सब ज़िंदा मर जाएंगे और तीसरा सूर बअसत होगा जिससे सब मुर्दे ज़िंदा हो जाएंगे।

(इब्ने कसीर 17/8, जमल 730)

सवालः सूर ऊला के बाद कौन कौन से नुफ़ूस ज़िंदा रहेंगे?

जवाबः नफ़ख़तुल ऊला के बाद कौन से नुफ़ूस ज़िंदा रहेंगे, इसमें मुफ़स्सिरीन के बहुत से अक़्वाल हैं। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि नफ़ख़ा साक़ से तमाम आसमान व ज़मीन वाले मर जाएंगे सिवाए जिब्राईल, मीकाईल व इसराफ़ील और मलकुल मौत के। फिर अल्लाह तआला दोनों नफ़ख़ों के दर्मियान की मुद्दत में इन फ़रिश्तों को भी मौत देगा। दूसरा क़ौल यह है कि मुस्तसना शोहदा हैं जिनके लिए क़ुरआन मजीद में "बल अह्याउन" आया है। हदीस़ शरीफ़ में भी है कि वे शोहदा हैं जो तलवारें हमाइल किए हुए गिर्द अर्श हाज़िर होंगे। तीसरा क़ौल हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मुस्तसना हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम हैं क्योंकि आप तूर पर बेहोश हो चुके हैं। इसलिए इस नफ़ख़ से आप बेहोश न होंगे बल्कि आप मुतीक़ज़ और होशियार रहेंगे। चौथा क़ौल यह है कि मुस्तसना जन्नत की हूरें और अर्श व कुर्सी के रहने वाले हैं। ज़हाक का क़ौल है कि मुस्तसना रिज़वान और हूरें और वे फ़रिश्ते जो जहन्नम पर मामूर हैं वे और जहन्नम के साँप बिच्छू हैं। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 24/4)

सवालः दो सूरों के दर्मियान कितना फ़ासला होगा?

जवाबः चालीस साल का फ़ासला होगा।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 24/4, जमल 3/731)

सवालः सूरे बअसत यानी ज़िंदा होने का सूर कहाँ से फूंका जाएगा?

जवाबः सूरे बअसत यानी ज़िंदा होने का सूर सख़राए बैतुल मुक़द्दस

(इब्ने कसीर 26)

से फूंका जाएगा।

हज़रत इसराफ़ील मुर्दों को यह कहकर आवाज़ देंगेः

أَيَّتُهَا الْعِظَامُ الْبَالِيَةُ وَالْأَوْصَالُ الْمُتَقَطِّعَةُ وَاللُّحُومُ الْمُتَمَزِّقَةُ إِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُكُنَّ أَنْ يَجْتَمِعْنَ لِفَصْلِ الْقَضَاءِ فَيَقْبَلُوْنَ

तर्जुमाः ऐ सड़ी गली हड्डियो! ऐ जिस्म के मुतफ़र्रिक़ जोड़ो! और ऐ बिखरे हुए गोश्तो! अल्लाह तुमको हुक्म देता है कि फ़ैसले के लिए जमा हो जाओ तो वे लब्बैक कहेंगे।

बाज़ ने कहा है कि सूर इसराफ़ील फूंकेगे लेकिन निदा हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम देंगे। (जमल 3/729, इब्ने कसीर 26, सावी 3/50)

सवालः मैदाने हश्र किस मुल्क में क़ायम होगा?

जवाबः मैदाने हश्र मुल्के शाम में क़ायम होगा।

(इब्ने कसीर 28/सूरः हश्र)

सवालः क़यामत के दिन लोग किस हाल में जमा किए जाएंगे?

जवाबः क़यामत के दिन लोग नंगे पाँव, नंगे बदन और बेख़ला जमा किए जाएंगे। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 17/7, इब्ने कसरी 17/7)

और सबसे पहले हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को दो बारीक नरम सफ़ेद कपड़े पहनाए जाएंगे। (मिश्कात 2/483)

सवालः क़यामत के दिन सबसे पहले हिसाब किससे होगा?

जवाबः क़यामत के दिन सबसे पहले हिसाब जिब्राईल अलैहिस्सलाम से होगा। (अल अतक़ान 1/60)

सवालः क़यामत के दिन अहले हशर की ज़बान कौन सी होगी?

जवाबः क़यामत के दिन अहले महशर की ज़बान सुरयानी होगी।

(इब्ने कसीर 19/15)

सवालः क़यामत के दिन हर आदमी के कितने दीवान निकलेंगे?

जवाबः क़यामत के दिन इंसानों के तीन दीवान निकलेंगे। एक में नेकियाँ लिखी हुई होंगी, दूसरे में गुनाह होंगे, तीसरे में ख़ुदा की नेमतें लिखी होंगी। (इब्ने कसीर 13/18 मदारिजुन्नबुव्वत 1/493)

सवालः क़यामत के दिन कौनसा गिरोह किस झंडे के तले होगा?

जवाबः क़यामत के दिन हर टोला अपने अपने इमाम के साथ होगा। चुनाँचे सिद्दीक़ का टोला हज़रत अबूबक्र के झंडे के नीचे, बादशाहों की जमाअत लिवाए फ़ारूक़ी के नीचे, सख़ियों का गिरोह उस्मानी झंडे के नीचे, शहीदों की जमाअत लिवाए हैदरी के तले, फ़ुक़्हा उलमा का गिरोह हज़रत मुआज़ बिन जबल के झंडे के नीचे, तारिकुद्दुनिया फ़ुक़रा का गिरोह हज़रत अबूज़र के झंडे के तले, मौज़्ज़िनों की जमाअत हज़रत बिलाल के झंडे के नीचे और मज़लूम, मुत्तक़ियों और शहीदों की जमाअत जनाब इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के झंडे के नीचे होंगे।

(तफ़्सीर नईमी 4/315)

सवालः क़यामत के दिन अल्लाह तआला सारे बंदों का हिसाब कितन घंटे में ले लेगा?

जवाबः क़यामत के दिन अल्लाह तआला सारे बंदों का हिसाब सिर्फ़ चार घंटे में ले लेगा। (तफ़्सीर नईमी 4/409)

सवालः लिवाए हम्द की दराज़ी किनती होगी?

जवाबः लिवाए हम्द की दराज़ी एक हज़ार छः सौ साल की मुसाफ़त के बराबर होगी। (मदारिजुन्नबुव्वत 1/482)

सवालः लिवाए हम्द किस चीज़ का होगा?

जवाबः लिवाए हम्द की नोक याक़ूत अहमर, उसका क़ब्ज़ा सफ़ेद चांदी का और उसका डंडा सब्ज़ मरवारीद का होगा। उसकी ज़ुल्फ़ें तीन नूर की होंगी। एक ज़ुल्फ़ मश्रिक़ में दूसरी मग़रिब में तीसरी दुनिया के दर्मियान में होगी। (मदारिजुन्नबुव्वत 1/482)

सवालः लिवाए हम्द में क्या लिखा होगा?

जवाबः लिवाए हम्द में तीन सतरें तहरीर होंगीः

एक पर बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, दूसरी पर अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन और तीसरी पर ला इलाहा इलल्लाह मुहम्मदुर्रसूलल्लाह लिखा हुआ होगा। (मदारिजुन्नबुव्वत 1/482)

सवालः हौज़े कौसर का नाम कौसर क्यों हुआ?

जवाबः इसका नाम कौसर इस बिना पर है कि इसके पास लोग कसरत से जाएंगे। (मदारिजुन्नबुव्वत 1/145)

सवालः हौज़े कौसर किस चीज़ का बना हुआ है?

जवाबः हौज़े कौसर मोती और याक़ूत के संगरेज़ों से बना हुआ है। उसके किनारे सोने के हैं और उसके इर्दगिर्द मोतियों के क़ुब्बे हैं और उसकी तह मुश्क की है। (मदारिजुन्नबुव्वत 1/484, क़ानून शरिअत 1/40)

सवालः हौज़े कौसर के प्याले किनते और किस चीज़ के होंगे?

जवाबः हौज़े कौसर के प्याले सोने चाँदी, याक़ूत व मोती और ज़बरजद के हैं। उनकी तादाद आसामन के सितारों की मानिन्द है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 1/484)

सवालः हौज़े कौसर की लंबाई और चौड़ाई और गहराई कितनी होगी?

जवाबः हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की हदीस में है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरे हौज़ की दराज़ी एक माह की मुसाफ़त है और इतनी ही उसकी चौड़ाई है और उसकी गहराई सत्तर हज़ार फ़रसख़ की है। (मदारिजुन्नबुव्वत 1/483)

सवालः पुल सिरात किस जगह बिछाया जाएगा और पुल सिरात के कितने पुल होंगे?

जवाबः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जहन्नम की पुश्त पर सिरात बिछाई जाएगी। (मदारिजुन्नबुव्वत 1/491)

और पुल सिरात के सात पुल होंगे। (गुन्नियतुत्तालिबीन 321)

सवालः पुल सिरात कि मुसाफ़त कितनी है?

जवाबः हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रहमतुल्लाह अलैहि की हदीस है कि पुलसिरात की मुसाफ़त पंद्रह हज़ार साल के बराबर है। पाँच हज़ार चढ़ाई में, पाँच हज़ार उतार में और पाँच हज़ार बराबर हमवार।

(मदारिजुन्नबुव्वत 1/492)

दूसरी रिवायत के मुताबिक़ इसकी मुसाफ़त क़यामत के सालों के हिसाब से तीन सौ साल के बराबर है और तीसरी रिवायत के मुताबिक़ आख़िरत के सालों के हिसाब से तीन हज़ार साल के बराबर है।

(गुन्नियतुत्तालिबीन 169)

सवालः पुल सिरात से सबसे पहले कौन गुज़रेंगे?

जवाबः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया पुल सिरात पर से गुज़रने वालों में सबसे पहले मैं और मेरी उम्मत होगी। (मदारिजुन्नबुव्वत 1/491)

और उम्मते मुहम्मदिया में सबसे पहले मुहाजिरीन फ़ुक़रा गुज़रेंगे। (इब्ने कसीर 13/19)

सवालः मीज़ान कहाँ रखा जाएगा?

जवाबः हदीस शरीफ़ में आया है कि जन्नत अर्श के दाहिनी जानिब और जहन्नम उसके बायीं जानिब रखी जाएगी। उसके बाद मीज़ान लाई जाएगी। और नेकियों के पलड़े को जन्नत के सामने और बदियों के पलड़े को जहन्नम के मुक़ाबले रखा जाएगा। (मदारिजुन्नबुव्वत 1/492)

सवालः क़यामत के दिन साहिबे मीज़ान कौन होगा और आमाल का वज़न कौन करेंग?

जवाबः हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि क़यामत में साहिबे मीज़ान जिब्राईल अलैहिस्सलाम होंगे और वही उस दिन आमाल का वज़न करेंगे। (मदारिजुन्नबुव्वत 1/496)

सवालः मौत को किस तरह मौत आएगी?

जवाबः जब सब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो लेंगे और जहन्नम में सिर्फ़ वही रह जाएंगे जिनको हमेशा के लिए उसमें रहना है तो उस वक़्त जन्नत व दोज़ख के दर्मियान मौत को सफ़ेद व स्याह मेंढे की शक्ल में ला खड़ा किया जाएगा। जन्नती और जहन्नमियों से कहा जाएगा कि इसे पहचानते हो? सब कहेंगे कि हाँ यह मौत है। फिर वह ज़िब्ह कर दी जाएगी। (बहारे शरिअत 37/1, हाशिया 22 जलालैन 375)

○ ○ ○

जन्नत और दोज़ख़ के बारे में सवाल व जवाब

सवालः जन्नत किस चीज़ से बनी हुई है?

जवाबः जन्नत की दीवारें सोने और चाँदी की ईंटों और मुश्क के गारे से बनी हैं। एक ईंट सोने की और एक चांदी की है। ज़मीन ज़ाफ़रान की, कंकरियों की जगह मोती और याक़ूत हैं। और एक रिवायत में है कि जन्नते अदन की एक ईंट सफ़ेद मोती की है एक याक़ूत सुर्ख़, एक ज़बरजद सब्ज़ की और मुश्क का गारा है, घास की जगह ज़ाफ़रान है, मोती कंकरियाँ और अंबर की मिट्टी। (बहारे शरिअत 32/1)

सवालः जन्नत के तब्क़ात कितने हैं?

जवाबः जन्नत के आठ तब्क़े हैं:

1. जन्नतुल फ़िरदौस,
2. जन्नते अदन,
3. जन्नते मावा,
4. दारुल ख़ुल्द,
5. दारुस्सलाम,
6. दारुल मुक़ामा,
7. इल्लियीन,
8. जन्नते नईम।

(तफ़्सीर नईमी 1/242)

सवालः जन्नत के दर्जे कितने हैं?

जवाबः जन्नत के सौ दर्जे हैं। हर दर्जे में वह मुसाफ़त है जो आसमान व ज़मीन के दर्मियान है। रहा यह कि ख़ुद उस दर्जे की क्या मुसाफ़त है तो तिर्मिज़ी शरीफ़ में है कि अगर तमाम आलम एक दर्जे में जमा हो तो सबके लिए वह वसीअ है। (बहारे शरिअत 32/1)

एक रिवायत में है कि जन्नत के दर्जात इतने हैं जितने क़ुरआन के हरूफ़। (अल अतक़ान 1/89)

सवालः जन्नत के उस पेड़ का नाम क्या है जिसे अल्लाह तआला ने अपने दस्ते क़ुदरत से लगाया?

जवाबः जन्नत का वह पेड़ जिसको अल्लाह तआला ने अपने दस्ते क़ुदरत से लगाया उसका नाम तूबा है। उस पेड़ के बारे में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के दर्याफ़्त करने पर अल्लाह तक़द्दुस तआला ने फ़रमायाः यह जन्नतियों के लिए है। इसकी जड़ मेरी खुशनूदी है, इसका पानी तसनीम का है, इसकी ठंडक काफ़ूर की सी है, इसका ज़ाएक़ा ज़ंजबील के मिस्ल है और इसकी खुशबू मुश्क की तरह है। जिसने भी इसमें से एक घूंट पी लिया उसे कभी प्यास न लगेगी। (अल विदाया 2/78)

सवालः जन्नत में सबसे पहले कौन दाख़िल होंगे?

जवाबः जन्नत में सबसे पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दाख़िल होंगे। (मदारिजुन्नबुव्वत 1/478)

सवालः जन्नत में पैग़ंबरों में से सबसे आख़िर में कौन दाख़िल होंगे?

जवाबः पैग़ंबरों में सबसे आख़िर में जन्नत में दाख़िल होने वाले हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम हैं क्योंकि वह तवंगर थे।

(कीमियाए सआदत 794)

सवालः जन्नत में सबसे पहले कौनसी उम्मत दाख़िल होगी?

जवाबः उम्मतों में सबसे पहले उम्मते मुहम्मदिया जन्नत में दाख़िल होगी। (मदारिजुन्नबुव्वत 1/478)

सवालः जन्नत में उम्मते मुहम्मदिया में सबसे पहले कौन दाख़िल होंगे?

जवाबः उम्मते मुहम्मदिया में सबसे पहले जन्नत में हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु दाख़िल होंगे।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ात 500, मदारिजुन्नबुव्वत 1/496)

सवालः जन्नत में सहाबा किराम में से सबसे आख़िर में कौन दाख़िल होंगे और क्यों?

जवाबः जन्नत में सहाबा किराम में से सबसे आख़िर में हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ दाख़िल होंगे क्योंकि वह तवंगर थे।

(कीमियाए सआदत 794)

सवालः जन्नत में अहले जन्नत की कुल की कितनी सफ़े होंगी

और इनमें से उम्मते मुहम्मदिया की कितनी सफ़ें होंगी?

जवाबः अहले जन्नत की एक सौ बीस सफ़ें होंगी जिनमें से अस्सी सफ़ें उम्मते मुहम्मदिया की होंगी। (तफ़्सीर नईमी 2/12, 4/78)

सवालः जन्नत में अहले जन्नत की उम्र कितनी होगी?

जवाबः जन्नत में अहले जन्नत में से मर्दों की उम्र उम्रे ईसा अलैहिस्सलाम यानी तैंतीस साल होगी। (इब्ने कसीर 28/सूरः वाक़िआ)

और औरतों की उम्र सत्रह या अठ्ठारह साल की होगी।

(तफ़्सीर अज़ीज़ी पारा 30)

और इसी उम्र में हमेशा रहेंगे। (तफ़्सीर अज़ीज़ी पारा 30)

सवालः जन्नत में जन्नती का क़द कितना लंबा होगा और जसामत कितनी होगी?

जवाबः जन्नत में अहले जन्नत का क़द क़दे आदम यानी साठ ग़ज़ लंबा होगा और जिस्म की चौड़ाई सात हाथ होगी।

(इब्ने कसीर 28/सूरः वाक़िआ)

सवालः जन्नत में अहले जन्नत की ज़बान कौन सी होगी?

जवाबः जन्नत में अहले जन्नत की ज़बान ज़बाने मुहम्मद यानी अरबी ज़बान होगी। (इब्ने कसीर 28/सूरः वाक़िआ)

सवालः जन्नत के उस दरवाज़े का क्या नाम है जिससे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दाख़िल होंगे?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जन्नत में जिस दरवाज़े से दाख़िल होंगे उसका नाम बाबुर्रहमः और बाबुत्तोबा है।

(मदारिजुन्नबुव्वत 1/497)

सवालः जन्नत में जन्नती किस वक़्त जाएंगे?

जवाबः जन्नती जन्नत में दोपहर के वक़्त जाएंगे।(इब्ने कसीर 19/1)

सवालः उम्मे मुहम्मदिया में से कितने लोग बेहिसाब व किताब जन्नत में दाख़िल होंगे?

जवाबः चार अरब नव्वे करोड़ सत्तर हज़ार उम्मते मुहम्मदिया बग़ैर हिसाब किताब के जन्नत में जाएंगे। (तफ़्सीर अलम नशरह 208)

यह उस हदीस का हासिल ज़र्ब है जिसमें नबी करीम सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार बेहिसाब जन्नत में जाएंगे और उनके तुफ़ैल में हर के साथ सत्तर हज़ार।

(इब्ने कसीर 4/3)

अल्लाह अज़्ज़े इस्मुहू उनके साथ तीन जमाअतें और देगा मालूम नहीं हर जमाअत में कितने होंगे। इसका शुमार वही जाने। तहज्जुद पढ़ने वाले भी बिला हिसाब जन्नत में जाएंगे। (बहारे शरिअत 29/1)

सवालः जन्नत में अहले जन्नत की अव्वलीन ग़िज़ा कौन सी होगी?

जवाबः जन्नत में अहले जन्नत की सबसे पहली ग़िज़ा उस मछली की कलेजी है जिसकी पुश्त पर ज़मीन क़ायम है।(मदारिजुन्नबुव्वत 2/113)

एक दूसरी रिवायत में है गाय की कलेजी और मछली का गोश्त है।

(तफ़्सीर नईमी 1/521)

सवालः हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर आज तक जितनी इबादत हमारे लिए मशरूअ हुई उनमें से कौनसी इबादत जन्नत रहेगी?

जवाबः हज़रत आदम से लेकर आज तक जितनी भी इबादतें हमारे लिए मशरूअ हुई हैं उनमें से सिर्फ़ दो इबादतें जन्नत में रहेंगी, ईमान व निकाह। (अल इशबह वन्नज़ाइर 177)

सवालः जन्नत में मोमिनों के सीनों में क़ुरआन का कितना हिस्सा बाक़ी रहेगा?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जन्नत में क़ुरआन का कोई हिस्सा नहीं रहेगा सिवाए सूरः ताहा और सूरः यासीन के। ये दोनों सूरतें अहले जन्नत के सीनों में महफ़ूज़ रहेंगी जिन्हें वे तिलावत करते रहेंगे। (रूहुल मानी 16/147)

सवालः जन्नत में हर जन्नती को कितने ख़ादिम और कितनी बीवियाँ मिलेंगी?

जवाबः अदना से अदना जन्नती के लिए अस्सी हज़ार ख़ादिम और बहत्तर बीवियाँ होंगी। (बहारे शरिअत 34/1)

सवालः जन्नत में अहले जन्नत को कितने क़िस्म के खाने मिलेंगे?

जवाबः जन्नतियों को जन्नत में हर क़िस्म के लज़ीज़ से लज़ीज़ खाने मिलेंगे। जो चाहेंगे फ़ौरन उनके सामने मौजूद होगा। एक रिवायत में है कि हर जन्नती के सिरहाने कम से कम दस हज़ार ख़ादिम खड़े होंगे। ख़ादिमों में हर के एक हाथ में चांदी का प्याला होगा और दूसरे हाथ में सोने का और हर प्याले में नए नए रंग की नेमत होगी। जितना खाना चाहेगा लज़्ज़त में कमी न होगी बल्कि ज़्यादती होगी और निवाले में सत्तर मज़े होंगे। हर मज़ा दूसरे से मुमताज़ और बढ़ा हुआ महसूस होगा। एक का एहसास दूसरे से माने न होगा। (बहारे शरिअत 33/1)

एक रिवायत में है कि जन्नत में लूलू का बना हुआ एक महल होगा जिसमें सुर्ख़ याक़ूत के सत्तर घर और हर घर में सत्तर सब्ज़ ज़मर्रुद के कमरे ऐसे होंगे कि हर कमरे में सत्तर तख़्त होंगे और हर तख़्त पर सत्तर दस्तरख़्वान होंगे और फिर हर दस्तरख़्वान में सत्तर क़िस्मों के खाने होंगे। (जलालैन 163)

सवालः जन्नती एक दूसरे से मिलना चाहेंगे तो कैसे मिलेंगे?

जवाबः जन्नती आपस में मुलाक़ात करना चाहेंगे तो एक तख़्त दूसरे के पास खुद चला जाएगा। (बहारे शरिअत 1)

सवालः जन्नत में रात होगी या नहीं?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जन्नत में रात नहीं होगी बल्कि वहाँ तो रोशनी ही रोशनी होगी और जन्नतियों के पास उन अवक़ात में जिनमें नमाज़ें अदा किया करते थे अजीब व ग़रीब चीज़े पेश होती रहेंगी और मलाइका उन अवक़ात में जन्नतियों पर सलाम भेजते रहेंगे। (रूहुल मानी)

सवालः जन्नत में जन्नती आराम और ग़ैर आराम के वक़्त को कैस पहचानेंगे?

जवाबः एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अहले जन्नत रात के वक़्त को पर्दों के लटक जाने और दरवाज़ों के बंद हो जाने से पहचानेंगे यानी जब आराम करने का वक़्त आएगा तो पर्दे अपने आप लटक जाएंगे और दरवाज़े अपने आप बंद हो जाया करेंगे। ऐसे ही जब सैर व तफ़रीह का वक़्त आएगा तो पर्दे अपने

आप उठ जाया करेंगे और दरवाज़े अपने आप खुल जाया करेंगे।

(रूहुल मानी 16/112, हाशिया 9 जलालैन 258)

सवालः जन्नत में खाना किस तरह हज़्म होगा?

जवाबः जन्नत में गंदगी पाख़ाना, पेशाब वग़ैरह असलन न होंगे। एक ख़ुशबूदार फ़रहतबख़्श डकार आएगी और ख़ुश्बूदार फ़रहतबख़्श पसीना निकलेगा जिससे सब खाना हज़्म हो जाएगा। (बहारे शरिअत 32/1)

सवालः जन्नत में कितने दरिया हैं और किस चीज़ के?

जवाबः जन्नत में चार दरिया हैं:

1. दरियाए शहद,
2. दरियाए शीर,
3. दरियाए आब,
4. दरियाए शराब।

(तफ़्सीर अलम नशरह् 194)

सवालः जन्नत में नहरें कितनी हैं और उनके नाम क्या है?

जवाबः जन्नत की चार नहरें हैं:

1. ज़ंजबील,
2. सलसबील,
3. रहीक़,
4. तसनीम।

(तफ़्सीर अलम नशरह 194)

सवालः वे नहरें कितनी हैं जो जन्नत से निकलकर दुनिया में आती हैं और उनके नाम क्या हैं?

जवाबः इन नहरों के बारे में दो क़ौल हैं जो जन्नत से निकलकर दुनिया में आती हैं। एक क़ौल के मुताबिक़ वे नहरें चार हैं:

1. जीहून,
2. सीहून,
3. फ़रात,
5. नील।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

दूसरे क़ौल के मुताबिक़ वे नहरें पाँच हैं। चार ऊपर वाली और एक दजला। (सावी 3/114)

सवालः जन्नत में सबसे आख़िर में जाने वाले का वाक़िआ क्या है?

जवाबः हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कहतें है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

मैं यक़ीनन उस शख़्स को जानता हूँ जो जहन्नम से निकलकर सबसे आख़िर में जन्नत में जाएगा। उसका हाल यह होगा कि जब उसको जहन्नम से निकाला जाएगा तो सुरीन के बल के चलकर बारगाहे खुदावंदी में हाज़िर होकर अर्ज़ करेगाः खुदावंद सब लोगों ने अपना अपना ठिकाना जन्नत में पा लिया है यानी हर जन्नती अपने महल में पहुँच चुका है। इर्शादे खुदावंदी होगा कि तू जन्नत में दाख़िल हो जा। यह शख़्स जन्नत की तरफ़ जाएगा लेकिन हर जन्नती को अपने महल में मुक़ीम पाकर यानी जन्नत को भरी हुई पाकर जन्नत के दरवाज़े से लौट आएगा और अर्ज़ करेगाः परवरदिगार! हर शख़्स अपनी मंज़िल में जा पहुँचा है यानी सारे महल पुर हो चुके हैं। अल्लाह तआला फ़रमाएगाः क्या तू इसको दुनियवी मुक़ाम तसव्वुर कर रहा है जिसमें ज़िंदगी बसर करके आया है? वह कहेगाः हाँ। फिर अल्लाह तआला उस बंदे से फ़रमाएगाः तू तमन्ना कर। बस वह तमन्ना करेगा। फिर ऐलाने खुदावंदी होगा, तेरे लिए वह जिसकी तूने तमन्ना की और तेरे लिए जन्नत में दुनिया के दस हिस्से से ज़्यादा है। (तिर्मिज़ी 1/83)

सवालः जहन्नम किस चीज़ की बनी हुई है?

जवाबः हदीस में है कि जहन्नम की चारदीवारी की वुसअत चालीस चालीस साल की मुसाफ़त है। (इब्ने कसीर 15/15, मिश्कात 2/503)

सवालः दोज़ख़ की गहराई कितनी है?

जवाबः दोज़ख़ की गहराई इतनी ज़्यादा है कि अगर पत्थर की चट्टान जहन्नम के किनारे से उसमें फेंकी जाए तो सत्तर बरस में भी वह तह तक न पहुँचेगी। (बुख़ारी शरीफ़ हिस्सा अव्वल)

सवालः दोज़ख़ के दरकात कितने हैं?

जवाबः इब्ने जरीह का क़ौल है कि दोज़ख़ के सात दरकात हैं:

1. जहन्नम, 2. नता, 3. हुतमा,
4. सईर, 5. सक़र, 6. जहीम,
7. हाविया। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 14/3)

इन दरकात के ख़ाज़िन फ़रिश्तों का नाम तर्तीबवार यूँ है:

1. सोहाईल, 2. तूफ़ाईल, 3. तरफ़ाईल,

4. समताईल, 5. तुफ़ताईल, 6. ज़मताईल,
7. तमताईल। (मआरिजुन्नबुव्वत 141/3)

सवालः दोज़ख़ के तब्क़ात में से किस तब्क़े में किसको डाला जाएगा?

जवाबः सात तब्क़ात दोज़ख़ में से किसको किस में डाला जाएगा, उसकी तफ़्सील इस तरह है:

तब्क़ा अव्वल यानी जहन्नम में अहले तौहीद को डाला जाएगा, फिर आमाल के मुताबिक़ सज़ा के बाद निकाल लिए जाएंगे, तब्क़ा दोम नता में यहूद को, तब्क़ा सोम हुतमा में नसारा को, चौथे तब्क़ा सईर में शराबी को, पाँचवे तब्क़े सक़र में मजूसी को, छठे तब्क़े यानी जहीम में मुशिरकीन को, सातवें तब्क़े यानी हाविया में मुनाफ़िक़ीन को डाला जाएगा।

(हाशिया 8 जलालैन 213)

सवालः दोज़ख़ में अज़ाब के फ़रिश्ते कितने हैं?

जवाबः दोज़ख़ में अज़ाब के फ़रिश्ते उन्नीस हैं।

(तफ़्सीर नईमी 1/44)

उन फ़रिश्तों के सरदार का नाम मालिक है, दीगर फ़रिश्तों के नाम रब्बानिया। (तफ़्सीर नईमी 1/179)

सवालः दोज़ख़ में मुक़र्ररा फ़रिश्तों की क़ामत कितनी है?

जवाबः दोज़ख़ में मुक़र्रर फ़रिश्तों में हर एक का क़द एक सौ साल की राह का है। उनमें से एक फ़रिश्ता जब एक गुर्ज़ मारता है तो सात लाख आदमियों का चूरा हो जाता है। (इब्ने कसीर 16/8)

सवालः दोज़ख़ की आग की हरारत दुनिया की आग से कितना गुना ज़्यादा है?

जवाबः दुनिया की आग जहन्नम की आग से सत्तर जुज़ों में से एक जुज़ है। (मिश्कात 2/502)

यानी जहन्नम की आग की हरारत दुनिया की आग से सत्तर गुना ज़्यादा है।

सवालः दोंज़ख़ की आग कितने दिनों तक दहकाई गई और उसका रंग कैसा है?

जवाबः हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जहन्नम की आग को एक हज़ार साल तक जलाया गया यहाँ तक कि वह सुर्ख़ हो गई। फिर उसको एक हज़ार साल तक जलाया गया यहाँ तक कि वह सफ़ेद हो गई। फिर उसको एक हज़ार साल और जलाया गया यहाँ तक कि वह काली स्याह हो गई। अब वह नीली स्याह और तारीक है।

(मिश्कात 2/503)

सवालः दोज़ख़ में दोज़ख़ी किस वक़्त डालें जाएंगे?

जवाबः दोज़ख़ियों को दोज़ख़ में दोपहर के वक़्त डाला जाएगा।

(इब्ने कसीर 19/1)

सवालः दोज़ख़ में सबसे पहले कौन डाला जाएगा?

जवाबः दोज़ख़ में सबसे पहले क़ाबील को डाला जाएगा।

(रूहुल बयान 556)

सवालः दोज़ख़ में दोज़ख़ी की उम्र कितनी होगी?

जवाबः दोज़ख़ में अहले दोज़ख़ की उम्र तैंतीस साल की होगी।

(इब्ने कसीर 27/सूरः वाक़िआ)

सवालः दोज़ख़ में सबसे हलका अज़ाब किसको होगा?

जवाबः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने कहा, रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दोज़ख़ियों में सबसे हलका अज़ाब अबू तालिब को होगा। (बुख़ारी मिश्कात 2/502)

सवालः दोज़ख़ के उस जेलख़ाने का नाम क्या है जिसमें मुतकब्बिरों को डाला जाएगा?

जवाबः दोज़ख़ के उस जेलख़ाने का नाम बूलस है जिसमें मुतकब्बिरों को डाला जाएगा। (इब्ने कसीर 1/11)

○ ○ ○

मुतफ़र्रिक़ात के बारे में सवाल और जवाब

सवालः जब अल्लाह तआला ने तमाम रूहों को जमा करके फ़रमाया था, "अलस्तु बिरब्बिकुम" तो रूहों का यह इज्तिमा किस दिन और किस जगह हुआ था?

जवाबः रूहों का यह इज्तिमा रोज़े अरफ़ा को हुआ था।

(अल कामिल फ़ी तारीख़ 1/17, जलालैन 144)

और इज्तिमा की जगह में उलमा का इख़्तिलाफ़ है। बाज़ कहते हैं कि यह इज्तिमा मैदाने अरफ़ात की वादी नौमान में हुआ।

(जलालैन 44 अल कामिल 1/17)

बाज़ कहते हैं कि जन्नत में। (अल कामिल फ़ी तारीख़ 1/17)

और बाज़ कहते हैं कि मक्का और ताएफ़ के दर्मियान में हुआ था।

(हाशिया 16 जलालैन 144)

सवालः इस इज्तिमा में रूहों की कितनी सफ़ें थीं और किस सफ़ में कौन सी रूहें थीं?

जवाबः इस इज्तिमा में रूहों की चार सफ़ें थीं। पहली सफ़ अंबिया की रूहों की, दूसरी सफ़ औलिया की रूहों की, तीसरी सफ़ आम मुसलमानों की रूहों की और चौथी सफ़ में काफ़िरों की रूहें थीं।

(तफ़्सीर नईमी 2/144)

सवालः आलम की तादाद कितनी है?

जवाबः आलम की तादाद में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं। हज़रत वहब मुनब्बा रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि अठ्ठारह हज़ार आलम हैं। यह दुनिया उनमें से एक है। हज़रत ज़हाक का क़ौल है कुल आलम तीन सौ साठ हैं। हज़रत कअब अहबार रज़ियल्लाहु अन्हु का कहना है कि आलम की तादाद का सही अंदाज़ा करना मुहाल है।(रूहुल बयान 1/सूरः फ़ातेहा)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से मंक़ूल है कि आलम चालीस हज़ार हैं। (इब्ने कसीर 1/सूरः फ़ातेहा)

और हज़रत मक़ातिल से अस्सी हज़ार आलम मंक़ूल हैं।

(तफ़्सीर क़रतबी)

सवालः दुनिया की उम्र कितनी है?

जवाबः दुनिया की उम्र कितनी है इसमें कई क़ौल हैं। बाज़ ने कहा कि दुनिया की उम्र सात हज़ार बरस है। बाज़ ने कहा है कि बारह हज़ार बरस है और बाज़ ने कहा तीन लाख साठ हज़ार बरस। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 18/6)

यह इख़्तिलाफ़ इख़्तिलाफ़े एतिबार की बहस है। बाज़ ने सितारों का एतिबार करके सात हज़ार बरस कहा। क्योंकि क्वाकिब सय्यारा सात हैं। बाज़ ने बारह बुर्ज आसमान का एतिबार करके बोरंह हज़ार कहा है और बाज़ ने साल के दिनों की मिक़्दार के एतिबार से उम्र तीन लाख साठ हज़ार बरस शुमार की है। (हाशिया 12 जलालैन 293, सावी 125)

सवालः तमाम मख़्लूक़ की तक़्दीरें कब लिखी गयीं?

जवाबः सही मुस्लिम में हदीस है कि अल्लाह तआला ने आसमान व ज़मीन की पैदाइश से पचास हज़ार साल पहले तमाम मख़्लूक़ की तक़्दीरें लिखीं। (इब्ने कसीर 17/16)

सवालः गोश्त का सड़ना और खाने का ख़राब होना कब शुरू हुआ?

जवाबः मन सलवा जब नाज़िल हुआ तो बनी इस्राईल मुमानिअत के बावजूद कुछ छिपाकर कल के लिए रख लेते थे लेकिन दूसरे दिन वह रखा हुआ मन सलवा सड़ जाता था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बनी इस्राईल न होते तो खाना न सड़ता न ख़राब होता। खाने का ख़राब होना और गोशत का सड़ना उसी तारीख़ से शुरू हुआ और उससे पहले न खाना ख़राब होता था और न गोश्त सड़ता था।

(रूहुल बयान 1/97, तफ़्सीर नईमी 1/455)

सवालः वे कितने और कौन कौन से हज़रात हैं जो मुद्दते हमल से ज़्यादा दिनों में पैदा हुए?

जवाबः चार हज़रात ऐसे हैं जो मुद्दते हमल से ज़्यादा दिनों में पैदा हुएः

1. हज़रत सुफ़ियान बिन हयान। चार साल में पैदा हुए।

2. मुहम्महद बिन अब्दुल्लाह बिन हसन ज़हाक बिन फ़राहीम सोलह महीने में पैदा हुए।

3. याह्या बिन अली बिन जाबिर बग़ूबी दो साल में पैदा हुए।

4. सलमान ज़हाक दो साल में पैदा हुए। (हयातुल हैवान 1/98)

सवालः वे कौन कौन से हज़रात हैं कि जिनकी मुद्दते हमल छः माह रहे हों और वे पैदा होकर ज़िंदा रहे हों?

जवाबः हज़रत याह्या बिन ज़करिया अलैहिस्सलाम और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की मुद्दते हमल छः माह थी। आप दोनों के अलावा कोई बच्चा ज़िंदा न रहा जिसकी मुद्दत छः माह या इससे कम रही हो। (शवाहिद नबुव्वत 315)

नोटः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मुद्दते हमल के बारे में कई रिवायतें हैं जिनमें से कुछ रिवायतें छः माह से कम की भी हैं।

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सबसे ज़्यादा बदबख़्त किन किन को फ़रमाया?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तमाम लोगों में दो शख़्सों को सबसे ज़्यादा बदबख़्त फ़रमाया एक वह जिसने हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊँटनी की कूचें काटीं दूसरे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ातिल को। (मदारिजुन्नबुव्वत 2/132)

एक रिवायत में है कि तीन शख़्सों को बदबख़्त फ़रमायाः

1. क़रार बिन सलिफ़ जिसने हज़रत सालेह की ऊँटनी को क़त्ल किया था।

2. क़ाबील जिसने अपने भाई हाबील को क़त्ल किया था।

3. इब्ने मुल्जिम जिसे हज़रत अली को शहीद किया था।

(हयातुल हैवान)

सवालः वे कौन कौन से हज़रात हैं जिन्होंने मरने के बाद बात की?

जवाबः ऐसे लोगों में जिनके नाम मिल सके वे ये हैं:

1. हज़रत याहया अलैहिस्सलाम जब लोगों ने उनको क़त्ल कर डाला।
2. हबीब नज्जार जब लोगों ने उनको क़त्ल कर डाला तो उन्होंने कहा,

يٰلَيْتَ قَوْمِىْ يَعْلَمُوْنَ

"काश मेरी क़ौम मुझको जान लेती।"

3. हज़रत जाफ़ तैयार जिन्होंने कहा था: وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا... الخ
4. हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा कि उन्होंने कहा था:

وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا اَىَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ (हयातुल हैवान 1/98)

5. हज़रत साअद बिन मुसैय्यब से मरवी है कि एक अंसारी मर्द का इंतिक़ाल हो गया। जब लोग तजहीज़ व तकफ़ीन से फ़ारिग़ होकर उठाकर ले जाने लगे तो उसने कहा, "मुहम्मदुर्रसूलल्लाह।"
6. हज़रत ज़ैद बिन ख़ारजा अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्होंने ख़िलाफ़ते उस्मानी में वफ़ात पाई और बाद इंतिक़ाल के कलाम किया। उनके कलाम को महफ़ूज़ कर लिया गया। उन्होंने कहा था:

"احمد احمد فى الكتب الاوّل، صدق ابوبكر صديق الضعيف فى نفسه، القوى فى امره، فى الكتاب الاوّل صدق، صدق، عمر بن الخطاب القوى الامين، فى الكتاب الاوّل صدق صدق عثمان بن عفان، على منها جهم مضت اربع سنين وبقيت سنتان، انت الفتن، واكل الشديد الضعيف وقامت الساعة."

इन्हीं के बारे में मवाहिब लदुन्निया में हज़रत नौमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि वह फ़रमाते हैं कि हज़रत ज़ैद बिन ख़ारजा सरदाराने अंसार में से थे। वह मदीना तैय्यबा की राहों में चलते हुए ज़ोहर व अस्र के दर्मियान किसी जगह मुँह के बल गिर पड़े और उनका इंतिक़ाल हो गया। अंसार औरतों और मर्दों ने आकर रोना शुरू कर दिया और वे इसी हाल पर रहे यहाँ तक कि मग़रिब और इशा के दर्मियान एक आवाज़ सुनी जो कह रही थी, "ख़ामोश रहो।" इसके बाद जब ग़ौर से देखा तो चादर के नीचे से

आवाज़ आ रही थी। उन्होंने उनके चेहरे और सीने से चादर उतारी तो देखा कि वह कह रहे थे:

"محمد رسول الله النبي الامي خاتم النبيين، لانبي بعده وكان ذالك في الكتاب الاوّل وصدق صدق هذا رسول الله، السلام عليك يا رسول الله ورحمة الله وبركاته"

7. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उबैदुल्लाह अंसारी से मंक़ूल है कि वह रिवायत करते हैं कि मैं उस जमाअत में शरीक था जिन्होंने साबित बिन क़ैस बिन शमास रज़ियल्लाहु अन्हु को दफ़न किया था। उस वक़्त कि जब उन्हें क़ब्र में उतारा गया तो मैंने उन्हें यह कहते हुए सुनाः

"محمد رسول الله، ابوبكر الصديق، عمر الشهيد،

عثمان بن عفان البر الرحيم

(मदारिजुन्नबुव्वत 1/360)

8. हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। हज़रत क़सम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़ब्र अनवर में दाख़िल किया गया तो मैंने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने मुबारक लबों को जुंबिश फ़रमा रहे हैं। मैंने कानों को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दहन मुबारक के क़रीब किया तो मैंने सुना कि आप फ़रमाते थे, "रब्बि उम्मती उम्मती।" (मदारिजुन्नबुव्वत 2/751)

9. हज़रत रबी रज़ियल्लाहु अन्हु। उन्होंने कहा, मेरा जनाज़ा जल्दी ले चलो। (शरह सुदूर 28)

सवालः दुनिया में सबसे ज़्यादा रोने वाले हज़रात कौन कौन हैं?

जवाबः दुनिया में पाँच आदमी बहुत रोए जिसकी मिसाल नहीं मिलती

1. हज़रत आदम अलैहिस्सलाम अपनी ख़ता पर।
2. हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम फ़िराक़े यूसुफ़ अलैहिस्सलाम में।
3. हज़रत याह्या अलैहिस्सलाम ख़ौफ़े इलाही से।
4. हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद।

5. हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन वाक़िआ करबला के बाद।

(तफ़्सीर नईमी 1/339)

सवालः जिन लोगों ने मस्जिद ज़रार बनाई थी, उनकी तादाद और नाम क्या हैं?

जवाबः अबू आमिर राहिब के मशवरे से जिन लोगों ने मस्जिद ज़रार बनाई थी वे बारह अफ़राद थे जिनके नाम ये हैं:

1. ख़ज़ाम बिन ख़ालिद, 2. सालबा बिन ख़ातिब,
3. मौतब बिन क़ैशर, 4. अबू हबीबा इब्ने अज़अर,
5. उब्बाद बिन हनीफ़, 6. हारसा बिन आमिर,
7. मजमा बिन हारसा, 8. ज़ैद बिन हारसा,
9. नबनल हारिस, 10. मुख़रिज,
11. बजाद बिन इमरान, 12. वदिया बिन साबित।

(इब्ने कसीर 11/2)

अल्लामा स्यूती रहमतुल्लाह अलैहि ने इन बारह मुनाफ़िक़ीन के नाम कुछ फ़र्क़ के साथ इस तरह गिनाए हैं:

1. हिज़ाम बिन ख़ालिद, 2. सालबा बिन हातिब,
3. हिज़ाल बिन उमैय्या, 4. मौतब बिन क़शीर,
5. अबू हबीबा बिन अज़अर, 6. उब्बाद बिन हनीफ़,
7. जारिया बिन आमिर अपने तमाम बेटों के साथ,
8. ज़ैद बिन हारिस, 9. नबतल हारिस,
10. बहजर बिन ऐमान, 11. बजाद बिन ऐमान,
12. वदिया बिन साबित। (अल अतक़ान 2/186-187)

सवालः वे हज़रात कौन कौन हैं जिन्होंने हुज़ूर के हुक्म से मस्जिदे ज़रार को मिसमार कर डाला?

जवाबः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत मालिक बिन अख़्शम, मअन बिन अदी, आमिर बिन अलसकन और वहशी रज़ियल्लाहु अन्हुम से फ़रमाया कि जाओ इस मकान (मस्जिदे ज़रार) को जो इन मुनाफ़िक़ों ने बनाया है उखाड़कर फेंक दो।

(हाशिया 22 जलालैन 166, मदारिजुन्नबुव्वत 2/596)

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मस्जिदे ज़रार मुनहदिम हो जाने के बाद इस जगह को किस सहाबी को इनायत फ़रमाया?

जवाबः मस्जिदे ज़रार मुनहदिम होने के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस जगह को साबित बिन अक़रम रज़ियल्लाहु अन्हु को अता फ़रमा दिया।

सवालः नबी के हाथों से बनी हुई मस्जिदें दुनिया में कितनी हैं?

जवाबः दुनिया में चार मस्जिदें हैं जिनको नबी ने बनायाः

1. बैतुल्लाह जिसको हज़रत इब्राहीम और इस्माईल अलैहिमस्सलाम ने बनाया।
2. बैतुल मुक़द्दस जिसको हज़रत दाऊद व सुलेमान अलैहिमस्सलाम ने बनाया।
3. मस्जिदे नबवी, 4. मस्जिद क़ुबा जिनको रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बनाया। (हाशिया 11 जलालैन 299)

सवालः क़ारून मूसा अलैहिस्सलाम का क्या लगता था?

जवाबः क़ारून हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का चचाज़ाद व ख़ालाज़ाद भाई था। (जलालैन 333)

चचाज़ाद भाई का बेटा था। (अल अतक़ान 2/181)

सवालः तौरात में क़ारून का क्या नाम है?

जवाबः तौरात में क़ारून का नाम हसीन होने की वजह से "अन्नूर" है। (अल बिदाया 1/309)

सवालः क़ारून के ख़ज़ाने की कुंजियाँ कितने ख़च्चरों पर लादी जाती थीं?

जवाबः क़ारून को अल्लाह तआला ने इतना ख़ज़ाना दिया था कि ख़ज़ानों की कुंजियाँ सत्तर ख़च्चरों पर लादी जाती थीं।

(अल बिदाया 309)

एक ख़ज़ाने की सिर्फ़ एक कुंजी होती थी मिस्ल उंगली के।

(हाशिया 19 जलालैन 333)

सवालः क़ारून रोज़ाना ज़मीन में कितना धंसता है?

जवाबः क़ारून जिस दिन ज़मीन में धंसा आज तक धंसता जा रहा

है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान 20/12)

और रोज़ाना उसके धंसने की मिक़्दार क़द्दे आदम के बराबर है।

(इब्ने कसीर 20/12, नज़हतुल मजालिस 12/28)

सवालः मजूसियों के कितने खुदा हैं और उनका नाम क्या है?

जवाबः मजूसियों ने दो खुदा तसलीम किए हैं। एक ख़ालिक़े ख़ैर जिसे "यज़दान" कहते हैं, दूसरा ख़ालिक़ शर जिसे "अहरमन" कहते हैं। (तफ़्सीर नईमी 1/651)

सवालः ताबूत सकीना किस चीज़ का था और उसकी लंबाई और चौड़ाई कितनी थी?

जवाबः ताबूत सकीना शमशाद की लकड़ी का एक ज़रअंदोज़ संदूक़ था जिसकी लंबाई तीन हाथ और चौड़ाई दो हाथ की थी।

(ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 2/16)

बाज़ के मुताबिक़ ताबूत सकीना सोने का एक तश्त था जिसमें अंबिया के दिल धोए जाते थे। बाज़ कहते हैं कि इसका मुँह भी था जैसे इंसान का मुँह होता है। रूह भी थी और हवा भी, दो सर थे, दो पर और दुम भी थी। हज़रत वहब बिन कहते हैं कि मुर्दा बिल्ली का सर था। यह क़ौल भी है कि रूह थी खुदा की तरफ़ से जब कभी बनी इस्राईल में इख़्तिलाफ़ पड़ता या किसी बात की इत्तिला न होती तो वह कह दिया करती थी। (इब्ने कसीर 2/16)

सवालः ताबूत सकीना हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तक कैसे पहुँचा?

जवाबः यह ताबूत अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर नाज़िल फ़रमाया था और विरासतन मुन्तक़िल होता हुआ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तक पहुँचा था।

(ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 2/16, तफ़्सीर नईमी 2/541)

सवालः ताबूत सकीना में क्या क्या चीज़ें थीं?

जवाबः इस ताबूत में तमाम अंबिया अलैहिमुस्सलाम की तस्वीरें थीं। उनके मसाकिन और मकानात की तस्वीरें थीं और आख़िर में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तस्वीर और आपके दौलते सराए अक़्दस

की तस्वीर एक याक़ूत सुर्ख़ में थी कि हुज़ूर बहालते नमाज़ क़याम में हैं और आपके गिर्द आपके सहाबा। अंबिया अलैहिमुस्सलाम की ये तस्वीरें किसी आदमी की बनाई हुई न थीं बल्कि अल्लाह तआला की तरफ़ से आयीं थीं।

(ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 2/16, तफ़्सीर नईमी 2/541)

सवालः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ताबूत सकीना में क्या क्या चीज़ें रखते थे?

जवाबः इस ताबूत में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तौरैत भी रखते थे और अपना मख़्सूस सामान भी। चुनाँचे इस ताबूत में अलवाह तौरैत के टुकड़े भी थे और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का आसा, आपके कपड़े और आपके नालैन शरीफ़। हज़रत हारून अलैहिस्सलाम का आसा और अमामा और थोड़ा सा मन जो बनी इस्राईल पर नाज़िल होता था। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जंग के मौक़ों पर इस संदूक़ को आगे रखते थे। इससे बनी इस्राईल के दिलों को तस्कीन रहती थी। आपके बाद यह ताबूत बनी इस्राईल में मुतावारिस होता चला आया। जब उन्हें कोई मुश्किल होती तो वह इस ताबूत को सामने रखकर दुआएं करते और कामयाब होते। दुश्मनों के मुक़ाबले में इसकी बरकत से फ़तेह पाते। जब बनी इस्राईल की हालत ख़राब हुई और उनकी बदअमली बढ़ गई तो अल्लाह तआला ने उन पर अमालक़ा को मुसल्लत किया तो वह इनसे ताबूत छीनकर ले गए और उसको नजिस और गंदे मुक़ामात पर रखा। इन गुस्ताख़ियों की वजह वे तरह तरह के अमराज़ व मसाइब में मुब्तला हुए। उनकी पाँच बस्तियाँ हलाक हुईं और उन्हें यक़ीन हो गया कि ताबूत की अहानत उनकी बर्बादी का बाइस है तो उन्होंने ताबूत को एक बैलगाड़ी पर रखकर बैलों को छोड़ दिया और फ़रिश्ते उसको बनी इस्राईल के सामने तालूत के पास लाए। इस ताबूत का आना बनी इस्राईल के लिए तालूत की बादशाही की निशानी क़रार दिया गया था। बनी इस्राईल यह देखकर उसकी बादशाही के मुक़िर हुए और बेदरंग जिहाद के लिए आमादा हो गए क्योंकि ताबूत को पाकर उन्हें फ़तेह का यक़ीन हो गया था। और तालूत बनी इस्राईल को लेकर जिनमें हज़रत दाऊद भी थे जालूत के मुक़ाबले में निकल पड़े।

(ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 2/16)

सवालः सूरज रोकना या डूबे हुए सूरज का लौटाना कितनी बार वाके हुआ?

जवाबः सूरज को रोकना और उसे लौटाना छः मुक़ामात में वारिद हुआ है। उनमें से तीन मुक़ामात में हुज़ूर सल्ललाहु अलैहि वसल्लम के लियेः

1. एक शबे मैराज के बाद जबकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़बर दी कि इस रात वापसी पर क़ुरैश को मैंने राह में देखा और यह निशानी भी बताई थी कि उनका एक ऊँट भाग गया था और क़ाफ़िले के कुछ लोग उसकी तलाश में सरगरदां थे। इस पर क़ुरैश को लोगों ने पूछा, "बताइए वह क़ाफ़िला कब तक यहाँ पहुँचेगा?" फ़रमायाः "बुध के दिन।" जब बुध का दिन आया तो क़ुरैश उस क़ाफ़िले का इंतिज़ार करने लगे कि कब पहुँचता है। यहाँ तक कि दिन तमाम होने लगा और क़ाफ़िला नहीं आया। उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ की। चुनाँचे उस दिन सूरज को ग़ुरूब होने से हक़ तआला ने एक घंटे के लिए रोक दिया। फिर क़ाफ़िला पहुँच गया।
2. दूसरा वाक़िआ हब्स शम्स का हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए रोज़ ख़ंदक़ में बयान किया गया जबकि इस जंग में नमाज़े अस्र क़ज़ा हो गई। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ की जैसा कि बाज़ रिवायत में आया है। और मशहूर है यह है कि ग़ुरूब आफ़ताब क़ज़ा पढ़ी थी।
3. तीसरा वाक़िआ यह है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की नमाज़ अस्र क़ज़ा हो गई। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ की और सूरज लौटाया गया। फिर उन्होंने नमाज़ अदा की।
4. चौथा वाक़िआ हज़रत यूशा अलैहिस्सलाम के लिए है। चुनाँचे मवाहिब में मज़्कूर है कि हज़रत यूशा अलैहिस्सलाम जुमा के दिन ज़ालिमों से जंग कर रहे थे। जब आफ़ताब के ग़ुरूब होने का वक़्त क़रीब हुआ तो ख़ौफ़ किया कि अगर आफ़ताब जंग होने से पहले ग़ुरूब हो गया तो हफ़्ते का दिन शुरू हो जाएगा और हमें इस दिन

जंग करना हलाल न होगा। उन्होंने खुदा से दुआ की और हक़ तआला ने आफ़ताब को रोक दिया यहाँ तक कि वह जंग से फ़ारिग़ हुए। इस रुकने की तीन सूरतें हो सकती हैं। एक यह कि ग़ुरूब के बाद वापस लौटाया जाए, एक यह कि लौटाए बग़ैर रोके रखा जाए। एक यह कि इसकी रफ़्तार को सुस्त कर दिया जाए।

(मदारिजुन्नबुव्वत 2/427-428, नज़हतुल मजालिस 6/115)

5. पाँचवीं बार का वाक़िआ यह है कि हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की नमाज़ असृर क़ज़ा हो गई और सूरज पर्दे में हो गया तो आपने फ़रमाया, "इसको मुझ पर वापस फ़रमा।" तो अल्लाह तआला ने सूरज को लौटा दिया।(कौसरुल ख़ैरात 141, नज़हतुल मजालिस 6/114)

6. छठा वाक़िआ हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए है।. वाक़िआ यूँ है कि आप बाबुल की तरफ़ जा रहे थे तो फ़रात से गुज़कर नमाज़ असृर अपने साथियों के साथ अदा करने का इरादा किया। आप के साथियों ने दरयाए फ़रात से अपनी सवारियाँ गुज़ारनी शुरू कर दीं। यहाँ तक कि आफ़ताब ग़ुरूब हो गया और उनकी नमाज़ क़ज़ा हो गई। वे चेमांगोइयाँ करने लगे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने सुना तो अल्लाह तआला से सूरज लौटाने की दुआ की ताकि उनके साथी नमाज़ अदा कर लें। अल्लाह तआला ने आपकी दुआ क़ुबूल फ़रमाई। आफ़ताब निकल आया और असृर का वक़्त हो गया। जब आपने सलाम फेरा तो सूरज ग़ुरूब हो गया।

सवालः हर काफ़िर की क़ब्र में कितने अज़दहे मुसल्लत किए जाते हैं?

जवाबः हर काफ़िर की क़ब्र में निन्नानवें अज़दहे मुसल्लत किए जाते हैं। (ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 16/16)

जिनमें से हर के सात सात सर होते हैं जो उसे क़यामत तक डसते रहेंगे। (इब्ने कसीर 16/16)

सवालः पूरे साल में कितनी बलाएं नाज़िल होती हैं?

जवाबः अल्लाह तआला पूरे साल में एक लाख चौबीस हज़ार बलाएं नाज़िल करते हैं। (मल्फ़ूज़ात ख़्वाजा निज़ामुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहि 185)

सवालः क़ुरैश मक्का ने बनू हाशिम से जो बाइकाट का मुआहिदा किया था उस अहदनामे को किसने लिखा और उस पर अल्लाह तआला का क्या क़हर नाज़िल हुआ?

जवाबः सनादीद क़ुरैश ने जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुख़ालिफ़त में बनू हाशिम से बाइकाट का मुआहिदा तय किया तो इस अहदनामे को मंसूर बिन इकरमा ने लिखा था। उस पर अल्लाह तआला का यह क़हर नाज़िल हुआ कि उसका हाथ शल हो गया।

(मअरिजुन्नबुव्वत 3/49, मदारिजुन्नबुव्वत 2/75)

सवालः वे कितने जानदार हैं जिन्होंने शिकमे मादर की मुशक़्क़त को नहीं झेला?

जवाबः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया वह चार जानदार हैं जिन्होंने शिकमे मादर की मुशक़्क़त को नहीं झेलाः

1. हज़रत आदम अलैहिस्सलाम, 2. हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा, 2. हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम, 4. वह मेंढा जो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के फ़िदए में ज़िब्ह हुआ। बाज़ ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के आसा मुबारक को भी शुमार किया है। (हयातुल हैवान 2/649)

नोटः जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने नबुव्वत का ऐलान किया और मौजिज़ात दिखाए तो लोगों ने दरख़्वास्त की कि आप एक चमगादड़ पैदा करें। चुनाँचे आपने मिटी से चमगादड़ की सूरत बनाई फिर उसमें फूंक मारी तो वह उड़ने लगी। (ख़ज़ाईनुल इरफ़ान 3/13, जलालैन 51)

सवालः वे कौनसी क़ब्र है जो अपने साहब को लेकर चलती है?

जवाबः यही सवाल हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से हुआ कि वह क़ब्र कौनसी है जो अपने साहब को लेकर चलती है तो आपने फ़रमाया वह क़ब्र हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की मछली है जिसके पेट में आप कुछ मुद्दत रहे और वह मछली आपको लेकर चलती फिरती थी। (हयातुल हैवान 2/649, मआरिज 245/4)

सवालः ज़मीन का वह कौन सा हिस्सा है जिस पर सूरज की रोशनी सिर्फ़ एक बार पड़ी न उससे पहले कभी पड़ी थी और न अब कभी पड़ेगी?

जवाबः जिस जगह पर सूरज की रोशनी सिर्फ़ एक बार पड़ी वह जगह

है जहाँ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने दरिया में अपना असा मारा था और उसमें बारह रास्ते पैदा हो गए थे। उस वक़्त उस जगह सूरज की किरनें पड़ी थीं। उसके बाद साबिक़ की तरह वे रास्ते फिर समुंदर में तब्दील हो गए।

(हयातुल हैवान 2/649, मआरिज 245/4)

सवालः वह कौन सा रसूल क़ासिद है जिसको अल्लाह तआला ने भेजा मगर न वह इंसान है न मलाइका में से?

जवाबः यह रसूल यानी क़ासिद वह कव्वा है जिसके बारे में अल्लाह तआला का इर्शाद है:

فبعث الله غرابا يبحث في الارض

जिसने अपने भाई कव्वे को क़तल करने के बाद दफ़न करके क़ाबील को दफ़न करना सिखाया। यह देखकर क़ाबील को मालूम हुआ कि मुर्दे की लाश को दफ़न करना चाहिए। चुनाँचे उसने कव्वे की तरह ज़मीन खोदकर अपने भाई को दफ़न कर दिया। (मआरिज 245/4)

सवालः पानी ने लाश को क़ुबूल करना कब से बंद कर दिया जबकि पहले जो कोई पानी में ग़र्क़ होता तो उसकी लाश डूब जाया करती थी?

जवाबः जब फ़िरऔन दरियाए क़ुलज़म में ग़र्क़ हो गया तो बनी इस्राईल को उसके डूबने पर यक़ीन न हुआ तो अल्लाह तआला के हुक्म से पानी ने फ़िरऔन की लाश को साहिल दरिया पर फेंक दिया ताकि बनी इस्राईल देखकर यक़ीन कर लें। इससे पहले जो कोई भी पानी में ग़र्क़ होता था उसकी लाश डूब जाया करती थी लेकिन फ़िरऔन के बाद से पानी ने लाश को क़ुबूल करना बंद कर दिया।

(हाशिया 16 जलालैन 178)

○ ○ ○

باسمہ تعالیٰ

علم الانسان مالم یعلم

تعجب خیز اور حیرت انگیز اسلامی تاریخی معلومات کا عظیم موجیں مارتا ہوا سمندر، حدیث و تفسیر
تاریخ و سیر اور فقہ و تصوف کی درجنوں مستند کتابوں کا حاصل مطالعہ مع حوالہ جات

اسلامی
حیرت انگیز معلومات

تالیف:

مولانا عبدالواحد آزاد

مقام و پوسٹ: گنجریا بازار
وایہ: اسلام پور
ضلع: اتر دیناجپور، مغربی بنگال

صدر مدرس دار العلوم اسلامیہ
ہمدانیہ ڈورو شاہ آباد
ضلع اننت ناگ، جنوبی کشمیر

Publisher:

الہدیٰ پبلیکیشنز (رجسٹرڈ)
alhuda publications
2962 Kucha Neel Kanth, Qazi Wara, Darya Ganj, N. Delhi-2
Tel: 011-43259013, E-mail: alhudapublications@yahoo.com